স্টাক

সুপদ্यব্যাকরণম্।

মহামহোপাধ্যায় পদ্মনাভদত্ত

विगीउम्।

মহোগাব্যাৰ বিফ্রিপ্রক্তক্পজ্ঞকরক্ষাব্যটীক্যালক্ষত্র।

পণ্ডিতকুলভিলক

এল প্রায়ক জীবানন্দবিদ্যাদাগরাক্ষেবাদিনা
কাব্যতার্থোপাদকেন

ত্রীত্রৈলোক্যনাথ ভট্টাচার্যে

সাক্ষরং প্রকাশিতক।

কলিকাতারাজধাতাম্।

দরস্ব ভীযন্ত্রে

न्डिज्म् ।

বিজ্ঞপ্তিঃ 🕻

অপনীপজ্যে কণার সচীক স্পর্ব্যাকরনের মুদান্তণ কার্য্য শ্রেম হইল।
এই ব্যাকরণখানি, প্রচলিত মুর্যবোধ, কলাপ ও সংক্রিমারাদি ব্যাকরণ
অপেক্ষা, সরল এবং বিস্তৃত। ইহাতে বৈদিকপ্রক্রিয়া ব্যাটাত পাণিনীয়ব্যাকরণের প্রায় সকল বিষয়ই সন্নিবেশিত আছে। বরং ভাষা বার্ত্তিকাদির
মত ইহাতে অনিক লক্ষিত হয়। বস্তুতঃ গ্রন্তরং মহায়া পদ্নাভদত গ্রন্থ
প্রারস্ত্রে, 'ওস্যা শক্ষাত্রশাসনেন সহ পাণিনীয়াদিশক মৃতীকুপলক্ষা
সৌক্যোপানয়ে প্রতিসংস্কৃত্ব্যা শক্ষাক্ষণসা' এই যে, প্রতিভাগ করিয়াছিলেন, তাহা যে সর্ব্যাধীন সংপূর্ণ করিয়াছেন, ইহা সকলেই জীকার
করেন। আত্রব, সংস্কৃতভাষাশিক্ষার্থী ব্যক্তিরণ যে, ইহা হারা দিশেব
উপকৃত হইবেন ওবিষয়ে আর অনিক বলা ব্যল্পা মানে।

পরত, অত্যন্ত ব্যুৎপাদিক। বিস্থানিজকত স্পল্পনকরশাধ্য টাকা ও বিপুপ্ত প্রায় হইয়াছে। তাহার প্রচার করাও বিতীয় উদ্দেশ। বিশেষতঃ অধ্যাপকগণের অবহেলা প্রায়ুক্তই হউক, বা অন্য কোন কারণ বলতই হউক, পুস্তকের সংখ্যা না হওয়ায় বহুকালয়ায়ং পুস্তকের পাঠ নানাপ্রকাল হই-রাছে ও অনেক পাঠ একপ বিপরীত হইয়া পড়িয়াছে যে, তাহার অর্থ সংগ্রহ করা অতীব হৃদ্ধব্যাপার। সেই হেছু, বিভিন্ন দেশীয়, ১৫৷১৬ খানি পুস্তক আদর্শ করিয়া এবং সিকাজকৌম্দ্রী, কলাপ, সংক্ষিপ্তবার, মুদ্রবোধাদি ব্যাকরণ সমালোচনাপুর্বাক, যে ছলে যে পাঠ সম্বত বলিয়া বোর হই-রাছে, তাহাই সন্ধিবেশিতকরা গিয়াছে। ছলবিশেষে পাঠব্র মনোনীত ছওয়ায়, একটা বন্ধনী মধ্যে, অপরটা সমভাবে রক্ষিত হইয়াছে ও ক্ষিপ্রকৃত টাকা প্রয়োজনমত সন্ধিবেশিত হইয়াছে।

শ্ৰীতৈলোক্যনাথ কাব্যতীৰ্থ কলিকাডা, ১২১৫, ১৫ প্ৰাৰণ।

শুদ্ধিপত্রস্থ।

चल्दः	लकः	ल है।	পঙ্কি:	च ३५:	££:	न्धा •	াৰ (কিং
স্ত	স্ত্ত	>	۵	ঢুলো	ঢ়োৰো	9.	59
हे न्	हेव_	ર	>•	ষাতে	ৰো ভে	00	\$2
য়ৰ	ষৰ্	9	58	२ ८ ४	₹ र्थ	98	•
পম_	গম্ভ	8	>6	বীয়্ অত্ৰ	বায়্	>>	₹•
ত্রিয়াতো	হিমা তো	¢	•	क्ला र	ङ्गार	96	२२
बंध	বটা	•	₹8	য়াপ	যাগ	৩৭	ર
म ्यान	সংযোগ	19	٠	ছেত্র	क ट्रब्ह्	a 09	25
উদ্যোশি	উদেশি	49	٥	टे ट्डिंग	ইভ্যেব	92	>>
ধাচ্	शाना	٩	5	हरहो	कृट ों।	8 •	>>
ष्यत्तत्तु	ष्यनरम्	٩	>>	मंग	ৰ্য	85	२५
খননা	অমুনা	8	9	স্ত্রো	ন্ধ তেখ	8 5	₹
ক্তা	कर्	٩	b	ष८९१९	गृत्वाद	8 8	२ ९
3	ক্র	B	5•	७ ३:	७ कः	8 %	(2)
ৰ্ বণ1	ৰ্যপা	b	:2	यहम	74	8 %	đ
वाषग्रः	द्राष्ट्रः	۲	32	ণ্ডি	ইণ্ডি	81	≥, €
বঠন্ত্য	यक्षेत्रय	25	•	एक (२)		¢ 2	O
रें∂् रे	ট অগ্রহীণ	k ¢	50	निर्दे	নাটি	d+0	>9
শাৰ	শান্	9	₹ 1	ণি <i>ত</i> ক্ৰ	क्षिक्र	er	ø
क्रे:	4/2	28	•	অব গ্ৰ	ত্ব বত্যা	42	58
অবচ্ছ	ष्यव ऋ	*	74	বাপ্য	ব্যাপ্য	40	5.
भाषाद्य	পদান্তে	२७	8	ম্বান:	ম্থানং	••	>>
७ ८म	ঙমি	36	২৩	(च्ट्रप!	ভেদা	*>	२१
খট	र दे	२ऽ	٠,	त्न्यः	ক্রেন:	43	ર
ৰ প্সি	दिष	₹8	•	ক্বি	ক্ৰৰি	•8	
লঙ্হ	লঙ্সু	₹ 8	२ ०	इंग्रे: पि	देश्रंभ		
मुक् गु	मू क्चा	₹€	२२	कानार	বাণ্চ		
অনু	হুশ্ব	२७	ર	द्धा पः			
रे ड्ड	इ क्	₹ ₹১	; 9	ब -			

च ⊖कः	७इ:	ye:	अ५ कि:	অ ভক:	चत्र:	लक्षा 🕶	াড় কি:
ভব্য্য	ভবিষা	***	b	ইভ্যবো	ইভাগ	500	8
বঙ্গো	ब्रह्म ।	42	20	মধ্র	মণুৱা	> 0	•
হে:িঃনি		45	₹•	ৰ্ম্মকা:	ৰ্ক:শক্ষঃ	> 8	>
ব্রুতে	ক্রতে	42	२५	मञ् धानुकः	गर्ः श्रम्क	: > • 5	5 2
নিস্থে ক	নিয়ন্ত ক	90	•	যাবতং	যাবতাং	> 8	ે ર
निখ্যা	दोश	90	>2	পদেত্য	পদেভ্য	> 0	20
अ टथ	সনমে	9•	>6	ए। ए वड्र	ভাষেয়ং	308	6
ু না	লূন)	9 ર	•	পঞ্চা /	পঞ্		>>
পঞ্চাপ	পরস্থাপ	93	b	ৠরহা ∫	ম্যন 🤇	200	- 3
ক্ৰ হি	ক্ষহি	90	÷ 1	মুখেন	ञ्द्धन	55.	>>
অ গহ	মীহ	96	ર	<u> इ</u> व	<u>এ</u> ব	>>>	2 4
एको १	জাগীং	96	۲	नुषिना ९	বুদীনাং	225	9
ধাহিমৌ	धाङ् हे	9 9	36	गारना	यारवा	110	२७
শংসিতঃ	শং সিতুঃ	91	>8	নিপুন	নিপুণ	>>0	२ऽ
मार्ख	प ष्ट्	96	٤5	ह्यान्	हे 79	224	>6
প্ৰৰ	পত্ৰা	9.5	>9	ভক্তিনাং	ভ কীনাং	>>>	>6
প্রাপ	প্রাপ্য	92	26	রূপ	কুপ ∙	३२१	.8
উপাধা	উপাধ্যা	٠٠	٠ د	বলা)	গলা)		
পোবাদ	প र्वाटम।	b •	>¢	জনস }	ৰ্জনন্তা 🕽	320	`€
কু প	রপ	b 8	74	রতাক	वृश्वः स	200	> 1
বিদ্যা	বিদ্য	6	79	द्रिशृः	বিপুং	300	>>
ক্র	ক্র	৮७	२১	হ্বচ)	36	500	. žo
শাসন	শাসন	69	56	∵: ∫	₹5 }	760	२७
কানাং	কাণাং	bb	2	তৃণ_	इन्	500	8
44	মসু	58	२५	बनार्थ)	খলহ')		
বলাগ্ৰ	ব লা প্ৰ	7,8	٤5	ভল\ }	ড়ৰা ∫	:00	8
यार्था	মাণো	94	२५	3		>00	•<(७)
উ न्द्रग	डेट ्र	44	b	কর্ম্ ণঃ	কর্ম ণে:	200	•
रे खार्या	ইভ্যণ্	66	^{\$} ર	ष्ट्र	रा व्यवश	J.	20

	··· •	~ ** **	. G=.	-		पृष्ठा भड	Con .
च⊕इः	७इ:	পৃষ্ঠা প্ৰ		चलकः	6.4:	•	`
ষ্যতি	ষ্যতী	704	5 F	6 1	91	744	25
क्छि ।	ष्ट्रि 1	701	ર	শ্ৰন্ স্	অনৃস্থ	742	२ •
স্থাপ:	সাপ ্	36¢ :	₹•	उद्याः	ভূদ্যাৎ	704	२७
পঞ্চলা	পঞ্চালা	704	æ	51 (•91)	6 1 (:21)) > 9 0	>>
ভোঘে	শ্ৰেণম্	>85	8	ণ ৎ	9:	>90	20
সভ্যতে	নভ্যতে	>80	ડર	পিক্	পিপক্	>9.	30
ৰ্ব ৰ্ভিণী	ৰ্বা ৰ্ত নী	>80	24	રા	5 1	১ १२	•
नगः	ह. ऽ। नय्	>88	20	वर्टक	বদে	290	٩
দিতো	निनटको	588	२०	লক্ষ তে	नभारङ	298	>>
क्याः	জ ণাং	>86	¢	সূব	সূব	>98	>€
ত্ৰকাৰ্থি	একাৰী	588	>>	ভস্তাতো	ভঙ্গেনো	598	•
হমানো	হমাণো	787	२५	3 2 3	द्रक	399	¢
তুণামু	তুৰ্ণম্	>45	٥٠	শশাদো	শসাদো	396	8
<u>বায়</u> ্নাং	বায়্নাং	५ ८२	>>	किस् रि	কিম্॥	292	8
লক্ষীনং	नम्बोनाः	> 0 2	ડર	পৃশ্বৎ	পুংবং,	562	¢
শ্লিপ্টে	শ্লিষ্ট	>11	२५	স্ত্রীয়াং	জিয়া: -	১৮२	٩
ধাতো	ধাতোঃ	> 6.0	55	উব্ভিরে	উবরে	५ ४२	9
द छाः	बि छाः	549	24.	রঙ্গাখা	র সত্বা	3 42	2,0
5_ 6]	ट्ट ज ग			স্থাং	স্থাৎ	3 62	>9
ইश शि र्रे	শসিহি	> > 4 ~	ь	পৃষান্	পুমান্	১৮২	રર
সকগুা	সক্গু।	>60	8	দাহ	দা তঃ।	১৮৩	>
ত্বা চ	इ १२	>48	59	এতসো	ত্ৰতসো	ste	36
সন্বৰ্	সমূহে	268	>>	म् प्रक्	यु षाण ्	766	ø
অ ক্যু:	अक्तुः	288	20	यर्ग	যপৰ্য্য	369	\$8
পটমু্য:	প्रे छा:	359	5	। আরকাং	আ্বকাং	11 369	36
লৃকি	লুকি	১ ৬৭	ર	₹	?	36b	50
र्नाभः	ৰ্লোপ:	১৬৭	>>	বিভক্তি	বিভক্তো	749	•
ে বাযি	ং াংবি	১৬৭	20	সর্দ্ব	এক ়	>>>	ર
কিন্স্ত	কি নম্ব	364	હ	এক	সর্ব্ব	:50	8

462:	चन्द्रः	वृष्ठे। व	इ.किः	चल्हः	<i>च</i> ड:	लुहे। পड	fe:
সর্বা	এবং	25.	•	স্থিতি } স্	হজি ডি হুচ্)	` `
• 61	021	222	8	₹ }	হুচ্	3 240	30
ইতি	ইভোগে	>>>	e	नुनी	नृनी	446	2
হুত্ত	স্ ত্ৰ	२•১	b	ए न	ভণ	238	28
চোক্	চোক্র ঐ	२०२ (५)b(5•) नोः	नी९	•••	se
छपी	खनग	२ •	30	ভনা	ভণা	0.9	>¢
म्हा त्रट	क् यरज	₹•€	>>	মণ.	म न्	ক্র	*
পুছা	পুচ্ছা	२. •	5	অধি	व्यक्षि	ক্র	25
নিতি	ণি তি	ক্র	ર	A(&)	স্(সূ)	0.1	२७
ন্তপত -	ত্তপতি	२०१	6	বোকো	(वर अं।	>>•	20
পুরং	প্রং	376	ર	বছান্	বিখান্	0:5	>
-	\$ 9)		ग्रही	यही	ক্র	4
८न्होदब्र }	ट्टी बटबाः	्रे ^{२२७}	٠, ٥	কর্খে:	কর্ষে	330	>8
কি ডিপ	ক্ ১প	२२७	२•	শতৃ	শতৃঃ	७५१	9
বিধৎ	ৰিধঃ	२२৮	58	ক্র	a	624	5.5
বিশ্ব্যা২	বিদ্যাৎ	१७२	>9	সোত্ৰ	সৌত্রঃ,	627	¢
টিকণ্	ট্টিকণ্ ৷৪০	1 208	24	স্পৃত্তি	স্পৃদত্তি	900	
শংসার্থ্যে:			F	अक् ः	मचुः	ক্র	:6
व्यन १ स	व्यमश्ख	206	>>	ग्रॅंच पः	यु र्व णः	७ 8 •	¢
বক	বিক	२८७	•	শক্ৰ:	শক্তঃ .	3	>6
ৰ্যাতে	গ্যতে	249	25	যেখা	ৰ্যেখা	085	¢
चटनाः	चरनाः	२७৯	>8	ভূ:	ভূ:,	ক্র	>•
च्या है ।	≈98 1	२७৮	, ک ک	চুৰ্	চূ १९	ঐ	24
অপু	অপু	२१२	२२	শি মৃতা	দম্ভা	860	२२
ৰ	ิธ์	२१२	२७	র ধব	ब्र क	980	8
বা	পা	२१७	۲	দ্বাবৎসা	इ त्रा	3	२५
खवान्	" ড ়া ন্		59	ভূ্যপাচ্চ	ভ্যুপাচ্চ	000	>6
रागा	ব্যাখ্যা		22	इ न	देन	৩৫৭	>
বিচাত:	বিচিতিঃ			লধ্বি	লব্জি	066	ь

405:	एक:	नृष्ठी भ	ऽ किः	चन्दः	4 £:	शृष्ठी भड	(Tar:
छेई ।९	<u> छेड</u> ी ९	068 (•)(>•)	ব্যক্ত	ব্যস্থ্র	874	۲
গ্রাহং	অ'াহং	966	>	পাক	শাক	83.	•
ক্র:	क्वः	095	20	বিশ্ব্য	বিশ্ব্য	\$	¢
প্ৰাকৃৰ	প্রাপব্য	999	•	न	¥	ð	₹9
মা র	चर ग्र	ঠ	20	দিশা	की ना	857	20
ৰন্ধ)	বন্ধ'ন')			শ্চ্য র্থে	ন্যর্থে	822	8
শক }	শব্দ 🕽	. 099	24	P1.8	हाड	ঠ	₹€
সম্পা	সমাসা	996	રર	পু त्री	পুনী	820	•
কানাং	কাণাং	600	22		त) किर म	শে।) }	
ষ্ঠ	শ্রুত	0b•	٠ ،	२ प्रश	} হয়মব্য	> 2 3	0 36
<i>ज्</i> कः	ভুক্তং	3	₹€	সাধৰ্ম	সা1ৰ্শ্ব্য	828	२৫
অ তিহ্নং	অওি শিং	CF9	>>	পুৰ্বেগ	পুর্বো	805	ь
মূহ	मू इ	678	>	পৃৰ্বন	পূৰ্ম	D	۵
ত্বনি	তণী	ক্র	₹•	কুহত্তী	বছব্ৰী	3	२१
একান্থ	একাদ	660	8	দ্যশক্ষাং	দ্যাশক ঃ	825	24
ভূ'ত	ভূতি	B	•	মুপমা	যুপমা	800	>>
কঠিণ	क क्रिन	960	>4	সমূহ	সমূহ	ক্র	ð
ৰ্থ্যস্তা	र्थाष्ट्रः	ঠ	36	व्यवीय	अब्रोतः	802	•
विनिवि	ন্নিবি	8 • •	۵	কামশ	काष्ट्रभः	ক	ঠ
ৰ্থাৎ	ৰ্ব্যাৎ	808	•	2144	ष्।कनः	à	२२
ভ ড ্ সাং	তঙ্ন স্	१९ २२०	>€	পড়ুণ:	গড়ু লঃ	882	۴
(र्काम	নিৰ্দেশা	. ঐ	२५	কশ	কুখা	8 8.8	२२
म श्रूदः	ময়্র	8•9	હ	वरकी	इरखी	8 9 45	२२
বস্থারে	বিস্তাবে	87.	۵	इ ः	७ ९	889	۵
<u>রহা</u>	কুহা	878	٠	ণ্ডর	তরপত্	3	59
শ্বস্ত	गुउ	ক	332	বায়াৎ	ব্যরাং	884	F
ঔপম্য	ঔপস্য	874	₹¢	ছেনো	েহ ণো	848	v (¢
म रहड	ष(क्उ)	6 2 8	۴	তত্রা	ভৰা	866	54
				সামা	मग ा	845	76

थलकः	ভ াহ:	भुष्टे। १	াঃ জিঃ	व 🕫 इः	64:	পृष्ठा পड	कि:
কিপ্	কিপ ্	६७२	56	वनप	ছণ্ডু	CO	ડ ર
নপ্ংস-)	নপৃংস∙ }			ব্ৰহ্মবন্ধ:	ব্ৰহ্মবন্ধূ:	৩৬	₹.
কেণ্ডি 🕈	কেহুতি 🕽	8 62	39	এভ্যো	এভ্যো	8 %	5
কিঠ	49	ক্র	२ २	লাপ্যা	গাৰ্গ্যা	¢ o	٩
সদ্ল:	শক্ল:	ক্র	:•	মাতৃত্রা	মা তৃত্র 1	15	5
ষ্যায়নঃ	ষ্যা য়ণঃ	846	8	টিক9	ট্ট কণ্	>.0	હ
বাণ্য	বাস্ত	847	24	আ্য	আগ্নি	223	56
পট্তা	পট্ভা	895	:>	নিরুদ্র:	নিরু ভঃ	225	> '0
मृ ष	মূগ	8 9 २	۳	ব্যকর	ব্যাকর	220	२०
সুহ্ণী	র্ষলী	8 - 5	56	ত্ত	33 ,	22p.	>>
পানাং	পানং	8৮ ২	ડ ર	टे वगूंक	देवभू क	>> 0	2,
ञ्चि	मूनी	848	¢	ঐ	ক্র	5₹•	>>
এষ্	এমৃ	8 ৮ 9	58	উৰ্দ্ব1	উৰ্দ্ধা	52.8	25
ভান	অনু	ক্র	>6		\$	ঠ	\$2
স্বয়া	नदर्भः	848	٩	यकेग	य ष्ठेग	>01	:6
युट्टा	য়োগতো	8 म 🄊	২৩	थ े छ	প্ৰহ্ম এব	503	٩
উৰ্দ্বং	উ ৰ্দ্ধ ং	(3)	ঐ	মামাদিঃ			२९
এমৃ	এমূ	866	59	्रीपन्स)	(प्रम्(लू :)	284	•
ग्रह्मगुः	म्ह्रनाः	ক্র	२०	বল্ল	वल् नः	>8¢	•
द्रत्य	মকরকে	ঐ	२७	দাহাব্য	সাহায্য	580	•
Ü	ইবর ধতে			কুপ	፠ ሣ	>54	8
जार्जग्रानाः	গাৰ্ব্যাণাং	ь	>	८ षटभी	ष्टभी	> 0 0	۶•
वर्जा1	গাৰ্গ্য1	Ь	•	সাং	शष्ट	265	76
পাণি	অপানি	२५	२७				
मु इन्:	সভাঃ	२६	8				
আংশাক	অ বোক	5 8	> \$				
*a - \$	'nń.	२९	₹ \$				

স্পন্ম ব্যাকরণম্।

€ बद्या शर्भाव

- अभ्या भवगर (त्या क्या कि प्राचीन क्या क्या कि प्राचीन कि प्
- २ । श्रम्मनाच्यः ऋ हैर्* शुर्नः व जायाग्राः गाह लक्ष्यम् ।।

আধ বিবরণঞ্চ ত্রা শক্ষেশাসনেন সহ পালিনী-রাদিশব্দমূতী শক্ষপলকা সৌকর্যোপাধ্যেক প্রতিসংক্ষ্রস্যান্দ শব্দলক্ষণস্য। (ঝ)

- লক্ষাতে সংস্কৃত ভাষে আহিতে দেন তৎ লক্ষ্ম প্রেরীনতি। ভাষা লক্ষ্য প্রাক্ষির মদানিক্ষ্যাবৰং স্প্রেগ্ন্। অংশা চন্দ্রনাল প্রকৃতি স্থানিক্ষা তিছে। তিত্য বৃদ্ধিম ক্ষা। সংআচি পরি ভাষেতি বিধিনিয়ম এবচ। অধিকারোছতি দেশত বড়বিবংশ্রেশ্নী নিতি।
- শশ্ব অস্থিবাতে বৃংশাস্ত হেহনেতি শশ্বশ্বনং বাছি
 বরক্তিভাতরিকাণীতে। শহুঃ।
- পাণিনীয়াদিশক্ষ্তী: শক্ষরণং উপলক্ষ্য লক্ষীকৃত্য আলোক্য অবলফোতার্থ:।
 - † জুকর: জুবোধ: ডবোগাধরে জ্ঞানার। জুগেন বোধারেভার্থ: ক: প্রতিসংক্ষদা প্রকৃতিপ্রভারবিচারের ক্ষুসংক্ষার্ন্য।

অস্ক্রিয়'র্থং।

^{🕇 ।} বাৰৎ প্ৰান্থ সন্দৰ্শেশ পুণ্ডপাত্মিসবাহি জাবৎ।

न इंड वाका।

ভত্তাদো বর্ণোপদেশঃ, শান্ত্রপ্রয়োগার। আইউ ণ্, ঋ ৯ ক্, এ ও ও, ঐ ও চ্। ১। আদিরিভাক্তোন (এঃ) সমধ্যঃ।

[আদি: সাইডা আ আকোন আ, সমধাঃসা]

আদির্বর্ণোহন্তোন ইতা ণকরাদিনা ইংসংজ্ঞাকেন সহ সমধ্যো গ্রাহ্যো-ভবতি।

অণ্ইত্যুক্তে অকার ইকার উকারা গৃহেরন্। ণকারা-দীনাং প্রত্যাহারার্থ মুক্তারণম্।

এবমন্যে চ প্রকাহারাঃ (ট) প্রবোগে দ্রন্তব্যাঃ। যথা অণ্, ইন্, অক্, ইক্, উক্, ঋক্, এঙ্, অচ্, ইচ্, এচ্, ঐচ ইত্যমী একাদশ। অপরে চ নাম্নো (ঠ)-পদিফা বাদশ।

২। অচে (ড) ২ন্যে হল্।

[च हः ४।, ज्ञा ।।। इत् • ।।]

অচোহন্যে বর্ণা হল্সংজ্ঞকা ভবস্তি। কাদরে। হাস্তা:।

भग्निष्यर वर्गमा।

चन्न् •১।, আদিছরং ১।, বর্গদা ৬।।

কচটতপাদীনাং পঞ্কানাং বর্গদংজ্ঞা প্রতীতৈব; (ঢ) তদ্য আদিবর্ণদ্বয়ং খ্যু সংজ্ঞংদ্যাৎ। ক, খ, চ, ছ।দি।

up । ७ (४ डव हेटा घाः ४४'': .एस।

ট। প্রত্যান্তি ছে দ কিপাতে শক্রে অনেনেতি প্রত্যাহার: (সংক্ষেপঃ)

ঠ। সম্বনাম ঘটিতেন পাবিভাষিক স্তেব, উপদিষ্টাঃ বাবলভাঃ।

ভ। বেদা: প্রমাণমিতিবৎ, অথবা সংজ্ঞাসংজ্ঞিনোরভেলোপচারাৎ বছৰচনমপি ন বিরোধার।

[।] शिकां वर ।

8। ज्ञीस जन्। १वीयः भाषान्।।

वर्गमा ज्ञीरा वर्ता कम् मः छः मार । भ, क, ज, म,व।

८। जृट्यां त्रास्। कृतः : भा वस्त - भा ।

ৰৰ্গন্য চতুৰ্থো বৰ্ণো ঝষ্ সংজ্ঞঃ ন্যাৎ। ঘ, ঝ, ঢ়, ধ, ভ,। ঙ। ঙ্ৰু পঞ্জ:।

[७म •>।, ११ म ।]

বর্গদ্য পঞ্নো বর্ণো ভম্দংজ্ঞো ভবতি। ঙ, ঞ, ণ, ন, ম,।

१। सार् वर्गा ५ ७ ग्। १।

[यंत • ১।, वर्गः ১।, व्यक्षम् ১।]

ঙম্হীনো বৰ্গো ঝয় সংজ্ঞা ভবতি। ক থ গ ঘ চ ছ জ ঝাদি।

५। यवत्राना यग्।

[श.च,त,नः, भा। यन् •भा]

এতে যণ্সংজ্ঞকা ভবস্তি।

১। শ্বসাঃ শ্র্।

[भ, व, नः: ১।।।, भत्र •।]

ত্তে শর্দংজকাঃ স্থাঃ!

५०। थत् थस् गत्रो।

[ধর্•১৮, খধ্, শরোসা

বর্গাদিদ্বয়ং শনসাশ্চ থর্সংজ্ঞকাঃ হাঃ।

১১। থকজ্বিতোহল্হশ্।

[अक्रिकान: (भव-छेक् विख:))।, ११०) १ १४ -।]

থর্ পরিহানো হল্ হশ্সংজ্ঞাং। গঘঙ ইত্যাদি।

৭। অঙ্ম ্ই।ও বছরীতি ন তৎপুক্বঃ, আবদ্যমানোভ্য ্বশিৱিতি বাক্সৰ

२२। ७ग यन् शैला यन्।

[क्स. रत.-शैनः । वन् ०)।

ঙম্ বণ্ হীনো হল্ ঝল্ সং জঃ স্যাৎ।

>**) अलट्**शित्। भ्^{मद्दः ।, मह, • ।।}

শর্ হকার-বহিন্তো হল্ ময়্সংজ্ঞঃস্যাৎ । **ট এতে প্রতা**ভারাঃ প্রারোগে লক্ষণীলাঃ ।

১৪। অংঙ্গোইননুশিকাং।

[জং, ভ্রম:১৮৮, অ*রুন:সি* র::১৮৮]

এতে অনুনাদিকসংজ্ঞকা: স্থ্য, মৃথসহিতরা নাদিকরো-চার্যানারাং।

: (उ) वर्गायरतो मङ्गा**ीराः** (उ)मवर्गी।

[ৰৰ্গা, খন্ত্ৰোচা। সন্দ'ভীয়ে:৩া৷৷ সংগৌচা।]

ষর্গাঃ ককারাদি বর্ণঃ, স্বরোহকারাদিন্তে সজাতীয়ৈঃ সহ স্বর্ণসংজ্ঞাকে তেওঁ । বর্গের বর্গের স্বর্ণঃ, স্বরঃ স্বরেণ স্মানপ্রকারেণ। দণ্ডাগ্রং, দধীদং, মধ্পমং, পিতৃরং, গম্প্রকারঃ; অকঃ স্বর্বে দার্যঃ, ঋত বর্ণযোশ্চ সাবর্ণং বত্ত-ব্যম্থ—হোতৃ ভকারঃ হোতৃকারঃ। পূর্ব্বাকো দার্যুরে ৠকার এব। অক্টোম্থানানি বর্ণনামুরঃ কঠঃশিরস্থা। জিহ্বামূলক দন্তাশ্চ নাসিকোর্তক তালু চ। কস্য পুনঃ কিং আন্মৃত্ ক্, ক্, হেব্সজ্জনীয়ানাং কঠঃ; ই, চু, য়, শানাং তালুঃ; ঋ, চু, র, ষ্বাণং মৃদ্ধা; ভ, তু, ল, সানাং দন্তঃ; উ, পুণাধানীয়ানাং (থ) ওঠঃ; পার্থ ইত্যুপাধানীয়ঃ এলৈতোঃ

णूना श्वान्थ्यरञ्जात्त्रभाटेनः

थ । डेन । आधारक (ननाक) लेक्ट्रावाक हेडिकर्मनामीरः

• কণ্ঠতালু; ওদোতোঃ কণ্ঠেষ্ঠিম; "বকারসাদন্তেতিম্; জিন্ধামূলীয়সা জিন্ধামূলম্, ক + ইতি জিন্ধামূলীয়ঃ অনুসারসা
নাসিকা স্থানম্, গ, জ, ড, দ, বাস্তু কণ্ঠোরসাঃ। পাঠাযোগে— ভ্রদীঘাদয়ঃ। স্বরধর্মাস্ত, একমাত্রো ভবেজুসো,
জিনাত্রো দীব উচ্যাতে, তিমাত্রস্ত প্রতো জেলো ব্যঞ্জনকার্জমাত্রকম্, সন্ধাক্ষরাগাং ছ্রা ন সন্ধি— এ, ৪, ঐ,
সন্ধাক্ষরাগি।

3७। इस्य लघुः। इयः २१, मण्ः १। इयः ४८। इसः व्या लघु मर छ्वः मार्थः। च, दे, छ ॥ २। ऽ१। मीर्था छकः। मीर्थः वरा छकः मर छः मार्थः। चा, के, छ, ॥, ३। २৮। इस्र के मर्स्यार्थः।

[হুস: ১I. 5 • ১I, সংযোগে ৭

সংযোগে পরে ব্রস্বরশ্চ গুরুসংক্ষো ভব্তি। ন লখ: . তেন অততক্ষিত্যতালঘুশরতাং সম্বদ্ধাবো নাজি। তথা বিদ্যানুষারপরোহপি, "কঃ কিং করে।তি।"

১৯। উদিদ্ধুস্বশ্চ সবর্ণেনাই প্রত্যােইতপরঃ। [উদিৎ ১১। ইস্ক ১১, চ০১। সংর্ণেন ১।, অগ্রন্তারঃ ১।.. অত্পরঃ ।]

প্রােগে উদিন্থ। ব্রস্থরণ্চ গৃহ্যাণিস্বর্ণেন সহ আহেয়া ভবাত, উদিং-কু, চু, টু, তু, পু, চো: কু: ব্র্যাং — অ, ই, উ, ঋ, ৯ 'আদিকোগুণাং' দেবেন্দ্রং, খট্ছে, অপ্রত্যা ইতি কিং বুভূষ্যুং, আগমোহপাত্র প্রতীয়মানত্বাং স্বরূপেণ গৃহতে, ইট্, ণৌপুঃ অর্গাতি। অতপর ইতি কিং অত্রশ্রুকৈঃ নেহ খটাভিঃ

২০। হলোলগ্লাঃ সংযোগঃ।

[रुन: आ। नद्भाः आ। मः (योग: अ।]

সংলগা হলঃ সংযোগসংজ্ঞকা ভবস্তি। উক্ষাঞ্চকার গ্রন্থি লিক্সিদেরণ্ডেয়ার্না, রিত্যাম্।

२:। दक्षितारिकाताताक्षे अरकिका।

[বু.র: ১া, আদৈজ রাল: (আৎ, ঐচে, আর্, লাল্), ১াা, জকঃ ৬া ঐচ্-১া, এচ:৬া, চ-১া] (দ)

আং, ঐ, ঔ, আর্, আল্, ইত্যেতে র্দ্ধি সংজ্ঞকাঃ
সমসংখ্যানা ধ)মুদ্ধেশিনামনুদেশো যথাক্রমম্, ইত্যকঃ স্থানে
যথাক্রমং ভবস্তি। ঐজেচশ্চেতি পরিভানিত। বক্ষ্যতি। অত্পধেচোর্ণিতাতি র্দ্ধিঃ। পাচয়তি, জাপয়তি, ভাবয়তি, কারযতি, ণিতির্দ্ধি রচামাদেঃ-আল্ফারং; ঐজেচশ্চেতি স্থানে
সদৃশতমত্বাং এদৈতোরেঃ ওদৌতোরোঃ স্থাং, র্দ্ধিরেজ্ঠঃ,
তবৈষা, জারিহত, তবৌদনং, র্কো।

२२। এ धत्राला छ । इकः।

[এছবল: (এছ, অর.অল্:: ১৪:, গুণ: ১৮, ইক:খ]

এ, ও, অর্, অর্, ইতেতে গুণদংজ্ঞ চাঃ ইচঃ স্থানে যথা ক্রমং ভবস্থি। আদিকোগুণঃ—দেকেন্দ্রং, চল্রে পমঃ, অর্ক্রচঃ, তবল্ধারঃ। ব্রস্যা গুণঃ, হে সথে, হে বায়ো, হে পিতঃ। ২০। দা ধা স্রপ্। দা, ধা. ১১॥ মুং ১। মুপ্ ১১॥

পवक्किता ने। भान पूनरक्षकः मार । माना अ मान (मा

দ। আং, ঐ. ঐ. আর্, আল্. এতে সত্ত এব বৃদ্ধি নংজ্ঞকাবর্ণাঃ। আকঃ স্থানে আদিটা যে তেহপি রুদ্ধিনংজ্ঞাক। বর্ণাঃ ।

ध । म्य मःश्राताः वित्यश्राताः উत्किश्तिः। अन्न्याताः अस्तमः वित्यत्रका निर्मानः ।

ख्याच्याक्रम्य ।

.(मधः, (नामम्(चाः मखंर। था-शक्तिंशतिः किः, विविः, नज्रः श्रीनिषः। ज्ञानिनिक्ति किः १ माश्र-माज्य धानार, रेमश, ज्यव-माज्य बञ्जर ।

২৪। কতিবহুগণতাবদাদিসংখ্যা। (ন)

[কভি. বছ. গণ, ভাবদাদি (ভাবৎ আদি) ১১, সংগা) ১১]

এতে সংখ্যাসংজ্ঞকাঃ স্তঃ। কতিধা, বহুকৃত্বঃ, গণশঃ, তাবৎকৃত্বঃ, যাবৎকং, এতাবৎকং।

২৫। স্বরাদি চাদি বদাদি তদ্ধিতক্তা মান্তরুদব্যয়ম্

্মিরালি (শ্বর্জালি), (চ আ্লি), বলালিতদ্বিত,(বং-জালিড**দ্বিত)** ক্তা, মাসকুং-১। ভাষারং ।] (প)

ৰজি, শন, নানা, গ দো, হি অধুনা, দানী, ডাম, তৎ, সম্-সিম এছাদ্-ছাদ্
আদাদ্, এদা, বি, থা, থমু, ধা, এধা, ধমুণ্-ধামুণ্ আদৃ-আকাৎ-আতৃস্ রি
রিষ্টাৎ, অভি, এন আচ্, আহি, রুজদ্-ধাসণদ্-চু সাৎ-জা-ডাচ্ এতে বলাদরঃ
আধীতি শৎ, অনোবাং চু এ-ডস্-ত-অভ-এভিবিচ্ডাবিংশদিতি।

অনোহণি স্বাধরঃ সহি যথ। পুনঃ, শনৈঃ ঋ্তু, লুগদি, স্গপৎ অভর, সন্থত, আবাৎ পু:ক্ ভাব্ খন্, বালোঁ, সাধ্য, চিব্য, ননাক, ঈৰং, ভোব্য, ভ্রীয়, অধসা সম্বাং, নিজসা, বুলা, নজ্যু, নঞা, হতোঁ, ইশ্বামি, সনা, সনত, সনাৎ উপধা, দিবস্, অভবা, অলবেণ জোক্, বহসা, বিনা, নানা, স্বধা, অলুম্, বস্ট্, শ্রেষট্ বেষট্, অনাৎ, উপাংশু, ক্ষা, বিহারসা, লোবা, মিধাা, মুধা, পুরা, মিধো, মিথা, মিথা, প্রার্য্যুহ্স, প্রার্হ্ত্য, প্রাহিক্য, প্রাহিক্য, আধাহলম, সাক্য, সাদ্ধ্য, নম্ব, হিক্ক, ধিক্, অথ, অন্, আরু, প্রাম্, প্রাম্নাম, প্রম্নাম, সাম্নাম, প্রাম্নাম, প্রাম্নাম, প্রাম্নাম, প্রাম্নাম, প্রামনাম, প্রাম্নাম, প্রাম্নাম, প্রাম্নাম, প্রাম্নাম, প্রাম্নাম, প্রম্নাম, সাম্বাম, প্রাম্নাম, প্রাম্নাম, প্রমান, সাম্বাম, প্রমান, সামন্নাম, প্রাম্নাম, প্রমান, সামন্নাম, প্রমান, সামন্নাম, প্রমান, সামন্নাম, প্রমান, সামন্নাম, প্রমান, সামন্নাম, প্রমান, সামন্নাম, সামন্না

শক্ষাৎ নক্ষেতিতং বোর্থ মন্তিরতে দ বাচক:।

न। मःशायाङ्करनामि मंखाः।

প। সদৃশং তিবু লিকেয় সঞ্জেছ বিভল্ছি ৰু।

বচনেৰু চ সংক্ৰেপু সলবেণ ভিভদবায়ম্।।

यः गंकां तर महानशम्ह, विनान कि कि लिंकां मह, ख्रुन्त, ख्रुन-साखक्र क्रि.

ख्रुत्र स्थान स

২৬। নিপাতাশ্চাদরে ইসতে।

[बिश्राका: ५।। हाल्य: ५।। क्रमह्च ।]

অদুবো বর্ত্তমানাশ্চাদয়ো নিপানসংজ্ঞকা: স্তঃ। চ, বা, বৈ, অমা, স্বাহা. স্বধা, ওঁ, অ, আ, ই, ঈ, উ-উ, পশু, ঙু. আদ্ধা, অহো, আহো, উকাহো, কং, শং, শুভং, স্বস্তি, অস্তি, মন্যে, অসি, ক্রহি, বিভাষা, অন্যত্তরস্থাম্, অভীকুম্, নঞ, নো, না, অহ, আহ, ইতিহ, আফুভিগণোইয়ম্। অদ্রব্য ইতি কিং স্বাহা, অ্যায়ী।

২৭। প্রাক্ত্যপদর্গঃ প্রাণ্যাতেঃ।

[बानि • ১।. উপদর্গ:১। প্রাক • ১।.ধাছে: ৫।]

প্রাদিনিপাত উপদর্গসংজ্ঞকশ্চ ধাতোঃ প্রাক্ স্যাত্। প্রামতি, পরিণীতঃ। প্রাদির্ঘণা —

পদাস্থার প্রতি পাদিত ধর্মজ্ঞ সনিধিনাকেণোপকারকত্বং দ্যোভকত্বং। বাচকা; জবাস্থায়ার ব্যাহ্য বাহ্য বাহ্য

चातावित घ'नतः त्रिविध। — वा, व, जव, এव, এवः, नत्रम्, मूनम, भवंद, चूत्रन, टिद, तिद, किछिद, वेळ, वेळ, मांड, नेळ, यावद, छावद, छथाहि, किन, चथ, चुर्वू, च, चानद, क्षर, च्रन्द, मार्किम, निकम, छुन, च, आ, हे, के, छे, क के, द, के, नक, वधा, एचान, चात्र, अक्षात, कथाठ, चराक, देखाना। প্র পরাহণ সমন্বর নির্মুর জি ব্যধি সৃদতি নি প্রতি পর্যাপয়ঃ। উপ মাঙিতি বিংশতিরেষ সধে উপসর্গবিধিঃ কথিতঃ কবিন। 1(১)

অন্তঃশব্দে পত্তে, ধাঞো, ঙাপ্, কিবিশে, চোপদর্গঃ। অন্তর্গাতি, অন্তর্দ্ধা, অন্তর্দ্ধিঃ।

২৮। মিদটোইন্তাৎ পরঃ।
মিং ১১, অচা ল, অন্ত্যাংল, পরা ১০

আচাং মধ্যে অন্ত্যাদচঃ পরো মিংসংজ্ঞকঃ স্থাৎ।

পয়াংসি সিঞ্চি।

২৯। উপধোপান্ত্যঃ। [উপধা •১া, উপান্ধ্যঃ ১া] (২)

खेशास्त्रा वर्ग छेल्याहार्छ। शहराहि।

(২) অত্তে ভব্মিতান্তাম, অন্তান্ত স্মীপমুপান্তাম।

⁽১) প্র(১)—গত্যারস্তোৎকর্ষদর্শতোভাবপ্রাথম্যধ্যাত্যুৎপত্তিব্যবহারের, পরা (২)—পরাভবানাদরপ্রত্যারন্তিজগ্ভাবের্, অপ (৩)—অনাদরভ্রংশসাকল্যবৈরূপ্যত্যাগনঞর্থের্, সম্ (৪) – প্রকর্ষের্র্যানির্স্থের্যিনিত্যাভিম্থোর্,
অর্(৫)—পশ্চাৎসাদৃশ্যলক্ষণবীপ্রেয়স্তাবভাগহীনসামর্থ্যসাহার্য্যসামীপ্যদৈর্ঘ্যপ্রর্থের্, অব(৬)—নিশ্চয়সাকল্যানাদরের্, নির্(৭)—নিষেধাত্যর্থনিশ্চয়বহিষ্ণরণের্, তুর্(৮)—নিষেধকন্তনিশাহবক্ষেপণের্, অভি(১)—সমন্তাভ্ভয়ার্থলক্ষণবীপ্রেগ্রার্থর্ণের্, বি (১০)—বিশেষবৈরূপ্যন্তর্থগিতিদানের্, অধি
(১১)—উপরিভাবে, স্থ (১২)—পুজনশোভনায়াসাতিশরের্, উদ্ (১৩)—
উর্দ্ধোৎকর্মাকট্যনৈকট্যের্, অতি (১৪)—অভিশয়াতিক্রমপুজাসস্তাবনের্,
পরি (১৫)—সর্বতোভার্যহতিশর্বীপ্রেথস্তাবিচ্ছভাগত্যাগনিয়্যম্র্, নি(১৬)
—নিশ্বনিষের্যাঃ, প্রতি(১৭)—লক্ষণব্যার্তিপ্রশাস্তীপ্রভাবভাগপ্রত্রপনসাদৃশ্ববিরেগ্রবীপ্রাস্থানির্, অপি(১৮)—আহরণালন্ত্রসন্তাবনিন্দাহম্প্রাস্থচর্বের্, উপ (১৯)—অর্গতিপশ্চাতাবাম্কক্ষাধিক্রহীনসামীপ্রশ্বাব্যের্,
আঙ্ (২০)—সমন্তাদ্গ্রহণপ্রত্যার্তীব্র্বর্যাদাব্যাপ্তির্, ইত্যুপ্সর্গর্মির্যা।

৩০। অচোহন্ত্যাদি টিঃ।

[অচ: ৬া, অন্ত্যাদি(৩) •১া, টি: ১৷]

অচাং সমিবিফীনামন্ত্যো যোহচ্ তদাদি টিসংজ্ঞকং স্থাৎ। পটৎশব্যঃ টের্ডিভি পটপটাক্ত্য।

৩১। বিধরে বিশেষণমন্ত্যমূত্রে ত্বাদ্যঞ্চ। [বিধরে ৪া, বিশেষণং ১া, অভ্যং ১া, উত্তরে ৭া, তু ০১া, আদ্যং ১া, চ ০১া]

বিধ্যর্থং যদিশেষণং তদিশেষণবতোহন্ত্যং বোদ্ধন্যম্ (৪)। পরে পুনঃ কচিদাদ্যক। অদ্বাহ্বাদেরিণ্ অদন্তাৎ দাক্ষিঃ, ঝতো রী চেক্রীয়তে। আদ্যক পরে আদিকো গুণঃ দেবেন্দ্রঃ। কচিদন্ত্যক্ আতঃ প্রাদেঃ কঃ হুস্থঃ।

৩২। স্থানে সদৃশতমোহব্যক্তযোগে। = । [খানে গা, সদৃশতমঃ ১া, অব্যক্তবোগে গা]

অব্যক্তসম্বন্ধে সতি স্থানে সদৃশতম আদেশঃ স্থাৎ।
যথা ঐজেচশ্চেতি এ, ও, ঐ, ঔ স্থানে ঐ, ঔ ভবতঃ।
ততাব্যক্তযোগে সদৃশতমহাৎ এদৈতোঃ কঠ্যতালব্যয়োঃ
স্থানে ঐভবৃতি। ওদোতোঃ কঠ্যেষ্ঠ্যয়োঃ স্থানে ঐভবৃতি।
তবৈষা, জায়ৈহত, তবোদনম্, রুক্ষো। ব্যক্তযোগে অসদৃশতমোহিপি স্থাৎ। এচঃ পাঠেহশিত্যাৎ গৈ:—গ্লাতা, দো—
দাতা।

⁽७) षाष्ट्राः चानिर्यम ७९।

⁽३) তদিশ্বেণবতোহস্তার তদ্বিশেষণাস্তাৎ কার্যাৎ তবতীতি।

৩৩। ন লুব্লুকা লুপ্তে প্রত্যায়ে তলকণং কার্য্যমঙ্গন্ত।

[ন ৽১া, লুব্লুকা ৩া, লুপ্তো ৭া, প্রত্যয়ে ৭া, তলক্ষণং ১া, কার্য্যং ১া, অক্ষয় ৬৷]

লুব্লুক্শকাভ্যাং লুপ্তে প্রত্যয়ে তৎপ্রত্যয়লকণং(৫)প্রক্-ত্যবয়বস্থ কার্য্যং ন ভবতি ।

বঙ্গা জনপদান্তেষাং নিবাস ইত্যণ্, জনপদবরণাদিভ্যো
লুপ্ ণিতি বৃদ্ধাভাবঃ। লুপি মুক্তবন্ধাৎ বহুন্বং, তৎ, যৎ
সমোলুকি টেরম ভবতি। অঙ্গভাতি কিং পঞ্চ সাম,
পায়ং, অত্র সমৃদায়স্ত স্ব্লুক্লকণং পদত্বং ভবত্যেব ন
লোপবিসগোঁ তু পদত্বলকণো, ন স্থাতি বিহিতো।
লুব্লুকা লুপ্তে নিষেধাৎ প্রত্যয়লোপে প্রত্য়লকণং
কার্যাং ভবত্যেব অগিচিৎ কিব্লোপে ব্রস্থাৎ তুক্ পিতি
কৃতি।

৩৪ | বিপ্রতিষেধে পরং কার্য্যম্ | [বিপ্রতিষেধে ১০, পরং ১০, কার্য্যম্ ১০]

ভূল্যবলবিরোধে পরং যৎ কার্য্যং তদ্ভবতি। উঠ্ ধৌতঃ। আদিকো গুণঃ ইতি গুণে প্রাপ্তে পরত্বাৎ বৃদ্ধিরেজ্ঠ ইতি বৃদ্ধিঃ।

৩৫। ইউদিদ্যৈ প্রায়ঃ প্রক্৯প্তিঃ।

[ইষ্টসিকো ৪া, প্রায়ঃ ০১া, প্রক্৯প্তিঃ ১া]

ইন্টার্থদিলৈ প্রায়ে। বাহুল্যেন প্রক্রপ্তঃ প্রকল্পনং কার্য্যমৃ(৬)।

⁽৫) তৎপ্রতায়লকণং তৎপ্রতায়হেতৃকন্।

⁽७) वथा देशेर्थिनिटेका अक्षत्रम किनानित्य अक्षत्र, किन्यद्र।

কচিদেকমাণ্যন্তবং। দিরাদ্যেকাচ্ ইয়ায় ভাজানিবন্ধ্য যদনন্তাদেরাত এচ্চ অধ্যেয় ভাজান্তবন্ধ্য আদেশঃ
স্থানিবং কচিং (৭), অস্তি ক্রুবোর্ভ্বচৌ ভবিতব্যং বক্তা
স্থানিবন্ধাং ধাতোগ্লিতি তব্যাদয়ঃ। কচিম স্থাৎ দিব উৎ
সৌ স্থোৎ দ্যোঃ অত্ত হল ইতি, ন স্থলোপঃ।

সূত্রে ষষ্ঠ্যাং ততঃ স্থানে পঞ্চন্যাং তত উত্তরে। সপ্তম্যাঞ্চ পরে তত্মিন্ গম্যে চোপপদে কচিৎ॥

সূত্রে ষষ্ঠ্যাং সত্যাং ষষ্ঠান্তর স্থানে তৎকার্য্যং ভবতি।
চক্ষিতঃ থ্যাঞ্ ব্যাখ্যাতা। পঞ্ম্যাং সত্যাং তত উত্রে।
পদাৎ ত্বাং মাং ত্বা মা বা। সপ্তম্যাং সত্যাং তিম্মন্ পরে
পূর্বিস্থ কার্যাং 'ইকো ঘণচি' দধ্যত্রে; গম্যে চ ক্ষ্যাজ্যায়া
শক্যার্থে; উপপদে চ'উদি গ্রহঃ উদ্গ্রাহঃ।

ইতি প্রীপদ্মনাভদন্তকৃতে স্থপদ্মে ব্যাকরণে প্রথমস্থাধ্যায়স্থ প্রথমঃ পাদঃ।

⁽৭) আদেশ: কার্য্যং তচ্চ কচিং স্থানিবং স্থানিতৃন্যং (যস্ত স্থানে জাতং তৎতুল্যং) প্রবর্ত্ততে।

প্রথমাধ্যায়ে দ্বিতীয়ঃ পাদঃ।

অচ্সক্ষিঃ।

১। একঃ পূর্বপরাচোঃ প্রাগ্যণঃ।

[এकः ১।, পूर्खभद्रात्हाः श्वा, लाङ् ०), रवः ८।]

যণাদেশাৎ প্রাক্ পূর্বাপরয়োরচোরেকাদেশে।(:)বক্তব্যঃ।

২। অকঃ সবর্ণে দীর্ঘঃ।

[व्यवः ७, जवर्त १।, शोर्षः १।] (२)

সবর্ণে পরতোহকঃ স্থানে পূর্ব্বপরাচোরেকাদেশো দীর্ঘো ভবতি। দণ্ডাগ্রম্, দধীদম্, মধূপমম্, পিতৃণম্, গন্ইকারঃ, হোতৃ + ৯কারঃ := হোতৃকারঃ, পূর্বাকো দীর্ঘত্তে, ৠকার এব।

৩। আদিকো গুণঃ।

[षाः १, हेकः ७, ४१ :।]

অবর্ণান্তাত্তরতা ইকঃ স্থানে পূর্ব্বপরাচোরেকাদেশো

⁽১) উভয়োরেকীভাব:।

⁽২) "সবর্ণে দীর্ঘাঁং" ইতি কৃতে সিদ্ধে কিমক ইতি চেন্ন সাবর্ণাং হি তুল্যন্থানপ্রবিদ্যালয় স্বর্গ্য তাদৃশেনের সরেণ, তথা তুল্যন্থান-প্রবিদ্যালয় বর্ণাগ্য তাদৃশেনের বর্গোণ ভবতি, তওশান্ধরে (অবেধ + এ) ইত্যত্ত 'এ'কারে পরে একারস্থা, তথা কক্ষ ইত্যত্ত করারে পরে ককারস্থা দীর্ঘাণ্ডং সম্ভাব্যেত। নথকো দীর্ঘাণ্ডং প্রস্তাহ্যেত অবেড়া ন তর্মানারম্য।

গুণো ভবতি। সুখেন, মালেহ, দেবোপমঃ, অর্দ্ধচঃ, তব-ল্কারঃ।

8। রদ্ধিরেজুঠঃ। [র্দ্ধি: ১), এজ্ঠ: ৬।] (৩)

আদিত্যের অবর্ণান্তাত্বভরস্থ এচঃ উঠশ্চ পূর্ব্বপরাচোরে-कार्तिभा वृद्धिविक । जरेवश, कारेशरूक, जरवोपनम्, ब्राक्ती, সৌপগবী; উঠঃ খল্প ধোতঃ।

८। स्नामीदत्रित्रित्।

[स्वार १।, जेटविटलाः (जेव, स्रेतिल्) आ]

अभकामी दिविता गांतिकः स्थान छ गांत्र न दिविः স্থাৎ। স্বৈরম, স্বৈরী, স্বৈরিণী। প্রাতিপদিকগ্রহণে লিগ-বিশিক্টস্থাপি গ্রহণমিতি ঈরিণ্যাশ্চ মিদ্ধিং (৫)।

৬। ঋণ, প্র, বৎসর, বৎসতর, দশ, বসন, কম্বলাদৃণস্থা।

——কম্বলাৎ el, ঝণস্ত ৬i ী

খাণাদেরুত্তরস্থ খাণস্থ খাকো রুদ্ধিঃ স্থাৎ। (গুণাপবাদঃ)। খাণার্ব্য, প্রার্থ্য, বৎসরার্থ্য, বংসতরার্থ্য, দুশার্থ্য, বসনার্থ্য, কম্বলার্থম।

⁽৩) ইছ-কার্য্যিণা হক্ততে কার্য্যী কার্য্যং কার্য্যেণ হক্ততে, নিমিত্তত্ত নিমি-ত্তেন ডজেমনুবর্ত্ততে, ইতি স্থায়াৎ নিমিত্রপ্রস্থ আদিত্যসামুবর্ত্তনং ন ডু कार्याञ्च थनञ्ज, न वा कार्याण देक देखि।

⁽৪) উৎসর্গাপবাদয়োরপবাদবিধির্ব লীয়ানিতি পরিভাষয়াত্রাপবাদবিধে-प्रतिदाय बनवदः, न जू खनविदाः।

⁽৫) অধাত্বিভক্তার্থবৎ প্রাতিপদিকমিতি সংজ্ঞাকরণাৎ স্ত্রীপুংনপুংসক-विभिद्धेरेक्टव शक्क शहनम्।

৭। ঋতস্থ তৃতীয়াসমাদে।

[अञ्च ७, ज्जीताममारम १।]

তৃতীয়াসমাসে অবর্ণান্তাত্তরতা ঋততা বৃদ্ধি: স্যাৎ।
শীতেন ঋতঃ—শীতার্তঃ, কুষয়া ঋতঃ—কুধার্তঃ; তৃতীয়াসমাস ইতি কিমৃ ! পরমর্ত্তঃ (৬)।

৮। প্রাত্তোচ্যে देवग्रानाम्।

[প্রাৎ ৫া, উল্টোট্টেইবয়াণামু (উচ়, উচ়ি, এব, এব্য) আ] (৭) প্রাদেষাং বৃদ্ধিঃ স্যাৎ। প্রোচঃ, প্রোচিঃ, প্রৈষঃ, প্রৈষ্যঃ।

৯। অক্ষাছ্হিণ্যাঃ।

[चकां ९।, উहिन्ताः ७।]

বৃদ্ধি স্যাৎ। অকেছিণী সেনা; পূর্ববিদাৎ সংজ্ঞায়ামগঃ ইতি পত্বমৃ।

১০। খাগাদিধাতোৰুপদর্গাৎ।:

[अश्रानिशारणाः (अक्-आहि-शुक्) ७।, छेनमर्गार ।]

প্রাদেঃ পরস্য ঋগাদের্ধাতোঋ কো বৃদ্ধিঃ স্যাৎ। প্রাচ্ছতি, পরাচ্ছতি, উপাচ্ছতি, আদিত্যেব অমৃচ্ছতি।

১১। वा चुन এहारमण्ड।

বা ০১া, সুপ: ৬া, এডামে: ৬৯, চ ০১া

⁽७) প্রমশ্চাসো ঋতশ্চেতি কর্ম্মধারয়:।

⁽१) উচ-উটি-ইত্যেবংরপশ্চ সার্থকিই বাহণং, ন তু নির্থকি যা, অতঃ প্রা+উচ্বানিত্যত্র ন ভবত্যেব। প্রোহ, ইতাপি শাকটায়নমতে। এবসাহচর্যাৎ এব্যেত্যনব্যমুক্তিব গ্যৎপ্রত্যয়ান্তশ্চ গ্রহণং, ন তু নিজ্জশ্চ ইষ্ণাভারম্ভ্রত্য-য়াজ্ঞ চ।

স্যাৎ। প্রাষ্থীয়তি, প্রব্রভীয়তি, উপাক্ষানীয়তি, উপক্ষানী-য়তি; এঙাদেঃ উপৈকীয়তি, উপেকীয়তি, প্রোষ্ণীয়তি, প্রোষ্ণীয়তি।

\$ । ইকো যণচি। [ইক: ७।, ঘণ্ •১।, খচি १।]

ইকঃ স্থানে অচি পরে যথাক্রমং যণাদেশো ভবতি। (একঃ পূর্বপরাচোঃ ইতি নির্ভ্রম্) দধ্যত্র, সধিবদম্, পিত্রর্থঃ, লাকৃতিঃ।

১৩। এচো২য়বায়াবো বান্তো যি চপ্রত্যয়ে।

[এচ: ৬া, অরবারাব: (অরু, অব্, আর্, আব্) ১॥।, বাডঃ (ব অস্তু) ১া, যি ৭া, চ •১া, প্রত্যেরে १।]

এচঃ স্থানে অচি পরে যথাসংখ্যং অয়, অব, আয়, আব, ইত্যেতে আদেশা ভবন্তি; নাদো প্রত্যে চ বাতঃ—কব, আব, চ স্থাং। অয়য়ে, বায়বে, রায়ে, নাবে; যি চ—গব্যতি, ভাব্যম্, প্রত্য় ইতি কিম্! গোঘানম্; (৮) ধাতোর্নভিমিনিত্য—ল্যুমানস্যাপত্যম্—লোমমানিঃ পুত্রঃ, নায়ং যথাত্য়নিমিত্র প্রং।

১৪। গোরদন্তা২বো বা২ন্তে।

[(গाः ७), जन्डावः (जन्ड-जन) ১।, वा •১।, जरङ १।]

পদান্তে বর্ত্তমানস্য গোরচি পরে ওতোহদন্তাবো বা স্যাই। গবেশরঃ গ্রীশ্বরঃ, গ্রাজিনং গোইজিনম্; অন্ত ইতি কিম্ ? গবি।

⁽b) अख शङ्नाः यकाननिभिष्ठत्यादत्राकादत्रीकात्रद्यांश इनिम्छानंत्रः।

১৫। गताक-गत्रतानी निजाम्।

[नवाक-नदरखो (ता + कक, ता + देख) आ, निष्ण्य ।]

অতো নিত্যং স্যাতাম্। গৰাক্ষঃ, গৰেন্দ্ৰঃ।

১৬। গব্যতিঃ ক্রোশযুগে।

[त्रवृाजिः (त्रा + यूजि) ऽ।, त्काम-गूरत १।]

নিপাত্যতে। অম্বত্র গোযুতিঃ।

५१। क्या करगो भकार्थ।

[क्षवा-क्षरगो (क्ष्म-व, (क्ष+व) आ, भकार्ष (भका-कर्ष) १।]

শক্যার্থে গন্যে এতো নিপাতেয়তে। ক্ষেত্ং শক্যঃ ক্ষয়ঃ, জেতুং শক্যঃ জ্বয়ঃ ; অন্তত্ত্র ক্ষেয়ং পাপং, জেয়ং মনঃ।

५৮। क्या खनदर्थ।

[क्रवाः (৯) (क्य + व) आ, उपर्र्थ १।]

ক্তরার্থপ্রদারিকে দ্রব্যে ক্রয়ো নিপাত্যতে। অন্তত্ত ক্রেয়ঃ।

পদান্তে ।। অধিকারোহয়ম্।

১৯। এছো২তো লোপঃ।

[बढः श. घडः ध, त्नांभः ।]

পদাত্তে বর্ত্তমানাদেঙঃ পরস্যাতো লোপঃ স্যাৎ। তেইজ, কোহত্ত ; পদান্ত ইতি কিম্ ? নয়নম্, লবণম্।

২০। ঙসিঙসোশ্চ।

[क्षतिन्द्रामाः था, ४ ०)।]

এঙঃ প্রস্য ঙসিঙ্গোরতো লোপঃ স্যাৎ। **অ**গ্নেঃ

⁽৯) धानामिकम्।

২১। অদেত্যপদান্তস্থাইজিন।

[चरपि (चर+এर) १।, चनपाडक ७।, चक्रि १।]

অতি,এতি চ পরেহপদান্তস্যাভো লোপঃ স্যাহ। যজন্তে, যজে, লবণস্যতি, অত ইত্যেব যান্তি; অজ্মীতি কিম্? দেবাঃ, বিপ্রাঃ।

২২। शांद्यिष्ड প্রাদেরবর্ণস্থাইনিপ্রেশঃ।
[शार्यिक (शाज्-এঙ্) १।, श्लारमः (श्ल-व्यामि) ७, व्यर्गम ७।, व्यतिस्तरशः
(म-रेग-रेश) ७॥]

ধাতোরেঙি পরে প্রাদেরবর্ণস্য লোপঃ স্যাৎ। প্রেজতি, পরোথতি; অনিণেধারিতি কিমৃ ? প্রৈতি, প্রৈধতে; এঙীতি কিমৃ ? উপেহি। ইঙিকোর্নিত্যমধিযোগঃ। অধ্যেতা, অধ্যেতি।

२७। गकाटमत्रङ्घाटमी।

[नकारमः (नक-आपि) ७, अञ्चारमे (अष्-आपि) १।]

অদ্ধানে পরে শকাদেরবর্ণা লোপঃ স্যাৎ। শক্ষুঃ, কুলটা, শুদ্ধোদনঃ, সমনন্তরম্, সমশনম্, অর্ধানম্, হলীষা, লাঙ্গলীষা। সীমন্তঃ কেশেষু, সীমান্তোইশ্বত্ত (১০)।

২৪। ওমাডোশ্চ।

[अमहिदाः (अम्-व्याद्) १॥, ७ • ১।]

ওমি আঙি চ পরে অবর্ণস্য লোপঃ স্যাৎ। কোমিতি,*
সোমিতি আ+উঢ়া —ওঢ়া অদ্যোঢ়া, আ+ইহি — এই উপেহি।

२৫। এবে চাঽনিয়োগে।

[এरव १।, ह • ১।, व्यनिरम्रार्श (১১) १।]

⁽১•) আদিশকাৎ, কর্কলু:, পতঞ্জনি, আটবী, কার্ত্তঞ্জ, সারকঃ পভ পক্ষিণোঃ, সারাকোহজ্বতে, আকৃতিগণোহরমিতি।

^{*} কোমিতীতি আকারলোপে কথং তৃতীয়ো ম ছাং ন বাচ্যং ছানি-ক্ষান্ত ভবিষ্যতি ইতি তৃতীয়বিধৌ ডক্ত নিবিদ্ধত্বাং। নৈবম্ অসিদ্ধং বহিন্তস্থ-বিভি ছানাং।

(১১) নিয়োগোহবধাদ্ধন্।

এবে পরেছবর্ণস্য লোপঃ স্যাৎ। অংল্যার, ইছেব; নিয়োগে তু অল্যের গচ্ছ, ইছৈব ভিষ্ঠ।

२७। ওত্বোষ্ঠয়োর্বা সমাসে। [ওবোর্টয়োঃ (ওড়+ওঠ) ঀয়, বা ৽১া, সমাসে ঀ]

খনরোঃ পরয়োঃ সমাসেইবর্ণস্ত্রোপো বা স্যাৎ।
স্থলোড়ঃ স্থ্রোড়ঃ, বিস্বোচী বিস্বোচী। সমাস ইতি কিম্?
তবৈচিং রক্তম্।

२१। न मिक्किविं मर्ग-य-व-लिवि!

অচীত্যেব, পদান্তে বিসর্গাদিলোপে ক্তে২চি পুনঃ সন্ধির্ন ভবতি। ক এমঃ, জন্মা ইদম্, অসা ইন্দ্রঃ।

२৮। टेमय ३७ প्रांत्र शृंतर्व। [रेमयः (मः + धवः) अ, १७ ०अ, शामभूतर्व १।]•

নৈষ ইত্যপি ভবতি শ্লোকস্য পাদপ্রণঞ্চে । সৈষ দাশর্থী রামঃ, দৈষ রাজা যুধিন্তিরঃ। দৈষ বিশ্লো দ্রাশীলঃ, দৈষ যোগী বিবর্ত্তিতঃ।

২৯। ঈত্বদেতে দ্বিবচনস্থ । [ঈদুদেত: (ঈং+উং+এং) ৬।, দ্বিচনস্থ ।]

ঈ, উ, একারাস্ত্রস্য দ্বিচনস্যাহ্চি পরে সন্ধির্ন ভবতি।
অগ্নী ইমৌ বায়ু অতা, খটে ইহ, পচেতে ইতি।

'मगीवारनर्वा'। मगीव मगी-इवः मण्यकीव मण्यकी-इवः त्वाननीव त्वाननी-इव (১২)।

⁽১২) দলাতী+জলাতী+জারাপতীতি সর্কেশানের প্রহেণমু i কৈলিং জু পেচুবী-বিচুবীভ্যেবং ব্যবজ্ঞিক ।

७०। जन्दम गर्र।

(खर्माः ७। मार १।]

व्यमरमा मकातार প्रदाश नेपूर्वार्ग मिक्षः ; अपल (১৩) न সম্ভবতি। অমী অত্র, অমূ আনয়; মাদিতি কিমু ? অমূকেইত্র: কথম "অব্যত্র প্রতিভাতি মে" ? অমী রোগীতি নাহয়মদসঃ।

৩১। একস্থাচোইনাডোইব্যয়স্থ।

্রিক্স ৬া, অচঃ ৬া, জনাতঃ (ন+আঙ্) ৬া, অব্যয়স ৬া]

অব্যয়স্যাঙ্বৰ্জ্জিতসৈ্যকাচো ন সন্ধিঃ। অ অবেহি, (১৪) ই ইন্দ্রং পশ্য, উ উত্তিষ্ঠ ; "বাক্যম্মরণয়োরঙিদাকারো্ছস্তি"-আ এবং মন্তবে ? আ এবং কিলৈতৎ; অনাঙ্ইতি কিম ? क्षेयनर्ट्य, क्रियारगरम, मर्यामायाम् (२०), अञ्चित्यातारु-या+ উষ্ণম্—ওষ্ণম্, আ+ইহি-এহি, আ+সঙ্গাৎ - আঙ্গাৎ, আ+ অর্য্যেভ্যঃ=আর্য্যেভ্যঃ।

७२। ७७:।

[७७: ७।]

ওদন্তাহ্ব্যয়স্য ন দক্ষিঃ। নো ইহ, অহো অহম, উতাহো रेजि।

৩৩। বা সমুদ্ধাবিতো। [বা • ১া, সমুদ্ধো গা, ইণ্ডো গা]

ইতো পরে সমুদ্ধাবোদস্তদ্য বা ন সৃদ্ধিঃ। বায়ো ইতি, বায়বিতি; ভানো ইতি, ভানবিতি; ইতাবিতি কিমৃ? বায়-वाशाहि।

^{(&}gt;७) যাবংসম্ভবস্থাবদ্বিধিরিতি নিষ্মাৎ এদত্তেত্যুক্তম্।

[&]quot; > । च ! चारवरीजात्ने चकावान्तः महन्त्रांश्मार्थाः ।

১৫। वर्षाणा जीमा, अखिविधिर्याधिकिकार्यः।

ाव के कार्य । 80

खेक हेरकी भारत वा म मिन्नः, कमा क के वा मार। উ ইভি, বিভি বা, 🕉 ইভি চ।

७৫। छुत्रामिस्तादन।

[प्रवाद था. प्याप्तादन वा]

न मिर्का । एं विश्व जागळ, एं विश्वागळ वा।

৩৬। ঈত্দাদ্যসন্ধিঃ প্রগৃহম্। [ঈদ্দাদ্যসন্ধিঃ (ঈং-উৎ; আছি-অসনিঃ) ১া, প্রশৃহম্ ১৷]

जेनुमामीनाः (यथाः 'मिक्सिन विश्विष्ठ अगुश्रमः छकाः श्राद्यांका उन्हेंबारः।

৩৭। গোরতি।

[গো: ৬i. অতি ৭i]

গোশব্দস্যাতি পরে সন্ধির্ম ভবভি বা। পো অগ্রম্, গবা-গ্রস, গোহগ্রস্ (১৭)।

७৮। ইटकाश्मवटर्ग इन्नन्छ।

[देकः ७, जमदर्भ १।, द्वरः ३।, ७ ०)।

भगारखरमनर्स्टिक भरत हैरको वा व मिकः : नीर्घगा ठ हुनः मार्थ। प्रिष्यक्, निष जक्, नश्च अजुः। 'अजि अनर्गाश्वर्यकाम्ह।' পিতৃ ঋণন্, হিন ঋতুং, এট্ৰ ঋষ্যঃ ; পক্ষে যথাপ্তাঞ্চক দধ্যত্ত, वश्त पूतिजाति ; देक देखि किम् ? तरक अकः, तुक्तमृकः।

১৬। অত্ৰ ইতিশক্ষাতৱতা, অক্সমিন্নপি স্বরপরে, কিম্ + উক্তং - কিম্কং, वच्यभीहिक दिन जना कियुक्ति आहि। कियू के देव में कियू कियी दिन ১৭। চিত্ৰয়গ্ৰমিতি মিতাম্বি:। ইত্যপি কেচিৎ।

७%। युना वार्यानः वाष्ट्रिकानवद्राः । [वृना भ, वार्यानः भ, वाष्ट्रिकानवद्राः भ]

অনরোর্যতেন ইকো যণা ব্যৰ্থীয়তে। দৃধিয়ত, নর্বত্র, ভুবাদি।

रेषि चहुनक्षिक्षकार्यम्।

रल्मिक्षः।

80 | स्मिश्यादत हिन । [मः ७, सम्बातः १।, हिन (१४) १।]

পদান্তে হলি পরে মকারদ্যানুষারো ভবতি। দেবং পশ্চ, পুংভ্যাম্।

85। নশ্চাপদাত্তে ঝলি। [ন: ৬া, চ ০১া, অপদাত্তে ৭া, বলি ৭।]

অপদান্তে ঝলি পরে নস্য মস্য চামুস্বারো ভবতি। পরাংসি, যশাংসি, সিঞ্জি, আক্রংস্যতে। ঝলীতি কিম্? হন্যতে, রম্যতে।

8২ | মো হৈ মন্যবলপরে মন্যবল বা | [ম: ৬), হে ৭), ম-ন-খ-ব-শ-পরে ৭), ম, ন, খ, ব, জ, ৯১৬, বা ০১)] (১৯)

হকারে মন্যবলপরে মৃদ্য ম, ন, বঁ, বঁ, লঁ, ইত্যেতে বা হাঃ। কিম্মালয়তি, কিংমালয়তি, কিন্হুতে, কিংহ্লুতে, কিবঁহুঃ, কিংহুঃ, কিবঁহুলয়তি, কিংহুলয়তি, কিলঁহুলাদয়তি,

sb !' स्न्धर्वमखारा निवृष्ण्यिषि भकी।

>२। चक्क्षश्रीनवाक्षश्रीवर एउन् ।

কিংহ্লাদয়তি; সত্রাট্'। কিব্স্তরাজি পরে স্কারোইজ নিপা-ত্যতে। সত্রাট্—রাজনুর্যাজী, সর্বস্থীশরঃ, সত্রাজো সত্রাজঃ।

৪৩। ক্লত্যে হবশ্যমো লুক্ সমাসে। [ছডো (২০) ৭।, অবস্তম: ৬।, লুক্ ০১।, সমাসে ৭।]

িক্ত্যে পরেহ্বশ্রমো মদ্য লুগ্ভবতি। অবশ্রকার্য্যম্, অবশ্রকর্ত্ব্যম্, যদৃচ্ছাদয়শ্চেতি সমাসঃ।

88 | जूर मदर्भामनि कोटम ह | [ज्रमदमाः (ज्यु, ममु) था, मनित्र ना, काटम ना, ह ०५।]

তুংসমোর্মন্য লুক্ স্যাৎ মনঃকাময়োঃ পরতঃ। কর্ত্ত্ব্নাঃ, কর্ত্ত্ব্রুষ্ট্রাই, সমনাঃ, সকামঃ; সমাস ইত্যের কর্ত্ত্ব্রুষ্ট্রাই।

৪৫। সমো বা ততহিতয়োঃ।

[সম: ৬া, বা ১০া, তডহিতয়ো: (তত-হিত) গা]

অনয়োর্বা সমো মস্য লুক্ স্যাৎ। সভতম্, সম্ভতম্, সহি-তম্, সংহিতম্।

৪৬। অতো মাৎসম্ভ পাকপচনয়োঃ। [অতঃ ৬া, মাংসভ ৬া, পাকপচনয়োঃ (২১) (পাক-পচন) ৭॥]

্ অনুদোঃ পরত্তোমাংসদ্যাতো লুখা স্যাৎ। মাংস্পাকঃ, মাংসপাকঃ; মাংস্পাচনম্, মাংসপাচনম্।

⁽২•) কৃত্যান্ত বট্ সমাধ্যাতাঃ কাৰ্ণ্যতে ভাৰকৰ্মী, জন্যানীয়াক্ৰুক্ধ-কেলিমঃ কৰ্মকৰ্মনীতি কৃত্যঃ।

⁽২১) নাংসপাক ইত্যাদে অসিজবৃত্তহিরক্তরতে ইঞ্জি ভারাৎ সভ বিসর্বোন। কথমত্র সলোপোন ভাৎ, সভাৎ লোপ্ত স্থারিক্সটেরৰ পচনত

89 1' जरगार अगृश्का व्यामिकः। *

[ज्या का, कवाग्रेज का, ज्यूनानिकः ॥]

পদান্তেহপ্রগৃহস্যাণোহতুনাসিকো বা স্যাৎ। কর্ম কর্ম, দিখি দিখি, মধু মধু, পচতি পচতি। অপ্রগৃহদ্যোতি কিমৃ !—
আগ্লী, বায়ু।

৪৮। অনুস্বারদ্য যয়ি পরদবর্ণো নিত্যং ত্রনস্তদ্য।

[অমুসারক্ত ৬া, ববি ৭া, পরসবর্ণ: (২২) ১া, নিডাং ০২া, তু ০১া, অনস্তম্ভ ৬৷]

পদান্তে যায় পরেহসুস্বারদ্য পরদবর্ণোহসুনাদিকো বা স্যাৎ। ত্বরুথঞ্জিত্রস্পক্ষপুষ্টমবধীঃ, ত্বং কথং চিত্রং পক্ষং কণ্ডুয়ন্তমবধীঃ।

'য, ব, লে, যা, বা, লাঁ ব।'। সাহ্যান্তা, সংযন্তা; সাহ্যান্তা, সংবৎসরঃ; যলাঁলোকম্, যংলোকম্, । অপদান্তাস্ত্ নিত্যম্ন শঙ্কিতা, চঞ্চিতি, লিম্পতি, কুন্ততি। যথি পরস্বর্গ ইতি কিমৃ ?—শংসতি, সংহতিঃ।

৪৯। ঙ-ণাভ্যাং কুটূ শরি।

[ड-बान्डाम् था, क्, हे आ, चति १।]

শরি পরে ঙ-গাড়াম্তরে যথাজনং কু-টু বা স্যাতাম্। প্রাক্ষেতে, প্রাঙ্গেতে, প্রাক্ষণঃ, প্রাঙ্গিওঃ; প্রাক্ষার্থ, প্রাঙ্গার্থঃ, লুঙ্লঙ্ল্জন্, লুঙ্লঙ্লৃঙ্কি, স্থাতিশেতে, স্থাণ্ডেইত্যাদি।

ভাষৰিহিজ্যুদাপ্ৰত্যন্নান্তসাহচন্দ্ৰাই ভাষবিহিতপ্ৰত্যন্নান্তপাকভৈৰ প্ৰহণ্ড তেন ক্লাংসং পচতীতি কৰ্ত্বিহিতপ্ৰত্যন্নান্ত পাকেপরে অকারশোপাভাব ইডি।

(६२) खेळ मॅब्रमेंदर्व हैि भव्रभावितर्व मद्वीस्नामिक हैि।

भेडीक्स्नाजिक्शक्र नापविकृश्वविकावरश्वत्रं ।

৫০। হ্রস্থাৎ ওণনামটি নিত্যাৎ দ্বে অসমাদে।

[ह्रचांद ८।, ७-व-नाम् आः, चिंह १।, निखार था, दव आ, क्रमारम १।]

ক্রম্বাৎ পরেষাং ঙণনামচি পরে নিত্যং বে স্যাতাম্। ক্রেঙ্ডান্তে, স্বার্গ্ধি, পচমন্তি; সমাসে তু—ডিওন্ডঃ, কচিদত্র ভবত্যপি আবর্গন্ত ইতি। ক্রম্যাদিতি কিমৃ?—প্রাণন্তি।

৫১। यटकीश्टमां दशश्रापि।

[यः ७।, छेः ১।, क्रमः ७।, (२४) (४ १।, क्षि ०८।, क्षर्शंहे १।]

অশ্রুত সকারস্য পদান্তে, ধকারে চ পরে ষস্য টঃ স্যাৎ।

ষট্, মূলর্ট্; রজ্জুস্ট, প্রমূট্তরঃ। ধকারে চ বিড্চি, আচড্ট্ে; অস ইতি কিম্!—বপুটঃ, অথটাতি কিম্!—ষষ্ঠঃ।

৫২। ঝযন্ত তীয়ো ঝষি চ। [ববং ৬া, তৃতীয়ং ১া, ববি ৭া, চ ০১।]

পদান্তে ঝিষ চ পরে ঝয়ন্ত্তীয়ো ভবতি। বাগিহ, বাগ্ভ্যাম্, অজন্তঃ, ষড়্গচছন্তি, তদ্যাতি, অব্জাতম্। ঝিষ চ ঝয়গ্রহণমপদান্তার্থম্, তেন দোঞ্জি, লব্ধা

৫৩। পঞ্চমো বাইনুনাসিকে নিত্যন্ত প্রত্যার। [পঞ্চম: ১া, বা •১া, অনুনাসিকে (২৫) ৭া, নিত্যম্ ২া, ভূ •১া, প্রত্যারে ৭।]

পদান্তেহ্সুনাদিকে চ পরে ঝয়ঃ পঞ্চমা বা স্থাৎ। বাঙ্ঙ-কারঃ, বাগ্ডকারঃ; বাগ্ঞঃ, বাঙ্ঞঃ; ৰাখ্যঃ, বাগাঃ; কাখ্যে,

⁽२७) क्षे रेजानमजात नवर्धस्यम् । किक करेत्राद्यत ।

⁽২৪) চেৎ দক্ষা সং মূর্দ্ধব্যো ভবেৎ, তহি ন জন্ত উদ্ধৃ, আও উদ্ধৃৎ বং কৰাপি দক্তাত্বেন ন প্রারতে সোহপ্রতঃ মূর্দ্ধব্য এব নাক্তোহত্ত গ্রহাতে।

⁽২৫) প্রত্যাহ্নাসিকপবেদ ওন্সংক্তক উচ্চতে, প্রত্যাহ্ন-শপ্রক্যসাহ্ন-

বাথে; এবং অঞ্ঞঃ, অজ্ঞঃ; বরঃ, বড়ণঃ; তরঃ, তদ্নঃ; অনঃ, অব্মঃ। নিত্যস্ত প্রত্যে—বাধায়ং, তন্সাকঃ, বরাম্।

(४८) थिति প্রথমোইপ‡দান্তে চ। [थिति १।, প্রথম: ১।, অপদান্তে १।, ठ • ১।]

্ থরি পরে ঝয়ঃ প্রথমো ভবতি অপদান্তে চ। তৎকুরুতে, ভচ্চিনোতি ; অপদান্তে চ—ভেত্তা, যুযুৎসতে, আরিপাতে।

৫৫। वाश्वमात्न विष्कः।

[বা ০১া, অবসানে ৭া, বিত্ব ১া, চ ০১া] (২৬)

विज्ञात्म यंग्नः প্রথমো বা স্থাৎ। विज्ञः वा। वाक्, वान्; वाक्, वान्ग्।

৫৬ । পূর্বস্থ তুর্ব্যো হঃ। [প্রজ্ঞ ৬া, ত্র্যা: ১া, হ: ৬।]

পূর্বেস্ত ঝাসস্থিনি হেকারস্ত (২৭) স্থানে তুর্য্যো বা স্থাৎ। বাগ্লীনঃ, বাগ্হীনঃ; অজ্ঝীনঃ, অজহীনঃ; ষড্টলানি, ষড্ হলানি; ডাজিতম্, তদ্হিতম্; অব্ভীনঃ, অব্হীনঃ।

৫৭। শকেছাইশ্চ্যুতেঃ।

[**খ: ৬**|, ছ: ১|, আন্চ্যুতে: ৬|] (২৮)

পদান্তে ঝয়সম্বন্ধিনঃ শকারস্ত ছো বা স্থাৎ। বাক্-ছুরঃ, বাক্শূরঃ; অচ্ছ্লোকঃ, অচ্লোকঃ; ষট্ছ্যামা, ষট্শ্রামা;

⁽২৬) বাশবস্থাত্ত কাকাক্ষিবহুভয়ত্তাৰয়:, তেন পক্ষে তৃতীয়:।

⁽২৭) ঋষাবাবহিতপরবর্ত্তিশে হকারক্তেতার্থ:।

⁽২৮) অত্ন বাশক্ষত ব্যবস্থা বাচিম্বাৎ লে ও মে চ পরে কচিৎ ন সাধ।
তেন তৎ শ্লাম্বান্য বিভ্যাদে ন তথা।

অপ্ছুমী, অপ্শ্ৰমী; ব্যবস্থিতবিভাষয়া শসি নিত্যম্যাবচ্ছঃ। অশ্চাতেরিতি কিম্?—বাক্শ্চোততি।

(৮ | তোলোল। (ডা: ৬া. ল: ১া, লে গ] (২১)

তবৰ্গস্থালৈ পরে লো বা স্থাৎ। তল্পেং, তদ্লেখঃ । ভৰালুকঃ, ভবান্দুকঃ।

(৯ | চুনা চুঃ | [চুনা ৩, চুঃ ১।]

চুনা (চবর্গেন) যোগে (০০)তবর্গস্ত চবর্গো বা ভবতি। ভচ্চি-নোতি, তৎচিনোতি; ভচ্ছিল্লম্, তৎছিল্লম্; ভজ্জিতম্, তদ্-জিতম্; তজ্ঝকারঃ, তদ্ঝকারঃ; তঞ্ঞকারঃ, তদ্ঞকারঃ প্রশাঞ্চিনোতি, প্রশান্চিনোতি। চুনেতি ভৃতীয়ানির্দেশাৎ পরস্থাহিপি, একপদে নিত্যং ব্যবস্থিতবিভাষ্য়া, যুদাতঃ

"সংহিতৈকপদে নিত্যা, নিত্যা ধাতৃপদর্গয়োঃ (৩১)। সূত্রেম্বপি তথা নিত্যা দৈবাহন্তর বিভাষরা।

পরঃ সন্ধিকর্বঃ সংহিতোচ্যতে, তেন রাজ্ঞঃ, যজঃ, যাচ্ঞা, প্রিয়পঞ্জঃ !

⁽২৯) বরলবান্ধ সামুনাসিকা;, নকারস্যামুনাসিকো লকারঃ, ডেক ভবা-বুঁর ভবাবুর ইতি পদবয়ম্।

⁽৩০) বোগঃ অব্যবহিতপূর্ব্বপর্বৈক্বর্তিবং, অতশ্চুনেতি তৃতীয়ানির্দেশাৎ পরস্থান তবর্গক স্থানে চবর্গপ্রসঙ্গঃ, অর্থাৎ পূর্বস্থান্ত পরস্থাত তবর্গক চবর্গঃ ভবত্যের বাবসাল ইত্যতো বিভাষাৎস্থবর্ততে। বিভাষা, বিষয়া, সংহিতা পরঃসন্নিক্বঃ, নিরতিশরমানত্ব্যমু। একপ্রেই সন্ধিত নিত্তঃ, আক্রমেরিককঃ। চৌ চুঃ ইতি কৃতে রাজ বজ্ঞ ইক্যানি স্থাৎ ন নির্দ্ধীতি ব্যের্ধু।

⁽७১) हेरानि नुर्त्तवर नर्तर, क्वनर विकरण नांची हिर्मिनः।

७०। हूना बाक हूं।

[हेना ७, बाद ४।, ह ०३।, हैं: ३।]

টুনা (টবর্গেন) যোগে, ষকারাত্তরক্ত চ তবর্গক্ত টবর্গো বা ক্তাং । তটাকতে, তৎটাকতে; তঠ্ঠকারঃ, তৎঠকারঃ; উড্ডীনম্, উদ্ভীনম্; বাদয়ণ্টকাম্, বাদয়ন্টকাম্; লিখয়কারম্, লিখন্ পকারম্। টুনেতি তৃতীয়ানির্দেশাৎ পরক্তাপ্যেক-পদে নিত্যম্—বংভণ্টি, ঈট্টে, গৃঢ়ম্; ষাৎথল্পি, মন্টা, অচ্যোষ্ঠাঃ।

৬১। ন পদান্তাটোরনবতিনগরীণামাম্।
[ন •>।, পদান্তাং ধা, টোঃ ধা, অনবতিনগরীণামাম্ (ন নবতি, নগরী, ণাম্) ৬॥।

পদান্ত টবর্গাৎ টুত্বং নান্তি। ষট্তারাঃ, মধুলিট্তরতি ; অমবত্যাদেরিতি কিম্; ষগ্রবিতঃ, ষগ্রবী, ষগ্রাম্।

৬২। শে তনোশ্চঞো মস্তক্চ।

[শে ।, তনো: (ত, নৃ) খা, চঞো (চ, ঞ্) ১॥ ন: খা, তৃক্ ০১।, চ ০১।]
শে পরে তকার নকারয়েশ্চঞো বা স্থাতাম্, পক্ষে

শে পরে তকার নকাররোল্ড আন্বান্ত্রের বাজাব্দ্রের্ব্চ। তচ্পেতে, তচ্ছেতে, তৎশেতে; ভবাঞ্পেতে, ভবান্শেতে, তুক্ভবাঞ্চেছতে, চুত্ত্বেন ঞ্কারঃ।

৩৩। নটাভ্যাৎ সে।

[निष्णाम् (न, हे,) शा. (म १।]

আভ্যাং সে তৃথা স্থাৎ। ভবান্ৎসাধুঃ, ভবান্সাধুঃ; ষটৎসায়ে, ষট্সায়ে। ন ধর্পরে, ভবান্সাভা।

৬৪। ছোইচো धिः।

[हः भ, वाहः ८, विः ১।]

শাচ উত্তরত ছকারতা দ্বির্ভবতি। বেতি নির্ভন্, পরশ্মিন্ শা-গ্রহণাৎ। সচ্ছাত্রঃ, তক্সছারাম, গচ্ছতি।

७० । श्रेषां अपिता अपिता । विश्व वि

পূর্বেণ নিত্যে প্রাপ্তে বিকল্প আরভ্যতে, পদান্তদীর্ঘাছ-কারো দ্বিবা স্থাৎ। কুটাছায়া, কুটাছায়া; আঙ্মাঙস্ত নিত্যম্ পূর্বেটেণব—আছোদয়ভি, মাজাদয়ভি।

৬৬। হ্রাভ্যাৎ যয্।

[ङ्रांख्याम् (र्, त्) ८॥, वष् •১।]

অচ উত্তরাভ্যাং হরাভ্যাং পরো যয্ দ্বির্বা স্যাৎ। ব্রহ্মা (৩২), ব্রহ্মা; অর্কঃ, অর্কঃ; কুর্মঃ, কুর্মঃ; কার্য্য্, কার্যম্; হুর্ল্ ভঃ, হুর্লভঃ। যধীতি কিমৃ ! দদর্শ অর্হতি।

७१। অনচি इत्रश्र्वाश्लर्इ।

[अनिह (न-अर्) १।, द्व-रनः ४।, रम् •১।, अर्रः ১।]

ङ्याकल स्टाखरा दिश्च-श्कात-विक्कि राश्चित्र हल् हिर्दा गाए। विश्वविर्ध (००) यंशा मिर्णान स्वितिष्ट निकाल, मध्य दिश्वा हिर्मे हिरमे हिर्मे हिरमे हिर्मे हिर्मे हिर्मे हिर्मे हिर्मे हिर्मे हिर्मे हिर्मे हिरमे हिर्मे हिरमे ह

⁽৩২) ব্ৰহ্মা ইত্যাদে তু সংহিতৈকপদে ইভি নিভাস্তি:।

⁽৩৩) বিশ্ববিধে বৃণাবেশন্ত ন স্থানিবস্থিতি নিয়ন্ত । বকারত ইকারত্ব্যতরা অনুভূপরত্বাভাবার ধরুরত বিশ্বমিতি।

৬৮। শরঃ খ্য।

[শর: ৫, খ্র •১।]

भातः भातः थय् विका मार्। मृथानी, शांनी।

৬৯। খয়ঃ শর্চ।

[चंत्रः १।, नंत्र्, ०), ७ ०)।

वर्म्मः, वर्मः ; क्षीत्रम्, कौत्रम्।

१० । यहना वर्गाम्ह ।

উল্কা, উল্কা; বল্মীকম্, বল্মীকম্।

95 | वर्ग्याम्यण् छ | [वर्ग्यार था, वन् ०)।, छ ०)।

দধ্যাত্র, দধ্যত্র; মধ্বুত্র, মধ্বত্র।

৭২। বর্গাদেঃ শরি দ্বিতীয়ঃ। [বর্গাদে: ৬), শরি ৭), বিতীয়: ১।]

বর্গাদেঃ শরি দিতীয়ো বা স্যাৎ। খ্যীরম্, ক্ষীরম্; বাখ্-শেতে, বাক্শেতে; ভবধ্সু, ভবৎস্থ; অফ্সু, অপ্সু ।

৭৩। চেলোপো চোও পূর্বস্থাপো দীর্ঘশ্চ।
[জুলোগ: (ছ, র-লোগ:) ১া, ডো: (ছ, র) া, প্র্রন্ত ডা, অব: ডা,
ছীর্ষ: ১া, চ • ১া]

দিজ্বাহ্চর্যা দ্বেতি নির্ত্তম্, ঢকার-রেফয়োঃ পরয়োর্যথা-ক্রেমং ঢকার-রেফয়োলেপিঃ স্যাৎ। পুর্বস্যাণো দীর্ঘশ্চ। শীচুম্ গুড়য়ু, নীরক্তম্, অহারম্যম্, হে কর্তারাজ্বদে।

98 | जैनः श्रांखिटिकाः मञ्ज सूक्।

উদঃ প্রয়োঃ স্থান্তভোঃ সম্মান্ত সাথ। উপাতা, উত্ত-জিতা।

৭৫। তঃ ৎেস।

[उः ७।, (९म१।]

ৎেস পরে তকারস্থ দুগ্ভবতি। তৎ+ৎসক্ষঃ। তৎসক্ষঃ। (০৪)

१७। श्टला यदनादर्य वा।

[हनः ८।, यत्वाः ७॥, त्य १।, वा • ১।]

হলঃ পররোর্ঘবোর্য্যে পরে লুখা স্থাৎ। আব্দ্যে ভব-মাস্থ্য আস্য্যম্বা; সাধ্বীনামুদয়ঃ সাধ্যদয়ঃ, সাধ্ব্যুদয়ো বা।

৭৭। ঝযো ঝযি সবর্ণ।

[बद्रः ७।, बहि १।, अदर्भ १।]

দবর্ণে ঝিয়ি পরে হলং পরস্থ কাষো লুখা স্থাৎ। ছিন্তঃ, ছিন্তঃ; প্রতম্, প্রতম্; শিল্চি, শিশুচি; বন্ধুম্ বন্ধুম্ ঝাতি কিম্প্রিয়পঞ্ঞা। "সেটি সন্ত লোগো বক্তব্যঃ" ষস্সন্তি স্বপ্রে—সংস্সি। (৩৫)

रेजि ज्वबाकद्राव ध्वम्याशाय्य विजीयः भागः।

প্রথমাধ্যায়ে তৃতীয়ঃ পাদঃ।

ः বিদর্গদন্ধি প্রকরণম্।

১। ৰুদোঃ পদান্তে বিসজ্জ নীয়ঃ।

[क्रटमाः, (क्र, म्=ब्र, म) था, भवाट्ड १।, दिम्ब्बनीयः ১।]

⁽৩৪) ৎসর—ছম্বগতৌ, ভাৃদিপর**শৈগদী**ধাতৃঃ।

⁽৩৫) বসবস্থি—সংগ, আদাদিশর স্থৈপদিখাতু:। সেপরে সম্ভভারত লোপ: তাদিতি।

পদান্তে রো রেফস্ত, সকারস্ত চ বিদর্গো ভবতি। অভিনঃ, অরুণঃ, যশঃ, করঃ, নিনীঃ। 'অতঃ পদাস্তাধিকারঃ।'

২। অহন্সজুষ্প্রতিদীবাৎ নধোঃ।

[अहन्, प्रजूब्, প্রতিশীবাম্ আ।, नरवाः ध॥]

পদান্তে অহরাদের্নধোর্বিদর্গো ভবতি। অহঃ, मह-खूरिकः किপ्, मनः मजुराभिराराम्हि नीर्यक्ष्म, मज् खानमः, मजुः রিত্যব্যয়ং চাক্তি; প্রতিদিবা:।

৩। রঃ খরবসানয়ো-রস্থপি। [त्रः ७, धन्नवज्ञानत्याः (धन्न, खनज्ञान) १४, ख-स्ति १।]

পদান্তে ধরি পরেহ্বসানে চ রেফক্ত বিদর্গো ভবতি। পুনঃকৃতম্, গীঃ, ধৃঃ, ধরীতিকিম্ পুনর্যাতি, অহুশীভিকিম্ त्रीवृ धृष् । विमर्कनौयुष्ण व्यक्तिराश्यम्।

[क+, (भी अ)।, ह •)।, क, स, भ, (क १।, ख (न) मंद्र गूरक १।]

কপাবুচ্চারণাথোঁ, বিসর্গস্ত সদৃশতমত্বাৎ (১) কথায়ো-র্জিন্সামূলীয়ঃ, পফয়োরুপাথানীয়শ্চ ভবতি। চকারাদ্বিদর্গ-धवाश्विकिष्ठि । क × क्विः, कःकविः, क × थनः, कःथनः, कळनदः, कः नतः , कळकती, कः कती । अभर्युक देखि किम् ক:ক্ষীরম্, কঃপ্সাতি।

৫। নিছু র হিঃপ্রাছরাবিশ্চতুরাৎ যঃ। [निर् र्विः थाइद्रांतिक्ष्वासु (नित्र, इत्, बहिन्, थाइन, वादिन्, हज्त्र) ₩b 4: 51]

धवाः विमर्गेश्च कार्या भरत क×भधायात्रभवामः वः छा ।

⁽१) अक्षात्माकार्यमार्थाः। अकार्योगः अञ्चे भी ज्यावनाः म् वा क्रिके (०-१-(०))-

निकृतम्, प्रकृतम्, वरिक्रकम् आष्ट्रकरेताकि, वार्षिकरताि, वर्षकरेतािक, वर्षकरेतािक, वर्षकरेतािक, वर्षकरेतािक,

৬। ইজ্জ্যাং যসৌ পাশকশ্পককাম্যেয়ু প্রত্যয়েষনব্যয়স্থ।

[रेक्डाम् (रेष्, चर) था, वर्त्या आ, भान, कन्न, क, कारमान् १॥, व्यंडा-रत्रम् १॥, चनरात्रक्ष (न, चरात्रक) ७:]

পাশাদির প্রত্যয়েরনব্যয়ন্ত বিদর্গত ইজন্তাৎ যো ভবতি,
অতশ্চ সে। দন্তা: । ধনুজ্পাশং, জ্যোতিকল্লম্, ধানুকং,
দোর্ভ্যাম্ তরতি দৌকং, জ্যোতিকাম্যতি; অতশ্চ সো দন্তাঃ
রক্ষপ্রাশং, তমকল্লম্; অনব্যয়ন্তেতি কিম্ ? প্রাভঃকল্লম্
নিথঃকাম্যতি, পুনঃকাম্যতি। আকন্ষাদেরিজন্তাং বসাং
বিভ্যম্বর্তিরতে।

9 | ন কাম্যে নরয়ে । [ন •>৷, কাম্যে ৭৷, ন. রয়ে ৷৷ ৷]

নকার, রেফয়োর্বির্গক্ত কাম্যে বদৌ ন ভবতঃ। আহং-কাম্যতি, গীঃ কাম্যতি।

৮। नश्रश्रादिन हि कि निमारिन को ए जिलि। [नमः प्रत्याः (नमन्, प्रन्) था, कि ना, नमारम ११, वा •১१, ह •১१] जिलि १।]

শন্যোঃ কৃঞ্জি সমাদে বিদর্গতা সং আহ্ । নমস্কৃত্য, পুরস্কারঃ। সমাদ ইঙি কিম্? নমঃ কৃষা প্রাণ্ডঃ । বা চিডি—নমস্কুরু, নমঃকুরু।

ठे । जिन्नगण्डांश्यमादमश्री

ভিরস: কৃঞি সর্ব্বে বিদর্গক নো বা আৎ। ভিরক্ষতা, তিরঃকৃতা; ভিরক্ষণা, তিরঃকৃষা, ব্যবন্থিতবিভাষয়া নিভাগ, ভিরক্ষার:।

১০। দ্বিতিচতুরাৎ ক্রত্বোহর্থ।

[বি, ত্রি, চতুরাম आ।, কুমোহর্বে १।]

এষাং কুছোহর্থে বৃত্তীনাং বিদর্গন্ত ক, খ, প, ফে, ষো বা স্থাৎ। দ্বিচ্চুক্ক, দ্বি:কুরু; ত্রিপাচ, ত্রি:পচ , চতুপ্পীতমৃ, চতুঃ-পীতমৃ। কুছোহর্থ ইতি কিমৃ ! চতুপ্পার্থম্, নিত্যমৃ পূর্বেইণেব।

১১। ইম্বনোরপেকায়াম্। +

[देस्ताः (हैन्, छन्) धा, व्यानवादाम् १।]

ইন্থসোর্বিদর্গক্ত মো বা ক্তাৎ। সর্পিজ্ঞিব, দর্পিঃপিব; যজুকুরু, যজুঃকুরু; অপেকায়ামিতি কিম্? তিঠতু সর্পিঃ পিবোদকম্।

১২। সমাদেঽ বৃত্তরপদস্বয়োর্নিত্যম্।

[जबारम १।, अध्यद्भभनच्राः (अन्-उषद-भनच्) धा, नि्छाम् ১।]

ইহুসো: সমাসে বিসর্গদ্য ষ: স্যাৎ। সর্পিক ওম্, থজু-স্পাঠঃ অনুভরপদহয়োরিভি কিম্? মহাসর্পিঃকুভম্।

১৩। অসঃ ক্ৰমিকংস কুম্ভকুশাকণীপাত্তে-মনব্যয়স্থা। (২)

[चर्त्रः ७, क्, क्मि, क्रम, क्ष, क्षा क्षी, शांत्वपू १॥, चनंदात्रक (व चरात्र) ७।]

[🕈] দিল্লিঃ শকৌ সুচুপ্রভায়তে কুড়োহর্থে বর্তেডে।

[†] कार्यानिमिषदश्चात्रकोक्काक्ष्माय्ह्यार्थभाष्य अवत्रवीधरवाश्याकप्रकाणि भावरः।

অসম্ভন্য কুঞানে। বন্ধানে বিদর্শনা সং লাগং। অন-কারঃ, বশকারঃ, অনুকানঃ, অরক্ষানঃ, অরক্ষা, অরক্ষা, অনুক্ষা, অনুক্ষাত্রী, অনব্যর্গ্যেতি কিম্ ? অধ্যক্ষা। নোভরপদহস্য, সর্বারঃকারঃ।

\$8 | जश्वितिहरू १८ १ | जश्कितिहरू १८ १ | जशक्कितिहरू १ | जशक्

অনয়োঃ পদে পরতো বিসর্গক্ত সং স্যাৎ। অধন্পদম্-শিরস্পদম্।

১৫। কস্বাদিষু চ। [ক্ষাদিয় (কম্ব+আদি) ৭৪।, চ •১।]

অমুকরণছাদীর্ঘঃ। এরু বথাযোগং ষসো ভবতঃ। কম্মে।

হাত্নি, কুড আগত ইত্যাণ কোতস্কুতঃ, অহস্করঃ তমস্বাশুম্,
মদস্পিতম্, ব্যাচস্পতিঃ, গীষ্পতিঃ, আতুষ্পুক্রঃ। ক খ প ফ
ইতি নির্ভম্।

১৬। অতে হশতে।-কঃ। [অতঃ ৫া, হনতোঃ (হন্, সং) ়া, টঃ ১া]

্ স্থানি, অক্তি, চ শারে অক্তঃ পরস্যা বিসর্গস্য উর্ভবতি। কোগতঃ, কোহত্ত, হুশতোরিতি কিমৃ ? কঃ কৃঃস্থঃ, ক আগতঃ, অক্তঃইতি কিমৃ ? দেবা অতা।

১৭। ইতে রোইজ্বাশে। [रेडः १।, प्रः ১।, অভ্রশে: (यह, हम्) १।]

⁽২) অত্র কু ইণ্ডি পদেন কৃৎপ্রতান্ত্রনিশ্বরিশ্ব ক্লঞো গ্রহণম্। অর-দেশতাত্র কুশা বল্গা ভবিকারজানিবন্ধিতথাৎ তী ন ভবতীতি বিশ্লপাদাঃ।

অচি, হশি চ পরে ইজন্তাশ্বিদর্গন্য রো ভবতি। কবি-রত্ত, কৈরিছ, বধুর্বাতি, অভ্যশোরিতি কিমৃ ! হরিঃ পাতৃ বঃ। ১৮। অহ্যো লুকি সুপোইরূপরাত্তিরথম্ভরে। [অহু: ৬া, লুকি ৭া, ছপ: ৬া, (অ [ন]-রুণ, রাজি, রবভরে) ৭]

উরাদ্যপবাদোহয়ম্, অচি, হশি চ পরে, স্ব্লুকি, সভি
অহ্লো বিদর্গদ্য রো ভবতি। অহয়য়, অহমূলম্ অহয়দম্,
অহয়িতি স্ব্লুকীতি কিম্ ? অহোভ্যাম্, অহোদ্ধিঃ; অয়পাদিষিতি কিম্ ? অহোরপম্, গতমহো রাত্তিরাগতা, অহোরথস্তরং দাম, কথমহোরাত্তঃ, (০) ত্রকদেশবিক্তমনন্যবস্তবতীতি, "ক্যেপদত্বাৎ" অহয়্তি, অহয়্তি ; সুকীতি কিম্ ?
দীর্ঘাহোনিদাঘঃ, হে দীর্ঘাহোবা, অয় — হল ইতি স্লোপঃ।
"উদর্ধোহয়ো"। "নাপতিাদয়ো রদ্ধো"।

নিপাতনামোত্বিদর্গো। চতুর্থ (৪) ইতি নিপাতনাৎ। ১৯। অহরাদের্বা পত্যাদিয়ু। (৫)

[षदद्वारमः (षदः षामि) ७, ता •১।, পणामियू १॥]

এবাং পত্যাদিষু পরতো বিদর্গস্য রো বা ভবতি। অহ-পতিঃ, অহস্পতিঃ; গীপডিঃ, গীক্ষতিঃ।

২০। ভোভগো অধো অবর্ণেভ্যো যো**২**চি লোপো বা।

[ভোভগো অবো অবর্ণভাঃ (ভোদ্, ভগোস্, অব্যোস্, অবর্ণ) ধাঃ, বঃ ১৷. অচি ৭৷, লোপঃ ১৯, বঃ •১৷]

⁽০) একবেশে একাংখে, বিকৃতং রূপান্তরপ্রাপ্তম্, অনম্ভবং প্রকৃতিভূল্যং, তেন রাত্তেরিকারাভাৎ রাত্তমিতি,রাত্রিশক্ল্যং কার্যাং ভবতি।

⁽৪) - চতুর্থ ইতাত্র নিপাতনাৎ বকাবত বিসর্গাভাবঃ।

⁽१) व्यक्तिश्राय क्रालीयः, धुन् रता स्वराणास्वयदेवः ।

ষচি পরে ভোঃপ্রভৃতের্বিসগঁস্য নমুপ্রয়ত্বতরো (৬) যো ভবতি; লোপো বা। ভোষত্র ভোজত্র; ভগোয়াগক্ষ, ভগো-ষাগক্ষ; অঘোয়েহি, অঘোএহি। অবর্ণান্তাং—ক্যান্তে, কমান্তে; দেবায়িহ, দেবাইহ। কথং দেবোহত্র ইতি নির্ব-কাশা হি বিধন্নঃ সাবকাশান্ বিধীন্ বাধন্তে ইত্যুত্বং ভবতি। (৮)

२५। त्वाभाष्ठ।

[(वारः (व्. स्) धा, ह • ऽ।] (১)

ক্চিদেকদেশোহপ্যসুবর্ত্তে ইতি পদান্তেহচি পরে বকার ঘকাররোর্লোপো বা ভবতি।

विष्टेषम्, विविष्णम्, षाधानग्न, षावानग्नः, उपाङ्ः, उधाङ्ः, उधाङ्ः, आविष्णः, आविष्णः, उधारिष्णः, उधारेष्णः, उधारेष्णः, उधारेष्णः, उधारेष्णः, उधारेष्णः, उधारेष्णः, उध

২২। হশি নিত্যম্। . [হশি ৭, বিভাষ ১২।]

⁽७) वानरकार्य मम्क्रवार्थः, न क् विक्वार्थः।वरक्राकात्रः क्रिकार्यः। ध्वयम् म्नानार निविनारं काद्रक्ष म मक्ष्यकः, वर्थाः (वर्धाक् र) हैकि। युः श्वरका रक म मक्ष्यकः करकारकिनदार्यक्ष्यकार्यः श्राह्मकार्यः। कारता नकारक, मिक्कादकारक मध्यवक्ष्यक्षिति द्विकारः।

⁽৮) प्रमण्डविधिविष्यप्र निववकानप्रः, वद्यज्ञविधिविष्यं नायकानपुर्

⁽১) বাবৎ সভবভাববিশিবিতি নিরমাৎ, প্রশ্তের বিগনিলালে প্রতিভাগি তা ববরোলোপ এব প্রতীয়তে। শ্রথনা একংগ্রেনাইটি বোলোন বেভি-ভঞ্জা-র্ত্তিঃ অব্যুক্তমাচন্ত ইতি বাকো আৰু আনাতি।

হশি পরে ভোঃপ্রন্থান্ত বিসর্গন্য: বেরাশ্চ নিজ্যং লোপঃ
ভাব। ভোগচহ, ভগোগচহ, মহোযাহি, দেনাগচহন্তি। ব্যোশ্চ
বৃক্ষয়তি; দেবোরাতীতি উদ্বিধেনির্বকাশদ্বাহ। হশীক্তি
কিম্ ? ভোঃপাহি, বৃক্ষব্করোতি,—ব্যোগ্রিতি মিবৃত্তম্।

২৩। তদেতদোঃ সোরকোরনঞ্সমাসে হলি।

[অক্তেদো: (তৎ, এতং) ৬॥, সো: ৬॥, **অকো: ৬॥, অনুঞ্ন্মাসে** ৭।, হলি ৭৷]

এতয়োরককারয়োঃ সোঃ সম্বন্ধিনো বিসর্গস্য হলি পরে লোপঃ স্যাৎ। সকর্ত্তা, এষয়াতি; কচিষেত্যেকে "সো বা ভবেৎ" "এষো হসুমান্"। অকোরিতি কিম্? সকোরাজা, এষকোযাতি; অনঞ্সমানে ইতি কিম্? অসোবা, অনেমোবা; হলীতি কিম্? সোহয়ম্।

২৪ | বা শরি খর্পরে | [বা ০১া, শরি ৭া, ধর্পরে ৭৮]

খর্পরে শরি পরতো বিদর্গন্য লোপো বা স্কাং। কশ্চ্যো-ভতি, কংশ্চ্যোভতি; কন্ঠাবতি, কংচ্ঠাবতি; কন্তন্ত;, কংস্তন্ত। খর্পর ইতি কিম্ ! কংস্থরঃ।

२८। मित्रि मेत्र् । [भित्रिश्री मेत्र • भी

শুরিগুণরে বিসর্গস্য সদৃশতমঃ শর্বা স্থাই। কণ্শেতে।
কঃশেতে ; কষ্ষতঃ, কঃষ্ডঃ ; কস্মা হুঃ, কঃসাহুঃ।

* ২৩ | চটে শ্বংনাইপ্রান্তত | [চ, ছে ৭, ম: ১, ম: ৬, অগি +১, মারত (ন-স্ব) ৬] চ, ছায়াঃ পশ্ধতো বিসর্গায় শো বা স্যাৎ। কল্চয়তি, কঃ-চরতি; কশ্ছাত্রঃ, কঃ ছাত্রঃ; "প্রশান্তস্যাসন্য চ নিত্যমেক-পদে" বৃশ্চতি।

२१। हेटर्र यः। हे. दंश, यः श्री

ট, ঠে পরতো বিস্পাস্য যো বা স্যাৎ। কণ্টীকতে, কঃ-চীকতে; কণ্ঠকারঃ, কঃ ঠকারঃ।

> ३৮। তথে ८मा३मशद्र । [७, १४ १।, मः २।, समभदः (न-मभदः) १।]

ত, থে পরতো বিদর্গ সা, সো বা স্যাৎ। কন্তপন্থী, কঃ-ডপন্থী; কন্থকারঃ, কঃথকারঃ; অন্তপর ইতি কিমৃ? কঃ-ৎসক্রঃ।

২৯ | নশ্চামস্ত চাদে তথৈবাহতুকি | [ন: ৬), চ ০১), অনত (ন-ম) ৬), চাদে (চ-আদি) ৭), তথা ০১), এব ০১), অতুক্তি (স-ডুক্) ৭)] (১০)

চ্ ছে. ট, ঠে, জ, থে প্রতোহমদ্য নদ্য চ তথৈব শ, য়,
দা ভবস্তি। ভবাংশ্চরতি, ভবাংশ্চাদয়তি, ভবাংশ্চীকতে, ভবাংশ্ ঠকারঃ, ভবাংস্ত্যাগী, ভবাংস্থৃড়তি। অমদ্যেতি কিম্? প্রশান্-চিনোতি, অতুকীতি কিম্? ভবাক্তিতে, অসপর ইড়েব, ভবান্ৎসক্ষঃ। (৯১)

७०। काबि काम मह। [क्षीर भारताबः था मः भा)

⁽১०) अवकारबाध्यां अरवाश्चरमञ्जूष्यक के स् अर्थनां न व्हर्म स्वर्धने । . . .

⁽১১) जन्मी वत्रमस्य धारा भित्रका के किल्ला के मार्थ । . .

কানি,গলে,কানিত্যস্য নতারক নঃ ন্যাৎ। "ভানিনতাৎ স্ম্যা বিষর্গো নেব্যতে। কাংকান্। (১২)

৩১। পে নুনঃ। [পে ११, নূনঃ ।।

পक्रित 'नृन्' ইত্যস্য नम्य मः म्यारः। नःन्नाहि । (১০)

৩২। মঃ স্থাট।

[यः ७, ऋषि १।]

হুটি পরে সমো মস্য সঃ স্যাৎ। সংস্কৃত্তা, "হুটি সলোপো বা' সংক্ষৃত্তা। (১৪)

७७। श्रूमः अयाथर्गदत इटिवृश्चि नटियो। [भूमः भ, पत्र ११, चपर्गत ११, इस्कृष्टिः ११, इ.११, म, त्मे १४]

থরি পরে পুমো মস্ত সং স্থাৎ। চ,ছে, ট.ঠে তু শ,ষো ভবতঃ, অনেনাহত্র (১৫) প্রকরণে বিসর্গস্থাহকরণং প্রভ্যেতধ্যম্। পুংস্কানা, পুংস্ক্রম্, পুংশ্চলী, পুংষ্টীকঃ; অধর্পর ইতি
কিমৃ ? পুংক্লীরম্।

⁽১২) কানিতি হিতীয়াজায়করণকিয়্শকভৈব গ্রহণং নাজভ, তেন চটকান্ কান্ পঞ্জিতি ন ভাং।

⁽১৩) নূন্ ইতি হিতীয়াভাত্তকরণয়। নূহ-ভাহি-নূ ভাহি-নূ-পভাহি
-নু গাহি-নূ : গাহি-নূন্ পাহি ইতি রূপাভয়াণি তবভি মভাভৱে।

⁽५8) मरक्षा-गंक

^{(&}gt;४) चल नकाइक दिनार्जी न काईब्राः।

७३। जाज नम् शाम श्री भन्ना निद्यार क्षा पा। [चड १, नमः १, धाक् • भ, चक्रनानिकः भ, चक्रमानः ५५ मा • भ]

অত্ত সাদিপ্রকরণে মকারস্কালাভ্যাং প্রাগসুনাসিকো-হসুস্বারো বা ভবতি।

ভবাঁশ্চরতি, ভবাংশ্চরতি ; পুংস্কামা। পদান্ত ইতি নির্ত্তম্।

অথ বত্বপ্রকরণম্।

১। ইচ্কুরৌ রুম্বিসগব্যবারে ইংশি সঁঃ ষঃ প্রত্যয়াদেশ-শানিঘনিবসীমপদাদ্যস্তসাত্রীম্।

ইচকবর্যরেফেড্যঃ পরস্থ প্রত্যয়াদীনাং লকারস্থ বো ভবতি। অগ্নিষ্ বায়ুর্, পিতৃর্ গোরু, নৌর্, বাক্, রুঙ্কৃ বার্ । "ব্যাজ। ব্যাৎ (ল, ব্ য্) ৫০, চ •১০"—হল্যু, রুকব্রু, ধয়৾য়ৢ; আদেশস্ত—সিষেচ, স্থাপ। অচ্তবর্গপরাঃ সাদয়ঃ বোপদেশাঃ। সি, বিদি, স্বিদ, স্বিদ্ধ, স্বপয়শ্চ, স্থি, স্বাদ্ধ, ব্যা, সেরু, স্ব, বর্জনিতি। তথাচ—সূচ, সূত্র, স্বান, সাম, সভাল, স্তেম, স্তোলানামযোপদেশস্থা। শাসি, হাসি, বসাং—শিউঘ্, জকুঃ, উষিত্র্য। সুমাদিবারালে হাসি—লগীংবি, সর্গিঃমু, পরস্থাৎ যড়ে কৃতে বিস্পৃত্য শিরু শরুং স্পিন্ত, নেই নিংস্সে। অপদাদ্যক্রান্তানিতি কিন্তু পদাদেঃ, দ্বিসেকঃ, ব্যতিসে; পদান্তক্ত লোকার্যক্রানিতি কিন্তু টোশ্চাপদাত্তে লং য ইতি বক্তব্যস্থারট্ডি, লেগণনীপ্রে। টুডং, রারটি।

২। স্তোতিণীোরের (১) সন্ট ষর্পেইভ্যা-সাদসহস্বদ্যিদীম্।

সনঃ ষত্বে তোতেণ্যন্তানাঞ্চ অভ্যাসাদিচঃ প্রস্থ বৃত্বং স্থাৎ। তৃষ্টু্ষতি: গ্রন্তানাং—সিষেব্যিষ্ঠি, সিম্প্রায়িষ্ঠি; অসহাদেরিতি কিমৃ ? সিসাহয়িষ্ঠি, সিম্বাদ্য়িষ্ঠি, সিম্বেদ্য়ি-ষ্ঠি; নিয়মঃ কিম্ ? সিসিক্ষ্ঠি, সুস্ষ্ঠে; ষত্ব ইতি কিম্ ? ইছ নিয়মো সা ভূৎ; সুষুপ্রতি, তিষ্ঠাস্তি।

৩। হ্রম্বতিদিতাদিতদ্ধিতরৌরতি 🕏 ।

পদান্তার্থং বচনম্। তদো তাদিতদ্ধিতে চ পরে ব্রস্থাৎ পরস্থা সম্ভাবতং স্থাৎ। সপিনিঃ, বপুষীঃ, চতৃষীয়ম্; ব্রস্থা-দিতি কিম্ ? গীন্তঃ, ধূস্তঃ; অতিও ইতি কিম্ ? ভিন্তা-ভারাম্।

8। निमें अथराजी मक्< रमवरनी।

তপতে পরে নিসঃ যত্বং স্থাৎ। সর্ৎসেবনঞ্চেৎ। নিউপতি ছবর্ণম্, নিউপাণঃ। সর্ৎসেবন ইতি কিমৃ ! নিস্তপতি ছবর্ণং স্বর্ণকারঃ, শুনঃপুনর্ধমতীত্যর্থঃ।

৫। अशादमी चर्ये (२)।

भागार्थार्यावद्या वद्यातः भवत्य द्य वदः छार ।

^{্ (}১) এব্কারোৎত্র নিয়মার্থঃ, সনঃ বংখ, সভি, ভৌতেভ বঠিত চ বন্ধং নাজকেতি নিয়মঃ।

⁽২) সুভেডি বরণতৈব গ্রহণং ন তু স্থাধাতুনিশারভেতি।

অষঠ:, আষঠ:; গোঠম্, গোঠঃ, সংক্ষায়ানেক, অহাত্ত গোড়ঃ। ভূমিঠঃ, সব্যঠঃ, অপঠঃ। অস্ব, আম্ব, গো, ভূমি, সব্যাহপ, বি, ত্রি, কু, শেকু, শঙ্কু, অস্কু, মঞ্জি, পৃঞ্জি, পরম, বহিঃ, দিব্যয়ি (দিবি-অগ্নি)। প্রত্যোহ্তাহ্যামিনি। ত্র্যাহ্ব-ণামেহ গোত্থানম্। ইতঃ পদাদৌ বিধিঃ।

७। विकूमभीशिति छाँ इनछ।

এভ্য: স্থলতা ষত্বং আৎ। বিষ্ঠলম্, কুষ্ঠলম্; শমীশব্দতা সংজ্ঞারাং ব্রহা, শমিষ্ঠলম্ পরিষ্ঠলম্। কপিষ্ঠলো
গোত্তে। কপিষ্ঠলঃ আৎ গোত্তমাদিপুরুষদেতে ।

৭। নিনদীভাঁখি স্নাতেঃ কৌশলোঁ।

আভ্যাং সাতে: কোশলে গম্যে করং তাৎ। কার্য্যে নিকাতঃ, নদীফঃ নদীজ ইত্যর্থ:। প্রতিকাতং সূত্রে। প্রতি-ফাতং তাৎ সূত্রেখেৎ।

৮। মাতৃপিত্ভাং সত্ত্বী । বঠালুকি বা।

আভ্যাং স্বস্থং যত্বং স্থাৎ। মাতৃষদা, পিতৃষদা; ষষ্ঠালুকি বা; মাতৃংহদা, মাতৃংসদা; পিতৃংহদা, পিতৃংসদা।

৯। স্বিনিছ ভাঃ স্পিস্তিসমানীম্।

ত এছাঃ স্প্যাদেঃ বৰং ভাৰ। স্বৃপ্তঃ, বিষ্প্তঃ, নিঃষ্টিঃ, চুঃবমষ্, স্পীতি নিৰ্দেশঃ কিম্ ় স্বপিতি। বিক্তানস্থাদি আৎ,—বিক্তারঃ পঙ্জিনামছেলঃ। অভিনিকীনে বর্ণে। স্থাৎ,—স্তনতেরভিনিকীনো বিদ্র্গাধেয়া বর্ণঃ।

३०। विखेदती हकाननद्रीकि। कृत्का निभाषात्व। दकानद्र-विकेट्यो।

५५। नवारमेश्कुरर्ने नक्ष्ये।

ষত্বং আং। অঙ্গুলিবন্ধ। যবাগু:; বাক্যে ডু, অন্নি: সঙ্গং পশ্য।

১২। জগ্নিফ দায়ুফোমাগ্রিফোমজ্যোতি-ফোমাগ্রীযোমভীক্তানগবিতিরযুধিতিরীঃ।

অকৌ নিপাত্যতে। অগ্নিউৎ কিবতঃ। ১৩। সুষামাদিযুটী।

अबु वदः चार । स्वाभा, कःवाभा, स्विकः, इःविकः, इन्द्रिकः, इन्द्रिकः, इन्द्रिकः, इन्द्रिकः, इन्द्रिकः, क्रिकः, विविव-विज्ञानि ।

. ১৪। তুরাদেঃ সাট্ট।

সহে: সাচ্ভৃততা ষত্বং আৎ। ত্রাষাট্, জনাষাট্; সাচ ইতি
কিমৃ ? ত্রাসাহোঁ।

১৫। আসেবাদড্ব্যবায়ে২পি।

সেবপর্যান্তঃ অভ্ব্যবধানে ষত্বং বক্তব্যম্। অভিষ্পেতি, অভ্যস্পোৎ। তা পা হা ওম হা

১৬। স্থাদেরভ্যাসব্যবারী চাভ্যাস**স্থ** চ।

শ্বা সেবরপ্রভাতরাসেবাদড়ভ্যাসব্যবারে চাত্যাসম্ভ চ বছং বজারুম্। ইজন্তাভ্যাসাধিশসকারতা বদ্বে সিংবাহণি নি-রমোহণিজন্তাদিশি যথা আহ। পরিভর্মো, মতিবিবৈশক্তিবতি।

১৭। উপদর্গতি স্থবাজি সো স্ত কভ স্থা সেনয় সঞ্জ সঞ্জাম্।

শ্রাণিক্ষিমি ভালেষাং যত্তং তাও। পরিবৃষ্তি, পর্যাবৃষ্থ, অভিবৃশোতি, গভাষুণেং, পরিমাতি,পরিকৌতি, পরিকৌততে, অধিতত্তী, বেৰয়াং জিৰুখং কাজি;—অভিনেশনতি, অভি-বজতি, পরিস্কতে; ইচ্ক্র ইত্যেব—প্রস্বতি, প্রয়োতি।

३६। म्बरजैतगर्जी।

প্রাদিছনিমিন্তাৎ দেধতেঃ বন্ধ ক্যাৎ । ক্রিবেধতি ; অড়-ভ্যাসব্যবধানেহপি—ভ্যাবধৎ, নিষিষেধ । অধ্বভাষিতি কিন্ ? অনুসেধতি গাং গোপঃ, শপা নির্দেশালেই নিসিধ্যতি ।

১৯। मिर्हेत्रयि

প্রাদে: সিচে: বছং স্থাৎ। অভিনিঞ্জি, অন্তাধিঞ্ছ, অভি-বিষিক্ষতি; অযতীতি কিম্ ? পরিসেসিচ্যতে। প্রসন্ধ্যতি-বেধাহরম্ (৩) তেনোভরসকারত্যৈব নিষেধঃ; অপ্রাদেশ্য ন, সেসিচ্যতে।

२०। मर्देत्र अटर्डें।

প্রাদে: সদে: ষত্বং স্থাৎ। নিষীদতি, সুষীদ্ধ, অপ্রতে-রিতি কিমৃ ? প্রতিসীদতি।

२५। इटडिक्शिकोश्विधि।

ন্তভেরিজন্তাৎ প্রাদেরপাল বন্ধং সদাং। বিউজ্বাতি, উপউজ্ঞঃ ; জচতীতি কিমৃ ? ব্যক্তভং ।

⁽०) श्रमण्याचित्रंर्रणगात्र अच विविधार्थः, वद्या, जश्राधाण्यः विदेशी । श्रीचार्यस्य श्रीमणाः। श्रमण्याचित्रस्याभरमा क्रियाः न्यूष्टः पञ्च वक्षः । ५ के श्रीमण्यः -विदर्शतः श्रीचार्यस्य श्रीमणाः। भर्त्र गामः म विद्यार्थः परकारम् वर्षाण्यः प्रतिकारम् । भर्षम वक्षः ॥ १३ देखि । जाव कृ श्रीमणाः भवकः ज्ञामसङ्ख्याः ॥ अविद्यार्थः । मण्डियाः अच स्टब्स् निर्वादः, श्रीस्थः भवकः ज्ञामसङ्ख्याः ॥ अविद्यार्थः ।

२२। व्यवाद मामी भाग लक्ष्मदश्री ।

चवा ए खर छः वदः मार । मारी ला- चवकेका तमना আলম্বনে—অবউভ্য দণ্ডং স্থিতঃ; নাম্য**্র—অবস্তর্দ্ধঃ শীতেন।**তা ও। ৭ ২৩। ব্যবং স্বনৌ ভোজনে।

আক্তাং সমুঃ মত্বং স্থাৎ। বিম্নণতি ভক্তম, অব্ধয়াণ : ভোজন ইতি কিম্ ? বিশ্বনতি চক।ম্।

২৪। নিবিপরিভাঃ সেবসিতসয়সিরুসহ-সুটামদোটঃ।

चारनः (नवानीनाः यदः न्रात्। निरंशवरक, निरंशवरम्, ব্যুষেবত: পরিষিষেবে। আদেবাদিতি নির্ভম্। দিতঃ-পরিষিতঃ; সয়ঃ—বিষয়:। সিবু—নিষীব্যতি; সহ—বিষ-হতে। অতো নাহভ্যাসদ্য অভ্যাসাদিচ: ষত্বং সিদ্ধমেব. নিসিষেব: পরেঃ হট্ সম্ভবতি - পরিকুরু, পরিকারঃ; অসোঢ় ইতি হলস্তাহসুকরণাৎ দোঢ়রপদ্যৈব নিষেধ:। পরিদোঢ়মু, **প**त्रिटमाष्टः ।

২৫। স্থাদেঃ সিবাদিস্তস্ত্র্পাৎ বহিত্ব্যবায়ে।

नि, वि. পরি-ভা: गिवु, मह, হুট, স্তু, স্বঞ্জাম অভ্ব্যবায়ে ষত্ব বা স্যাৎ। অধীবাৎ, অসীবাৎ; ব্যষহত, বাসহত; পর্যান্ধরোৎ, পর্যান্ধরোৎ; অফৌৎ, অস্তেৎ; পর্যাহজত, প্র্যাম্বজত।

२७। भरते करमें देति शिशोम।

আভ্যাং ক্ষলেঃ যত্তং বা স্যাৎ। পরিষ্কলতি, পরিষ্ক-ন্দতি: বিক্লমতি, বিস্কন্দতি ; বেরনিষ্ঠায়ামিতি কিম্ ? বিস্ক-त्रम्, विकासवान्; हेट् इवट्डाव-- প्रतिकश्रम्।

२१। क्यूतक दनीर्निनिविडी ।

এভ্যোহনয়োঃ ষত্বং বা স্যাৎ। নিক্ষ্রতি, নিক্ষ্রতি;

নি:ক্ষুর্তি নি:ক্ষুর্তি ; বিক্ষুণ্তি, বিক্ষুণ্তি। ২৮ । স্তন্দের্যাত্রপর্যাভিনিভ্যোইপ্রাণিষু।

पा कार्येकः सङ्घः वा मा। विषान्तरक, विमान्तरक তৈলম্, অপ্রাণিম্বিতি কিম্? পরিস্যুলতে ম্ৎস্যঃ।

२ । दं ऋखिर्निष्रम्।

শ্ব নিত্যং ষত্বং দ্যাৎ। বিশ্বভাৱি, বিশ্বভঃ। ৩০। প্রাত্তিক প্রদান ভ্রেমিস্টের্যা ২টোঃ।

আভ্যাং যকারেইচিচ পরে অস্তেঃ ষত্বং স্থাৎ। যি—প্রাচ্নঃ-याद, অভিযাৎ, অচি-প্রাতঃষত্তি, যাহচোরিতি কিমৃ ?

পরিস্তঃ, ইচ্কুর ইত্যেব প্রদ্যাৎ।
১১০ তা ব্যাস্থা
৩১। ন সোঃ পূজায়াম্।

যেষাং হুশব্দাং ষত্বমুক্তম্, তেষাং পূজার্থে ষত্বং নান্তি। হ্মসিক্তং, সুস্তুতং ত্রা।

৩২। অতেরতিপ্রবৃতী চ।

ষতেঃ পূজায়।মাতক্রণে চ ষত্বং নাস্তি। মতিসিক্তং 'ব্যা।

৩৩। অপেঃ স্তোকার্থসম্ভাবনা**ংশ্ববস**র্গণ-र्गियूक्ट (शर्वे।

अवर्थिषु वर्डमानामिन नकाद भवत्र यहः नास्ति। मर्जिन বোহপি তাৎ; সম্ভাবনা—যোগ্যতা,—মপি তেওা প্রবৃতং হরি: ; অব্বসর্গঃ কামচারাহভাস্তা (৪) অপি সিক, অপি স্তুচি চ ; গর্হায়াং—অপি সিঞ্চেৎ পলাঞ্চ বিপ্রঃ, অপি স্তুয়াৎ বুদলম্ ; সম্ভব্যে—অপি সিঞ্চ চ, অপি স্তুহি চ। ৩৪। প্রতিপর্য্য ২ম্বভিভ্যো দ্বিতীয়ার্থভাঃ।

এত্যো বিতীয়ার্থরতিভাঃ পরস্থ ধাতোরুক্তং ষত্বং নাস্তি। বৃক্ষং প্রতিস্থীয়তে; বৃক্ষং বৃক্ষং পরিদিক্ষতি; তম্মুন্তৌতি; মামভিস্থাৎ।

७०। यूक्षे सम्मारी

অনয়ো: স্ত্ঞা বৰং নাস্তি। অভিসোধ্যতে ; সন: কিপ্— অভিস্নৃদু:।

৩৬। দিবুদহৌশ্চঙি।

. অনয়োশ্চ'ঙ দহং নান্তি। পর্যাসীদিবৎ, ব্যাসীদহৎ।
৩৭। সদিস্বঞ্জীঃ পরস্থী লিটি

भना बार्नि । विषयान, পরিবস্বস্থে। ৩৮। সুস্থানি বুট।

এযুষত্বং নান্তি। স্থা, ছাৰ্যা, প্ৰতিক্তৰা, নিড্ৰা, প্ৰিষ্ঠিত্য

ইডি ঐপদ্মনাভদত্ত্ততি সুপদ্ধে ব্যাকরণে প্রথমাহধ্যায়ক্ত তৃতীয়ঃ পাদ:।

अपयाभ्यास्य मृह्युष्ट शामः।

STATES

১। तर्हणी त्ने के चत्रकृत्त्रकास्टर्ड-श्रीनर्द्धा नवक्षकृत्त्रह (:)।

त्र, य, सवर्गकाः लद्दः नमान्शवरमा वर्षाद्रां रण क्वरित । यद्ग-कवर्गानि-वावशार्गरेशि । कीर्गम्, श्रूकाकि । व्यामिवाव-वार्गरेशि(२) कत्रनम्, कीम्नम् । व्यवस्थादार (७) विनर्गारुश्चार्द्रो ह यद्गो—केतःरकन. केतःरनम् । हेलाख क्वर्गिकि नक्षम् । दःहनम् । क्—चर्दन, म्र्यन्, गर्णन्, चर्चान्, म्र्यन् । म्— सर्गन्, रद्धन्, मर्यन्, सर्गन्, प्राप्तन् । य—कार्यान, म्र्यान् । य—क्वानः । ह—वर्दन् । सम्बद्ध हेलि किम् । विकान् ।

^{(&}gt;) বনুষ্ণা ইতি ইতবেত্বন্ধ বিশ্বন্ধতা ইত্যানঃ। প্রাণাদিতাত বজান নাণবাৎ সমানপদত ইতি শভ্যান ইত্যাত আহ স্মানপদত ইতি, সমান-শব্যাহক একপ্রিয়া। তথাত নানিনিঃ ব্যাভ্যাৎ নো বা সমানপদে ইতি। প্রাকীতাক ইনাবাজেতি বৃহত্তে প্রাঞ্জেণি কব্যেত্ত্বাহরণন্ । ইমনং নির্বাশিক্ষা প্রভাততিক ব্যাহ

⁽२) प्रकारमध्नि पर्व देखि क्षत्रकारकाव ग्रवटक। देखाँकट इव मक्षत्रकावकार चनकार दर्शक मोतकाराम्।

[्]ति विशेष विभागति विश्व विष्य विश्व विश्य

অতৃত্ব ইতি কিম্ ! ক্স্ত তি, ক্রন, কুর্বস্তি। ন-বর্জনিতি (৪) কিম্ ? নকারত্বো নো গো ভবত্যেব। ক্লাঃ, টুডেন পরনকা-রস্ত গত্ম।

२। পূर्वभनी ((१) मरख्डा शीमगः

পূর্বপদস্থ-রষ্ভ্যো নো ণঃ স্থাৎ। নারায়ণঃ, সূপ্ণথা। সংজ্ঞায়ামিতি কিমৃ ? দীর্ঘনয়না। জগুইতি কিমৃ ? ঋগর-নম্। স্বারিব্যবায় ইত্যেব, অন্ধনসঃ। স্বতঃ পূর্বপদাদিধিঃ।

৩। বন্সীএেশারিকামিএকাসিএকাকো-টরাপুরগাভ্যঃ।

এভ্যঃ সংজ্ঞায়াং বনস্থা নো ণঃ স্থাৎ। মতোবণম্, শারি-কাবণম্, ইত্যাদি। নিয়মঃ কিম্ ! ইন্দ্রনম্।

৪। প্রনিরন্তংশরকার্য্যাত্রখদিরেক্ষুপ্লক্ষণী-যূক্ষাভ্যৌহসংজ্ঞায়ীঞ্চী।

প্রাদেঃ সংজ্ঞায়ামসংজ্ঞায়াঞ্চ বনস্থা নো বাং স্থাৎ। প্রব-ণম্, নির্বণম্, অন্তর্বণম্, শরবণম্, কার্য্যবণম্, আত্রবণম্, ইত্যাদি।

- (৪) নবজ্জ মিতি অণ্প্রত্যরাজং ক্রিয়াবিশেষণং তথা নুকারব্যভিরিক্ত-ত্বর্গস্থিতো নো গো ল স্থাদেব।
- (৫) তাৎস্থালক্ষণমা তৎস্থনিমিতমনেনোচ্যতে ইত্যাহ পূর্মাণক্ষ রুষ্ট্য ইতি। বদ্যপি বৃত্তাবপ্যেকপদত্মন্তি তথাপি নিয়মোহয়ং, স তু পূর্মাণক্ষা-তৃত্তরপদস্ত সংজ্ঞামস্তরেশ গতং ব্যাবর্তমতি। বথা—দীর্ষান্যানা, ভারানশং। ন তু তদ্বিতপূর্মাণক্ষাপি। যথা—ধারপায়ণা, অর্জং নাসিকা বস্তু স অর্জনসং।

৫। বা রক্ষোষধিভ্যোইত্রাধিকাচোইতিরি-কাদেঃ।

বুকে বিধিন্থনি নিতাদনতা নো ণো বাঁ তাে । শিরীধবণম্, শিরীধবনম্। গৃজ্ঞারীবণম্, গজ্ঞারীবনম্। ওধধেঃ— দূর্ববিণম্, দূর্ববিনম্। অত্যধিকাচ ইতি কিম্? দেবদারুবনম্। অতিরিকাদেরিতি কিম্? তিরিকাবনম্। তিরিকা, ইরিকা, হরিজা, তিমিরা, বিদারী, কর্মারঃ। স্বরাদিব্যবায় ইত্যেব— সূরণবনম্।

७। जरुर्शित्से (७)।

আদস্তম্বনিতি দৈহন্ত নো শঃ স্থাৎ। পূর্বাহুঃ, পরাহুঃ। আদস্তাদিতি কিম ? নিরহঃ।

৭। বয়সি (৭) ত্রিচতুর্ভ্যাৎ হায়নস্থা।

বয়সি পম্যে আভ্যাং হায়নত নো ৭ঃ তাং। তিহায়ণো বংসঃ, চহুহায়ণো গৌঃ। বয়্গীতি কিং তিহায়নাশালা।

৮। अयमणे शतारमत्र अत्यापार (৮)।

পরাদেরয়নস্থা নো গঃ স্থাৎ। পরায়ণম্, পারায়ণম্। উত্তরায়ণম্, অন্তর মুখিশ্। অদেশ ইতি কিমৃ ? অন্তরয়নো দেশঃ।

⁽৬) টপ্রতারাজন্ত কুতাকুলেশটের গ্রহণমত্র। তেন দীর্ঘাকুটি প্রার্ট দীর্ঘান হারনার্ত্ ইত্যাদৌন ল্লাং। অন্তগ্রহণং স্পত্তার্থ্। তপরকরণাৎ পরা-ক্রিডেছেকু: পরাকু ইতি জিনেক্রঃ।

[्]र (१) दुदः जीतिनाः जीतिज्ञानः।

⁽৮) তুশবোহত ভে**ৰে**।

à। निरंशिश्यवाशीद।

আভ্যাং নিয়ো ণহং স্থাৎ। অগ্রনীঃ, গ্রামণীঃ।

১০। বাহনস্টাহিতবাহাঁৎ (৯)।

আস্মান্ত্র পার্থ আছে। দর্ভবাহণো বরঃ, ইকুবাহণো গোঃ। আহিতবাহাদিতি কিম্? ইন্দ্রদম্বন্ধি বাহনং—ইন্দ্রন্থ বাহনম্। আহিতাদিন্দ্রবাহণমেব।

55। शानमाँ (मटमें।

পূর্ববিদস্থনিমিত্তাৎ দেশে গম্যে পানস্থা নো গঃ স্থাৎ। স্বরাপাণাঃ (১০) প্রাচ্যাঃ, সোবীরপাণাঃ বাহলীকাঃ, ক্ষায়-পাণাঃ গান্ধারাঃ। দেশ ইতি কিম্ ? স্বরাপানো নরঃ।

্ ১২। বী ভাবকরণয়েটি।

খনয়েঃ পানস্থ গত্বং বা স্থাব। স্থ্যাপাণং বর্ত্তে, স্থাপানং বা। পীযুদপাণং বর্ত্তে, পীযুদপানং বা। করণে—
পীয়তেখনেনতি পানঃ, ক্ষমপাণঃ কংসঃ, ক্ষীরপানো বা।

⁽৯) উছতে বেন ভবাহনং নিপাতনাদীর্ঘঃ, বহতীতি বা। আহিজশব্দেন বাহনে বদারোপিতং ভচ্চাতে। অত্র ভৃ কপ্রতারস্থাতীতবাচকত্বাকি
বিক্লিডং, তেনারোপ্যমাণমপি। তেন যদা বাহনেনারোপিতং ভূমো ভত্তাং ব কেবলম্পকলিডং ভদাপি ভবভ্যেবেতি কাশিকা। উহতে বভ্যাত্থং কর্মণি
গ্যং ভতঃ কর্মধারয় ইতি।

⁽১০) নমু ম্রাপানাদর: প্রাচ্যাদিদেশবিশেষণীভূতাঃ সভো মধুষ্যে বর্জ্যন্তে, তৎ কথং দেশক প্রমৃচ্যতে চেদেশসম্বদ্ধারেশ মধুষ্যে প্রবৃদ্ধিঃ এতাবতা দেশপদেনাভিধীরতে। যত্র তৃ তথা নাজি তত্র পথং ন সাদিজ্যাহ স্থাপানো নর ইতি নাত্র দেশসম্বন্ধন শক্ষপ্রবৃদ্ধিঃ।

১७। गितिममानी मार्के।

धवार पदः वा छार । त्रितिनमी, त्रितिनमी । वर्गमी, वर्ममी। ठक्रनमी, ठक्रनमी । इक्रिनिडचा, इक्रिनिडचा (১১)।

১৪। প্রাতিপদিকান্তর্ম্বিভক্তীনামযুবাদেঃ।

এবাং শত্বং বা স্থাং। প্রাতিপদিকান্তস্থ—ব্রীইবাপিণো, ব্রীইবাপিনো। কুম্—মাষবাপাদি, মাষবাপানি। বিভক্তঃ— তন্ত্রবায়েণ, তন্ত্রবায়েন। অবুধাদেরিভি কিম্ থ বিপ্রযুনা, প্রপকেন, অপ্রগামিনো, শান্তবাক্যানি, ছাত্রগোমিনা। স্রাদিব্যবায় ইত্যেব—গর্দভবাহিনো।

১৫। একাটি কুমতি চৌতরপদে নিতীম (১২।)

একাচ্যতরপদে কবর্গবতি চ প্রাতিপদিকাস্তাদীনাং তেষাং
নিত্যং নো ৭: দ্যাৎ। একাচি—বৃত্তহণৌ, ক্ষীরপাণি, ক্ষীরপেণ। কুমতি—পুস্পযোগিণৌ, সর্বাঙ্গাণি, নগরকাকেণ,
দক্ষমখেণ, সর্বভোগ্যেণ। অযুবাদেরিত্যেব ? অগ্রগামিনো।

১७। डेलनगीरक्षां लटनगरिव्मीनानिलीम् (১৩)।

উপসর্গন্ধনিমিত্তাদেশাং গতং স্যাৎ। . সর্বে নাদয়ে। গোপদেশাঃ—নৃতি, নর্দ্ধি, নন্দি, নক্কি, নাটি, নাথু, নৃ-বর্জ্জম্ ।

⁽১১) গিরিনদী, গিরিনধ, গিরিনজ, গিরিনিতম, চক্রনদী, চক্রনিতম, ত্র্যমান, মাবোন, আর্গরনা, ইত্যাকৃতিগণোহরং গিরিনদ্যাদিঃ। ক্রিন্তম্বর্থ বামনান্যসম্প্রতাহিপি চক্রমতঃ।

⁽১২) একাজিতি বছরীছি:। কৃ: কবর্গ: বিদ্যতেছবিন্ধিতি কুমান্, তশিষ্
সমাসান্তভ্তত পদত উত্তরপদত্মিতি ক্রি:। একাচি উত্তরপদে কুম্মি চ .
সতি প্রাতিশ্বিকনকারাণাং পত্মিতি স্পত্তীর্থম্।

^{(&}gt;०) (वानरक्तमा वृद्धअवकात्राक्रिकरनानक्तिः। हिरनाविमीनाहकाति-

প্রাথনি পরিণিনীষ্ঠি, ু প্রায়ক্ষ 🔩 নাজার্থে প্রাণ্ডো नाग्रदका यन्त्रां न अनाग्रदका दिनाः। ताश्रदम् देखि किम्? প্রনদ্ধি। হিন্দু-প্রহিণোতি। মীনা-প্রমীণাতি। আনিপ্ (লোটঃ)—প্রবপাণি। স্বরাদিব্যবায় ইত্যেব—প্রদদানি।

১१। नम्कि।

প্রাদিস্থনিমিতাম্সো গহং স্যাৎ। প্রণসং মুখ্যু (১৪)। ১৮। অনিতেরন্ত ইটা।

প্রাদেরনো গত্বং স্যাৎ। প্রাণিতি। অন্তশ্চ—হে প্রাণ্(১৫)। Sal डेट्डी विक्लमा।

বিক্তক্র্যানিতেক্ভো নকারো গো স্যাতাম্। প্রাণিণি-**ষ**তি |

- (১৪) প্রণসমত্ত নাসিকায়া নসাদেশকৈর গ্রহণথ ন তু নস্থাতোঃ। নতু উলফুর্নার কং বিছিত্ম, উপসর্গন্ত আহাপসর্গঃ প্রায়াতোরিতি। তৎকথমত পত্তং ভাৎ। সত্যং, উপসর্গপ্রতিরূপকমেবাতোপসর্গ উচ্যতে। যথা-ছাত্তরূপসর্গা-দরতোহণ ঈবিত্যাকে. প্রণ্যমিতি প্রণতা নামিকা যুমাজক্তবা. এবং তুর্ণসং নিৰ্গমিত্যালয়ঃ।
- (১৫) পরেরশোন গড়ং বা। यथा—হে প্র্যাণ্, হে পর্যান্। ইছি

लालकानमः, ছल्मावरश्रदानि कवयः कूर्सखीि श्रायार। ऋत्वाल-সর্গপদেন তল্লিমিত্তং লক্ষ্যতে। ইহ বং ক্রিয়াল্যোতকাঃ প্রাদয়ঃ তং প্রত্যুপসূর্বা ইতি ক্সায়াং। উপস্বর্গভাবাদত্র বত্বং নাস্তি। উপস্ব্যাদিভিঃ किः वृक्तः भविनश्रां अनाग्रदका शक्तकः, नारमाशनिशाख्यत्नाभमर्भदापि প্রতিঃ। ন ধাত্বস্তবোপদর্গে প্রগতে। নায়কো ষ্মাৎ স ইতি ক্রমদীশ্বরঃ। হিনোতিমীনাত্যোর্কিকৃতমণি গৃহতে, অজাদেশম স্থানিবস্থাৎ, একদেশ-বিকৃত্মন সুবদিতি স্থায়াচ্চ। প্রহিণ্ডি, প্রমীণীতঃ।

२०। निश्मिनिकनिकार यो।

এষাং গত্বং বা স্যাহ। প্রণিংস্তে, প্রনিংস্তে। প্রণিক্ষতি, প্রনিক্ষতি। প্রণিক্ষতি, প্রনিক্ষতি।

२५। रदखेंद्रदणीश्खरीखेंदिनदनी।

প্রাদেইনোহতো গত্তং স্যাৎ। প্রহণনং, পরিহণ্যতে।
অন্তরন্ত্রেশ—অন্তর্গন্ম। দেশে তু—অন্তর্গননা দেশঃ। অত
ইতি কিম্! প্রন্তি, প্রাঘানি। অতুর্ভ ইত্যেব—অন্তর্হতা।

२२। वदमानी।

বময়োঃ প্রয়োঃ হস্তের্বা স্যাৎ। প্রহণুঃ, প্রহয়ঃ। প্রহণ্যঃ, প্রহন্মঃ।

২৩। ক্রতৌ ২টো ২ভা ভূপুক মিগমিপ্যারি-বেপা মূঁ।

উপদর্গান্তাদের অধাত্নাং ক্কতো নং, অচঃ পরে। গং স্যাৎ (১৬)। অন, মানাহনীয়, নীন (নি, ইন্), নিষ্ঠাদেশেষু সন্তবং। প্রয়াণ শন্, নির্যায়মাণন্ প্রযাণীরন্, পরিহাণিং, প্রযায়িণো, প্রহীণং। অচ ইতি কিন্? প্রমাঃ। উপদর্গাদিত্যের—নর্যানং। স্বরাদিব্যবায় ইত্যের—প্রদানন্। অভাদীনামিতি কিন্? প্রভানন্, প্রভবনন্, প্রপবনন্, প্রকমনীয়ন্, প্রগমনীয়ন্, প্রপায়নন্, প্রবেপনন্। কৃত ইতি কিন্? লোট—প্রভাণি, ইছ ভবত্রের।

⁽১৬) আচ ইতি নকারবিশেষণং ন তুকতঃ। অন ইতি অন্টন্মোল মান ইতি শানকানয়োশ্চোপলকণন্। নি ইত্যানিপ্রত্যুস্থাপি এইণম্। অত্র নির্কিপ্রসোপসংখ্যানং কর্ত্যুমিতি।

२८। (नैंदी (५१)।

গুন্তাৎ কৃতো নঃ, অচঃ পরে। বো বা স্যাৎ। প্রযাপণম্, প্রয়াপনম্। প্রহাপণীয়ম্, প্রহাপনীয়ম্। অভাদীনামিভ্যেব— প্রভাপনম্, প্রভাবনম্।

२०। नागशामिकारनदार्वे।

ইজাদেরের নোপাস্তান্ধাতোঃ কতো নোহচো ণঃ স্যাৎ। ইন্থ—প্রেম্পন্। উন্জ—প্রোম্থান্য ইজাদেরিতি কিন্ ! প্রান্তন্য কথং প্রান্থন্য শ্রোদ্রাদিসিছে:।

२७। रनार्नितिजूर्राषी

ইছুপান্তাদ্ধাতোঃ কুছো নোহচো ণো বা স্যাৎ ১৮।। প্রেলপণ্ম, প্রকোপন্ম। নিগৃহণ্ম, নিগৃহন্ম। হলাদেরিতি কিম্? নিরহন্ম। ইজুপধাদিতি কিম্? প্রেণিন্।
নিত্যং প্রেণিন্।

২৭। নৌর্গদমদপতপদবহিবপিহন্তিজাতি
দুমাযাশমুসোচিঞিদিহিবাতিপ্সাতিষ্টিব্যবারেইপি (১৯)।

এরু ধাতৃষু পরেষু উপসর্গাছতরস্য নের্বন্ধ স্যাৎ। প্রণি-গদতি, প্রণ্যাদৎ। প্রণিজাতি। ঘু-প্রণিদ্দাতি, প্রণিদ্ধাতি।

⁽১৭) ভাব্যেক্সমাগ্রান্তাভাবতোর্নর বো বেতার্থঃ। নেরিতি বিহিতবিশেববা পঞ্চনী, তুল প্রবাপ্যমাণং প্রবাপ্যমানমিত্যক্ত বকারব্যবধানেহপি পত্তম্ ।
পূর্বাস্থক নিভ্যভাস্কলার বাঞ্জবনত, তবা প্রভাবেতিবিভাবরোর্মধ্যে বো
বিধিঃ স্নিভাঃ।

⁽১৮) ক্তোহচ ইন্যাদিনা নিত্যে প্রাপ্তে বিকর সারভ্যতে।

⁽३১) तम् 'किशानवनाः विकि' छात्रान्त्वा शक्षात्रनात्वतः। ७९ किवक्-

মা,—মাঙ্,—মেঙাম্—মা—প্রণিমাতি, প্রণিমিমীতে, প্রণি-ময়তে। দিছ—প্রণিদেশ্ধি। প্রণিপ্রতি।

२৮। त्नदर्य वीश्वशानीववाद ह भारते।

শেষে কথানিষান্তৰ জিতে ধাতে পারে নের্বং বা দ্যাং। প্রাণিচতি, প্রানিপচতি। শেষ ইতি কিম্ ! প্রাণিচাল:। অকথাদাবিতি কিম্ ! প্রানিকর্তাং, প্রানিচথাদ। অধান্ত ইতি কিম্ ? প্রানিপিন্তি। পাঠে বান্ত্যা নিমেধাদিহ ভ্রতি—প্রাণিব্তি।

२०। निर्मितः।

কুলো গত্বং নিপাত্যতে। ৩০। নশৈন ধৃত্ত্ব।

নশেঃ ষত্ত্বে গত্ত্বং নান্তি। প্রনদ্যান্ত ষত্ত্ব কিন্তু প্রাণানঃ।

७५। शेंद भना छोट ।

পদান্তাৎ যকারাৎ গলং নাজি। নিশানম্, ছম্পানম্ (২০), ছুষ্থেন।

৩২। অনাঙ্পদব্যবায়ে চ।

चारिक्षां चार्यात् । प्रायनी मार्थन,

ব্যবায়েহপীতি চেহ্চ্যতে, — পরশব্দেন প্রত্যায়ে বিধীয়তে ন পুনঃ পরমাত্রং, তেনেত্ব্যবধানেহপি গছবিধিবিধীয়তে।

⁽२०) निवरणः भारवर्ग क्रम्। धकां रिष्ठ क्षारथ निरवशः।

)

প্রবিয়ানং প্রাহ্বয়ানম্ (২১)। অনাঙ্ইতি কিম্? পর্যাণদ্ধ্, নিরাণদ্ধন্ (২২)।

१ क्ष्म १ व्याप्त

এষু ণত্বং নান্তি। ক্ষুভাতি, নরীনৃত্যতে নন্তঃ, নরীনিতি, তৃথোতি, নৃনমনঃ কশ্চিৎ, চুর্নয়ঃ, চুর্নীত্ম, হরিনন্দনঃ, হরিনন্দা, অক্ষত্ম, দেভিগিনেয়ঃ, পুনর্বা। আকৃতিগণো-হয়ম্। (২৩)

ইতি শ্রীপদ্মনাভদন্তকৃতে স্থদ্মব্যাকরণে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

(২৩) কুতা নূনমন নিদন্ নদন নগর। এতাব্যতরপদানি সংজ্ঞানাল্যাজয়ন্তি। হরিনদ্দী হরিনদ্দনং গিরিনগরম্। নৃতির্যতি প্রয়োজয়তি।
নরীনৃত্যতে। নূর্তন গছন নদন নিবেশ নিবাস অগ্নি অনুপ এতান্যতরপদানি
প্রয়োজয়ন্তি। পরিনর্তনম্ পরিগছনম্ পরিনন্দনম্ শরানবেশং শরনিবাসং
শরাগ্নিং দভামুপং। আচার্য্যাদণত্ক। আচার্যাভোগীনং। আকৃতিগণোহয়ুম্
কুত্যাদিং।

পাঠা তরম। ক্ষ্ভা তর নুনমন নর নগর নদ্দন যঙ নৃতি গিরিদ্দী গৃহ-নমন নিবেশ নিবাস অগি অন্প আচার্যভোগীন চঙুহায়ন ইরিকাদীনি বনো-তরপদানি সংজ্ঞায়াম্ ইরিকা তিমির সমীর কুবের হার কর্মার। ক্ষ্ভাদিঃ। ইতি সরলা।

সভাবতো মৃদ্ধন্তণকারবিশিষ্টাঃ শব্দাঃ,—
বাণী-তৃণীর-বেণী-ফণি-মণি-লবণং কোণ-কল্যাণ-বাণাঃ,
কোণী-ঘোণী-কণাণ্ডুণ-বিপণি-পণং ছাণু-পৃণ্যৎ বিষাণম্।
মাণিক্যং,শোণ-শাণো গুণ-গণ-গণিকা বেণু সি ছাণ বীণা,
নিব্বাণো নিকণে কণ-কিণ-বিণজ্ঞানক্ষণং প্যাণ-তৃণো ॥
পিণ্যাক্মপি চাণক্যমিত্যাদ্যাঃ স্থ্যঃ সভাবতঃ। ইতি।
ভগিনী কামিনী, ভামিনী, বামিস্ভাদীনাং পৃত্ধ ন স্তাদিতি।

⁽২১) জত্রাপি একাচীতি প্রাণ্ডে নিষেধঃ ।

⁽২২) অতদ্বিতেহনাঙ্পদেনাজরায় ইতি শ্রীপতি:। তেনার্জু গোময়েণ ভদ্ধগোময়েণেত্যত্ত ন নিষেধ:।

অথ দ্বিতীয়াধ্যায়ে

প্রথমপাদঃ।

কারকপ্রকরণম্। • ১১

১। কারকে।(১) অধিকারোহয়ন। জিয়ানিমিতং কারকন্। কর্ত্রাদি; কারকশব্দোহয়ং নিমিত্তপর্য্যায়ঃ ইতি। অতঃ পরং যদক্ষ্যতি তৎকারকবিষয়ে বেদিত্রসম।

শ্রীমনবাতক বচোভিনাদৃতৈ রুত্মৈত যহৈর্বহুশো বশীকৃত:। স্থপদ্মসারং পরিতো বিকসরং বিধায় ধীখান্ বিদরে বিধেয়বান্।

(১) কারক ইতিসপ্তমার্থপ্রতিপাদকসপ্তমান্তানুকরণলুপ্তপ্রথমেকবচনান্তং পদম্। অধিকারোহরমিতি আখ্যাতপুর্মিদিম্। নমু কচিৎ যৎ সক্তে-তিতং তদেবাক্ত প্রন্যত ইতি দৃষ্টতরম্। ততঃ কারকমিত্যবিদিত-পদার্থ: কিমেত্রচঙ্গতে ইত্যাহ ক্রিয়ানিমিত্তং কারকমিতি। ক্রিয়া ধাত্ব: করোত্যর্থো বা ভঙ্গা নিমিত্তং, ক্রিয়াসিছে বিসাপারবক্ষা অবভাপেক্ষ-পীরম। ইহ ব্যাপারবন্তয়েতি সম্বন্ধ ব্যবচ্চেদার্থণ, অবংশ্রেতি পরস্পরা-সম্বৰ্জ, তেন কর্মানে নাতিব্যাপ্তিন বা সম্বন্ধেহতিব্যাপ্তি:। ইদং পুন: কারক ইতি বিশেষণং — কত্রা দিষ্টুকবিষয়কমিতি প্রতিপাদয়য়াহ কত্রা-षीि . **ष्यथ** वक्कानागानाः कठडाषीनाः कात्रकमः छां, कडा पोनाः वा। रेमवः যদি স্বতম্বাদীনাং ক্রেকসংজ্ঞা স্থাতদা কারকশব্য প্রথমান্ত এব নির্দিষ্ঠতে, ৰথা, স্থবাদ্যাঃ প্রত্যন্ত্রাঃ পরে'' ইতি। ইয়ন্ত নির্দারণে সপ্রমী। তেন কার কেষু মধ্যে সতন্ত্ৰ: কৰ্ত্তা ভবতি। ন চ বক্তব্যম্, নির্দারণং, বহুনাং সম্ভবতি 'छ९ कथिमिटेशकवहनिमिछि। छिनिश छान्त्रपर्यः ——छथाह छट्नाव९ कवग्रः সূত্রাণি কুর্বান্তীতি ভারঃ। অথ ভাষ্যকারঃ করোতীতি কারক্মিড্যাহ, অবি-क्रिएक निर्मालकार कुर्मर काष्ठेमित, विश्वमनिकार कुर्मणी चानानि, স্বাবয়ববিক্লিলিং কুর্ম্বদর্মপি বৃক্ষাৎ পর্বং পততীতাত্ত পতত:--পত্রস্ত

২। স্বতন্ত্র-তৎপ্রয়োজকো কর্ত্তা। (২)

ক্রিয়ারাং সাধ্যায়াং কারকে প্রধানস্থতা যাহর্থ সং স্বতস্ত্রঃ, স চ তৎপ্রয়োজকশ্চ কর্ত্তেত্তাতে । যথা দেবদত্তঃ— কাঠিঃ স্থাল্যামোদনং পর্চাত, তেনাহত্তঃ পাচয়তি । "প্রবৃত্তে

বিভাগং প্রতি আত্মনো নিমিন্ততাং কুর্মন্ বুজোছপি, বিপ্রায় পাং দদাতীত্যত্র গোপীকারং কুর্মন্ বিপ্রোহপি কারকং ভবতোব। অতএব সর্মাণি কারকাণ্যভিধীয়ত্তে তেবাং সর্মেবামায়েজনং কুর্মন্ দেবদক্তঃ সতন্ত্রঃ কর্ত্তা, যদি পূনঃ সতঃ ক্রিয়াং কুর্মতাং কাষ্ঠাদীনামণি সত্ত্রত্বং বিবক্ষাতে তদা কাষ্ঠং পচতি, স্থালী পচতি, ওদনং পচতীত্যাদ্যপি ভবতি। তেবাং মধ্যে যদা বস্তু বাপ্যসাধকতমত্বাদিব্যাপারভেদাপেক্ষয়া বিবক্ষাতে তদা তম্ভ কর্মন্থাদিকং স্থাং। তথা চোভং, স্ব্যাপারে হি কর্তৃত্বং সর্মেট্রবান্তি কারকে। ব্যাপারভেদাপেক্ষায়াং করণহাদিসন্তর্মা। ইতি। পক্ষমুৎ গৌরবপরাহত-মিতি স্বানঃ প্রত্যাচন্তে, কারকশক্ষোহয়ং নিমিন্তপর্যায় ইতি, জয়াদিত্যাদ্দীনাং সাম্মতং মতুমাবিশ্বকার। অল্পে তু ক্র্রাদিষ্ বট্সু কারকমিতি রুচ্মিন্ত্রান্তঃ। সপ্তম্যর্থমাবিদ্বরোতি, অতঃ প্রমিত্যাদীতি। অয়মপি বিষয়বিদ্যভাবনির্দেশঃ স্থ্রতিপত্যর্থম্। কারক ইতি কিং বৃক্ষম্প পর্ণং পত্তি, বহুভ্যোহ্যঃ কারকত্বাভাবাং শস্ ন স্থাং কিন্তু সর্ম্মিদং বিব্যাধীনমিতি ব্যবস্থাপয়িষ্যামঃ।

(২) সতন্ত্রলক্ষণং বন্ধ্যু মৃথক্র মতে ক্রিয়ায়ামিত্যাদি ক্রিয়া হি বিবিধা সর্বোধার্থই করে তার্থক ত তৈকৈং পরিস্পলন সাণ্ন সাংগ্যা গমনাদিঃ, অন্যোহপরিস্পলন সাণ্ন সাংগ্যাহবন্ধানাদিঃ। ভ্রাদয়ো গাতব ইতি, গাতৃলক্ষণং এতজাড়িলক্ষণং করোত্যর্থক সকলার্থসংগ্রাহকঃ অবর্থই তথাহি ক্রিয়ত ইতি ক্রিয়া কৃষ্ণেই করাত্যরেন নিপাতিতা। তন্তাই সাধ্যায়াই নিস্পাদ্যায়ামিত্যর্থইঃ। প্রধানভূতঃ প্রধানহ, ভ্তশক্ষঃ সর্বাধার বিধা ওণভূতঃ। ক্রিয়াসিদ্ধাবিতি কাশিকা। প্রাধারক সভক্রক করণাদীনামারোজনাহত্ত্বন। ইতরে বাক্ত তদধীন বুকেল্যোকিই ভ্রেমাকিক ভ্রেমাকিক করে ইতি। কারক মধ্যে ইত্যর্থইঃ। তন্ত্র প্রয়োকক কর্বিত্র কর্তা ভ্রেমাক করে করি। ভ্রতঃ। স্বাহ্ন কর্তা ভ্রেমাকক ক্রেমাকক ক্রিয়াজকঃ কেরি ভ্রেমাক করে।

চ निर्देश ह कात्रकानीर य ज्ञेषद्र । अध्यक्षकः ध्रेष्ट्र वा म कर्ता नाम कात्रकम्॥" निद्धाली—(नवनकः कहेः न करताकि, अध्यक्षकः कहेः करताकि हिन्द्रः।

कर्ता देखि প্রভাকমধীয়তে। नमु देर उप्शाहनः किमर्थम् ? न दि अध्य-প্রয়েজকৌ কর্ত্তেত্যুকে কাপি বস্তক্তিরস্তি। তথাছি ক্রিয়ার্থ্যপ্রয়োজকৌ কর্ত্তেতি বাসবতং পুতর। কাররতি বঃ স হেতুরিতি কাছস্ক। সত্যং म्मोडीर्बरमटेवज्य। (प्रवृष्ण हेज्यापि शृहजित्रत विरक्षमार्थः, मा विरक्षमा লৈবদত্তসাধ্যা ভবত্তেৰ ক্ষেত্ৰকৈ ক্ষেত্ৰকৈ ক্ষেত্ৰক সকৰ্মক মৰ্থ यमा ज विक्रिखिनहरूषमा अमनः भहाउ देखि कर्षाकर्ज्यविषयः भहाउः श्राः ল্পকে পিচি সতি প্রকৃত্যর্থসমানার্থঃ, পাচয়ত্যোদনং দেবদত্ত ইতি। এবং আবোহয়তি হস্তিনং হস্তিপকঃ, ভোজয়তি মন্ত্রিণা রাজা, রঞ্মতি বস্তং রজকঃ দীপিতস্ত্রমুভাবসম্পদা ইত্যাদয়ঃ প্রয়োগাঃ, মুগ্ ভবন স্থগ্ ভাবনাদি-ধাত্র্বস্তি ব্যবস্থয়া সমর্থনীয়া:। পচতীতাত্র শেষাৎ কর্ত্তক্রি পর্বৈশাপদমিতি পরবৈশ্বপদ্ম। দেবদ্ধ ইত্যত্র উক্তং তিঙাদিনিদিষ্টমিতি কর্ত্তকত্বাং षर्थमाज्ञारवाश्वारमाश्च थथरमाज थथमा। नमू यनि कादकारमाजनः कूर्कद्वव কর্তৃথং ভলতে, তৎ কণং বিপ্রস্থিষ্ঠতীত্যত্র কর্তৃত্বমিতি, সত্যং ইছ কার- ু কায়োজনবোগ্যতয়া কর্ত্রম্। যথা২পচন্নপি স্পকার: পচনবোগ্যতয়1 পাচক উচ্যতে। অত্যে তু, ধাতৃক্তক্রিরাং প্রতি বস্ত প্রাধান্তং স মতন্ত্র:, ষম্ম ব্যাপারো ধাতুনোচ্যতে স প্রধানং কর্ম্ভেতি, তেন আস্তে বিপ্রঃ ইত্যত্তাপি কর্তৃত্বং ভাদেব। তথাচোক্রং, ধাতৃনোক্তক্রিরে নিত্যং কারকে কর্তৃতো-চাতে। ব্যাপারে চ প্রধানত্বাৎ স্বতর ইতি চোচাত ইতি। তেন ইত্যাদি एक (प्रविष्टिन देखार्थः चर्मा यञ्चन छ। पिः।

পাচরতীত্যত্ত প্রয়েজকে কর্ত্তরি পিছ। নমু শিক্ষণাভিছিতারাং
প্রমুজি জিয়ায়াং মুধ্যত্তেনৈব কর্তৃত্বে সিদ্ধে পচি জিয়ায়াং প্রয়েজকছেন
কর্তৃত্বমন্থ কিমিতি কেচিৎ, তর সারীয়:। বথা—দেবদক্তং পকৃৎ প্রযুদ্ধ ক্র ইত্যত্ত নাবন্যং পাকনিপ্পত্তিঃ প্রতীয়তে। তথা দেবদক্তেন পাচয়তি বজ্ঞদত্ত ইত্যত্তাপি নিয়মসিদ্ধা পাকনিপ্পত্তিন প্রতীয়তে। তথাচ প্রয়ুদ্ধি জিয়ান্
য়ামতীতায়াং, পচি জিয়ায়াং ভাবিস্থাং, দেবদত্তেন বজ্ঞদত্তাহপ্তিম্বিতি

৩। ক্রিয়াব্যাপ্যই কর্মী (৩)

কর্ত্তঃ ক্রিয়য়া যদ্ব্যাপ্যতে তৎ কারকং কর্মসংজ্ঞং ভবতি। তচ্চ ত্রিবিধন্—নির্কার্ত্যন্, বিকার্যান্ন, প্রাপ্যঞ্জ। তত্র নির্কার্ত্যন্থ-পাদ্যং, কটং করোতি দেবদত্তঃ, বিকার্যানবন্ধান্তরং নেয়ন্ন, তত্লানোদনং পচতি, প্রাপ্যং পৃথগুপলভ্যং ক্রিয়াকৃতবিশেষং গ্রামং গছতি, ইদমপি প্রাপ্যন্—কৃঞ্জং ত্যক্তি কোকিলঃ, ক্সভ্যাগং প্রাপ্রোতি।

कि कर् जिन्न के कियाकता फलामा मिन् कर्मान

ভাং। কিন্ধ ক্পকারেণ পাচরতে ভূপ ইত্যব্র পাকক্রিয়ায়াং ভূপত্ত কর্ত্বাভাবে করে পিক্রেয়াফলভাভাবাং তত্ত্ব ভাগে। তথান ভূপাদেং প্রেষণক্রিয়ায়ার প্রয়োজকথমিতি। অপিচ প্রয়োজকত্ত সতত্ত্বে প্রয়োজকণিচো ব্যবন্থিতিরের নাস্ত্রীতি। নমু ক্রিয়াং নিপ্পাদয়য়ের কর্ত্রাণিঃ কারকবাপদেশং ভলতে। বদা তু তথা ব্যবসায়ী ন ভাগে, তদানীং কথং কারকথং ভলতামিতি মন্বা ভর্ত্রিপ্রশীতকারিকাং গ্রন্থক্রবভারয়তি প্রবৃত্তাবিত্যাদি। প্রবৃত্তি ক্রিয়ানিপ্রতি, কারকাণামীখরঃ প্রধানভূতঃ, আম্মোজনার্হ ইতি যাবং, অক্টেন প্রয়োজকেন প্রেষতঃ অপ্রেষিতো বা যবা কর্ত্তা ভবতি তথা নির্বাবপীত্যর্থঃ। নিষেধো বিধ্যুপজীবকো ভবতি। বিধিপক্ষ এব কারকত্বে সিদ্ধে পশ্চাৎ সম্বন্ধেন নঞা নিষ্কেরণ শক্তাতে। অপ্রযুক্ত আমেশলভা ইত্যুপরে।

(৩) ক্রিয়াব্যাপামিতি। ক্রিয়ত ইতি ক্রিয়া করেতে: কর্মণি নিপাতনাৎ
খ:। ব্যাপ্রোতেরাবশ্রকে বং। ততঃ ক্রিয়া ব্যাপ্যং ক্রিয়াব্যাপ্যং বজনাধিকারাং অন্ধিকার্থেকোরণি বণবাত্যবং সমাসঃ। ইহ কর্তারমন্তরেণ ক্রিয়ায়া
অপ্রতীতেরান্মিপ্যতে কর্তেত্যাহ কর্জ রিতি, তেন বত্র কর্জঃ ক্রিয়াসাধ্যত্বং
ভত্র নাজি ন কর্মত্বং, বথা মাষেবর্ধং বর্রাতি ইহ হি কর্মণোহবশ্রক্ষণক্রিয়য়া
মাধা ব্যাপ্যতে ন প্নঃ কর্জঃ, বত্র নাবশ্রব্যাপ্যহং অত্রাপি ন, বধা – পর্সা
ওক্নং ভূত্তে অত্রাবশ্রতাজ্য ওক্নঃ ন ভূ পরঃ, তক্র সংখার্যভাগবিশ্রকত্বন
ক্রিয়াল্রং, ভক্তিরক্ত সংখারক্ষাদনাবশক্ষেনপ্রাধাল্রং, ইত্যস্ত্রসক্ষেম্।
ভ্রেক্তির চনজ্য প্নরর্থে তৎপ্নরিত্যর্থঃ। তিলো বিধা ভেন্নে বক্ত ভববা

তদীপিত মনীপিত-মিতরজ সপিত্যুক্তম্ অনীপিন-তন্ত্ত-বিষং ভক্ষতি জুইঃ, ইতরজু আমং গছন্ বৃক্ষুদ্ধুমুপ-সপতি।

সকর্মকাদ্ধাতোর্ভাবেইপি হি প্রত্যুয়ে ক্রিয়াব্যাপ্তিরন্তি— সভাং বা ন প্রবেকব্যম্, ক্রপুর্বী কটম্। ইহাইপি ভবতি— মাসমান্তে, ওদনপাকং শেতে, ক্রোশং স্থপিতি, কলিঙ্গং বস্তি— যদাহঃ "কালভাবাইধ্বদেশানামন্তভূতিক্রিরান্তরৈঃ। সর্বৈ-ক্রক্ষিকৈর্যোগে কর্মায়মুপলায়তে॥"

তত্র ত্রিধাভিলেরু কর্মাস মধ্যে নির্বয়াং লক্ষ্যতে ইতি শেষং, কিং তল্লকণ-মিত্যাহ উৎপাদ্যমিতি। ইখং বক্ষামাণয়োরপি জ্ঞেরং, বহুৎপত্তিধর্ত্তি তদেবে।ৎপাদয়িত্ৎ শকাষ্। উৎপাদ্যম্, উদাহরতি কটং করোতীতি নমু সিদ্ধত্বেন ক্রিয়ায়া অনিমিত্তখাং কৃথং কটাদ্যে কর্মত্বং সভ্যং কটাদ্যর্থং কাশাদিকমিত কটাদিশকবাচ্যম উপচারাও। বিকার্যমিত। অবন্ধিতঞ ধর্মিণঃ পূর্ব্বধর্মনিরতে। ধর্মান্তরাপতির্বিকৃতিঃ তদ্ধর্মি বিকার্যায়। তদেব বক্ষাতি সা অবস্থান্তরং নেয়মিতি, অবস্থান্তরম অবস্থাবিশেষঃ নেয়ত্ত্বন ব্যাপ্যং, যথা তণুলানোদনং পচতি। অথবা তণুলানু বিভারয়ন্ ওদনং নিবর্ত্তরতীতি স্বভাবান্তথেৎপত্তিঃ অস্মিন্ মতে অবস্থাবিশেবলাভক্ষের বিকার্যামিতি। নমু নির্বর্ত্তামিহাপি বিদ্যুতে কটং করোতীতিবং, স্বড্যুং ৰত্ৰ বিকারাশ্রয়: প্রযুদ্ধ্যতে তত্ত্ৰ বিকার্যস্থমের। তথাচোকুং, সতী বা বিদ্যমানা বা প্রকৃতিঃ পরিণামিনী। বস্তু নাশীন্ততে তক্ত নির্বর্ত্তাত্বং প্রচক্ষান্তে। ৰধা কটং করে। তি সংযোগং জনয়তি। অভার্যঃ বস্তু সতী প্রকৃতিঃ পরিগ্র-बिनी नानीप्रत्य, बच बार्शिकाबाना প্রকৃতিক্ত निर्वे का प्रिक्रित । अबू क्रित्राक्षणकातिष्या कर्षाच्या थानामिषि । अत्रमर्थः, वर भूनः भूटकाकाकारः কর্মজ্যামক্তং, বত্ত ক্রিয়াকৃতবিশেষং প্রাপ্তিমাত্রং বিভাবাতে তৎ প্রাপ্তা-মিতি। উদাহরতি, প্রামং গছতে, ইছ পমনক্রিয়াফলং সংযোগ: ছদুভারি-তরা কর্মণং আমত। নমুবত্ত প্রাপ্তিমাতং বিভারতে তংগ্রাপ্তমুক্তং বত্ত वाराजानकर कवः चार हेजार हेम्मल वालार हेर क्षणांतवादश হ্মত্যক্ষিত্রপচরিতেতি ক্ষরং, তবেব বিরুণোতি ছুঞ্জাগুরিতি। অসম্ভ- ইহ—ছহানয়ে দিকর্মকা:—তালেপবোশকর্ম প্রধানম,
তিরিশিত্যপ্রধানম্;—তদ্ যুধা—শাং দোরি পরে। গোপঃ,
পোরবং গাং যাচতে বিপ্রাং, অক্সমবরুণদ্ধি গাং গোপঃ, মৈত্রং
পাছানং পুছতি, পোরবং গাং ভিক্ষতে, রক্ষমবিচিনোভি
ফলানি দারকঃ, শিষ্যং ধর্মং, ক্লতে, শাস্ত্রং শিষ্যমকুণান্তি,
দৈত্রং শতং জয়তি, গর্মান্ শতং দশুরতি, দেবং বরং র্ণুতে,
দিধ মঝাতি স্বতং গোপঃ, নৃপং মস্ত্রং বদভি—

ত্হি, যাচি ক্রধি, প্রছি, ভিক্স, চিপ্রেগ, জেবি, শাসি, জি, দণ্ডি, রু, মছি, বদঃ। ইতি চোভরকর্ম ত্হাদি বিজঃ; কুনি, নী, বহি, হা, প্রভৃতীতি পরম্।

পাঠে কুঞ্জ ভ্যাপং প্রাপ্তে ভ্যাজ্ঞাত্বন সংযুনক্তীভ্যর্থ:। তদপীত্যাদি। ত্তৈবিধ্যেনাপি কর্মণো ন সমাপ্তিরিত্যরুতিরপিনা স্চ্যতে। ঈপ্দিতং কর্ম-কর্জু মিষ্টং ত্যাগং পুনরনীপ্সি ডং, ইতিবং তাভ্যামন্তং ঔদাসীল্ভেন প্রাপ্তম্। उबाहाकः, अश्रिजानीश्रिः हित त्री । क् कर्ड्कर्ष ह। वर हर्ड्करः কর্মানুক্ত মৃক্তক ওপ্ভবেদিতি॥ নমু ধাতোর্ব্যাপারবৃত্তিছে। প্রয়োক্ত্রিব-ভারভাৎ কর্দ্মশিপ্রতায়া বিধীয়ত্তে তদিতরবৃত্তিতে তনাত্র এব প্রতায়বিনিঃ, ডংকর্থং পুনঃ ক্রিয়াব্যাপ্যকর্ম্মোপপদ্যত ইত্যাহ, সকর্মকাদ্ধাতোরিত্যাদি। অযুত্রর্থ: সামাক্তপাত্রর্থবিবলারাং ভাবে প্রত্যুত্রে কতে বিশেষবিবলারাং कियावाशिन वाहरङ्खः উठक, ভाবেহপি शखर्थकृषा वाशित्रखीछ। ইনত বিষ্ণানীনং শিষ্টপ্রযোগবিষয় বেদিতব্যম্। তথাচ, কুংপাদে বক্ষাতি সকৰ্মকেত্যণ্চ ভাবে বিষক্ষাতে ইতি । পত্ৰ ভাৰাখ্যাতং ধ্বেব্যা-দিভি পুত্রমন্তঃ কেচন সকর্মকেভ্যো ভাবাখ্যাতং প্রতিবিদ্যান্তি। ত্রিমুনি-সংগ্রহকারাত্ত প্রচাতে মাবানিত্যুদ।হরতঃ সকর্মকেভ্যোহণি ভাষাধ্যাতমূ अखिलायुः। अवस्वात्रिकानमाकमान जलारवहेम्। कृष्टमूर्वी करेमिनि, कृष्ट भूक्ष यत्नदम्बि बाहुका देशे विक्रु अर्था देश विकास किया । नम् अर्क्य कामाः शङ्नाः त्यातं कालकावाकात्कनामाः हर्जाः कर्वनिकत्तं उर्थाठातः मरकाकानाकि-

কুর্যাদীনি ছুহাদেরভানি ধাতুরপু।ণি দ্বিকর্মকাণি ভবস্তি। কর্মতি শাখাং গ্রামং, শঙ্কাং গ্রামং নয়তি, ভারং গ্রামং বৃহতি, কল্যাং গ্রামং হরতি।

ধৌকাভোতি কেনচিং স্থাতিং তদ্ধানে কথমেয়াং কর্মতা ভবেদিত্যাহ, ইহাপীতি অন্নর্মর্থ:, কালভাবদেশেষপি ক্রিয়াব্যাপ্তিরস্তীত্যমূষজাতে, অক-র্মকামামপ্যস্তভূ তক্তিরান্তরতাৎ অভিপানাদিতি শেষ:। তেন কর্মাণপ্রত্যয়ে কভবো মাক্ত কালাদীনামেব কুর্মতেতি লভাতে ইতি দর্শয়নাহ যদাহরিতি, অন্তর্তিং তিরোহিতং ক্রিয়ার্করং ক্রিয়াবিশেষো যেষাং তে তথা। নত্র ওদন-পাকং শেতে ইত্যৱ ওদনপাকক্রিয়ায়াঃ শয়নাসম্বন্ধাত্বৰচ্ছিঃ কাল এব প্রতীয়তে ক্রিভার ইত্যিনেন, সভায়/ওদনপাকশব্দাৎ কালাপ্রতীতে:। অয়দ্ধ নির্গাল্ডার্থ:, অকশ্বকাহপি গ্রতবোহস্তর্ত তিরাস্তরা: সন্তঃ সকর্মকা এব। অত**্রবান্তভূ তিত্রিন্তাসিঐভিতেঃ সঁকর্মকত্ব**ম্। অত্র কারিকায়ামধ্যশংকাহধ্ব-মানপর:। তথাচোক্রং, ক্লিভাকাধ্বমন্তব্যাঃ কর্মাণংজ্ঞাফকর্মণাম্। দেশকা-কর্মকাণাঞ্চ কর্মসংজ্ঞা ভবেদ্বিত। কিঞ্চ, কালভ কালভেদানামধ্ব-ক্রিয়াণামথ **দেশানাং** কালাদিছমিহোচ্যতে ইতি। गरैव विखि विद्यवानानानाः मकर्षकथाज्यात्त्रश्ल कर्वदः कानात्तः কৈশ্চিদিষ্টং যথা, রাত্রিমোদনঃ পচ্যতে, রাত্রিবোদনং পচ্যতে ইত্যাদি, এতরতে পর্যায়েণ কর্মাভিধানমপি। অথ যঃ প্রো দোগি পাযাণ্যিত্যাদে পাষাণাদে: কর্ম্মার্থমকবিতঞ্জেতি সূত্রং কথিতং মুমিনা, তদিং ল বজব্য-মিতাহ ইহেতি। অক্তার্থ:, ইহ কর্মণি বিধে তুহাদয়ে। ধাতবো দ্বাত্মক-ক্রিয়জাদেব দ্বিকর্মকাঃ। দ্বে কর্মণী ক্রিয়ে যেষাং তে দ্বিকর্মকাঃ। উক্তং হি ভাবো, चेदेशकरमककर्मािश लक्षरान প্রপদ্যত ইতি। তত্তেত্যাদি, উপ-যুজ্যতে ইষ্টার্থসিকৈয় ব্যাপার্যতে ইত্যুপযোগঃ, কর্মণি খণ্, উপযোগ-শ্চাসো কর্মা চেতি ক্রমধারয়ঃ, ক্রিয়াপ্ররভিত্তেত্তাদেব প্রধানং পয়ঃ প্রভৃতি তন্মিতঃ প্রাদ্যপ্রধানং, প্রধানাপ্রধানবিচারস্ক ক্রিধার্প্রোক্ষ্যতে। 'অভ-এবোকং-(হেড়: কর্মনিমিত্তং, ক্র্ম ইত্যর্থ:, উক্তং ভবতি হৃহাদেরিত্যর্থ:) কর্মহেতুত্ হাদেরিতার্থঃ । উদাহরতি, তদ্বথেতি, গাং দোগ্নি পরে।, মোচ-মতীত্যর্থ:। নমু চাত্র চ্ছে: করণার্থস্থাৎ রোরপাদানসংজ্ঞা সম্ভবেৎ, বত্তুৎ-

স্বাধ্যমাণ্ড শ্বীপ্ত ততোহগৈতি ইতি ক্ষুট প্রবাশারঃ, সভ্যমিত গোরব্দিত্ব-মবিবিদিতং কিং ওছিঁকীরং প্রতি নিমিত্তমিতি। ন চ বাচ্যং, বৃক্ষত প্রং পণ্ডতীতিবৎ পোরত্র কারকবং ন ভাদিতি। তত্ত্ব তম্ম নিমিতভাবস্থা-নিধ্যক্ষিভক্ষাদিহতু নিমিওভাবো বিৰক্ষিত এব। যাচত ইতি,। পেৰৱভীভাৰ্যঃ। নরু যাচডেভিজার্থতাদেবসিদ্ধে: পুনরুপাদানং যাচনার্থম। কিং তহি অভার্থনার্থমণ ওথাহি, দানার্থে প্রেরণং ুলাপি কার্য্তিব্যে**হভিনিবেশার্থ:** যুত্তদোহভার্থন্যিতি ভেদঃ। তেন পুত্রমধারনং যাচতে ইতি। বর্দ্ধমানমিশ্রাস্থ্য বাচিরিছ নিয়-মার্গ ইত্যাতঃ, তেন পৌরবমবিনীতং শতং[ং] ষাচতে, ভিঞ্চিন্ত বিনীত এব। রজমর্কণ্ডীতি গামভঃমাপ্রন রজমপারণোতীভার্থঃ। গাং এজং প্রবেশ-রভীতাতো। মৈত্রমিত্যাদি কিজাভমভিধাত্থ প্রেরগ্রভীতাথঃ। দুখ্যমিত্যাদি, বিষ্ট্রপ্লাক স্থতি, আদক্ষেবেত্যর্থঃ। শিষ্যং ধর্মং ক্রত ইতি প্রতিপাদ্যতী-ভার্গঃ। শাস্ত্রং শিষ্যমনুশান্তীতি শাত্রং কর্বান্তানিতং ক্রোভীভার্থঃ, বিনয়শ্চ কপ্তব্যাকর্ত্তব্যপরিপালনহানিস্বরূপঃ ত্যাগ ইত্যথঃ। জয়ীতি, শতস্থ গ্রহণেন পরাভবতীতার্থঃ। দুওয়তি ইতি শতক্ত গ্রহণেন গর্গান শাস্তাতি। রুণুত ইতি বরং গ্রহীতু দেবং স্তোতীত্যর্পঃ। মধাতীতি দ্রুদম্পা গ্রহুখা-পয়তীত্যর্থঃ। বদণীতি মন্ত্রমুপদিশ্র নূপং বিনয়তীত্যর্থঃ। ভাগ তুহাদী-ত্যাদিশব্দব্যবন্থাপিতং ধাতুগণং গণয়তি তোটকচ্ছল্দা,—চুহিয়টোতাাদি। ইহতু যাচি ভিক্ষি রণোতীনাং, ক্রবিবদত্যোশ্চ নির্দেশাদয়েযাং নার্থ পর্যব-মিতি স্চিতম্। উক্তককাতম্বপরিশিষ্টকতা,—ছহিবদত্যর্থঃ জি. দলি, মন্থি, প্রছার্থনাথে নিয়নার্থশাসে। কৃষি কৃষি চিঞি তথার্থরত্তো, ধিকর্মকোহয়ং ক্থিতো হুহাদিঃ। প্রছীতাত সন্ধাভাবশ্চন্দোহরুরোধাৎ, ইত্যুত্নভযুক্ম-ধাতুরক্ষ্য, ছহাদি বিহর্জানন্তি বিপশ্চিতঃ। ক্রয়াদিতু পরং, ছহাদেরভাদিতার্থঃ। এতদেব বিবহিন্যতি, তুহাদেরফানীতি। কর্মতি বিকুষ্ট নগ্নতীতার্থঃ। কর্ম্ম-ত্ত্বং কুষেরিত্য**ত্তে। শাথাং কর্ষতিগ্রামং ভূমিমিত্যুদাহরন্তি, নর্যতিপ্রাপ**য়-তীক্যর্থঃ। এবং বগতি, হরতি। চল্রস্ক, গ্রহিমুষোরপ্যদাহরতি তদ্বেপ্রভৃতি— শবেদনে টিভিতম । তদ্ৰবা, —শতং গৃহাতি গ্রামং, গাং গোষ্ঠং মুফামি। অতঃ পুনরাহ, জি দতিক্ষি নী কুঞ, হাঞাং মুষি ৰহিতাহাম। দিকৰ্মছ পচালীনাং. ডোগদংখ্যাননিষ্যত ইতি। **ওয়তে তু, কাশান্ কটং করেতি,** ज्यूतासामः नष्टनेश्रमाराण्यः

৪। গতিবুদ্ধাহারশব্দাহর্থাইকর্মকাণীমনী-খান্যদিহ্বাশব্দায়ক্রন্দীং প্রযোজ্যঃ। (৪)

অর্থণকঃ প্রত্যেকমভিসন্ধাতে—গত্যর্থঃ, বুদ্ধার্থঃ, আহারার্থঃ. শব্দার্থঃ, অকর্মাক ইত্যোগং পাজুনাং প্রযোজ্যঃ কর্ত্ত।
কর্মা স্থাৎ। চৈত্রো গ্রামং গড়ভি, গময়তি প্রামং চৈত্রং
মৈত্রঃ, বাপরতি চৈত্রং গ্রামং, বোধরতি শিষ্যুং ধর্মাং, বেদয়তি

⁽s) গতীত্যাদি। নতু গত্যাদীনাং কর্ড্যু কর্মতে কথং তদথানাং সংগ্রহ ইত্যাহ, অর্থশক ইতি। অভিসম্বধ্যতে ইতি কর্মকর্ত্র্যাদ্মনেপদম্। হুদাৎপর: ভারুমানঃ শকোলভতে প্রত্যেকমভিসম্বর্গানতি আয়াৎ। ইহ হি. প্রথমতো দক্ষণভো বহুরীহিঃ পুনদ্ধ ক্ষত। নমু ইছ প্রযোজাক্তার পারুপ-পত্যা প্রযোজকাক্ষেপঃ। তত্ত, চৈত্রেণ প্রেষিতো মৈত্রো গ্রামং গছ । ত্যাদে বিনিবলাং প্রবোজ্যন্ত কর্ভন্মপ্নীয় কথং কর্মত্ব: ন ছাং ? মৈবং, অত্ত প্রধোল্যপ্রযোজকভাবঃ পদম্বরেন গম্যতে। গময়তীত্যাদে পদে-কেন ইতাং প্রভাগবোধ্যাদেকপ্রতবাধ্যমন্তরত্বং একবৃদ্ধি গ্রাহ্নথাং ভত্তভা-ন্তরঙ্গবহিরস্বরোরস্তরঙ্গং বলীয়া, তন্মাৎ প্রবোজকে গিচি কুটে প্রবোজ্যস্ত কমারং নিয়ম্যতে ইতি ছিত্রু। গছতীত্যাদি, গমরতি চৈনং আমনিত্যাদৌ প্রযোজকঃ কণ্চিদ্যাহত্তব্য:। ইছ নয়তেঃ প্রাপ্ণাগঞ্চ প্রতিষেধেনৈতৎ স্থচিতং, উপসর্জ্ঞনীভূ চার্থান্তরা পত্যর্থাদ্যোহত্র গুগত ইতি। তথাহি; অজ্ঞাং নয়তি গ্রামং সাধুরিত্যাদৌ সংভ্তস্ত ভারাদেরপ্রমজনী ভূতদেশান্তর্প্রাপ-ণার্থনাভগতে নরতিঃ। অতএব, পুরুগুলিংযোল্য বুজানু যানস্ত বাজিন:। আণুংষি দকু নৈতিদ্য প্রাভগ্নির মেটেরদিটি ভট্টি এখোপঃ জেমদীপরেশোলাছত:, মোচনেন ভ্রাক্রন্প্নর্শতি ব্যাথ্যতন্ত, খ্রা মুচিমু কিপুন্ধিকালাংগভৌৰভতে। चाल खार्वभगारताच्याचामा वज्याः । व्यादिनाइन्यनित्मत्रादमनः, छामस्याद्याला पूजाः व्याद्धाः श्रिष्ठागुन्वछ-मधीज्यकतः। शुक्तां चात्राकाजार्थकदत्वशासामीनवार्यानामशीनवार्वाम । ए न : श्रुनवाज्यम् ११ कामारणा न कमलर कमलकार कामा कामारिकार मही-रा,नवना, विकि जागरमण्यक्ति ऋतक्षि भीतिक भारत नाम्न

নটুঃ নেলম্, ভোলমুভি পূলং ভালু শাল্যতি পূলং ভালম্,
পালার্থানাং পালায়ত ক্রিয়ানাং—অন্তাপরতি কটুং নেলম্, পাঠ
য়তি পূলং সূল্লম্ আবয়তি ক্রিডং রিসকাল অকর্মকাণাং—
আময়তি মিল্রম্, শায়য়তি ক্রিডেম্ ;—এবাং কিয়্ ! পাচয়তেয়াদনং যজনতেন দেবলতঃ, অভালেরিভি কিয়্ ! নায়য়তি ভারং দাসেন সাবুঃ, গাদয়তি ভক্তং পুলেণ, হ্বায়য়তি
চৈলেণ মৈলঃ, শব্দয়য়তি ছালেণ, ব্রুলয়তি পুলেণ। যদা ভ্
প্রোজকং কল্চিদপরঃ প্রযুদ্ধ ক্রে. ভদা তথ্য কর্মছং ন

পতিঃ বৈলবাস মনুনীয় লক্ষিতঃ ॥ নতু মাং প্রাপক্ত পড়ারস্কিকং ইত্যাদরঃ প্রয়োগা: # সিতং সিতিয়া স্করাং মূনের্পু: বিসারিভিঃ সৌধমিবাথ লক্তরন্ # অত্র সিভিয়েতি বিশেষণে তৃতীয়া, তেন সিভিয়োগলক্ষিতং মুনের্বপঃ সিতৎ বেত হণং লভয়নিতি কবৈৰ্থিব মাঘভাষান্দমিতি কুলচক্তঃ। প্ৰাপ্ত্যাপসৰ্জ্ঞনা-গতি:, গভাগসজ্জনা চ প্রাপ্তি: ভবতি লভডার্থ:, তত্তাকো কর্মত্মিহ তুন, প্রভাবনজনা প্রাপ্তিরিতাদোর ইতি বামন:। বোধরতীত্যাদি: ইতাপি বোধ্যতে শিষ্যো ধর্মমিত্যাদ্যহ: পূর্ব্ধবংকার্য্য:। তথা প্রাবয়তি নৃপুর শিক্সিল্মারোটারং, ঈক্ষযতি বিভামং লোকান, ভাপরতি ছাত্রমযোগঃ, স্পর্শন্ত গাত্রং কামিনীং কামীত্যালয়োহণি বুদ্ধার্থে সমর্থনীয়াঃ। ভোক্ক-नार्स। श्रीर्ज्ञश्र्रः (कांकविशामि क्विकीः क्वनविश्वमिक क्षेत्रः। मनाः বুভুক্তিভা ক্লোক্লনং প্রমাননহেতৃঃ, তথা ভূবনত্তমভোক্লমপীত্যেক। সঞ্জা-শঙ্গান্থিকা ক্রিয়া বেষাং তে তথা তেষাং, ক্রিয়য়া শক্রে সুকলিয়াণানিতি, আহতে তে গুছাছে ইডার্থ:। পাঠরতি বটুং বেদং, আবহতি বটুং বেদ মেদং साम्बद्धाः अवानानमञ्जादानाः राष्ट्र्या मचन माञ्चरनिविध वाह्यम्। रहाष्ट् कार्याः, श्रीक नेकाः वाह् क्षांत्रार्वद्यं कवादीनात्रुनगरवानि समक्तिवद्यादि-প্রাৰ্থ । ক্রমণ করতি ত্রবাং ছাত্রো বাচতে, আলাগরতি বিজং ছাত্র: ক্রিক্ কুরুছে, বভারতে হাত্রো ভার্বাৎ সাজুরতীর্ণঃ। তর, এবর্থে-विष् क्षेत्र अवस्तु वाह्नके दृटकः नकार्यकानभावानिकित्यात्रम् । वानक्रकी-ए अब्रह्म रेडि नानांत्र। स्था नाममामत्रकि हा श्रीमार्क

कर्षां वालाहर कालाहर कर्पन फेक्स्सार नियमगढक किमर्गीयन १ शहरा क्रक्यांनात्रगानाषाः करेर्चव क्षत्रकाकार, व्यक्तिकाति। क्या व्य-ग्रटणीयशंचाज्रदान चित्रकृ, यग्रटफ, देखा खानएकः जगरेकशन, खानार्थ-व्यर्भिन रेष्कार्थवार्गम्। ज्यानकार्यक स्टबाक्शामानामिति जीभितः। जारगर्भि. नीखर्विस् खेळाचार्ड, खाननार्ववृष्टियोदम्बादम्बर्द, निर्ग-वर्षा अभावपानिक ज्यानाची त्थादक नियमः अजित्य र कानि म अमानम् । कानिकामाः वार्डिटकं हि नीवटशानिजार्थ टाजिरवर हे कि खामार्थक मिर्गा-रश्राज्यकार। होत्स जु. अविरमनेनानिकः श्राज्यक देखि है। आक्रक देखि जनत्वदर्भजायानभवम् । व्यावप्रजेतिः त्नीभाकावाद्यक्ति गानमः। भकाव-प्रकोषि नजः करवाकीवि वारका नजारकः करताकीवि कार्ड, ठकः नजाप्रमान्द थर्ड एक देखि नाटकार्शि है। चन दौरतासक्यारगारका। न कर्द्धि दक्त-विक्रकार्यक्रकार, जिल्ला न वस्त्रविकाद, यहा विकारि। जरेनकनरहत्त्व ক্রিররের ক্রানাৎ মুর্পত্তর ক্রিয়াভিস্কুরে প্রান্ধিত্যধন্দেত্য স্ক্র कर्चवः निक्रमिकारीबारमक्का दशक्षिकर्त्वाक भावश्रदा निवसः। र्तित्रि, च्यक्क एक च्यारि, च्यक्किमामार पाठकार, ट्रावर् क्यक त्रका। नित्रमार केन्द्रिक काताः कार्यक्षाविकेक देखि । सन्तामः, क्लीकिन विवेष्णक्या, वाष्ट्रमार्क्षक्याः त्वरान वदमाववगानास्त्र विवदमार्थानाः यर कर्ता नारक्याविकि कार केन कर्युएकमान्विकेटक अदक्षार बहुती PATE OF BERTHER WINDS OF STREET PARTY OF STREET pile valle i deviertiellenten face fant eine alle fall प्रिमिष्ठि नाताप्रतिकाः । । चान्छः, वक्तक्ष्यान्यकर्तः कन्यप्रतिकाः

৫। वट्टें मित्रकुकेंटें। (८)

বহে: স্নিয়ন্ত্ৰ: প্ৰধোজাঃ কৰ্ত্তা কৰ্ম ভবতি। বাহ-য়তি ঘৰান্ ব্ৰভান্; স্নিত্ৰ ইতি কিন্? বাহয়তি ভারং দাসেন সাধু:।

৬। ভকেহিংসায়াম্। (৬)

হিংসায়াং ভক্ষে: প্রযোজ্য: কর্ত্তা কর্ম ভবতি। ভক্ষয়তি শস্তং ব্যভান্ রক্ষকঃ; হিংসায়ামিতি কিম্ ? ভক্ষতি পিওং পুরেণ মতো।

কর্ত্ত্বন সহাস্ত বিপ্রতিষেধাভাবে নিরবকাশতয়া কর্ত্ত্বেবানেনাপতু য়ত ইতি। কিঞা, পূর্ববং পরত্বাভাবে সর্প্রভেষপ্রাপ্তাবেশাং কর্মিবেতি নিশনমাং অন্তেশাং কর্ত্কর্মণী ইত্যাশিশলীয়ং মতমন্ত্রদল্লাহ, অভ্যেনাং বিবক্ষাবশাদিতি। তথাফাপিশলাঃ, গত্যগাদিয় কর্মের নাখ্যাদ্যাদিকর্ত্তা। শেষে চকর্মকর্তা চ, যথাসন্তর্নায়্যত ইতি। মুক্তাজালং চিবপরিচিতং ত্যাজিতো দৈবগত্যা। অজিগ্রহণং জনকা ধরুত্তদ্বেলার্দিদদৈত্যপূবং পিনাকী ॥ ভিরেনিপারীশমসৌ ভবত্তমধ্যাসফলাসমেকমিলঃ। গ্রীতোহহং ভোজয়িব্যামি ভবতাং ভূবনত্রসমিত্যাদবং প্রয়োগাঃ। ততক্ত, ক্রত্তোর্বা বচনমকর্মকাভ্যবহাররোক্রিত্রং আ জুদিতি কথং, প্রপঞ্জার্থিনিতি, লমুর্ভিকৃত্তাক্তমিতি শ্রীপতিঃ।

- (৫) বংশ:। ইহ গত্যথিত্ব নিত্যং কর্মতে সিদ্ধে নিয়মোহয়ম্। উক্ঞক, কাশিকায়াং বামনপাদৈ: নীবছোর্গত্যথে প্রতিষেধণ ইতি। তেন ধারণার্থে বংহঃ প্রয়োজকণোকর্মসংজ্ঞা প্রসজো নাজীতি। নিয়ম্ব পদেন উপ্দেশাদ্যোত্মক্ষানাং ক্রিয়য়া বাহয়িত। উচ্যতে ইত্যাশহমান উল্লেখ্রতি, বাহয়তি ববানু র্মজান ইতি। বহতি যং পরিতঃ কনকক্ষণীবিভ্যাদেশ ধারণার্থো বহিঃ।
- ্ (৩) ভূকে: । আহারার্গরেন কর্মতে প্রাপ্তে নির্মাহরং, এতন ভূজ্যর্থে মাত্র বিংমাবন্ধমভূতিবাভ বিষয় । হিংসা পুনরিহ জীবোপদাতঃ, গবাদীনা-পুরু জীবুবোরঃ জারতে। তথাহি, অস্তঃসংজ্ঞা ভবভ্যেতে স্পৃত্ঃবস্মবিতা

नारकंशनस्य काम काट १। क्रुक्क नर्जार वी । (१)

এষামাহারার্থাহকর, গত্যর্থকত্বে নিকেইপি প্রযোজ্যঃ
কর্তা কর্ম ভবতি বা। হারুয়তি ভারুরং দাসং দেবদত্তঃ, দাসেন
বা, অভ্যবহারয়তি পিতং পুত্রে মাতা, পুত্রেণ বা। কারয়তি
কটং ভ্ত্যং ভ্ত্যেন বা; বিকারয়তি কাম্কং বৈশ্যা, কাম্কেন
বা। পদ্মানি বিকাশং লম্ভয়তি ভামুং, পদ্মৈর্কা।

৮। नृशं िवादनों ती जादन शदने। (৮)

শন যোজ ঙি প্র গোজ্যঃ কঠা কর্ম বা স্থাৎ। দর্শয়তে
নৃপণ ভ্রান, ভূট গ্রা । মভিবাদয়তে গুরুণ পুত্রং পূত্রেণ বা;
ত ও নিয়য়াদয়ত দৃশের দিয়র্থিয় নিত্যেং কর্ময়ি নিতি জিনেজনবৃদ্ধিপাদাঃ।—দর্শমিতি ভূগ্যং বাজানং; নেহ মভিবাদয়িত
গুরুণ পুত্রেণ।

The same of the sa

ইতি মনু:। সর্কো ভাবাশেত বাবস্থ ইতি দিগমারদর্শনমপি শক্তোপমাতভাবেণ তৎ সাম্যুপমাতোহত্ত হিংসোতি বর্জনানমিঞা:। ভক্তিরসং চুবাদিবিভিন্ন

⁽१) সকু। পূর্বস্থেপ নিষমাৎ বত্র কর্মান্তং ন প্রাপ্তোতি সোহত বিশৃষ্ট হাঁত ভাব্যছিতিমনাদৃত্যু আপিনলীয়মতমপাকুর্বন্যাসমত সমাবিষ্করোতি, এবামাহারার্থাকক্ষকপত্যর্থতে চেতি। তথাতি, উভয়ত্র বিভাবেরং, যদা হর্ছি-র্গতে ভোজনে চ করোতি চাকর্মকঃ তদপ্রাপ্তে, যদাহর্ডিঃস্কেম্বর্টের করোতি: সকর্মকন্তবদ্ধ প্রাপ্তে বিভাবেতি। লভি গ্রহণমন্তৈর্ম কৃত্মিভি ব্যয়দ্দ্র মতন্তি ব্যাধ্যাতম্।

⁽৮) দৃষ্টীত। অত দ্ৰেবু দাৰ্থাৎ প্ৰাৰে ওদম্মাপ্ৰাৰে বিভাবেরং, দৰ্শন্নত ইত্যাদে পেরিত্যান্তনেপদম্। অব প্রত্যুদাহতে জিনেক্রবুদিগাদমতমাবিদ প্রনাহ তৃতিনির্মাণিত।

৯। সাধকতম্ব কর্ণম্। (৯)

ক্রিয়ানিকৌ যথপ্রকৃষ্টমূপকরে: তৎসাধকতমং করণসংজ্ঞং ভবতি। দাত্তেণ ধান্যং-পুনাতি, অখেন যাতি।

· ১০। निर्वेष्ट कर्य वी । (১०)

্চ (৯) সাগক। নতু ফ্রিবায়াঃ কারণকলাপসাগ্যত্বাৎ কথমেকক্স প্রকর্ষ অপ্রাপকর্মঃ । তদভাবেহপি তদসিকেবিত্যাহ ক্রিয়াসিদ্ধাবিতি। অষমর্থঃ, क्तियायाः निष्तिः क्तियानिषिः, তविषय अकृष्टे मिन्यिष्मुणकर्गः नार्यनः, ७९कवनर छार । यमानि, कियामाधक दृष् मरस्विषाः माधावनाम् एथानि, বিব্দিতভাগের প্রকর্ষঃ। তথাহি, যোহব্যবহিতঃ ক্রিযাং নিশাদয়তি তৎ-করণম। যোহি তরাবহিতঃ ক্রিয়াং নিস্পাদর্তি সুক্তোত। তহ্তং, ক্রিস্থাযাঃ পরিনিপ্পতির্ধয়,পাবাদনস্তবম্। বিবক্ষ্যতে তদা তত্র করণত্ব তদা এতম। নরু কেবণব্যবহিতকেৎ কতা ক্রিয়াৎ সাধ্যেৎ কথং কত্বঃ প্রাধা-ভুমুণ সভাং, ক**েধীনতাৎ করণভাপাং।ভুম্, কর্ভু**চ স্বাধীনতাৎ शाकुक क्रियुज़ाफ धाराच्या। **उ**ङ्कर, क्रवर नाम मर्ख्य कर्ज्याभात-বোচর:। তিবোদখাতি কভাবং প্রাধান্তং তরিবন্ধনমু। নথু, ক্রিয়তে ষেন তৎ করণমূ ইতি ব্যুৎপত্ত্যা বিবক্ষিতত্ত্বাচ্চ, প্রকৃষ্টং সাধনং কবণ ভবিষ্যতি কিং ভমগ্রহণেন, যথা, অভিরূপায় কন্তা দাতব্যেত্যুক্তে বিনাপি প্রকর্মপ্রভায়-মভিকশতমায়েতি পম্যতে। অকথা কুত্রচিৎ কন্সচিমমোজ্জত্বং বিদ্যুত এব, किमजिक्क शारत्रकारमन, अकन्त गर्सभरनाञ्चणः विरम्य नाष्टीिष । ज्ञार, देश कावकाधिकादब हैणः श्वाष्ट्रक धक्रिया नाश्चित्र ए हेणि खालनार्थम्। (जन, গম্বায়াং বোৰ ইত্যত্ত অধিকরণসংজ্ঞা তাৎ, ইতর্থা সাক্ষাৎসম্বন্ধে মুখ্যকৈ-वाधिक ब्रम्भारखा छार । यथा, जित्तवू रेजनर, हेट रिजनभारधब्र फिनान देगाना फिक्के । एका नकाशाः नकाममीत्न एका द्याश्चिनीखीक स्नामः। हैर राष्ट्रमञ्जूष्ठरकि । कर्नक विशामणमिष्ठि, बङ्कर, ख्र्येनकार्यस्मरतिष्ठ कार्याणवाणागाः ।

(इंटिंक्) क्रिं:। श्र्यंन कत्रनमध्यात्रार वाशात्रार क्रम्मरका विशेषण देखि

ं विरः गांवक्रक्षमः वर्षा चिक्रकेष्टे । अकान वीवाजिः चरेक्का ।

১১। পরিক্রে বা সম্প্রদানস্। (১১).

পরিক্রাে নাত্যন্তিকঃ ক্রয়ন্তেন্ বের্ডন্ট্রিনা নিয়তকাল-স্বীকারে সাধকতমং সম্প্রদানসংজ্ঞং ভ্রন্তি । শতায় পরি-ক্রীতোহসুক্রহি শতেন বা।

১২। প্রদানভিদয়ধ্যমান সম্প্রদানম্ (১২) প্রদানগভাৱিকং দানং তেন বদভিদম্বাতে, তৎকারকং

কাশিকা। তলতে, বাশক্ষঃ সমৃক্ষয়ার্থে বিকলার্থে বা, পরতক্চ বাগ্রহণং বিভাবাধিকারনিরতার্থং। বস্তুত্রস, অব্যয়ানামনেকার্থ্যৎ বাশক্ষোহত্র যৌগপ্রতার্থং, তেন সাধকতমং দীব্যত্তঃ করণং, কর্ম চেতি মৃলপত্তরীসংজ্ঞাণ সিহাতি। তেন, অক্ষা দীব্যত্তে ন আত্তর্কদর্শিব্যত্ত ইতি করণম্বেহিল ধাড়োঃ লক্ষ্মকত্বাং। তথা অক্ষা দ্যতাস্তেন নজাত্ত্রকর্দ্শতোহরং, তথা, অক্ষেণীব্যতি অনিকরণে কোহলি ন ভাং অক্ষাণাং দেবক ইতি পরস্বাৎ কর্দ্যোগলক্ষণা ষষ্ঠী নিতাং ভাগ। ত্রীড়ার্থত্বেনাকর্মকত্বে কবলাবন্ধায়ামের কর্মসমারেশার্থই বচনম্। চাঞ্জান্দিসক্ষতং প্রত্যাচক্ষাণক্ত মহৎ সাহসিক্যম্। উভয়কারকবিত্তিক পর্যান্তেন ভাৎ মৃলপদসন্তবাং। কিল, প্রধানিত্তিক্ত, তিও কৃত্তাকিত্ব পর্যান্তেন ভাৎ মৃলপদসন্তবাং। কিল, প্রধানিত্তিক্ত, তিও কৃত্তাক্রমসানামেকত্বমনালি কারক্স উত্তেপ্তর্যাতিরিকপ্রাতিপদিকার্থস্তিহ্ব তোব। ন চ বাচ্যং, করণজ্যোক্তি কর্মসম্বে, কর্মণ উক্তো করণসত্তে বৃশ্বিক্তি

(১১) পরি। পরিক্রমশন্তার্থ বিবিদ্ধি পরিক্রম ইতি। অরমর্থা; ক্রেমের হি বিনিমর:, পরিশক্ষেন ডক্ত কালবিশেষাববিকতা দেয়াতাতে, সংস্কৃ বেডনাই দিনা সম্ভবতীতি স্পায়ীকরোতি বেডনাদিনা নির্ভকাল্পীকার ইতি। আহিন্দিনা নির্ভিশার বিভি। আহিন্দিনা নির্ভিশার পরিক্রীতঃ কর্তাব্যি তব নার্বিশ্বনিতি ভটিং। অনুক্রাই ইতি, নিতেন পরিক্রীতোহনীতি অনুক্রেতার্থই।

(१२) विमेनिया । विमेश्य विभिन्न केर्यान केर्या

সম্প্রদানসংজ্ঞন্ত । বিপ্রায় শাং দার্গারি, গুরুত্ব ধনং নির্থা-তয়তি, শত্রবে ভয়ং দদরতি; প্রদানমিতি কিম্'। রক্তকতা বস্ত্রং দদাতি।

ব্যাচ্ট্রে আত্যজ্ঞিক্ষিতি। ষত্ত পুৰৱাদানং নাজীতি ভাৎপর্যার্থ:। অত্যন্ত-মেব আত্যক্তিকং স্বার্থে বিনয়াদিভাটিকণ্। নমু রাজ্যো দণ্ডং দ্বাতি, স্বতঃ शृष्टीः क्वाजीक्षारको अरथकानमूक्षका कवर न विशेषरण, बरजारकाशि माना-ভিসক্ষা কুট এব। সভাং, সংগ্রদানমিতি মহতীরং সভা, সমাক্ প্রকর্ষেণ বলৈ দীয়তে তৎ সম্প্রদানমিত্যবর্ধাপ্রম্বাৎ। স্বেচ্ছরা পূজামুগ্রহ-कामार्टिश्व, वळ शांमाण्डिमञ्चक्छरेळव यथा छार । मानक चचल्यस्मभूर्व्यक्रात्र-সত্ত্ব।পাদানলক্ষণম্ । নমু স্বস্বত্ত্বে বিদ্যমানে হি পরস্বত্বং ন বিদ্যতে। পরিত্যজ্য চ नानत्करनोनात्रीस्थात निकाणि। তरि कथरमवस्कर, উচ্যতে, अवस-ध्वरत्मा क्रियनवस्त्वाभाषानभरीयमानः बानः. (छन सच्चः भविष्ठाकन् भव-चचुमारतानत्र हो जि नवाजारशीविश्वमाराज। जक्र, विविधः, व्यत्रकमञ्ज्ञ क-মনিরাকর্তৃককেতি যথাক্রময়দাহতং বজৌ। তত্তং, ত্যাগাঙ্গকর্মণা ব্যাপ্তং প্রেরক্ঞামুনজ্ ক্ষ্। অনিরাকভ্কঞেতি সম্প্রদানং তিধামতম্। অত্তে তু, **चरुमानिवाक**र्क (अवकः जानिकावनम् । वारिश्वनाश्चः मणाटण्य मण्यानाः थकोडिंडम् । मच्चमानः उपन याः পृकान् अरुकामात्रा । मोत्रमादनन मरावा-পাৎ স্বামিষ্ণ লভতে যদীভাছে:। নিশ্তয়তীতি নির্দ্ত ধাঞ্চধনয়োঃ প্রতি-अवरर्थयू व उमारना यकिन्छ वानिः। निर्याखनश देवद्रखटको " স্থানে স্থানাপণেহপি চেতামবং। শত্রবে ভরং ক্লাডীভি। নমু ভরে शृक्षाद्वद्ववितियानाष्ट्रलक्ष्व अकावाद, मरमन्यकानाकः श्रीकाताखावाक कथर अअवधारम्भूर्ककभडकरवानामानकनारमातार , क्रमानवर, उन्नार बा-द्वाभाटवीश्व क्यांकि:। क्यां. खत्रः निकळ गौजाटेन गर्का गुत्रश कृटक अम **ইন্ডি ডটৌ, বস্ততন্ত, কৃষিবিতভাবক্ত ক্র**ব্যবদক্ষীকারাৎ ব্ৰোক্তং স্থাদান-মেব সাধীর:। ইছ অভিরাভিয়ব্যে, ওতশাসংম্থীনে গৃহীতরি গৌনং ক্ষাৰ্মন্ম । সৰ্ধানান্মিতাত বর্তনানকালীয় শানজোপলক্ষণ্যু। তেন, বিষ্ঠাৰ ৰাম্পাকৈতো, বিপ্ৰায় গাং দাক্ততি মৈত্ৰ ইত্যতাপি সম্প্ৰদানং স্থাৎ। াৰ এবায়ং ভাষা, ছত্তে বিষসংখ্যাকাল-চাডৱাৰীভি; সম্মাদানাৰ্থা।

५७। क्टार्य क्टिमान्। (५७)

ক্লচাৰ্থাত্তিৰোঁগে ক্লচিমাৰ যোহৰঃ স সম্প্ৰদানকৰতি। পোতাৰ বেণচতে মোদকঃ, পোতাৰ স্বদতে মোদকঃ।

28। भाषक ह सामगोर खीना माने ।(28)

এবাং প্রয়োগে বোধয়িত্মিন্টো য়ঃ, স সম্প্রদানং ভবতি।
নৃপায় লাঘতে বন্দী, পুত্রায়াহপক্ত বণিক্ ছাত্রায় ক্ষিতে
কক্ষা, প্রিয়ারৈ শপতে পতিঃ।

১৫। স্থিবিটারভীষ্টধনিকী। (১৫)

⁽১৩) ক্লচাইপরিতি। ইহ ষ্ঠামাভূদিত্যরমারতঃ. ক্লচিনা সমানার্থা ক্লচার্থাঃ বদৃচ্ছাদিত্বাৎ সমাসঃ। ক্লচিমান্ ইতি ক্লচিবিদ্যতে ষ্মাস সংচিমান্ তেন, ক্লচার্থানাং ধাত্নাং বোলে বো ক্লচিমান্ আভলাত্বঃ, ক্লচার্থকি তা য়ং প্রীণয়তি বা তৎসম্প্রদানং ভবতীত্যর্থঃ, পোতঃ শিশুঃ ক্লচিম্নতি কিং গ্রেষ্টেস্ট্রাচতে মোদকঃ। বিকশাততা বোচতে দিবি শ্লাপতাবিত্যপা।

⁽১৪) প্লাম। কর্মনির্ব্তার্থেছিয়ং ধোগং। জ্ঞীপ্রাসান ইতি মারণেত্যাদিনা ঘটাদে পঠাতে। তমানিশামনার্থাৎ প্রয়োজকে পিচ্। যথা, জ্ঞপ
চেতি চুরাদে পঠাতে, তমাৎ সার্থে পিচ্। জ্ঞপাদেন র্দ্ধিরিতি গণ্ডত্তেশ
র্দ্ধিনিবেধং, ততঃ সনি বির্বাচনং, আপ্ ১জ্ঞপেরীদিতি প্রকৃতে রতঈৎ, অভ্যামলোপত, ততঃ কর্মণি শানং, তমিন্ সার্ম্বর্গত্বে বগিতি বিক, অত ইত্যাজে
লোপঃ আনে অভ্যে অমিত্যম্। জ্ঞপরিত্মিয়ামান ইত্যথং বির্ণোতি
বোগিছ্মিই ইতি, অত্র জ্ঞানেছেতি বর্তমানে জঃ। প্লাম্ন কথনে ভ্রাম্নির
বামনেপদী। তির্ভি ইতি প্রকাশনভেরাব্যরোক্তিয়াম্বর্নস্কর্মণ পণ্ড ইতি
অত্র স্থাস্থান্ত্রিপি ভৌরাদিক এব গ্রুছে, উল্লেখ শুপ্ত ইতি
অত্র স্থাস্থান্ত্রিপ্র, শপ্রোমিন্যানিরস্কর্ম সোহিপি ক্রান্ত্রিবর্ণেষ ইতি।

^{(&}gt;१) म्यृदि। উভয়নিবৃত্ত্যবেশিশ্বনারভাগ ইহ পর বর্ত্তাসংখ্যাস্থয়ঃ ভাষে বাবিকরোতি ম্পুর্বে: প্রবিধানে ইত্যাদি, ম্পুত্ত রুপ্তাদাং চরাভারতন্ত্র আন

শ্হে: প্রায়ে দশিতে। খোই গ্রাহ্ণ ব উত্তর্গ, ল সম্প্রানভ্যতি। ধর্মী শ্বাহাতি। ১৬। ক্রেপ্তেটের্যাম্যাথৈঃ কোপস্থানীন্।(১৬)

জোশোর্ম্র:, জোহেছিপকারঃ, সর্ব্যা—অকমা, অস্যা
—গুণেহপি দোষাবিজ্ঞার: —কোধাদ্যহৈর্ঘাগে কোপস্থানং
সম্প্রানম্ভবতি। পুত্রায় জুধাতি, নৃপায় জুন্মতি, সপত্রৈর
কর্মাতি, মৈত্রায় অনুয়তি; কোপস্থানমিতি কিমৃ । ভার্যামার্যাতি এনামুন্থো মা জেক্ষীদিতি।

শ্রুষমানোহসে বহুপ্রিয়মভাষত ইতি ভট্টি: ।- গ্লুছ অবস্থানে তুর্ণাদিঃ। বিষয়ানং প্রমূপ্ত কে ইতি গিচ্নাব্যতি সকলেনাবস্থাপ্যতীতি কাশিকা। অত্র ধনিকপালেন উত্তমর্থ প্রবাভিমত ইত্যাহ উত্তমর্থ ইতি । ইতা তাবং স্পৃত্ত রাপ্যতিমিতি পাণিনীয় সূত্রে স্থাপিতং সংপ্রদানম্, স্পিত্তমং কর্মেতি ব্যাখ্যাতি । ব্যাখ্যায়, প্রশাণি স্পৃত্যতি, স্পৃহণীয়াবিভূত্যঃ, স্পৃহণীয় গুণৈমহাম্মভিরিত্যাদিপ্রয়োগানুদাহবাত্ত । অম্মতে তু বিবৈক্ষবদাবন্য । কিকা ধাব্যতিব্রে গৃহীতাপরিশোধনাথং নাজার্থং । অত্রের নাব্যনিবহৈতকৈ বস্নি-প্রত্যাপ্যত ইতি ভট্টিং । অতীষ্টপনিকাবিতি কিং, প্রপ্রভাগ স্পৃষ্যতি বনে; দেবদক্ষার শতং লার্যতি প্রামে।

(১৬) ক্রুণ। ক্রুণ কোপেছকর্মকঃ, তদ্বোদে ষষ্ঠাপনালো বোগঃ। ক্রুহকিবাংমারাং, ঈর্ষা ইর্ষার্থঃ, অন্মতি কঞ্ কিবলন্তঃ, এবাং বোগে কর্মাপন্থাকরঃ। ইরু বন্যপি অহিতাচরগং লোহঃ ঈর্ষাপ্তকরা, গুণিনোদোবাবিকরণমন্ত্রা, কোগাদর্থান্তরাণি,—তথা কোপ পূর্বকোন্টোহাদিরিহার্থাৎ কোপঃ
কল্ভাবে করাং ক্রন্থানি,—তথা কোপ পূর্বকোন্টোহাদিরিহার্থাৎ কোপঃ
কল্লেরারীত্ব—কোপছানেছব্যাপ্যে ইতি স্তুবন্ অব্যাপ্যবিবরে চতুর্থীৎ
ক্রাকান্। ক্যাপাবিবক্ষায়াত ক্র্যাদীনাং সোপস্থাণাং নিরুপস্থানাঞ্জারোর কিতীরামের মেনে। কোপছানিহিতি কিং ও কোপছানং কোপাত্রঃ
ক্রিক্তার ক্রিকার্মন সেনে। কোপছানিহিতি কিং ও কোপছানং কোপাত্রঃ
ক্রিক্তার ক্রিকার্মন করে। প্রাপ্তবের। বর্ষা, ভাগ্যামীর্বতি ক্রন্ত পরিব

े '39 । व्यवस्थिति आहर्ष कर्म । (১१)

প্রাদিপ্রবারোঃ ক্র্ডেবোঃ প্রয়োগে কের্প্রানং কর্ম ভর্তি। বৈত্রং সংক্র্থাতি চৈত্রং সংক্রম্ভি । ১৮ ৷ রাধীকোর্যকা বিপ্রামণ্ড ।

রাধেরীকেশ্চ প্রয়োগে যক্ত বিবিধঃ প্রশ্নীঃ স সম্প্রদান-. স্তবতি। পুরোয় রাধ্যতি, বিপ্রায় ঈক্ষতে. নৈমিতিকঃ বিবিধ প্রশ্নেন তম্ভ দৈবং পর্যালোচ্যুক্যভীত্যর্থঃ।

দৃ শুমানাং তাং ন লক্ষ্যত ইত্যর্জঃ । ষ্থাস্থার্থে ছেটি প্রাযো গুনিভোগ হলীতি ন তথা, দিষভি মলাশ্চরিতং মহায়নামিতি নাভিনল নীত্যর্থ:। ইহ পশুনা ক্রন্তং যজেত ইত্যত্ত্র কর্মণঃ কর্ণহার্থং সম্প্রদান্ত্র কর্ম্বর্থং, কবণং কর্ম, যজেঃ কর্ম চ সম্প্রদানমিতি লক্ষণং কেনচিং কৃতং, তদিহ ন বক্ষরাণ, শশুনা দেয়েন ক্রন্তং প্রমতীত্যর্থে স্ববিষয়ে, করণকর্মণীস্তঃ ন প্নদানার্থেছিত্র ষ্ম্রতিঃ। অন্তর্থা, হিরণ্যেন ব্রাহ্মণং যজতে ইত্যুপি স্থাই এতহুদাহরণ-বিষয়ে স্মৃতিবিত্যক্তা।

- (১৭) কুন। ইহ প্রাদিপদেনোপদর্গ এবাভিমতঃ কুণজ্ঞ শোরুপস্টরোঃ কর্ম ইতি পাণিনীয়সূত্রমূ। যতঃ, কুধজ্ঞহোরিতি কিং ছাত্রায় প্রকুপ্যতি ছাত্রায় ব্যাক্সয়তি, সম্প্রদানাপ্রাদোহয়ৎ বিধিঃ॥
- (১৮) রাধী। ইহ ধাতৃনামনেকার্থতাৎ প্রশ্নুক্রকণহ্যালোচনায়াং পাছিমে বজুকরচরপরেধাগ্রহণত্যাদিস্চিতপ্রাচীনকর্মবিপাকজনিতং কলং দৈবৃংই উষ্ট্র নিরপণ বিপ্রশ্নঃ। তথাচ কাশিকা, নৈমিতিকং পৃষ্ট্রং সন্ ওছা দৈবং পর্যাদ্রনাচয়তি ইতার্থঃ। ইত্যাহ, রুভিক্তথা তলুপলক্ষণং কিময়মাচয়তি, কুণ্ কীদৃন্দী কিমেতলো বেতি, ভাবপর্যালোচনমপি বিপ্রশ্নঃ। তথাহি, ঈক্ষিন্তবাং পরস্তীভাঃ স্বধর্মে। রক্ষসাময়মিতি ভট্টিঃ। ক্রেমদীশ্রেণ বিপ্রায় দৈবং রাধ্যেতীভাগাহরতা, রাধিয়বিশিষ্টঃ স্বীকৃতঃ, তল্যুক্তমুৎপশ্রামঃ, বিপ্রশ্নইতি কিং ও বিপ্রশ্ন রাধ্যত্যাদনঃ। ইত্ বল্পাপ্রাম্বিভ তথাপি বিপ্রশেষ্ক্রী য়াক্রিছিয়্যাব্রশ্রঃ।

১৯। অর প্রতিগৃণাঙ্ শ্রতিঞ্ববীঃ পূর্বভা কর্ত্তী। (১৯)

অমু, প্রতি-পূর্বেশু গৃণাড়ে; আঙু, প্রতি-পূর্বেশু শ্রুবন্দ প্রয়োগে পূর্বকিয়ায়াঃ কর্তা সম্প্রানারত্তি। হোত্তে অমু-গৃণাতি, পোত্তে প্রতিগৃণাতি তং প্রথমং শংসন্তং কোহপি জনঃ প্রোৎসাহয়তি, বিপ্রায় গামাশৃণোতি, বিপ্রায় গাং প্রতিশ্রীণাতি, বিপ্রেণ বাচ্যসানোহসীকরোতীত্যর্থঃ।

२०। व्यवित्रभात्रानिष्मभानान्त्र्। (२०)

ष्मभाग्नामिषु मारधाषु यनविधक्छम्, তৎकात्रकमभागान-

(১৯) অনু। অনুশ্চ প্রতিশ্চ অনুপ্রতী, তৎ পূর্ব্বো গুণাতির গুপ্রতিগুণাতিঃ মধ্যপদলোপীসমাসঃ। শতিব্লোপঃ ছালসঃ. একদেশামুকরণমিত্যেকে, ইথম্ভরত্ত। নমু. পূর্ব্বজেত্যুক্তে কথং ক্রিয়াধিগম্যতে। মৈবং
কর্ত্বেত্যুক্তে পূর্ব্বজিরারা ইতি, ইহ অনু প্রতি পূর্ব্বো গুণাতঃ শণসিকঃ প্রোৎসাহনে
বর্ত্তে, অতএব শকার্থোছিপি গুণাতিঃ শক্ষপ্র্বকপ্রোৎসাহনে সকর্মকঃ,
অতঃ কর্মনিরভ্যুর্থমেবেদং বচনম্। আঙ প্রতি গ্রুবশ্চ বন্ধী বাধকো বিধিঃ
আঙ প্রতিপূর্ব্বশৃণোতিরভ্যুগগমে বর্ত্তে স চাভ্যুপগমঃ পবেণ যাচিতক্ত সভো
ভবতি। পোত্রে প্রতি গুণাতীতি পোতা ঋড়িছিশেবঃ তত্ত্বং, ঝড়িজো
হোড়পোত্রাল্যা ইতি। কিঞ্চ, শুন্তঃ প্রতিশৃণুভি মধ্যমা ভীকনোত্তমা।
গুণুর্ভোছমুগ্রন্তাক্তে কৃত্বর্ধা নৈব মদবিধা ইতি উটিঃ। পদ্যে ইদানীবমুলাছরণমেতন্মিন শুন্ত্য প্রার্থামানেভাঃ ইত্যেকে। বন্ধতন্ত, দাত্তরমূক্লব্রুব্বাজ্যুর্থ: ইত্যর্থঃ বন্ধবন্ধভা ইতি যাবং। এবং অক্সতার্ধা এব কিঞ্চিদ্বাপ্ত্রুং গুণতঃ অতিং কুর্কতো জনান্ প্রোৎসাহরন্তি তন্মাৎ ভবন্তং প্রোংসাক্র্যীত্যর্থঃ অতিং ক্রিয়তামিতি বন্ধতি।

(२०) स्वर्धि विद्यानस्वनकीज्जनित्रभागावित्वत्रानासत्तरः प्रति विद्या-श्रीसम्बद्धानविषयः। स्वर्धात्रेष्ठेण विद्यवित्वत्रात्रका स्वर्ष्य वद्याः। स्वर्धावित्वाः भ्या अत्राक्षद्रः सम्बद्धार्थिक ज्ञास्त्रका विकासकः सम्बद्धाः वद्यम्

অপাধ ৰার পেকৈর শিক্ষায়াঞ্চ প্রক্রিপ্রের রাজ্যস্থেত হাজনো প্রক্রিন জানন

সংক্রমত ক্রমেন ক্রমেন ক্রমেন বিরুদ্ধ বিরুদ্ধ বারানাতঃ, রথাৎপত্তিতঃ; বারণে—যবেভ্যাে গাং বারম্বতি, শিক্ষায়াং—নটস্থ প্রােতিঃ; প্রতিপ্রহে—পৌরনাদগৃহ্বাতিঃ বােণে—চৌরাজান্যতে, রক্ষতীত্যর্থঃ; ভয়ে—চৌরাবিভেতিঃ শক্তর্বো—উপা

एन व्यानाम्बिनर माज्या। नः कित्रांत्राम्नामीमर इन्द्र वी विन बार्डनम्। विद्यावरण जु जरजारमा स्मारविशः गविकोश्चिकः । अभावनवार्वर निन्धितानि অপার ইত্যাদি। স্বরাপারোদালীনোভগুলাখনলাক্ষ্যে বিল্লেষ কলোধাত্থো-२भातः वाभावभाष्यवानित्नां बढ्ड विस्त्रवारभात्र हे गुरूर, कात्रकिनिशारका अठि चक्विक्षिष्ठः क्रियात्रां मूकामीनिमिष्ठार्थः। मारधा বিষয়সপ্তমীর্মিতি ভাস:। ক্রিরাচিক্সপ্তমীতি বিশ্বাশ:। পততীতাত্র পর্বং পতনব্যাপারবিশিষ্টত্বেন সব্যাপারং, বৃক্ত ক্রিয়ায়ামো-चत्वाचरत्रात्रं क्रभर्रात्रार्विश्वर क्षेष्ठि माधनरत्राः দাসীক্তং ব্যাপারাভাবাৎ। বিশ্লেষকলঃ পডভার্থ এবাপায়ঃ, তৎসাধ্যে সতি অবধিভূততং কৃষ্ণস্ত, অতে। বৃক্ষাদিতি অপাদানং সম্পারার্থঃ। অতে। বিভাপ্তন্তীভূতস্পনা-সতি বিভাগাল্রমুর্মবধিত্বং তেন দিক্তিয়ানাশ্রমতে পতনক্রিয়া বৃক্ষং প্রতি বিভাগস্থনকীভূতা, ন চ বৃক্ষান্ত্রিতা, কিন্তু পর্ত্তান্ত্রিতা, অতো বিভাগাপ্ররো রুক্ষোহ্বধিরিতি, তুর্গোহপ্যাহ অপসরতো মেষাম্মেবোহপ-সরতীত্যাদৌ অক্তরক্সাবধিত্বং বিবক্ষিত্রং, दिए পুনর্ন বিবক্ষতে তলা মেষারপ সরত ইত্যেবং স্থাৎ। বারণ ইতি বারণং প্রবৃত্তিবিখাত: 'নিবর্ত্তনমিতি ধাবৎ जियम् नात्थाः यस्तिविक्षज्योत्मिक सनीत्मिक् वा क्रमानानिमिकार्थः । देश हि वतान् श्रीन छक्ष कृषि जुका। वतान बारशाजि, बाना ह जरण निवर्ष छ देखि वृद्धिकृष्णभावक विकासामकार क्षत्रकार्या वात्रभावत्या (बालाः-धन्द्र) কুপাধৰং বারবভি। শিক্ষায়ামিতি; নিয়মপূর্বো বাক্যঞ্জা শিক্ষা; তেন রামাদধীতসক্ষেশ ইভি ভট্টি:। তভাং সাধ্যয়ামিতার্থ:, আরাণি বৃদ্ধিকৃতাপার:.. -পূর্ববংবিদ্যাত এব প্রত্যুদাহরতি। নানিস্থারাণ ইতি, শুরাপি নিস্নারাং শুড্যাই नमेक त्वांक देखि बारन्य। व्यक्तिवर् देखि बखानि व्यक्तिहीरकार्वर दहर बार क्याक्का व्यक्तिवृद्धामि हेकि विकान द्वार्थाण करणानिवर्कक हेकि हुकि-

গারাণন্তর্কতে নিলীয়ত ইতাক, করিটো করিবতো সঙ্গা প্রভবতি; কমনে—গোময়াধ্নিচাক। কারতে, প্রাক্তর— রণাৎপরাক্ষরতে; প্রমানে—অধর্মাধ্যতি; জ্ঞুপ্রা-য়াম্—অধর্মাজ্ঞ গুপতে; বিরামে—অধর্মাদ্যতি; আধি-ক্যে—শুক্লাংশুক্লং, কাকাৎকৃষ্ণঃ।

কৃতাপায়ঃ। ত্রাণ ইতি বঃ কল্ডিং কাকুণিকো ভবতি স বল্যেনং চৌরং পশুতি ঞ্বমত্তমৃত্যুরিতি পশুন্ মুদ্ধ্যা প্রাপ্নোতি প্রাপ্য চ ততো নিবর্ততে ইতি বৃদ্ধি কুতাপার:। ভয় ইতি অত্র ভীতার্থানাং ভয় হেডুরিতি পাণিনীয় স্ত্রং। অত্ত-দ্বাবিতি অত্ৰান্ত দ্বী শেনাদৰ্শনমিচ্ছতীতি পৰস্তুত্ৰম্। অস্তাৰ্থঃ ব্যৱধান-মতৃদ্ধি: তরিমিত্তং ধেন কর্ত্তাগ্রনো দর্শনীমচ্ছতি তদ্পাদানং ভবতীতি। নিলীয়তে লুকায়তি যদ্যপ্যপাধ্যায়োমাং পজেং তদা প্রেষণাধ্যেষণে কুর্য্যা-দিতি ভীত্যা। প্রভবনমিতি প্রভবন: প্রকাশনং যত্র প্রকাশনং প্রবভূব ইতি প্রস্থান্য। অত্যার্থ: প্রভারতের্গোণে যত্র প্রকাশনং ভবতি তদপাদানমিতি। হিমবতা গলা প্রভবতি, আবির্ভবতি, প্রথমোগলদ্ধিঃ প্রভবনমিতি কাশিকা, অধিকরণাপোথালে। ছয়ম্। জনন ইতি. অত্ত জনিকর্ত্তঃ প্রকৃতিরিতি পরস্ত্তং অস্তার্থ: জন্তর্থন্ত কর্ত্তা জায়মানস্ত প্রকৃতিঃ কারণং তদপাদানমিতি। ধর্মাৎ অধ্যুংপদ্যতে, পুত্রাং প্রমাদো ভবতি, বীজাদস্কুরো ভবতি, অবিনক্ষিতকর্তৃ-ष्ट्रार व्यटकमकात्रवादकारः मरका एकतम कु, ववावातमाग्नर व्यव्काः स्राः, বীজনস্কুরো ভবতি, বীজেনাস্কুরো ভবতি, বীজে অস্কুরো ভবতি, বীজস্বাস্কু-রোভবতি। পরাজস ইতি-অত পরাজেরসোচ ইতি পরস্তাম। - পরা প্রাজেয়তের তেখার্থঃ সোচ্ । ম শক্ততে তৎ কারকমণাদানং ভবতীতি। ভোজনাথ প্রাজয়তে তথ সোচুং ন শক্লোতি। ক্সমোচু ইতি কিং শত ূন্ প্রাক্তরতে অভিভবতীতার্থ্য কেবিপরাভ্যামিতি তঃ। অব জুল্লপারিরাম-অবাদাৰ্থনীমূলসংখ্যানমিতি ব্যাক্তবামিত্যাহ অবাদ ইত্যানি, অমাদো ্বিহিতাপ্টিরত্তিঃ অত্রাণি নাস্থিকঃ পুরুষোবদতি বর্ত্বাৎ প্রসাধনং ন ভাৎ रक्तम् मन्त्राम् विष्यं नेका च देवि यममा वाना करणानिवृद्धः देवि हि । कण-नाक विकासिक्षिय अर्थातिवृत्तिक क्षणाः वर्षात्रामः मा क्रवणारः सरदाक-

२५। जाराद्वीश्विकत्रगर्। (२५)-----

चाळाता विकान मृथ्यः छार । म क्रम्मामी गारका, देवर-विक, चाळिया मक, এব চ। উপশ্লেষিক ইত্যেবং জালাধার-দচ্প্ৰিব:,—গঙ্গামাং ঘোষ: প্ৰভিষ্মতি, বনে সিংহং, ভিলেব্ তৈলং, কটে আস্তে বিপ্ৰ:।

হস্পনিতি ভট্টি: । চিন্তানির্ভিবির্তিং, ইহাপি প্রেক্ষা পূর্ব্ধকাবীবদতি তৃংখহত্রয়মধর্মঃ তন্মার্মাইত্যেনং সচেতাঃ কর্জুমিতি বৃদ্ধা প্রাপ্তা ততাে নিধতত ইতি বৃদ্ধিকভাপারঃ। আধিক্য ইতি; আধিক্যে সাধ্যে খদবধিভূতং প্রতিযোগি তদপাদানমিতি। অত্রাপি কিঞ্চিৎ ক্ষাঞ্চং বৃদ্ধা প্রাপ্তো
অনস্তরং ভক্ষতরদর্শনে ততাে নিবর্তত ইতি বৃদ্ধিকতাপারঃ। ইং ক্রিথাজরমধ্যাহাত্য কারকত্বমিত্যবধেরম্। কিঞ্চ, নির্দিষ্টবিষয়ং কিঞ্চিত্রপাতিবিষয়ঃ
তথা, অপেন্তিতক্রিমিক্ষ ত্রিপাপাদানমিষ্যতে। ইতি মতে রক্ষাৎ পর্বং
পর্তাত, বলাহকাবিদ্যাততে বিহাহ, মাধ্রাঃ লৌছেত্য আঢ্যতরাঃ ইড্রালাহতানি, উপাত্তবিষদ্ধোদাহরণমিদম্। ভক্ষাৎ পৃথক ভূবা তৃদিতরঃ ভারেও
দীপ্যত ইতি অপিচ ভক্ষমপেক্ষ্য ভক্ষো বর্ততে। বিবক্ষায়াঃ প্রপঞ্চার্থমিদম্ ।
প্রাচীনমতে তৃ, বিভক্তাৎ পঞ্চমীত্যপি।

(২১) আধার ইতি। আধ্রিতে ক্রিরা অম্বিরত্যাধারঃ অতিবরণে ধণ্।
নম্ চ ক্রিরা হি বিবিধা—কর্তৃত্বা কর্ম্ম্বির্চা তত্ত কর্তৃথা কর্তৃসমবারিনা।
কর্ম্মা কর্মসমবারিনা। ন চ কটাদিয় কাচিৎ ক্রিরোপলভাতে তৎ কথং ক্রিরাধারত্মধিকরণজ্ঞ, প্রত্যুত কর্তৃকর্মণোরেবাধিকরণসংজ্ঞোপনুভাতে ক্রিরাভারত্মধিকরণজ্ঞ, প্রত্যুত কর্তৃকর্মণোরেবাধিকরণসংজ্ঞোপনুভাতে ক্রিরাভারত্মধিকরণসংজ্ঞাপনুভাতে ক্রিরাভারত্মধিকরণসংজ্ঞাপনুভাত ক্রিরাভারত্মধিকরণ সালি ন ভাৎ ভাজ্যামের বাধিতত্বাৎ। সতাং, কর্তৃকর্মধিলাঃ ক্রিরাভারত্মধিরভাত্মধারত্মধিলা
ধারভূতরোর্চারণাৎ পরত্মধিলা ক্রিরা ধিরতেহিমিরভাত্মক্র্মণ ক্রিরাসিক্রোভারত্মধিলা
ধারভূতরোর্চারণা
ধারভূতরোর্চারনা
ধারভূতরোর্চারণা
ক্রির্বার্তি। স চেড্রাভি; স চ চত্রির্বান্তাদিতি সমন্তর্মান
ভালিকরণং মুডরিভি। স চেড্রাভি; স চ চত্রির্বান্তাদিতি সমন্তর্মধিলা
ক্রিরাপ্ত ইতি, সমীপণকাৎ সার্থে ধণি সামীপান্। ত্রের ভব ইত্যানি সার্থে
কর্মনালাকর ইত্যানে। সমীপসম্বিলক্ষণা ব্রে ক্রিরভে স আধারঃ সামীণ্ডাক্ষা ভবারিক।
ক্রিরান্তামির বিরামিকার ব্রের্বার্মকর্মকর্মনালাঃ মেনীপ্রকৃত্মধিলা
ক্রিরান্তামির ব্রারাধিকার বের্বারালাব্রর্বার্মকর্মনালাঃ মেনীপ্রকৃত্মধিলা
ক্রিরান্তামির ব্রারাধিকার বের্বারালাব্রর্বার্মকর্মনালাঃ মেনীপ্রকৃত্মধিলা
ক্রিরান্তামির ব্রারাধিকার বের্বারালাব্রর্বার্মকর্মনালাঃ মেনীপ্রকৃত্মধিলা
ক্রিরান্তামির ব্রারাধিকার বের্বারালাক্রিরান্ত্রামিরার বিরামিকার বিরামিকার বিরামিকার ব্রার্মকর্মকর্মনালাঃ মেনীপ্রকৃত্মধিলা
ক্রিরান্ত্রামিরাম বের্বারালাক্রির্বার্মকর্মকর্মধিকার ব্রার্মকর্মকর্মকর্মকর ব্রার্মকর ব্রার্মকর ব্রার্মকর বিরামিকার বর্মকর বর্মকর বর্মকর ব্রার্মকর বর্মকর বর্ম

रूपा निर्मा कर्म । रूपा क्रिया क्र । रूपा क्रिया क्रि

এবামাধার: কর্ম তাৎ। স্থলীমধিলেতি, বিরিম্বিটিউতি, গ্রামমধ্যাতে।

লক্ষ্যন্তি। লক্ষিতে হি তীরাদাবৌপশ্লেষিকাধার এব মুক্তঃ, কিং ভেদান্তবে-পেতি কেচনান্তর্যাণয়:। এবমঙ্গুল্যতো করিশতম্, অঙ্গুল গ্রপদেন অঙ্গুলি-নির্দ্ধিষ্ট: স্থানং লক্ষ্যতে। বৈষয়িক ইতি। বিষিণোতি সংবধাতীতি বিষবঃ প্রতি-भाषाभिः, তত ভবো বৈবয়িकः। अशाशामिकाष्टिक्षः। म भूनः मामीभाकानि-विषयनका अव। यथा, शर्ष (वंमाः ध्यापर, भरमाः क्यारिम, अवर निया-দীনাং গুর্বাদিভ্যোহন্দ্রভাবাৎ তেবাং তে বিষয়া ইতি। নমু চ আধাবো-হধিকরণমিত্যাধারশক্ষেনাশ্রয় উচ্চতে। আশ্রয়ণ্ট সংযোগসমবায়াভ্যাম-ছবা ন সত্তবৃত্তি, তাকুপ্রভৃতিশিষ্যাদীনাং ন তারোরছতরসম্বন্ধমনুভবৃতি, তৎ क्षमम्याधिकवृष्यम् । देनवः यो हि यहवीनश्चिष्ठिः म मः साममनवादावश्चत-ণাপি তদাভিতো ভবতি। যথা, রাজপুরুষ:, ন চাত্র রাজ্ঞা সহ পুরুষস্থ সংযোগসমাবারো छः। किन्न, जम्बीनचिछिचार बाकाखदः भूक्रम दैछि बान-দিশুতে লোকে, তবদ্ওরো বসতীত্যাদি। অভিব্যাপক ইতি। অভি সমন্তা-দ্যাপ্নোতীতি অভিব্যাপকঃ স্বার্থেছণি আভিব্যাপক:। ষত্রাধারাদেরবোভল্য-জন্মাহপুৰক কেশভাগানভিব্যাপ্য তিষ্ঠতি সোহভিব্যাপক:। বৰা ভিলেয় হৈলমিজ্যাদি। যদ্যপাত্র ভিলৈ: সহ তৈলক্ত সংযোগঃ তথাপি দেশবিভাগাৎ लाक भरवानवादरात्रा नाकील) बन्दार्छ। खेनद्रायक देखि। आधार-श्विद्यात्रम् त निक्षाः नः स्वानं जेनात्रयः, उत् छव छेनात्रविकः नूर्सविकिन, ववा करि विश रेजानि। नस् क्वीयर खेनल्लियक्षर करेज निक्षार, खा ভূপল্লেষত্বে সংবোগে ভবতীত্যর্থো নিফক:। স্ত্যুম, আগারাধেরাভ্যাৎ তৃতীয়াব্যক্তি: কারকশক্তিরন্তি তত্তবনাদেব তবতীতাক্তং তথাত, শক্তি: কারকম্চ্যতে ইতি বৃদ্ধাঃ। এবমভিব্যাপকোহপি ভুলাজনা স্বারক্ষজিরের रेजनञाजितानकप्रमुणकाताः। यदा, जिहेजि जिनाशात्रमेकिशेषितानकः, केल क्रिंगर खाद्य दर्शाचन स्थल । दर्कान स्थादक ही ति ग्राटकी व्यक्तिक सम्

(২২) আছি। এবানিতি অধিপূর্বাণাং দীঙ্ছাদামিতার্থ:। তেলোপপর্বাত্তে বিভাগ কাং। নয় বনেগরিতিইতে রাজাদমিত্যাদারবেক-

२७। (मेशावयहाय सहस्रो सिनादमें। (२७)

ক্ষুদ্ধের্দ্ধের্দ্ধার কর্ম ক্ষাই । প্রামম্পবসতি, পর্বত-রক্ষুদ্ধিক বিশিষ্টির বতি, পরীমাবদক্তি, নিবাস ইতি কিম্ ? প্রামে উপবসতি ভোজন্মিবৃতিং করোতীতার্থঃ; কথমেকা-দশীমুপবসন্তি নিরম্ব ভক্ষা:—উপাদনিবাসার্থে বসঃ সকর্মা-কতাং।

পার্থক সকর্মকামিভিউডেরাধারঃ কর্ম মা ভ্রেডদর্থং ধ্রেব্য ইত্যুক্তং, ভলিহ কিং নোচ্যতে ! উদ্যতে, শীলঃ সাহচ্চ্যাৎ ভিউভিরপ্যকর্মক এব গ্রাফঃ। অবা ভ্রূমাধারক্রানে প্রভিবেধাে বাচ্যঃ, ত্র্যাধারপ্রয়ারে ত্ ক্রাং, ববা কল্মমিলেতে গৃহক্ষ, ইহ ব্যারপ্যাধারভাবে সামাং, ন তু গৃহেছধিলেতে শ্বাং ইভি। নৈবং, ইহ শ্যাবিছিতেরাধারাে গৃহং ন পুনরধিশীও ইভি। রধরাভিউতীভ্যাকাে সকর্মকত্মাভিউতেরারােহণার্থভাব। অসৌ কুমারস্ত-মন্ত্রভাহ মুক্তাভ ইভি রবাে অনুপ্রেলা অনিস্তৎপ্রেলিররণপ্রিকে জন্মনি সকর্মকঃ, অভন্তরার্লক্ষণং ন লক্ষিভব্যম্। বচনমিদং বিদ্যাধাবচনমপ্যধি-কর্মনিকৃত্যর্থনেব।

(২০) উপা। ইছ উপাধান্যাওপূর্ব্বো বস উপাধান্যাঙ্বস ইতি শাকপার্বিবাদিরিতি কর্মরাছ, উপাদের সেরিতি। নিবাসার্থবাদ্বস-নিবাস ইত্যক্ষৈরগ্রহণং
ন তু বস আচ্ছাদন ইত্যক্ত। অসুবসতি নদীং, অধিবসতি বদেনমিত্যুদাহার্য্যং,
উদিটোলাহরশোভরমন্তরাঞ্জামে উপবস্থতীত। ভাষ্যে তু, গম্যমানত বসতেরিষক্রণং প্রামে তীর্থাদিকং ন তৃপবসভেরিতীহ কর্মন্থং পরিজ্ঞতম্। তদুক্তং,
বসতাবপ্রক্রামাং দেশোহবিকরণঃ স্কুতম্। অপ্রম্কুতং তিরাত্রাদিকর্ম চোলবসের্মতম্। তদাহনশনার্থক্যোপবস্থতেরাধারতে বিবহ্নিতে তীর্থাদেঃ কর্মন্থং
ভাৎ, তীর্থাদেরবিকরণক ক্র্মন্তে উপবস্থপোবিত্যিদং অস্তাবিকরণে উনকৌ ন স্থাতামিতি চিন্তাম্। বার্জিকেহণ্যনশনার্থক্যোপবস্থতেঃ প্রতিষেধ
এব প্রমাণম্। নমু অনশনার্থক্য উপবস্থতেরাধারক্ত কর্মন্থং দৃশুত ইত্যাহ
কর্মনিত। উপাদনিবাসার্থে বসঃ সকর্মক্ষাক্তি। উপবস্থতেরজ্ঞোক্তরাংগ্রান্থ
হণি কালকর্ম্বকত্বন সকর্মন্থেন সকর্মক্ষমিত্যর্থঃ। উক্তক্ষ, কালাঞ্জভিবিদ্ধানা-

२८। अखिनिविद्या नी । (२८)

শক্তাধার: কর্ম স্থাৎ। **প্রাসমভিনিবিশতে, যা, যা সংজ্ঞা,** যন্মিন্, যন্মিনভিনিবিশতে। "ভবতি হি বিকলাত: কারকাশি

মধ্বভূ তিক্রিয়ান্তরে:। সইর্জিরকর্মকৈর্বোকে কর্মবন্ধকারত ইতি। ক্রমনীশরজ কালাধ্যভাষাবিক্ষেদ ইতি বিতীয়েতাব।

(২৪) অভি। অভিনিপূর্বে বিশ: অভিনিবিশ:, ব্রানির্কিষ্টোভয়োপ-সর্গপ্র্বাস্থ্য বিশতেরাগারস্থ কর্ম্ম বং. অভএবাভিক্রবিক্ষবাস্থ মিভি ভট্টি:। নমু কিমৰ্থনিদং বিশতে: সকৰ্মকত্বাৎ স্থাবিক্ষতমহাপ্ৰাহ্দকুলং নকৰালন্মিতিৰং, গ্রামসভিনিবিশতে ইত্যাদাবণি সকর্ত্মকরণ ভবত্যের, অন্তত্তাধিকরণবিৰন্ধায়াং সংখ্যী আদিতি। তত ভালাগলকম্বলকায়াচুপকারকম্বং কিঞ্চিপি ন ক্ষুর্তি। मण्डाः, कात्रकम् विवक्षांनीनषञ्जालकत्मत्वनः हेणार खवलोण्डानि । वक्कमिक्का বিবক্ষা, ততো হেতোঃ কারকাণি যথা বিবক্ষান্তে তথা ভবজীত্যর্থঃ । বাষেত্যাদি-ভাষাপ্রয়োগোহয়ং, ষশ্মিন সংক্ষিনীভার্থঃ, নিবশত ইতি নের্বিশ ইতি ছব । অপরে ড়. গাং দোগ্ধি পরো গোপ:, গোর্দোগ্ধি পরো গোপঃ ইত্যাদিশিষ্ট-श्राद्यानमधीनाः • उच्चत्रकारायु जिन्दिशानाः मुक्कानाः जानस প্রকাশয়রাহ ভবসীজ্যাদি, যোগ (কলঃ) স্তুরং স্পষ্টার্থ ইত্যাহ:। নম্ ক্রিরানিমিক্তং কাবকমিতি প্রাণ্ডপক্ততং তৎ পুনর্জব্যগুণক্রিরাজাতিম্বরূপ-ভেদাৎ পঞ্চবিধম। তত্ৰ কিং জব্যাদয়ো জব্যাদিশন্তরো বা শক্তিমন্তো বা কার-कानि, चार्डा क्रनराज्याजावारमक्छानामानामिमानामः खालमङ्गः। (रम प्रखा-বেল একক্রিয়ানিমিত্তবং ন হি তেন মভাবেন ক্রিয়ান্তরক্ত নিমিত্বং সৃত্ত-বতীতি। ততঃ স্থালী পচতি, স্থাল্যা পচতীতি নোপপদ্যতে। সর্জকারকাণাম-ভোক্সব্যাবৃত্ততাৎ। দিতীয়ে তৃ, বৃত্তাদাবুপাদানাদ্ধিকারকব্যবহারলোপা-পতিঃ। তৃতীয়ে তু, বিকল্পং, শক্তিমতঃ কারকত্বে শক্তিবিলেষমুপলকণং বা। নাদাঃ, বিশিপ্তক্ত কারকত্বে গৌরবাং। বিশেষণ্ড কারকত্বে বাধাভাবাচন শক্ষে: কারকত্বসম্ভবে তথিশিষ্টক্ত কারকস্বীকারত্ব বৈষ্ণল্যাং। ন বিতীয়: स्याणीनार कावकरङ् शृर्त्साकरणायार । भक्ताकीकावज्ञानर्यकाष्ठ छेठारङ. मक्तिः कातकर, मेकिक नानाविश्रा, नानाविश्राताः मरकताराताक वार्षकः ह्याः। चल (यन क्रार्थं वा विकिर्विवकार्ताः, (छन क्रार्थं मा कांब्रकः, विक-

যথা তথা। একল কারকলৈবে প্রক্রেকং প্রস্তুতে"। গোডো। দোট্নিপর:, গোরু নোদ্ধি পর:, কারতৈবে, বিপ্রায় গাং দতা গুহুলতি আরুছ তিষ্ঠতি গিরিম্, গৃহং প্রবিশ্য নিঃসরতি। অস্তোষ ঘটঃ পশ্যেত্যাদি।

क्षांजः कात्रकानि छवछोछि स्त्रुट्यः, त्रकाषिणशार्ट्यत् कात्रकवावशातः—मिकि-শক্তিনতোরভেদবিবক্ষায়াং নির্চলক্ষণেরনিতি। অন্তঃ পুনরাহ, শক্তিমত্তো ভ্রব্যাদয় এব কারকং শক্তি: কারকার্থবিশেষণং, শক্তিমত্যের বিশিষ্টে কার-কবাবহারঃ স বৈ লোকিক ইতি। শক্তিরপানুমীয়তে—নৈতবাত্রমণি কারকমুচ্যতে লক্ষণায়া হেত্তাবাদক্তথোপপতে:, দুখাতে চৈকবস্তক্ত ভিমে পুত্র: পিতা পিতামহো মাতৃল ইত্যাদিবাপদেশে। ধর্মভেদাং। यथा, কর্ত্তা সাক্ষাৎ সম্মবায়িনীং ক্রিয়াং পরম্পর্য়া চ কর্ম্মমবায়িনীমভিনিবর্ত্তর-ভীতিনিমিত্তঃ তথা কর্মাপি ক্লিয়াতঃ সমুৎপদ্যমানং সম্বন্ধানুভৰ ব্যাপ্তো निर्मित्वः उथा ছে हामू अदयमन कत्र मेमिन भत्र छनि मिसम्। उथा म खानानाभा-षानाधिक वर्गानि बानाशभयशाविक बागार निभिष्ठानि, उठक मदर्सवार ক্রিয়াণাং যথায় বং নিবর্ত্তব্রিতা কর্ত্তা প্রধানমিতি। অরোদিষ্টবোরুদাহরণয়ে। त्रभागानाधिकत्रत्व विविक्षित्व । अदेशकियान श्रात्रात्त द्वीत्रभरमान कात्रकत्यान বিবিক্ষাতঃ প্রবৃত্তে। সংম্রারপদিশরাহ, একত্তেতি। একত এক্মিন্ প্রয়োগে, कांत्रकरेश्वरः कांश्र कांच्या हो, शत्रमिणिशिष्टरमकः अवर्षक हेणार्थः। (च्या भारतमार वाजवमार मारकातमार चारा प्र. अविधान वारामार कांत्रकरेक्ट्रा भार (क्यनारमकः श्रवेखंटिक, न कु दि। एवाहि चाक्रक विश्वेषि গিরে।, গিরিমারুফ্ তিষ্ঠতি বা, ন তু গিরিমারুফ গিরো তিষ্ঠতীতি। ইহ পর-শকো নোভররচন:, রাসগৃহাল্লি:স্ত্য বিশতি কামিনী, গ্রামাদাপত্য পদ্ধতী-ত্যাদ্যসিদ্ধেরিত্যাছ:। অথ পূর্স্রপরশ্বো: পর্বিদিবলবানিতি ফ্রায়াৎ পরসংক্তৈব व्यवर्खियाटण-किमटनन। देशवः वानोः, मः क्वाविदशे उन्ना वानादा नान्छ। অক্তথা লোদ্ধি ইত্যত্ত ধকারত হশসংজ্ঞায়া সত্যাৎ থবি তৃতীয়ো বাধ্যতে, ইত্ निर्फिरहोषाद्दर्भय अभाषानाधिकत्रभक्षी वाधिजानि । नमु मूलरकरनाभ-ৰংশং ভুঙ্ভে ত্ৰাহ্মণায়াহয় দদাতি ইত্যাদে কথমনেন পরতার কর্মসম্প-स्टाट माजार, जेनन्रमञ्जूषीयात्रा हेलि खानकार। कृष्टिस स्टामिन, सर

খণৰ-বাৰ্য্ণ হ ২৫ ৷ উক্তং ডিঙাদিনিদিক্ষ্ম ৷ (১৫)

लिख, कृर, लक्षिण, नमारेमर्गमिकिसः कात्रक लक्क-মুচ্যতে। কুডজিভসমাসাস্ত সন্তামাত্তে হি বাচকাঃ, বাতি-

পুনর্ভিন্নজিন্নয়োঃ কারকরোর্নেই পরস্থায়িত শ্রীপতিনা সিদ্ধান্তিতমু । এতদেবা-ৰসম্ভং বিপ্ৰায় দল্ভা গহ্নাতীত্যদান্তত্বাৎ।

(২৫) উক্ৰ। ডিঙ্ আদিৰ্বন্ধ স তিঙাদিঃ তেন ব্লিৰ্দ্লিইং ভবিঙাদি-निर्किष्ठेः, निर्किष्ठेषः छविधिवियग्रध्यः। यत जिक्षांबद्धा विश्वीत्रद्ध जिल्लामि-निर्फिष्टेयिछार्थः। कात्रक देखि निर्फात्रत्य अर्थमीष्ट्राक्टर्स्य ; कात्रत्यम् सरा অব কারকস্মোক্তরে কীনুক বিভক্তিওবিতা যতোহসুকাধিকারে দ্বিতীয়াদয়ো বিহিতা:। অব্যতিরিক্ত প্রাতিপদিকার্থে চ প্রথমা, উক্তেইপি कार्यक जन्मध्येजीजावराजितिकथाजिनिकार्यकः कुछः । नजाः, धर्यस्-বাত্র ভবিভূমইতি, যত উত্তে কর্মাদ্যর্থে সার্থমাত্রমবনিষ্যতে, অতএবোক্তং ভাষাকৃতা, অবিহিতঃ সোহর্থঃ সম্পন্নপ্রাতিপদিকার্থ ইতি ৷ অমুমেরীক্ত-যতেন অচয়নাহ; ক্তুদ্ধিতসমাসা ইতি। অস্তার্থ: কুত্তদিতসমাসা: সত্তা-মাত্রে নিমিত্তং বাচকা ভবত্তি, তেবু কারকার্থানাং বাচকেযু সন্তামাত্রং ব্দব্যতিরিক্তপ্রাতিপদিকার্থমাত্রমবশিষ্যতে ইতি। অথ বিশেবে নাভিরেকো राजित्वकः, मयशिकणामिन् कर्माणायर्थ धारमाकः विविक्षित इ कृष्णिका দরোহযুক্তা অপ্রযুক্তা ভবন্তি। ষমানিমিতঃ তমাচুক্তেযু কারকার্থের প্রথম-বেডি। वंदियत्रः कृषांषीनार विष्णामानषः एउवाः वाहकास्त्रात्वाकान् कुर्व्वस्त्रि ইতি নির্মশিতার্থ:। এবং ব্যতিরেকোহভাবঃ, তথাচ বহিষয়কঃ কুদাদীনাং विशामात्रकाष्ट्रावः म धवायुकः जानिष्ठि नवीनाः । नह वाह्यः खन्नाः काद्वि-কারাং তিভোহগ্রহণাৎ ডিঙ,নির্দিষ্টক্রোক্তত্বেহপ্রামাণ্যং স্থাদিতি। একদেশ-প্রামাণ্যাৎ সমানার্থ সমূহক প্রামাণ্যম্। ন্রীনাঃপুন স্থাকেন তিওঃ প্রাপ্তিরিত্যাত্র:। ইহ কর্তৃকর্মণোরেবোক্ততে তিও্সামর্থ্যং, কৃতস্ত সর্কেষাং ডভিডসমাসয়ের্বধাসম্ভবং, শত্যঃ শতিক ইতি শতাদিকবতা বশত ইতীক-मुटकी। ब्यारशानक देखि बाशमूनकः रान प्र कथा। देव वस्त्रीरिममारमन কর্মা উক্তো ভবতি। অপিচ, বিপ্রেণ তং পৃগং ধাদ্যমানো বাদয়তা বাচ্যসে, ভত্তং ৰাচমানায় দাতুমারেভে। পশ্চ আনীয়তে পশ্চামীয়তে বিশ্র:, নোমতে

রেকে তু কর্মাদীবস্কান্তে ভরম্বিছি। কটা করেতি দেবদতঃ, কটা ক্রিয়তে দেবদতেন, কৃতঃ কটো দাবেন, শতেন ক্রীডঃ শত্যোহয়ঃ, শতিকোহয়ঃ; প্রাপ্তোদকো আমঃ।

२७। प्रशर कर्य विकर्यनीम्। (२७)

দিকর্মণাং ধাতৃনাং তিডাদিভিম্থাং কর্মোক্তং ভবতি।
নীয়তে অজা গ্রামং দাদেন, নেতব্যা অজা গ্রামম্, হতো
ভারো গ্রামম্, কউক্লা শাখা গ্রামম্।

দাত্মিত্যাদাববৈধিকথাদেকবাক্যে ক্লাদিভিভিঙা বাভিহিতং, কর্তৃথান্যুক্তথাদি চ। দানবিশেষক পরস্পরস্থাসাকাক্ষাবিরোধেন প্রধানডাভিঙা বাধ্যত ইতি কলিং। কিঞ্চ, একাধিকরপবিশেষণক লিজবচনাদিবাধকং বিনাবিশেয়বন্তবিভি নিউপ্রযুক্তথাং। উক্লঞ্চ, বিশেষ্যক্ত হি যদ্লিকং বিভক্তিব্রুক্তবিভি নিউপ্রযুক্তথাং। উক্লঞ্চ, বিশেষ্যক্ত হি যদ্লিকং বিভক্তিব্রুক্তবিভি নিউপ্রযুক্তবাং। উক্লঞ্চ, বিশেষণপলেহপি চ। বথা তিষ্ঠতে শোভনা নারী, তিষ্ঠেতে শোভনে প্রিয়ো তিষ্ঠতে শোভনা নারী; কিষ্ঠেতে শোভনে প্রিয়ো তিষ্ঠতে শোভনা নারী; কিষ্ঠেতে শোভনে প্রিয়ো তিষ্ঠতে শোভনা নারী; কিষ্ঠতে শোভনে প্রিয়ো তিষ্ঠতে শোভনা নারী হিত্যাদে লিজবচনাদ্যমুর্শাসনশাস্তানি বাধিতানি। কিঞ্চ, প্রকৃতিবিক্তিভাবস্তত্ত প্রকৃতিবিদ্ধিকবচনপ্রস্থা ভবন্তি নিষ্ঠামুনিইজাং। তু মহমভূঃ, অহং তুমভূবং, কাশাঃ কটঃ সম্পদ্যকে, একো হৌ ভূতঃ, তৃণানি কটঃ ক্রিয়তে, মৃদ্রটঃক্তেইত্যাদি। বত্র তু, প্রকৃতিবিকার্যভাবঃ কেবলরপ্রস্থান্যহায়েবেন সমানাধিকরণ্ডেন প্রযুক্ততে তত্র বচনাদেঃ কামচারঃ। যথা, অমানি তত্তেন নিজারশোস্থাং দ্বিকালদ্ভালিক্রাঃ শিরঃস্থিতম্। ক্লিবিদর্ভভূবো মতিক্ষুটং ইত্যাদিদিক।

(২৬) মুখ্যং। পুর্বেণ সিদ্ধে নিয়মার্থমিকং, ইহ তাবং সামান্ততো দ্বিকর্মনু পামিত্যক্তে, ত্হানিতনিতরেবাং প্রসক্ষঃ। তত্তপারতো অপ্রধানং ত্হানীনানিতি বক্ষ্যমানতাং। নীবহিত্ত্বীবামের দিকর্মণাং মুখ্যং কর্মোজং ভবতি ইতাবসীয়তে, তিভাদিভিমির্কিন্তমিতি শেষঃ। মুখ্যং কর্জু বীপ্যিততমং, বদ্ধা ক্রিয়াপ্রমৃতিঃ। নীর্থ ইতি ভাবকর্মনেরিত্যাত্মনেপদম্। অসতি প্রবেশ্যস্থ

२१। जल्यशर्मर इरामीनाम्। (२१)

ছহাদীনাং দিকপ্রকানীং ধাতৃনামপ্রধানং কর্পোক্তম্ভবিত।
ছহতে গোঃ ক্ষীরং গোপেন, যাচ্যতে ব্রং দেবো দেবদক্তেন,
দেবাস্থরৈরমূত্যস্থানিধিন্নহে, জিতো নৈতঃ শত্ম, গর্গাঃ
শতং দণ্ডনীয়াঃ।

२৮। गारख कर्छ। ह कर्ष यह। (२৮)

ণ্যন্তে যৎকর্তা কশ্মভৃতন্তৎ তিঙা নিভিক্ষক্তন্তর্বতি। গম-য়তি গ্রামং বিপ্রং দেবদত্তং, গম্যতে বিপ্রো গ্রামং দেবদন্তেন, বোদ্যতে শিয়ে। ধশ্মম্, ভোজ্যতে বিপ্রো ভক্তম্, পাঠ্যতে পুত্রং সূত্রম্, শাস্ততে বিপ্রো মাসম্। চকারাৎ ক্রচিৎ প্রতি-

- (২৭) অপ্রধানম। আদি শিহাবয়বে ন তু সানীপ্যে, তদুগুণসংবিজ্ঞান বছরীহিরয়ং ব্যাধ্যানাং। অসতি প্রবোজ্যস্ত কর্মাডে নিজন্তানামপ্যেময়ং নিয়মঃ। দোহতে গাবং পরো ভৃতৈয়নাথেন। প্রযোজ্যস্ত কর্মাড়ে তু তদে-বোক্তং স্থাৎ, যথা বাচ্যতে শিষ্যো ধর্ম্মং প্রজামাচার্য্যেণ ষঠা পুন্ধি তীয়া-বত্তয়োঃ কর্মণোঃ প্রাপ্যোতি, যথা দোয়া ক্ষীয়স্ত গোঃ, দোহং ক্ষীয়স্ত পোঃ; দওনীয়া ইতি দও-দওনিপাতে চৌরাদিকঃ, স্বার্থে নিজন্তাং কর্মণ্যনীয়ঃ।
- (২৮) ণাত্তে। বনু ণাত্তে কর্মাবিক্তাকেহণি পুনঃ কর্মগ্রহণাং ণাত্তো-পাধিক্তকর্মৈবোজং ভবিষ্যতি, তং কিং কর্ত্তেতাবেন, মৈনং ইছ কর্ত্তাহণং জ্ঞাপরতি ণাত্তে কর্ত্কর্মেবোজং নাজং, জতএব বিকর্মকর্ম্মোজগুলকরেশ জনতি প্রযোজ্যত কর্মাতে নিজ্ঞানামপ্যেয়ামরং নিয়মঃ ইত্যুক্তমু। ক্ষুদ্রচ, বত্ত কর্তৃকর্ম নাত্তি তক্ত ওণজিরাব্যাপা্মণি কর্মোজং ভবতি। তথা-

কর্মথে ণিজস্বানামপোষামিয়ং ব্যবস্থা। যথা, বাহুতে ভারো আমং দেবদক্ষেন যজানতেন। প্রযোজাক্ত কর্মথে তদেবোক্তং ক্যাং। বক্ষ্যমাণসূত্রে
বাহুতে গোণীং বুষভো ভতোন, হার্যতে ভারে। ভূত্যং স্থামিনেত্যাদি ষষ্ঠী
পুনবি তীয়াবদপ্রণানে কর্ম্মণ্যপি ভবভি, বোঢ়া গ্রামক্ত ভারাণাং, নেতা
প্রামক্ত ভারক্ত। নৈয়ায়িক ক্য ষ্ঠীমপি প্রধানে কর্মণি বছস্তি।

বৈধবিষয়েহিশি কৃত্য প্রয়োগে কর্মকেনোচ্যতে; তেন দেব-দত্তন হং পূগং খাণ্যমানে। বাচ্যদে, ভক্তং খাদয়িতব্যাহ্দী-ত্যাদি।

২৯। প্রায়ো নিপাতেন। (২৯)

কর্ম নিপাতেন কচিছ্কুং ভ্ৰতি। ছরিরিত্যাহ, বিষ∙ রিকোহিশি সংবর্দ্ধি সংহাং ছেডুম্সাম্প্রেম্।

৩০। তিড়ান্তিনঃ প্রথমমধ্যমোত্তমাঃ। (৩০)

তিঙাং ত্রীণি ত্রীণি পলানিঃপ্রথমপুরুম-মধ্যমপুরুষ-🗪 উওস

চোকং, অভ্তে কর্ত্বর্গতে প্র্কেশ্ব তথোচ্যতে। যথাহমৌ নাবাতে ভারো আমং দাসেন সাধুনা ইতি। কিঞ্চ পাজে কর্ত্বর্গতেভ্যুতেহিপি সিদে যথ যদিত্যকং উদয়ন্ত প্রদেশপ্রকিমিতি। নমু পাজে কর্ত্বর্গতেভ্যুতিহিপি সজি লক্ষর্পভাব প্রযোজ্যং প্রাপ্যতে কিং চকারেপেড্যাহ চকারাদিড্যাদি, চকারেহয়মন্থকসমুচ্চয়ার্থঃ, তেন বর প্রযোজ্যক কর্মান্থঃ নাজি কচন কর্মানে নাজে কচন কর্মানে নাজেওং সম্চিনোতি, কর্মানেতি—কর্মাবিহিতপ্রতালালুরোধার্থঃ ভাদেশি বাদতেরশীতত্বাথ প্রযোজ্যক কর্মান্থ নাজীতি প্রতিযোগবিষ্যাল উক্তক, বর্মাণ ন প্রয়োগে পৌ নিষিদ্বস্থাপি কর্মান। গুরাকং গ্রান্থ বাচ্যমে ভূজ্জা যথা।

- (২৯) প্রায়ে। ইহ প্রায়ে লক্ষ্যানুরোধারিপাতস্থল্য বং জালিত্যাই কচিলিত, বিষর্কোহিপ সংবর্জ্য প্রথ ছেল ম্যাপ্রাংগিত কুমারে। অসমতে, অপিনকস্থলাত্তত্থ কর্মণ, ইতরেষাথ মাপ্রথমীলসম্বন্ধাৎ তথাহি সংবর্জ্য বিষর্কোহিপ প্রথ ছেল ম্যাপ্রভি, অবোধামিত্যুর্গং। এবং ক্রমান্থ্য নারদ ইত্যবোধি সংইতি মাঝং। মন্বিগর্হিতঃ প্রভাঃ স্মারোচ্ ম্যাপ্রভামিত্যাদয়ঃ। ইল্মের নিপাত সংগ্রেজ্বম্ন।
- (৩০) তিঙাং। তিঙামিতি বহুবচনং ব্যক্ত্যপেলং, থোহি, ছিত ইতি প্রতিলকারমন্ত্রীদশপ্রত্যয়াঃ তত্রাদৌ নব পরবৈশেদদশ্লকাং, শোহে নিয়ার নেপদসংক্রকাঃ। ত্রিশ ইতি লুপ্তপ্রধান্ত্রচন্তিং পদং, নিতি ত্রীনি তিলিঙ্ক

পুরুষসংজ্ঞকানি ভবস্তি। তিপ্, তস্, অস্তীতি প্রথম:, সিপ্
থস্, থ ইতি মধ্যম:, মিপ্, বস্, মুস্ ইত্যুত্ম:। আজ্নেপদেতে, আতে, অতে ইতি প্রথম:, সে, আথে, ধের ইতি মধ্যম:,
এ, বহে, মহে ইত্যুত্ম:। এবং লিড়াদে প্রতিপত্রাম্।

, ৩১। নাম্নি প্রথম্ট। (৩১)

নালি বাচ্যে প্রথমঃ পুরুষো ভবতি। স, পচতি তৌ পচতঃ, তে পচন্তি। স হয়া দৃশ্যতে, তৌ হয়া দৃশ্যতে, তে ৃহয়া দৃশ্যন্তে।

৩২। यूत्रामि मधामः। (৩২)

যুরাদ বাচ্যে মধ্যমঃ পুরুষো ভবতি। ত্বং পঠিদি, যুবাং পঠথঃ, যুনং পঠথ। ময়া ত্বং দৃশ্যাসে, যুবাং দৃশ্যোগে, যুনং দৃশ্যাধে; "গান্যানেহ্পি নিত্যদন্তমাৎ" পঠিদি, দৃশ্যাসে।

সংখ্যৈকার্থানি পারামিতি শস্, ওতঃ তেরু পরবৈষ্ণাদেশ্ তরাস্ত্রকাঃ আরুনে-পদেশু অরাস্ত্রিকাঃ, থথাক্রমং প্রথমনধ্যমোহমসংক্রকাঃ স্থারিত্যাহ তিঙাং ত্রীণি হীণি পদানীতি। পদানি বহুবচনানীত্যর্থঃ। তিপ্ ওস্ অন্থীত্যতঃ প্রক্রু পরবৈষ্ণদ ইত্যধিকতা সম্বন্ধীয়ং। নমু প্রথমমধ্যমোহনা ইতি নির্দিশ্য কথং প্রেষ ইত্যচাতে, সত্যং-এতে হি লোকে প্রেষত্বেন প্রতীতাঃ অতঃ প্ংলিকত্যা নির্দিষ্ঠাঃ তথা যুগপ্রচনে পরঃ প্রধাণামিতি কাতন্ত্রতং, যথা সংখ্যমহার্ক্তঃ ত্রম্ত্রিকাঃ প্রথমমধ্যমোত্র ইতি ন তু শক্রতং শক্ষাম্যাভাবাৎ।

- (৩১) নায়ি। স্বাদিপ্রকৃতিনাম ইতি বাচ্যে ইত্যয়মর্থঃ, যদি নামার্থোলকাববাচ্যস্তদা প্রথম প্রসং স্থাং। বক্ষাতি চ, লং কর্ভৃকর্ম ভাবেদিতি।
- (৩২) র্থাদি। সং রূপং শক্তাশকসংজ্ঞেতি ফ্রায়াৎ ইহ যুগ্রছ্নো-নার্থণিয়: থিত স্বপর এব ন সর্বনামকার্যাং, অত উক্তং যুদ্মদিনায়ীতি, স্বার্থা-ভিধায়কে যুদ্দি প্রযুদ্ধানানে স্বরূপে কর্তৃক্মীভিধায়কলকার্বাচ্যে সভি

ত্র। অক্ষয়ত্তম**্ব। (৩৩)**

অতাদি বাচ্যে উত্তমঃ পুরুষো ভবতি। অহং পচামি, আবাং পচাবঃ, বনং পচামঃ। জয়াহহং দৃশ্যে, আবাং দৃশ্যাবহে বয়ং দৃশ্যামহে; গম্যানেহিপ পচামি, দৃশ্যে।

ज ७८। পরিशाम भग्रायाती जू मधारमी मनखरबोर्डरमकक। (७८)

পরিহালেহবগতে মহাতেঃ প্রয়োগে অম্মান বাচ্যে সধ্যমঃ

মধ্যমঃ শুদিভাহে বাচ্য ইতি, তদন্তবিধিনা প্রমুবং পচ্সীত্যাদি।
অবং বং সশালতে, অনহমহং সপালতে ইতি সুন্ধদানোবিতি ইতি।
অবং কথং দুরাপচ্যতে ওদন ইত্যাদো মধ্যমোনজাং; এবং ময়া পচ্যতে ওদন
ইত্যাদাবপুদ্রমঃ আং। মৈবং সুন্ধদানোবিণ সন্ধানে ন কং, তথা হি ছাত্র
কর্মনি লকারঃ কুতঃ, কর্ম পুনর্নাম মাত্রং ন তু সুন্ধদর্শ ইতি। অব যত্র স্মানাপ্রয়োগন্তত্র কবং নধ্যমঃ ভাং। ইত্যাহ গম্যমানেহপিত্যর্মর্থঃ সুন্ধানোধভাপিত্যুদ্ধদর্শে তদর্থ মানস প্রত্যাহেপি মধ্যমঃ প্রস্কাতে, তথাং নিত্যসম্বদ্ধাৎ
স্ক্রদর্শে পিছিভাবের মধ্যমপ্রস্কাত। যথা নিত্যসম্বদ্ধাৎ অবিনাজ্ঞাবসন্ধাণান্ধিপ্যতে।

- (৩৩) অস্মৃত্যুদ্ধন:। ইহাপি স্বাণাভিধায়কসরপেইসংগ্রি প্রবৃদ্ধ্যমানে উত্তানিষ্কাতে। নকু, দ্বভাহক প্রান: দ ইত্যাদি প্রস্থান: ইত্যাদি প্রস্থান: ইত্যাদি প্রস্থান: ইত্যাদে তিরপুরুষকবিষরে পুরুষবোগপদ্যপ্রবৃদ্ধ্যসভান: কিং পুরুষ ন প্রবর্ত্তাং আহোস্থিং পর্যাদ্ধেশ বা প্রবর্ত্তাং কথং পরপুরুষপ্রবিভ্যাং সার্ক্ষরিশাক লক্ষণং বক্তবাং, মৈবং পুরুষপরয়ো: পরে। বিবির্বলবানিন্তি ভারাৎ পুরুষ-বিধারকলক্ষণস্ত পরহাৎ পরঃ পুরুষো ভবিষ্যভীতি।
- (৩৪) পরিহাসে। পরিহাসাবগতাবিতি, পরিহাসঃ নোৎ প্রাসভাষণং তম্ব অবগতো জ্ঞানে তমান্ গম্মমানে ইত্যর্থঃ। মস্ক্রমেগ ইত্যক্ত ভিলোপ-ছান্দসঃ

স্থাৎ, মন্মতেশ্চ তত্ত্ব বধ্যমে প্রাক্তে উক্তমৈকবচনং ভবতি। এহি মন্মে রণেন যাস্মিন্ যাতত্তে পিতা।

৩৫। সুপ্তিভাতিকমেক্দ্বিবৃহত্বেকবচনদ্বি-বচনবহুবচনমেকশো বিভক্তিশ্চ। (৩৫)

স্প্তিভাষ্ ত্রিভিজ্ঞিভিবিভিক্তানাং ত্রিকমেকৈকশ একবচন, দ্বিচন, বহুবচনসংজ্ঞকং বিভক্তিসংজ্ঞকঞ্চ এক, দ্বি, বহুম্বর্থেরু

হু শব্দো ভেদে তবেতাত বিবরণং মধ্যম ইতি, মণ্যোত্তমবোঃ প্রাপ্তবোর রুত্তমধ্যমে বিনীরেছে। মন্তবনেকতে একবচনঞ্চ। এহি ইতি তিওপ্ত প্রতিরূপকো নিপাতঃ পবিহাসল্যোতকঃ, মন্তসে রবেন যাতামীতার্থঃ। যাততে পিতেতি পরিহাসাভিব্যক্ষরে এবং কিং মন্তে বিহরিষ্যসে। এহি মন্তে, ওদনং ভোক্ষেস, ন ভোক্ষ্যে ভক্তং সোহতিথিঃ। পরিহাস ইতি কিং এহি মন্তে, ওদনং ভোক্ষ্যে, সুষ্ঠু মৃত্তমে, সাধুম্ভাগে মৃত্তবাগ্ ইতি কিং এহি মন্ত্য বাগের যাততে পিতেতি।

(৩৫) সুপি। তত্ত্বাপি ব্যক্ত্যপেক্ষং বছবচনং, অতএব বিসুণোতি, বিভিন্পিতিবি ভিন্নামিতি স্থপ একবিংশতিবচনানি। ব্রিকমিতি ত্রীণি ত্রীণি বচনানি প্রভ্যেক মেক দ্বি বছবচনসংজ্ঞাং স্থাৎ। ইত্যেকং স্থাং, বিছজিনসংজ্ঞককেতি দিতীয়ং, একাদিবর্থেশ্ ভবতীতি কৃতীয়ং, একৈকণ ইতি বীপ্সভাব্দেকশকাচ্ছদ দচিত্ত্তার্থস্থাপি প্রয়োগঃ। একৈকণো দেহীতি পুরুষোভ্যঃ। বহা অন্যাদৃশ্যে ইতি বাহল্যাং একমেতং স্থার্থ এব দ্বিকল্ডং, অতএব একং বছ্তীছিবজেতি পাণিনীবস্তাং, একং বীপ্সায়ামিতা এ একৈকশো বিনিদ্ধনীতি। বস্তমার্থাদিতি শসিতিক্রমণীবিবং, একৈকশ ইতি ভ্রাসিংহোহপি প্রায়ুদ্ধনা সহাভারতেহপি, একৈকশো বিনিদ্ধনি বিষয়াবিষয়াহিত। অর্থকতং ব্যাসংখ্যমিতি। অব্যক্তবদা বিনদ্ধনি বিষয়াবিষয়াহিতাইতি। অর্থকতং ব্যাসংখ্যমিতি। অব্যক্তবদা বিনদ্ধনি বিষয়াবিষয়াহিতাইতি। অর্থকতং ব্যাসংখ্যমিতি। অব্যক্তবদা বিনদ্ধনি বিষয়াবিষয়াহিতাইতি। অর্থকতং ব্যাসংখ্যমিতি। অব্যক্তবদানিকলানাম্যথসংজ্ঞাভ প্রভারয়াহ একং বজালি, ক্রিং কউরিচেতি কর্ত্তবি টনঃ সংজ্ঞান্ধ বির্ণোতি স্থ অ্যাদীতি। সংখ্যা অর্থোবিভ্নতাত্তেহনয়েতি বিভক্তিং, ক্রণে ভিন্ন প্রযোজনক্ত সম্বোধনৈক্রচনং ম্যুদ্ধিঃ অনা ব্রিভক্তার্থবং প্রাতিপদিকমিত্যাদেনি, অবৈথক্তনিন্দ্রেকা

ভদতি। একং বজীত্যেক বচনং ক্র ক্ষানি, তিপ্, নিপানি চ, এক স্মির্থে লাভি; দরোধি বচনং ও, তদানি, তে ভাতঃ; বহুষু বহুৰচনং জন্ অন্তীত্যানি, তে ভান্তি। এবং তং, তৌ, তানিত্যানি। "প্রকৃতিপ্রতায়োঁ প্রকৃত্যথবিশিন্তঃ

দ্যর্থবাচিত্রং প্রকৃতিসহকারিভয়া পৃথকৃত্বেন বেত্যানকমানাংশ্চতরয়য়াহ প্রকৃতিপ্রত্যয়াবিত্যাদি যথা নীলঘটাদো নীলক ঘটক ন পৃথক প্রতীয়তে তদ ছিহাপি ঘটু ইতি পদেন ঘটত্ৎ প্রতীয়তে ন পুনঃ পৃথক্ ঘটঃ, পৃথগেক ইতি কেবলাপ্রতিযোগিত্বাং। ইং কেটিং সার্থন্তব্যালক্ষ্যংখ্যাকর্দ্মাদ্যা-অ্কপ্রত্যায়ঃ প্রকৃত্যর্গ ইতি জন্নস্তি স্বার্থদ্রবাশিস্থামক ত্রিক ইতি কেহপি দার্গদ্রাম্মকো ধিক ইতি কেহপি। অত্র হি জাতিদ্রব্যগুণক্রিয়া-রূপশ্চভূর্ন্দি: সার্থঃ। উক্তঞ্চ, শক্তৈরেব প্রতীয়ত্তে জাতি দ্রব্য গুণক্রিয়া:। চাভুৰ্বিন্যাৰমীয়াত্ত শব্দ উক্তশভূবিধি ইতি। বধা গোঃ ডিখঃ শুক্ল: পাক देखानि। देशं बचानस्रवाष्टिनारकागणीया वावदावरवानागामिन ৰ্যুক্তে সংখ্যুগ্ৰায় জাতে সকেতো বিহিতঃ, তত্ত্ত সমানস্থিৎ সংখ-म्याउना व्यक्तिताक्षित्राटक यथा अमीरिया चेतानिक्यवस्थान श्रार्थानिय अका-শরতি, ডিখালে তু ডিখো ডিখপদবাচক ইতি বৈশিষ্টপ্রতীতৈয় শক্তিগ্রহ-কালীয় প্রত্যক্ষোপস্থিতমিতরব্যাবর্ত্তকং স্বরূপং সঙ্গেত্যতে। পটস্থ শুকু ইত্যাদে তু লব্ধসন্তাকস্ত বস্তুন ইতরব্যাবর্ত্তকতন্ন গুণ এব সক্ষেত্যতে দুলী বিষাণীত্যাকে সম্মন্ত প্রবৃত্তিনিমিত্তত্বাৎ গুণশক্ষ্ম । পাক: পচতীত্যালে ক্রিয়োপাধিকে শকে সিদ্ধসাধ্যতয়া তল্পৈবিধ্যং তথাহি সিদ্ধসম্প্রমণলিক। সংখ্যাদিযোগী ক্রিশ্নাশভয়া নির্দেশপূঞ্চ ইতরঃ সাধনাপেক: ! কুত্যপ-যে। প্রভারার্থকৃত্যপ্রোগেন পাকাদীনাৎ সাধ্যভাবগমঃ অভএব সাধনাপেক্ষা। পাকালে তু প্রত্যয়স্ত কুত্যনভিধারকত্বেন ন সাংনাপেকা, তেন কাঠৈঃ পাক ইতি ন স্থাং। ইতি পাৰ্থসাৱধিনিত্রাঃ। পাচকাদিযু শব্দেষু পটভীতি বিব-রণাৎ কৃতিরবগমাতে, কেবলং প্রত্যাংশস্ত্রোদ্ভূড ইতি লিজ্মংখ্যাদি-বোগং। এবং কর্ত্তব্য ইত্যাদে। কৃতিবিষয়তয়া ঘটাদিপ্রতীভেঃ। ভচ্তং, ক্রিরায়াঃ সাধ্যতাবদ্বা সিদ্ধতা চ প্রকীর্ত্তিতা। সিদ্ধতা ক্রব্যবিচ্ছস্টি ভবৈত্রবে-ष्ट्रिंड च.क. विधिमित्रिः। देयाः शक्षकशक्ता सार्या विस्मयनः, खवाः निर्मयाः,

প্রত্যয়ার্থং সহ জতঃ"—এক, নৌ, বছৰ ইতি প্রকৃত্যর্থঃ প্রত্যয়ার্থেনাস্দাত্তে ়া

৩৬। বিংশত্যাদেরেকত্বমনান্নত্তী। (৩৬)

বিংশত্যাদেরনভ্যাস্থতো সংখ্যায়াং সংখ্যেরে চ একবচন-মেব স্থাৎ। সংখ্যায়াং, বিংশতিঃ পুরুষাণাম্, শতং স্ত্রীণাম্; সংখ্যেযে—বিংশতিঃ পুরুষাঃ, শতং স্ক্রিয়ঃ। আরুত্রে তু—ছে

যদ্যবিশিষ্যতে লোকে তত্ত্বসূত্ৰ ব্যাহিষ্যতে ইতি স্থায়াৎ। লিক্ট স্ত্ৰীবাদিসংখ্যা একতাদিকর্মে হ্যক্ত সক্রপং তত্তকণ, স্বার্থে দ্রব্যক্ষ শিক্ষক সংখ্যাকর্মাদিরেব অমী পকৈব লিকার্থান্তবঃ কেবাকিদগ্রিমা ইতি। বিভক্তিস্ত দ্যোতিকা উপদৰ্গবং। অথেহ একং বক্তীত্যেকবচনমিত্যেকবচনাদিশকার্থমন্ত্রকানেন গ্রন্থকতা ত্রিকপক্ষোহপেশিত ইতি বক্ষিতঃ। অধ্বর্থতিরেকাভ্যাং স এব ভোষাল । ততু জং. মত্ৰ মোহৰেতি যংশব্দমৰ্থকত ভবেদসোঁ। অৰ্থব্যতিরে-কাড্যাং শক্তিস্ত বাবদীয়ত ইতি। তথাহি সংখ্যাকর্মাদধাে বিভক্তিভিরের প্রতীয়ত্তে ন পুনঃ প্রকৃত্যা। কিঞ্চ, অনু ক্র ইতি স্কুত্রবতা পঞ্চকপক্ষোহণেক্ষি-या वाका मर्सा मर्सा वियमचार. चाउ व चर्मा विश्व विकास विवास करा विव কার্থে সংজ্ঞামাত্রে ইতি বিরুণ্তা সন্তা প্রাতিপদিকার্থঃ ইতি অবৈতবাদিমত-মপাসুকুলয়িষ্যতে তথাফ কং ৈ: সম্বন্ধিভেদাৎ সত্তিব বিদ্যমানা গ্ৰাদিষু। জাতিরিভাচাতে ভক্তাং সর্বে শব্দাব্যবন্ধিতা ইত্যাদি। নমু প্রকৃতিপ্রত্য-शार्थत्यार्किवार्थाकियावकत्य देवनिष्ठेमुक्तः, जत्याः नामानार्थाकियावकत्य छ० कथर मानिजाद এका दशे वहत है कि अब এक दि वह नाटम क्यान र्थवाहि-ছাৎ তদর্থানাং স্বৌজসামতুবাদকত্বং কেবলাগ্রমোঞ্জিলং, অভএব, নাপদৃং শাস্ত্রে প্রয়ুত্তীত ইত্যকং, যথা করোত্যাদে। প্রকৃতেরকৃতিবাচিত্রেহণি আখ্যা-তমপি ক্তিবাচি গ্রুক্ম।

(৩%) বিংশত্যাদে:। ইহ কেচিং বিংশত্যাদে: সংখ্যোরবৃত্তিত্বে বহুত্ব প্রাণ্ডে) একত্বং বিধীয়তে, একত্ববৃত্তিত্বাদেব পুন: সংখ্যানবৃত্তিত্বে ইত্যাদ্র: তদসং। দিত্র্যাধিবদনেকবস্তবৃত্তিত্বাং শ্বজাবাদেশাং সংখ্যানসংখ্যেরবৃত্তি-ত্বেহপি বহুত্বপ্রাণ্ডেবকত্বং বিধীয়তে, ইত্যাহ সংখ্যায়াং সংখ্যের চেতি। বিংশতী নরাণাম্, তিজো বিংশতয়: স্ত্রীণাম্; সংখ্যে ত্রে—বে বিংশতী নরালাম্ তিজো বিংশতয়: ক্রিক্। অফাদশর্থান্তা চ সংখ্যা সংখ্যেরে বর্ততে, ন সংখ্যানে, যদাহ ভাষাকার:— "আদশকাঃ সংখ্যা সংখ্যেরে বর্ততে ততঃ পরা সংখ্যা সংখ্যানে সংখ্যেযেচেতি"। ব্যক্তিরেল্চ দৃশ্যতে—লক্ষাণাং পঞ্চ লেডে ব্রক্তিরিতি কালিদাস:।

৩৭। জাত্যথে বৈকমিন্ বহুবচন্মদংখ্যা-প্রয়োগে। (৩৭)

काठार्र्थ गरमा अकित्रकार्थ वह्नवहनः वा छार। त्रीवशः

(৩৭) জাত্যর্থে। জাতির্নামায়মেকোছর্থঃ, তশ্মিরর্থেছভিধেরে সতি একত্বে আপ্রেছসংখ্যৈকাধিকরণতে বহুত্বং বিধীয়তে, সম্পর্কীনামজাত্যর্থানামগ্রি

ষথা, ততোহনীতিং সহস্রাণি কিন্ধরাণাং সমাদিশদিতি ভট্টিঃ। আর্তিপ্রেন বিত্যাদিসংখ্যা লভ্যতে। তেনায়মর্থঃ সম্পূল্যতে। বদানী বিংশত্যাদয়ে বিত্রাদ্যর্থাঃ স্থাঃ, তদানীমেষামনেকত্ব্য়। তথামবোহপ্যাহ্ন সাধ্যার্থে বিবছতে তুল্ত ইতি। আর্ত্রে বিত্যতঃ পবং সংখ্যায়ামিতি বাচ্যম্। দশ্দভিসহস্রাণি রথানাঞ্চ মহাক্ষনাম্। চতুর্দশসহস্রাণি সারোহাণাঞ্চ বাজিনাম্। লক্ষে চ বে পদাতীনাং রাষবেন ধমুর্ত্তা। অনীর্থাইমে 'গাঁ দিবসম্ম পরিক্ষমিতি ভট্টিঃ। আদিশকাশ্রিংশদাদিপরার্জপর্যস্তম্য। অবৈধাং যথা সভাবতঃ সংব্যেষসংখ্যানর্ভিত্তং তৎ প্রকট্মরাহ অন্তাদশেত্যাদি তদেব ভাষ্যক্ষতেন অত্যুমাহ বলাহেত্যাদি আদশ্ভ্য ইত্যাদি, দশ্ভাতি গ্রান্থ একাদিসংখ্যা সংব্যেষে বর্ততে, ততঃ পরা দশভ্যঃ পরা উনবিংশহ্যাদ্যা ধর্ম্মধর্মিবার্তিত ইত্যর্থঃ। একাদীনামপ্যভ্যর্থিত্যিতি মধানশ্বাহ ব্যভিচার- কেতি ব্যভিচার: অকাদীনামপ্যভ্যর্থিত্যিতি মধানশ্বাহ ব্যভিচার- কিতি ব্যভিচার: ব্যক্তিয়েণ্ড তেক্সান্ত্রহণি ধর্মপরস্তং তবেহাপি ক্রন্যন্ত্রহাদ ক্রমন্তেরিক ক্রেন্ত্রিত কেন্দ্রার্থিত্যির ব্যক্রিক বিত্যার্থার ব্যক্তি কেন্দ্রার্থার ব্যক্তিয়েণ্ড ব্যক্তিয়ার ব্যক্তিয়েণ্ড বিত্তিয়ার ব্যক্তিয়েণ্ড ব্যক্তিয়েণ্ড ব্যক্তিয়ার ব্যক্তি ক্রম্বান্ত বিত্তা ব্যক্তিয়েণ্ড ব্যক্তিয়েণ্ড ব্যক্তিয়ার ব্যক্তিয়েণ্ড ব্যক্তিয়ার ব্যক্তিয়ার

শুরুঃ, গাব ইমে শুরুঃ, বীরিঃ শুশুরৈ হয়ং তীহয়োহমী সম্পন্ধঃ, অসংখ্যালেরাই ডি কিম্ একো ঝোঃ, একো যবঃ সম্পন্নঃ।

७৮। जन्मदमी बद्दा निर्देश (७৮)

অবিদ্যানবিশেষণাদক্ষদ একছে দ্বিছে বহুবচনং বা স্থাৎ।
আহং ত্রবীমি, আবাং ক্রবং, বয়ং ক্রমঃ। অবিশেষণাদিতি
কিমৃ ? কবিরহং, আবাং কবী। (বয়ং কবয়োমাভূৎ)।

তিরিশেষভাষা বহুবচনং ভাৎ, ইষ্টকৈকাধিকরণানামেকা বিভক্তিরিতি আতে-রেকডালেকবচনম্। ব্যক্তেবঁত্তাছত্বচনং মঞ্চমানা ইলম্ভে প্রত্যাচক্ষতে ঘলপি রাহিববাবিতি প্রত্যাল্ভতং তলপি তিলমাবাঃ, হংসচক্রবাকা ইতিবলিষ্টমিতি চ। জাতীতি কিং দেবলন্তো বিদ্বান্, অর্থ ইতি কিম্ ! বিশ্বন্ধ প্রকৃতিবিদঃ কাশ্রণপ্রকৃতিঃ, গোত্রক চরলৈঃ সহেতি ভাষাং ভবতায়ং জাতিশক্ষঃ, ন অনেদ জাতিকচাতে, কিং তহি প্রতিকৃতিঃ। এক্ষানিতি কিম্ ! সম্পন্নে বীহিবনে ইহু জাতেরেকরাং সংখ্যাবিশেষণ্ড বৈয়র্থং তৎসত্যে বহুত্পসক্ষাবপি তলপি জাতিব্যক্তিয়ারভেলপক্ষে ইল্মুক্তম্। উক্তং হি ভাষ্যে, তবৈর তিরোহিতভেলবাজ্নয়ো জাতিবিতি।

(৩৮) আয় । কচিদবিদ্যমাননৈসাগিকবিশেষণীদিতি পাঠঃ। তত্ত্র নৈসগিকি ইত্যাপপাঠঃ, ব্যারভোলভাবাং। চগকেন ইহ একমিনিতি সমুচ্চীয়তে
ইত্যাহ একও ইতি। নমু অশ্বছক আত্রবাচকঃ আলা পুনরেক এব তৎ
কথম আমাদো মরোরিত্যুক্ম ? সতাং, তৃকাহক ইত্যেকশেষপক্ষে নিয়ামাণোহয়মমাছকঃ উভয়ার্থমভিধতে, বাহাধ্যাত্মকভাবভেদাদিতাতে। ইহ
অর্থভাতিদেশাং তিওঁভেহপি বহুবচনম্। কথম এতে বয়মমী দারাঃ কলেমং
কুলভ্বণা। বয়ত বর্ণভামরক্ষণোচিতাঃ। বয়মপ্রগল্ভমনসঃ ইত্যাদিয়
স্বিশেষণাদশ্যদো বহুত্ম। সত্যুক্তম্, এতেম্বাদো বিশেষণহাও। বয়ত্র
ক্ষাং, অত বিশেষণ্পনেন সংখ্যাবিশেষণমেবেরাতে নাত্রং, তেন একোক্ষাং, ভাষাবাদ্ ইত্যাদে। ন ভাও। অভ্যেষাং বিশেষণ্ডে সালেবেছি।

७ । यूचरमा शांतरव । (७४)

यूत्रम अकटक विष्यु, त्योत्रत्य वह्यहमः वा चार । पर शक्तः, यूवाः शक्त, यूत्रर अत्रवः।

80। उ कक्षनी (थार्षण मार्टी दिए। (80)

কল্পনীভ্যাং প্রোষ্ঠপদাভ্যাঞ্চ নক্ষত্তে দিছে গম্যে বহুবচনং বা স্থাৎ। পূর্বে কল্পতা, পূর্বোঃ কল্পতঃ, পূর্বে প্রোষ্ঠপদে, পূর্বাঃ প্রোষ্ঠপদাঃ।

৪১। একাদিখাথে। (৪১)

বছনচনং বা স্থাহ। একো বদতি, একে বদন্তি। নঞ্জঃ সংখ্যাথে চ (৪২)। অনেকে বদন্তি।

⁽৩৯) বৃশ্বকো। গৌরবে গম্যে গুরুবিশেষণাদিতি যাবং। মৃশ্বদি গুরা-বেকেষামিতি জরাদিত্য:। কচিক্ষোবিষমাত্রেছপ্যতিধানার। বছব্চনং, যথা তত্র ভবস্তো বিদাং কুর্বান্ত, অপি সুখিনো যুগং জনকপাদাঃ জীবংগু তাত-পাদেদিত্যাদি। জত্র মাননীয়শরীবৈক্ষেশছপি পাদে গৌরবে মাননীয়-প্রাণিধর্মারোপাং জন্মং প্রয়োগঃ। কল্ডিং গৌবব ইতি যোগং বিভক্তে।

⁽৪॰) ভে। তরত্যাদের নৃ ইত্যক্ত বার্তিকং স্ত্রং, কলে: কয় চেতি তেন
তবর্গ পঞ্চমান্তেছরং ফর্জনীনস্কঃ, অতএব ফর্ডাং জাতঃ ফার্ডনোহর্জুন
ইতি ব্যুৎপাদ্দিয়তে। ফার্ডনন্ত ওঢ়াকেশে নদে চার্জুনভূকতে। তবা তপক্ত
মাসক্ত প্রিয়ার কান্তনীতি মেদিনীকারোহপ্যাহ, কভাবাদেবানরোদ্ধিকবদর্থাভিধারকত্বয়। প্রোষ্ঠপদা ইতি, প্রকৃষ্টাবোর্ডাবক্ত প্রোষ্ঠো পৌঃ তত্ত্বব
পাদাবক্তা ইতি প্রাচাদেশ নিপাভিন্নিতে। ভ ইতি কিন্ ং কল্ওক্তাং
ভাতে কল্ওক্তা কল্তকে। মত্কপ্রত্যা অসংখ্যাপ্রয়োগ ইহামুবর্জতে, তেন
বে কল্ওক্তা।

⁽৪৯) একাং। অম্বার্থবৃত্তিত্বে ভিত্তিকত্বোর্ক্বচনং বা স্থাৎ। একো-২ম্ম ইতার্থঃ।

⁽१२) ् संक्ष्य । देश मन् नकः एरन्द्रनदकाक्यनमन्त्रिक छात्राद अवभवाक

8२। मात्रादमान्छान्। (8७)

এভাে নিতাম বছবচনং স্থাৎ। দারাঃ, আপঃ, বরীঃ। জলৌকস্টুট্যাদি।

मरथार्थए नक्ष्म् प्रस्वाणि क्षरण शास्त वह व विशेष्ठ । यथा, करवण्ः शिक्ष्णार्थनः। ज्यानस्य हकाबाद्यो वादेवर्गण्य थ ७ नम्। ज्यानस्य ज्यानस्य ज्यानस्य वादेवर्गण्य थ ७ नम्। ज्यानस्य ज्यानस्य ज्यानस्य विज्ञानस्य व

(80) मात्रा। मात्रा चानित्रवद्यता वक्क न मात्राणिः, छम् अनवहर्द्धौरिः। ইহ মণ্ডুকপ্লুতি ভাষাৎ অসংখ্যাপ্রয়োগ ইত্যমুবর্ততে, তেনায়মর্থ: সম্পদ্যতে, भश्यावित्यववद्रशिक्तावात्मिकार वहक्र विशेष्ठरक, भःयावित्यववात्भका নান্তি। সংখ্যাপ্রয়োগে তু একো দার:। ইহাদিপদব্যবন্থিতং শ্রীপত্যক্তং প্রাহম্। পৃংসি অসবোহপি প্রাণা দারা বরজাত গৃহা ইত্যেকে পঠন্তি। শক্তৃ আমাধ্যায়াৎ শিরীবাঃ স্থাঃ। নিবৃতি কুরবো মৎসাঃ স্কাল বিদেহ মড পঞ্চালাঃ কালঞ্বাজমীতত্তিগর্ভবাহ্নীকবন্ধারঃ। চেদিরবভিক্লিকার্শীনর-প্রভূতরোচ্ডেছপি। শালনয়: পুরি বরণাক্তিয়ায়ুতে বারিণি তু পাবঃ, পুলে प्रमाना वा वाह जल्लोकमः मभारत्राः। जात्ना वज्रज्ञ प्रभाः मिक्छ। वर्षा यथा वानाः। मिश्चन् श्रिप्तः श्रामियाण्यानियणि जात्रत्वे शानवणः प्रतिक अकवठ-নাজ্জু। প্রাণো হুরাক্ততে বোলে কাব্যে জীবেছনিলে বলে।পুংলিকঃ প্রিতে ্ৰাচ্যলিত্বঃ পুংভূমি চাওৰু ইতি। ইহ পুংসিত্যভিধানাৎ গৃহমিত্যেকবচনমপি, साहः कृतिकः स्रशास ट्रेंटिंग्करम्भवाठिकार । छत्त्वसात्राः मरत्व ह अभि-कर्का कर्ष कर्ष है एगार्थम् । नक्ष अश्ववाहिषा वहनाः कृषिक है कि वेद्यम् । अद्योकम् रेजि, करलोकरमत्नव वका वृष्टिनिश्रविक वामवेवकारम्यः, कनः ₩८५ इच छोज्ञर् बारमस्। अवम्रेकः अवन्तिक अन्तिना विक्रािक ছুদ্তপক্ষে প্রশ্নকুতোক্তম্বগন্তব্যয়। (আপ: স্থানসো বর্ষা অপার: সিকতাঃ সমাঃ এড়াঃ ডিয়াং বহুতে স্মরেক্ষেহপি। কচিন্মতা ইভি কেটিই 🕡

৪৩। পুরার্থপুনর স্থানী ভে ষনে দিব-চন্ই বহুরে। (৪৪)

भूता अकः, म ह जनधंन्ह, भूतर्वान् । देवि जिल्ला मुकालू विकाल वहरू थाए विवहनः छार । उमित्नी भूतालूनर्वान्, जिक्राश्चर्नर्वान् । वहन्न है जि किस्? (मसामान हिनस्) जित्राश्चर्नर्वाः ।

৪৪। তলৈভিয়া । (৪৫)

তদিতি দ্বিচনং উভয়শব্দায়ান্তি। উভয়ে মৃনিঃ, উভয়ে দেবমকুষ্যাঃ।

8৫। नूर्शि यूक्टवर्निकमश्रदेश। (86)

সুপি--লুবর্থে, যুক্তবৎ--প্রকৃত্যর্থবৎ, লিঙ্গবচনে ভবতঃ।
বঙ্গানাং নিবাসো বঙ্গা জনপদঃ, ভেষাং নিবাস ইত্যুদ্ধ জনপদ-

⁽৪৪) প্যার্থ। অর্থাহনং পর্যায়ার্থং, তদেব বির্ণোতি, পুষ্য: একঃ, পুনর্বস্থা ইতি বন্ধে বহুওসিদ্ধার্থং বির্তম্। পুরার্থ ইতি কিম ! অধিনী পুনর্বস্বার্থ, বৃদ্ধানাং তে পুষাপুন-র্বস্বার্থ: ভ ইতি কিম, তিয়ো মানবকঃ, পুনর্বস্থ মানবকৌ, তে ইমে, ডিব্রা পুনর্বস্ব উমুধা অত্যেত্যত্ত বহুত্বাজ্ঞাপয়তি, বিধিনিবেধাতিরিকো বন্ধো বিভাষ্যা স্মাহারে ভবতীত্যাহ, সমাহারে ইতি।

⁽৪৫) তয়ে। নমৃ:কাজিণাহস্ততে কাষ্ট্রতি লায়াং নিমিঅত্ন কবং

হন্ত হাত্তনামুবর্জতে। মেবং, কাজিতেনামুবর্জমানত হিবচনতামুকরপার্বং বলদিতি প্রমুক্তং, তদ্ধিবচনমেবামুবর্জতে ইতি বোধরতি, উতার ইতি, উতারব্রবার্বস্ত উতারিতামিতারই, অন্তব্যস্থাতং লসিবিভাবিতসর্কনারাপি ভাষায়াং
নিজামিতি কাতরা:

⁽৪৬) বৃপি। বৃগ প কে ন বৃপ্তপ্রত্যায়ে বৃপ্তদর্থে উপলব্ধে সভি ইড্যাহ বৃষ্ণ ইতি, বৃক্তবৃদ্ধিত স্কঃ প্রকৃত্যর্থ: প্রতার্থিন সমন্ত্র, তানামিবমুক্তবৃৎ

বর্ণাণিভ্যো লুপ, প্রকার প্রথা, কুরবং,। ইরীতক্যাদির্
শিলং ন সংখ্যা। ইরীতকাঃ ফলানি। ধলজিকাদির সংখ্যা
ন লিক্ষ্। শলতিকত গিরেরদূরভবানি বলতিকং বনানি—
অদ্রভবশেততাপো জনশদবর্গাদিভ্যো লুপ্। সমাসে চোতরপদত্ত বহুবচনবিষয়ত মুক্তবং। মধুরপঞ্চালাঃ, উত্তরপদত্তেতি
কিম্ ? পঞ্চাল-মধুরে।

ইতি প্ৰীপদ্দনাভদতকৃতে স্থপদ্ধে ব্যাক্তরণ বিক্টবাঞ্চায়ত প্ৰথমঃ পাদঃ।

ेमर्थमार्ट्यविष्डः, यहापि भक्षरत्या निक्रमार्थन्यः, उथापि, सर्दगात्राः भकार्य ধর্মতাৎ প্রকৃত্যর্থবদিত্যকৃৎ, সতএব প্রাওদিষ্টমণি লিক্সং পশ্চাদুদাকতম। वक्रानामिछानि, सुरवार्डरियद्विषि विवामः, अधिसंत्रत पन्, अध्वर एकार निवाध देखांदर्ग एक निवाध देखारमन विदिष्कातम स्मानवामाणिएका লুবিভি বিবজিতম এবং পঞ্চালাদয়ঃ। হ্রীতক্যঃ কলানীতি হ্রীতক্যা বিকারঃ कनानीणार्थस्वत्रत्व ह, लार्पाविश्वतृत्कचाः देखि विश्विकानः, कत्न कल-পাকান্ত হরীতক্যাদিভ্যঃ ইতি লুপু। এবং চঞা প্রতিমন্ত্র্যা মঞা লুব্দেব-প্রাদেরিতি কম্ব লুপ্। মত্র খলতিকাদিয়ু সংখ্যা ন লিক্ষতিয়াকেঃ পরতঃ - ব্ৰানামিত্যাদিকং স্থাতুম্চিতং, বিপৰ্যাক্তক লেৰকপ্ৰমাদক্ষমের। ইহ বৰা तकानीमारः वक्षक विश्वास्त्रः वज्ञीककानीमार क्षीपविश्वास्त्रः शृक्षः कन-्रविश्वकृष्टः स्था नक्षार । उत्ताकाक्ष्मण्यः क्षतिकस्यार्गात् कवन् -্মরি ার্মা লোকাবগচ্ছেত্যক। পাবিনিরাচার্যান্ত্রবিদং প্রত্যাবিদেন। लुनीकि किर नवनः, एनः, नव्या स्वातुः। लिक् माटका देखि किः, विशेषाना-्ममृत्रज्ञत्वादाः नित्रीयाः, एक वनर भित्रीयवनर या त्रकाविषि शङ्र स छार । अवादक विवादकावक द्रशारको श्रामः। विरमवनामाकाकाटकः नकाबादम्हाः -दश्चरको बरवारे । अकार्किनिक किर भकाना कनगरः रनारमीकामः। सूचरा ्रमुनि अख्रित्यस्थायकाराः। छक्। यस्यत्या क्लीनीयाः, सर्वनीद्विधानुविधानि u) स्ताकविश्वकाम् । समाम रेणापि, रेशक स्वर्धमण्डातवः नित्रमावकः चाण्यव ক্ষাত্তর পরিশিষ্ট্রতা, বহুত্বক্সাদের সংগ্রৈকানিকরণত পুরে ভক্তাকপূস্প-শ্রমানতে ব্যক্তনভাব সাদিত্যকা, এবং ভাষ্যক্তালি বিশ্বাহ্বতা লাভিক্তি-

विजीशायाद्य विजीश्रेणान्ह ।

विचिक्तिश्वकत्रम्।

১। অধাতৃবিভক্তীর্থবঁৎ প্রাতিপদিকর্ম। (১)

ধাত্বিভক্তিবর্জনর্থবছকরপং (যৎ তৎ), প্রাতিপদিক-সংজ্ঞাং ভবতি । বিপ্রা, কর্ত্তা, কুণ্ডাং, দাকিঃ, রাজপুরুদঃ,

কেন ন তদন্ত বিণিরিষ্টঃ ইতি পরিভাষা। ন চেছাদৃতেতি পূর্ব্বপদত্তন সম্কার্থিতে যুক্তবন্তাবো ন কাদিত্যাহ পঞ্চালমধুরে ইতি, এবং পঞ্চালজান্তবেই, ষ্বাহিন্তেই, অঞ্চপতি ক্ষীভিরপ্যস্থধ্যেয়ম।

दैि द्रशक्त यक कारक भावति वत्र नाय भक्षरम्। विन् ।

(১) चताज् । ख्वावरता शाखता । विकलतः स्न छिएन । देर शाङ्क विकि कर्मा मार्था विकास स्वाप्त । कि विकास कि व

চ, বা, বৈ, উচৈচঃ। বদৃচ্ছালক কাৰ্যবাদ্ধি আঃ, ভবিত্যঃ, সর্থবদিতি কিমৃ ? বনমিতি প্রত্যক্ষমর্থবন্ধবিত —তেন 'ন'লোপো ন স্থাৎ। সম্দায়েনাদন্তমর্থবিদেব। অধাত্বিভক্তীতি
কিমৃ ? লঙ্ভ-অহন্—'ন'-লোপো ন স্থাৎ; কুতে, ত্রিপুণী;
ক্লীবে প্রাতিপদিকান্ত স্থা হাসো ন স্থাৎ।

মর্থ গৌরবাং। সংজ্ঞায়া বা। অধলাববার্থমিন প্রত্যার: কবং ন কৃত ইতি চেট্রে-বং, তদত্তোহার্থ শব্দোষাচকে রুঢ়ঃ। তথাচ বক্ষাতি, হার্থী প্রার্থক ইতি. किञ्चम्बद्रबन्, म श्रुनर्निका भक्तार्थः । मञ्चकवाषिनार मटक निकारवार्य, व्यत्य-ষাদ্ধ সংসর্গ এব। অর্থবাদতি, সামাজভানপুংসকং প্রযুক্তং ব্যাপ্তার্থম্। তেন মং কিঞ্চিদর্থবছকরপং তৎপ্রাতিপদিকমিতি দর্শয়নাহ অর্থবছকরপমিতি তেনামুকরণক্ত অরপমাত্রার্থবতোহপি প্রাতিপদিকতা সিদ্ধেতি, বধা পচতি মাহ চ, চ সমুচ্চয়ে। ইছখলু বিবদিষতাং ভ্রমপ্রমাদবিপ্রলিপ্সাকরণাপাটবাদি-দোষচ্তুপ্তররাহিত্যং প্রেকা ইতি নৈয়ায়িকাঃ। প্রেকাবতাং বৃদ্ধিবৈষম্য-হেতোবিগুষাং মতানি বিরুণোতি, অর্থবং প্রাতিপদিকং তচ্চ চতুর্ধা জাতি-জব্য গুণ ক্রিয়াল ক্ষণম। গৌরখো মনুষ্য: ভক্রো গুণ ইত্যাদৌ জাতি:, িখো দতীত্যাদৌ দ্রবাং, শুক্লং পটং মতিমানিত্যাদৌ খুণং, পচতি পাক हेलाएं किया। ममनायस अर्ग निर्मिस कालान किया। नार्था खत्र पूर उथाहि, भ्रश्तांगवित्मयः प्रमयात्रः। काण्डित्भक्त्या श्रविष्ठत् वित्मयभक्त-ৰাচ্যেতি নৈয়ারিকাঃ। আহশ্চ, শকৈরেভিঃ প্রতীয়ত্তে জাতি ব্রয়গুণক্রিয়াঃ চাতৃ स्तिशाष भीवार जु नक উक्त क किंव देखि। भी भार मकः भू नवार, का जित्वव भक्तार्थ देखि। क्वांडिक्वांडिमटडाविनाडावमचकार नाम् जानम् हेलानिवाव-हात्रमाद्रापः। यथा, त्रीः चक्रत्थन न त्रीः, नाम्यद्रीः। त्राच्याख्याख्य সম্বন্ধ রৌরিতি বাক্যপদীয়ে ভর্তৃহরি:। তথাপি ভক্লোহপি ন সভঃ एटक्रा नाना एटक्राः. एक्रयकाण्टियाशामाशात्रण्या थनितियमः एक देखि। एकः भेरे देजारमी एक्रवकाणिखनारमाः ममरवजममनायाम् रता एक्रवकः। ত্তবাহি, জাত্যাসসমবায়সম্বনো তথ্ পরিচ্ছিল্যতে। জাতিপরিচ্ছিদেন ওবেৰ 'সসমবারসম্বন্ধেন দ্রবামিতাতোজাতিঃ স্ববিষয়পরিচ্ছেদিকাভবজী-**एडकाणिविषत्रभतित्य्व्यम्बर्दा**गत्रणि। ध्वरः भ्रष्टे मश्त्रुकाकामारमी मर्ग्युक-

नवरयक्तमवादार्खरकः वृचिः क्यान्त्रेनीरमञ्ज्यानिवनामाः वानाग्रवदा-टक्रमार वानवृत्तककाकुम्मीविक्याक मामास्यम् नगाए म बवानिमिक थाका-ভিজ্ঞাপি। এবং প্রড়তপুল্পাকাদিবলি পাকাদিত্বং সামান্তমন্তি। মীমাংস-देकदरमी जू. खतारमत भनार्थ हेजाह, झाजानवृत्व खतामश्मितिवारभन-বাচ্যা অপি সন্নিধানবলেন তম্ভ ভেছকাঃ, ষ্থা ব্রেয়ং প্রাকা উদ্দেবদন্তম গৃহম্। তেনায়মর্থা, বত্র গোত্বা স গৌঃ যত্র ডিখত্বা স ডিখা, বত্র ভক্রত্বং म एकः, यत পाक्षं म भावः। छेनत्रविनानवर्ष्ण भनार्ययु मध्मर्गवनारम्य প্রত্যভিক্তা। অঞ্চ: পুনরাহ, উভয়মেব শব্দার্থ ইতি, কদাচিৎ জাতিঃ প্রদানং দব্যং গুণভূতম্। তব্যং বা প্রধানং, জাতিগুণভূতা ইতি। অভঃ প্ররক্তবা প্রতিপদ্যতে, স্বার্থন্দ্রবালক্ষণো ছিক ইতি, লিক্সংখ্যাদয়ন্ত বিভক্তিপ্রতি-পाष्णाः जम्बग्नियाः, তত্র স্বার্থো বিশেষণः, खवार বিশেষাৎ, विশেষবেশ্বনৰ भक्ता विभारत नित्रभारक। विभावनक स्त्रभक्तांक खनक्तिश्राक्रवानकनः, उत স্থান্থ ক্রমান্ত্র ক্রমান্ত্র ক্রমান্ত্র ক্রমান্তর ক্রম ত্ত্বা সহজো ধর্ম: যথা পটক তক্লরপম্। ক্রিয়াধাত্র্য, যথা পত্র্গতি-ख्वार खनाधिकत्रनर, यशा पटणा पणिन देखि। এटिणः शम् विटमयनकृटेज्टाइटज-ষেব বিশেষ্ড ভূতেষু প্রাতিপদিকস্ত প্রতি নিয়ম:। অকৈতবাদী পুনরাহ, সকৈব শব্দার্থ ইতি। উক্তক, সম্বন্ধিভেদাং সবৈব ভিদ্যমানা গবাদিষু। জ্ঞাতি-রিত্যচ্যতে তক্তাং সর্বের শব্দা ব্যবন্থিত। ইতি। তেন সবৈত্ব ধাত্র্য ইতি চ সর্বাশব্দেন প্রতিপাদ্যতে। প্রাপ্তক্রমবিশেষের ক্রিয়া সৈবাভিীয়তে। ক্রম-क्र अच्छ मः शाद खः मञ्जीमा कि कार्षा मार्थ । मञ्जूर खनार, मः शाद मुमार्थ । অতস্তা: প্রাতিপদিকার্থং ধাত্বর্থক প্রচক্ষাতে। সা নিত্যা সা মহানাত্মা णमारुकु जनामग्रः। नसू यान मत्जा छातः मत्ना, जना मनविशानात्नी शाह-পদিকসংজ্ঞারা অপ্রসক্ষঃ, তস্তাসন্থাৎ। দৃষ্ঠতে চ, এব বন্ধ্যা হড়ো বাতি ৰপুষ্পকৃতনেথরঃ। মুগত্ফান্তসিন্ধাতঃ শশশৃঙ্গামুদ্ধিরঃ। সত্যমত্তে সঞ্জাশক্ষ यम्जित्भमः ७० अत्राप्तरं, जक्ताकात्वर्भाखं, जञ्चाभाजिशीममानदारः। साम्बाद्या-হপ্যাহ, অভাবেহপ্যভিধেয়ো ভবভ্যেবেতি। অতঃ সা নিজ্যা, সদসন্দ্রণা, সৈব ल्बंबर विवर्षमाना महानिष्ठि वृश्वित्रर भगाउष, ज्ञामाज्यामनाच्नः देजवाचार. অক্সস্ত পরিণামিবাং। বৈশেষিকানাত্ত, ত্রব্যগুণকর্ম্মণাং সংপ্রভারতেভূবিলে-ষাধ্যা পরসন্তা নিত্যেতি। অন্তঃ পুনরিদমাহ, নেহ স্বার্থকরালকানো বিকঃ শব্দার্থ: কিন্ত, অববোধমাত্রং শব্দশ্রতঃ প্রাণিনাং জনমতি। বিশেষপ্রতিভাষত,

তত্ত্ব তত্ত্ব প্রয়োগাভ্যাসাথ্য উক্তক, অভ্যাসাথ প্রতিষ্ঠাহেতুঃস্কর্ম শকাঃ পরিঃ স্মৃতঃ। বালানাঞ্চ তিরশ্চাঞ্চ বথার্থপ্রতিপত্তিছিতি। সমু বিস্পৃষ্টার্থবং প্রতি-গাদকবৎ সম্পূর্ব ম্পষ্টার্বপ্রতিপাদকং স্থাৎ। কৃতঃ প্রাতিপদিকং দ স্থাৎ । উত্ত বাক্যস্তাপ্যথ্বস্থাৎ, অতএব ক্রন্তিভসমাসালেডভি স্ত্রে বাক্যব্যার্ভরে সমাস-भगर मृनिक्टिः वार्याकि । मजार, व्या**जिभिक् भृष्यावर्षाञ्चन्। चारि**वक्रा বেব প্রাতিপদিকত্বং, ন বাক্যস্ত, তথাসম্ভর্থ: প্রাতিপদিকশব্দ:, প্রতিপদমিতি বীপোরামবারীভাবঃ। ততো গৃহ্ণতি বিগুণাদেরিতি টিকণ। অতঃ পদৈক-বেশ সৈবেয়ং প্রাতিপদিক সংক্রা, ন সমর্থপদসমূহস্ত। কিঞ্চ, গাতৃবিভক্তী-जावः भरेषकरणामी निविदक्षी. उৎमाइहर्गाः मरक्काश्लामी भरेषकरणमञ्च । অক্টেডাই:, বাক্যন্ত পূর্ব্বপদাহিতাতিশরং ধ্রন্ত্যপদম্। পদং বিভক্তারং ততো বিভক্তিবৰ্জনেনৈৰ তম্বৰ্জনং সিদ্ধমিতি প্ৰাচ্যং, শব্দবাংপতিমুপহসন্নিৰো-ভাহরতি। কর্তেডাাভি, অব কথমিহ মতুপ্রসূক্তম্। সাবতং ধাত্বিভক্তার্থে আতিপদিকমিত্যক্তেহপি স্বেষ্টাপতিঃ স্থাৎ। মৈবং বাদীঃ, মত্প্রয়োগাদর্থ-বিশেষবদ্ধা গৃহতে ইতরানপেক্ষপ্রতীতিঃ শক্তিবিশেষঃ। **অধ প্রকৃত্যপে-**ক্ষালাং প্রত্যয়ানাং নেয়ং সংজ্ঞা, বিকরণাদয়ল্ফ নিরর্থকাএব, প্রকৃতিপ্রত্য-য়াভ্যাং অতিরিক্তার্থাপ্রত্যায়কত্বাৎ। তর্হি কথং বিভক্তিবর্জনমিতি চেৎ, বিভক্তি বৰ্জনন্ত তদন্তাৰ্থম। অৰ্থানৰ্থকানামপ্যব্যয়ানাং সাৰ্থকাব্যয়বদ্ব্যন্ত্ৰ-প্রণপরিপাঠ।দেব প্রাতিপদিকস ভেড্ডাহ, চ, বা, বৈ, উচ্চেরিভি। অধ জাতিওণ ক্রিয়াবিলক্ষণানাং ডিখাদীনাং কথমর্থবন্তুম্, ইত্যাহ, মদৃচ্ছাশক্ষা-শ্চেত্যাদি। অয়মর্থঃ, বকুমাত্রস্বেচ্ছা সাংকেতিভার্থপ্রত্যায়কো বদৃচ্ছাশব্দঃ, তম তথাক্তিপ্রত্যায়কতাহস্ত্যেব। অথাত্যস্তানর্থকানাং শাস্ত্রে প্রয়োগাসস্থাৎ সার্থকানামের ভবিব্যতি, কিমর্থবিদত্যনেনেত্যাহ, অর্থবিদিত্যক্ত প্রত্যেক্মর্থ-বতং নান্তি, তেনেতি অর্থবন্তাভাবাৎ প্রাতিপদিকসংজ্ঞাভাবেনেতার্থঃ। অর मार्थकमम्बादेवकारणार्था मार्थकः, ७९ कथः প্রত্যক্ষরমর্থবর ভাং। উক্তঞ্ जिलाः म जिल्लारेच इ जिलाः न हात्रात चलः। चर्तात्र तनमरेककरकरमा- ट्रिक्टिकाटकाखरवङ्गामिक-मिनिकि शतिरुक्काश्यार, मम्मादब्रनाम्खन्ध-वरण्टविष् । यथावस्विम्हकः अमूनाम्निक्विनीम्नीष्ठ वार्त्तिक्विव्यटक अमू-नात्र छ व ब्याजिशनिक मर्का खरवर, टेनकरनम्म, छर किवर्षवम् अदर्गन, সত্যঃ সহং রাজনিত্যনর্থকামুকরণভাপি ভবেৎ, তল্লিবেধার্থং তেনাপদভানু-

বিভক্তি প্ৰকাৰ্য

২। সুবাদ্যাঃ প্রত্যয়াঃ পরে। (২)

স্থা, সনাদি, লড়াদি, বিকরণ, রং, তদ্বিতাঃ প্রত্যান সংজ্ঞকাঃ, প্রকৃতেঃ পরে ভবন্তীতি পরিটাষিতাঃ । কথং বহু-তৃণস্থ স্থানে বহুকী পুকে তু ইতি বিশেষবর্চনাং ।

করণস্থ প্রয়োগোষ্পি সাধীয়ান গরিত্যয়মাহেতিবদিতি ধ্যেয়্ম। অহনিতি, নবিহ বিভক্তিবৰ্জ্জনে নৈব প্ৰাতিপদিকসংজ্ঞা ন ভবিষ্যতি, কিং গাড়বৰ্জ্জনেন। নৈবং, হত্তিরয়ং বিভক্তিপ্রকৃতিন তু বিভক্তান্তঃ, বিভক্তেলু প্রত্তাৎ, লুপ্তান্তান্ত বিভক্তেরবয়বত্বং নাস্তি, সমূহস্ত বিশিষ্টার্থৎ সময়তীত্যুক্তং, প্রাগ্নুপামানা তু বিভক্তি: প্রকৃতাতিশ্যমারোপ্য নিবর্ত্ততে। স্বতএব ন সমুদ্ধাবিতি বচনং বিধা-স্ততি, কথং বুত্রহা, ব্রহ্মহেত্যাদৌ নলোপঃ, ধাতুত্বাৎ প্রাতিপদিকত্বাভাবাৎ। নৈবং. গৌণোছত্র ক্রিয়ার্থ: আধ্যাতত্বাভাবাং । উক্তঞ্চ ভাষ্যকৃতা, আখ্যাতং ক্রিয়া প্রধানমিতি, আতোগাতোরিতি জ্ঞাপকাদা। নমু চ প্রাতিপদিকাদর্থ-মাত্রসংখাগনয়োঃ প্রথমেত্যাদিভিগোগে র্ফাদিভ্য এব সাদুয়োভবিষ্যন্তি, ন গাতুভো। নানার্থকেন্ডা এক হাদ্যভাবাৎ, নাপি প্রেন্ডা একড়াদেরুক্তত্বাং। বিবিস্তেে সাদিপ্রকৃতেরিত্যুকেহিপ অভীষ্টসিদ্ধি কিমনেনেতি, নৈবং, বাক্যার্পবৈষ্ণক জাভিব্য ক্রয়ে বাক্যাদিপ্রথমৈকবচনং স্থাৎ, ন চ বাচ্য,, বাক্যা-র্থ কত্বাবগতিবকিটাদেব। উক্তার্থসংখ্যাভ্যোহপি বচনানি দুশুস্তে, ব্রাহ্মণঃ ত্রিচতুরাঃ সপ্তর্যরা, ততশ্চ পচত্যাদেরগি স্থাদয়ঃ স্থাঃ। অপিচ উজে-হপি সংখ্যানে ভবত্যৌংসগিকমেকবচনং, পচতি রূপং, পচন্তিরূপং, ইতিবৎ স্থবস্তাদিপি স্থাদয়ঃ স্থাঃ। অক্সচ্চ লুনীহি লুনীহি ইত্যাদে সংখ্যা তিরোহিতেতি তদভিব্যক্তরেহস্তরক্ষাঃ ক্ষাদরো ভবিভূমই স্তাতি। অব্যয়েভাঃ সাচুৎপত্তার্থ-মাত্রিভিন্নবাক্যভাপকে নিপাভাদিবন্নিরর্থকাদপি পদাদপি বাক্যাদপি বাধ-কান্তর্ভাবে ধাতোরপি সাদরঃ প্রসজ্জেরনিতি।

(২) স্বাদ্যা। পর ইতি প্রথমাবত্বচনান্তং পদং, স্বিতি প্রত্যাহারাং।
স্বত্যোহ্বর্বো যক্ত স স্বাদিঃ, তে স্বাদ্যাঃ প্রত্যরমংক্রকা
ইত্যেকং স্ত্রম্। পরে ভবজীত্যপরং, পরশক্ত সাপেক্ষাং, ক্ষাদিত্যপেক্ষায়াং প্রকৃতেরিত্যুক্তম্। প্রত্যরাং প্রথমং ক্রিয়ত ইতি প্রকৃতিসংক্ষা ক্লা

७। প্রাতি। किर्कार। (७) 'विश्वकारतारत्रम्।

(৪) হা, ও, জন। অম্, ওট্, শন্। টা, জাাম্, ভিন্। ঙে. ভাাম্, ভাস। ও ন, ভাাম্, ভাস্। ঙদ্, ওদ্, আম্। ঙি, ওদ্, হুপ্॥ এতে স্থাদয়ঃ প্রত্যাঃ, প্রাতিপদিকাৎ পরে ভবস্তি। দেবঃ, দেবো. দেবাঃ দেবমিত্যাদি।

প্রতীয়তে যেনার্গঃ স প্রত্যয় ইতি পরেণ রাচ্যা সাধিতঃ। পরিভাষিতেতি, প্রত্যয় হি প্রকৃত্রেরুৎপদ্যমানা মাতৃর্বৎসবং কদাচিদগ্রতঃ, পৃষ্ঠতঃ পার্য তোরা, স্থারিতি পর ইতি নিয়ম্যতে। পরিভাষেত্রং শিশ্ববতী, সা পুনরেকদেশগৃহীতসম্বদ্ধা সকলং শাস্মভিজ্ঞলয়তীতে। শিশ্বং প্নর্স্তাঃ প্রত্যয়ত্বমের, যাত্বেকদেশন্থা প্রতিযোগম্পতিষ্ঠতে সা বিধ্যক্ষশেষভূতাৎ ভল্লকণবিষয়ত্বাভিদ্যদশেষভূতাপি। নমু কিমর্থমিদং, প্রাতিপদিকাদিতি স্ত্রে পঞ্চমান্তর স্থাসম্বনাং দিয়ক্ষণা পঞ্চমী, ততঃ পরশ্বাদ্যাহারো ভবিষ্যতি নৈতদন্তি পূর্বেশন্ধায়াহারক্ষাপি সন্তবাৎ। অব পঞ্চমাং তত উত্তর ইতি পরিভাষয়া পর এব ভবিষ্যতিং যক্র বিশেষস্তত্ত্ব প্রাণাদিশন্ধঃ সাক্ষাদের প্রস্তুঃ। যথা সর্বন্নামাব্যয়তিঙামক্ প্রাকৃটেরিতি। সত্যং তত্র বিদ্যমানস্থ পরস্থ কিঞ্চিবিধীয়তে তত্র পঞ্চমাং তত উত্তর ইতি পরিলানাং প্রত্যানাং পরতং বিধীয়তে ইতি। নমু পঞ্চমাং তত উত্তরে ইতি বিধানাদের বাধকমন্তরেণ পরদিগ্ভাগলক্ষণের পঞ্চমী ভবিষ্যুতীতি চেৎ, প্রতিপত্তিগোরবিনরাসার্থমের।

(৩) প্রাতি। প্রাতিপদিকাদিতি পঞ্চম্যন্তম্যুক্তম্। (৪) স্থ-ও-জন্ ইত্যাদি স্থবিতাত্তং লুপ্তপ্রথমাবহুবচনাত্তং পদম্, ইহ সোক্ষকারন্তদেতদোরিত্যত্ত বিশেষণার্থ: ওট্ ইত্যত্ত টকার: স্ট্রত্যাহারার্থ:, টা ইত্যত্ত টকার:, টানাইত্যত্ত বিশেষণার্থ: ওকারন্ত আনদ্যাইত্যত্ত বিশেষণার্থ:। ওসেরিকারন্ত, ওসিভ্যো: মাৎ ম্মিনাবিত্যত্ত, পকারন্ত স্থবিতি প্রত্যাহারার্থ:, মৃথ্ জমিতি প্রথমা, ইত্যাদিবোগানাম্ক্রিয়াম্বাহিত ক্রচিমাপ্রিত্য ব্যবহারা: প্রবর্ত্ত ইতি ব্যেমন্। ভিন্নবিক্যারাং সামাত্রবিধিরমং, তেন দেব ইত্যা-ক্রাণাইরতি।

৫। অর্থমাত্র সমোধনরোঃ প্রথমা। (৫)

অর্থাতে— অব্যতিরিক্ত প্রাতিপদিকার্থে— সতামাতে, সম্বোদিন চ প্রথমা বিভক্তির্জবতি। বিপ্রঃ, বিপ্রেরী, বিপ্রাঃ। লিঙ্গ, পরিমাণ, লেংখ্যাশ্চ প্রাতিপদিকার্থা এব। ত্রী, পুমান্, নপুংসকম্। প্রয়েন পরিমিতো ত্রীহিঃ, প্রস্থঃ, খারী, আচকঃ।

(e) वर्ष। প্রাতিপদিকাদিত্যনেন বিহিতানাং প্রথমাদীনা কেবলমমী-ভিরর্থ: কথ্যতে, অর্থমাত্র ইতি অভিধাপ্রতীত্যা পদার্থেহির্থমাত্রপদেনাব-ধার্ঘাতে ইতি ব্যঞ্জয়ন্ত্রাই অব্যতিরিক্তপ্রাতিপদিকার্থ ইতি, বিশেষেণাতিরিকো ব্যতিরিক্তঃ, পদান্তরশভ্যঃ সমন্ধাদ্যর্থঃ, ন ব্যতিরিক্তোহব্যতিরিক্তস্তশ্মিন বাচ্যে ইত্যর্থ:, অম্মব্যতিরেকাভ্যাৎ প্রাতিপদিকেভ্যস্তমাত্রস্থ প্রতীতে:। উক্তঞ্ন, ব্ৰু বোহৰেতি বং শক্ষমৰ্থস্কস্থ ভবেদসো। অবয়ব্যভিরেকাভগাঁৎ শক্তিস্তত্তাবসীয়তে ইতি। তদেব ভাষ্যকারমতেন ক্রবন্নাহ সন্তামাত্র ইতি। সতা তু প্রাঙ্নিরূপিতৈব। অব গৌর্বাহীকঃ সিংহো মানবকঃ, স্থাণুর্বা, भूक़रवा वा. (शीविव शवयः, धवण्ठ, धिववण्ठ, भनाभग्ठ, नौनम्रभावः कष्ठेर শ্রিত ইত্যাদৌ লাক্ষণিকসংশরোপমানসমূচ্চয়বিশেবণার্থাস্তাবিধারাতিধেয়া:। তৎকথমেড্যঃ সভূতা প্রথমা ? সত্যং, প্রাণেব সঙ্কেতিতমর্থমাদায় প্রথমা জাতা, অনন্তরং পদান্তরসম্বন্ধাদর্থান্তরং প্রাতৃত্তবন্ন তরিবর্ত্তিয়তুং প্রভবতি অ-স্তরঙ্গতারদর্থস্য। এবং কুত্তদ্ধিতয়োরপি প্রকৃত্যর্গসূক্তঃ প্রত্যয়ার্থ এবাষয়ী भारत्का शार्त्रा हेलाएमी वित्मवन्ति मिक्के अवार्त्या हमा । जेकक जायाकुणा, অন্বয়ীপ্রাতিপদিকার্থ ইতি। তথাচোক্তং, কেবলেন পদেনার্থো বাবানেবা-ভিনীয়তে। পদক ভাৰতোহৰ্ণক ভদাহৰভিধাৰকম্। সম্বন্ধে সতি যক্ষ্পাদা-বিক্যমূপজায়তে। বাক্যার্থমের তং প্রাছরনেকপদসংশ্রযমিতি। নমু স্ত্রীপুমা-হ্যিক:। একাদিবু সংখ্যাধিক্যং, তৎক্রমেতেভ্যঃ প্রথমা স্থাদিত্যাহ লিম্ন-পরিমাণসংখ্যাত প্রাতিপদিকার্থা এবেতি। তথাহি, বিকপক্ষেত্র্থপর্মো लियः, नामा मरशुरकार्थछः नगरवरण धर्ष देखि। मरगुक्रममवात्रनर्यकी-হপচার:। ত্রিকপক্ষে জাতিজবালিজমণি প্রকৃতিবাচ্যমেব, অন্মধা বিভীয়া 🦫 একো, বেই, বহবঃ সিমোধনমভিমুনীকরণম্। ততাবিকো চ, হে বিপ্রা, হে বিপ্রাঃ। অচ্চেরেন ভূপচারাৎ—হে ঘট। যদাহুঃ, সর্কে ভাবাশ্চে তনা ইতি সাক্ষাদ্র্শনস্থানায়ত্বাৎ। যথা, নঞাঃ কোশন্তি, জীড়ন্তি রপাঃ, কীচকাঃ স্বনন্তীত্যাদিঃ।

শ্ভ। সম্বোধনৈকবচনুই স্মৃদ্ভিট। (৬)

অক্সৈকবচনং সন্ধুদ্ধিরুচ্যতে। হে ভানো ইতি।

क्षिष्ट विद्याप्तिश्रत्या न छाटक्व, एव छात्रायवृशात्रनार । किश्र, विद्यनायलक ल्यमार्थात्र जाविष्ठभूरस्र भूषर, जीभूषर रेखातनी वहनमञ्भभन्न सार। নপুংসকাদ্যভিধায়িতয়া হি প্রকৃতীনাং নপুংসকাদিবাপদেশো নাক্তথা। ष्मिण ह भूरक्षादनी अथमार्थ अिष्डायमारन वनारमत्रभूगभजारणहरमी जी-পুংসাবভিদ্যাং, শিল্প প্রতি প্রকৃতীনামৌদাসীক্তাৎ, তন্মাদসাধারণীভি-রেব প্রকৃতিভির্যথায়পমভিষেরানি শিক্ষানি। ন বাড় চেৎ সাধারণেন প্রভ্য-য়েন, অতএব, প্রকৃতীনাং লিম্বানুশাসনশাস্ত্রাণি উপপদ্যম্বে। অভ্যণেতি প্রান্থা ত্রীহিরিত্যাদের গোর্বাহিকবং পদাধ্যাবোপো, গোররমিতি বদ্য্যা-রোপো বা। যথা, রোহিণ্যাদিযুক্ত: কালো রোহিণ্যাদিশকবাচ্যঃ, তথা প্রস্থাদীনাং পরিমেয়োহর্থোহনপিক এব সংখ্যায়াঃ প্রাতিপদিকার্থত্বে প্রথমা প্রস্ক্তত্যের তথাল্লিসপরিমাণবচনমাত্রে প্রথমেতি ন বক্তব্যা, ইখং লক্ষণস্থ . প্রথমং প্রতীকং ব্যাখ্যায় দিতীয়ং প্রতীকং ব্যাখ্যাভূম্পক্রমতে, সম্বোধন-মিতি। অক্তার্থ:, বোধ্যক্ত বোধার্থমভিম্ধীকরণং সম্বোধনম্। তত্তাধিক্যে স্থগতপর্যাতিরেকে ষঠী ক্যাদিতি প্রথমারতঃ। অব বোধন্চেতনাৰতঃ সন্ত-(१९. न उम्ब्रुक्त, उर कथर पहाणि: সংবোধ্যতে हैजाह चाटकतन जुन-চারাদিতি, ইহ তাংস্থাৎ ষটছো ঘট উচাতে ইতার্থঃ। দিগম্বরমতং দৃষ্টান্ত-রতি, বলাত্রিতি দিগম্বরমতামুধারিন ইতার্থঃ। সর্ব্বে ভাবাশ্ভেনা ইতি ভাষাঃ প্লার্থাঃ, চেতনাশ্চেতনাবস্তঃ অপরোক্ষজ্ঞানাশ্রম্ভাৎ মঞ্চাঃ ক্রোখ-ন্তীতিবং। এবং স্থালী পচতীত্যাদাবপি।

্ (৬) সংখ্যা। ইহ সংখ্যাধনার্থে বিহিতা প্রথমের সম্বোধনমিত্যাহ অক্তৈক বচনুমিতি, অন্তব্য কথং সংখ্যাধনস্থৈকবচনমিতি। ভানো ইতি ভামুশস্বাতৃৎ-

१। षश्का (१)

পতোহনভিহিত ইত্যধিকার:। ৮। কর্মণি দিতীয়া। (৮)

শসুক্তে কর্মনি বিভীয়া বিভক্তিবভিনি ছেন ভৌ, তান্। শসুক্ত ইতি কিম্। রুক্ষো দৃশ্যতাম্।

৯। কালাধ্বভ্যমিতিসংযোগে। (৯)

ক্রিয়াগুণকে হৈঃ সাকল্যেন সম্বন্ধ: অত্যন্তসংযোগ:। তত্ত্র কালাধ্বত্যাং দিতীয়া স্থাৎ। ক্লাসমণীতে বেদং, বর্ষং কল্যাণী সাসং গুড়ধানাঃ। অধ্বনঃ—ক্লোশমধীতে বেদং, ঘোলনং কৃটিলা নদী, ক্রোশং পর্ববিতঃ। অক্রিসংযোগ ইতি কিম্?

- (৭) অনুজে। অনুজ ইতানুকৃতং, অনুভিহিতে ইতি তিঙ্কুতদ্ধিত সমাসৈদ্বিতি শেষঃ।
- (৮) কর্মণি। তং তৌ, তান্ পশ্যেতি শেষঃ, নমু উজেমু কর্মাদিয়ু তিঙাদিভিক্ত গর্ডাং দিতীয়াদয়ো ন ভবিষ্যন্তি, কিম্মুক্ত ইতানেন। ন চ বজবাং,
 তিঙাদিভিঃ সামালাভিধায়িভির্বিশেষাণামনভিধানমিতি চেং। মতাপামুক্ত
 ইতি বিশেষণে বিশেষাগ্রেরা দিতীয়াদিরিহ লাদেব।, অব সামালাভিধানে
 বিশেষাগ্রেরাহসৌ মাভূদিতি বচনুমিতি চেন্ন, কৃতপুর্ববিদ্যাত্তর সামাল্যকর্মণি বিহিতেন ক্রেন্ন বিভীয়া নোক্রার্থা বিশেষাগ্রম্বাং। তন্মাং প্রপঞ্চার্থনিবেদং বচনং, তর্হি বৃক্ষোদৃশ্যতামিত্যক্র কবং বিশেষাগ্রিতা দিতীয়া ন ক্লাৎ,
 সত্যং অনভিধানাং।
- (৯) কালা। ইছ সকর্মকেষু দ্বিতীয়ার্থসকর্মকৈষু কর্মবিধিবিঘাতার্থং, ক্রিয়াত্যস্থসংযোগেহপি বিধিরয়ং ইতি দর্শয়নাছ ক্রিয়েতি। অতি সংযোগো-হতিব্যাপ্তিঃ। ভাষ্যে তৃ, খণদ্রব্যাত্যস্তম্যংবাংগে দ্বিতীয়ার্থমিদমিত্যক্রমৃ। ক্রিয়াওণজবৈয়ং ক্রমেণোদাহরতি, মাসমধীতে বেদমিত্যাদি। স্বর্ধ নীসমাত্তে

পন্নস্ত সোঃ সন্ধুদ্ধিসংজ্ঞায়ং সত্যাং হ্রন্ত্ম গুণ ইতি গুণঃ, এঙ্হুস্বাং সন্ধু-দেরিতি সোলোপঃ, ডভ ইতি শব্দে পরে বাসস্থনাবিতাবিতি সন্ধিনিষেধঃ।

মাসত্ম দিরধীতে, জোশতৈ কানেশৈ 'পর্কতঃ। যত্তাস্তত্তি-ক্রিয়ান্তরং নাস্তি তদর্থং বচুমুম্মিদং, 'কুলিসং বসতীভ্যাদি প্রাকৃতনেব কর্ম।

১০। ভৃতীয়াইপবর্গে। (১০)

ফলপ্রাপ্তি কাশবিসমাপ্তিরপবর্গঃ। তত্ত কালাধবভাই মতিসংযোগে তৃতীয়া স্থাৎ। মাসেনাধীতো গ্রন্থং, ক্রোশেনাধীতো বেদঃ। অপবর্গ ইতি কিম্? মাসমধীতোহকুবাকো ন চানেন গৃহীত ইতি।

১১। मश्रमीं शक्षमा विख्यते। (১১)

ব্যবধানরভিভ্যাং কুলোধ্বভ্যামেতে স্থাতাম্। অদ্য ভূক্ত্যা, দ্বাহে ভোক্তা, দ্বাহান্তোক্তা, ইহস্থোহয়ং ধরী ক্রোশে লক্ষ্যং বিধ্যতি, ক্রোশাল্লকং বিধ্যতি বা।

ইতিবং, মাসমনীতে বেদমিত্যাদাবপি কর্মসংজ্ঞাষাং সত্যাং, কর্ম্মণি বিতীয়েতি বিতীয়া সিদ্ধা, কিমনেনেত্যাহ যত্রাস্তর্ভূত ইত্যাদি। অব কালাধ্বভ্যাং বিতীয়া বিহিতা, দেশভাবাভ্যাং কবং ভবেদিতি ভটম্বচনমাশক্ষ্যাহ, কলিকং বসতীত্যাদি প্রাকৃত্যেব। প্রকত্যে হভাবে ভবং প্রাকৃতং, ক্রিয়াব্যাপ্যত্বেনিবাস্তর্ভূত ক্রিয়ান্তর্থাং কর্মেতি।

⁽১০) তৃতীয়া। অপবর্গো যকিঃ, ক্রিষাসমাপ্তির্বেতি সন্দিহানং প্রতি-ক্রবরাহ কলেত্যাদি। কলপ্রাপ্তে সত্যামিত্যর্থঃ, মাসেন্াধীতোগ্রন্থঃ মুখেন স্বর্চু বা গৃহীত ইত্যর্থঃ, করণাধ্যবসাবে সিদ্ধাত্যেব। ধরা, মাসেনাবীতম্পি নাধিগতং ছলঃ, তরাপ্যপ্রর্থেহতান্তসংযোগে দ্বিতীয়া মাভূদিত্যাবস্তঃ।

^{্(}১১) সপ্রমী। অন্তবশব্দেহত্ত ব্যবধানার্থঃ ইত্যাহ, ব্যবধানর্থিত্যামিতি কালস্ত ব্যবধানর্থিত্য তৃ তল্লকণয়া। ঘাহ ইতি ঘনোরহ্রোঃ সমাহারঃ
ঘ্রহং, রাজাহঃ সবিভাষ্ট ইতি টঃ, অহোহত্দিনপ্ণ্যাদিতি পৃংস্কৃষ্। ঘাহং
খ্যবধার ভূঙ্তে ইত্যর্থঃ। ন মাসে প্রতিপত্তাসে মাঞ্চেমর্তাসি মৈবিলি
ইতি ভিটিঃ। অন্তব ইতি কিম্ অন্যভ্কৃষ্ ছাহং ভোকা।

• ১২। পর্য ভ্রমরীভিত্স। (১২)

প্রয়াদিভিত্সকৈর্জাদিতীয়া স্থাৎ। পরিতো আদং, উভয়তো আমং, দক্তিতা আমং, অভিত্তো আময়।

১৩। সময়ানিক্ষাইস্তরাইস্তরেণ হা ধিগ-ধোইধোইধ্যধ্যপর্যুপরিভিন্ট। (১৩)

এভিবু ক্রাদ্বি গাঁলা তাং। সময়া আমেং, নিক্ষা আমং, অন্তরা ত্বাঞ্চ মাঞ্চ কমগুলুঃ—তব মম মধ্যে ইত্যর্থঃ,—অন্ত-রেণু পুরুষকারং কিঞ্জিল লভাতে, হা দেবদতঃ, ধিক্ ত্বাং, অধ্যাহধা আমং, অধ্যাধি আমং, উপযুগির আমং। ন

⁽১২) পর্। পরিশ্চ উভরশ্চ সর্বশ্চ অভিশ্চ পর্যু ভরসবেজিয়:, তেবাং তদ্, পর্যুভরসবাভিতদ্, দক্ষণরত্বাং তদ্ প্রত্যেকং সম্বধ্যতে ইত্যাহ, পর্য্যাদিভিন্ত সবৈতি। সর্বোভয়াভ্যাং সর্বানামভ্যাং তদ্, পরিত ইতি সর্বতো২থে, অভিত ইত্যভয়তোহর্থে, আভিম্ব্যার্থেচ। অভিত পরিতোহব্যয়নিত্যনেন নিপাতিতো। তত্রান্তরে অভিত ইত্যাভিম্ব্যাদে। সমন্ততক্ষ পরিতঃ
সর্বতো বিদ্বিতাপি। সমীপোভয়তঃ শীল্রসাকল্যাভিম্বেহভিত ইত্যমরঃ।
পর্যাদিভিরিতি কিং মধ্যভোগ্রামশ্ব। (অয়য় ষষ্ঠ্যপবাদার্থে বিধিঃ।)

⁽১৩) সময়। ধিগব্যয়সাহচর্ঘ্যাৎ সময়ালয়েয়হয়য় তব গৃহুতে। সময়ানিক্ষাহত্তরায়য়েয় মধ্যবচনাং, সময়ানিক্ষাশকৌ স্মীপণচনাবিতি ছুণালয়ঃ। সময়াহত্তিকমধ্যয়েঃ। সময়ানিক্ষাহিক্র। লকাং নিক্ষা হনিষ্যতীতি মাঝঃ। অধারুহেহত্তরা অভরেণ চ মধ্যে স্থারিত্যয়য়ঃ। অভরেণ
লকোবিনার্থঃ। পৃথপ্রিনাশ্বরেণ ঝতে হিক্তু নানা চ বর্জনে। হা বিষাদ ভপর্তিয়্। ধিত্ নির্ভিৎ সননিন্মরোরিতি চ। অধোহধ ইত্যাদি, ইহ উপর্যয়য় ধনঃ সমীপ্যে ইত্যনেন ছিক্লজানামেতেরামাশ্রমণাৎ। নবানধোহধো রহতঃ
পরেয়ধরানিতি মাঝঃ। অভিশ্রেন ছিক্লজানাং ধোনে ন ছাং। যথা, সর্কেরাং
মদ্যময়ানাম্পয়্রপরিবর্ততে ইতি বৈদ্যক্ষ্। অল্লাভা শরণং য়াভং য়াভ্যধোহধক্ষ ছুণতেরিতি ভারতমু। ক্রমদীব্যক্ত, অমুপয়্রপর্বারিরোপে তুঃ উপয়্রি-

স্বৃদ্ধে — হা রাম, শিক্ দেকিও ন চকারাৎ, যাবচৈত বং শীতং, বৃভূক্ষিতং ন প্রতিভাতি কিঞ্ছিৎ, অভি রামং রাধিকা-মধিবচন জাতম্।

১৪। উপেন হীনে। (১৪)

হীনে দ্যোত্যে উপৈন যুক্তাদ্ দ্বিতীয়া ভবতি। উপ রামং ধ্রিনঃ, বামাদ্ধীনা ইত্যুধঃ।

পৰি বৃদ্ধীনাং চৰক্তীশ্বৰৰুদ্দৰ ইত্যপি বুদ্ধিনাম্পৰীত্যৰ্থ, ইতি ব্যাখ্যাতবান। কথং, শ থিভিহ। হতাভুয়ো জন্যানামুদে জবৈরিতি ভটিঃ। উপপদ্বিভক্তেঃ কাবকবিভিন্দির্বলী ধুসীতি সীমাং। ইহ সর্ব্বা উপপদ্বিভক্তমঃ ষ্ট্রীপ্রা-দিকা ইত্যভিপ্রাযেণ প্রত্যুদাহনম্মাহ ন সন্ত্রাবিতি । এবং, হা তাতেতি ক্রন্দিত-মাকণ্য বিষয়:। হা পিতঃ কাহসি হে হক। দিগ লাভবিত্যাদ্য:। ইহ চকাবোহমু জসম্চ্চবার্থ: ইতি দর্শ-রাহ, চকাবাদিত্যাদি। বুভুক্ষিতং ন প্রতি-ভাতি কিঞিং। এবং যোক্ষপাদম্মিং খ্যাবঃ প্রভ্যভারদ্তাং বর্ম। অত্র চৈষ সকলেপিভাতি মাং প্রত্যশেষগুণবন্ধব ইতি। নচ বক্তবাং প্রতিযোগে किछीया ভবিষ্যতি, তক लक्ष्यामार्थनिय इश्रः. তত विशेषार्थमार्भन्त्रः. অপি ক্রমেরি মুনিভি:। প্রাক্তং প্রতিভোহর্থ: প্রাক্তং প্রতিভাব ইত্যাদে কপ্রত্যযক্ত যেপৌ ন স্থাতাং, সম্বন্ধবিকাষাং ষষ্ঠী চ, তেন ষষ্ঠ্যথে বা প্রতিভ, ইতি পুত্রং ন বক্তব্যম্। এবং যাবতা তি ভার্থোনেতি চ। অব্ধার্থেন যাবতা शक्योयनीष्ट्रं । श्रामान्यावनदः (वाज वावर्टककाकियर महर हे जि वाव-চৈত্রমিতি। এবং ধাবং সংসারমণ্ডলমবাপু হি সাধুবাদমিতি মাখ:। ষষ্ঠ্য-थां जावार, गावरण छ कि धां भाखावना भा विवर्षा छ है जि । अवः न मुक्त ভৰতাত্যগ্ৰহাত্ৰ মাধ্য মাধ্যক ইতি ভট্টি:। বছন্মিপুমভ্যজ্জলমিতি জন্ম-দেব:। রাধিকামধিবচনজাতমিত্যপি। স্ত্রীসংস্থানং চাপারস্তীর্থমারাল্লিক-প্যাকে জ্যোতিরেনাং তিরোহভূদিতি শাকুত্তনে কালিদাস:।

(১০) উপেন। উপাদীনাং বেষর্থের্য কর্মপ্ররচনীয়সংজ্ঞাং মূনিঃ প্রণিনায়, ডেমর্থের্ বিভীয়া বিধিৎস্থরাহ, হীনে স্থোত্যে ইতি, অয়মর্থঃ, হীনশকোন্যানার্থঃ, স চ উৎক্ষাপেক্ষঃ, তেন হীনোংক্ষাসময়ে গম্যে উপেন সম্বয়াৎ বিভীয়া ভবতি, তথাপি হীনে স্থোত্যে ইতি ব্যক্তঃ, তবিশেষণীভিপ্রায়েশ

'১৫। লকণ্বীপেশংভূতাখ্যানভাগে প্রতি-পরিভাগমুনী সহহেতুহীনে চ। (১৫)

চিত্নাদো গম্যে প্রত্যাদিযুক্তাদ্বিতীয়া স্থাৎ। বৃক্ষং প্রতি
বিদ্যোততে বিহাৎ, বৃক্ষং পরি, বৃক্ষমনু । যুগপদ্যাপ্ত বিচ্ছা
বীপা, গৃহং গৃহং প্রতি গীতং, গৃহং গৃহং পরি, গৃহং গৃহমনু ।
কিঞ্চিংপ্রকারাপত্তিবিখংস্তাখ্যানং, মাতরং প্রতি সাধুং,
মাতরং পরি, মাতরমনু । ভাগে, শমাং প্রতি স্থাৎ, যমাং পরি,
যন্মাসনু । অনুনা, সহ হেতু হানে চ, গলামনু বসিতা পুনী,

তথাহি, হীনতং বিশেষণং, উৎকৃষ্টত্বং বিশেষ্যং, বিশেষণবিশেষ্যসম্বন্ধনার কুপশব্দো দ্যোত্যতি সভাবাৎ অত উংকৃষ্টেইনবাস্থ যোগঃ বিশেষ্ট্রেন প্রাধাণ ক্রাং। তহু ক্রং, ক্রিয়াযা দ্যোতকা নেমে সক্ষম্প চ বাচকাঃ। নাপি ক্রিয়াস্তবা-প্রেকাঃ সম্বন্ধস্থ চ ভেদকাঃ ইতি। যথা, উপশ্বং ন তে বৃত্তম।

(১৫) লক্ষণ। ইহ লক্ষণং জ্ঞাপকো হেতুং, চিক্তমিহাভিপ্ৰেতং ইত্যাহ চিহ্নাদাবিতি, এতেন লক্ষণাদ্যোহথাং প্ৰত্যাদীনাং ন দ্যোত্যাং অপি তৃ বিষ ভ্তাং, দ্যোত্যং প্নং সম্বন্ধবিশেষ ই গ্ৰুক্তমেব, বৃক্ষং প্ৰতি বিদ্যোত্ত বিহুাদিতি বৃক্ষো লক্ষণং বিদ্যোত্মানা বিহ্যালক্ষ্যা, বৃক্ষং প্ৰাণ্য বিদ্যোত্ত ইতি প্ৰাণিক্ৰিষাজনিতো লক্ষ্যলক্ষ্ণসম্বন্ধং প্ৰতিনা দ্যোত্যতে। যুগপদ্ব্যাপ্ত,মিচ্ছা বীপ্সেতি, ক্ৰিষাগুণদ্ৰব্যাং যুগপৎ প্ৰযোক্ত ব্যাপ্ত,মিচ্ছাত্যথং। দিবচনক তদ্যোত্তনং তদম্বৰেণ তহুপালম্ভাং। কিঞ্চিং প্ৰকাৰাপত্তিবিধং-ভ্তাখ্যানম্ সাধ্যত্বাং প্ৰাণ্যক্ষং যোগ্যং, ইখংভৃতঃ কিঞ্চিৎপ্ৰকাৰমাপৰ উচ্যতে, তম্বাধানম্ ইবংভ্তাখ্যানম্, আব্বীয়ন্ত ভ্পাথাবিত্যন্ত ক্পং তেনাযমৰ্থং, কম্বচিং প্ৰকাৰম্পত্তিবিখণভাব ইতি। ভাগ ইতি সীক্ৰিয়ন্মানেহংশং ভাগ, ইহাভিজনক্ৰিয়াজনিতঃ সীকাৰ্যজনিতো বা সন্ধামিলক্ষণং সম্বন্ধং প্ৰতিপবিভ্যাং দ্যোত্যতে, অম্বদৰ্থো ভাগসামীপ্ৰতিপৰিভ্যাং মৃক্তং, যমাং প্ৰতি স্থাৎ তদ্বেহীতি দেবং। দ্বিতীয়ং লক্ষণং ব্যাখ্যাভূম্পক্ষমতে, অম্বন্ধ প্ৰমুণ্য ক্ৰিয়ে ক্ষণং বিতীয়া বিধীয়ত ইত্যৰ্থ:। গঙ্গামুণ্ট্ৰণাত্তম্ব, স্বান্ধ ক্ৰিয় সহাদিৰ্ বিষুণ্য ক্ষ্যুক্তা দিতীয়া বিধীয়ত ইত্যৰ্থ:। গঙ্গামুণ্ট্ৰিপ্তাহ্ম সহাদিৰ্ বিষুণ্য ক্ষ্যুক্তা দিতীয়া বিধীয়ত ইত্যৰ্থ:। গঙ্গামুণ্ট্ৰ

তরা সহ বন্ধেত্যর্থ:, বিঞ্বন্ধনে, নিষ্ঠা। বস্তি ভাগুরিরক্ষোপ্যান্ত্রিকারে বাপ্যাক্রপদর্গরোঃ। তিতিবতং সবহিত্যপর্ধনিপিহিতাদিকং। হেতে।—কভামতু শোকঃ। হীনে, অমুক্রনং বোদ্ধারঃ, ততো হীনা ইত্যর্থঃ।

১৬। অভিনা ত্রিয় লক্ষণাদিয়। (১৬)

লক্ষণনীপ্দেখংভূতাখ্যানে, অভিনাযুক্তাদ্বিতীয়া স্থাৎ। বৃক্ষমভি বিদ্যোততে বিদ্যাৎ, বৃক্ষং বৃক্ষমভি বিশ্বতি, মাতর-মভি সাধুঃ। ত্রিছিতি কিমৃ ? ভাগে, বন্মমাভিষ্যাৎ—অদ্বিতীযার্থভাৎ যত্ত্ব ।

১৭। কর্করণয়ে স্তীয়া। (১৭)

অনুক্তে কর্ত্তরি করণে চত্তীয়া স্থাৎ। বিপ্রেণ পচ্যতে কাঠেষ্ঠঃ।

১৮। সহার্থেনীপ্রধানী। (১৮)

বিদিতা পুরীতি, অধবাত্যাং পরস্থ বিঞ্ বন্ধন ইত্যন্থ রূপং, অত্র সহ ভাবলক্ষণঃ সম্বন্ধাহনুনা দ্যোত্যতে ইত্যাহ তয়েতি। অথ কথমিছ অবাদিলোপঃ ইত্যাহ বন্ধীত্যাদি, পুষোদরাদিত্বাদবাপ্যোরতো লোপো এইবঃ। অতো ধাঞ্ নফোরপেরুপসর্গন্ধাদেঃ অবস্য তংসে ইত্যপি ন বন্ধবাং, প্রকৃতাব্যাপ্তেঃ, বিতত্য শাস্ত কবচং পিনফ ইতি। কন্যামন্তশোক ইতি, ইহ হেত্হেত্মভাবলক্ষণসম্বন্ধাহনুশক্ষণ্যাত্যঃ, হেত্বর্তৃতীয়াবাদিকা বিতীয়েয়েম্। অবর্জনং যোদ্ধার ইতি। হীন ইতি বিষয়সপ্তমী, হীনে বিষয়েহম্শক্ষেন বৃক্তা বিতীয়েতি। বতো হীনো নিকৃষ্টো, ভবতি উৎকৃষ্টো হীনার্থনিধ্যা বেদিতব্য ইতি ভূগং। এবং মিত্রলাভমন্থলাভসম্পদ ইতি ভারবিঃ।

- (১৬) অভিনা। অধিতীয়ার্থহাদিতি, অভেরিতি শেষ:। মৃত্ঞেতি, প্রান্তক্পসর্বাজ্যামিতি শেষ:।
 - (১৭) কর্জ। পচ্যত ইতি, ভাবকর্মণোরিতি তঙ্ ।
- (১৬) সহা। অপ্রধান ইতি, অপ্রধানেহর্থে বর্ত্তমানাৎ সহার্থেন যুক্তাৎ প্রাতিপদিকাৎ তৃতীয়া বিধীয়তে, সহার্থাঃ, সহ সাকং, সাদ্ধঃ, সমং, সজূঃ,

দপ্রমানহার্থেন যুক্তাভ্তীয়া স্থাৎ. পুরোণ সহাগতঃ পিতা, পুত্রেণ দার্জং বন্ধুরং, পুত্রেণ দমং গোমান্। পিতুরতা ক্রিয়া-छन-प्रवा-मचक्कीरमार्थः महार्थरभागाएड, भूक्य প्रजीममान-ভাদপ্রাধান্তম্। গ্রেটিই, রন্ধো মুনা। ১৯। যেনাজী বিক্তঃ। (১৯)

रयर्ताञ मचिक्षमचन्द्रामन्नमानिनारञ् रयनारन्नानी বিক্রতো লক্ষ্যতে ততন্ত্রীয়া স্থাৎ। অক্ষা কাণঃ, পৃষ্ঠেন কুজাঃ, পাদেন বঞ্জঃ।

অমাচ। যক্ত হি ক্রিয়াগুণ্দব্যেঃ সম্বন্ধঃ সাক্ষাচ্ছকেন প্রতিপদ্যতে তং-প্রধানম। যক্ত তুন তথা ওদপ্রধানং, এতচ্চুক্রশক্তিশ্বভাবাং, অভএব সাক্ষাত্তরোঃ ক্রিবাসক্ষণভাগে পিতা সহাগত ইতি প্রাত্তম । ইতব্বা পিতা পুত্রে সহাণতাবিতি, সংখতে চরতাং বর্ত্মমিতিবং স্থাং ইত্যাহ পিতৃবি-ত্যাদি। অত্যোক্তোদাহবণে। পিতৃবত্ত ক্রিষাগুণদ্রব্যসম্বন্ধী ক্রেমাদিভিবিশ্য-মানলক্ষণসম্বন্ধ কঃ, পুত্ৰভাৰ্যন্ত সহাৰ্থেনোচাতে সম্বাতে, তেন ক্ৰিয়া ত্ত্বপুত্র প্রতীষ্মান্তাৎ ত্ত্বাপ্রাধান্তমিতি ভাব:। যত্র স্থাধ্যাগ্র সাক্ষারান্তি তত্তাপি সহার্থক গ্রামানতাৎ স্তীয়া স্থাদিতি দর্শবতি, গ্রেয় চেতি, সুপ সুপেতি নির্দেশাং। অপ্রধান ইতি কিং, শিষ্যেণ স: ।পাধ্যায়স্ত গোঁঃ ইত্যত্ত ষষ্ঠীং, বাধিত্বা উপাধ্যায়াৎ তৃতীয়া স্থাৎ। যদ্যপাপাগোন্স গাং প্রতি বিশেষণত্বেনারাধান্তং তথাপি শিষ্যং প্রতি প্রাধান্তমেশত। কথম ष्यर्थनार्थः, धरानार्थीजारमे ज्ञीमा १ करनजाजाताः। ष्राज्यः मिकार्थ-यथीर्थिशृक्ताभवाववकलद्दनिभूनियलभ्रक्तारेथीर्वाठ वक्तनाः, न एठौग्राममाम-विरक्षः मामर्थार । ब्रमानिकासः (हर्ल्) उजीरमञाण ।

(১৯) (यना। नयू कथमरत्रन विकृत्जनाञ्चीविकृत्ज। ज्वारु । जेहारु, व्यवस्थां म प्रमादयस्थात्वालारः । यथा, व्याणाध्यानः नशरम् हेल्याः स्थाना কবণে হেতো বা তৃতীয়া। অয়ুমুর্থঃ, সন্ধান্ধলাঃ সন্ধান্ধনমালিপ খীতি স্থানাং অম্মান্দিপ্যতে প্রত্যাষ্যতে অবিনাভাবসম্বর্গং। নমু কাণাদ্যো হি । নমুড-विषयां ए कथमका । व्यक्तारक, वावरक्त गांकावार। मण्डाः, मामारकाश-

২০। চিহ্পপ্রকৃত্যাদিভাঃ। (২০)

ছिकाशीर अकृत्रारम्क पृष्ठीया खार्। जिन करान कम-ওলুনা ছাত্ত্ৰমন্তাকীৎ ? শিখ্যা পরিবাদক্ষপশাৎ ? প্রকৃ-ত্যাদেঃ—প্রকৃত্যাহ্ভিরপঃ, মুথেন ্ত্রিলোচনঃ, গোত্রেণ গার্গ্য:, প্রায়েণ যাজ্ঞিকঃ, সমেন ধাবতি, বিষমেণ ধাবতি, দ্বিদ্রোণেন ধান্তং বিক্রীণীতে, পঞ্চকেন পশুং বিক্রীণীতে।

ক্রমে বিশেষঃ প্রযুক্ত্যতে ৷ তথাছি, অক্লেড্রুতে হি সল্পেহঃ কিমনেন বিব-ক্ষিত্মিতি কাণ ইত্যুচাতে। যথা দ্বৌ ঘটাবানয় ইতি। কাণেহক্ষেতি প্রয়োগো ছষ্ট এব ঘটো দাবিতিরং।

(२•) हिन्छ । अब वाटकी वहबहनम् । हिन्दुः विटभवनः, दवन किकिए अकात-মাপনং প্রতীয়তে। অপি ভবান কমগুলুনা ছাত্রমন্ত্রাফীদিতি, অপি প্রশ্নে, ছাত্রখেন বিশিষ্টস্ত কমণ্ডলুবিশেষণম্। প্রক্ত্যাভিরূপ ইত্যাদি, ইং ক্রিয়া-মন্তবেণ সম্বন্ধমাত্রং প্রতীয়তে, ক্রিয়ানিমিত্তত্ত্বেদ কর্ত্তকরণে সন্তবতঃ, তত্থা-তৃতীয়া বিধীয়তে, ধুদা তু ক্রিয়াপদং কুত ইত্যাদি দুশ্বতে তদা যথাসং তৃতীয়া স্থাৎ। ইথঞ্চ প্রকৃত্যাদেরিতি যোগঃ প্রপঞ্চার্থঃ, অভিরূপঃ সুন্দরঃ। মুখেন ত্রিলোচন ইতি, প্রক্ত্যাদেরাকৃতিগণপ্রধানার্থমিদমুদাহতং, বস্ততন্ত প্রকৃতেরম্বথা ভাবো বিকৃতিং, সাতু হানিবছাধিক্যেহপান্তি, তেন যেনাঙ্গী-ৰিকৃত ইত্যনেনৈৰ ভৃতীয়া। তথাচ মাখ, স বাল আসীমপুষা চতুভু জো মুৰেন পূৰ্বেন্দ্ৰনিভান্তিলোচন ইতি। অতএব ত্রিমুনিসংগ্রহকারেণ যেনাকীবিকার ইতি সৃত্তে মুখেন ত্রিলোচন ই স্থাদাহতম্। প্রায়েণ বাজ্ঞিক ইতি বাজ্ঞিক-नक्ष्वज्ञानु श्रीयम्कार्थः, ममिष्यमायाः कर्षात्व श्रीति पृष्ठीयाविधीयातः। वित्यात्वन ईजात्वी कर्याद्यन विजीवाधात्थी वृजीवा विशीवत्छ। छवाहि, को को खार्ली कृषा शास्त्र की**ना**डीकार्थः। अवर शक्त्रविमानम्हणांड भक्तकः मृश्यः, भश्यात्राः मृश्कामः पृष्ठाशात्रात्विष्ठि कः भक्षकः भक्षकः কৃত্ব। পশুন ক্রীণাতীত্যর্থ:। অত তুর্গেন, ছিলোণেন পঞ্চকোহর্থ:। হির্নাং णकरकार्स्यः विरामानेशकः जान्याहिनहर्मक्रवनुष्यः विविक्षाः, अवः माहत्य-বাবং ক্রীণাতি, স্বরূপেণ প্রিয়ন্ত্রত, সভাবেন সন্ত্রলঃ, জাত্যাত্রাহ্রণঃ, তত্তাগারং ধরপতিগৃহাত করেণামাদীরম। নাম। মতীক্ষণ্ডরিছেন ছাত্ত ইত্যাদয়ো তেরোঃ।

বিভক্তিপ্ৰক্ষণ নৃ

· २১। मर**क**ः कर्मानियो (२১)

সংজ্ঞানাক্তঃ কর্মণি তৃতীয়া বা স্থাৎ। পিত্রা সংজ্ঞানীতে, পিতরং বা ; সংজ্ঞাইতি কিম্ ? স্বরেণ পূত্রং জালাতি। ২২। হেতে ৪। (২২)

ফলসাধনয়োগ্যপদার্থো হেতুস্তস্মাৎ তৃতীয়া স্থাৎ। ধনেন কুলং, বিদ্যায়া যশঃ, অন্নেন বস্তিঃ। হেত্বধীনঃ কর্তা, কর্ত্র-ধীনং করণমিতি হেতুকরণয়োতেনঃ।

ধীনং করণমিতি হেতুকরণয়োর্ভেদ:। ২৩। ঋণাদকর্ত্ত পঞ্চমী। (২৩)

ঋণাদ্ধেতোঃ পঞ্মী স্থাৎ। শতাদ্ধঃ, অকর্ত্তিকিম্? শতেন প্রয়োজকেন বন্ধিতঃ।

- (২১) সংজ্ঞ। সম্পূর্কো জ্ঞঃ সংজ্ঞঃ শাকণার্থিবাদিতাৎ সমাসঃ। সংজ্ঞানীত ইতি সংপ্রতিভাগেশ্বরণ ইতি তঙ্, সংপূর্কোছিপি জ্ঞানার্থঃ। বদা তু শ্বরণার্থন্তদা রূপত্রয়ং, শ্বরণার্থেশদয়ং কর্মণীতি বধী, তদভাবপক্ষেহনেন তৃতীয়া চ, পক্ষে বিতীয়া চ, যথা প্রিয়্ল প্রিয়েণ প্রিয়্মনাতি, কৃতি তু ভাষ্য-বার্ত্তিকয়োরপি ষঠ্যেবেষ্যতে, বিপ্রতিষেধে পরং কার্যমিতি ভায়াৎ, স্থম্ম সংজ্ঞাতা, প্রিয়্ল সংজ্ঞাতা।
- (২২) হেতো। অথেই হেতৃশব্দ কিং কারণং ক্রতে, কার্য্যসাধনযোগ্যং বা, ইত্যাহ ফলেত্যাদি, ফলং সাধ্যং, সাধনং নিপান্তিঃ, ফলস্থ সাধনং ফল সাধনং, বোগমন্ত্তীতি যোগ্যঃ, অব্যভিচারিত্বেন নির্ণাতক্ত্ম যোগ্যো বঃ পদার্থঃ স তথা অনিপ্পাদররপি ফলং বোগ্যতামাত্রেণ হেতুর্ভবতীতি প্রবিষ্কিত্বং যোগ্য ইত্যক্তম্। বথা, বিদ্যয়া যালঃ, অব্যব্যতিরেকব্যভিচারেণ জ্ঞাপকশ্চ হেতুর্যথা, ধ্মত্বেনাগ্রিমান্ পর্যক্তঃ। অথ ধনেন কুলং ভবতীত্যত্র করণে তৃতীয়া সিদ্ধাতি কিম্মেনেত্যাহ হেতুরীনঃ কর্ত্রেডাদি।
- (২০) স্থাণা উত্তমর্ণাদমর্থেনগৃহীতং ধনং স্থাণমূচ্যতে, স চেন্ধেতৃঃ কন্ত-চিং ততঃ পঞ্চমী বিধীয়তে। যথা, স্থাণানদ্ধইবোস্কঃ ইভি ভট্টিঃ। শতেন ব্যৱিভ ইভাত্র শতক্ত কর্তৃত্বং বানজি প্রয়োজকেনেতি। অথাবিবক্ষিতা

२८। अर्गाननगर्ना वी। (२८)

গুণানেতো: পঞ্মী বা স্থাৎ। জাড্যান্ধঃ, জাড্যেন বদ্ধঃ; ধূমাদগ্নিঃ, ধূমেনাগ্নিঃ; উপলদ্ধেঃ সন্, উপলক্ষ্যা সন্। অনদ্যাপ ইতি কিম্? মৈঞা সাধুঃ, প্ৰজ্যা ধীরঃ।

২৫। ষষ্ঠী হেতুপ্ররোগে। (২৫)

হেতৃশব্দপ্রয়োগে ষ্ঠী আৎ। অন্নতা হেতোর্বস্তি, অল্লস্ত হেতোর্বস্থ হাতৃনিচ্ছন্।

২৬। সৰ্বাঃ দৰ্বনামো হেত্ৰখেঃ। (২৬)

বিশেষে হেতো পঞ্চমী, বিশেষে তু বঁষাক্ষং বিভক্তন্নঃ স্থারেবের্তি শ্রীপভিনতে অকর্ত্,রিতি স্পষ্টার্থম্।

- (২৪) গুণা। পরাত্রিতোগুণ: তেন গুমাদয়ি:। ইহ অন্তিয়ামিতি পাণিনীয়া স্মৃতিস্তাং কটাক্ষয়য়হ উপলক্ষে: সমিতি, উপলক্ষির্ ক্ষিঃ, সন্ বিদ্যান্থ বিষান্। এবং বোগ্যানাং গৃহতেহর্থানামভাবোহনুপলকিতঃ। দেহায়িং পংক্তিতো বিদ্যান্থলং ব্যায়মশক্তিত ইতি। অভিপতিত্রমনা লঘুবভীতেঃ, অভিস্মৃতি ম্থাজ্ঞগন্ধলুকেঃ। মৈত্রা সাধুরিতি মিত্রক্ষ ভাবো মৈত্রাং, কর্ণ দৃঢ়াদেস্ট্রাণ্ চেতি ট্যুণ্। টকারকরণাং ক্রিয়ামিপি মৈত্রী। উক্তঞ্চ, স্ত্রী নপুংসকয়োভাব ক্রিয়েরাঃ ব্যঙ্কচিচ্চ বৃঞ্জিত। সাধু: সজ্জনঃ, মাধুবাচ্যামনোজ্জে চাসজ্জনে চ কুশীদিকে ইতি ভ্রিপ্রস্থানাঃ। গুণাদিতি কিং ধনেন কুলম্।
- (২৫) ষষ্ঠী। হেতোরিত্যনেন তৃতীয়া প্রাপ্নোতি। জাডাক্স হেতোর্বসতীতি পঞ্চমী চ প্রাপ্নোতি। ততঃ ষষ্ঠা বিধীয়মানা হেতৃশব্দসমানাধিকরণাত্ত্বতীতি দ্যোতনায় হেতৃশব্দাদপার্থাৎ প্রবর্ততে। অথ ষ্ঠা হেতৃনেতি সিদ্ধে
 কিং প্রয়োগগ্রহণেন। সত্যং, স্বপ্রতিপত্ত্যর্থম্। কিঞ্চ, হেতৃশব্দপ্রয়োগে
 বিধীয়মানা তঃপর্ব্যায়শব্দপ্রয়োগে কথং ন স্থাৎ। তেন, প্রয়োগগ্রহণাৎ
 তন্মান্তপ্রয়োগে বথাক্যাদিতি। প্রুষোত্তমক্ষ বত্র হেতৃশব্দেন সমাসক্তত্র সম্দায়াদেব ষ্ঠা। বথা, বালবোধহেতোর্ব্যাচন্তে। হেতৃপ্রয়োগ ইতি কিং,
 নিমিত্তর্ত্তিজ্ঞাতম্।
 - . (২৬) মর্কা:। ন তু হেস্বর্থৈর্যোগে বাহ্যা, হেম্বর্থেভ্যা: কান্সাদিজ্যাহ

• হেত্বপশিকৈর্বোগে সর্কনালঃ সর্কা বিভক্তরো ভবন্তি; হেত্বপেভ্যোহিশি বিশেষণবিশেষ্যত্বাহ। কো হেত্রাগমনং তবং কং হেত্নাগ্রতঃ, কেন হেত্না, কলৈ হেতবে, কলা। কোতাঃ, কল্মিন্ হেতোঁ। এবং নিমিতকার্গপ্রয়োজনানাঞ্চ, কিং নিমিত্তং, কেন নিমিত্তন, ছে কারণে, ছয়োঃ কার-ণয়োঃ, ভবহন্ত কারণেয়ু, সোচুং কিং প্রয়োজনমিত্যাদি।

२१। मुल्अमारने हुजूर्थी। (२१)

সম্প্রদানে কারকে চতুর্থী স্থাৎ। বিপ্রায় গাং দদাতি, নারদায় রোচতে, কলহঃ, পুম্পোভ্যঃ স্পৃহয়তি।

২৮। তাদর্থ্যে। (২৮)

ত সৈ ইদং তদর্থং, (তদর্থস্য ভাবঃ তাদর্থ্যং,) তদর্থভাবে গম্যে চতুর্থী স্থাৎ। যুপায় দারু, অখায় ঘাসঃ, রন্ধনায় স্থালী,

হেত্বর্থেক্ল্যান্ডেতি, সর্ব্বনামানি বিশেষণানি হেত্বর্থান্ট বিশেষ্যাইতি। পাণিনীয়াল হেত্প্রয়োগে সর্ব্বনায়ন্ত্তীয়াষষ্ঠ্যে নিমিত্তকার্প্রপ্রাক্ষনপ্রভৃতিষ্ তু সর্ব্ববিভক্তিনাং প্রায়ঃ প্রদর্শনিমিত্যাহঃ, তন্মতমান্ধিপন্নাই এবমিত্যাদি। ভাষোত্বিই সপ্তাপ্যদাজ্তা বিভক্তরঃ। সর্ব্বনায়ো হেত্যাদিনা প্রথমা পঞ্চমী ভূতীয়া ষষ্ঠ্য ইতি শ্রীপতিঃ। হেত্যু কারণনিমিত্তং, হেত্যাদির্বার্ত্তিকতাংপর্ধ্যাপনিশং মতমেতং। সর্ব্বনায়ো নিমিত্তকারণহেত্তিন্তৃতীয়াপঞ্চমীষষ্ঠ্য ইতি কাশ্যীরকাদয়ঃ, সর্ব্বনায়ে হেত্বর্থেশ্চান্বিতীয়া ইতি বর্দ্ধমানঃ। সংক্রিনায় ইতি কিং, অনুক্ত হেতোর্বস্তি।

- (২৭) সংপ্র। দদাভীতি ডুদাঞ দানে জুহোত্যাদি।
- (২৮) তাৰ। তদর্থমিতি চত্থী প্রকৃত্যবেণিড্যাদিনার্থেন সহ নিত্যসমাসঃ
 সর্কালস্বতাচেত্যুকং, তচ্চকেন বিবক্লিতং বস্তু পরাম্যাতে অর্থঃ প্রয়েজনং,
 তদর্থক্ত ভাবঃ তাদর্থ্যং, নিমিত্তনৈমিতিকসম্বন্ধঃ, তন্মিন্দ্যোত্যে ষষ্ঠ্যাং
 প্রাপ্তায়াং চত্থী বিবীয়তে, সাত্ ষ্টাবদপ্রধানাদেব চত্থ্যা উক্তরাৎ নিমিত্তাভৃতীয়াণি ন স্থাং। অন্তর্গত প্রথমো বিধিঃ, ষুপায় দার্কিতি ষুপক্ত কারণং

কুণ্ডলায় হিরণ্যং, ভোজনায়ধান্তং, এথেভ্যো ব্রছতি, ভূতয়ে ধাবতি, উচ্চারায় কলতে মাধঃ, বাতায় কপিলিকা বিচ্যুৎ, রুষ্টয়ে চোন্মুখী বিচ্যুৎ, আতপায় লোহিনী বিচ্যুৎ, যুদ্ধায় সমহতে ভটঃ, আদ্ধায় নিগল্হতে, পত্যে শেতে। গত্যুৰ্থানাঞ্চ ভাদর্থ্যে পরিস্পাদনগতো। প্রামায় গচ্ছতি, রণায় প্রস্থিতঃ, গ্রামায় গস্তা, উৎপথেন পথে গচ্ছতি। নাহপরি-

দারু, অবায় যাস ইত্যত্রতু অবপদেন অবশ্য তৃপ্তির্লক্ষ্যতে তৎকারণং যাসঃ স্থাদেব। এধেভ্যো ব্রন্ধতীত্যাদি অত্ত এধানাহর্ত্ত্র ব্রন্ধতীতি গ্রমানাহরণ ক্রিয়ায়া: সম্বন্ধাৎ কর্ম প্রাপ্নোতি বধাস্থ্রবিশপিতীমিতি, ভক্ষয়েতি গম্য-মানক্রিয়াযোগাৎ প্রবিশ পিঞীমিতি কর্মীত্মতঃ ক্রিয়াক্রিয়ার্থোপপদস্থ কর্মণি স্থানিন ইতি বক্তব্যমু। অস্থার্থ:, ক্রিয়া রজনাদিকা ক্রিয়ার্থোপপদং যস্ত ष्ठानित्नारथपुष्ण्यानस्थ । कार्श्वभारख्रीयज्ञादनी कर्षाण ठल्थीजि जन्द न বক্তব্যং বোহেগানাহর্ত্ত্র ব্রজ্তি স এধার্থং ব্রজ্ঞতীতি শব্দ তাদর্থ্যনিষ্ঠত্বা-দিভি, তেনাহর্জুমিত্যাদি ক্রিয়াপদং দেধাবিবক্ষিতমেব, তেন বিনাপি বাক্যা-থক্ত সংগতেঃ, প্রবিদ পিণ্ডীমিত্যাদে তু বিবঞ্চিতব্যঃ ক্রিয়াপদক্ত সম্বন্ধো-হক্তপা বাক্যস্তাদক্ষতি: আং। উচ্চারায় কল্পতে মাদ ইতি কুপি সম্পদ্যমান ইতাপি ন বক্তব্যং, 'ক্পার্থধাত্প্রয়োগে সম্পন্যমানে কর্ত্তরি তাদর্থস্থ বিদ্য-**यानदार । उथारि (रा**क्कातार्थः मम्पनाटक म केकातार्था ভवट्या । উচ্চার: শকুদিতার্থ: (বিষ্ঠা) : বাভাষ কপিলিকা বিহ্যাদিত্যাদি। উৎপাতে জ্ঞাপামান ইতি ন বক্তব্যং, উৎপাতোনামাক্সিকো মহাভুতাদিবিকারঃ, উৎ-পাতস্ত কপিলিকাবিচ্যুতো বাতার্থত্বাৎ। উক্তক পীতা ব্যায় বিজ্ঞেয়া ভূতি-ক্ষায় তথাসিতা। বাডায় কপিলা বিহ্যুদাতপায়াভিলোহিনীতি। অধ কৰং বিহ্যুতো বাতার্থত্বয়। বাতো হি স্কারণকলাপাদেব জায়মান: কেবলং বিচ্যুতা জ্ঞাপাত ইতি মৈবং বাদী: যোহি যক্ত জ্ঞাপক: স তদর্খো ভবত্যেব। তণা জিল্লা বোগে চতুৰী ন বক্তব্যেত্যাহ। যুদ্ধায় সন্নহত ইত্যাদি, যুদ্ধার্থং সরহনং করোজীত্যর্থ:। নহ বন্ধনে দিবাদাব্ভয়পদী। আদ্ধার্থং কুৎসয়তি, नम् ७ क्रमाधाः, ज्वानावाषात्मनी । भणार्थः कञान्तिस्ववाद्याः भूवछः मञ्जनः करताठीठायः। ऋज्यानामिजापि, व्यवपर्शः, त्रज्यानाः शाजनाः

ক্রনগতে। সন্সা পাইলিপুরং গ্রাইডি, ক গছসীত্যাধার-বিবক্ষায়াম্। তাদর্থ্য ইতি কিয় ? বনং যাতি, পস্থানং গছতি। চাজে চ তাদর্থ্যে সর্বমিদমুক্তম্।

২৯। শক্তার্থ, হৈত, নমঃ, স্বন্তি, স্বাহা, স্বধা, ব্যত্যোগে। (২৯)

এভির্যোগে চতুর্থী স্থাৎ। শক্তো মলো মলায়, অলং মল্লো মলায়, সমর্থা মলায়, পর্যাপ্তঃ প্রভুঃ, সমর্থশ্চ, হিতালৈঃ—বোগিণে হিত্রের্যাধাং, গবে হিতো ধুমঃ, নমঃ শিবায়, নমশ্চকার দেবেভাঃ। কথং মুনিত্রয়ং নমস্কৃত্য—নসমঃ সমালে কৃঞ্ পরছেন জিয়াত্মকত্বাৎ। স্বস্তি প্রজাভাঃ, স্বাহা অগ্নয়ে, স্বাধা পিত্ভাঃ, ব্যড়িক্রায়।

বোরে তাদর্থ্য বিবন্ধারাং চতুর্থী বিধীয়তে, পরিস্পাদনে গম্যে। স চেহ কায়ক্তোব্যাপারঃ। অধ গত্যর্থকর্মণি দ্বিতীয়াচতুর্থ্যে চেষ্টামানন্দনীতি মধ্যান্দপ্রতিষ্ঠেং পরৈবিহিতঃ, দ পুনরভিমতদেশপ্রাপ্তিহেতুরন্ধা, স পুনরিহ নোচ্যত ইতি দর্শয়ন্ধাহ উৎপর্থেন পথে গচ্ছতীতি প্রভূগাহরতি, নেতি, কগচ্ছসীত্যাদি কন্থাতুং গচ্ছসীত্যর্থঃ, চতুর্ধ্যা উপপদ্বিভক্তি লাদিতি ভাবঃ। নম্ম তাদর্থ্য চতুর্থ্যাং বিহিতায়াং, গ্রামায় ধনায় ব্রক্তীতি প্রয়োগঃ কবং স্থাণ্ড তাদর্থ্য ধনবিষম্বর্থাং। অবোভয়োরপিন কর্থমিতি চেং চাদিপ্রয়োলো-হিপ স্থাং প্রায় ধনায় চ ব্রক্তীতিবং। মৈবং, তাদর্থ্যচতুর্থ্যা গ্রামন্থ গস্ত-ব্যতা গ্রামগমনশ্ব ধনপ্রমান্ধনতা, বিবন্ধনীয়া চাদিপ্রয়োগমন্তরেণাপি তদর্থনিত গ্রামায় সমৃচ্ছতি গ্রামায় সমিয়্রতীত্যাদৌ ভাদর্থ্য চতুর্থ্যাণ্ড ধাতেরকর্ম্মকতায়াং কর্থমান্ধনপদং ন স্থাং। সত্যমনভিরানাদিতি স্থানিক্তা পরিহরম্বাহ চাল্ডে চেতি, বয়মিহ চল্রন্থোমি মৃতামুসারিণ ইতি।

(২৯) শক্তার্থ। শক্তশবক্তার্থোছরেথা ষক্ত স শক্তার্থঃ, বছজীহো স্থান- । শক্ত উক্ততাৎ, অর্থশধ্যে ন প্রযুক্তাতে উপ্তয়ন্তবহ, ছিতাদীনাং শক্তপরভং,

७०। यग्रकर्मनीय कार्यानमानादम्य। (७०)

মন্ততেঃ কর্মণি অবজ্ঞাধীক্রত্বী স্থানা। নত্বা ত্ণার মন্তে,
নত্বা তৃণং মন্তে, নত্বা শুনে মন্তে, নত্বা শ্বানং মন্তে। শ্রনানির্দেশঃ কিম্ ? নত্বা তৃণং মন্ত্রে। অবজ্ঞার্থাদিতি কিম্ ?
অশ্বানং দৃশদং মন্তে। অনাবাদেরিতি কিম্ ? নত্বা নাবং
মন্তে। নৌ, অর, কাক, শুক, শৃগালাঃ নাবাদ্যাঃ।

বোগগ্রহণক স্পন্তার্থম, ইহ বার্ত্তিকমতে হি তদ্যোগে চতুর্থ্যের বিহিতা, চাল্রে তু ষষ্ঠাচতুর্থ্যে বিহিতে, তন্মতে ধর্ম এব হিতো নিত্যমিহায়ত্র চ ভূতৃজাম। প্রামাদ্যকৃণিনাং ছিন্ত ইতি চ প্রয়োগং। নমস্কৃত্যেতি কুঞা বেতি সমাসং, নমং পুরুষ ইতি ষত্বং বিসর্গন্ত, ক্রিয়াব্যাপ্যমিতি কর্ম্মত্ম, উপপদ্বিভক্তেঃ কারকবিভক্তির্বলীয়সীতি ন্যায়াং। অথ কথং সম্মত্বে নমস্কৃত্য ইতি সুদায় সম্মত্তে ইতিবস্তাদর্থ্যে চতুর্থী। সাহা অগ্নয়ে ইত্যত্র স্বাহাশকোহব্যয়েন ক্রয়াব্রয়ে, অতএব স্বাহাহগ্রে নৈব ক্রতা চিরায় ইতি ব্যোষং।

(৩০) মন্তা। মন্ততেঃ কর্ম, মন্তকর্ম সমাসে তিলোপ-ছালসং, ছলোবৎ স্ত্রাণি কবরঃ কুর্মন্তীতি উক্তমেব, তলেব বিবৃত্য দর্শরতি মন্ততেঃ কর্মকিত। অবজ্ঞার্থানিতি অবজ্ঞা অনাদরঃ, তলোধকোহর্থো যন্ত সোহবজ্ঞার্থঃ, ত্ণান্থিকস্তৎসাম্যে নাক্তন্তাদরের সমাতে, ভতজ্ঞান্তেরেব চত্থী ন পুনযুম্মানাধিকরণতাদেশত্থী ন ভবতি, ব্যবন্ধিতবিভাষয়েতি প্রমোবামঃ।
অনভিধানাদিতি ক্রমনীখরঃ। ইছ তৃণান্ধিকমপেক্ষা কন্তচিদপকর্ষেণ নঞ্যোগে চ বিধিরয়মিতি ভাষ্যন্থিতিঃ। নত্বা তৃণায় মন্তত ইতি তৃণাদপ্যপকৃত্তীং
মন্তত ইত্যর্থঃ। উপমানাদ্বিষয়াজ্পাদেবিধিরয়মিতি চাপিশলীয়া ছিতিঃ।
তথাচ, মন্তকর্মণ্যনাদরে উপমানান্থিকাব্যা প্রাণিনিত্যাপিশলেঃ স্ত্রং, তমত
এব তৃণায় মত্বা রঘুনন্ধনাহ্থ বাবেন রক্ষঃ প্রধানিয়াছৎ, তৃণায় মত্বা তাঃ
কর্মা বছতীন্ধিকটাহবদৎ, ত্রেলোক্যবাহ্যমিণ তচ্চ তৃণায় মত্বা ইত্যাদয়ঃ
প্রয়োগাঃ। ইদমর্থন্ধী ব্যবস্থিতবিভাষয়াহ্যি সংগ্রহীতৃং শক্যত ইতি। মন্তব্রোগাঃ। ইদমর্থন্ধী ব্যবস্থিতবিভাষয়াহ্যি সংগ্রহীতৃং শক্যত ইতি। মন্তব্রোগাঃ।

७५। जनामद्भै शंकभी । (७১)

অপানীকারকে কামী বিভক্তিবতি। প্রামাদাগক্ততি,
অধ্যয়নাৎপরাজয়তে। যবলোপে কর্মাধিকরণয়োঃ। প্রামাদমারুছেতি প্রামাদাৎপ্রেক্তে, আসনে উপবিশ্রেতি আসনাৎ
ক্রেতে। প্রশাখানেয়োঃ। কুতো ভবান ! পাটলিপ্রোৎ।
যতঃ কালাধ্বনোর্মানং কালে সপ্রমী, অধ্যনঃ প্রথমা সপ্রমী
চ। কাজ্বানি ভিত্তালিক পাতঃ সোমতীর্থং পঞ্যোজনানি
পঞ্চযোজনেয় বা।

৩২। সীমাভিবিধ্যোরাঙ্যোরে ।

অনয়োরাঙ্গোগে পঞ্মী স্থাৎ। সা ত্রিগর্ভেয়ো রুষ্টো দেবঃ, তদবধি তমভিব্যাপ্য বা ।

৩৩। অপপরিভ্যাং বর্জনে। (৩২)

আভ্যাং বর্ত্বনার্থে পঞ্চনী স্থাৎ। অপত্রিগর্ত্তেরা রুষ্টো

কৰ্মণীতি কিমৃ গ নতা তৃণৎ চিত্তয়ামি, নতা তৃণং সমু ইতি। মনু বোধনে তনাদাবাত্মনেপদী।

⁽৩১) অপা। বরোপে কর্মাধিকরপরোরিতি, ববস্তুস্ত গাতোলোপ্ছেল-গোগে দুস্ত কর্মণাধিকরণে চপঞ্চনী স্থাদিত্যর্থঃ। অতএর, যপোছধিকরণকর্মধোর রলুয়োনিন ইতি শ্রীপতিসূত্রং। প্রাসাদমাক্ষর ইত্যাদ্যর্থপ্রদর্শনার্থং গৃহমিত্য-সুরুক্তে প্রাসাদে। দেব ভুতুক্সামিত্যমরঃ। কর্মাধিকরণযোরিতি কিং, বলেনা-নরতি বলেনাক্ষেয়ত্যর্থঃ। প্রস্থাখ্যানয়োরিতি প্রস্থাবিষয়াং প্রাতিপদিকাং উত্তরবিষয়াদিণ পঞ্চমী ভবতীত্যর্থঃ। প্রশ্নে ক্তেই ভুতুত্বরে পাটলিপ্রাদিতি। বদা থাগচ্ছতীত্যাদিক্রিয়াপদপ্রয়োগস্তদাহপাদান এব পঞ্চমী। বতঃ কালা-শ্বনোর্ম্মানমিত্যাদিবং প্রাতিগদিকমান্ত্রিত্য কালোহক্ষা চ মীয়তে পরিচ্ছি-দ্যুতে ততঃ পঞ্চমী ভবতি। মেয়ে কালে চ সংযমী, মেয়াদ্যনাঃ প্রথমা সংযমী চ স্রাতাম্। অত্র বতঃ কালাক্ষনোর্মানমিতি যুক্তঃ পাঠঃ।

⁽०२) अन । वर्क्कन देखि किश, निविधालः, निविधालनार्धावनाव निर्धारमञ्जलः,

দেবঃ, পরি পরিজেণরেজ্যে বর্কী দেবঃ, তান্ বর্জরিষা।
ইত্যর্থঃ—খত্র বর্জনে বিছম্।
৩৪। প্রতিনিধি-প্রতিশানুরোঃ প্রতিনা। (৩৩)

সদৃশপ্রত্রেপিয়োঃ প্রতিনা যুক্তাৎ পঞ্চনী আৎ । অভি-ন্মুরক্ত্নতঃ প্রতি, মাধানীয়ে তিলেডাঃ প্রতিয়হ্জতি।

্তি। অন্তাৰ্থারাণীজাহিবহিদি ক্শবৈলঃ। ঋতে দিতীয়া বা। (৩৪)

এভির্যোগ পঞ্মী স্থান অন্যো মৈতাৎ, অন্য, ইতর, বিলক্ষণ, ব্যতিরিক্ত, ভিমাদ্যাঃ অন্থার্থাঃ। আরাদ্ গ্রামাৎ; আচ্—দক্ষিণা গ্রামাৎ; আহি—দক্ষিণাহি গ্রামাৎ; বহিস্— বহিপ্রামাৎ; ক্লিক্শক্ষঃ—পূর্বাং গ্রামাৎ, প্রাক্ গ্রামাৎ; খতে দিতীয়া বা—খতে পার্থাং, খতে, পার্ধাদ্য।

ব্দপ্রতঃ শাধায়াঃ ব্দশাধ ইত্যাদে প্র্যাপাভ্যাৎ ক্রিয়াযোগে নাগ্যয়নাদিতি। ব্যাপাক্ষাদিত্যতঃ পঞ্চনী।

- (৩৩) প্রতি। অতিশন্তিসাম্যবান্ প্রতিনিধিং, প্রতিদানং পরীবর্ত্তঃ, তয়ে। ক্লড়াবেতাবিত্যাহ, সদৃশপ্রত্যর্পবিয়ারিতি। অভিমন্যুরর্জ্বতঃ প্রতিইতি, আকারেণ বিক্রমেণ চেইয়াহভিত্তঃ কেবলং বয়সা ভিন্নোহর্জ্বনতঃ প্রতিপ্রতিকারেণ দিকম্য ইতি তসিঃ। মাধানিত্যাদি পূর্ব্বগৃহীতানাং তিলানাং মাকৈঃ পরিশোধনং করেতীত্যর্থঃ, উপমানোপ্রেয়সম্বদ্ধত, ন শোধ্যশোধনসম্বদ্ধঃ প্রতিনা দেয়াত্যতে। তত্র ষষ্ঠ্যাং প্রাথায়াং পঞ্চমী। ষদ্যপি প্রতিহোগো মাধানামভিমজ্যেরপি স্পইত্তথাপি, তত্র কারকবিভক্তিবাধিকেতি ধ্যেরম্। অনরোধিতি কিম্ ং শেবদত্যর প্রত্যাগমঃ। প্রতিনেতি কিম্ পদ্মন্ত প্রতিনিধিঃ, মাধানাং মিনিমরঃ।
- (७६) चडा। चडार्र्थाष्ट्रस्थी रागाः एउ कणार्थाः चडण्याहाः, चाहा-चटकार्यमगुद्रः, मृजार्षमभीभार्यकः अक्षाह्याद्यं न विश्वरक्षी विश्वाविकः देख्याद्यादेक नक्षमी स्था, देखाः राह्याद्याद्याः भूरक्षा क्षामान्ति । भूक्षः काह्याः

৩৩। পুণণ, বিনা, নানাভিত্তীয়া চ।

এভিন্তের প্রুমী, বিভীয়া, জ্তীয়া চ ভবতি। পৃথক্ চৈত্রেই, পৃথক্ চৈত্রেং, পৃথক্ টৈত্রেণ্, বিনা কাতাং, বিনা বাতং, বিনা বাতেন; নানা গ্রামেণেত্যালি।

্ব শত্র । (৩৫)

দেশত্রে । (৩৫)

স্তোকাদেরদ্ব্যবর্ত্নানাথ করণে পঞ্চনী স্থাদা। স্থোকানাকুলঃ স্তোকেন মুক্তঃ, কুচ্ছানাকুলঃ, কুচ্ছেণ মুক্তঃ; কতিপয়ানাকুলঃ, কভিপয়েন মুক্তঃ। অসন্ধ ইতি কিম্ ট স্থোকেন
বিষেণ হতঃ।

৩৮। হুরান্তিকার্থিঃ ষষ্ঠী বা তেভ্যোইপি সপ্তমী পঞ্চমী তৃতীয়া দিতীয়াঃ।

দ্রাথৈরিতিক।থৈনি নোগে ষষ্ঠী বা স্থাৎ।পকে পঞ্চনী চ।
তেভ্যো' দ্রানি কার্থেভ্যোহপি সপ্তন্যাদয়ঃ স্থাঃ। প্রামস্থা প্রামাদা, দূরে দূরাৎ দূরেণ দূরং বা বসতি, প্রামস্থা প্রামাদা অন্তিকে অন্তিকাৎ অন্তিকেন অন্তিকং বা বসতি, এবং প্রামস্থা বিপ্রকৃষ্টে, প্রামস্থাভ্যাদে বসতি। অসত্ত ইত্যেব, দূরঃ পছাঃ।

পূর্ব্বায় ইত্যাদে পূর্ব্বাপরাধরোত্তরমেকদেশিনা ষষ্ঠাভেনেতি বিধানাৎ, কচিদপ্রাদ্বিধাবপূর্থসর্গোছতিনিবিশত ইতি ভাষান্বিত্যা চ ষষ্ঠীনপ্যাক: । এবক স্থানিনঃ পূর্ব্বজ্ঞানাম্যিকমিয়মর্সো, অসৌ পূর্বেষাতে বহিরভোজবন্স্য, বায়সান্তে কর্ষ্য কর্জো বহিরিত্যাদয়: । প্রতিষোধে পঞ্চমীরক্তব্যা, ততঃ প্রত্যান্ত্রদনা পিতৃগ্রিত, ততঃ প্রতিস্তক্ষ্ ।

⁽৩৫) করণে। পুনর্বা বচনং বিতীয়ানির ভার্বম্। ইত সভার্যকালেকবচনমের । ভোকালেরিছ্নতি। ববা, ভোকেন স্কট্টব্যিতাভোকাচ্পেতা পুনরের তেবাম ।

৩৯। সহক্ষে বস্তা। (৩৬)

স্থান্যাদিসম্বন্ধে ষষ্ঠী বিভক্তিবতি। সাচ সম্বন্ধো বিবিধঃ, সংযোগঃ সমবায়শ্চ । রাজ্ঞঃ পুরুষঃ, পশোঃ পাদঃ ; ক্রিয়াসম্বন্ধে—রজকভা বস্ত্রং দদাতি ; নাগ্রান্ত্প্যতি কাষ্ঠানাম্, নাপগানাং মহোদধিঃ। নান্তকঃ স্বস্থিত্তানাং, নপুংসাং বামলোচনা।

⁽৩৬) সম্বন্ধে। ষদ্যপি অস্তেদংভাবলদক্ষণঃ সম্বন্ধ: এব সর্বব্যাশ্বরী, তথাপি স্বসামিসস্বলো, জক্তজনকর্সস্থলঃ, আগমাগমিকসম্বলোহবয়াবয়বি-সম্বন ইত্যাদয়ো নিরস্তসংখ্যাসম্বন ইতি প্রতিপাদয়ন্নাহ, সম্বান্যাদি-সমন ইতি। স পুন: ক্রিয়াকারকজন্ত:। তচ্চ্চং, বিভর্ত্তিপুরুষং রাজা ে তেনায়ং রীজ্ঞ উচ্যতে িবৃহ্দি তিষ্টাঙ্ট শাধান্চ ভাবান্তত্তেতি তম্ভ তাঃ। তাঃ শাণান্তত্র বৃক্ষে তিষ্ঠানুতি তম্ম বৃক্ষম্য তাঃ শাণা ইত্যাচ্যতে। সাপি ক্রিয়া-विविधा, कठिष्ठु प्रमाना, कठिवछा छ। यथा माराशामधीवार, ब्राख्डः शूक्रव ইতি। তহক্তং, সমন্ধঃ কারকেভ্যোহন্তঃ ক্রিয়াকারকপূর্বকঃ। মঞ্জারাং বা ক্রিয়ারাং স প্রতীয়তে ইতি। মতাস্তর্মাহ সঁচেতি সম্যগ্-যোগঃ, পরস্পরশ্লিষ্টরত্তেতি সংযোগঃ স্বরূপসম্বন্ধী দ অষ্ট্র সিদ্ধাধারাধেন্ত-ज्ञथाजीजिरहण्: मश्रक्त, ममनाब्रस ममकानीबाधावस्तिबृब्रज्ञः अजीजिरहण्: मचतः, अश्विन् मचत्त्र यंशे निगीयरा, मा शूनर्सिरणयगारणव छवछी, छछद-পতসম্বন্ধমাবিকরোতি বিশেষ্যান্তরঙ্গতাৎ প্রাতিপদিকমাত্রে প্রথমৈব। উক্তঞ্চ, ভেদ্যভেদকয়ো: শ্লিষ্টি: সম্বৰ্জাহন্তোক্তমিষ্যতে। দ্বিষ্ঠো বদ্যপি সম্বন্ধ: यके रिश्विक (छम्कांमिछि। न ह बक्तवार मधक्छ' अवज्ञार क्रवाालिएए কথমেকড়াদিকং প্রতীয়ত ইতি। বর্থাশক্তঃ কারকড়েন তদাভ্রয়ন্তব্যগত-সংখ্যাভেদনিবন্ধনো বচনভেদন্তবদত্তাপি। অধ সম্বন্ধঃ কুতঃ প্রতীয়তে ? ন তাবদ্রাজপুরুষশকাভ্যাং, তয়োঃ প্রাতিপদিকার্থত্বাৎ, সম্বন্ধস্ত তু তদতি-রিকত্বাৎ, তদ্মাৎ সম্বন্ধো নাজীতি প্রতীয়তে ধপুস্পব্ধ। সভ্যাং, রাজপ্রুষ ইত্যুক্তে সম্বৰ্কে রাজপুরুষাবগ্রমাতে, সম্বন্ধতা চ সম্বন্ধ বিনা নোপপদ্যুতে देखि সম্বকোर स्टायः। उष्ट्रकः, काशीयुरम्यः प्रथकः क्रभः उत्र न विद्यारः।

801 अउम्स्यितनरम्हा अदनने वी हि-

শতস্থপ্রতারেরোগে । যতী স্থাৎ। অকিসম্বন্ধিনং বর্জন রিছা। দকিণতো প্রামক্ষ, পুরস্তাৎ গ্রামস্থা। অনঞেরিতি কিম্, প্রাণ্ গ্রামাৎ। এনেন বা দিতীয়া। দক্ষিণেন গরাং মহাবোধিঃ, দক্ষিণেন গরায়া বা।

मञ्चकञ्चानणः माला यज्यः প্রতিক্লানত ইতি। অব সম্বন্ধ: কেন সম্বদ্যতে, न जावर मचकाखरवन, व्यनवद्यांभाजार। रेमवर, मचकः घर ध्यकामब्रह्मभवर সংবধাতি, বথা প্রদীপঃ, স্বপ্রকাশো ঘটং প্রকাশয়তি। তত্ত্র স্কর্মসম্বদ্ধে রাজ্ঞঃ পুরুষ ইতি। সমবায়সম্বন্ধে খণো:পাছ ইতি পাদাবয়বেনাবদ্ধঃ পত-রিভার্ব:। ক্রিয়াসম্বন্ধ ইডি শ্রুডক্রিরাক্তসম্বন্ধোহত্রেডি, যদেভদ্বস্ত্রস্য সং-যোজনং, তত্ত্ৰ জনকসম্বন্ধি, তত্ত্য চাতুকরোতীতি শকা: সাচ্চ ভূচিন ইতি কাব্যাদর্শে। শুরুবিগ্রতপ্যিত্র্গতানাং প্রতিকুর্কীত ভিষ্কু সভেষ্ট্রেরিডি চরকন্ত। সা লক্ষ্মীরূপকুরুতে বরা পরেষামিতি ভারবে:। মাবাগামন্মীরাদিতি ভাষ্য । ন চ শ্বিছতি ক্সচিদিতি ভট্টি:। ইত্যাদিয়ু প্রয়োগেযু কর্মাদিবি-बरब्रश्नाविविक्तरण ्जियन् जयस्विविकाशाः बरक्षेत्र, जजः कर्षानिविधिविधिक ধাতোরকর্মকবিধিমাভুদিতি। অব ঘৃতভ পূর্ণোষটঃ ঘৃতেন বা, অক্তরঃ পূর্বকোষ্ঠস্যেতি, অঞ্তস্য মধুন ইব তথৈবাপুর্বমন্যাপি ভাতীতি মাবস্ত। তথা ফলানা: ভৃপ্তঃ, স্থাছিতঃ, আশিতক ফলৈর্বা, তত্তৎ প্রয়োগসিদ্ধ্যর্থং. করণে পৃত্তপ্তার্থয়ারিতি কেন চিৎ স্থাতিতং, তদিহ ন বক্তব্যমিত্যাহ, নাগ্নি-স্থপ্যতি কাষ্ঠানামিতি সম্বন্ধবিবক্ষয়া সিদ্ধং, ন নির্দ্ধার্থতি ষষ্ঠীসমাস-নিবেধাদপি লভাতে ষ্ঠীতি। তথা অপাং হি তৃপ্তায় ন বারিধারা স্বাচুঃ স্থগন্ধিঃ স্বদতে তৃষাব্যতি।

(৩৭) অতসংধি: অতসোহধোহধো যেবাং তেহতসর্থা:, অতদ্, অদ্, অস্তাৎ, উপরিষ্টাৎ, আজাহর:, অতিমাত্যাৎ বোগে পক্ষী বাধিকা। অনকেরিতি, ব্যাচষ্টে, অকিসম্বন্ধিনং বৰ্জারত্বৈতি। তেনারং প্রসম্ব্যাতিবেংঃ। অকেঃ, কিন্তু স্থাকের ক্রিন্তু চেতি অস্তাতো পুরি ক্রিন্তু ব্যাহতে দক্ষিণ্ত ইতি। আরারা

৪১। করণে জ্ঞেহিজ্ঞানে। (৩৮)

বেত্যেব, অজ্ঞানার্থস্ত জ্ঞঃ করণে ষষ্ঠী বা স্থাৎ। দর্শিষো জানীতে, দর্শিনা বা ; তেন প্রাযুক্তি ইত্যর্থঃ। '

৪২ া স্মরণার্থেশদরাৎ কর্মান । (৩৯)

এখাং কৈর্মাণ ষষ্ঠা বা স্থাৎ। মাতৃঃ শার্জি, মাতরং বা; পিতৃরণ্যেতি, পিতরং বা; সশ-দর্শি সফে, সপিলা দয়তে।

দিক্শকেভ্যে। প্রথমাপক্ষী সপ্তমীভ্যে। দিক্দেশকালে ছিত্র বিনারে দক্ষিণান্ত বিনার ভ্যামস্তাত্যতন প্রস্তাদিতি প্র্বাণরাবরে ভ্যাছস্তাতে প্র অধরক্তি প্রবিশ্বাদস্তাত প্রাদেশত, এবং প্রো গ্রামস্ত বসতি, উপরি গ্রামস্ত, উপরিস্তাং গ্রামস্ত, উত্তরাদ্ দক্ষিণাদ্যরাদ্যা গ্রামস্ত । অবাতসর্থেন ষ্ট্যাং প্রাপ্তারাং বিতীয়াপ্যারভ্যত ইত্যাহ, এনেন বা দিতীয়েতি। দক্ষিণেন গয়াঃ মহাবোধিরিতি উত্তরাধরদক্ষিণাদিত্যমূর্ভৌ, এনোহস্ততরস্তামদ্রেহ পক্ষম্যা ইত্যেনঃ।
মহাবোধিঃ বৃদ্ধঃ, অর্থ বৃদ্ধো মহাবোদিঃ ধশমত মহাবলঃ, মহাম্নিল্লিশরণো
দশাশত কণিষ্ঠন ইতি ত্রিকাণ্ডশেষাং। অর্থ ক্রিদপবাদ্যিবয়েহপ্যুংসর্বোহপ্যভিনিবিশত ইতি ভাষ্যাং, কফোণিঃ কুর্পরাদ্য ইতি পুরুষোভ্যমঃ। বৃক্ষ্যক্রিপোরিবাম্তং, তদ্বেশতে হল্যেন সক্জনে। হরিমহারম্বাতিনিশ্বনমিতি বাণঃ কাদ্ধ্যাম্।

- (৩৮) করণে। এনেন বেতামাৎ বাশক্ষেহতামুবর্জত ইন্ডাহ বেন্ডের ধাত্নামনেকার্থসাকজানার্থেছত্র জানালীতাহ, জজানার্থস্যেতি। মার্পিরা জানীত ইতি অকর্মকাচেত্যাসনেপদম্। ইহ নিধ্যাজ্ঞানহেত্র প্রবৃত্তিন চনো জানাতিরিতি জন্মদিত্যমতমাবিদ্র্স্মাহ, তেন প্রবৃত্তি ইতি। তথাচ, জ্যাদিত্যঃ, সার্পবাকরণভূতেন প্রবৃত্ত ইন্ডার্থ ইতি। ত্রিলোচনক্ষ, সার্পবিদ্রুদ্ধের বা বদেবোদকাদিকং পশ্রতি তং সার্পবিভাগবক্সতি ভক্ত সার্পব্যহস্কত করেনার্থস্কত করেনার্থস্কত করেনার্থস্কত করেনার্থস্কত করেনার্থস্কত করেনার্থস্কত করেনার্থস্কত করেনার্থস্কত করেনার্থসাক্ষ্যাহন্ত্র
- (৩৯) প্রবণা। মারণং স্মৃতি:, অমুতবভিন্নজানম্। তদুক্তং, সংক্রিকরণতী কেনী স্মৃতামূভবভেদিকা। অহস্তুডিঃ সাতেরভা স্মৃতিঃ সংসারমাত্রভেডি,

প্ত। কল্পনিং ভারকর্ত্কাণামন্থরি-সন্তাপ্যোগ্ন। (৪০)

ভাবকর্ত্ব কং কর্মণ কর্মণ ষ্ঠা বা স্যাৎ। চৌরস্য ক্লজতি রোগ:, ভৌরস্যাময়ত্যাম: চোরং বা, ভাবকর্ত্বাণা-মিতি কিম্? নদীকূলং ক্লজতি। অজ্বরিসন্তাপ্যোরিতি কিম্? চৌরং জ্বয়তি জ্ব:, চৌরং সন্তাপয়তি সন্তাপঃ।

৪৪। জাসি নিপ্রহণ নাট ক্রাথ পিষাং হিংসায়ীম্। (৪১)

হিংসাত্মকজিয়াণামেষাং কর্মাণ ষষ্ঠী বা স্যাৎ। জমুশ্চৌরা-দিকঃ, চৌরস্যোজ্ঞাসয়িক, চৌরং বা। বি, প্র, হণ ইতি সংঘাতবিপর্যান্তগ্রহণং, চৌরস্য নিপ্রহন্তি, প্রাণিহন্তি, প্রহন্তি,

তদর্থো বেষাং তে অরণার্থাঃ। তে চ, ইশু চ, দয়শ্চ তে তথা, তেষাং প্ররোগে হরুক্তে কর্মণি ৰছা বিশীয়তে। ইহ অরণার্থেশদয়ামিত্যকরণীৎ দয়তেরেব গ্রহণং, মাতৃং অরতি, মাতরং বা ইত্যাদ্যাপিগ্যেয়য়্। সর্পিষ ঈষ্ট ইতি যথেষ্ট বিনিয়্ক ইত্যর্থঃ। দয়ত ইতি দয়দানগতি রক্ষণহিংসাদানেয় ইশ্বি ভৌবাদিকঃ রক্ষণার্থে প্রায়ঃ কর্মণি ষষ্ঠা, তেষাং দয়সে ন কন্মাদিতি ভটিঃ। কিঞ্,ভার বাচিনঃ প্রয়োগে ষষ্ঠ্যেবৈতি ক্রেমদীশরস্ক্রয়্। য়থা, ভক্তক্ত দয়তে মাতৃঃ, আর্থতে ভক্তামীশ্যতে মাতৃঃ সমুত্মিত্যাদি ভেষামনভিগানমিতি শ্রেয়ঃ। অপ্রিচ তিরিম্নি শংগ্রহকারমতেনৈর সকর্মকান্তাবাখ্যাতং ক্তাৎ, তদের অরণীকৃত্য মাতৃঃ মার্থ্যত ইত্যক্তম্, 'অনুক্র ইতি কিং মাতা অর্থ্যতে।

- (৪০) কজা। ককু রোগঃ স এবার্থো বেষাং তে তথা। ভাবকর্তৃকানা-মিতি, ভাবো ভাববচনপ্রভাগা গুঃ কর্তা যেষাং তে তথা। রোগকজো ভঙ্গে ভুদাদিঃ, রোজনং রোগঃ, ভাবে ঘণ্। চৌরং কজতি রোগঃ ইত্যাদ্যপি ধ্যেরষ্। আম ইতি, স্বমরোগে চুরাদিঃ প্যান্ডাভাবেহপ্, এবং সন্তাপঃ। বিকরবলাদেব, কজনি চেডঃ প্রসভং সমাধ্য ইতি ভারবিঃ।
 - (85) कात्र । निभूटकाङ्न निश्रहनः भाकभार्थिताषिः । সংখাতः সমতে;

নিহতি ট। টোরল্যোরটিরতি কিবেরটালোরপাডনাগায়ৎ, বৈর্যাস্যোৎক্রাবয়তি শোক:। বিবেক্স্য পিনপ্তিকীম্ন, হিংলা-য়ামিতি কিম্ ও ধানাঃ পিনপ্তি।

৪৫। ব্যবহা পণ দিরাং ব্যবহারে। (৪২)
এষাং ব্যবহারে কর্মণি ষষ্ঠী বা স্যাৎ। শতস্য ব্যবহরতি, শতং
ব্যুদুহস্রস্য পণতে, শতস্য দীব্যতি, শহস্ত্রস্য প্রতিদীব্যতি।

৪৩। কুত্বোই থৈ কালেই ধিকরে । (৪৩)
কুত্বোহর্থপ্রত্যায়র্যোগে কালেহবিকরণে ষষ্ঠী বা স্যাৎ।
পঞ্জক্বো দিবসমা ভূঙ্ভে, দিবসে বা, দিবস্থ: ভূঙ্ভে,
দিরহিন বা। শধিকরণ ইতি কিম্ ! দিরহা ভূঙ্ভে।

৪৭। কৃতঃ কর্তৃকর্মণের । (৪৪)

কুতঃ প্রয়োগে কর্তুরি কর্মণি চ ষষ্ঠী স্থাৎ। বেতি নিরুত্তং

বিপর্যন্তঃ ক্রমন্থঃ, তেন প্রহ্নাদয়ঃ। প্রাণিবিয়োগফলকব্যপারো হিংসা, ধানা-দীনাং তদভাবঃ।

⁽৪২) ব্যব। ব্যবহারোহত্র দ্যতক্রয়বিক্রমৌ, সহস্রস্থ পণত ইতি পণ ব্যবহারে হুতে চ ভ্রাদাবাদ্মনেপদী। আয়পকে সহস্রস্থ পণায়তীত্যপি, পণহুত্যবাদেবার ইত্যনার্থনিতি ভাগরতাক্তবৃথে। অব সোপসর্গন্ত দিবঃ অমুপসর্গে নিত্যমিতি কেনচিংস্ ত্রিতং, ওদিহ ন বক্রব্যমিত্যাহ, সহস্রস্থ প্রতিদ্বিত্যতি। ব্যবহার ইতি কিং হিংণ্যানি ব্যবহরতি, রিপুং প্রতিদ্বিত্যতি রাজানং পণায়তে, গণনেক্রা ক্রত্যোহত্যার্থাঃ।

⁽३७) कृत्या। व्यक्षित्रगमश्चमी श्राशाः शतक वर्षार्थः वर्षनिवरः कृत्या-रूपी र्यवाद्य कृत्यारथाः। कृत्यम् शास्त्र देणः शककृष् देखि वाद्य मःशासाः कृत्यम् देखि कृत्यम् अण्याः, विविधि विक्षित्रपुष्टाः स्रष्टे देखि स्था। अवर वर्षाः विकास पूर्व एक विवास वा। कोन देखि विद्वासार क्षेत्र एक एक

⁽৪৪) কৃত:। নমু এনেন বা বিতীয়েজাতো বর্ডমানো বিকরং কবং নিবর্ডত ইত্যাহ বেতি নির্ভমিতায়মর্থ:। পূর্বসূত্তেহণি কর্মণি বলি, ইছাণি কর্মণ

পুনং কর্মানার ক্ষাতঃ পারিকা করতে। এক বিলি কর্ত্ত।
কর্মান শ্রাং অন্টা, পুরু ভেন্ত। ন কর্মান কর্ত্ত।
গত্যর্থসাল্ল বুনং গন্তা। ন তদ্ধিত প্রোগে ক্রতপ্রবী করং,
ভুক্তপ্রবী ধনন্ত্ব। অনুক্ত ইত্যেব শন্তি। দেবদন্তঃ।
অধাস্থাবনিত্যতা চ দৃশ্যতে, তদর্হং, ধারেরামোদ্যুত্তস্থিতি
ভট্টিঃ।

वक्षी शूनकृष्का वर्षान वर्षात न विजेता । देखि विक्तानिद्विष्य नार्ष्ठाः কর্ত্তব্যপি ষষ্ঠী, ন ভূতীয়েতি, ভবতঃ শারিকা শেতে ব্লিয়ামিকণ্জিনাবিতি ভাবে ইকণ্, তেন শয়িতব্যমিত্যর্থ:। এবং অগ্রগামিকেতি অঞা গভব্য-মিতার্থঃ। অক্টেডি হজেস্তৃচি, অ্যুক্জ্লুপোরিডামাগমঃ ভিন্নেস্টাডেজেডি। व्यव नजार्थानाक जान्या देखि जान्या छाटन इजुर्थी न छार, जलकृषि वज्ञीदिखि ভাগবৃত্তিমতমেৰ মন্ত্ৰতে ইত্যাহ ল কৰ্মণীতি অভাৰ্থঃ, কৰ্তৃবিহিত কৃদ্ৰভণ্ড কর্তৃকতো গতার্থস্থ কর্মাণ ষ্ঠা ন স্থাৎ উক্ততানকর্তরি। কর্ম্ম**ণতি কিং রথেন** প্রামংগন্তা, করণে ন স্লাং। কৃতঃ কর্তৃকর্মণোরিতি কৃদ্দিবযোরিত্যর্থঃ। তেন ন বিকারো জাতীত্যত্র ন স্থাৎ। অর্থ কর্থমিহ কৃত ইত্যুক্তং, ন বাচ্যং रेहरता कहे: क्रियुट रेमता, कहेर करता छी छात कर्जू कर्मारशः कवः मंत्री न छो॰, देखि नलाकिनगुरम्छारम् नभरका नारमभाजभनः। एउन, লাদেশবোণ্ডিভ্কুডো: প্রয়োগে কর্তৃকর্মণোস্থতীয়াদিতীয়ে ভবত:, ইড্যাহ ন তদ্ধিতপ্রয়োপ ইতি কৃতপূর্বসনেনেতি কৃতপূর্বীত্যত্র কর্তা তৰিতে-নৈবোকস্থতঃ কর্ত্তরি ষষ্ঠ্যপ্রমৃষ্ণঃ, কটমিত্যত্র কর্মণি তদিতপ্রয়োগে न छार। नच् करेख कृष्ठभूर्यभणाञ्जीषि वृक्तावद्यानिवक्तत वात्का वश्ची मुख्यरक সমাসে, ডাড়: কৰা দ্বিভীয়া। সভাং, ত্তিভোগেভৌকান্তত ত্তিভাৰে শ্বনীভূতত্বাৎ কটাদিছিঃ সম্বন্ধো নিবর্জতে, কিন্ত ক্রিয়াবতা তদ্ধিতপ্রত্যর-बाराजन कर्जा नायशामानारक ७९ कियमा गानाक देवि कर्षाच्या यहा छ, কর্মণিক্তভংগি দিতীয়া ভবত্যেৰ ৰতঃ, কেন সামান্তমেন কর্মৌক্তং দ পুনবিশিষ্টমিতি। ন চ বজব্য:, কথং কৃতকট ইত্যাকে বিশিষ্টঃ কর্মোক্তমিভি তত্র কৃত ইতি সামানাধিকরব্যাকের বিশিষ্টং লক্ষ্যতেওঁ ভূচিভ

৪৮। উভয়প্রাপ্তেরনিকাপৌর কর্ত্তরি বা (৪৫)

উভয়ো: কর্ত্কর্মণো: প্রান্তির্বৈদ্ধিন্ কৃতি, তক্ত প্রয়োগে কর্ত্তরি ষষ্ঠী বা স্থাৎ। কর্মণি তু নিত্যং পূর্বেশেব। আশ্চর্য্যো গবাং দোহো অগোপালকেন অগোপালকন্ম বা, শব্দানাম্মুশাসনমাচার্য্যে আচার্যাস্থ বা, বিচিত্রা সূত্রন্থ কৃতিঃ পাণিনিনা পাণিনের্বা। অনিকাপোরিতি কিম্ ? (ইকণ্

ব্যানী পুনবেকার্থীভাবাং সামানাদিকরণ্যাভাবাং তদ্ধিতাভিধেরক্ত কর্ত্ত্র্রেরাণীতি ক্রিয়াব্যাপ্যক্ত কটাদেং কর্ম্ম্মনিবার্যামিতি। নমু তদ্ধিত প্রত্যার বৃষ্ণাবিপি নিষ্ঠান্তং পদমন্তি, তথাপি ন লোকিনব্যয় ইত্যাদিনানিবেধং সম্পংক্ত কিং কৃত ইত্যাদেন চেং, সত্যং, ক্র্প্রেতিপন্ত্যর্থমেবেদম্। অক্তে তৃ কুল্এহপাং কৃদন্তা প্রত্যায়রের বলী ন ক্রান্দিতি। যথা ওদনং পাচকতরঃ অসম্বতরক্তে চ কুল্তর্যাভিরতক্তেত্যাদির সমন্ধ বিবক্ষয়া তৃদ্ধিতান্ত্রাং, অকানি ব্যাভ্যুক্তী পনানি সংগ্রাহিতমিতি মত্তম্। অপেত্যাদি তদর্হমিতি পানিনীয় প্রয়োগাৎ কেষ্চিচ্ছিন্তপ্রয়োগেষ্ ষটা ন ক্রান্দিত্যর্থঃ। তথাহি, অর্তীত্যর্হঃ, প্রান্দিত্য কর্মানি বিষ্ঠা ন ক্রান্ত। রাজানমর্হতি রাজবদ্বভামিত্যুক্ত কর্মানি ষষ্ঠা ন ক্রান্ত। রাজানমর্হতি রাজবদ্বভামিত্যুক্ত কর্মানি ষষ্ঠা ন ক্রান্ত। রাজানমর্হতি রাজবদ্বভামিত্যুক্ত কর্মানি ক্রান্তি । গায়েরিবত্যাদি, দাঞ্চ ধাঞো বেতিণঃ, এবং বৃদ্ধিক্ত ক্রান্ত নাজক্র্যান পিতা ধলমিতি। উদপত্রিয়দ্র্যন্মঃ পরৈরিতি। বৃদ্ধান্ত ব্যানিক্র্যান্ত ব্যানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রের ব্যার্ব্যানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রনান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রান্ত্রানিক্রানিক্রানিক্রানিক্রান্ত্রানিক্র

(৪৫) উভয়। উভিমিন্ প্রাপ্তির্য স উভরপ্রাপ্তিঃ শেষাছেতি কপ ন
ভাব। উভরোরিত্যাদি সমাসার্থপর্শনং, অনিকাপোরিতি ব্যক্ত্যালকবিষচনং, ইকনাপোর্যোগে ষঠা ন ভাদিতি প্রসঞ্জাত্রেষ্ণঃ, অত্যাধিকা চ
ইতিবং, বিশেষবিধানাভাবাং উৎসর্গ এব প্রবর্ততে ইতি তাংপর্য্যার্থমাহ
কর্ম্বেত্যাদি আশ্রুম্য ইত্যাদি। তথাছত্র আশ্রুম্যং প্রতিপাদ্যং তচ্চ চুর্ম্নোহানাং প্রাং কর্ম্মণামত্মশিক্ষিতভ্রগোপালভ চ কর্ত্যু: সামাভ্রপ্রপোদানে
ভবতি, নাভ্রম্য, বিশেষস্য প্রতিপত্তিরিতি ব্যাখ্যানতাে, বিশেষপ্রতিপত্তির্ন
হিস্কেত্যক্ষণমিতি ভারাং। স্বোহ ইতি দোহনং দোহ ভাবে বণ্, অনুসাক্ষামিতি ভাবে টনঃ, কৃতিরিতি ভাবে কিন্। তেদিকেতীকণ্ভাবে, ভিলেঃ।

আপদ্ তর্মেনিবিকর: ইত্যর্থন্থ কিনিকা তব কাঠানাং।

চিকার্থা রবেরালোকানাক্। কথং পাচরিতা ভক্তং হৈত্তেণ

নৈত্রঃ, নাত্রোভয়প্রাপ্তিঃ, ন ভক্তং গাস্তস্ত কর্মনাং কর্তা নৈত্রঃ

স চোক্ত এব। নমু তৃণ্প্রভারান্তোহ্যং। তেন নলোকিন্ন্যয়নিষ্ঠা থলার্থত্গামিত্যাদিনা ষষ্ঠীনিষেধঃ।

৪৯। ক্রম্ম বর্তমানাধারয়েঃ। বা ভাবে।(৪৬)

অত্র ক্তন্য প্রয়োগে ষষ্ঠী ন্যাৎ। বক্ষ্যমাণনিষেণাপবাদো-হয়ম্। বর্ত্তমানে—রাজ্ঞাং মতঃ, রাজ্ঞাং বৃদ্ধঃ, সতাং পুজিতঃ;

চিকীর্যেতি করোতেঃ সনস্তাং ঙাপ্। কথনিত্যাদি নাত্রোভয়প্রাপিঃ, ইণ্যাদি ওটছ সমাধানম্। নমু অভ্তে কর্তৃকপ্মত্বে পূর্বাং কর্ম তথোচ্যতে ইত্যক্তেরাহ, নবিত্যাদি। (অক্সে ভু স্ত্রীপ্রত্যবে কর্জনি বিভাষানিছ্ননি, কেচিন্দু স্ত্রীভিন্ন প্রত্যেহপি বদন্তি।) ষষ্ঠী সভাবিতা যত্র যুগপং কর্তৃকর্মণোঃ, অস্ত্রীবিহিত ক্রেণাণে কর্মণ্যেব ন কর্তুরি॥ তব্যাদীনাং প্রয়োগে চ দয়োরেব হি নেষ্যতে, কর্জু বিভাষয়া কৈশ্চিং কর্মণোহপি তবেষ্যতে প্রণাদে নিয়তা বঞ্জী গণে ভ্ভরবা ভবেং। প্রধানে প্রত্যয়াশ্চেং স্থাঃ ষষ্ঠীং ক্র্যাভবা ভবৈরিতি চ প্রাচীনাঃ।

(৪৬) জন্ত। অত্তেতি বর্ত্তমানাধারয়োর্বিইতন্তেত্যর্থ:। রাজাং : ত ইতি জ্ঞানেছেতি ক্ত:। ইদমেষামাষিতমিত্যাদিবরণে চ গতীতি ক্ত:। ইহ সকর্মনকাং ক্তঃ কর্ত্তর্গালি স্তাদিত্যাহ, শীতমিত্যাদি। ষথা; শীতমগাৰং র্ষলক্ষ স্থায়াঃ ক্ষুক্তপাত্রী রুত্ত্বিভক্ত। নমু শীলিতােয়মনেনেত্যাদে কবং ন কর্ত্তরি ষষ্ঠী। ন চ নামং বর্ত্তমানকান্তঃ। তথাহি, শীলিতরক্ষিতজুটাঃ ক্ষান্তা ক্রেটি সক্ষেত্তি চ। কান্তো ক্টক্তটো ক্রেতিায়ত সংযতাঃ দান্তঃ শান্তোহন্তিব্যাহ্নত ইতি সম্প্রতিকালে তু বাহল্যাং ইহ বিহিতনিটাাদঃ স্বিভিত্তত্বং প্রহানিতা জ্ঞানতা জ্ঞান ক্রেমনানিকরণয়োঃ মৌত্র ইতি স্ত্রে সৌত্রসক্ষ প্রতিকাল প্রেমনানাক্যার স্থানিতা ক্রেমনার্হারতা ক্রামনাহ্নতা এব গৃহতে ন বাহলকপ্রাপ্ত ইতি। কিঞ্চ, কান্তঃপ্রকাশতিন্ত্র ক্রেমনামির প্রতিকাশত মাসমির প্রকাশানিতি তৃতীয়া বর্ত্তেটা দৃক্তেকে, বিরক্ষিতভা্তেত

আগানে ইনমেনামানিক পরিক কর্মানীক্ষা, প্রত্থিন ত্যাদি; বা ভাবে—ছাজ্রন্য হশিক্ধ ছাজেশ বা, নমুলন্য নৃত্যুং নমুরেশ বা ৷, ১০ ১০ ১০ ১০ ৭০ ৫০। কৃত্যুম্ম নোভয়প্রাপ্তেরমুম্ম তু কর্ত্তরি বা ৷ (৪৭)

উভয়প্রাপ্তেঃ কৃত্যদ্য প্রয়োগে - উক্তা ষষ্ঠী ন ভবতি।
ছহা গোঃ কীরং গোপেন, নেয়া অলা প্রান্ধং ভৃত্যেন, গমমিতব্যো গ্রামং চৈত্রো মৈত্রেণ। অন্তদ্য ভ্ কর্ত্তরি বা, মত্রোভয়প্রাপ্তির্নান্তি—কর্ত্তব্যঃ কটো মৈত্রেণ, মৈত্রস্ত বা, করন্ধরং
কার্যাং চৈত্রেণ, চৈত্রস্ত বা। কর্ত্তরীতি কিম্ ! কর্মণি ভূ নিত্যং
প্রেবিণর—উপস্থানীয়ঃ শিব্যো গুরোঃ। গেয়াদয়ো ক্ল্লমিতি কর্ত্র্যানীয়ঃ।

বর্ধং হি ইচ্ছার্থত্বেশি কমের্বাহ্বল্যাৎ ক্র: কৃতঃ। বা ভাব ইতি ভাবে বিছিত্ত ভিজেত্যর্থ:, ইহু সকর্মকাদপি ভাবে জ্যো, গতং তীর্থানাং ব্রতিনো গতং তীর্থানাং ব্রতিনো গতং তীর্থানাং ব্রতিনেত্যাদি। ইহু বর্ত্তমানক্রক্ত বহীবিধানাং অতীতক্রক্ত প্রয়োগে বহীনিবেধ এব, পূর্বৈথাঃ প্রহরণমন্তবিধমিতি বাৎক্তায়ন্দ্র্যা, ন তু জনবিদিভৈত্বদ্ ব্যালীকৈন্ধিতি সাবস্যা, জনৈরবিদিভবিভবো ভবানীপতেরিতি ভারুবেং। বান্ধের কিমিব হি যত্ত্যা ন বুদ্ধমিতি ভট্টেং। রাজ্যা হিসবতাঃ সাব্যো হিনাজিবিজ্ঞাহতাহস্য হিমাজিবেতি কালিদাসস্য। অমুগ্রাসধিয়া কৌত্তভিত্তিং বৃদ্ধং মন্ত্রংস্ক্রারিবেতি নীতিকর্মনং।

⁽৪৭) হতা। ইহ কতাপদেন, তব্যানীয়ব্যপণ্টং কজে পৃথাজে, ন কেলিমঃ, তস্য কর্মকর্তনিবিধানাং। নমু বা কর্জনি কজ্যস্য নোভন্নপ্রাথ্য-রমিবাপোঃ বর্জনি বেতি, উজেহপীটার্যসিদ্ধিঃ কিং বিশেশপদাদেন। সভ্যং, প্রতিপ্রিক্ষের্যনিরাসার্থনেব। হৃত্তে ক্র্বিস্থিকশংসিত্তিগুহিত্যো বেতি কাল, নেরেতি ক্ষমভাবেরিতি বং, গ্রাহ্যতন্ত্য ইতি ক্র্যানীয়াধিতি তথ্যঃ

৫১। ব লো কিনহ্বায় নিষ্ঠা শলার্থ তৃণাযু-কত্যাপাকমেঃ। দিবঃ শতুর্বা। (৪৮)

প্রকাপবাদোহয়য়। লাদেশানাং উকারান্তাদীনাঞ্চ কুতাং প্রমোগে উকা ষষ্ঠা ন ভবতি। লঃ—কটং কুর্বাণঃ, ওদনং ভূঞানঃ, সোমং পবমানঃ, বিশেষং বিশ্বিন্, অঙ্কং পেচিবান্, উঃ—কটং চিকীয়ৄঃ, ধনং গৃয়ৄঃ, কন্তামলকরিয়ৄঃ; বিন্—ভারং সাসহিঃ, কটং চক্রিঃ; অব্যয়ং—কটং কুত্বা, ত্রখং প্রাপ্তা, ময়ু পায়ং পায়ং; নিষ্ঠা—ওদনং ভূক্তমানন; থলার্থঃ—ঈষংপানঃ সোমো ভবতা, ত্বরঃ কটো ভবতা; তৃণ্—কর্তা কটান্; উকস্তাপি, পরস্ত্রীমভিলায়ুকঃ, গঙ্কাং গামুকঃ। অক-মেরিতি কিং দাস্তাঃ কামুকঃ। বিষঃ শতুর্বা। চৌরং বিষন, চৌরশ্ত বিষন্।

অবোহাক্তপদেনোভরপ্রাপ্তিকব্যতিরিক্তং গৃহতে, ন ক্লৃত্যবর্মজরিক্তমিন্ত্যভি-প্রায়তঃ প্রাহ যত্ত্রতি। রাক্ষ্যেক্সস্য সংরক্ষ্যং ময়া লব্যমিদং বনমিতি ভট্টিঃ। নতুষ্ঠস্য বেতুয়ক্তেহুপি সিদ্ধ্যতি কিং কর্ত্তরীতানেনেত্যাহ, কর্মনীতি।

⁽৪৮) নলোক। বিষয় বিশেষণমন্তামিতি ন্যায়াং উপদেন ভদত্ত-প্রতারো লভ্যতে কেবলন্ত, আদান্তবলিতিন্তারাং সিদ্ধাতীত্যাই উনারা-তেতি। ইহাধরামূলণন্ত্যা, লপদেন লক্ষণরা লাদেন উচ্যতে ইত্যাই বালে-লামামিতি। উন্ধানীতি কনিমন্তরেণালি কর্মাণিবলী, কমেন্ত ভাদেন, প্রমান্ত্রাম্ক ইতি। ন কর্মানিকর্ত্বতো গভ্যর্থকৈত্যনেন নিষেধে প্রাপ্তে বংপ্রন্ত্রাম্ভিলাবৃক্ ইত্যাহার্যাহ, কমেন্ত ক্ষান্ত্রং তংগ্রাম্কিন্ত্র। তেন, পরস্ত্রীমভিলাবৃক্ ইত্যাহার্যাহ, কমেন্ত ভোগানাং কাম্ক্রম, স্বাং কাম্কীত্যাদি। কবং, তব্সর্কগভন্ত মংপ্রতি ক্রিতিনঃ ক্রির্মানির। সভ্যাম্বক্রকত্ত জিক্র ইতি নামল্ল, ক্রিন্ত্রামিনিক্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত বিশ্বমানিতি ভারবেঃ ক্রেক্তি। লাক্ষ্

(४२) १८कटनोर्ड वियामाध्यमन्। १३३)

অনয়েরর্থযোপ্কেনোঃ প্রয়ের্ধের বঞ্জী ন ভবতি। ভবি
য়াতি—ওদনং ভোজকো ব্রহ্মতি, প্রামং গমী, প্রামং গামী;
আধমর্ণ্যে—সহস্রং দায়ী। ভবিষ্যদাধমর্গুয়োরিতি কিম্?

যবানাং লাবকঃ, অবশ্যংকারী কটন্তা। ভবিষ্যতি ণক্তা তু
তুম্প্রিতাব নিষেধাে নাল্যক্তা। তেন, বর্ষশক্তা শূরকঃ, পুত্রপোত্রাণাং দর্শকঃ।

১০০ তুল্যাবৈধ্রত্বােপমাভ্যাং তৃতীয়া

ু ৫৩। তুল্যাথৈরতুলোপমাভ্যাং তৃতীয়া বা।(৫০)

তুল্যাথৈথিবে ভ্তীয়া বা স্থাৎ। পক্ষে ষষ্ঠী চ। তুলাশ্চ-স্থো তুল্যশচন্দ্র বা, সদৃশশ্চন্দ্র বেত্যাদি। অতুলোপমা-ভ্যামিতি কিম্ ? স্ত্রীমুখ্যু তুলা পদাং, স্ত্রীমুখ্যোপমা শলী।

ভ্যামিতি কিম্ ! স্ত্রীমুখক্ত ত্না পদাং, স্ত্রীমুখক্তোপমা শলী।

৫৪। চতুথী বাশিষ্যাযুব্য ভদ্র কুশল স্থা২র্থ হিতাথৈঃ।

আশংসায়াং আয়ুয়াদ্যথৈরোগে চতুর্থী বা স্থাৎ। পকে

ইত্যাহ, দ্বিষঃ শতুৰ্বেতি। পাৰ্থেনাথ দিবমুবমিতি মাখঃ। দিবন্ অভিজাতত খল ইত্যাদি।

^{ে (}৪৯) পরক। অবশ্যংকারী, আবশুকে পিন্ ভবিষ্যতিত্যাদ্যভিধানাদিতি শেষঃ। অতএব, বার্তামাধ্যায়কপ্রভোরিতি ভট্টো তুমর্থ এবোদাহতম্।

⁽৫০) ভ্ল্যা। শত ব্ৰব্চনাদ্ ওণমাত্রেহণি তৃতীরেষ্যতে, সাদৃশ্বং গতমপনিজ্ঞ তৃত্বির তি মাখঃ। তৃল্যার্থেষ্পমাবর্জনাৎ ধর্মোবাচকত্বনবরোঃ

ষঠ্যপ্রাহকত্বক বিধেব্যঞ্জয়লাহ স্ত্রীমুখস তৃলাপল্লমিতি। চাক্রকাতরপরিশিষ্টরোঃ, ষঠ্যর্থে ত্ল্যার্থেরিতি সূত্ররভোশুলোপমান্তি ভরতে, তৃলাং বদাকুলাহতি দক্তবালসা। গিরিনোপমাম্পধতে গলভেতি প্রেরারাঃ। শতে তৃপদ্যম্বান স্থার্থেন তৃতীরেতি বছরি।

য়ন্তি। আয়ুবাং তে ভ্রাথ, তব বা, চিরং জীবিতং মাজে ভ্রাথ, রাজো বা; কদে, নজতে ভ্রাতব বা; কুশলং, নিরান্মরং তে ভ্রাথ, তব বা; হুবং, শর্ম তে ভ্রাথ, তব বা, অর্থ, প্রাজনং তে ভ্রাৎ, তব বা, হিতং, পধ্যং তে ভ্রাথ, তব বা।

৫৫। অধিকরণে সপ্তমী। (৫১)

অধিকরণকারকে সপ্তমীবিভক্তির্ভবতি। কটে গাল্ডে বিপ্র:।

৫৬। নিমিত্তাৎ কর্মসংযোগে। (৫২)

কর্মণা সংযোগে নিমিতাৎ সপ্তমী ভবতি। চর্মণে বীপিনং হন্তি, দন্তয়োহন্তি কুঞ্জরং, কেশেরু চমরীং হন্তি, নীমি পুধ্য-লক্ষো হতঃ।

৫৭। কর্মণীনস্তক্তস্থা। (৫৩)

⁽৫১) অধিক। সংক্লপং শক্ষাশব্দসংজ্ঞেতি স্থায়াদধিকরণশব্দেন কারক-বিশেষো শভ্যত ইত্যাহ কারক ইতি।

⁽৫২) নিমিন্তা। বহণাদানাদীনামবিষয়োহণি তৎক্রিরোকেশুনাত্রং, তদিহ, নিমিন্তং ব্যাব্যানাহ। তেন, চর্দ্মবিদ্বীপিনং হন্তীত্যাদো ন' প্রাপ্তিঃ। উদ্দেশ্ত ইতি বৰত্তকর্মনি পঞ্চমী, অপেক্রিতক্রিয়মপাদানং, নিমিন্তাদিতি কর্মনা সংবাদে সন্তি। তেন, কর্মসংযুক্তাৎ ক্রিয়া নিমিন্তাদিতি স্ত্রার্থঃ। হ্দনশু নিমিন্তং চর্ম্মক্তাদি, মীন্নি প্যাসকো হত ইতি সীমা মুদ্যঃ, প্যাসকো সন্ধা মুগ্রঃ। নিমিন্তাদিতি কিং, অসিনাদীপিনং হতি। কর্ম সংবাদ ইতি কিং, চর্ম্মবিশী মতঃ। হেন্দর্যে তৃতীয়াবাধকো বিধিরয়ম্। কন্তিন্তু, ভাষার্থা চত্বীবাধক ইতি ব্যাহটো, তমতে সর্মত্র প্রত্যালয়েশে চত্বীতি বিধেনঃ।

⁽৫৬) কর্মান। তারিউমস্থারেণ জারারাক্ত ইণ্যিকাতে ইত্যাহ তারিতে: নততেতি। অনুজে কর্মান চেং সপ্তমী বিধীয়তে বিতীয়ানিরভার্যমত ক্ষাহ

ত্রিতেন্ত ক্রম প্রয়েপে কর্মনি ক্রমী স্থাৎ। মধীতী ব্যাকরণে, পঠিতী তত্ত্ব, ভানকোন্তাদিকাদিকতপূর্বাদেরিশ।

৫৮। अथितिश्वदर्श । (१८) के अ

ঐশব্যে গম্যে অধিনা যুক্তাৎ সপ্তমী স্থাৎ, স্থ-সামিতাম্। অধিপঞ্চালেয়ু প্ৰকাদতঃ, অধিপ্ৰকাদতেমু পঞ্চলাঃ।

(क) उर्वा ययानिश्वम् । ((a)

উপেন যোগে যত্মাদিদিকং বিৰক্ষতে, তৃত্য সপ্তমী স্যাৎ। উপথাৰ্ঘাং জোনঃ।

৩০। সাধুনিপুণাভ্যাৎ শ্রশক্ষে।

আভ্যাং যোগেংত্তার্থে সপ্তমী স্যাৎ। মাতরি সামুঃ, পিতরি নিপুণঃ (প্রশস্যেতি কিং সাধুভূতিয়ারাজঃ)।

ভাৰক্ষান্তাৰিতি কৰ্মণা সংযোগে সতি, কৃতীক্ৰতীবৃদ্ধমতেৰু অৰাতিষ্ নীতিৰিতি ভটিঃ । ইনম্ভ ইতি কিং কম্পামাগ্লিষ্টতমঃ, কৰ্মনীতি কিং বৰ্ণেন প্ৰবাতীতি।

- (৫৪) অধি। ঐশব্যং সাম্যং তত্যোত্মনিউতাক বলা বস্ত বিশেষণকং বিবক্ষাতে, তলা তথালেব বঠ্যাং প্রাপ্তায়াং বচনমিদং, বলাহ জয়ানিড্যঃ, সম্বামিনো ব্যোরণি পর্যায়েণেড্যাহ, সম্বামিভ্যামিতি, অধীত্যানি, ব্রহ্মকজঃ পঞ্চালানাং আমী, ব্রহ্মনতক্ত স্বামিনঃ পঞ্চালা ইন্ডার্থঃ
- (৫৫) উপেন। প্রীণতিমতে বটা নিবভার্থং বচনম্ন কাশিকারতে বিভীরা নিব্রভার্থম্য কথমির বটা প্রান্থিং, বতোহধ্যারতভাষিকপদং ভবতি, বদা কর্মেরিবিছিভভাজত ভবতি, তদাহধিকো জেলং ধারীমিতি কর্ম্পু ক্রম্ভার্থ প্রথম, কর্মেণাহম্পু ভবং বিভিন্ন । বদা তুলক্ম বিহিত্তভাজত সাধ্যম্ভ তদাহধিকা ধারী জোণেনেতি কর্ম্পু ক্রম্ভাই কর্মেণাহম্পু ভাই ত্তীয়া প্রথমে ভবতঃ। অধিকা ধারী জোণেনেতি ভবতের্গমানান্থাই করণে ভূতীয়া তুল্পেণ্ডেন সাধুং। অধিকানধিকং জোণ ইতি ভ্রম্পুরের । সংক্রমান্ত্রির ।

७५ १ वर्ष्य किशो किशो हिरुम्। (१४)

नक किया वर्षक कियाहिकः उन्ह , उन्ह नस्त्री कार। १११ -

७२। यशी जीश्वकाशाम्। (৫१)

⁽१७) यम । क्विया छारवा ভावनावााभात देखि भर्यात्रः, वस्तार्मिका-সমুদ্ধ ইতি স্থায়াং, তংশলো লভাড় ইত্যাহ তত ইতি অক্সন্তেত্যভিধানাণিতি শেব:। নেহ শ্রানেন ভুক্তমিতি। ক্রিয়া চিহ্নমিতি বিশেষণং, তেন্ তৃতীয়া সপ্তম্যোবিধিরয়ং, কিঞ্চ ক্রিয়ায়া ধাতুবাচ্যায়াঃ সপ্তমীসভাবে। নাজীতি ক্রিয়া-বিশিষ্টং সাৰ্থমিত প্ৰভাৱবাচ্যং গৃহতে, সামৰ্থ্যাচ্চ ক্ৰিয়াবানেৰ বিশিষ্যত ইত্যাহ, গোছিত্যাদি, উভয়ত্র সংগ্রমী পুনঃ সামানাধিকরণ্যাৎ। নমু রাক্ষ-ণেযু ভূঞানেযু বুষলা আসতে, বুষলেযু ভূঞানেষু বিজা আসতে, পৰে-খাসীনেষু দরিল্রা ভূঞ্কতে ইত্যত্ত কারকার্হানাং কারকত্বে তবিপর্যাদে চ সপ্তমী वक्या हेछानाम् त्रवंशीयां भक्त श्रार्थः यक्त या त्रुवा क्रिक्त कृत्य । अमार्थः ব্রাহ্মণা ভুদ্মিক্রিয়ামর্হস্তীতি কারকার্হান্তেযাং ভূচ্মিং প্রতি কারক্ষং ব্রাহ্মণা-পেক্ষয়া বুদলভৃদ্ধিং প্রতি অকারকার্হা অপি তং প্রতি কারকত্বমৃ। এবং বন্ধ-ভূকিং প্রতি কারকার্হা অপি তেথামকারকত্বং, দরিত্রভূজিং প্রতি অকারকার্হা ष्मि (त्यार कात्करच विभव्यामः, एव वक्तग्रयत्तरेनव निक्रपारिकारिक चर्रामर्ट्याएकि चर्रा कांत्रकदायाः कांत्रकद्वायागा अन्दी ए० क्षित्यानिनः কারকত্বোগ্যভাবিপর্যাস্ত। অতএব, মস্য চ ভাবেন ভাবলক্ষণমিন্ত্রিত ৰক্ষেদাসীনেষু ক্রিড্রা ভূঞ্জ ইভাগাগ্রতং প্রবোভনেন। ইবং প্রীপতিমাপি क्षकारवंबामीत्मम् व्यवसादाः स्मत्र हेक्नारुः, स्माकतेष्ठितिष्ठि विक्शक्राा-দিভাশেচতি তৃতীয়া।

^{ं (}१९) वर्छ । स्वापत्रवात्रवाधिकः छत्त्रिन् गमा हैं जार्थः। स्वि है जार्गः क्रित कक्षितिवाहत्व हे जामगणिकज क्रणः, क्रुम बाज्ञात्व क्षीर्वाद्विकः।

व्यवागरत गरमा रागा जिसा जिसा विकार उनकि, उन्हर रकी-मक्षामा खरकः। क्रमकः बाखाबीर क्रमक वा, दक्रानंजः প্রাক্তাই কোশতি বা : ক্লম্বন্ধ কোশস্তং অবজ্ঞায়েত্যর্থঃ i

৬৩। স্বামীশ্রাধিপতি দারাদ সাক্ষিপ্রতি-ভূ প্রস্থৃতিক। (৫৮)

यामारिनार्राटन महीमखरमा याजाम्। नवाः यामी, গোষু স্বামী: গ্রামীশরঃ, গোষীশ্বরং, গ্রামধিপতিঃ, গোষ-বিপতিরিত্যাদি।

৬৪। আযুক্তকুশলাভ্যাৎ তাৎপর্যো। (৫৯)

তাৎপর্য্যে গম্যে আভ্যাং যোগে ষ্ঠীসপ্তম্যে। ভবতঃ। चायूलः कठेकत्रत्भ, कठेकत्रभण ता ; कूनलः (मनात्राः, स्वाता বা। তাৎপর্যা ইতি কিম্ ? সায়ুক্তো গোঃ শকটে। ৬৫। যতো নির্দ্ধারণম্। (৬০)

याजी, कांजि थेन किया जिः ममुनाग्रारमक मिणा श्रथक कत्ने নির্দারণং। ততঃ ষষ্ঠীসপ্তম্যো স্থাতাম্। নৃণাং (মধ্যে) ক্রিয়ঃ

⁽१४) श्रामी। शामार्थ वक्तर्या-शामाक्तिकखब्दाव्यर, भवावनकाखन-নিরাসার্থয়।

⁽४३) चात्रुकः। ७९ भव्रव्यामकनिष्ठे चत्रा छावकाश्मर्गम् । चात्रुकः कहे-क्रवर्ष देखि राभाष देखार्थः, निषाममारम क देखार्थः, नाक्टिवरक छू, जा-युक्ता भी: निवस हेछार्थः। कर्षाव कूननः निक्कि हेछार्थः, अभिकारन বন্ধাৰ্থৎ বচনমু, অৰু তাৎপৰ্য্যমন্তরেণাপি সমন্তৰকৰা ৰচী ৰ প্ৰতিবিকাতি চাঙ্গে প্রত্যাধ্যাত্মতৎ।

^{ু (}৬০) বড়। রতো নির্দারণং ততঃ যঞ্জিম্প্রমো স্যাভার। পঞ্চরী ভু ৰ নিবৰ্জতে। বৰ্জমানমিশ্ৰাস্থ জবেয়ণাপি নিৰ্দায়ণ ভবতীতি বদতি।

मृत्रजबद, मृद् काः, गतार (महबा) क्रका त्रीः मण्यता कीत्रजमा, (भार वा : अक्षत्रामार बावल: जीवलमा, अध्यत्मद् वा । ৬৬। বিভক্তবি পশ্মী (৬১)

'विडान युक्ताविदात्रात शक्यी छार। मधुदाः (खोरप्रडाः আচ্যতরাঃ, অন্তনরেভ্যঃ ক্ষতিয়ঃ শুরভমঃ। ৩৭। প্রসিতোৎস্কাভ্যাৎ তৃতীয়া বা।(৬২) बाड्याः (शार्गश्विक्तर्य कृतीया वा खार । भरक मश्रमी ह । কেশৈঃ প্রসিতঃ, কেশের বা ; কেশুসুক্ত হকঃ কেশেরু বা।

৬৮। লুবন্তনক্ত্রাচ্চ। (৬৩)

बचार ज्जीवामक्षत्या ज्वडः। भूत्रान भावनमधीवार, পুষ্যে व।। सूर्वात्भारमश्रामा सून्। व्यक्तिकत्र हेट्डात, व्यम् श्रुषाः ।

> ইতি শ্রীপদ্ধনাভদতকতো তুপল্ল-ব্যাকরণে দ্বিতীয়স্মাধ্যায়স্ত ৰিতীয়: পাদ:।

⁽७) विख। विख्यः यग्नः, न भूनश्व निर्वातन विख्यामानः, रचन नवार কৃষ্ণা পৌঃ ফীরিণীত্যত্র ন স্যাৎ। অক্তে তু, বত্র রাশীকৃত্স্য পুরুকরণং তত্ত।

⁽७२) अति । चतु अनिष्णकः किः खन्यहनः १ क्रियोयहरना या, ज्यात्र ক্রিয়াবচনঃ, উৎস্থকসাহচণ্যাৎ, ডথাচামরঃ, তৎপরে প্রসিতাসকা বিষ্টার্থেছ-ৰুক্ত উৎস্ক ইতি। ধৰা, ভবত্যা উৎসুকো রাম: প্রসিতঃ সক্ষেত্র তে रेखि छि:।

⁽७०) मृंब। मुश्नेरमनाज एकिएअएउप्रमुश्नेपरिमान अर्गर नास्नाः म्भारक देखि मृभ्, बादमार कर्नान किन्, यदा मृश्याकन मृश्यादिका পুপ্তপচারাৎ, স এবাজো বন্ধ তত্তা। তেন, লুপ্তবিভাত্তলকণমাত্রা-দ্ধিকরণে তৃতীয়াসপ্তম্যো তবতঃ। পুৰস্তেতি কিং মধাসূঞ্জঃ।

^{🕆 🗆} ইতি শ্রীবিভূমিগ্রন্থতৌ স্থপদ্মবন্ধদে মঠো বিশ্বঃ।

"श्वंख श्रकत्र गर्।

ं चथ विजीवाधीयंग्र

তৃতীয়ঃ পাসঃ ব

১। স্থিউত্তং পদম্। (১)

[হপ্তিভত্তং ১৷ (হুপ্-ভিড্-অন্ত-) পদং ১৷]

शिक्षांवरको यावर, जावर भगनःखार ज्वेषि । त्वताः, त्क्रमः, निमञ्ज वः । अखर्वर्लिनीः विज्ञानिका भनक्रम् । त्क्रमः । ममात्म त्नाज्वत्रभनाक्षविद्यो । भन्नमवाद्यो, भन्नमधिन्यो, भन्नमताक्ष्यो, भन्नमिक्षत्यो, अख क्ष्र, एक, एक, नत्नाभाः न श्रीक्षाः ।

			স্থ	वहनानि	1				
প্ৰথমা	धकवहनः च			षिवष्टनः खे			ৰত্ৰচনং জন		
ৰিভী রা	**	**	ष्यम्	29	,,	40	39	,,	भम
তৃতী য়া	,,	,,	है।	,,	••	ভ্যাৰ্	37		তি স্
চতুৰী	*1	>>	(8	>+	**	ভাাম্	97	19	ভাস্
শঞ্মী	,,	3>	ঙিস	**	,,	जाम	19	49	ভ্যুস
वकी	<i>p</i> •	3*	डम्	3,	,,	%म	21	75	আয
সপ্তৰী '	13	>>	fs	97	,,	18 BY	**	7>	च् भ

⁽১) श्रुशि। छण् ह जिल्ल ह त्र्ण् जिल्ली, रही खरको स्वत्रायी तत्र जर प्रिक्त्य । त्राद्राको वावस्त्रका त्राशितहनः, देश जिल्ल्याहरू वावस्त्रकार स्थ् भ-् । अग्रावास अप श्रुकावि जिल्ला न भूनः मश्रुकी वहत्रहमः, न मश्रुकावि जिल्ला न निर्देश स्थ विश्वास विश्वा

অন্তি বিষয়ে ক্যপ্রত্যে নাম্ভ এব প্রদাংজ্ঞঃ স্থাৎ। রাজী-যতি, কালায়তে, প্রদায়লোপঃ। ন ইক্তি কিম্? বাচ্যতি, তপ-স্থাতি, পুংস্থাতি, কৃত্-বিদর্গ-সলোপাঃ ন প্রাপ্তাঃ, অন্তাবিতি-কিম্? রাজনীবাচয়তি রাজস্থাতি গুরো।

৩। সুপ্ত দ্ধিতে ইয়চি। (২) [স্থদিতে (স্প্-ডবিড) গা, অরচি (ন-ব্-অচ্) গা]

যাদ্যজাদি বর্জিতে স্প্তব্ধিতে পরে, পূর্ববং পদসংজ্ঞং ভবতি। রাজা, রাজভাাম, রাজত্ব, রাজতমঃ; শারুচীতি কিম্? সাল্লি সাধু:—সামন্তঃ, রাজানো।

লভ্যতে কিমন্ত গ্রহণেন, মৈবংবালীঃ, পদসংজ্ঞায়ামন্তগ্রহণং জ্ঞাপরতি, অভাত্ত সংজ্ঞাবিদে তদন্তবিধিন জ্বৌত। উদিতে বিবিন্তাত উকারেকারমাতঃ বিসংজ্ঞকং ন তু তদন্তং, অতএব দল্যে যান্তমিত্যালো হরিহরাবিত্যোবাদাহরতি। দেরাঃ, ক্ষেমং, দিশন্তবঃ, ইতি পদসংজ্ঞায়াং সভ্যামিষ্ট কার্যাত্ত্রহং, বিমর্গান্ত্রার বসাদেশাঃ, নবিহ অন্তশক্ষোহবয়বচনঃ সভোরেব স্থপ্তিভাঃ পদাব্ররজ্ঞ দল্পতান্তর্হি লুপরোভ্যনাং কবং পদাব্যবজ্ঞং যেন পদসংজ্ঞান্তসঙ্গ দল্পতান্তর্হি লুপরোভ্যনাং কবং পদাব্যবজ্ঞং যেন পদসংজ্ঞান্তসঙ্গ ইত্যাহ অন্তর্বন্তিনীমিত্যাদি অভএব ক্রমান্ গ্রণনামতি নিত্যং ক্ষেম্বন্ত্রার ইত্যক্ত অসমাস্থ্রহণং, র্ববস্ত্র্যবদ্ধাবিত্যক্ত নলোপনিধেবক্ষেয়াহ সমামেনেত্যাদি, কুত্তত্ব হত্ব লোপা ন প্রাপ্তা ইতি, এমু যথা সন্তব্যক্তি ক্ষেত্র ত্বাৰ বিরাদের্য প্রাপ্তপ্রসক্তর্তা ইতি বাবং।

(২) ক্পা । ক্পান্ত ইতি সমাহারণকঃ, উত্তরেতালামিতি ক্লায়াৎ বাদ্য-লাদীতি নারং প্রস্কাঞ্জিবেশঃ, পর্বাসপ্রতিষেধঃ ইত্যাহ বর্জিত ইতি সপ্তম্যাক পরে তন্মিমিতি ক্লায়াৎ প্রমিতি, রাজেতি প্রেবাণি পদত্ত্ সিতে ব্যাপ্তার্মিহপ্রস্কান ।

৪। ন তদৌ মন্বর্ধ ক বন্ধি নভে হিলিরো মনুষঃ। (৩)

[न•১।, छ त्रो ३॥, सक्दर्य था पक्षि ४॥ सफन्, अक्रिक्त, सब्दा था।

মন্বৰ্প্ৰভাৱে তান্তনাতো পদে স ভাগভাষ্। মক্তান্, যশন্বী। বতি, নভ আদেশ্য (পদত্তং ন) নভইব নভন্তং, জঙ্গি-রস্থং, মনুষ্থ।

৫। यि छ्यमानिकादन।

[यह (वं वह) ११, ७म् ४१, क्यांविद्यात (न-माविकात) १।]

যাদাবজাদৌ চ সুপ্তদ্ধিতে পরে সাদিস্থানবর্জ্জিতে পূর্বং ভসংজ্ঞং স্থাৎ। যি-গার্গঃ, অচি-রাজ্ঞঃ-ভৃত্বাদলোপঃ, অসাদি-স্থান ইতি কিমৃ ? রাজানৌ, সামানি।

৬। শিও সুট্ চাক্লীবস্ত সাদিস্থানম্। [শি: ১া, স্বট্ ০১া, অক্লীবস্ত ৬া, সাদিস্থানমং ১।]

জশ্শদোঃশি অনপুংসকশু সূট্ চ সাদিস্থান-সংজ্ঞানে ভবতঃ। শিঃ-কুণ্ডানি, স্ট্-রাজানো, পুমান্, পুমাংসো সাদি-স্থানে দীর্ঘঃ, পুংসঃ পুমান্স্চ; অক্লীবন্ত স্ডিতি কিমৃ ? সাম, সামনী, ন দীর্ঘঃ।

৭। উদিতো যিঃ সখ্যসমাসপতিবর্জম। [উদিতো (উৎ-ইড) সা, ঘি: সা, সধী অসমানগতিবর্জন্ মা] (৪) উদিতো ছিসংজ্ঞাকো স্থাভাম্। বায়ুনা, হররে, অগ্নেঃ, মডৌ

⁽৩) নত। মন্ত্রানিভাত্র পদস্বাভাবাত্ তীয়াভাবঃ। মন্বর্ধাহর্ষো বস্ত ব মন্তর্ধঃ। ভারসান্তাবিভি অস্তর্ভু ততকারসকারাবিভার্বঃ।

⁽৪) অত্রাস্থ্যসন্ধাসপতীতি সিদ্ধে বজমিত্যক্ষরধৌরখেন জ্ঞাপরতি কচিদুনব্যোর্থসংজ্ঞা ভাতেন, সধিনা বানরেজেন, পতিনা রাম্বরে চেড্যানিকং
সিক্ষু। বচীযুক্তাক্ষেদনিবেতানেন, সীতায়াঃ পতরে নম ইড্যানিকং জ্যের ।

পদ্যস্থান্ত বাৰ্থনিকি কিন্তু স্বাধ্য দৰো, বহুমধ্যা, পত্যার পত্যে, পত্যা। সমাসে তু ভবভ্যের শ্রীপতিনা, উমাপ্তরে।

b । खी खीयूठी नियुद्धी निषी । (৫) [को - भ, बोर् - भ, ह - भ, बनियुद्धी (न- रेंब्- केंद्र) भ, नहीं ० भ]

জীশকঃ জীলিকাৰীদৃতে চ ইমুবোরবিবরে, নদীসংজ্ঞ-কোতবতঃ। জীবুইতাবিত্যক নির্দেশঃ। জিয়ৈ, হেজি, হে নদি, হে বরু, ধীবলৈ, মনামে। অবমনজীবিষয়তাৎ পুংস্তেও হপি নদীতঃ) অতিলক্ষাে বিপ্রায়, বহুপ্রেয়ভাং বিপ্রে। ক্যে কৌ। নারীমিচহতো নারীবদাচরতো বা, নার্যাঃ বিপ্রস্তা। অনিমুবাবিতি কিম্? হে শ্রীঃ, হে শ্রীঃ, হে জাঃ।

⁽৫) স্ত্রী। ব্রীষ্ ইতি ব্রিবাে ব্রে ক্রীষ্, ন প্নং ব্রিয়াং ব্রে ক্রীষ্, পদান্তরল্যোত্যে স্ত্রীব্রেহিপ লিক্ষবিবর্তাহক্ষের কর্মধাররে তু শক্ষার্থ প্রবিক্তাহক্ষের কর্মধাররে তু শক্ষার্থ প্রবিক্তাহক্ষের কর্মধাররে তু শক্ষার্থ প্রীক্ষক্ত লাইছং বিধারতে। অব ষ্ ইতি কিং কীর্ছেদ্তাে ব্রুক্তি নিশ্বেল বিরক্তরাহ ক্রীষ্ট্রেরিক্তাহিক নির্কেশ ইতি। ভিতিহক্ষে চেতি বক্ষ্যমাণবিধেঃ, অব বক্ষয়মাণবিরের ক্রিক্তিরিক্সকাৎ অক্ত বিধেঃ সামাক্সরিবর্ত্বিতি ভাষ্যমতমাবিক্ ক্রিল্ অবর্বর্ত্তীবিবর্ত্বাৎ প্রক্তেই হপ্তীতার্মর্থঃ। অতি লক্ষ্যা শক্ষক্ত প্রোচিত্বেইপি কর্মানক্ত ক্রীবিবর্ত্বাৎ পুরুক্ত দ্বিতি শেষঃ। কের্য ক্রীবিবর্ত্তার্মন্তি হোল ক্রিক্তি দ্বার্থার কিপি সভি অব্যব্দ্তাই বিবর্ত্তার্মন্তি। কারীবিক্তিত নারীব্রের্তার কিপি সভি অব্যব্দ্তাই বিবর্ত্তার্মন্তি। কারীবিক্তিত নারীব্রুক্তি ক্রিক্তি হিতক বির্ত্তিক ক্রিক্তির বিরক্তিত । বর্জ বাধ্বাবিষ্কের ক্রার্থ তঃ, তত্তাপি নদীভ্রিক্তিক্তান্যালয়ঃ। হে প্রবি! হে বর্ষাক্ত ইতি। নদীপ্রক্তিশ্বা আন্
ক্রাভিক্তিত্যব্রাক্তর। হে প্রবি! হে বর্ষাক্ত ইতি। নদীপ্রকেশ্বা আন্
ক্রাভিক্তিত্যব্রাক্তর।

৯। বাস্ভিতোঃ সেবুবাবলী শ্রীমে হ। ভিতি ইমৌ চ।

বা - সা, আম্ভিডো: পা, সেইবর্গ সা, জারী (ন: ইট) - সং ত্রীবেল গা, হি - সা আমি ভিতি চ পরে ত্রীবর্জন সেবুবেল নদীসংজ্ঞকো বা ভবতঃ। প্রিয়াং জ্ঞান্য; ক্রবাম্, ক্রেরাম্, প্রিয়ে, প্রিয়ে; ক্রেনে, ক্রেরে; প্রিয়াং, প্রেয়াং, প্রিয়াং, প্রেয়ি; ক্রেরাং, ক্রেরি। ভিতিইস্বে চ। হেরপ্রাদঃ। মত্যৈ, মত্রে; ধেরে, ধেনবে; অজ্ঞীতি কিম্প নিত্যং স্ত্রিয়ে, জীয় এবেতি কিম্ণ অতিপ্রিয়ে বিপ্রায়, সুমত্রে।

১০। চিহ্নার্থমিৎ। [চহ্নার্থ ১া, ইং •১।]

চিহ্নপ্রোজননিৎ সংজ্ঞং ভবতি। এতীতি ইং। সন্, যঙ্ চঙ্কিকিচে সর্কাবিত্যাদি। (৬)

১১। ইতে বিলাপিঃ। [ইভ: ৬, লোপ: ১।]
ইৎসংজ্ঞকস্তা লোপঃ স্যাৎ। বুজুষতি, সংবিৎ। (৭)

১২ । সুপোলুগব্যয়াৎ। [রণ: ৬।, লুক • ১।, অব্যয়াৎ ৫।]

ষ্ব্যরাৎ পরস্য স্পোলুক্ স্যাৎ। স্বঃ, প্রান্তঃ, চ, বা, বৈ, বিপ্রবং, কৃষা, কর্তুঃ, উচ্চৈঃকারম্।

५७। बेकार्या छ। [बेकार्या भ, ह • भ]

একার্থিভাবে হুপোলুক্ স্যাৎ। পুত্রীয়তি, হংসায়তে, রাজপুরুদঃ পৌর্কশালঃ। (৮)

⁽৬) বামা। জাত ত্তীশদঃ পর্যদন্ধ, হি শক্তোহরগারণে। হিড়ীতি স্থাং প্রকৃত্রহে। (৭) ইতো। লোপোহদর্শনমুন

⁽४) केका। नशामाः बाल्डाटेन्नर्यानः, नतन्त्रत्रवकार्यामार रवात्रक विकार्याम्।

.. ५८ १० उद्दर्भ वष्टनाम् ६ व्यक्तमः वरणव २। १

मृद्धः किर इंटलानुक् नगर 📭 कीयू विकासि 🕮 🐇

১৫। অব্যয়ীভাবাদনতঃ। (৯) [ব্যুম্ভানে ল, কনতঃ (ক্রুব্নু)লে]

ষ্বায়ীভাবাৎ স্থানুক্ ন্যাৎ । উপান্ধি, মধিন্তি। খনত ইতি কিম্ ? উপকৃন্তম্।

561 खट्टा स्म १४ मा स्ट्रिकेश में स्ट्रिकेश में कि का विकास की विकास की कि का कि का कि का कि का कि का कि का कि

ভাদব্যমীভাবাৎ স্পোহম্ ভবতি। উপকৃষ্ণং, অপক্ষমা ইতি কিম্ ? উপকৃষ্ণাদাপতঃ। তৃতীয়াসপ্তম্যোদ্চ বা,
উপকৃষ্ণে, উপকৃষ্ণে, উপকৃষ্ণে বা। ব্যবস্থিতবিভাষয়া, ঋদ্ধিনদীসমাসে কিত্যম্ সপ্তম্যাঃ, স্থমদেং উন্মতগঙ্গং
ধেহি। অত ইতি কিম্ ? উপাগ্নি। (১০)

১৭। इन्छा १११ स्ट्राली शिनी शिष्ट । (১১) [इनडामः (इन्, की, वाम्) का, स्ट्रामः ।, नोर्वाः ।]

ফলন্তাদেঃ স্থলোপঃ স্যাৎ। বাক্, নদী, মালা। আপ ইতি
যাপতাপাদেরেকদেশস্যাপি (আকারস্থা) গ্রহণম্। কারীদগদ্যা,
দেবতা। হলঙাপে ইতি কিম্ १ धीঃ, লক্ষ্মীঃ, শুভংয়াঃ। দীর্ঘাদিতি কিম্ ং নির্বারাণসিং, ধৃতমালঃ।

⁽৯) অব্যরী। সংরপং শক্ষাশকলংক্তেতি ভারাৎ স্বয়য়ীভারপদেন অব্যরীভাব সমাস উলুভে।

^{🐸 (}১০) অতো। সপ্তমীপঞ্চমদর্শিভামমিতি পারিভাদর: । ।

^{ে (}৬%) হক্ত ইর হল্মহধ্যনর্থক, রতত্ত্ব সংগ্রহণ সোলে লাকেবাথাত-

১৮ । এ**उर्श्वाद नयु (वर्ष** क्रांत्र नाव नाव क्रांत्र का नाव क

১৯। হ্রম্বন্স গুণো বা তু ক্লীবে।

[द्वरण का, क्षाः अ, वा का, जू का, क्रीरव १।]

সমৃদ্ধিশ্যন্ত্রিনো ব্রমান্তন্য গুণঃ স্যাৎ। হে করে, হৈ থেনো, হে কর্ত্তঃ। কাজু ক্লীবে, হে বছরে, ছে বারি বা, হে কর্ত্তঃ, হে কর্ত্ত্ বা; কথং হে নদি? ব্রম্ববিধানসামর্থ্যাৎ ন গুণঃ।

২০। মাতুর্মাতো ২ছৎপুত্রার্থে কিপি। (১২)
[মাতৃ: ৬। মাতঃ ১৷ অর্হৎপুত্রার্থে (অর্হৎপুত্র-অর্থ) ৭।, অকলি (ন-কণ্) ৭।]

অৰ্হৎ পুত্ৰাৰ্থে মাজু: সমুদ্ধেষ্যতঃ স্থাৎ। হে গাৰ্গীমাতস্থং ধন্মোদি। অৰুপীতি কিম্? হে গাৰ্গীমাত্ক।

ব্যতে। আপ ইত্যাদি নম্ববিদ্প্রহণেনানর্বকভেতি স্থায়াৎ আবজাদেব স্বোপো ভবিষাতি ন ফাপ্তাপাজাং, । তৎ ক্ষমুক্তং আপ ইতি বাণ্তাপাদে-রিত্যাদি নত্যং, তত্ত্ব তত্ত্ব পকারকরণনামধ্যাৎ, অন্তথা বৈর্থপ্রিসক্ষঃ। করীষ গন্ধসাগত্যমিত্যণ্। ধ্যায়তি দ্যাতি বা ধীঃ। লক্ষ্যতি প্রয়তি মহাজং, লক্ষা-দের্মঃ ততঃ ইস্ক্রেতি ইং।

⁽১২) মাতৃ। অর্হতঃ প্তভার্থ ইত্যদেন প্জাপ্তাৰ্ভপদার্থ ইত্যক্তং তেন প্তভাবিতি তাৎপর্যাৎ, অবপীত্যদেন সমাসাভবিদ্ধিরনিত্য ইতি স্চিতং, বহুরীহিনিতি চ মাতৃকভ শ্লাদের । প্তভাতী সমৃদ্ধাবিতি প্রীপতিঃ। সমৃদ্ধী মাতৃমান্তঃ প্তেহইত ইতি প্রবাধমঃ, নল্যতলেতি কপোহপনার ইতি চ। মাতৃনিত্যদেনককপোহপ্রশক্তী বসকশীত্যকং অদেবং প্রতীমঃ নির্বদান্তালপরাক্তাক্ত প্রবাহতে মাতাকেশ এক প্রস্তুতে, বলাতৃ ক্লাচিৎ প্রস্কাশ্রিত্য কশ্ প্রস্তুতে তলা ন ভাবিতি, কিন্তু সমৃদান্তাকেশ্বেশক্তিত্যদ্ধি ইতি কিং গার্মীমান্তঃ কলে তলা ন

२५ । इट्यार्श्वार्थ-नजी-शृंदक्ष्युक्तस्याम् ।(५७)

मञ्चलकार द्वार कार। द जन ! द जन ! द जा ! ! द जा ! द जा ! ! द जा ! द जा ! ! ! ! !

২২। এদাপঃ। [এং • ১া, আপঃ ।।
সমুদ্রে রাপ এন্তবতি। হে বালে। হে মালে।

২৩ | ভবন্তগবদ্ঘৰতাম্বাবন উস্ | [ভবং,-ভগবং,-অধবতাম্ খ্যা, বা ১১, বনং খ্য, উস্ ১৯]

এবাং সমুদ্ধের্বন স্থানে উদ্বা স্থাৎ। হে ভোঃ, হে ভবন্; হে ভগোঃ, হে ভগবন্; হে অঘোঃ, হে অঘবন্।

२८। उन्निद्धारमादना वा न्या ह। [उन्निद्धार मा अ, नः अ, वा न्या व्यक्त प्राची कर हिल्म]

উশনসঃ সম্বুদ্ধেঃ সম্প্র নোবা স্থাৎ, লুখাচ। হে উশনন্-হে উশন্, হে উশনঃ।

২৫। প্রচেতসোরাজনি রো বা। অচেতস: ৬।, রাজনি ৭।, র: ১।, বা ০১।

⁽১০) দ্রবো। সমার্থাছর্থে বেবাং তে কথা, সমাপর্যায়া ইতার্থঃ। ইবাহমানকো হি চিকরস্তৎসাহচর্য্যাৎ অপরোহপাকার্থো গৃহসালো বিসর্ক এব পৃক্তে ইত্যাহ তলকবতীনাৎ বহস্করাণাং সমার্থানাং দ্রীপার্থ ক্রবো ন কাছিতি কলিভার্থঃ। তৎপুক্তবেহুপি ভাগকত ক্রবং ক্রাং।

স্ব দেৱত নাকনি পাবে শোৰোৰা আছে। তে প্ৰচেতা-বাকন, হে প্ৰচেতোরাজন । স্ব দেৱিতি নিয়ত্ত্ব । ২৩। অফীন আছি। স্থাপি । বহন সামাধ্য সাধ্য বিশি গ

স্থাপ কটন সম্বিনো নিজাৰা জাই। অন্টো, কই বা অকাভিঃ অকভিবনি অন্তার্থেইপি—প্রিয়াকীঃ প্রিয়ানী, পকে-প্রিয়াকী প্রিয়াকীনে।

২৭। জশ্শসোরফীভ্য তঃ স্বার্থে। [শশ্বনা: খা, অষ্টাভ্য: বা।, উ: ১৮, স্বার্থে ।]

কৃতাত্তাদেউন্-শব্দাৎ জশ্শসোরোঃ স্যাৎ। অক্টো, খ্রেটা, পর্মান্টো স্বার্থ ইতি কিম্ ? প্রিয়ান্টাঃ বিপ্রাঃ।

২৮। ডতিষ্ণন্তসংখ্যাত্ত্যালুক্। [ডভি ফন্ (য্.-ণ্, অস্তসংখ্যাত্ত্য: ৫॥। লুক্ ০১।]

ডতি প্রত্যান্ত, ষকারনকারান্তাভ্যঃ সংখ্যাভ্যে। জশ্শ-সোর্ল্ স্যাথ। কতি সন্তি, কতি পশ্ম, ষট্, পঞ্চ, মপ্তা, নব স্বার্থইত্যেব প্রিয়ক্তয়ঃ, প্রিয়ক্তীন্, প্রিয়পঞ্চানঃ, প্রিয়-

২৯। অম্যতৈকঃ পূর্বো ২ক্। [আম গা, অভা, খা, একঃ ১া, পূর্বঃ ১া, অকৃ • গাঁ]

অমি পরে জস্য অত। নহ পূর্ব্বোহ্নোকো ভবতি। দেবং, রমাং, কবিং, নদীং, ধেনুং, বধুম্।

७०। मिन मीर्घंड श्रूरिन कू मन्द्र त्नार्शित्रितः।

শনি পরে তস্য শতা সহ পূর্বোহগ্ দীর্ঘাভবতি। জায়। নদীঃ, ধেনুঃ, বধুঃ; মাতৃঃ ; পুংনি তু সদ্ধ ন বিঞান, কবীন,

वायम निष्म जनगरितिकि निम् न नास्त्रीर जिल्हा प-(श्रनाः, छुविकाः। हाराजवा । हारीः राहा, राहान् वा। ज ७५ । मात्रि । नाकिका

व्यागारमरण नामिश्दत शृत्काश्य मेर्सा छवछ । स्वा-बाय, बाबाबीय, अक्षीनाम, नातीगाम, त्यम्नाम, वर्नाम, পিতৃণাম্, নামীতি কিমৃ ? কর্মণাম্।

७२ | नृगोम् तो | [नृवाम आ। वा • भा

नृशक्तक मीर्य। वा कार्य। नृशाः, नृशाम् वा।

৩৩। ন তিসুচতত্রোঃ। [न -১।, ছিহু, চতলো: धा]

অন্যোনামি ন দীর্ঘঃ স্থাৎ। তিস্পাম্, চতস্পাম্।

৩৪। ত্রিচতুরোঃ স্ত্রিয়াৎ তিসূচভস্রাবচি তু রান্তাবনামি। (১৪)

্রিক্তি, চতুরোঃ ৬॥, বিরাং ৭।, তিহু, চতক্রো ১॥, অচি ৭।, তু ০১।, রাস্কৌ

अ, व्यनामि १।

501

স্ত্রীলিঙ্গে বর্ত্তমানয়োঃ ত্রিচভুরোঃ স্থানে ভিস্কচতস্থ ইভ্যেতে ভবতঃ ৷ তিস্ভি:. চতস্ভি:, অচিতু রাস্তৌ, তিজ্ঞঃ চতজ্ঞঃ,

⁽১৪) বিচ ৷ প্রভাষাৎ ব্রিয়ামিতি বিচতুরোরের গ্রহণং ন সমাস প্রকৃতেরিত্যাহ, ক্রীলিকে বর্ত্তমানব্যোরিতি। **অ**চিত্র রাজাবিতি **আয়েছেলি**র চি রাস্তাবাদিস্থেতে, ন চ বাচ্যং ইকোষণচীতি সিদ্ধাতি, কিষনেনেতি জ্ঞ বাধকবাধনার্থতাং ৷ তেন রেফবাধকানি থানি ঋতোভৌটোরিত্যাদীনি ল প্রব-র্ত্তমে, নবাবং পরত্বান্নিত্যতাক নামাদেশে। ভবিষ্যতি, তভোহলাদিতাকেক-क्षात्रिक माधीयमी। एका निरम्धः किमननप्रणार, देमनश्रतिष्माचनक्षित्र शायार. अवत्रमध्यकृष्णाविणात्वभः व्याजातात्वभः वाविष्योत्हे, अव ववातामानीष्टि-बांबालीः, विक विधेवहवहत्म भारत दिवनः क्षांविश्विष्ठ क्या कीर्यः क अवश्रक्षक

শাসি কিটাৰ ভিতৰাং চতকাং, বিশা অধনিসংহত, প্রিয়াকিন্দো যদ্য দ প্রিয়তিনা প্রিয়াক্তমা, প্রিয়তিনো, প্রিয়চতন্তো, নাভনিসভ ত্রীক্ত, প্রিয়াহ ক্রোযভাং দা প্রি-য়াডিং, প্রিয়চ্ছা ন্ত্রী।

৩৫। আমোনাং রযনান্তসংখ্যা <u>হস্বনন্তা</u>-পত্তে স্তর্গ্রু

ষ্মাম: ৬।, নাং •১। র-র-নাস্ত সংখ্যা, জ্বর, নম্যাপট্টা, ত্রে: ৬।, ত্রয়: ১।, চ•১।

রেফ, ষকার, নকারান্ত সংখ্যাভ্যো, ব্রশান্তাৎ, নদীসংজ্ঞান্তা কাল্ডি পরিস্থামো নামাদেশো ভবতি। রগনান্তসংখ্যাভ্যঃ স্থার্প এব-চতুর্ণীম্, সগ্গাম্, পঞ্চানাম্ পরমপঞ্চানাম্, নেহ প্রিয়-পঞ্জাম্; হ্রশ্বাৎ—বিপ্রাণাম্, কবীনাম্, বায়ুনাম্, তিস্পাম্ নদ্যাদেং—নদীনাম্; লক্ষ্মীনাম্, নারীণাম্, ভীরণাম্, আপঃ

বেন ভিস্চতন্ত্রাবিভি দীর্ঘনিষেধা বিধীয়তে সভ্যম্ নামীতি বক্তব্যে ঘদনানীতি সমস্তং নির্দিষ্টং ভক্তন্তাপরতি নকারোপলনিতে রেফাড়াদেশোন প্রবভূত ইতি। তথাহি আন্তাবন্নামাদেশনকারোপলকিত ক্তেনাল্ডাপি যোমুমাগমং নকারোপলকিতান্ত্রাদি প্রভায়স্তম্মিন্নপি ন প্রব প্রতে যথা, প্রিয়ভিস্থী,
প্রিয়চভস্পী কুলে। যদা তু সমাস প্রকৃতিঃ পৃথ নপৃংসকয়োর্যভ্রতি ক্রিচভূরী
চ বিরাং ভদাপি ভিস্চতন্ত্রে ভবত এব, ন শকাপ্রয়ে গৌণস্থাব্যবহার
ইত্যাহ স্তিরা অঞ্চলিক্ষভেচিতি প্রাকৃত্তিয়াং প্রবৃত্তিরনন্তরমন্ত্রনিক্ষে রভিঃ
মমাসাং। ভবৈবাদান্ততং, কিঞ্চ ত্রী ক্রিচভূরক্ত ভিস্ক চভস্ক ইভি স্করঃ
বিধার প্রিরভিস্থ প্রিরুত্তি প্রিরুত্তিস ভিস্কার্তার,
সমতে তু নিভামেন, ভবাহি ভাষাটীকাক্তা, প্রাক্ষকার্য্যং নিমিণ্ডতে
সমোস্কার কার্যভাগ ভিস্ক চতস্থ নিভামিত্যক্তা, ব্যাক্ষকার্য্যং নিমিণ্ডত
সমোস্কার কার্যভাগ ভিস্ক চতস্থ নিভামিত্যক্তা, ব্যাক্ষকার্য্যং নিমিণ্ডত
সমোস্কার কার্যভাগ ভিস্ক সমাসপ্রকৃতি বিরুত্ব তিল্লেন ব্যান্ত্রমত্ব ক্রেম্ব ক্রেম্ব ক্রেম্ব ক্রিম্ব ভিস্ক বিরুত্তির প্রত্তির বিরুত্তির বির

थष्टीमाम्। (ब्राह्मण मार्थक्य। खन्नानाम्, नाश्रमाहर्षः शिक्ष-कोनाम्। क्षणः कट्यक्ति किम् १ धनानाम्, जामकाम्, शासम्।

७७। निना जिया मदनादमः।

িটা • সা, না • সা পরিরাষ্ (ন-রী) গা, অংশব্দেঃ (অনস্-বি) গাই আনসোধ্যক্তাক পরস্তানা স্যাৎ । অমুনা, বালুনা, মধুনা (১৫) প্রবিপ্রভিষেধে সুষ্ ন ভবভি । অল্লিয়ানিতি কিন্ ? অনুয়া রত্যা।

৩৭। অতফা ভিদ্ঙে ডিনি ডনামিনৈন্ যাৎ স্থা অ শবলোপে।

[चडः १।, छो-छिन्-८७-७ति धनाम् भाः, देन-धेन् य-षार छोः ॥, षमय-लार्भ १।]

অতঃ পরেষাং টাদীনাং স্থানে যথাক্রমং ইন, ঐস্, য, আৎ, স্থা ইভ্যেতে স্থাঃ। কেন, কৈঃ, দেবায়, দেবাৎ, দেবস্থা; অত ইতি কিম্? প্রাক্ষতিঃ, বৃক্ষব্—বৃক্ষতিঃ। (১৬)

৩৮। এন্ত্যস্সাম্স্প্স।

[अह् • ६।, छान्माय् (छान्, माय्) च्ल्य् १॥]

⁽১৫) মধুনেত্যত্র বিপ্রতিষেধে পরং কার্যাং ইতি,কচিং পূর্বনিতি ব্যাখ্যাতং, তেন মধুনকাং পরতাং প্রতিষ্ঠানি মুন্ন নিবিধ্যতে। অংগাভয়বাপাইসিজে কিমনরা কলনরেতি চেংন মৈবং, রারমতিক্রান্তেন কুলেন অতিরাণেত্যসিজেঃ; ন চ বাচ্যম্ সন্নিপাভলক্ষণভাচ্চ ন ভবিষ্যতীতি, তন্তানিত্যতাং। সন্নিপাভলক্ষণভাচ্চ ন ভবিষ্যতীতি, তন্তানিত্যতাং। সন্নিপাভলক্ষণভাচ্চ ল ভবিষ্যতীতি, অন্তানিত্যতাং। সন্নিপাভলক্ষণভাচ্চ পরিভাষা, অন্তার্থত্ত যং দৃষ্টা যন্ত সন্তবং স ভক্ত সন্নিপাভঃ। সঃ (সন্নিপাভঃ) লক্ষাতে যেন স বিধিত্যবিষ্যাভক্ত ন নিমিত্যং ভবতি।

⁽১৯) অনবলোপেত্যত্র বেত্যুগলক্ষণং তেন বলোপেছপি ন ভাং। বধা, অধ্যুক্তরাচক্ষাধৈরপতিরিতি।

স্থাবিলাবিল কিনিবাম: । (১৭) ভাসাকো পরে আন্তঃ
হানে এন্তবতি। কেল্ডাং, কেয়াম, কেয়ু। অনবলোপ
ইত্যেব—রাজভ্যঃ, বৃক্ব—রুক্জাঃ।

৩৯। অয়োসি। আপস্টাতি চ।

[অয্ ৽১া, ওসি ৭', আপঃ ৬া, টাভি (টা-আং) ৭া, চ •১া] ওসি পরে অতোহয় ভবতি। আপফাসম্বন্ধন্যাতি (ওসি

ह) ह । विव्यत्याः, श्रद्धेताः, श्रद्धेता।

80। ভार्मिय मिर्चड। (काब, विका, कोर्बः भ)

ভ্যামি যকারে চ পরে অতো দীর্ঘঃ স্যাৎ। দেবাভ্যাম, দেবায়, স নবলোপ ইত্যেব রাজভ্যাম, রুক্কব্—রুক্কভ্যাম্।

85 । रेइटजारतीजा । [रेइटला: 🖦, केला ला]

রপ উতা সহ ইতুতোদীর্ঘঃ স্থাৎ। পত্তী, ধেন্, তপর:

8२ | ८७८तीत्रक (घुट | ८६: ७, ७: २।, चर ०२।, ह० २।(द: ७।

ইছতো: সম্বন্ধিনোডেরো: স্যাৎ। সংখ্যা, প্রাের্না, অচচ থেং, কবেনি ধেনো।

৪৩। জনি গুণ্ঃ। ভাষ গ, তথা ১।] জনি পরে ইছুতোর্গুণোভবতি। পতরঃ, থেনবং।

88। ডিভি ঘেরতসার্দী। ডিভি ৭৮ খে: ৬।, সভসাদে ৭।।

ছিতি পরে ঘিদংছক্ষা গুণোভবতি। অগ্নয়ে, ধেনবে,

^{্ (}১°) শ্ৰুইডে অওইতি প্ৰুয়ন্তমাসীৎ অভা**ৰ্যবন্ধানি ষঠ্যন্ত**মিতি বিভূজি বিপাৰণাক্ষ।

बारताः त्यक्तिकि विष्या स्थितः मान्या गाउँ। व्यवनामाविकि विष्यु १ कृष्ठः, कृष्ट्य क । दशीरकात भद्दी ।

80 । शटा तहारिकेश । विकास, त्यारिकाः ना

ঙি উটো: শর্রোখ দন্তক্ত গুণোভবতি। পিতরি, পিতরে) পিতরঃ, পিতরম, পিতরোঁ; এবং মাতৃ, ছহিতৃ, যাতৃ, জাসাতৃ, নৃ, ননান্দ্, দের। নানিজ্ঞান্তিল্যৈকস্য। ন ঋ—অনুম্। (১৮)

৪৬। ঋতা ঙদিঙ্গোরত উঃ।

[ৰাতা ৩৷, ঙদি, ঙ্সো: ৬॥, অত: ৬৷, উ: ১৷]

খাদন্তস্য ঋতা সহ ওসিঙসোরত উর্ভবতি। পিতৃ: কর্ত্ত:।

89 | খ্যাত্যাক #: [খাতাং ei, চ • ১i,] (১৯)

থি, তি, ব্রশ্বে চ, খী, তী, দীর্ঘে চি, অনয়ের্যয়ের্বাদেশঃ
ক্রিরভে, তরোঃ কৃতয়ণাদেশয়েরিদং গ্রহণম্। শ্যত্যাৎ
পরস্য ওসিওসারত উর্ভনতি। সখ্যঃ পত্যঃ, সখায়মিচ্ছতি,
সথেবাচরতীতি কাচ্ কাওন্তাৎ কিব্ যলোপঃ,—স্থাঃ,—স্থাঃ
এবং পতীঃ—পত্যঃ, ন্থামচছতি নথীয়তি, নথীঃ—নখ্যঃ। তা
গ্রহণাভাদেশনোপধস্যাপি। লুনী-পুন্যঃ, ধুনী ধুন্যুঃ, ইহ কস্মার
ভবতি জরত্যাঃ, আকারব্যবধানাৎ। ক্যপ্রতায়ে কিব্তস্যাপি
অবয়বন্তীবিষয়ত্বাৎ পুংস্তেহপি নদীত্মিতি—জন্ত্যাঃ পুংসঃ।

⁽১৮) নামিত। অনিজযুক্ত সোকসা বর্ণসা গুণো ন ভবতীতি, উদাহর-রাহ ন ব ইতি অন্তামুক্তবর্ণেন সমাসঃ, অত্র খণ্ডেলা বর্ণবচনো দেবমাতৃ-কানো বা অনিজ্ঞানিত জৈতি কিং ন্রো নরঃ।

⁽১) বাজা। বিতীভাত্তকরবং, স্পটার্থম্। জরতা, ইতাত বিপ্রতি-বেধে পরং কার্যামিতি ছারাং স্থানদ্যাভিতীক্যাকার: প্রবর্ততে।

86 । ज्या नगा डिजि के बाल्य संग्राहर के सिर्मा (र)

ি ডিতি পরে নদীসংজ্ঞকাছ্**ন্তরে আকারাগ্রাই স্থাৎ। লক্ষ্যো,** ধেস্বাম্, ধীবন্ধাম্।

85 । यो शहा [वा • २१, वानः १,]

व्यावस्तार डिजि या श्रमः नार । वालारेन्ने, वालानाः रेजानि ।

(०। केष्टी नशूरमकाष्ठ।

· Fanta roll al a sil a d'adair al a assist

আপঃ ক্রীবাচ্চ উচ্ছী: স্যাৎ, (শকারশ্চিহ্নার্থ:) বালে, বনে, বারিণী, বপুষী, ভত্বাৎ বিছুষী কুলে, স্নথী ভিরশ্চী।

৫১। ডেরামাগমানীভ্যাম্।

[ডে: ৬।, আমৃ •১।, আগমানীত্যাম্ (আগম-আ,-নী) ।।]
আগমাকারানিয়শ্চ ডেরাম্ স্যাৎ। নদ্যাম্, বধ্ব্যাম্, বালায়াম্, তস্যাম্, নী-সেনান্তাম্, দিনপ্রণ্যাম্।

৫২। অচি যুক্তশু ধাতু স্ত্রী জ্রাবামপদান্তে যোরিযুবে।

[चिंहि १।, मुक्त्र ,-शांज्, खी, -कवार आ, चनवार्टंड १।, खाः आ, देनूर्वी ३॥]

অন্তণর্দ্ধি-বিষয়ার্থং বচনম্। অচি পরে ঘৃত্তানু-প্রভৃতীনাং ব্যারিকার উকারযোরিযুবো যথাক্রমং স্যাতাম্। প্রাপ্নবিত্ত, ধাতো অধীয়াতে, চিক্লিয়ভৃং, প্রিয়ঃ, ধিয়ঃ, নিয়ুবনং কৃটাদি, ভৃষ্ট্রুবেন, অক্ষ্যুবঃ, ব্রিরৈ, ক্রাবৈ; যুক্ত-শ্লু-ইতি কিম্?

⁽২০) আন্দ্যা। আগমোহত্বপ্রাতেন বিকারশ্যোপর্কনাৎ । আহত্বত প্রসঙ্কেন, লোগঃ সর্কাপক্রণাতিত্যাপিশনীরঃ আগমুঃ।

स्वित् विश्वकात है कियु विश्वकात क्षिर । निव्यक्ति । निव्यक्ति । कित्र विश्वकार वाद्यक्ति । कित्र वाद्यकार वाद्यक्ति । कित्र वाद्यकार वाद्यक्ति । कित्र वाद्यकार वाद्यक्ति । कित्र वाद्यकार । कित्र वाद्यकार वाद्यक्ति । कित्र वाद्यकार वाद्यकार । कित्र वाद्यकार वाद्यकार । कित्र वाद्यकार वाद्यकार । कित्र वाद्यकार वाद्यकार वाद्यकार । कित्र वाद्यकार वाद्यकार वाद्यकार । कित्र वाद्यकार वाद्यकार

(७। अल्डाम्याभ्यदर्ग। [बलामक का, बनवरर्ग १।]

अनवर्त कि शत कलानमा त्यातियुत्वी क्वकः। देयात्रः केत्वाय, अनवर्ग देखि कियु ! केयुः।

(8 | खिक्का वांम्नदमां | [बिक्का का ना ना, प्रमारमाः १4]

অমি, শদি চ পরে দ্রিরা ইয়্বা স্থাৎ। দ্রিরং দ্রীং দ্রিরঃ, স্তীঃ।

(१) न स्विटनांड नार्वशक्ति। [म • ১।, सिताः (स. १५) ।।, नार्वशक्ति ।।]

সার্বধাত্কে জুহোভেরিনশ্চ, তো ন স্থাতান্। জুইবিত,
যন্তি, আয়ন্; ইন ইতি কিষ্? ইকো—অধীয়ন্তি, লদীপ্তয়ো
রাববয়োরধীয়ন্ ইতি ভট্টি:। কেচিদিহ বিকল্পন্তে।
৫৬ । এরনেকাচোইসংযুক্তপাতোর্যঃ সবর্ণেপি।
[এ: ৬০, অনেকাচ: ৬০, অসংযুক্ত ধাতো: ৬০, বঃ ১০, সবর্ণে ৭০, অপি ০১০]
অসংযুক্তধাতোরিকারস্থ সবর্ণেহপাসবর্ণেহপাচি পরে যঃ স্থাৎ।
জগ্যুঃ, নিক্যুঃ, নিক্তিরে, নিক্যুয়ঃ। ছিক্তজ্যাহনেকাচ্ত্বন্,
অসংযুক্তেতি কিংচিক্ষিয়ঃ। এন কেবলস্থ। ইয়ুঃ, অধীয়িরে।

⁽২১) কচিয়ায়করণ ইতি বদতা প্রস্কৃতা অমুকরণে সর্বননিত্যবিত্যা-বেদিতম্ অর্থোচে ইতি অধিচিৎ পদসাধনে কিবিধায়কং পাণিনীয়ত্ত্বং চিয় ইতি সাজুৎ বধা কেবিপিয়াভ্যাম ।

en। ওণ্চবো নিভাসমাসে কিরস্তস্তা-न्द्रिशिष्ठ ।

(ও: ৬), চ •১), ব: ১।, নিড্যসমাসে গা, কিবল্পস্থ ঋ, অভ্যাতিক (ন-জ্বনী) জ কিবন্তানাং ধাত্নাং ইকার উকারলোরচি য বৌ প্রাতাম্ **टमनाग्रः, উম্মো, তিৰিপ্ৰণাঃ প্রভো, প্রভারিভে**তি ইতি বাক্যে বৃক্তীস্তশ্ৰ ভৌ বৃক্তিয়, অত্ত সমাসাদনেকাচ্ত্ৰয্ নিত্যৈকার্থমাত্তে চ। মালীয়তি মালীঃ-মাল্যঃ, ওর্কঃ-খলপুং অসদখং, ইহ হি 'বাতপ্ৰমী ক্লাদেধাত্বদা' বাভপ্ৰস্থাং, বাভ थमीर ना, बूखर बूबूरवा, बूखर बूबून ना। **अवर नशबू, भक**बू, নিত্যস্থাস ইতি কিম্? পরস্মিয়ো, প্রবণ্ধিয়া; ব্রকান্তী-রিতি বিগ্রহে রক্তীঃ, তস্ত ঙৌ রক্তিয়ি। অহুদির ইতি কিম্ ! স্থিয়ো। ধাতোরিত্যেক, বিগতা ঈর্যস্থ স বীঃ, তত্ম ঙৌ वी। अमः बुक्त हेटलाव-यवकित्य्रो, कवेश्रुत्वो।

৫৮। ভুবোবর্ষাপুনর্দৃণ কার কারাভ্যঃ। [जूदः ७।, वर्षा-शूनवृ— हुव - काब्र-कातान्त्राः e॥]

এভ্য এব ভুব ওর্ব: স্থাৎ। বর্ষাভৃঃ, পুনভে্বা, দৃশভৃং, कातजुर, काताजुम्। नियमः किम्? व्यु िजूरवी, अयञ्जूना।

४३। यदमान् क् नश्रमतक।

[चरबाः भा, मुक् ०)। नश्रमतक १।]

क्रीत स्वान् क् छार। मधि, यद्, कर्तृ, भाः, अरः। হ্রমো নপুংসকে প্রাতিপদিকান্তস্ত,—সুহ্য, অতিরি। (২২)

७०। अट्डि ३म्। [चलः स, चम् -अ]

ক্লীবেহণন্তাৎ স্বমোরম্ স্থাৎ। খং, বনং, সোমপম্।
(২ং) হছা। শোভনাদ্যোগনিন্ কূলে, রারমতিক্লাভং কুলমিভাতিরি।

५५। उड़ा क्डिड़ नक्डिंग उड़रनकड़ड़ार।

তিত্রাদিভাই বা, প্রক্তাই বা, তত্ •১া, অনেক্তরাং বা ।
ভাতর ভাতর অভার ইতর, অভা, অভাতর । এভা: রীবে
অনেহর্তর্থ ভাবে ক্তর্ব, ক্তম্ব, ইতর্ব, অভাব, অভাতর ।
তর্ব; অনেক্তরাদিতিকিষ্ । এক্তর্য্ ।

७२। जम् गरमाः निर्यम्हान् म् छ।

[सम्भटनाः था, भिः अं, बनटहाः था, स्म् • अ, ह • अ]

কীবে অস্শসোঃ স্থানে শির্তবতি। তৎসন্ধিয়োগে বলস্থাজন্ত রোকু মৃচ। কর্মাণি, চম্বারি, স্থানিরি; ঝলচের্কু মৃচ—
জগন্তি, সদৃংশি; সান্তস্থ দীর্ঘ:—বপৃংষি, সানজাংছি। ন
বহুর্ভ্রেন্স্য্। রেফাৎ পরস্থ বেত্যেকে। বহুর্জি, বহুর্ঞি, (২০)
বহোরতাত কুম্, অভ্যুন্জি কুলানি, স্ন্জি। দ্বীনি, কর্ত্নি।

७७। रेंद्रकांश्नामाि। [हेकः रा, अनामिना, अहिना]

क्रीद्रव हे शखाद खानाि भरत सूत्र छाद । नांधनी, वातिषी.
सङ्गी, कर्ज्षी । व्यायस्त नात्मव—वातीनाम्।

৬৪। টাদ্যচি ভাষিতপুক্ষং পুষদ।।

িটাল্যচি (টা – আদি – অচ্) গা, ভাষিত্তপুংস্কং ১া, পুসং •১া,বা •১া]

অর্থান্থিভক্তিবিপরিণানঃ। টাদ্যুচি পরে ভাষিতপুংস্কমি-গন্তং পুন্দা স্থাৎ (২৪)। শুচয়ে, শুচিনে; শুচেঃ শুচিনঃ কুলস্ম। ভাষিত পুংস্কমিতি কিমৃ? মধুনে।

ৰৰাৰ্ক্ সংগচ্ছতে, সৈৰ প্ৰবৰ্ত্ততে ইতি ভাব:। ভাবিতঃ পুমাৰ্ বেৰ স

⁽২৩) উজ্জ বলশ্রমাণয়োঃ কিপ্, বহুবো উজ্জোরেবাং তানি বহুর্জ্জি এড-দেব নিষেধবিধানং জ্ঞাপরতি হলদম্বাবায়েহপি মুম্ তবভীতি। (২৯) টাস্য। অর্থানিতি, অমুপশতিমণ্যাহ, অর্থানিভতিক্রিশরিশমাড়ে

७०। असि पशि मक्याक्रामटखारेन्।

[অহি. দবি, সকিব, অ (किन्) স্থাছ আ, অন্তঃ ১া, অন্ ০১া]
টান্যচি পরে অন্তানেরস্থোহন স্থাৎ। অন্ধা, প্রিয়ান্ধা,
দগ্ধঃ, সক্থা, অক্ষি। উত্তরপদস্ত চ।,অভিনগ্ধা উক্তংক্লীবে ।(২৫)

৬৬। রায়োরা হল্যতিন।

[রায়: ৬া, রা +১া, হলি ৭া, অতসি ৭৷]

হলাদৌ স্থপি পরে রায়ো রা ভবতি। রা:, বহুরা:, রাভ্যাম্। ক্লীবেহপ্যদো।—অতিরাভ্যাং কুলাভ্যাম্। হলীতি কিম্ ? রায়ো, অতসীতি কিম্ ? রৈতঃ।

৩৭। বাচি জরায়া জরস্।

[वा •ें), अठि १।, अतात्राः ७, अतुम् •>।]

অজাদো স্পি জরায়া জরস্বা স্থাৎ। জরে, জরসৌ, জরসী;
জরাং জরস্য়। অত্যাদিপ্রয়োগে চ। অতিজরং, অতিজরদং
বিপ্রং কুলম্বা। ক্রীবে অস্ভাবে লুকোবিপ্রতিষেধাজ্বসাদেশে
কৃতে পুনর্লুক্ ন ভবতি। সক্লগতো বিপ্রতিষেধা যম্বাধিতং
তদ্বাধিতমেব। ইহ জরসোবিধে রত ইতি বিহিতঃ স্থবাদেশবিধিঃ প্র্রেগাহি, অতিজ্বেণ, অতিজ্বসিন; অতিজ্বৈঃ,

ভাষিতপৃংস্কঃ, উক্তঞ্চ, বৰিশেষণতাং প্রাণ্য ক্রিয়াৎ পৃংসি চ বর্ভতে। ভবে-রপুংনকে বৃত্তিভাষিতপৃংস্কং তচ্চ্যতে।

⁽২৫) অছি। ক্লীবলৈবাছাদেপ্র হণং ন তু পৃংলিক্ষা, পৃংসি তু অছিনা ছারেশেতি, কিবভদবিশক্ষাপি ন তথা, বথা ছবিনা ছিলেনেত্যাদিপ্রয়োগ-দর্শনাৎ। অভিদয়ে বিপ্রায়েত্যক্র সমস্যোহি পৃংলিক্ষা, ছবিশক্ষ ভদেক-কুলা: ক্লীবমেবেজি ক্ষরত্যেবানালেশা, ক্লীলিকে চ অভিদয়ে এবং বুডা-ক্ষেত্যাদি।

অভিজয়ায়, আমি অনিয়মঃ অভিজয়াণাম্, অভিজয়াম্। (২৬)

७৮। जार ज्ञा मिश्र श्रहणनः श्रहणरणा-२८नट्शे रुखामद्द्रको। (२१)

[स्राय • ১१, स्था ०।, मर्थि, ४६, क्षेत्रमम्, पूर्वपर्यम्, प्रदूरम्क्ष्यस्य भ, समयुक्ती १।]

স্থনা সহ সধ্যাদেরস্কৃত্যান্তবিতি। স্থা, ক্রি। উশনা পুরদংশা, অনেহা। অসমুদ্ধাবিতি কিম্ ! হে সংখ। হে পিতঃ।
হে অনেহঃ!।

৬৯। সধি-তৃন্-ভূচ্-স্বস্-ন্থ্যু-নেষ্ট্-ত্বট্ ক্তন্ত্-পোতৃ-প্রশাস্ত্ গাং রদ্ধিরোটি। প্রবি-প্রশাস্থার আন রদিং সাইটি গা

এবার্মেটি প্রত্যাহারে রুদ্ধি তাং। দগারো, সর্বায়ঃ, দথায়া, দথায়াে, কর্তারোঁ, স্থার্মে, নস্তারোঁ, নেন্টারোঁ, হাটারোঁ, ক্ষতারো হোতারোঁ, পোতারো প্রাণ্টারি কিম ! স্থীন্।

⁽२७) व्यक्तील 'विश्वन विविज्ञणामावत्य श्रह्म दिन विश्वास विविच्छामावत्य श्रह्म दिन विश्व विश्व विविच्छामावत्य श्रह्म दिन विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विश्व विष्य विषय

⁽২৭) সোর্ভাগবীত্যাদিনা সিদ্ধেদ্দ প্রগ্রহণ ওত্র বৃদ্ধ তেন, ক্রকত নৃথি-বর্জন ইন্ত্যাক্ষ্যে, নঙ্গং । অসমুদ্ধাবিতি। নঞ্নিদিউ জ্বানিত্যভাগে সংগতি । সহাপ্রভবং বৃদ্ধ হৈ কৃষ্ণ হে বাদ্ব হে সংগত্যাকৌ জ্বাদেন।

१०। त्रामार्याः युवि। व्यक्तासः भः प्रकेशः।

शृष्टि (गानारवाः मकरमात्र क्विः श्राट्यः । (गोः, दह त्गोः, गार्त्यः भावः । प्रति ज्ञानः । (२৮)

95 | व्योदिन दिन् रिनारिन वार - ५१, बढः ७।, वस्नाराः १।

অমি শসি চ পরে ওত আৎ স্থাৎ। গাং, গাঃ; দ্যাং, দ্যাঃ। (২৯)

(ইতি अञ्चल्यमक्तित्वकः)।

(व्यथ हर्ी ३)।

१२। मानिस्टात्न श्रुः 📝 श्रूमान्म्।

[मापिषात १।, श्रमः (भूम्) ७।, श्रान्म् • ১।]

অত্র পুংসং পুমান্স্ ভাব। সমুম্ক আদেশোহয়ম্। পুমান্ পুমাংসো, পুমাংসং, পুমাংসং, অন্তার্থে হুটি দ্রিয়াং পুংসো-হকপি জীমিছন্তি। প্রিয়পুংসী, প্রিয়পুংস্ঠা। শ্লাদো-প্রিয়-পুংসং, প্রিয়পুংসা দ্রিয়া; অক্পীতি কিম্? প্রিয়পুংক্ষা দ্রা।

⁽২৮) গৌণম্থ্যয়ে মু খো কার্যসংপ্রতায় ইতি স্থায়েন মুখ্যয়োরের গোল্যোশক্ষরেরয়ং বিধিন তু পৌণয়ে। স্তেন চিত্রাগুবিমলছাশক্ষরের স্থাকিতি।
গোদ্যবোরেরকারাস্থোপলক্ষপমিতি কেচিং তেন উঃ শস্তুঃ, স্মৃতো বেন সঃ
স্মৃতোঃ, স্মৃতাবা, স্মৃতাঝ, স্মৃতাবা, স্মৃতাবো, স্মৃতাঃ এবং দ্রহ উনা বর্ততে
ইতি সৌঃ সাবো সাবঃ সাং সাবো সাঃ ইত্যাধি।

⁽২১) আ। ওদিত্যোগজমাত্রোপলকণং তেন মহোং, স্টোঃ, মহাং মহা-স্থুজাং স্থুজা ইতি শ্রীপতিঃ।

৭৩। পথিমপ্যভুক্ষামেরাঝোকঃ সৌ তুন কাং।

[शविन्द्रविन्-वंक्ष्मार आ, वः अ, वाद • ১।, वः ১।, वः ১।, र्ता ।।, তু • ১।, नः अ, ठ • ১।, वाद औ।]

এষাং সাদিস্থানে ইকারস্যান্তবজি। সে তু নকারস্থাৎ ক্রিটি তৎসন্নিরোগে থকারস্থা স্থাদেশ:। পন্থা:, পন্থানো, পন্থানঃ হে পন্থাঃ। মন্থাঃ, স্থানাঃ; ঋডুক্ষাঃ, ঋডুক্ষাংণা।(৩•)

98 । চতুরনভুহোরাম্ হঃ সৌ রুম্ চ। [চঙ্র-খনভুহো: ৬।, আমৃ •১।, হং ৬), গৌ গা, হুমৃ •১।, চ •১।] 🛦

সাদিস্থানে অনয়োরাম্ স্যাপু হাস্তস্য সে সুম্চ।
চহার:, অনভান, অনতাহে । তারে চ, প্রিয়চস্থা, প্রিয়চ
ভারে), প্রিয়চস্থারঃ, প্রিয়া
ভারেন প্রিয়ানভাব ক্লম্বি

१८। अन्पूर्श स्त्रिशिष्ठी । [अन्पूरः भ, विद्रार ११, वा • १) । स्त्रिशामनग्रम् वा नग्रार । अन्धारी अन्पूरी वा, त्रीद्रापि।

৭৬। উগিদচোর মধাতোঃ।

[উলিক্টো: (উক্-ইৎ, অচ্)৬৯ হম ০১।, অধাতোঃ (ন-বাড়ু) ৬।]

ক্সনয়ো: সাদিস্থানে সুম্ভবতি। উগিতঃ—শ্রেয়ান্, বিদ্বান্ বিদ্বাংনো, উপেক্সিন্, মহান্, মহান্তো, বৃহন্, বৃহন্তো, পুষন্, পুষক্তো, ভবন্, ভবন্তো; অঞ্চেল্পুনকারস্য—প্রাঙ্, প্রাদ্ধো; অধাতোরিতি কিম্? উথাস্ত্রৎ, পর্ণধ্বৎ।

⁽৩০) ব্রিরারাজ্যক্ষের তীপি ভড়াটিলোপঃ স্থপনী নগরী, অনুভূজী সেনা, আড়ং নপুংসকে ন ভবতি স্থপথি বলং সমুদ্ধো নপুংসকান্ধলোপো বা বাচ্যঃ হে ক্সেনিনু হে সুলবি া বিবচনে ভড়াটিলোপঃ, স্থপনী, স্থভানি স্থপনা, স্থাপে, স্থাবিভ্যামিত্যাদি ।

99 । शुद्रक तम्बारम । क्राबार के, अमबारम भा

যুক্তেঃ সাদি**স্থানে নুম্ স্যাৎ। যুঙ্, যুঞ্জা, যুঞ্জঃ, যুঞ্জম্।** অসমাস ইতি কিম্? অশয়ুক্। (৩১)

৭৮। নাভ্যন্তাচ্ছতুঃ শৌ তু বা।

िन ०३।, व्यञ्चार ८।, मञ्ह ७।, त्र्यु १।, ज् ०३।, वा ०३।]

দ্বিলক্তজক্ষাদিঘট্কে অভ্যন্ত; তম্মাচ্ছতুর্ম্ নান্তি। দদৎ, জুব্ধুং জন্দৎ জাগ্রৎ, দরিন্ত্ৰৎ চকাসৎ, শাসৎ, শাসতো; শো
জুবা—দদতি, দদন্তি কুলানি; জক্ষতি জক্ষন্তি।

৭৯। শপ্শ্যন্ভ্যাশ রুম্ শীড়োঃ। [শপ্শ্বন্ভ্যান্লা, হ্রন্থ, নী, জ্যোল্যা]

নিয়মার্থং বচনম্। শীঙাোঃ পরয়োঃ শপ্তান্ভ্যামেব শতুর্ম্ভাৎ। পচন্তী, দিবান্তী কুলে; পচন্তী, দিবান্তী স্ত্রী।

bo | त्नियां क्रेनिं | [त्मवावनीय क्षा वा का] (७२)

শপ্-শান্ভ্যামভাষাদবর্ণ শীঙাোঃ শতুরু ম্বা স্থাৎ।
তুদভী, তুদন্তী কুলে, স্ত্রী বা, করিষ্যতী, করিষ্যন্তী, কুলে স্ত্রী
বা; যাতী, যান্তী কুলে, স্ত্রী বা; অবর্ণাদিতি কিম্? ক্রাভ্যভাদিতাকু বুত্তের্ধাতোরাতোলুকোইন্তরক্ষাক্র, দদতী, পুনতী,
রুদ্ধতী, মতী।

৮.১। তৃজ্ दिका के तमग्रदि । [इबर •अ, त्कार्ड: अ, समग्रदि भा]

^{্ (}৯) স্তে । মুজিরবোগে ইত্যাস্থের গ্রহণং ন ভূ মুজ সম্বাধারিত্যতা।
তিন্ত নেবা। উক্তাদতাঃ শেষঃ, স চাসাববর্গদেচতি সমানঃ।

সাদিস্থানে, কোনী, স্কৃত্বৰ আছে। কোনী, কোনীতো । অসুস্থাবিতি কিমৃ ! হে কোনী। জিয়াক। তৃত্বৰ আৰু। কোষ্ট্ৰী, কোষ্ট্ৰীভিঃ।

৮२। তৃতौरानिश्वनागाि व।।

[जुडीयां क्यू नाः, जनामि ना, जिं ना, वा ना ना

আম্বর্জিতে টাদ্যতি পরে ক্রোই সুর্ত্বং স্থাদা। ক্রোষ্ট্রী, ক্লোই না; ক্লোইরি, ক্রোফে । অনামীতি কিম্ ং ক্রোই নাম্।

৮৩। সাত্তমহতোর্ণীর্ঘোর্ম।

[जान प्रश्राह ला, मीर्भ भ, स्मि मा]

অনুয়োকুমি পরে দীর্ছ আৎ। িবান বিদাংমো; প্রাংসি, রোচীংষি, সহান্, মহাজো; কুমাতি কিম্? বেধমো, অসমুদ্ধাবিভ্যেব, হে বিদ্ধন হৈ মহন্।

৮৪। নোপধারাও। (নাপধারা: (ন-উপনা) আ
নাদিভানে নান্তস্থ উপধারা দীর্ঘঃ স্থাৎ। রাজা, রাজানো
সামানি। কুমি কতেইজন্তস্থাপি নান্তব্যু। বহাপাণি তড়া।
গানি, মধুনি, কর্তুনি। অসক্দাবিত্যেব হে রাজন্।

৮৫। অপঃ। অস্তো দো ভি।

[चर्त्रः ७, जन्नः ১।, ४: ১।, ७ १।]

অপঃ দাদিস্থানে দীর্ঘঃ স্থাৎ। আপন্তিষ্ঠন্তি, স্থাপ্র স্থাপৌ স্থাপঃ; উপধায়। ইত্যের বহুবাম্পা; বহুবাম্পীত্যেকে। দ্যাদান্তে—বৃহুবপাধি ভড়াগামি। ভাগে স্থাপি ভস্থাক্তো দী স্থাৎ অভিঃ, অভ্যঃ।

৮৩। সাবস্বস্থাহারভাঃ।

[त्रो १।, जलू-जनवण था, जतारकाः 🏓]

সোঁ পরেহত্ততাসন্তত্ত চোপধারা দীর্ঘঃ তাং। কৃতবান, ধনবান, ত্য়শাঃ ত্মেধাঃ; অভ্যন্তত্তেতি কিন্ ধনবতী।
ন লুব্ল্কাল্প্তেতি নিষেধাং, ত্য়শঃ কুলং; কথং যশাংসি,
কুমি সান্তত্ত বিধেঃ, অধাতোরিতি কিন্ প্রতিপ্ত প্রসতে
পিওগ্রঃ। অসন্দানিত্যের ক্লেগোনন, বে চক্রমঃ।

৮१। रेन रन श्रायाश्रा लोह।

हेन्, हन्, श्यन्-कर्षाग्राः आ, त्नी १।, ६ ०)।]

নোপধায়া ইতি প্রাপ্তে নিয়মার্থং বচনং, এষাং হুণ্টোরের দীর্ঘঃ স্থাৎ। দণ্ডী রুত্রহা, পূদা, অর্য্যমা, শৌচ বহুদণ্ডীনি, স্বুত্তহাণি, স্পুষাণি, বহুর্য্যমাণি; নাম্যত্ত—প্রোষিতার্য্যমনং মেরোরস্কর্যারস্ভানিবেতি মাঘঃ। অসম্মানিত্যেব, হে দণ্ডিন্। ৮৮। ওমঃ কিবালোঃ কিঙ্তি। ক্রমঃ ক্তিনু বা।

[४मः ७।, क्विताः १॥, किंड्छि १।, क्वमः ७।, क्वि १।, वा ०)।]

किवानिना धाज्राकिनाराठ, को यानारा किछ कि नरत ह धमलक धाराजां स्वामा नीर्यः मार । मठाजाने, धनान् धनार्या धनायः मनापान्य नकारता न जवि । उम्-धान्, धारान्याम् ; देन्द्रमिष्ठि-निर्द्धनाम् इनः खमार्ट्सी । त्नद्र नतः घामारनार्यन मश्यर । क्यार्ट्सिक्नाधिकारत जेनिधकान्या निभाठिजाः ॥ यानार्या नास्तः, भाख्यान्, भाखा, भास्तः, यह-नृकि—मश्मास्तः ; क्याः कित्वा । कास्त्रा, क्या वा यमोठि विम् ! क्रिका, धक्या, विष् जीठि किम् ! भस्ता ।

िको । व छेर् । [वः ७, छेर्ड •आ] (को यिन किঙ् कि চ वकातच छेर्र चार। चक्क्राः, चक्र- ছাবো, পটসূঃ রক্তী । নাবরতেঃ কিন্নোঃ, ঝলি দ্যুতম. স্যুতম্। ধাব দিকোর্যভূষি । দাধোতঃ, দেদ্যতঃ, কিঙ্তী-ভ্যেব দাধাতি, দেদেতি ॥ অসুনাসিকে চ বক্তব্যম্॥ থব্ খোনাভি । নৈকসা হ্যন্তাৎ প্রস্যা, বৃক্ষব্।

১०। জ্বত্বপ্রিপ্রাবিমবামুপাস্ট্যেন।

[खत्र-एव-खिवि-खिव-बर्वार क्षा, छेशारकान ७।]

এষামুপান্ত্যেন সহ বস্যোঠ্স্যাৎ কৌ বলি কিঙ্তি চ। জৃঃ, জৃরৌ, জৃর্ত্তিঃ; ভৃঃ, ভূরৌ, ভূর্ত্তিঃ; জাঃ জ্রুবৌ, জ্রুতিঃ, উঃ, উবৌ, উতিঃ ধনমবতীতি ধর্মোঃ, শালুঃঃ, মৃঃ, মৃতিঃ।

১১। রাচ্ছবোলোপঃ। [রাং থা, ছবো: ৬॥, লোপ: ১।]
কৌ ঝলি কিঙ্তি চ রেফাচ্ছবোলোপ: স্যাৎ। মূর্জ্ঞা,
মৃ:, মুরো, মূর্জি:, ধূর্ব্বী—ধু:, ধূরো, ধূর্জি:।

১২ | যোঘি হলি | বি: ৬, অবি (ন য) গা, হলি গা ।

যবৰ্জিতে হলাদো প্ৰত্যয়ে যলোপঃ স্যাৎ কুয়ী
কুতঃ, পৃয়ী পৃতঃ, কণ্ডুয়তোঃ কিপ্কণ্ডঃ, কণ্ডুতিঃ, লোলু
যকেঃ কিপ্লোলুঃ: স্থীয়তে, স্থীঃ স্থ্যো; অতোলুকো
হস্থানিব্দ্বাদ্ধলি যলোপঃ। অ্যীতি কিমৃ ? শ্যা।

৯৩ 1 वन्ठ वर्व्यम् । [वः ७, ४०), वर्षम् २।]

অনুচ্বিষয়ার্থং বচনম্। অযি হলি বস্ত লোপঃ স্থাৎ। দিদিবান, দাধাতি। এতঃ কৌ বলোপঃ। দেবু—দেঃ, তেবু– তেঃ, সেবু—সেঃ সমৌ; এত ইতি কিম্? অক্দ্যঃ, বুক্কিন; অয়ীত্যেব দীব্যতি।

(পদস্তান্তত্ত) অধিকার্নেইচম্)।

a8। पिर्व छेद दमी दमादा

[क्रियः था, छैद • आ, क्ष्मी ना, क्ष्मिन • आ]

দিব্ শব্দশ্য পদান্ততা বহু উৎস্থাৎ। সৌ পুনরোম্ভনতি। ছাভ্যাম্ ছামরম্, ছানাথঃ; সৌছেছি—ল্যোঃ। পদত্তেতি কিম্ ! দিবো ; কেবলসা গ্রহণাবেহ অক্ষদাঃ।

৯৫। কঃ কিনন্তস্থ নঞোস্তঙ্ক। নশের।।

िकः ১।, किनस्रम् ७।, नर्दक्षाः था, ज्ंग्ठा, स ठा, नरमः ७।, वा ०১।]

কিনস্তদ্য পদান্তদ্য কঃ দ্যাৎ। দৃক্, মৃক্, মৃতস্পৃক্, দৃগ্ভ্যাম্। নঞোস্ত ও প্রাঙ্, ক্রুঙ ক্রুঙ্ভিঃ। নশের।। নক্, নট্; পদদ্যেভ্যেব দৃশো।

৯৩। ঝবস্তাচাৎ গড়নবাৎ দ্বিতীয়ঃ সংখ্যাত। [ব্যস্তাচাৎ আ, গ, ড, দ বাম্ আ, দ্বিতীয়ঃ ১০, সংখ্যা আ, চ ০১।]

পদন্য বাষন্তোহচ বেষাং, তেষাং গড়দবাং স্থানে তদ্ধিতীয়ো ভবতি। সে, থেব চ। গুহ-নিঘুট, অজোঘোট, ঘোক্ষাতি, অবুদুং, তুগুভয়তেঃ বিপ্ তুভিপ্। ছহ—গোধুক্, গোধুগ্ভ্যাম্, অধোক্, ধোকি, অবুদ্ধং গৰ্দ্দভয়তেঃ কিপ্ গর্দ্ধপ্র্বিশ—তত্ত্বভূৎ, ভোৎসাতি; অভ্দ্ধং দন্তোষ্ঠহান্ন বহ-ব্যধ্বাম্-বক্ষাতি, মুগাবিৎ, বির্থমতি, অপাণিনীয়াঃ কেচিদিই বিকল্পন্তে।

৯৭। বস্থান স্থান স্থান জুহাৎ দঃ। (৩৩) [বহু, ধানুহ অনজুহাৎ আ, দঃ ১।]

अशम्भानामस्मा पः मार। विषय, विषयाम्, विषयाम्, विषयाम्, विषयाम्, किथास्थः, भर्वस्थः, स्वाप्ताम्, अशामस्याम्, विषयः, भर्मास्याम्, अशामस्याम्, विषयः, भर्मास्याम्, अशामस्याम्, विषयः, विष

⁽७०) ब्यू । छेदम्ब्रेस्वरका वयः (खन कन्न बण् ग्रह्याः)

· ৯৮। धारनाशाट्याः कृत्मे ह।

[बः अ, बः अ, बार्डाः था, करमी १। ह •आ]

भागायारकारकारकानः मार । करनी ह । श्रेणान्, श्रेणान् छात्र्, कश्रवान्, भारतारकार श्रेणार्भाः स्मित्रे — कश्रियान् :

১৯। রঃ প্রাগ্দীর্ঘ ইণো হলি বশ্চাতদ্ধি-তয়েহকুরছুরস্থাম্।

রিং ৫া, প্রাক্ •১া, দীর্ঘ: ১া, ইণ: ৬া, হলি ৭া, বং ৫া, চ •১া, অভন্বিতরে ৭া, অকুরছুরস্পাং খা।]

ধাতোঃ পদান্তরেকাৎ প্রাগিণাদীর্ঘঃ স্থাৎ। গীঃ, গীন্তঃ
স্থাঃ কুলম্; ধৃং, ধূর্জ্যাং পৃং, পূর্ক্ত্যাম্; হলি বশ্চ, রশ্চ
প্রাক্-হল্ গ্রহণমপদান্তার্থং দীব্যক্তি, প্রতিদীবাম্, বিন্তীর্ণং
মূর্চ্ছতি; অভদ্মিত্র ইতি কিম্? দিব্যো, ধ্র্যাঃ; অক্রছুরস্থামিতি কিম্? কুর্যাৎ, ছুর্যাৎ; স্থপ্রাতোঃ—চত্র
ইচ্ছতি চতুর্যাতি, দিব্যতি; কথং রী রির্যাত্ঃ যণাদেশঃ স্থানি
বিদ্যাহল্পরস্থাৎ।

১००। मनः मजूयागिरयान्छ।

[जनः ता, जजूवानिटवाः शा, ह • रं।]

পদান্তদনঃ প্রাক্ সজুযাশিয়োল্চ ইণো দীর্ঘঃ স্থাৎ। পি-পঠীঃ পিপঠীর্জ্যাম্, সজুঃ, আশীঃ।

১০১। নস্থ লোপো২মুমঃ প্রাতিপদি কান্তস্থ। [নম্ব ৬া, লোগঃ ১া, অনুমঃ ৬া, প্রাতিপদিকান্তস্থ ।]

প্রতিপদিকান্তত্ত পদান্তত্ত নত লোপ: তাৎ। কর্ম, আত্মা, হুপ্রেমা, রাজবং, রাজপুরুষঃ, অনুম ইতি কিম্ ? রাজব্ন । প্রাতিপদিকান্তলোভি কিম্ ? সহন্।

५०३। न गर्यको ता जीटना

[न • ১।, मर्बुरकी ना, वा • ১।, क्वीरव ना के

नचुरको न लाटिंश नाखिः हैंदर ताकन्। वा क्रीरवं। दर কৰ্ম হে কৰ্মন্ বা।

১০৩ । त्रयनुष्य त्रनुदर्शी । विष्य वृष्यी मा এতো নিপাত্যেতে। রুষ্ণো বহু, রুষণুস্থ, রুষ্ণোহখঃ রুষণুখঃ।

১০৪। রাজম্বান্সোরাজ্যে। (৩৪) [ब्राक्शन् ॰ ১।, भोबाका १।]

সৌরাজ্যে গম্যে রাজস্বান্ স্থাৎ। অন্তত্ত রাজবান্।

১০৫। সংযোগান্তস্ম রাতু সদিপোঃ। [সংযোগান্তত্র ১া, রাৎ ৫া, তু • ৭া, স, দিপোঃ ৬॥]

সংযোগান্ততা পদান্ততা লোপঃ তাৎ। গোমান্, প্রাঙ্ অরুণৎ, মাংসপিক ্রাভু, সদিপোরেব কটং চিকীর্ষতি কট-চিকীঃ, লঙি অবিভঃ। নাম্যস্য, উৰ্জ্জ উৰ্ক্, মুজেল্ডি অমার্ট্র।

১০৬। क्यांनि जारमग्रावीन ह।

[एकाः था, निकारकाः था, यनि १।, ठ ०)।]

ঝলিপদান্তত্ত সংযোগান্তত্ত চ নিজমপেণাদিভিতয়োঃ मकात्रककात्राह्यार्लाभः छाए। मम्ब-ममः, नीखमकः तक-গোরট, তক্ষতক্তাং কুষ্ঠতট্। নিজরপেণাদিছিতয়োরিতি किम् १ माः मिश्रक्।

> ১०१। स्टिग्निनिटन्स यः। [इं: ७, वृः अ, मोरनः ७, प् •अ, यः अ]

⁽७३) दानरत्रात्रार रुष्ट्रः, निमाणनात्ररनामाणादः। मूर्सिववरनायगर्यः।

ः अलिनाच्या इस्क हाः आर । वाक्षार्थ करावादमञ्ज्य । द्वाह, व्याहिक व्याहिक व्याहक व्या

১০৮ । ज्यार, पूर, सूर, सिरार पट्टी। [जर-निरार आ, र को आ]

এষাং ঝলি পদান্তস্ত হদ্য ঘঢ়ো স্যাভাষ্। দ্রোগা, দ্রোঢ়া. মিত্রপ্রক্, মিত্রপ্রট্। ঝধন্তদেন্তোধো বেভ্যেকে। মিত্রপ্রক্তঃ মিত্রপ্রক্রেণা বা; মিত্রপ্রট্রঃ, মিত্রপ্রদেঢ়া মিত্রপ্রদেড্চা বা ইভ্যত্র পদান্তাৎ টুক্ক মুগেধা, মূচঃ; স্নোগ্র্যা, স্নোঢ়া; স্নিক্, স্নিট্।

১০৯। নহোধঃ। [নহ: ৬), ४: ১।] নহো হদ্য ধঃ স্যাৎ। নদ্ধা, উপানৎ।

১১०। जार्खः। [बारः धा, उः धा]

আহো ঝলি হস্য তঃ স্যাৎ। আখ।

১১১। ব্রশ্চ, ভ্রস্জ, সৃজ, মৃজ, যজ, রাজ, ভ্রাজ, পরিব্রাজ, ছ্শাং, ষঃ। [ব্রশ্চ—ছ্শাং ঋা, বং ১৷]

এবাং ঝলি পদান্তম্য চ অন্তম্য ষঃ ম্যাৎ। একী, রক্ষ্রেট, অকী, মাসভূট, অকী রাজস্ট, মান্টা, স্থানন্টা, বাফা, দেবেটা, রাষ্ট্রং, সারাটা, আষ্ট্রং, পরিজ্ঞাটা, পরিজ্ঞাটা, শ-প্রবেক্টা, বিট্। ব্রশ্চেনি স্থামাং প্রক্রিন্দ্রেষ্টা, বিজ্ঞান স্থাটা, শালাভ্যামধাতোঃ সং শা ইতি বক্তব্যম্। নিশানিশ্রু, পঙ্গে নিশান্ত, অচ্-আচ্ত অচ্কু। অধ্যাত্যে কিন্ত্রিক্ত কিন্ত্রিক্তান বিশ্বস্কঃ। অস্য বোন ম্যাৎ। বিশ্বস্কুর্ণ

... ১১২। ছঃশো বা সুবটি। ছি: ৬।, শ: ১৷, বা ০১৷, হবচি ৭।] यागाहि भटन हमा दमा ना माहि । मानदारमी अपनारही ना

১১৩। वढ़ांश कः त्मश्यमि।

[बरहां: धा, कः रा, त्म ११, अक्लि १८] 👓

সে ষঢ়ো কঃ স্যাৎ। পেক্যান্তি, কিলিক্তি, শইপীতি কিম্ ? বিট্ই ।

১১৪। চোঃ কুনিতঃ। চোঃ খ, क् • ১।, অনিতঃ ৬ (৩৫

বলি পদান্তন্য চবর্গন্য কবর্গো যথাক্রমং ভবতি। বক্তা, বাক্, লঙি অবক্, বণিক্, ভিষক্; নাসুবন্ধন্য অচ্, পদস্যে-ভ্যেব বাচা, ক্রুঞা।

১১৫। অঙ্ক বিনাঞ। (ভঙ্গাদীনাং ৬॥, চ ০১। (৩৬)

ঝলি পদান্তদ্যেতি নির্ত্তম্। অঙ্কুপ্রভৃতেঃ কুছং স্যাৎ। অঙ্কুঃ ভৃগুঃ, মেঘঃ, অণি শ্বপাকাদয়ঃ।

১১७। मिलिटिंग एक्टि । टिर्वा ।

[मन्, निटोः १॥, (कः ७।, (हः ७।, वा ०)।]

জনয়োর্জেঃ কুত্বং স্যাৎ। জিগীয়তি, জিগায়; চিকীয়তি, চিচীয়তি, নিশ্চিকায়, নিশ্চিচায়।

⁽৩৫) চুশব্দেন চসবর্ণে। গৃহতে ইড্যাহ চবর্গস্থেতি সঙ্গাতীয়ানাং সম্-হোবর্গ:। ব্দিনিত্যাদি পণতেরিজিক্ পণাদে: পণের্বণু চেড়ি ইজিক্ প্রত্যুদ্ধঃ বিভেতি রোগোহম্মাদিতি ভিরোভিবচেত্যজিক্ ভিবাদেশক ভিষক।

⁽৩৬) শ্রন্থ। প্রক্ষণীতি প্রাদেকঃ শ্রন্থা। ভ্রজ্জতীতি কু: ভ্রু অইতীতি কর্মাঃ। নিদহতে ইতি নিদামা কর্ত্তরি মণ্। সংজ্ঞায়ামের মিহ + মণ্ মেমঃ অক্তর্ত্ত হৈছে। নকু: চিকাম্নেতি জুহোন্ড্যানিডাৎ সিদ্ধে কিমনেন, সভার ক্রম্পানিডাৎ তৎকার্য্যা স্থানেপদেশি বলা জ্ঞানিডারেছাঃ।

339। চলেখিরচতোরকাদিবজন্তজাজাম-নাবশ্যকে।

[हत्याः श्वा, विश्वारकाः श्वा, व्यक्तिवार्यकाश्वरः श्वा, व्यवित्र श्वा विकि शिंद प्रदेश हत्याः कृषः मार्थः। श्वात्वा, तानी, शाकाः, त्वाताः, त्वाताः, व्यक्तः, व्यक्तः, व्यक्तः, वाकः, विद्वाकाः मनाकः व्यनावश्वक हिन किम् श्वतश्वशानाम् । न वर्षः वर्षः नास्ति वक्षः, वर्षः वर्षः

33৮। গাতি মুচৰুচশুচচ্চিযাচতাজিয়জি
রজীনাম্। বিগতি গা, মৃচ-রুচ-শুচ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্চ-শুর্ব-শুর্বানাম্। প্রমোচ্যং, রোচ্যং, পদ-শুর্বিত ভূ বাক্যম্। প্রযোজ্যানিযোজ্যো শক্যে; ভোজ্যম্, ভক্ষে। নিপাত্যন্তে-প্রযোজ্যুং শক্যঃ প্রযোজ্যঃ নিযোজ্যুং শক্যা নিযোজ্যঃ। ভোজ্যং ভক্ষ্যং ভোজ্য ওদনঃ, অন্তর্ক ভোগ্যা স্ত্রী

১১৯। হনো হোগে নণিভোর্ন চতো ২টো-ইনিয়লোঃ।

[इनः क्षा, दः चा, पः ठा, न विष्टणाः १॥, नः चा, ठ ००।, छः ४।, व्यक्तः ४१, व्यनिश्रत्याः (न-वेष्ट्रे-नम्) १॥]

নকারে ণিতি চ পরে হনো হোঘঃ স্থাৎ, তৎসন্নিরোগে-২চ উত্তরস্থ নকারস্থ তকার:। নকারে স্থান্তি, ব্রুস্থা, ণিতি ঘাতঃ ঘাতকঃ প্রনিধ্যোরিতি কিন্তু পত্র নস্তোম্যভূৎ-অঘানি, ঘানিষীন্ট, ক্যান। अञ्चानाक शत्ना दशकः जार । विवादम्बि, कव्यक्रद्रकः।

ऽऽऽ। द्रितिष्ठि। (दरः ७, वर्षा (न-४६) १।]

হেরভ্যাসাদ্ধরং স্থাৎ। প্রক্রিয়া, প্রক্রিয়তি, অচঙীতি কিমৃ ? প্রাক্রিয়ং।

। ভক্ত। অধিকারোইয়ম্। ১২২। পাদঃ পথ। [পাদ: ৬), পং •১।]

ভক্ত সমাসান্তক্ত পাদঃ পৎ স্থাৎ। দ্বিপদঃ পশ্চ, দ্বিপদা, ত্রিপদঃ, ত্রিপদী, বৈয়াত্রপদ্যঃ। (৩৭)

১২৩। वटमां भारता बर्डें । (७৮)

[वरमाः ७, मानः (म—षह्) ७, वः ७, छैर ०५।]

উৎস্ফাতুবদ্ধন্য বলোরচা সহ বস্যোৎ স্থাৎ। উষুদঃ, বকারস্থা নিমিত্তন্যপোয়াদিটোহপ্যপায়:। উপেয়ুষা, বিছুনী, ভন্যেত্যেব বিদ্বৎস্থ।

১২৪। খযুবমঘোনাং জীবৰ্জ্জমতদ্ধিতে।

[अधुनवर्यानार (अन्, पूर्वन्, वयदन्) आः, छीर्वकर •२।, चछविएछ १।]

ভলৈয়বাং বল্যোৎ ল্যাৎ। শুনঃ, শুনা; যুনঃ, যুনা; মথোনে; অভদ্ধিত ইতি কিম্? শুনোবিকারঃ শৌবং

⁽৩৭) ইহ। সমাসাজগদেন সমাসাজকার্য্যন্ত্ লক্ষতে আয়ুল্ল তবং।
বাল্লপাছ পত্যমিতি বণি বৈয়ালপায়ঃ।

र्थः । वर्षाः । देश क्षत्रं प्रारंश्वकः श्रेष्टाकः हैजाह छः । रहेजाकः अस्वरका वन मध्य ।

मार गर् ; **डार्स्ट उन्दर्धान छन्। अयोगा छन्छिन्छ नि**ण हार स्विज-छन्।, क्रियंत्ररणसीक

520 | वार कि | [बार: का. कर्-आ]

वाहः माट्यावकातमा छेर् मार । खट्याही, मान्। हो। (०৯) ১২৬। অনোইলোপোইযি বমস্ত্রসংযোগাৎ। [बनः ७, बद्यांतः ১।, बन् १।, वसः ८।, ज्००, बमरपानां ८।]

অনন্তস্য ভস্যাতোলোপ: স্যাৎ। রাজ্ঞ:, রাজ্ঞি, তক্ষ্ণ, অহ্না নির্বতং আহ্নিকম্, বমাৎ পুনরসংযোগাৎ পরস্যাতঃ পীবা, হেক্সা ন সংযোগাৎ পর্ববা, আত্মনা, চর্মণা, অধীতি কিম্ ? সামন্তঃ, শীর্ষণ্যঃ।

১২৭। বপূর্বহন্ স্নতরাজ্ঞামণি। (৪০)

ष्पूर्व- रन् - इण्डाख्डाम् आः, व्यान १।]

সিদ্ধে সত্যারস্তে। নিরমার্থঃ। অণি এষামেবাপ্লোপঃ স্যাৎ। য পূর্ববিদ্য-উক্লঃ, হন-ভৌণত্মঃ, ধার্ত্তরাজ্ঞঃ, নাতাস্য দামনঃ।

326 | **डिटग्रीवी |** [बिट्याः १॥, वी • भ]

সনধোরনন্তস্যালোপো বা স্যাৎ। রাজ্ঞি, রাজনি । দধি, দধি, শী-শাস্থী, সামনী।

১২৯। আতোধাতোরনাপোইয়স্থ বহুলম্।
[আতঃ ৬া, গাভোঃ ৬া, অনাপঃ (ন-আগ্) ৬া, অন্তন্ত ৬া, বহুলম্ ২১।]

⁽७৯)। (बज्बार । त्यर, मरबा, > वर द्वज्वाः, द्वज्वः देखि द्वानः।

^(8.) व शूर्व। यः शूर्रका यत्र मः। छत्कारिनजार छक्कः।

⁽१১)। श्रम् भक्क मक्ष्माक्ष्मकारमे के श्राम्य । वर्षे, हेक्कि अहिति, श्रम् एक्षि (वाशः ।

ভদ্য থাতো প্রান্তো কোনাঃ স্থাৎ। নোমপাঃ, সংস্থাঃ, তায় কিপ্ ভাততা, ডবৈ তাততে। থাতোরখাল স্যাপ্বভিত্নস্যাতো বহুলং লোপঃ স্যাৎ। হাহঃ,;হাহাঃ হাহান্বা।

১৩০ | পথ্যাদেরিনঃ | [পথ্যাদেং (পধি-জাদি) ৬।, ইন: ৬।]
পথিমথ্যভুক্ষাং ভস্যাজোলোপং স্যাৎ। পথং, পথা,
মথং, মথা, ঋভুক্ষঃ, ঋভুক্ষা।

১৩১। অচোইতঃ প্রাগদীর্ঘশ্চ।
[बहः ७, बडः ७, প্রাক্ ০১।, कोर्बः ১।, ह ०১।]

লুপ্তনকারস্যাঞ্চেল্যান্তো লোপঃ স্যাৎ, ততঃ পূর্ব্বোহ-গদীর্ঘণ্ট। দধীচা, প্রতীচী, তিরশ্চী, সন্ত্রীচী, সনীচীনং, প্রতীচ্যম্, তৈরশ্চম্, খাঁচ ইতি কিন্ গ পূজায়ামলোপো নাস্তি তির্যাঞা।

302 | छेन हें । । ख्रः el, हर • > 1]

উদঃ পরস্যাচোহত ঈৎ স্যাৎ। উদীচা উদীচী, উদীচ্যম্, ভদ্যেতি নিয়ত্তম্।

১৩৩। বিশ্বদেবসর্বনামাৎ টেরদ্র্যঞ্চতী ক্নিস্তে।

[विषेक्, त्यत, मर्सनामा९ आ।, तिः आ, षाति • ১।, षक्षा १।, किनत्स १।]
किनत्स्वरूकको পরে বিশ্বগাদেকের দ্রি: म्या । বিশ্বগঞ্জীতি
विশ্বদ্যেও, বিশ্বদ্যকো, তদ্যেও, দেবদ্যকে, জ্ব্রাঙ, অক্সদীচী;
কিনস্ত ইতি কিমৃ ? বিশ্বগঞ্জনম্।

· 508। क्याटमां पण पूर्व द्वां ति व। [चरतः ७, रच ७, रः १, रा ०१; सः ७, वनि ०१, रा ०१] অঞ্চো প্রে কৃতকার্যজাদলো দকাবক মুর্ব্বাভাৎ। দ্রুদ্ধিন বা। অদ্দ্রাঙ্, অমুদ্রাঙ্, অদ্মুয়ঙ্। (৪১)

५७৫। महमदमाः मिधममी।

[महमरबाः ७॥, मधु, मभी ১॥]

অনয়োরঞ্জতো পরে দপ্তি, সমী স্যাতাম্। সহাঁঞ্তি সপ্তাও, সপ্তাঞ্চো, সপ্তাচী, সপ্তাচা, সমঃ সম্যঙ্ সমীচী।

১৩৬। তিরসন্তির্যালোপে।

[जित्रमः ७।, जित्रि ०১।, व्यत्नाट्य (न-त्नाथ) १।]

অঞ্তৈ পরে তিবসন্তিরিঃ স্যাৎ অতো লোপো ন চেৎ। তিহাঙ্, অলোপ ইতি কিষ্ • তিরশ্চঃ পশ্য।

১৩৭। মঘোনোনস্তর্গ সৌ তুশ্চ।

[मर्यानः । नः । एः । वा ०।, त्रो १।, पुः । ह •५।]

মঘবন্নকারদ্য তৃর্বাদ্যাৎ । মঘবা, মঘবানো, মঘবানঃ পক্ষে মঘবন্, মঘবন্তো, মঘবন্তঃ, ঙ্যাং মঘবতী, মাঘবতং, দৌ তুশ্চ মঘবান্ বা।

১৩৮। অর্বণস্ত্রসাবনঞঃ।

[व्यर्त्तगः ७, ए • ১।, व्यर्गो (न-क्) १।, व्यनकः (न-नकः) ७]

অর্বিণোনকারস্য পুনর্বিধানাৎ নিত্যং তৃঃ স্যাৎ। আসে পরে অর্বস্তো, অর্বস্তঃ, ড্যাং, ভবত্যেব অর্বতী, অসাবিতি কিমৃ ? অর্বা, অনঞ্ইতি কিমৃ ? অন্বাণো।

⁽৪১) শসাংগী অকারলোপে অবজীচঃ, অব্যুক্তীচঃ, অব্যুক্তীচঃ, অব্যুক্তীচঃ, অব্যুক্তীচঃ, অব্যুক্তীচা, অব্যুক্তিচা, অব্যুক্তিচা,

১৩৯। শসাদে বাদর্শ, প্রাস্, হরিশ্, যুষন্, দোষণঃ। (৪২)

[मजारको (मज्-वावि) १।, वा ०५। वर-मज,-- त्वाववः ।॥]

मनारिन भरत म्हारिम जानरा वा हाः। म्हान् मर्कावा;
महाजान् महाग् वा; नामिकशा नमा वा; भागन् भरिनावा;
मारिन मामा वा; क्रम्य क्रि वा; मामक्रक्रको ह्लर्छो ह विस्तुरिक ; निमाशाः निमि वा; शूर्यभः, शूक्षावा; स्मिशाः, रिनावा,

ইতি শ্রীপল্পনাভদত্তকতো স্থপলে ব্যাকরণে দিতীয়াধ্যায়ন্ত তৃতীয়: পাদ:।

অথ দ্বিতীয়াধ্যায়স্থ

চতুর্থঃ পাদঃ।

मर्त्वनामश्रकव्रगम् ।

১। मर्बानीनि मर्बनामानि स्राटर्थश्म ९ व्हां साम्।

সর্ব্বাদীনি ১য় সর্ব্বনামানি ১য় স্বার্থে ৭৷ অসংজ্ঞায়াং ৭৷ (১)

সর্বাধিত্তীনি সর্বনামসংজ্ঞকানি ভবস্তি। সর্বে, সর্বাধ্যে. সর্বিশ্বাৎ। সর্বে, বিশ্ব, উভ, উভয়, ডতর ড চম-প্রত্যয়ান্ত,

⁽৪২) দত্ত নাসিকা পাদ মাস জ্লয় নিশা যুব দোবাঃ স্ভালয়ঃ। বক্ন
• বকুং শকুং শকুন অংশকু অসনু উদকু উদনু ইতি নোকাঃ।

^{ে.(}১) সর্জা। সর্জ্য আদির্ঘেষাং তানি, ব্যবস্থায়ামবয়বে বা আদিশকঃ। তদ্পের সংবিক্রানো বছরীহিঃ। উভশকোধিবচনান্তঃ। ও ওদিতি শব্দঃ

ইতর, অন্ত, অন্ততর; হ, ছৎ, এতে অন্তপর্যাবে নিন.
সম (অরং সর্বার্থঃ), সিম, পূর্বেপরাবরদক্ষিণোভরাপনাধর,
ম, অন্তর, তদ্, ত্যদ্, বদ্, অদস্, ইদম্, এতদ্, এক, দি, যুম্মদ্,
অন্মদ্, ভবৎ, কিম্ গ স্বার্থ ইতি কিম্ গ নাম্যপদার্থে ছৎকঃ,
পিতৃকঃ অসর্বনামন্বাদক প্রাক্ টেন ভবতি। অক্তান্তক্ৎসিতাক্ষেপেন্তি ক এন, অসংজ্ঞায়ামিতি কিম্ গ উত্তরাঃ
ক্রবঃ; অতিবিষার্থে (অতুসীতি ভাষা) নিশ্বারে।
২ | বাদিশ্বভ্বীহো | (২) বি ০১।, দিন্ব্রুরিছো গা

অন্তার্থং বচনম্। দিখাচি-বছব্রী হি-সমাসে সর্বনাম সংজ্ঞা বা স্থাৎ। উত্তরপূর্ববিষ্ণ, উত্তরপূর্ববিষ্ণ ন তৃতীয়ার্থবোগে। অত্র সা সংজ্ঞা নাস্তি। মাসেন পূর্ববিষ্ণ, মাসপূর্ববিষ্ণ। দক্ষে চ। অত্রাপি সা সংজ্ঞা নাস্তি। পূর্ববিপরাণাং, কতরক্তমানাম্।

৩। বা জাসি। [বা ৽১া, জাস গা] (৩) ,
দ্বন্দ্বে জাসি বা সর্ব্বনামসংজ্ঞা স্থাৎ। কতরকতমে কতরকতমাঃ।

8 | প্রথমচরমতয়ায়াঽপ্রানমকতিপয়া-দ্বাশ্চ | প্রথম – কভিপয়ার্ধাঃ ১॥, চ •১৷]

কাতন্ত্রাদে ন দৃশ্যতে। নেমশকোহধবোটা। সমশকঃ দর্ব্বার্থঃ কাকাক্ষিবৎ
সিমশকোহিণ। কিঞ্চ, সর্ব্বেষাং নাম ইতি ব্যুৎপত্তিমাশ্রিত্য সংজ্ঞোপদর্জননামে সর্ব্বনামত্বং প্রাকঃ পরিহরন্তি, বর্জমানমিশ্রান্ত সর্ব্বেষাং নামেতি অর্থপ্রামিকভ্যাং সংজ্ঞোপদর্জনীভূতানাং জন্দদানাং ব্যবচ্ছেদ ইত্যাবঃ।
কিঞ্চ তদন্তবিধিনা পরমদর্ববৈশ্বৎ অতি সর্ব্বারেত্যাদাবিপন আং। পত্তঞ্চ
পূর্ব্বপদাৎ সংজ্ঞায়ামণ ইতি প্রাপ্তে সর্ব্বনামানীতি নিপাতনাত্রভবতীতি স্থাসঃ।

⁽২) বত্ত দিদিশেতি সমাসক্ষত্তিবাস্ত বিষয়ঃ। নাক্সত্তেতি সরলার্থঃ।

⁽৩) বা। অত্র জসিবেতি নিয়মাৎ ব্যথাং হরেষামপি মেদিনী ভূতা-মিতি মাষপ্রয়োগশ্চিত্যাঃ।

এতে জনি বা স্ক্রনামসংজ্ঞাঃ স্থ্যঃ। প্রথমে প্রথমাঃ তয়ায়ে প্রত্যায়ী—বিতরে, বিতরাঃ; বরে, বরাঃ; এব-মন্ত্যেচ।

৫। পূর্বপরাইবরদক্ষিণেতরাইপরাইধরাণি ব্যবস্থায়াম্। প্রধানাহবর—গরাণি ১৪, গ্রহারাম্ ৭।] (৪)

স্বার্থাপেক্ষোহ্বধিনিয়মো ব্যবস্থা। তত্তৈবৈতানি জসি বা সর্বনামানি স্থাঃ। পূর্বে পূর্বাঃ, পরে পরাঃ; ব্যবস্থায়ামিতি কিম্ ? দক্ষিণাশ্ছাত্রাঃ প্রবীণা ইত্যর্থঃ।

৬। স্বমজ্ঞাতিধনাশ্যারাম্। (৫)

স্বং ১। অজ্ঞাতি ধনাধ্যায়াং (ন-জ্ঞাতি-ধন-আধ্যা) ৭।

জাসি সং সর্কাম বা স্থাৎ। স্বে জনাঃ, স্বা বা । অজ্ঞাতি ধনাথ্যায়ামিতি কিম্ ? স্বাঃ জ্ঞাতয়ঃ, স্বা দীয়ন্তে ।

৭। অন্তরৎ বাহুপরিধানয়োঃ। (৬)

অন্তরং ১। বাহু, পরিধানয়োঃ १॥

ष्याञ्चलः क्रिन वा मर्वनाम छाए। গ্রামালন্তরে, অন্তরা

⁽৪) পূর্বা। সার্থাপেক ইতি, অবধির্মশ্যাদা তম্ম নির্মোহবশ্রতাবঃ অবধিতাবাদন্র:সং, স চ কীদৃশং সার্থাপেকঃ। পূর্বাদীনাং শলানাং স্থার্থা দিক্ষেলকার তথ অপেকতে যং স সার্থাপেকঃ পূর্বাদীনাং দিগাদীনাং অর্থানাং বংপুর্বাদিত্বং তহিরোগতঃ কঞ্চনাবধিরপেক্য তবতি নত্ত্বধিরপেক্যঃ, তথাহি, যৎ পূর্বাদেশক পূর্বত্বং তৎ পরং দেশমবিষপেক্য বর্ততে, পরস্থাপি যৎ পরত্বং তৎপূর্বং দেশমপেক্য ভবতি তন্ত্রাৎ পূর্বাদিশকবাচ্যাপেক্যানাম-পেক্যমবশ্রৎ কেনচিতাব্যং তত্ত তক্তবাবধের্বঃ পূর্বাদিশকবাচ্যাপেক্ষানাম-পিক্যমবশ্রণ কেনচিতাব্যং তত্ত তক্তবাবধেরঃ পূর্বাদিশকবিদ্যাপ্রশাহর্ণভাবঃ স নির্মো ব্যবস্থা।

⁽१) ছং। জ্ঞাতিশ্চ শনক তল্পোরাধ্যা পর্য্যার্থা, তন্তাং বর্ত্তমানং স্থমিত্যর্থ:।
(৬) অন্তরং। বাহ্যোহনারতোকেশং পরিধানমধোবন্ধা, তত্ত্র বর্ত্তমানমন্তরম্।

শ্চাণালগৃহা বাছা ইত্যর্থঃ। অন্তরে, অন্তরাঃ শাটকাঃ পরি-ধানা ইত্যর্থঃ। ন পুরি সর্কানায—অন্তরায়াং পুরি বদতি।

৮। তীয়ো ডিতি। জিয়: ১া, ডিডি (ছ্-ইং) গ। ।
তীয়প্রতায়ান্তো ডিভি সর্কনাম বা স্থাৎ। বিতীয়দ্মৈ, বিতীযায়; তৃতীয়স্থাৎ তৃতীয়াৎ।

৯। अर्बनाग्रः। अधिकारतारुग्रम्।

১০। ञट्डि ८४१ [चडः ८।, ८६: ७।, १म - २।]

সর্কনাম্বোহদন্তাৎ ঙেঃ মৈ স্থাৎ। সর্কমে, তামে, শত ইতি কিম্? ভবতে।

১১। গুসিড্যোঃ স্বাৎস্থিনী।

ङिमिरङ्गाः थ। न्यार न्यारमी आ

অতোহনয়োরেতো ভবতঃ। সর্বাস্থাৎ সর্বাস্থান্।

32 1 शूर्वि मिनवकाष्ट्री [श्र्वाकिनवंका e ei, वा • 51]

এভ্যো ঙদিঙোঃ স্মাৎ, স্মিনো বা ভবতঃ। পূর্বস্থাৎ, পূর্বাৎ; পূর্বস্মিন্, পূর্বে; পূর্বে পরাহবর দক্ষিণোত্তরাহপরা-হধর স্বাস্তরা এতে পূর্ববিদয়ঃ।

১७। जामिश मात्र। (4) (बाद ११, व्यानः ७।, नात् ०५।)

সর্ববান্ধাহরণাদ্ধিঃ সাম্ স্থাৎ। সর্বেষাং সর্বাসাম্; কেষাম্, কাসাম্

⁽৭) আৎ। আদামিয় ইতি সিদ্ধে যৎ সামিতি কৃতং তৎ মন্দ্রীবরাং সুধ-প্রতিপদ্ধার্থমু।

381 जम दे९ श्रूरिम । (जमः ७, हर • २), भ्रमि १।)
भूरिम मर्समामा जम देर खारे। मर्स्स, तिरम, ८४, ८७
व्यामिटाउ छवछः।

১৫। সুপি। অধিকারোইয়ন্। ১৩। ক্সিয়াং ডিতি ন্যাট্ প্রাক্ পুষচ্চ।

ব্রিরাং গ ভিডি গ সাই •১৷ প্রাক্ •১৷ প্রাক্ •১৷ চ •১৷ স্ত্রীয়াং সর্বানাম উবৈরে ভিতি স্থাপি স্থাড়াগনো ভবতি। প্রাক পুষক । সর্বাস্থি, অনুষ্যাঃ আদিত্যেব ভবতৈয়।

১৭। তদাদেরা দ্বে ফে রং।

उपारणः ७। व्या • ३। (वः ८। ८हेः ७। व्यद • ३।

ষাদো বিপর্যান্তন্ত তদাদে তেরৎ স্থাৎ। সং, স্থাং, ততং, তত্র; তদ্ ত্যদ্, যদ্, অদস্. ইদম্, এতদ্, এক, বি। দেন-তিস। বিতঃ স্থাত্যেব-লুকোহন্তরঙ্গান্ধান্ত্বলুকালুপ্থেতি নিষেধাৎ, তৎকুলম্. তৎপুত্রং। আম্বেরিতি কিমৃ? স্বতঃ; সর্বনাম ইত্যেব প্রিয়তদ্, প্রিয়তদে।।

Sb 1 (मोज्ड मड़। (क्षांश, कः का, मः भा)

সৌ পরে তদাদে স্তস্ত সাং। সং, পর্বসং, ভাং, এষকঃ, এষা।

३৯। अमरमा मगु त्मा त्त्रीम्ह त्क जू ता।

पनमः अ मच अ त्याः अ छैः ऽ। ह ॰ ऽ। देव १। छू ॰ ऽ। वा ॰ ऽ।

त्रि शद्य में त्याम्य में खाँ । त्याम्ह खेकातः, खीलूः महाः

निः हावत्याकि ज्ञादान—वात्री खी, वात्री श्र्यान् , त्व छू वा,

व्यन्ति व्यूद्वा वा, व्यूक्तम्हित्हादक मूद्वा हस्त श्राह्म ह

क्रिस्

' २०। अटब्रिशाह्कालर माइ (मामः। (৮)

चटिः अ ववाह्कांमर •श हार श के • 51 हैं। का मा 31

অন্তির্বস্ত তদ্যেটে রদদোদকারাত্তরস্থাতে। (তো) যথাচ্কালং ক্রন্থনীর্যাসুরূপমূর্তবিতি। দদ্য চ মন্ত্রং প্রশি পরত:। অনুনা, অমৃ, অমৃনি: ইউদিকো বিধরে। বিধ্যন্তরমপেক্ষন্তে, অথবা নথাচ্কালমিতি বচনাৎ। অযাদৌ ক্রতে অমুয়া, অমুব্য ; অটেবিধানাৎ দৃগাদো চ, অমৃদৃক্, অমৃদৃশঃ।

२५। এত नेष्ट्रिय । (बंधः था, मेर ०), वहर्ष १।) (১)

⁽b) करहे । कष्टिर्याणि, क्यार्थः, रखामम (हेदवर्ता विशीवरण एक मान-কারাৎ পর উবর্ণো ভবতীতি। বধাচ কালমিতি, কাল: ক্রিরাবিশেষ উচ্যতে, অচঃ কাল উচ্চারণক্রিয়া তমনতিক্রেম্য পদার্থানতিক্রমেহব্যমীভাবঃ তেনাম্মর্থঃ সম্পদ্যতে বদ্যদসো দকারপরো ব্রুসন্বরম্ভদা ব্রুস্তকারঃ স্থাৎ,যদি পুনদীর্ঘসর-छनामीर्चाकातः देखार, स्थात् कानरे द्वलमीर्चासूक्र श्रीषि । विजीयः नकनः বির্ণোতি দক্ত চেতি চকারোহত্রাধ্যাহর্তব্যঃ, স্থপীতি প্রারিক্ম। নমু অমুয়ে-ত্যাদে পরতাহতে কতে অমেত্যনিষ্টরূপৎ স্থাদিত্যাহ ইষ্টর্থসিদ্ধা ইতি। ন্যিষ্ট-সিদ্ধিকলনয়া কিমিহ প্রত্যাখ্যাত্য ন শক্যতে কং বাবিধাতৃৎ প্রভূরত ইত্যাহ व्यथरवज्रुत्रमर्थः व्यक्तिंक्रानाम रेज्यारक्रिक्ष श्राष्ट्रवज्यार मर्सर निकाजि তথাপি যদু ৰথাচ কালমিত্যক্তং,তৎসাৰকাশোহয়ং বিধিরিতি জ্ঞাপনার্থং তেনা-असिन् विदर्श अत्रुख भन्नारम्य अवर्ड इंछि। छ्लान, अअभिकार्क्छ মাদীর্গক্রস্থানেরিতি সূত্রম্। নমু বর্গাচ্কালমিত্যক্ত প্রবণাৎ কৃতে কার্যাকাতে विधित्रपः धवर्डेट उँठण्ठ क्षेत्रपारमभः जिक्न वर्व किमारेनिश्चि शूनक्राकन প্রয়োজনমিত্যাই অটের্বিধানাদিত্যয়মর্থঃ, বরমক্ষরাধিক্যাদর্থাধিক্যমিতি বৃদ্ধ-সম্মতেষ্টেরবর্ণমাত্রোৎপস্কাব্ধিকৃতমপি গঙ্গাস্রোতোবৎ প্রবর্তমানমপেক বিধি-त्रवर नित्रवेश्वरः প্রাম্মেতি, अन्तृतिष्ठापि अमार्विवरृष्टि देखि वादका मर्मा-नाम्छ ज्लात्यः किन् हेक् मंक् मङ्द्रुष्य अम्र ज्लात्यः द्वारे ।

⁽৯) এত। বছত ইতি বিষয়সপ্তমীয়ম্। উত্থাপবাদার্থেছিয়নবিকার:। বছত ইতি কিমৃ ? অমৃ কুলে।

भारता वहवहनमा अब् जेम् ज्वाकि। मक ह भवर एति शत्रकः। भागी, भागीकिः; मानिरकाव अमृतकः।

२१। इम्बम्यात्रकार्श्विगा ७ ७९।

रेप्य अरताः आ व्यकाः आ कितिना चंद्रा आ वर ०)।

অককারয়োরিদমদদোর্ভিসি অত এৎ স্থাৎ। এভিঃ, অমীভিঃ অকোরিতি কিমৃ ? ইমকৈঃ; অত ইভি কিমৃ ? আভিঃ।

২৩। ইদম ইত্রসিহোও। ইদম: ৬।, ইৎ •১।, তমিহো: १॥
তিমি হকারে চ পরে সকশ্চাস্থেত্তবিভি। ইতঃ, ইছ।

28 । इत्रमञ्जर खीर्यूरमरत्रां स्ना । इत्रमा १

हेनमः छना नर हेय्रमयरमी खाळाम्। हेय्र खी, खन्नः शूमान्।

२०। (मा मड़। (मः ७।, मः ५।)

ইদনঃ স্থাপি দক্ত নঃ ক্তাৎ। ইমো, ইমে ইমং ইমাম্। ২৬। টোসোরকোইনঃ। (টোসো: মা, জক: ৬া, জন: ১া) টোসোঃ পরয়োরিদমোহনঃ স্থাৎ। জনেন জনয়োঃ,

जक देखि कियु ? देमरकन, देमकरग्राः।

२१। रला९ । (रनि १।, ष् ००)

হলাদো স্থাপি পরে ইদমোহদ্ভবতি। আভাাং, এভিঃ, অস্য, আসাম্, অক ইত্যেব ইমকাভ্যাং ইমকস্ত।

२४ । अक्किनिश्चितिका । जकः ७। ह • ३। वर्षारकरम १। (३०)

^{&#}x27; (১০) সকা। আদিশুত ইত্যাদেশা দিশিরিং কথনার্থা। বথা ধর্মং ছির্দেশ মোলার ইতি। অনুশবঃ পশ্চাদর্থে বর্ততে স চ পূর্বকবিতক্তিব

ৰ্ছাদেলে পূৰ্বোজাকুকথুকে ইন্সৰ্ভ শক কাৰ্ক্সান্তৰতি হলি প্রতঃ। ইনকাজ্যাং লাত্তিরবীতা অধ্যে আভা বহরপ্য-ধীতম্।

२৯। এমোদিতীয়াটোস্মেউদোংপি।

এন: ১৷ বিতীয়াটোন্ত গা এতখা ৩৷ অপি • ১৮

विजीया, छो ७ मृद्ध श्रा श्रा भक्षणाचारमा हिम्स अक्रिमार्थि जनारमा ज्या जिस्स है स्वर, देशका, जिस्स विश्व जन विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्व

৩০। এনদা ক্লীবে দ্বিতীয়ৈকত্বে।

ক্লীবে অয়াদেশে ইদমেতদোদ্ধি তীয়ৈকবচনে এনদা স্থাৎ। ইদম্ এতদা কুণ্ডমানয় অথৈনৎ প্রকালয়।

৩১। অদেতদন্ত্রতশোরনহাদেশেইপি। অং • ১। এতবং ৬। এতসোঃ ৭॥ অনহাদেশে ৭। অপি • ১।

এতদোরনম্বাদেশেহপি দকশৈচতদোহ দ্ভবতি; অত্র, অভ:।

७३। किमः कः। (किमः ७, कः)

কিমঃ শুপি কৃঃ স্থাৎ। কঃ, কৌ, কে, কেরু। শুপীত্যেব কিম্। ভগাদো কুঃ। কুতঃ, কুত্র, কঃ, কুহ বেদে।

ভবতীত্যাহ পূর্ব্যোক্তকেতি বত্ত কর্মানিতরা নিক্সি বাজিপাদ্য পূন্ রস্থারক্ষ মোহতানালেশ ইতি-শ্রীগতিঃ। সকলেতি চুকারোহকং নিপেবশ্যক্ষর্কনি তেল সকলার্ন্যাককার্ত্র ও তরভি। স্থানেশ ইতি ক্সিণ্ ইক্কাড্যান্দীতং ভূক্তক।

৩৩ । যুদ্দশাদোরশোভারাম্দ। (১১) ব্যদ্দশাদো আ অর্থিতা আ আমৃ ১৯ বা ৩

অলিকে মুশ্লদম্মণী, অনয়োদ কারেণ সহ অমোতোঃ স্থানে আস্ ভবতি। স্থাং, মাং, যুবাং, আবাং অত্যাদিপ্রয়োগে চ। অতিস্থাং অতিযুবাং অতিমাম্ অত্যাবাম্।

७८। नामकान्। नमः ७। ह • २। जान • २।

যুগ্মদক্ষদেশ কারেণ সহ শসং আন্ ভবতি। যুগান্ অস্থান্।

৩৫ | চতুর্থ্যাৎ ভ্যাসো ভ্যাম্ | চতুর্থ্যা না ভ্যান্ । ভ্যান্ ভ্যান্ । ভ্যান্ ভ্যান্ । ভ্যান্ ভ্যান্ । ভ্যান্ ভ্যান্ ভ্যান্ । ভ্যান্ ভ্যান্ ভ্যান্ ভ্যান্ । ভ্যান্ ভ্য

অনরোদ কারেণ সহ ওসি ভ্যানোস্থিঃ স্থাৎ। ইদসুবন্ধঃ। ত্বং, মৎ, যুশ্নৎ, অস্ত্রং।

ত্রোদ্কারেণ সহ আম আকম্ ন্যাৎ। যুগাকং, অম্মাকম্।

৩৮। ত্রহং সুনা। ত্রহং ১৯ সুনা অ

তয়ো স্থানে স্থনা সহ স্বৰ্মী স্যাতশ্য। সং, অহং, প্ৰমন্থ প্ৰমাভ্য্।

⁽১১) বৃদ্ধ। স্পা ত্মাদি যুদ্ধদমদোবহমাদিত সমস্তৃতীয়াদাবিতি কেনচিং স্ক্রিডং তদিহ ন বজবামিত্যাহ অনিক্লে যুদ্ধদন্দ্দী ইতি নক্ষপণে
ইত্যর্থ:। উক্তঞ্চ, বটসংজ্ঞকাল্লিব্ সমা যুদ্ধদন্দ্রভিব্যরমিতি অত্র যুদ্ধদদদ্দেভাবদ্বাঘদবিসম্বন্ধঃ তেন পরস্পান্সম্বন্ধং বথাক্রমভাবোহবসীযতে,
আন্ধ্যাদিশংবাকা চেতি তহাক্ষদ্বন্যহৃষ্বিভক্তাবিত্যাদ্বোদ্বং সর্কাত্ত।

তরোজনা সুষ্থ বরুষ্ । জন্ম শুরুর বরং ধর্ম তরোজনা নহ যুবংবরনো ন্যাতাম । যুবান, বরুষ ।
৪০ । ত্রা ভুত্যুৎ মহাৎ । তবা আছুলাং নহং ।
তবা চত্রোক্বচনেন সহ তরোজভাও, মহামো ভবতঃ।
তুভাং, মহাম।

85 | তবমমে দ্বা । इव मर्सा ।। इन गर ।। उन, मम। उन, मम। अर । दिन रियो रेडि । पः भाषः ।। विवा

অচি পরে ত্যোঃ সম্ভবতার্দকরেদ্য যোভবতি। ত্যা, ময়া, যুবয়োঃ, আবয়োঃ, ত্য়ি, ময়ি।

89 | **डिटमोर्त्रोद** | डिला: १॥ चार • ১१

ভাদো, সাদো চ স্থপি দকাবস্থান্তবতি। যুবাভ্যাং, আবা-ভ্যাং, যুম্মাভিঃ, অস্মাভিঃ, যুম্মাস্ক, অগ্নাস্থ

88। মপর্যান্তরোঃ (১২)। অধিকারোইয়ম্। যুবাবৌ দ্বিত্বে।

[, म-পर्याञ्चल्याः ७॥, यूवादवी (यूव-ष्याव) ১॥, विट इ १।]

তয়োম্ঘ্রতথোরি বিচনে যুবাবো স্থাতাস্। যুবাং, আবাম্ মপর্যান্তবোরিতি কিম্ ? যুবকাম্। আরকাং ন তদি যুবাবো । যুম্মত্তঃ, অস্মত্তঃ।

⁽১২) মপর্য্য। মপর্যান্তরোরিভুমকেন প্নরবর্ণশযান্তরোরিভি প্রাপ্তং ওেন নবকামাবকামিতি সিদ্ধাতি।

8e । क्यादिकदन धाउरहा खेत्रभावत्रभादताः । (১৩)

্বিনা গা, একতে গা, প্রভাগে লাভাগে বিভাগ উভাগে) গাঁ।
ভাষাের কালেশারের বিভাগে বিভাগে বিভাগে বিভাগে বিভাগে বিভাগ ভাষাের কালিখানে বিভাগি বিভাগে বিলে বিভাগে ব

৪৬। গোণরোশ্চ স্ক্রস্ভেড্সা ত্র্মান্ত্র দিন্তৎপুৰুষে। (১৪)

[গৌণয়ো: ৬॥, চ ০১।, স্থ, জ্বদ্, ভে, জ্বন্না ৩৷, ত্বমহুমাদি: ১১, তৎপুরুষে ৭৷]

তৎপুরুষে তয়োরপ্রধানয়োশ্চ স্থজ্বাদিভিঃ দহ যথোক্তং ত্মহ্মাদির্ভবত্তি। ত্বামতিক্রান্তোহতিত্বং, অত্যহং ত্বামতিক্রান্তা

⁽১৩) ত্বম। ক্চিল্লুপ্তেহপি, তেন ত্বৰতি মন্তবতি ত্বদীয় ইত্যাদি।

⁽১৪) গৌণ। অন্তার্থরিতে সত্যপলক্ষণার্থত্ব গৌণত্ব, অন্তার্থর্থেই সর্জননামতাদিবিবলাদের ভবতি গৌণরোরপি ত্মহমাদিঃ তেন স্বাদির চতুর্
ভ্রাক্যন্তাঞ্জাঞ্জং ভিন্নার্থ সৈব প্রাধান্তবিতাব্দেরং ক্মহমাদিরিতি নির্দ্ধোৎ
ব্যোক্তমিতাবগম্যতে। তৎপুর্ব ইতি কিমৃ ? প্রিয়ত্বৎপুরুষঃ। অন্তে তু
তংপ্রুষ ইত্যুপলক্ষণং তেন গৌণমাত্রে স্তাদের। যথা প্রিয়ত্বং ত্যাচক্ষাণক্ত্রিয়া ত্মেত্রক্ষমন্তলোপে। বিভাষরেতি কাতন্তে। সংক্রিপ্রায়ত্বক্ষমন্তলোপে। বিভাষরেতি কাতন্তে। সংক্রিপ্রায়ত্বক্ষমন্তলোপে। বিভাষরেতি কাতন্তে। সংক্রিপ্রায়ত্বক্ষণ হৈ বে
বিশেষান্তেহপি তত্র বহুলগ্রহণাৎ সমর্থনীয়াঃ। তথাহি মুন্মাচক্ষাণ ইতি
স্থপত্তকরোতীতি ণিচ্ কিপ্ ত্বং মুবাং মুন্ম্য। শন্তিন্ত্রপ্রু মন্ত লুক্ স্তাৎ,
মুন্মান্। টাড্যোল্ড নয়োরলুক্, তা মুবাত্যাং মুমাভিঃ; ভূত্যং আরাভ্যাৎ, ভ্যমত্যোম্য লুরা, মুন্মভাং মুন্মভাং, তুৎমুন্নাভ্যাং মুন্মৎ মুন্ধং তুর মুব্রোঃ আ্রাহ্বি
মুন্ধক্ষমন্দান্তি প্রত্তি স্ক্রেণা রম্মন্ত প্রা; মুন্ধং মুন্ধ। অন্টাভিন্
ক্রির্ন্তির স্থাল্যহমাদী নেছেভি স্করেণা রম্মন্ত প্রা; মুন্ধং মুন্ধং মুন্ধ। অন্টাভিন্

অভিযুমৰ, অভিনয় আন্তিকালার সাক্ষিত্র সংগ্রেষণ অভিযন্ত । প্রাথতিকালার স্থিতিকালার স্থান বা অভিযুদ্ধ বুলার ভিলানার বুলান বা অভিযুদ্ধ বুলার ভিলানার বুলান বা অভিযুদ্ধ বুলার ভিলানার বুলান বা অভিযুদ্ধ বুলার বিভাগতার বুলান বা অভিযুদ্ধ বিভাগতার বুলান বুলা

89 | তথাক্যবচনক্তিত্ববিভক্তি | তথাক্তিব বিভক্তি | তথাক্তিত বিভক্তি ।

উপৰুক্তাচ্ছেরে স্কলাদেরক্সতাং নিভকৌ বাক্যে পর-স্পরসম্বদার্থপদসম্লায়ে যুত্মদন্তদোরভ্যাদিপ্রযোগে ব্যবহনং ভবতি, তন্মিন্ প্রকৃতের্যজ্ঞপং ভাদৃশমেব ভয়োরতার্থেছ্পি

 द्विष्ठः प्रदः, युवा युविषि काण्डम् । युवाणि व्रम्भनाच्याः चार । यूचान् यूवाजार, (७ तम्मज न्या यूचर प्रात्म्यज न्या यूचर प्राच्या यूचर यूचजार স্বভাং ডসোহৎ মন্ত ল্যা, গুল গ্ৰ; ওসি মন্ত বঃ, গুৰেসাঃ, আকৰি মন্ত ল্থা, वृश्वाकः पूर्वाकः, पूर्वि पूरवाः पूर्वानः। धवः चन्नः चन्नः। चनाः चनाः। चनाः অভেতি কাতরম্। অসাভিঃ অসাং অবান অসান। অসাভ্যাং অবং অসং অশং অসং অস, অন্ম অন্মাকং অসাকং অমি অস্তো: অসাসু। একড়বিছায়ো-त्रवारानममानवः ऋक्षम् ७ ভिद्रकर्ष पः सः ७ मा. प्रामो ; प्रामाठकानः पः তাং তং তং তাং তাং তানু তথা মেনেতি কাতন্তং তাভ্যাং তাভি:। তং তাভ্যাং प्रख्यम्। प्रद चाल्यारं प्रद। प प्रद्याः 🖣 कम्। प्रत्रि प्रद्याः प्रीयः। मामोनकानः गर गर नम् । मार गार मान् । यदा देवत्निक काकद्वर, माक्यार माक्टिः । मर মাত্যাং মৃত্যুৰ্। মং মাত্যাং মং। য মালো: সাক্ষ্। বরি মালো: মালা-ठकार्ताश्चिति काण्यम् । ध्वामाङ्कानः घर व्वार गृत्रम् । य्वार ब्वार व्यान् । ব্ৰয়া ম্বাভাগ ব্ৰাভিঃ। ভূভাং ধ্বাভাগ ধ্বভাম। ব্ৰং ব্ৰাভাগ ধ্বং। তব ब्रद्धाः ब्राकम्। ब्र्वित व्रद्धाः व्राञ्च। आवामावनानः अवः आवार वर्म्। जावार जावार जावान्। जावन्ना जावाजार जावाजिः। महर অবিষ্ণ্যাং অবিত্যমৃ। অবিং অবিত্যামৃ অবিং। মন আবলোঃ ভারাকমৃ।' আবরি আবয়েঃ আবাহ। অভানে তু হুরামাধ্যাতৃবিক্তীতি বৃর্দ্দিবতি ।

जार। वित वाटका कर्बार्डक्किक अभिक्रक अक्टर दिए वहरक्रि निक्यान्यक्रम् । यनि छत्यार्वाटका विकास छना-ग्रेश मर्त्त बहुदन कि विवहन बद्धार्थ । यो कि विवहन वह-বচনং তদায়াত কেন্দ্র কেন্দ্র বছৰচনৰজ্ঞাপন্। উদাহরণানি-দাসতিক্রান্তের, অভিদাং বিশ্রো, দাসতিক্রান্তঃ অভিদাং, দাৰতিকান্তাৰ: অতিদাৰ ; ক্ৰেৰ্ডিছয়া, অতিদাভ্যাং, অতি-বাভি: ; বামতিকান্তেভ্য: অভিত্ত্যুষ্, বামতিকান্তাৎ অতি-ত্বং ত্বামতিকান্তেভ্যঃ অভিত্বৎ, এবমতিত্বয়োঃ, অভিত্বাকং কেচিৎ আৰু আক্ষং নেছস্তি। (১৫) তন্মতেন অভিস্কাং; অতিস্বয়ি, অতিস্বাস্থা, এবনস্মদোহপি। তদিত্বে, যুবামতি-ক্রান্তে) অতিযুবাং, যুবাং, অতিক্রান্তমতিযুবাং, যুক্তামতি-জ্রান্তান্ অতিযুবান্ ; যুবাসতিক্রান্তেন অতিযুবয়া, এবমতি-যুবাভ্যামৃ, অতিযুবাভিঃ যুবামতিক্রান্ডেভ্যোহতিযুবভ্যং, যুবা-মতিক্রান্তাং অতিমুবং; মুবামতিক্রান্তেভ্যোহপি অভিযুবৎ এবমতিষুবয়োঃ, অতিষুবাকম্; অভোষাং মতেন অতিযুব্যাঃ, অতিযুবয়ি, অতিযুবয়ে। অতিযুবাস। এবনত্মদোহপি ভদত্ত যুমানতিকাতো, অতিযুমাং, অতিবুমাং, অতিযুমান, অতি-যুম্য়া, অতিযুসাভ্যাং অতিযুসাভিঃ, যুমান্ অতিক্রান্তে-ভ্যোহপি অভিযুদ্ধভাং, অভিযুদ্ধৎ (ঙদিভ্যদোহস্তিঃ)। এব-ষ্ঠিযুম্মার, অভিযুদ্ধকং, অভ্যেষাং মতেন অভিযুদ্ধায়াম্ অভিযুম্মরি, অনিযুম্মরোঃ, অভিযুমাহ । এবং ছামতি-ক্রান্ত বিষয়ে প্রামতিকান্তে ব্রিয়ো প্রতিশ্বং ব্রিয়ো

[্]ত (১৫) কেচিৎ সামাক্ষিত্তি ডেনাত্ত সর্বনামাভাবতরা খাসলভাবে, অধিকেম্ন ভবভীতি হৃদয়ন্।

ই ত্যাদি (এষ ন সাকিত্রিক: শাস্তি)। সংসালু क চ রাবে। অতিহৎ, অতিযুবৎ, অতিযুগৎ, কুলম্ এব্যস্থাদেহিপি।

86 । शमार बार भार बामा।

[अनाद टा, श्राद मार •ऽ॥, श्रा, मा •ऽ॥ वा •७।]

পদাত্তরো ডাং মাং ইত্রেতো তা, মা ইতি বা স্থাতাম। পাতু তা, পাতু মা পদাদিতি কিম্? তাং পাতু।

85 । ८**७७मङ्**रारिस्ट्रम् । ८४७मङ्ख्याः ॥ ८७८म ० ० ॥

ঙেওদন্ত রোযু সাল সালোর্থ ক্রেমং তে ময়ে। বা স্থাতাম্।
দল্যাতে, দেহি মে। পুত্রতে পুত্রো মে। পদাদিত্যের তৃভ্যং
দল্যাৎ। কথা জিতত্তে পুত্রীকাক তৃয়া, মারত্যের্থে তে, মে
খবারো ভিষ্ঠতঃ।

৫০। ষষ্ঠীচতুর্থীদ্বিতীয়াস্থরোদ্বিত্বে বাং নৌ বহুত্বে বস্ নসে। (১৬)

[ষষ্ঠী—ছয়োঃ ৬॥, বিছে ৭।, বাং, নৌ ০১॥, বছরে ৭।, বদ্, নলো ১॥]
ষষ্ঠ্যাদ্যন্তরোক্তয়োর্যথাক্রমং দ্বিচনে বাং, নৌ বছরচনে বদ্,
নাসো স্থাতাম্। সাবোবাং গাবোনো, ধনং বাং দীয়তে, ধনং
নৌ দীয়তাম্; দেবো বাং পাছ্রু দেবোনো রক্ষত্ন। বহুছে
পুত্রোবঃ, পুত্রোনঃ; ধনং বোদীয়তে, ধনং নো দেছি;
পাত্রো সিরিজামাতা, পাত্নঃ কমলালয়া। পদাদিত্যেক
যুবয়োর্গ্রাফ্রাফঃ।

⁽১৬) বন্ধী। নমু বন্ধীচতৃথীবিতীয়ান্তরোরিতি বক্তু মুচিতং কিং ছারাহণেন নৈবং বোচঃ, ছারাহণালজায়মাণবিভক্তে ছাতৃৎ বন্ধা সোহয়মান্ত্র ছাত্র-নমাচ্ছিয়া। নমু নিতাং প্রথমাদিখাদেশা মুক্তরে শিষ্যাশাং উদ্ভিক্ত ব্রথ গেরে কেন বিনীতে লাখিতি কালিদাকঃ।

(८)। नामक्रिजाल्याम्परति । अवस्त्रामान्यकर्नाः । (२१)

সংখাধনপদাৰানাদয়ে। ব হাং। কিপ্ৰ হাং বন্দে, দেব নাং পাহি, বিপ্ৰ তব হং বিপ্ৰ মুম্মমিত্যাদি। ভৎসামান্ত-বচনাদিশেষণামিষেধাে নান্তি। ছাত্ৰ বৈরাকরণ ছাহং পৃচ্ছামি ছাত্ৰ গুণিন তে স্বমিত্যাদি। তৎসামান্তেতি কিমৃং ছাত্ৰ জটিন লক ছাং পৃচ্ছামীত্যক্ৰ নিষেধ এব জটিলকশ্ছাত্ৰঃ সামান্তে। ন ভবতি।

৫২। वाक्रां मिशामा दिम्रां के वा शरेश्व शृदर्व छ।

[वाक्राक्रिभाषारकाः १॥, ठ-वा-हा-इ-धव-भूटर्स १।, ठ •३।]

বাক্যাদৌ-শ্লোকস্থ (সর্বব) পাদাদৌ চ ছামাদয়ো ন স্থাঃ। গুদনং পচ মুবয়োর্যথা স্থাৎ। যুম্মাকং পালকঃ শস্তুরস্মাকং পালকো হরিঃ। চ. বা হা হৈব, পূর্বের চ স্বমিদং তব চ মম বা স্বং, মম হ পুত্রো মনৈব পুত্রঃ। পূর্বে ইতি কিমৃ ং পুত্রশ্চ তে স্বমিত্যাদি তৎপরছাদ্ভবতি।

৫०। पृणार्थरगारगश्नारनाठतन। (১৮)

দৃশ্যার্থহোগে দ্বানাদয়ো ন স্থাঃ, অনালোচনকেং। বিপ্র-ন্তব দেশং শংদৃশ্যাগতঃ, বিপ্র মম বাসমালোক্যাগতঃ। অনা-লোচন ইতি কিমু? সাক্ষানির্ভালনে নিমেধো মাভূং, বিপ্রস্থা পশ্যতি, বিপ্রোমা সমীকতে।

⁽১৭) নামত্রিক। নামার্ক্তং সাধারণং বক্তীতি কর্তনি টন:। ছাত্রবৈয়া-করণ ইতি ক্ষত্রাত্রং শিক্ষা ক্রৈয়েক্তরগোহশি ভাৎ ইতি সামান্তং ভটিনত ন জবেফি ডাব্রুঃ।

^{🍊 (}১৮) पृष्ठा। प्रभनिर कानः चारनाहनर हाक्रवकानम्।

. ४८। शक्षमाजिन्सं किश्मवीकित्रहात-कारिकः।

[तक्याः ७, छतिः अ, वा • अ, किः-मर्स चारि, ब्रहाः ७, चहारिः ७। हार्षिवर्क्षित्राद किमारिः পঞ্চয়ান্তনিকা আৎ। ইদমূবদ্ধ এব। কম্মাৎ, কাভ্যাং, কেভ্যো বা. কুভোভবানবরোহতি, সর্বভোহীয়তে, বহুতো হীনঃ। দ্যাদেঃ সামান্সেন নিষেধো-হয়ং, বিশেষেণ ভবিষ্যতি।

((। मश्चमाञ्चः। नवमाः । वः म

কিমাদেঃ সপ্তম্যাক্তোৰা স্থাৎ। কুত্ৰ, সৰ্ব্বত্ৰ, বহুত্ৰ. অন্যাদেরিভাৰ-দ্বোঃ, ত্বয়ি, ময়ি।

(७। किर्मार्क। किमः ध वद का ह का

কিমঃ সপ্তম্যা অচ্চ বা স্থাৎ। ক। কুহ বৈদিকে।

६१ | इम्टाइश | इक्कः का दः अ

हैन भः मञ्जमा (द। वा मा। वा नवाद । व्यापनाद वस् । हेर ।

ক্টে। অন্যাসামপি দৃশ্যন্ত। [অন্তানাং আ, অপি ০১া, দৃশ্যুৱে ডিউন্স]

অতাসামপি বিভক্তীনাং কিষাদের্যথাদর্শনং তসাদয়ঃ হয়:। কঃ কুঞঃ কুত্র ভবান্; অয়মিত ইছ ভবান্, তং,ততঃ তত্ত দীর্ঘায়ুষং ত্রবীমি। কেন, কুতঃ, কুত্র ভবতা, আমিন ইছ ভবতি।

ঠে। আদ্যাদিভ্যন্তনিঃ।

[बागाविखाः था, खनिः ३।]

সৰ্ববাক ইতি নিবৃত্তব্। এভাতি স্বিধা ভাৎ। , খাদে।

আ**দিতঃ, প্রথমতোহতকো মধার্ক্তঃ পার্যক্রেয়েখতঃ, সু**গ্রতঃ, অর্থতঃ, কর্মতোগুণতঃ শরীরতন্চ কুশঃ, শব্দচোচুক্তঃ, স্থার-তোবর্ণতো বা।

৬০। প্রতিযোগে পঞ্চম্যাঃ।

ভদিব্বা স্থাৎ। যো নারায়ণতঃ প্রতি।

७५। जनामात्म ठाशीयकरशः।(५०)

[व्यथानात्न १।, ठ०), वशीयक्रदशः धा

হীয়ক্রহোরপ্রয়োগেহপাদানে পঞ্চ্যান্তনিকা স্থাৎ। প্রামত আয়াতি, চৌরতো বিভেতি, দ্যাদেঃ—দ্বিতঃ, হতো, মন্তঃ, মুম্মতঃ, অস্মতঃ। অহীয়ক্রহোরিতি কিমৃ ? স্বার্থাদ্ধীয়তে, দ্বাভ্যাং হীনঃ, স্বর্গাদবরোহতি, অপাদান ইতি কিমৃ ? দ্বাভ্যামন্তঃ।

৬২। অতিএহা২চলনাকেপেষকর্ত্তরি তৃতী-রারাও। অভিএহ—আক্রেপের গা।, অকর্ত্তরি গা, তৃতীয়ারাঃ ভা (২০)

এমর্থের তৃতীয়ায়ান্তদির্বাস্থাৎ। র্ভতোহতিগৃহাতে, চরি-ত্রতো ন চলতি; ব্যবহারতে। নিন্দিতঃ। অকর্ত্তরীতি কিম্ ? মৈত্রেণাভিগৃহতে।

৩৩। পাপহাকোশ্চ যোগে।

[भानदारकाः आ, ह • >।, दर्गारत १।]

অনুয়ে(বাংগ ছুতীয়ায়ান্তসির্বা স্যাৎ। বৃত্ততঃ পাপং, বৃত্ততা ধীনঃ।

⁽১৯) শ্বপা। হীয়ত ইতি কর্মগ্যাত্মনেপদে বগিতি চন্দ্রগোমী। কর্মকর্তরি প্রয়োগোহত নেব্যতে নাপি জ্বাবে ইন্ড্যাচার্য্যাঃ। তেন সার্থাদ্ধীয়তে দেব-দক্ষেন্ডাপি ল স্থাৎ। কর্মকর্তব্যেবায়মিতি কৌমারাঃ।

⁽२•) प्रिका प्रिकारकारकिक्यां अस्त्र प्रमन्यवाधनः, व्यास्करमा निना।

58 | वर्षा उर केटिक | क्या कर-भटक १। (र ?)

ষ্ঠ্যান্ত সিব্যিতাং। দেবা অভ্নতোহতবন্ অভ্নত পকা ইতাৰ্থঃ। আদিত্যাঃ কৰ্ণতোহতবন্। রোগাং চিকিং সায়াম্। তদিব্যিতাং। হিকাতঃ, প্রবাহিকাতঃ কুরু চিকিংসাং তত্তা ইতার্থঃ। অভিতঃ পরিতোহবায়ম্। ইমৌ নিপা-ত্যেতে।

৩৫। সর্বনামাব্যয়তিঙামক্ প্রাক্টেঃ কুৎসা-কুকম্পাম্পাজ্ঞাতনয়েষু।

[जर्रानाम-व्यवाय-जिहार था। व्यक् •>। टीक् •১।, टिः सा, कूर-नरप्रयू वार

কুৎসাদ্যথের সর্বনামানেটো প্রাগয়া তাং। পাপোহসকো, হাসকস্তং; অল্লে—নীচকৈঃ, তিওন্তত্ত্য—পচতকি,
জল্লতকি, অজ্ঞাতে—কোহসকো জল্লতি, নীতো—গোপারকেন্ধনাযুষী, অথোচ্চকৈরাসনতঃ পরাশ্বাং। অব্যয়ান্তত্ত্ কল্ত চ দঃ। ধিক্, ধকিং; হিরুক্, হিরুক্ং। তৃষ্ণীমোনঃ
কাম্। তৃষ্টীকামাসতে বিজ্ঞাঃ।

৬৬। স্থপশ্চানোসভাদেঃ। (২২)

[ख्रुन: ७।, ह ०)।, खरनामखारमः (न-७-म-७ चामि) ।

ওকার, সকার, ভকারাদিবর্জ্জিত স্থা স্থাইঃ প্রাণ্যা স্থাৎ। হয়কা, ময়কা, হয়কি, ময়কি; অনোসভাদেরিতি কিম্ণ

⁽२५) बक्रा। उछ बक्रायछ भेटक महोद्ध भेटमा।

⁽২২) স্থাং। নমু সর্মনায়ং মৃণান্ত প্রাথকি সতি ত্রুকেত্যনিটং ভাগ ইত্যাহ ত্রুকালাবিতি একতেতি সর্মনায়ং প্রাক্ স্থাং প্রায়া ইতবৃথা শেষো

আবকরোঃ, অস্কান্ত, শৃত্মকান্তিঃ। তুল্কেনিভাগি। সম্কাদে) একরোক্ বথাশোভম্।

ইতি শ্ৰীণদ্বনাভৰতকুতো তুপৰে ব্যাক্রণে দিন্তীয়েহধ্যায়ঃ ব

অথ তৃতীয়াধ্যায়ে

श्राप्त भागः।

गनसामिथक मग्र। अ। अशिक् किस्तुः सन् वहलस्। (১)

গুপাদিভ্যো ধাত্ভ্যঃ সন্প্রত্যয়োবহুলং ভবতি। গুপেনিন্দায়াং—জুগুপ্সতেহধর্মং তঙ্পূর্ববং সনঃ। তিজঃ ক্ষমায়াং
তিতিক্ষতেহপরাধং, কিতোরোগনির্গয়দদেহয়োঃ চিকিৎসত্যাত্রং ভিষক্, বিচিকিৎসতি সন্দেশ্নীত্যর্থ:। অক্সত্র যথা
প্রাপ্ত', গোপ্রিতি তেজয়তি সক্ষেতয়তি।

१। गान वश मान भान अही । (२)

এভা: সন্বস্থলং স্থাৎ। ইকারদ্য ঈত্রঞাভ্যাদে। মীমাং-

২তিকেম: স্থাৎ ইতি। স্বাদ্যকা প্রকৃত্যকো বাধনমিষ্যত ইতি ভাব:। অন্ত গুল্পন্যকোর্বিভক্তেরনোসভকারাদেশ্চ বর্ত্তমানস্ত্রে বুল্পস্থ্যামের স্থপটে: প্রাগ্যা স্থাদিত্যভিধেয়মভিষ্টক:।

(১) তথ । লোগারতীত্যাদোঁ প্রয়োজকে বিচ্ । সংক্রেছতীতি চুরাদি- দ্ব ভাৎ বিচা (২) মানমতীতি প্রয়োজকে বা চুরাদিতাৎ বিচ । ভাল ব্যান্ত্রতাল ক্রিমান্ত্রতাল ভিত্ত সংস্থা নির্মিটিন সত্েশান্তং, বিচাররতীত্য বা নিজে স্থেতি করে।
তীত্যর্থং । সানশানং সার্থে এব, দীদাংস্তি, দীদাংস্তে দ্রুঃঃ,
শিশাংস্তি, শিশাংস্তে শত্রম্। বহুলমিত্যেব, মানয়তি বাধয়তি দানয়তি শানয়তি।

৩। স্থানিতুমোঁ ধাতে রিজ্বায়াম্। (৩)

ইচ্ছার্থে গম্যে জুপ্রভারান্তান্ধান্তাঃ সন্বছলং স্যাৎ।
কর্ত্মিচ্ছতীতি বাক্যে চিকীর্ষতি, দিব্ হুদ্যেতি, ইহ খা
মুষ্বতি, নদীকুলং পিপতিষতি ইত্যুপমানাৎ। ইচ্ছাসনন্তান
সন্ধ;
—চিকীর্ষিত্মিচ্ছতি। ইহ ভবত্যেব, জুগুপিস্বতে।

8। आर्थकर्यनी क्रिग्रहा

ইচ্ছায়ামেষিত্রাত্মার্থকর্মণঃ পরে কাম্যঃ স্যাৎ। দিবমি-ছতি হ্যকাম্যতি, সৎপুত্রকাম্যতি। স্বার্থ ইতি কিন্ ? রাজ্যঃ পুত্রমিছতি।

⁽৩) ছানিত্। ছানশলো নির্ভাবপকর্ষে প্রসঙ্গে চ বর্ত্ততে, বলা প্রেষণ্
ছানে ত্রিকটুমৌষধং প্রযুক্তীত ইই প্রেশ্বনির্ভিরবপম্যতে, প্রাং ছানেহখা
বধ্যতাং প্রামপকর্ষোহপসারণং, দর্ভাণাং ছানে ক্রাইনুরান্তরিতবাং দর্ভাণাং
প্রসঙ্গ ইত্যর্থঃ। ইথমিহ ছানশক্ষার্থন্তরম্পি ঘটতে, ওলাহি ছানিনির্ভিনান্ তুম্ বক্ত ভ্যাৎ প্রবর্ত্তমান এব নিবিধ্যতে নাক্তঃ তেনান্তভূ ও তুর্ব্বাদিত্যর্থঃ। যদ্বা ছানী অপকর্ষবান্ তুম্ বক্ত ইতি বাক্যে স এবার্থঃ, অপসারণমপি ছিতকৈব সন্তবভি তেন তুমপসার্যান্ত বিধীয়তে। বদ্বা ছানী প্রসন্তীতি
তুম্ বক্ত ভ্যাৎ, প্রসন্ত বোলাক্রেব নত্বোলান্ত, বোলারক্ বাত্বভালব্যাদেন্
বেত্যাহ তুম্প্রভারান্তাছিতি। তুম্প্রভারো ভবিতৃং বোলােয়া বস্যোত্তার্থঃ, বহলগ্রহণাৎ বিকল্পো লভ্যতে, তেন পক্তে রাক্যক্ষেব্রতি দশ্রমাহ কর্জু বিজ্ঞানিত
থব্যক্তেব্যাভারণেষ্তং টিকীর্বতীতি। মুর্থাক্তিবিক্তিবিকান্ত লােন মন্বর্থে
ন শৈকিকঃ। ন ভাবপ্রভারে ভারান্ত সন্ধ্রিভালতঃ।

ए। काजगांखांबाझांदा

ইচ্ছায়ামেষিভুরাত্মার্থকর্ত্মণ: পরে কচে স্যাৎ। আজ্ম: পুত্রনিচ্ছতি পুত্রীয়তি, দিব্যক্তি ক্ষেত্রপদত্যাহতুং ম ভবতি। গব্যতি, রৈয়তি। অমাস্তাব্যয়া। তি কিম্? কিনিচ্ছতি, স্বরিছতি।

७। উপমানাদাচারেইধিকরণীচ্চ।

उभगानाए कर्याणार्श्वित्रगाष्ठ बाहारत्रर्थ का ब्रव्हनः স্যাৎ। পুত্রমিবাচরতি পুত্রীয়তি ভৃত্যং, মাত্রীয়তি পরস্ত্রিরং প্রাসাদ ইবাচরভি-প্রাসাদীয়তি गः ক্ট্যাং, পর্যান্ধীয়তি

মঞ্চ ত্ন্য সম্ভোষশীলস্য কুঁজিকাপপোরায়তে । ১।

৭। কর্ত্ত ক্যতে জোইপ্সরসোশ্চান্তলুক্। পয়দৌ হপি বা ।

উপমানাদাচারেহর্থে কর্ত্তু: কাঙ্বত্লং ন্যাৎ। গরুড় ইবাচরতি—কাকোহপি গরুড়ায়তে, গব্যতে গবয়ঃ, নাব্যতে আোণী, ভিষজ্যতে কশ্চিৎ। ওজোহ শ্বরেদাশ্চান্তলুক্। ওজা-য়তে, অন্দরায়তে। প্রমোহপি না. প্রায়তে, প্রসাতে।
৮। বিপ্চ। গল্ভ ক্লীবহোড়ভিও চ।

উপমানাৎ কর্ত্রাচারে বিপ্চ দ্যাৎ। গল্ভাদেন্তঙ্চ। অশ্ব ইবাচরতি অশ্বতি খরঃ. বিধবতি রবিঃ. (৪) গোতুহতি কশ্চিৎ, গল্ভতে, ক্লীবতে বিহোড়তে গল্ভাঞ্জে । বায় সা ও। জা ১

। ज्यामिक्युम्हार्थ क्राइस्टर्स्म लार्थम्ह । লোহিতাদেডাচঃ ক্যশ্চ

[।] (a) বিধৰতীতি সাধু: মভু বিধুৰতীতি।

শৃত্ততভাবে প্ৰাক্তিকাই শাক্ত লাখে । ইলাভন্যাভবনা গশ্চ অভূলো ভূলো ভবতি ভূলায়তে(৪) শীন্তায়তে, বেহৎ-বেহায়তে जेमनाश्रुट रेजानि। त्नाहिजात्मर्जाक काम्ह माद। লোহিতায়তি লোহিতায়ুতে, মন্দায়তি মন্দায়তে। লোহিত-হরিত-নীল-পীত-মন্দ্রমন্ত্র-ফেণ-নিছে৷ করুণা-মুণা; আরুতি-গণোহয়ম্। ভাচঃ পটপটায়তি পটপটায়তে। কর্ত্তিত্যেব অভৃশং ভৃশং করেবুতি।

30। कछोटन त्रितित्यका उर्वे है। (a)

कािं छित्र करें। ये कामजीकार्य करें। कि का कार्य नाब ক্ষায়তে, কক্ষায়তে পাপং, চুকীর্য চীত্যর্থঃ। ক্ষ-কক্ষ-মদ্র-ক্লু-গহন। অবিশেষণাদিজ্ঞি কি মু : কন্টায় তপদে জনমতি।
১১। সুখাদিভ্যত্তদেদয়তে। (৬) জিও

তদকুভবতীত্যর্থে সুথাদিভ্যঃ ক্যঙ্স্যাৎ। স্থং বেদয়তে হ্রধায়তে। সুথ-ছুঃখ-কুচ্ছু-গহন-অলীক-করুণু।

১২। বাজ্পোশফেণধুমাই দ্বমতি।

এভ্যন্ত হুদ্বমতীত্যর্থে ক্যন্ত স্থাৎ। বাষ্পম্বমতি বাষ্পা-यट छेत्रायट रक्षायट धूरायट ।

১৩। রোমস্থাদ্রতিয়তি হর্চলনে। (৭)

⁽३) ज्नापि । ठकारबारययवाठयभिष्ठेः, व्टिश किकायष्टे नाकानद्याख्यः ।

⁽e) कष्ठा। क्रमन् धवर्षम्य।

⁽७) च्या । च्यक्ःयक्कयक्षयावृद्धानीकाज्ञरमाकृक्काण व्यायकीय-ফচিরাঃ কুথাকুরো কুজসংখ্যাতাঃ।

⁽१) त्राय । अञ्चरक्षक श्रमकारीश क्लक्ष्म उद्यक्तनार उद्यादर्श । র্কেরতি নিম্পাদয়তীত্যর্বে ক্যন্ত, স্থাৎ।

ভবর্ত্ত ব্যাসমারতে গোং। বসুচলন ইতি বিষ্ ? কীটো বের্ডার বর্ত্তরতি।

38। गमारम^{ें} करत्रां जि। (৮)

১৫। মমন্তপোবরিবসঃ ক্যট্। চিত্রঙঃ আশ্চর্য্যে।

তৎ করোতীত্যর্থে নম আদেঃ ক্যচ্ স্যাৎ। নমঃ করোতীতি নমস্যতি দেবান্, তপস্যতি, ব্রিবস্যতি গুরুং পরিচরতীত্যর্থঃ। চিত্রঙ শ্রাশ্চর্যে। (৯) চিত্রীয়তে হ্রেম্যুগঃ ডিস্বাত্ত ্

১৬। কণ্ডাদিভ্যৌযক্। (১০)

তৎ করোতীত্যথে কণ্ডাদিভ্যোষক্ স্যাৎ। কণ্ডুঞ কণ্টুয়তি কণ্ডাতে, স্থ অত ইত্যাডো লুক্ স্থ-স্বেগ্রাঃ, প্রাকৃতয়ো লৃশং মৃপ স্থাডঃ পদবীমৃ। কণ্ডুঞ, অস্ঞা, মস্তা, বল্গু, হাণীঞ, মহীঞা, তিরস্, উরস্, সম্পান্ধ, গদ্গদ, এলা, কেলা, থেলা, কোট, লোট, স্থা, সুষ্ধ, মুগাদি।

⁽৮) ধক্ষান কু**ণ্ড ক্**রোজীতি শিচোৎপ্রালার্থ্যে। বৈরয়তী-তাসাধুরের।

⁽৯): নমক[া] চিত্ৰীয়তে বিশ্বয়ত ইত্যৰ্যঃ।>

⁽১০) কণ্ডা। ইহ কণ্ডাৰয়া কিং বাধৰা উভানামানি উক্ত ভ্ৰাছদি-কারাও। কণ্ডাক্তমা বাজা ইভিজ্ঞান্ত্ৰ, ইভদ্ধা কণ্ড্ৰভীতি দীর্ঘোন প্রাথ, বাত্ভাভাবাথ।

कृताकीटक वर्षे । (33)

শক্ষি হলাবির্বোগান্তর পাণ্ডারে প্রোক্ত প্রন্য চ বছ তাব।
ভূশং পুনঃ পুনর্বা পদতি পাপ্ডারে, লাজন্যতে, অক্তেই অক্তেই
বৈশিক্ষ্য অক্তেই বোহুমতে। একাচ ইতি কিমু ? ভূশং
লাসার্তি। হলাদেরিতি কিমু ? আভীক্ষমীহতে। অভভরুচ ইতি
কিমু ? ভূশং শোভতে, ভূশং রোচতে।

১৮। ঋষ্চিষ্তিমুত্ত্টশূপু ভট্ট। (১২)

এভ্যোভৃশাভীক্ষে য়ঙ্ স্থাৎ। অরার্যাতে সোস্চাতে সোস্-ব্যাতে মোস্ত্রাতে অটাট্যতে মশাস্থাতে প্রোর্ণোভ্যতে।

১৯। গত্যर्था को हिना वर्ग।

রঙ্খাৎ। কুটিলং গছতি—জঙ্গাতে, চংক্রম্যতে স্তম্— দংদ্রেম্যতে। ন ভূশাভীক্ষে, ভূশং গছতি।

⁽১১) হাতোঃ। ক্রিয়হিত্বপথ্যেরহেড্বাৎ সর্কান্তের হিবিধা, তথাছত্ত প্রধানক্রিয়া বিক্লেবর্তনা, ওপক্রিয়া চ অধিত্যরণাদিরপা, তর ষধা প্রধান-ক্রিয়াৎ সমাপ্য ক্রিয়াডরাব্যপেতাং পুনস্তামের বিধতে তদা তস্যাঃ পৌলঃ প্রভং ভবতি, বহা পুন ও পক্রিয়াং ক্রিয়াডরাব্যপেতাং মূহঃ সমাচরপঞ্মধান-ক্রিয়ামেকাং নির্ব্বাহ্যতি তরা ততা অভিলয়ঃ সম্পদ্ধতে, দলাতিরেকোৎপ্যতিশ্বং, তবাহি যো ক্রিন্স্বাবাণ্যাপি অলতি স ভাজন্যতে। তথা চ মূর্ব্বঃ, পাকাইনাং প্রধানক্রিয়াবাং পৌনঃ পূত্রং প্রধানক্রিয়োপক্রিয়াবাং অধানক্রিয়াবাং পৌনঃ পূত্রং প্রধানক্রিয়াক্রিয়াবাং কর্মান্তার্থিত হতা ক্রিয়াব্রহার । নমু অভত্যভারক্রিয়াব্রহার । আর্থান্তার্থিত ক্রিয়াব্রহার । বার্মান্তার্থিত ক্রিয়াব্রহার । আর্থান্ত ইত্যত রিষয়সপ্রধীতাং প্রধানক্র প্রভাত ক্রিয়াব্রহার । তবি ক্রেয়াক্রিয়াব্রহার ক্রিয়াব্রহার । তবি ক্রেয়াক্রিয়াব্রহার বিভাগন্ত ক্রিয়াবিক্রাব্রহার বিক্রাব্রহার প্রধানক্র ক্রিয়াবিক্রাব্রহার বিক্রাব্রহার প্রধানক্রিবাহ ক্রেয়াক্রিয়ার ক্রিয়াবিক্রাব্রহার ক্রিয়াব্রহার ক্রিয়াব্রহার বিক্রাব্রহার বিক্রাব্রহার ক্রিয়াব্রহার বিক্রাব্রহার ক্রিয়াবর্তনার ক্রিয়াবর্তনার ক্রিয়াবর্তনার ক্রিয়াবর্তনার ক্রিয়াবর্তনার ক্রিয়াবর্তনার ক্রিয়াবর্তনার ক্রেয়াব্রহার ক্রিয়াবর্তনার ক্রিয়াবর্তনার ক্রিয়াবর্তার ক্রিয়াবর্তনার ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রার্টনার ক্রিয়াবর ক্রেয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াবর ক্রিয়াব

২০। পূৰ্বন্দ্ৰভাগত ভাৰণ কৰিব ন্ৰান্ত ভাৰণ হাৰাম্।

এভ্যো ধাত্বগর্হায়ামেব য়ঙ্ আৎ। গহিতৎ লুম্পতি-লোলু-প্যতে, চঞ্ গ্রতে, দংমগ্রতে, নিজেগিলাতে

२১। यर्डीन्येंहनें अक्ठिवेंदेशक्रियभनीं हैं।

বহুলং যঙোপুক্সাৎ (১৩)। সচ যঙ্লুগন্তঃ প্রকৃতিবন্তবি ।
পরিশ্বপদী চ। বোভোতি বোভবীতি বোভৃতঃ ব্যেভুবতি
দংদগ্ধি। বাহুল্যাদনিট্ছং নেষ্যতে। যহুক্তং পাণিনীয়ে; শতিপা শপাহসুবন্ধেন নির্দ্ধিং যদগণেন চ। যদৈচকাচ্গ্রহণং
কিঞ্চিৎ পথৈতানি ন যঙ্লুকি। তথাহি আচার্য্যা যঙ্লুকীছন্তি সেট্ক্সনিটামপি। লুঙিচৈবাঙ্মিক্তন্তি ৯দিৎস্থ ইরিদাদিরু। দংদহিষতি দংদহিষীত বস্তুণি পাম্পর্দ্ধি সোম্পীতি
চোক্রেশীতি, নল্মুপান্তেতি ন গুণঃ। বেভিদিতা বেভিদাঞ্কার্য

⁽১৩) বঙো। অত্র বহলশকোঃ বিকলার্থঃ, অর্থান্তরক বক্ষান্তে। প্রকৃতিবিদিত বঙ্বাৎপতেঃ প্রাকৃ প্রকৃতিবিদ্ধান্তিই বিহিতং তদিহাপিভবতীতার্থঃ, প্রকৃতিবন্ধান্তিকপ্রাধানে পদ্প্রাপ্তে। পরিমেপদং বিধীয়তে ইত্যাহ পরিমেপদীতি চ। সমতপ্রমাণ্য মৃতপ্রতিপাদয়লাহ বহুক্রমিতি শতিপেত্যাদি যথা, বল ইন্বিধো বঁটাতি শতিপা নির্দিষ্টঃ বাবশতি এবং বেবিদতি, সনি বেড়-বিধো ভরতীতি শপা নির্দিষ্টঃ বরীভূষতি এবং অতাহ্বপৎ, অজান্ত্রপৎ, অপান্তাহ, বদাদিবিধে ভামুবন্ধনির্দিষ্টঃ শেশুতি শেশীতঃ ভাবে শেশীলতে, কর্মং শেশতি, ইয়ব্পধ্রোরিতিওপঃ, এবং 'ধাঞ্জানীতবান্। কুলাদেরিউইটিত গণনির্দিষ্টঃ রোরোন্তি বোক্ষন্তঃ, বাশ্তকোকাট ইত্যেকাচ্ছাৎবৃদ্ধিবিকলঃ, অপাপটীঃ। প্রক্রারিকায়ঃ প্রামাণ্যমনবধ্যরদ্ধর্মতারদ্ধি তথাহীতি শকাদি-গণনির্দেশীদেবানিট্রে প্রাপ্তে কেট্ ক্র্মিচ্ছিত। বর্ষা, দংদহিষ্যতি অত্যভাগি সেকার ভাবশিত্তঃ। ১দিতানিরিদাদীনাক অঙ্ ইব্যতে অজক্ষমৎ, অপাপ্তং,

यहामिन्द्राह्म के दिक्त स्थाः । श्राह्म विश्वार कृष्टाणामिति । प्रदेश प्रदेश प्रमाण्डी प्रदेश प्रदे

२२। চুরাদিভ্যো गिष्ट्र।

ু হুয়াদিভ্যঃ ধাতুভ্যঃ স্বার্থে ণিচ্ স্থাৎ। চোরম্বতি নাটয়তি। ২৩। প্রয়োজকে। (১৪)

প্রয়োজকে কর্ত্তরি গম্যে ধাতোর্ণিচ্ স্থাৎ। কুর্বস্তঃ প্রযুদ্ধকে—কারম্বতি, হারমতি।

অদ্বিদর্শৎ, অনেশ্রিরং, পক্ষে অদ্বিদ্ধানীং, অশেশ্রর্থীং, নাক্সতঃ অশাশানীৎ অস্বিদারিৎ, অপোপোষীৎ, হ্রেঞ্ অলোহবীদিত্যাদি, সোম্পীতি স্থপেশ্চঙ্ বঙ্ লুকি চেতি সাচোৰণ ইক্। প্রকৃতিবস্থাদিতি প্রকৃতিমাহ কৃতাভ্যাসবিধেরিতি, আদ্যপ্রকৃতেরিতি তত্ত্বৈব তত্তৎকার্যক্ত প্রভাৱনার অলংবধীদিতি ভূশং হতবানিতি বাক্যে ষঙ্লুকি সতি লুভিচেতি বধাদেশঃ, বধাদেশাচেততীট্, অদ্যেহহীদিতি নশ্যুপাত্তেতিগুণাভাবঃ, অবাবচীদিত্যক্ত অবাবোচীদিতি ক্রম্দীশরঃ॥

(১৪) প্র। নমুধাত্ভ্যো বিধীয়মানো নিচ্ ধাত্র্যমিবাভিগতে তৎকর্থং প্রান্তকলক্ষনং স্থানৈবক্ষেৎ কথাকেং প্রয়োজক ইতি, সত্যং প্রয়োজকপদেন তৎসক্ষরেত প্রেষণাক্ষের তৎসক্ষরাচরণমর্থেনিক্ষাতে তথাচোক্তং, প্রেষণা-ধ্যেবে ক্র্মন্, তৎসম্বরানিবাচরন্। প্রয়োজকোভবেৎ কর্ত্তা ক্রিয়া তক্ষ্ম চোচ্যতে। অত্র প্রেষণং, ভৃত্যাদেং কচিদর্থে নিয়োজনং, আরাধ্যক্ষ কংবারপ্রকং নিয়োজন মধ্যেবনম্। তৎসম্বরাচরণক ক্রেমণ, মথা হারম্বতি ঘটং বটুনাগুরুং, গুরুং ভোলয়তিশিব্যং, তিক্ষা বাসমৃতি, অত্র তদ্ধ্যোন যত্ত্র প্রেষণাত্ত তদ্ভিষীয়তে, অত্রবাসামুক্লত্থিয়াদধানা প্রচুরব্যক্ষরণী ভিক্ষেব তদাচরতীতি তৎসম্বরাচরন্। প্রয়োজক ইতি কিং, ব্যক্তিগভক্ষং।

२८। यूर्रीखद करता आदमी बर्गिमिर्टरिक ।

তৎকরোতি, তদাচটে ইত্যাদাবর্ষে স্বস্থানিচ্ ভার ৷ रेश्वर कार्शक वस्ताः-िरतानामि । मृद्धः करवाजि, नृद्धारि, পটুমাচটে পটয়তি, মাতরং মাতয়তি, কুমারীং কুমারমতি, অর্থাপয়তি, সভ্যাপায়তি। পাশং বিষোচয়তি-বিপাশয়তি। রূপং পশাতি-নিরূপয়তি। বীণয়া উপগায়তি উপবীণয়তি। ভূলৈর মুক্ক ফাতি অনুভূল হতি। স্লোকৈর পত্তোতি উপশ্লোক-য়তি। দেনয়া অভিমুখংয়াতি অভিষেণয়তি। লোমামূমুমীষ্টি অমুলোময়তি, ছচং গৃহাতি-ছচয়তি, ছচশব্দোহদন্তঃ। এবং হলি-কলি-কৃত বর্ণাঃ অজহলৎ, হলির হন্ধলমৃ। কর্মণা সমছতি সংবশ্ময়তি। চূর্বৈরিবধ্বংসতে অন্চূর্ণয়তি। মুগুং করোতি—মুগু-য়তি, এবং মি**ঞা-শ্লক্ষ্ণ-**লবণ-ধবল-মলিন-পবিত্রাদি। ব্রভাত্ত-মাত্রভোজনে নিবর্ত্তনে চ। পরোত্রতয়তি, বুষলানং ব্রতয়তি-ততো নিবৰ্ত্তে। ৰস্ত্ৰেণ সমাচ্ছাদয়তি সংৰক্ষয়তি। ভূস্তানি বিহস্তি-বিভূতয়তি, ভূতং পূলি:। করণীদ্ধাত্বে । হস্তিনা-হতিকাম্তি অতিহস্তয়তি। দাত্তেণলুনাতি দাত্তয়তি। বিশ্ব-ভৌলু ক্ টা অধিনমাচকে অজয়তি, অগ্ৰন্থ অচয়তি। (১৫) কুদন্তোপাখ্যানে কল্লুক্ প্রকৃতিপ্রত্যাপতিঃ, প্রকৃতি-গ - ১। বিচ্চ কারক্ষ্। কংসবধমাচ্টে কংসং ঘাত্রতি এবং ৰলিং বন্ধরতি, রাজ্বনমাসময়তি। চিত্রীকরবে । উভারিস্তাঃ

⁽১৫) রুদ্রো। উপাধ্যাতি রুপাধ্যানং, কৃৎসকঃ কৃৎসংজ্ঞকটোতার্থিঃ
স এবাজেনত স কৃত্যঃ শব্দঃ, ক্রোপাধ্যানেহর্ষে পিচ্ স্যাৎ। কৃৎসংজ্ঞল কল্স চ লুকু। প্রকৃতিঃ, প্রভায়মূৎপর্যাত্তনতী, জলাঃ প্রভাগতিঃ—সা অবিকৃত্য সক্রেণাবৃত্তিত ইত্যার্থা, প্রকৃতিকৃত্য কারকঃ চকারেরা ভিত্তকানে কারকসকা সন্তর্থ ক্রেনাঃ। কৃৎপ্রস্তেগ্রিদুনং ক্রেকুঃ আন্ত্রীং গ্রাভারা অবি তাদৃশঃ

প্রাহিত্যাং নৃত্যাসুদ্ধ করি বিশিল্পন্থ করে।

যতীত্রথং া নক্জনোগজানে চি। পুদ্যাধাণং জানাতি,
পুষ্যেদি যোজয়তি চক্রম্। অন্যজাপি, কর্ডায়মাচটে কারয়তি, পাকং করোতি পাচয়িত। বাদিতবন্তং প্রয়োজিতবান্
লেণিচ্ ক্রবতোলু ক্ অবীবদদ্বীণাং পরিবাদকেন। আশিয়য়তীত্যক প্রকৃতেরেকাচ্ছাৎ টিলোপাভাবং। অমিচিদাদেস্ত্র
টিলোপমিছন্তি। অমিচয়তি গোনাবো গোনয়তি। প্রিয়াদেঃ
প্রস্কৃতি আমিচয়তি গোনাবো গোনয়তি। প্রিয়াদেঃ
প্রস্কৃতি প্রায়াচন্টে প্রাপ্তিত, হিরং হাপয়তি,
বহুলং বংহয়তি, বহু ভয়য়তি, ভাবয়তীতোকে। পৃথু প্রধয়তি। স্বাদিভবান্তদীনাং পুষ্ঠি। স্বামিচটে স্তেত
য়তি, এনীং এতয়তি, হরিণীং হরিতয়তি ভবানীং ভবয়তি,
ক্রদাণীং ক্রদয়তি ইত্যাদি। স্বেতাশ্বাদের্শ্রশাদিলুক্। শেতা
শ্বাচন্টে শেতয়তি, অশ্বতয়ং অশ্বরতি।

ভবতীত্যর্থ:। কং স্বধ্যত্যিদি-হননং বধঃ, হনোবধচেতি হন্তেরপ্বধানেশক, কংসম্ম বধঃ কংস্বধঃ যতীস্মাসঃ, ততোনিচ ক্রেল্ক্, প্রকৃতেঃ প্রভাপতিঃ, হস্তেঃ স্বরূপেনাবছানং, ততোহত্পধ্রেচারিতি বৃদ্ধিঃ, হনো হোল ইতি হস্ম ঘাদেশঃ, নম্ম তঃ, কর্মসংজ্ঞাপ্রাপ্তক। বিলং বন্ধয়তি, ইহাপ্যাচষ্ট ইতি বোজাঃ, বগ্রাতের্ঘনি বন্ধঃ, বলের্কনো বলিবন্ধঃ। রাজাগমনমিতি, ইহাপ্যাচষ্ট ইতি বোজাঃ, বগ্রাত্রিণ বন্ধঃ, বলের্কনো বলিবন্ধঃ। রাজাগমনামিতি, ইহাপ্যাচষ্ট ইতি বোজাঃ, আগমেনং, আলাগমনাং, এবং সীতাহরণ যাচষ্টে সীতাং হারয়তি। কাতরান্ধ হেত্কর্ত্ব্যাপার এব এতেন্ধিনং বৃদ্ধি। এবমজিনয়েনাসৌক্রকঃ কথাঃ কর্মাতি, বেন কালভেন্থেনি পরেষাং প্রতীতিভিন্তি, কংসং হজং নারায়ণং কর্মকঃ প্রযুক্ত ইতি, বিপুর্কোবসতি রতিক্রমণে অনুরান্ধি সম্বন্ধনীয় ক্রিয়াম্ম রাজিশকোর্মতে। তেনাজম্মাং প্রভৃতিপ্রকৃষ্মাঃ ক্রিয়াম ক্রিজান্থা বা রান্ধিস্থাবং সাকল্যের কর্ময়েত্রিত্রান্থা। বাল্ল্যাদ-লোপঃ, কালাত্যস্তসংবােশে সর্ক্যান্যাম ইতি মক্তব্যম্য চিত্রীকরণ ইতি-

र १०। भूरीरमें निज

এভাো ণিঙ্ স্থাৎ। ইষ্ঠবটা পুচ্ছমুৎক্ষিপতি উৎপুচ্ছারতে ব্যান্তঃ, ভাগুং সমাচিনোতি সম্ভাগুরতে কুলালঃ, চীবরং সম্মা-জয়তি পিদধাতি বা সঞ্চীবরয়তে ভিক্ষুঃ। অঙ্গান্নিরসনে। হস্তং নিরস্থতি হস্তরতে, পাদয়তে। অন্তন্ত্র হস্তরতি পাদয়তি।

২৬। গুপুধূপবিছিপনিপণেরারঃ।

এভ্য আয়ঃ স্থাৎ। গোপায়তি ধূপায়তি বিছায়তি পনায়তি পণেস্ত্রত্যর্থ এবায়ঃ পণায়তি। পণতেঃ ন ব্যবহারে ব্যবহারে চেত্যেকে। ন চোপলেভে বনিজাং পণায়া ইতি ভটিং। কমেণিঙ্। কাময়তে।

२१। ঋटउँ श्र भाशभी यह ।

ঋতেঃ সৌত্রাদিয়ঙ্স্থাৎ। ঋতীয়তে।

२৮। आशामशे आर्त्वशाकुरके वी।

আর্মাতুকে আয়াদয়ো বা হ্যঃ। গোপ্তা গোপায়িতা গুপ্তিঃ গোপায়া, কমিতা কাময়িতা, অর্ত্তিতা ঋতীয়িতা।

২৯। গৌপুরাদর্তি হীব্লীরীকুয়ীক্ষায়ো
ত্র্ণশ্রী।

আদন্তাদেরুত্তরে গে পুরাগমঃ স্থাৎ। ইকোগুণস্চ। দাপ-য়তি অর্পয়তি ত্রেপয়তি রেপয়তি রেপয়তি। কুয়ীক্ষাযো-র্যলোপশ্চ। ক্লোপয়তি ক্মাপয়তি। প্রাদেঃ পাকাদে ব্রুষো

চিত্রীকরণে প্রাপ্তার্থ ইতি কাশিকা। অবীবদ্দিতি মুলেনৈব। আশিব্যতীতি धक्रा भारकत्वकार्षा देखि। देखिरमशः प्रत्नकार देखि देखाकार्धः नाद अकारहा न जानिक। अवसमिहिमारमञ्जी।

ঘটাদিছাৎ, প্রা পাকে প্রশাস্তি। বিশাসনের । অপরতি গ্রাপনির প্রাপরতি প্রাপরতি গ্রাপনির বিশাসনের । প্রশাসনির প্রাপরতি প্রশাসরতি। নোপদর্গে-প্রগ্রাপরতি উপস্থাপরতি।

৩০। শাল্ভাসাহ্বাব্যাবেপাভেটাযুঃ।

এতের। শৌ যুঃ স্থাৎ। নিশায়য়তি, ছাময়তি, ব্যবসাময়তি হ্রায়য়তি, সংব্যায়য়তি, বায়য়তি, পৈ–পিবত্যোঃ; পায়য়তি।

৩১। আর্ভ ইণ্ণিৎকৃত্যেঃ।

ইণি নিতি কৃতি চ পরে আদন্তাদ্যুং স্থাৎ। অবায়ি, বায়কঃ অদায়ি, দায়কঃ ১

খদায়ি, দায়কঃ ব্র ৩২। গৌপাতেলুঃ।

(गीपारवर्ः मार। भानुष्ठि।

৩৩। অর্থাদের পুঃ। (১৬)

এভ্য স্থাপুঃ স্যাৎ। অর্থাপয়তি সত্যাপয়তি 'বেদাপয়তি প্রস্থাৎ;—প্রাপয়তি স্থাপুয়তি স্থাপয়তি।

७८। की ७ की ने रिमेता नै। कि वी।

ণাবেষামৈকার আপ্ দ্যাৎ। ক্র্যাপয়তি, ইঙ্ অধ্যাপয়তি জি জাপয়তি। চের্বা। সঞ্চাপয়তি সঞ্চায়য়তি বা।

७०। विशेष्ठ প্रकरम । (১१)

ণো বীণাতোরেরাপ্ স্থাৎ। গর্ভণারণঞ্চে। পুরোবাতো গাঃ প্রবাপয়তি প্রবায়য়তি বা।

⁽১৬) অর্থা। অত্তৈকাজ্বন্তোপলক্ষণং, তেন ক্মাচন্তে কাপয়তি ব্যাচন্তে বাপয়তীত্যাদি। একাজস্বাদাপ্রিত্যক্তে। বন্ধাপয়তি, বর্ণাপয়তি, শকাপ্রতি, শিষ্টপ্রয়োগদর্শনামিধাপরতি, লজ্ঞাপরতীত্যাদি।

⁽১৭) বিষ । প্রবাপয়তি প্রথমগর্ভৎ গ্রাহয়তীতি পুরুষোত্তম:।

७७ । बुक् शिरकी इन्।

আভ্যাং গৌ সুক্সাং। রূময়তি প্রীণয়তি প্রীণমং ঞিছুবন্ধাদভাতো ন ভবতি। ই বির্মনে, ধাবয়তি, প্রী প্রীতৌ,
প্রায়ন্তি।

७१। नीमार्जार तो त्रक्तूको त्यर्धात्रतं।

লীলীঙোরকতাত্ব—কৃতাত্বয়োরিদং প্রহণম্। আভাং কুক্লুকো বা স্থাতাম্। স্নেহদ্রবীকরণে। স্বভং বিলীনয়তি বিলায়য়তি, তৈলং বিলালয়তি বিলাপয়তি বা।

৩৮। ক্ষায়োবোঁইন্তঃ।

নৌ স্ফায়োহস্তোবো ভবতি। স্ফাবয়তি।

७ । भरमें तगर्जी जैं।

পো শদেরস্তন্তে। ভবতি। কলানি শাতয়তি। অগতাবিতি কিমৃ ? গাঃ শাদয়তি।

801 कर्इंश्लीवी।

শৌ ক্লছেরন্তঃ পো বাস্থাৎ। রোপয়তি, রোহয়িত বা।

85। সিধ্যতেরেদাদপারলোকিকে।(১৮)

শোকিক ইতি কিমৃ ? স্বৰ্গং সেধয়তি।

8२। देव वांक शृनत्ते। (১৯)

⁽২৮) সিধ্য। পারলোকিকগ্রহণং জ্ঞানবিশেষোপলক্ষণার্থং, স্বর্গং সেধ-রতীতি স্বর্গসাধনং জ্ঞানবিশেষমর্জ্বতীত্যর্থঃ। সিধুসংরাদ্ধাবিত্যক্তৈর প্রহণং নাশ্রন্থ। (১৯) বৈ ইতি প্রপ্রবেষ্ট্যক্বচন্ম।

ণো ওবৈ বাজঃ স্থাৎ। বাজয়তি পকে। ধুনন ইতি কিম্? প্রবাপয়তি কেশান্।

80। (कार्त्ता वी कार्त्ते ।

ক্ষোরো পৌ স্ফারো বা স্থাৎ। বিস্ফারয়তি বিস্ফোরয়তি বা। স্ফোর ইতি কিম্ ! যঙ্লুকি পোস্কুরয়তি।

88। किटिया इसें।

দোষো পে দৃষঃ স্থাৎ। দৃষ্যুতি, দৃষকঃ। অপে চ কচিৎ।
দৃষণম্। বা চিত্তদৃষণে। চিত্তং দৃষয়তি, দোষয়তি বা।

8৫। कार्निम्य।

ক্যচি পরে অবর্ণস্থ ঈদ্ভবতি। রাজীয়তি, মালীয়তি, অস্থ্য ইতি কিম্ ? বিদ্বস্থাতি।

৪৩। অশনায়োদত্য ধনায়া বুভুক্ষাপিপাসা গর্দ্ধেয়ু।

ক্যুচি বুভুক্ষাদ্যথেহশনায়াদয়ো নিপাত্যন্তে। অশনায়তি বুভুক্ষুঃ, উদকং উদন্যতি পিপাস্থঃ, ধনায়তি গৃধুঃ। অন্তর্জ অশনীয়তি, উদকীয়তি, ধনীয়তি।

89 । र्रेतर्रेवी जानमात्रीर नवनार्के ।

ক্যচি স্পৃহায়াং লবণানেঃ হুরস্ক্রি স্থাৎ। লবণস্থতি, ক্ষীরস্থতি, দধিস্থতি, দধ্যস্থতি, মধ্বস্থতি বা।

8b । इया श्रीत्मेशूरने।

আভ্যাং মৈথুনে লালসায়াং স্থরস্থর্কা স্থাৎ। ব্যস্তাত্ গৌং, লক্ষাণং সা র্যস্তান্তী, অগস্তাতি বড়বা।

৪৯। ভুবাদিদনাদ্যস্তা ধাতবঃ।

ভূবাদয়ো দশগণপরিপঠিতাঃ সনাদ্যন্তাশ্চ ধাতৃসংজ্ঞকা-ভবন্তি। ধাতৃপ্রদেশাঃ, ধাতোরিত্যেবসাদয়ঃ।

৫০। আত্মনেপদং ।

আত্মনেপদনিত্যধিক্রিরতে।

৫১। देनाशमर्गाम् विजीयार्थार्थ।

উপদর্গান্ত্র নিয়মঃ। উপসের্গান্ত্রনাস্তরনপদং বিহিতং তদ্-দ্বিতীয়ার্থানভবতি। যথা পরিক্রীজ্তে ন তথা রুক্ষং পরি-ক্রীজৃতি।

৫২। অনুদাত্তিতঃ। (২০)

গণপাঠে সকুদাভেতো যে ধাতবস্তেন্যো ডিতশ্চান্ননেপদং স্থাৎ। অস্তেবৰ্দ্ধতে বোভ্যতে হংসায়তে আসীনঃ শ্যানঃ।

৫৩। ভাবকর্মণেঃ।

ধাতোর্ভাবে কর্মণি চাত্মনেপদং আৎ। ভূমতে, ভূমমানম্। ক্রিয়তে, ক্রিয়মাণঃ কৃটঃ।

৫৪। কর্ত্তরি ক্রিয়াবিনিম্যে।

জিয়াপরিবর্তে ধাতোঃ কর্ত্তরি ভঙ্সাৎ। তঙিত্যাত্মনেপদ-সংজ্ঞাতমস্তি। ব্যতিভবতে শ্রীঃ পদানাং, ব্যতিভবমানা, ব্যতি-পুনতে, ব্যতিবোভূতে, ব্যতিবোভুবাতে। অতঃ কর্ত্তরি বিধিঃ।

⁽২০) খাঁর। অনুদাতাঃ গণপাঠে প্রসিদ্ধাঃ। উদ্ধাদত ইতি উদাত-তি বিপরীতশারদাক ওয়েমিশ্রঃ সমাহারঃ, (পরিতঃ)।

৫৫। ন গতি হিংসা শব্দার্থহসৌ২ফোস্যা-র্থোপপদীক্ষী। (২১)

(ক্রিনিনিনিনির)গত্যাদার্থেভ্যোহদশ্চাক্সেভার্থেপেপদাচচ ক্রেরাবিনিময়ে তঙ্ন ভবতি। ব্যতিগছন্তি, ব্যতিদ্বন্ধি, ব্যতিদ্বন্ধি, ব্যতিদ্বন্ধি, ব্যতিজল্পতি। অন্যোহ্ন্তুভ্য ব্যতিল্নন্তি, ইতরেতরস্থ ব্যতিগ্রন্থি, পরস্পারস্থ ন্যতিদিঞ্জি। কথা ব্যতিনয়তে ব্যতিব্রুভ্ত ভারম্ ? একো প্রাপন্যচনো ন গত্যথোঁ। এবং সম্প্রান্ত যোদ্ধারঃ, হরতিন হিংসার্থঃ।

৫৬। নৈ বিশ্বী।

নিপূর্ব। দিশস্তঙ্সাৎ। নিবিশতে নিবিশমানঃ, এাদে-নির্মানেহ, মধুনি বিশ্তি ভ্সাঃ।

৫१। किए शंविशर्याविश्वर्या

এভ্যঃ ক্রিয়স্ত স্থাৎ। বিক্রীণীতে পরিক্রীণীতে অবক্রীণানঃ।

৫৮। জেরিপরাভ্যাম্। (২২)

আভ্যাং জেতত হো । বিজয়তে পরাজয়তে, প্রাদেনির -মামেহ, বছবি জয়দি বনম্।

৫৯। আদাটোইসাঙ্গপ্রসারণে। (২৩)

व्यारक्षानाक देख् महार । व्याक्रश्चमात्रगरकर । धनमानरख

- (২১) উপশব্দঃ সমীপার্থ: উপোচ্চারিতপদমূপপদম্। অক্টোক্সার্থ উপ-পদং যক্ত তথ্যাং।
 - (২২) জে। বছবো বন্ধঃ পক্ষিণো যত্ত্ৰেতি সমাসঃ।
 - (२७) ष्यामा। षाढ्रश्रद्या माळ देखि भाक्नार्थिवानिवः।

णयात्रथात्रश हेि किष् ? याननाि म्थः, ननी कूनः यान-नि ।

७०। कीर्डोश्वाह् शरतः मर्ग्नीकृष्टम्।

এভাঃ ক্রীড়তেস্তঙ্ স্থাৎ। অসুক্রীড়তে আক্রীড়তে পরি-ক্রীড়মানং। সংক্রীড়তে, অক্জন ইতি কিম্ণ সংক্রীড়স্তি শকটাঃ।

७ऽ। जागरमः कमार्शम्।

তঙ্গ্যাং। আগময়স্তাবং।

७२। मर्गं मर्श्य । (२8)

তঙ্খাৎ। প্রিয়ারৈ শপতে কামুকঃ। শপথ ইতি কিম্ ? নৌরংশপতি।

৬৩। নাথেরাশিষি কর্ম চ ষষ্ঠা বা। (২৫)

আশিষি নাথেন্তঙ্সাৎ। তদেয়াগে কর্ম চ ষষ্ঠী বা। সর্পি-বো নাথতে সর্পির্বা। আশিষীতি কিমৃ ? রাজানমুপনাথতি।

৬৪। হরতেঁগতিতাচ্ছীলোঁ। (২৬)

অত্রার্থে হুঞ্ স্তঙ্ স্থাৎ। পৈতৃক্ষশা অনুহরুছে, গতিগ্রহণং কিম্ ? পিতর্মনুহরতি রূপেণ পোতঃ।

⁽२8) भभः। भभरा विषानित्रनः भन्नीत्रम्भनः वा।

⁽২৫) নাথে:। আশীরর্থে তঙিতি নিয়ম:। তশাৎ ষত্ত্, নাথসে কিম্
পৃতিং ন ভুভুতামিতি ভারবেরসাধু: প্রয়োগ এব। নাধসে ইতি পাঠ্যস্থ।

⁽২%) হর। গতিতাচ্ছীল্যাৎ তংক্ষভাবতা, গত্যস্থকরণমিতি যাবং।

७৫। । किर्द्धा ३ भाके जूभा के क्रिकिश एक स्टिंग । (२१)

স্থট্ কাৎপূর্ব্ব ইতি বিৰক্ষতে। অপাৎ কিরতেশ্চতুশ্চরণ-পক্ষিবিষয়ে इर्स कीविक। कूनाग्नकत्रशादारमध्न शामा छঙ् স্যাৎ। কাৎপূর্বাঃ হুট্ চ। অপক্ষিরতে ভূমিং বৃদ্টভা ইউঃ, খা আপ্রার্থী, কুরুটো ভক্ষার্থী চ। নায়ত্ত গঙ্গোহপকিরতি **জলম্।**

৬৬। আর্ডি রপ্রচ্ছঃ।

আঙি উপপদে মুপ্রচিছভ্যাং তঙ্ স্যাৎ। আমুতে শিবা, আপুছেম্ব গুরুম।

७१। उदी विश्वावमभै।

এ**ভ্যস্তিষ্ঠতেস্ত**্স্যা**ৎ। বিভিষ্ঠতে প্ৰতিষ্ঠতে অ**বভিষ্ঠ-মানঃ সংতিষ্ঠতে সংতিষ্ঠমানঃ।

৬৮। প্রকাশন – স্থেরাখ্যয়ে শিলী। (২৮)

প্রকাশনে স্থোখ্যায়াঞ্ছন্তঙ্স্যাৎ। ছাত্রায় ভিষ্ঠতে ক্যা, স্বাভিপ্রায়ং প্রকাশয়তীত্যর্থঃ। স্থেয়ো বিবাদপদ-নির্বেতা। সংশ্যাকর্ণাদিষু ভিষ্ঠতে যঃ, সংশন্ধ কুত্বা তেযু নির্ণয়ং করোতীতার্থঃ।

৯৯। সার্ডঃ প্রতিজ্ঞারীম্।

আঙঃ স্বস্তু স্যাৎ। শব্দং নিত্যমাতিষ্ঠতে, প্রতিজানীতে।

⁽२१) कुष्णि इवीषिष्व वक्क्याः। इवीषिमाळविवकायाः यहाणि छड-প্রাপ্তস্তথাপি সুভ্ভাবে নেষ্যতে ইত্যাহ, গব্দোহপকিরতীতি।

⁽२৮) क्षका। निर्दिण मश्रष्यः भक्ताखद्वर भित्रजाका जिवेरक देजार्थः।

" ৭০। উদে । ইন্দ্ৰ চেটায় মি।

অত্ৰ উদঃ স্থস্ত ্ল্যাৎ। মুক্তাবৃত্তিষ্ঠতে জনঃ, অনুদ্ধিটোয়া-মিতি কিম্ ? পীঠাছতিষ্ঠতি।

৭১। উপান্ধন্তকরণ পূজা সঙ্গতি মৈত্রীকরণ-পথিষু । বা লিপ্সায়ীম্। (২৯)

মন্ত্রকরণে দেবপূজাদো চ. গম্যে পথি কর্ত্রিচ উপাৎ হস্তঙ্ দ্যাৎ গায়ত্রা। দৃশ্যমুপ্তিষ্ঠতে, দেবপূজাদো—বিপ্রোহর্কমুপ-তিষ্ঠতে। দঙ্গতো-গঙ্গা সমৃদ্রমুপ্তিষ্ঠতে। মৈত্রীকরণে—রাজা-নমুপ্তিষ্ঠতে। পথি কর্ত্রি অয়ং প্রভাঃ স্রুমুপ্তিষ্ঠতে। বা লিপ্যায়াম্। অথীদাতারমুপ্তিষ্ঠতে টিউপ্তিষ্ঠতি বা।

१२। अकर्मकी ९।

অকর্মকার্পাৎ স্বস্তুঙ্ ম্যাং। উপতিষ্ঠতে ভোজনকালে।

৭৩। সমৌদৃশ্যতিবৈতিস্বরতি শ্রু গমুক্তিপ্রক্রী।

সম্পূর্নীৎ দৃশ্যাদেরকর্মকাত্ত ্ম্যাৎ। সম্পশ্রতে, ঋধা-তোরঙাদেশে—সমারত মমাজীকাঃ, সংবিদ্রতে, সংস্বরতে, সংশৃণুতে, সংগচ্ছতে, সমূচ্ছতে, সংপৃত্তে। অকর্মকাদিতি কিম্ ? বাদং সংগচ্ছতি।

৭৪। ব্যুত্তপাজোযমহনঃ স্বাঙ্ককর্মকাট্ট।

ব্যুদস্তপে রাঙো যমহনশ্চাকর্মকাৎ স্বাঙ্গকর্মকাচ্চ তঙ্ স্যাৎ। বিতপতে, উত্তপতে, আযচ্ছতে, আহতে, আহতে।

^{ে (}২৯) উপান্ম। মন্ত্রো দেবভেদঃ, তক্ত করণসারাধনম্। সংগতিরূপশ্লেষঃ, দূরত্বসাপি সম্ভবতি। বধা, দ্বীয়ানরং পদ্ধঃ স্বর্লোকমুপতিষ্ঠতে।

স্বাঙ্গকর্মকাৎ—বিভপতে পৃষ্ঠং, আয়হুতে পাণিং, আহতে সংৰক্ষঃ, নেহ—উত্তপত স্বর্ণং স্বর্ণকারঃ।

৭৫। হেবা নিবিসমুপাঁৎ।

এভা হেঞ্সঙ ্দ্যাৎ। নিহায়তে, বিহায়তে, দংহায়তে, উপহায়তে স্থীম্।

१७। म्यक्तार्रोगाउँ।

পরাভিভবেচ্ছায়ামাডোহ্রেঞ্স্তঙ্ স্যাৎ। মলো মল্মা• হ্রয়তে। অ্যাত্র, গামাহ্রতি।

११। अस्र शृहरों तो आदमः।

প্রান্ত্রা ক্রান্ত্র নির্ভাত, সমূহ্যানঃ।

৭৮। কুর্ম্বো ভর্মন গন্ধন দেবন সাহস প্রকথনোপযোগের্মী (৩০)

এষর্থেষু ক্ঞস্ত সাৎ। ভর্পনে উংক্কতে শক্তং গদ্ধনং—হিংসার্থকসূচনং, উদাকুক্তে। সেবনে—রাজানমুপ-ক্কতে, দুসাহসে-পরদারান্ত্রপক্কতে, প্রকথনে-দেশান্ প্রকৃ-ক্তে, ধর্মাদে)-বিনিয়োগে-শতং প্রক্কতে।

রুতে, ধর্মাদো-বিনিয়োগে-শতং প্রকুরুতে। ব ৭৯। প্রতিযতে কর্ম চ ষষ্ঠী ব

সতোগুণান্তরাধানে-কুঞ্ছুছু স্থাৎ। তৎকর্ম চ ষষ্ঠা বা। এধোদকদ্যোপস্কৃত্ত, এধোদকন্ম। উপাৎ প্রতিষদ্ধে হুট্ চ।

৮०। जर्रहें अम्रहानें। (७১)

প্রবহনমভিভবঃ পরাজয়ো বা। তত্তাধেঃ কৃঞ্সঙ্ স্যাৎ। তম্বিচক্রে।

⁽৩০) ক। সাহসোহবুদ্দিপূর্ব্বিকা প্রবৃত্তি:।

⁽৩১) অধে। অধেরভিভবে উপেক্ষায়াকেতি বাসব্যতে।

৮১। त्वः भक्षकर्यां । इक्यकार्यः

বেঃ কৃঞ্চঃ শব্দকর্মণাথ কর্মকাক তঙ্গু স্যাৎ। ক্রোন্টা-বিক্রুতে স্বরান্। অকর্মকান্ত-বিক্রুত্তি অবাঃ-সাধুনান্তাঃ। ৮২। নিয়োজ্ঞানোপনয়নোৎসঞ্জন সম্মানন বিগণন ভৃতিব্যয়েয়ু। (৩২)

এমর্থের নিয়ন্তঙ্ স্থাৎ। জ্ঞানে—মর্থান্নয়তে ধীরঃ, উপনয়নেমাণবকমুপনয়তে, উৎসঙ্গীকরণে—বালকমুদানয়তে, সম্মাননে
শুরুং বিনয়তে, বিগশনং—ঋণাদিশোধনং—মদ্রাঃ কারং বিনয়ন্তে
ভূতো—কর্মকরামুপনয়তে, বেতনেনাত্মসমীপীকরোতি। ব্যয়ে
শতং বিনয়তে।

৮৩। কর্তৃস্বানঙ্গকাদী।

কর্তৃস্বমনঙ্গং কর্মা যস্ত্র, তত্মান্নিয়স্তঙ্ স্থাদ্বা। ক্রেনিং বিন্
য়তে, বিনয়তি বা, অপনয়স্ব নানিনি মানম্। কর্তৃস্থেতি কিম্? গুরোঃ কোপং বিনয়তি। অনঙ্গেতি কিম্? গড়ং বিনয়তি।

৮৪। ক্রমেঃ ক্ষীতত্ত্ব রত্ত্ব প্রাহেষ্ট্রী।

জন্ধর্থেরু ক্রমেন্তঙ্সাৎ। প্রাজ্ঞে-শাস্ত্রং ক্রমতে। বৃত্তির— প্রতীঘাতঃ, ঋচ্যস্থ ক্রমতে বৃদ্ধি-যুদ্ধায় ক্রমতে ভটঃ।

৮৫। উপপরাভ্যাম্।

আভাং স্থীতথাদে গম্যে ক্রমেস্তঙ্ স্থাৎ। শাস্ত্রমশ্মি-মুপক্রমতে, পরাক্রমতে।

⁽৩২) নি। **উৎসঙ্গীকরণম্ৎক্ষেপণম্। মদ্রাঃ মন্ত্রেপশলাঃ** লোকাঃ। কারং রাজ্ঞাহতাগং—শোধরন্তি।

be । बार्डा ब्लाडिक्लारडो । (७७)

ৰ্ম্যোতিক্লাম্নে—আঙঃ ক্ষেত্ত স্থাৎ াশ্লাক্ষতে ভাকু: জ্যোতিরিতি কিমৃ । আজামতি মুক্ষঃ। উপগতাবিতি কিমৃ ! আক্রামতি পিঞ্জি রবিঃ।

৮१। दर्ड शानिवित्कर्श।

অত্তার্থে বেঃ ক্রমেন্ডছ্ স্থাৎ। সাধু বিক্রমতেহখাঃ। পাদ-বিক্ষেপ ইতি কিম্ ? বিজ্যুমতি রাজা ৷

৮৮। প্রোপাভ্যামারছে। (৩৪)

चान्त्रामातरस करभ्रु छार । अक्रमर (कास्तुः, हेन-ক্ষতে গন্তুম।

৮৯। অপ্রাদের

অপ্রাদেঃ ক্রমেন্তঙ্ স্থারা। ক্রমতে ক্রামতি বা।

৯०। (क्वें निरुद्वें।

অপহৃবে জন্তত স্থাপ্ন শত্মুপঙ্গানীতে।
৯১। অক্মকাচ্চ।

छउड् मार। गर्भाषा जानीरा

৯২। সম্প্রতিভ্যামশরণে।

আভ্যাং জন্তত ্স্যাৎ। গাংসংজানীতে, শতং প্রতিকানীতে অস্মরণ ইতি কিষ্ ? সভুঃ সংজানাতি।

৯৩। বদৌ দীপ্তি যত্যোপমন্ত্রণ জ্ঞান সান্ত্র-বিমতিয়ুঁ

⁽००) था। (ब्राजियाः बाइनक्कामीना-मुम्बर्का-केर्बन्यरत ।

^{&#}x27;০৪। প্রো। আবস্তঃ আখ্যা ক্রডিঃ।

পদ্ধের বিশ্বর সাংগ্রাহ । ব্যাহত চারীর ছির্লোকারতে, গেছে হলতে, উপমন্ত্রণং—র হস্তাপক্ষণনং, কুলন্ত্রীমুপবদতে, জানে অন্নমেকো বদতে, সাস্ত্রনে—প্রাস্থাসুপবদতে, বিবিধমতে। ক্ষেত্রে বদতে।

28। वाक्याणे मद्दीत्की। (७५)

মসুম্যাণাং সহোচ্চারণে বদস্তঙ্ স্যাৎ। সম্প্রবদক্তে বিপ্রাঃ। ব্যক্তবাচামিতি কিম্ ? বর্তমু ! সম্প্রবদ্ধি কৃষ্টাঃ।

३८। वर्षेत्रकर्यकार।

শাসুবদ স্বঙ্ স্যাৎ। অসুবদতে কঠ: কালাপস্য। শাকর্মকা-দিতি কিয়্ ? পূর্বেজিমসুবদ্তি।

৯৬। वी विश्वनार्थ।

বিরুদ্ধপ্রলাপাত্মিকায়াং সংহাক্ত্র বদস্তঙ্ স্যাব । বিপ্রব-দন্তে মৌহুর্তিকাঃ বিপ্রবদম্ভি বা । সংহাক্তাবিত্যেব, ক্রমেণ বদন্তি ছাত্রাঃ।

৯৭। অবিদিনরঃ।

অবালিারতেন্ত গুন্ধ । অবগিনতে। গির ইতি কিম্? অবগুণাতি।

৯৮। সম্প প্রতিজ্ঞায়ীম্।

व्यवार्थम्यानिवर्ड्ड मार्। नुबर निष्ठाः नश्निवर्छ।

উদশ্চরতেত্ত স্যাৎ। গেয়মুচ্চরতে। অকশ্বকাঁদিভি ক্লিম্? নাদ উচ্চরতি।

⁽००) मदशकिय नेनवहत्त्व ।

. ১००। नमञ्जीशायुक्तिर।

ভূতীরান্তেন যুক্তাৎ সঞ্চরতেন্ত স্থান। রংখন সঞ্চরতে রখিং। ১০১। দান দ্বীশিষ্টব্যবহারে সাঁপি চতুর্য্যথে।

অত্তার্থে দমো দানস্তীরান্তযুক্তান্তঙ ্দ্যাৎ। সাপি তৃতীরা চতুর্থ্যর্থে। দাস্যা মালাং সংযক্ততে কামুকঃ।

५०२। छेलानुगुर्यः स्वीकतद्वी।

অত্যোপাদ্ যমগুঙ্ দাবে। কল্লামুপ্যচ্ছতে, উপারংসত নাস্বয়। ১০৩। যুজেও প্রাদেরসংনিত্র রৌইযক্তপাত্তি।

যজপাত্রাদভাবিষয়ে প্রাদেষু ক্ষেন্ত স্থাৎ। উপষ্ত জে নিযুত্তে, প্রযুজানঃ। অসমিছ র ইতি কিন্? সংযুনজি। নেহ, যজপাত্রাণি প্রযুনজি ধীরঃ।

১০৪। সমঃ ক্ষুবঃ।

भः दर्भा एक । भः कृ द्व भक्षम् । ५०० । जू दर्भा २ शामा ।

পালনাদভার্থে ভুজন্তঙ্দ্যাৎ। ওদনং ভূঙ্কে, অনুভবে—
হথং ভূঞানঃ। নেহ, ভুনক্তি পৃথিবীং রাজা, পালয়ভীত্তার্থঃ।

उक्का गरमंह निर्णि।

শদেঃ শিধিষয়ে তঙ্সাৎ। শীয়তে শীয়মানঃ। শিতীতি কিমৃণু শৎস্যতি।

১০৭। মুজে লুড লোডেই ।

खिनस्तः निवित्रात्र नृष्ड् रमार्थः। जिन्नरण-मन्तः स्वीके । निव्रमः किः १ मनातः मतियापि ।

Sob । शूर्ववर अमेर । (७७) मा

অসনস্ত্রং সনস্তাত্ত সাথে। আন্তে—আসিবিতে, আক্রমতে—আটিকংসতৈ নহ—শিশংস্তি মুমূর্যতি, নহেতদ্ধাত্মাত্র তঙ্নিমিত , কিন্তু শিলাদি।

५०२। स्मृत्येश

আভ্যা॰ সমস্ভাভ্যাং তঙ্ স্যাং দী স্বাধার্কতে দিদৃক্তে। ১১০। আনবো ২নাভ প্রতেঃ। (৩৭)

আঙ্প্রতি—ইনিচ্নেতেঃ সনস্তাতঃ সাহ। শুক্রারতে শুরুষ্। নেহ-মাশুক্রারতি, প্রতিশ্রুক্রাণ ত।

১১১। जनत्मीक है।

অসুহীনাৎ জঃ সনস্তাত্ত স্যাৎ। ধর্মং জিজাসতে। মন-নোরি কিম্? পুত্রমুক্জিজনস্তি 🙀

১১२। শকেজিজ্ঞানায়াম্।

বিদ্যাস্থ শিক্ষতে। ১১৩। আমঃ করোতেরাম্ন্তবৎ।

ভারতাৎ করোতেরামন্তবত্ত স্থাৎ। ঈহতে —ঈহাঞ্জে, কলোতেরিতি কিম্ ? ঈহামসূব।

কলেভেরিতি কিম্ ! ঈহাম্বছব।
১১৪। পেরণিকর্মকর্তৃত্বেইনাধ্যানে । (৩৮)

⁽०७) भू। भूर्ऋगामित्वि भूर्क्तवः।

⁽৩৭) কম্প্রশ্বচনীর্য়াৎ ক্লাবেব,—বেবদত্বং প্রতি—গুরুষতে ইতি।

^{় (}৯৮) বেঃ। অতিছিপ্শবিদ্য রোহতেত্বে ক্রিবে বাচ্যে, স্থগ্ডিবনং স্থগ্-আনক্ষি । অপরিক্ষমনসাধ্যো ধাত্বো ভাষঃ, দর্শনভাবণাদিঃ। স্পরিক্ষমন-সাধ্যা ছু ক্রিয়া, পসনাবোহনাদিঃ। সাধ্নক কারকমিতি।

অবার্থের মান্তর বিশ্ব কর্ম কর্ম শুরার ক্রাণ আরোহতি গজা রাজা, আরোহয়তে গজা স্বর্থের রাজানম। পশান্তি ভ্তাঃ নৃপং, দর্শয়তে ভ্তা।ন্ নৃপঃ ক্লয়মেব। করিঃ কর্ম ক্রিয়া, দৃশিঃ কর্ম্ভাব ইতি কর্মাবন্তানান্তিমবিধিঃ অনাধ্যান ইতি কিমৃ ? স্বর্গতি শিবং শৈবঃ, স্বর্গত্যানং শিবঃ স্বর্থের।

১১৫। ভীম্মোটি প্রযোজকভয়ে ভীষভা-পৌমাপ্রটি ফুটি টা

ভয়মুপলক্ষণম্। প্রয়োজকান্তরে বিশ্বরে চ ভীশ্বিঙারণিত্ত আহ। তয়োশ্চ দাদৃষ্ঠাই ভিয়ো ভীষভাপৌ স্থাতাম্। থিঙশ্চ স্থাপাদেশঃ তেহাদেশাঃ কৃতি চ। মুণ্ডো ভীষয়তে ভীষণঃ, মুণ্ডো ভাপরতে ভাপকঃ, ক্লটিলো বিশ্বাপয়তে বিশ্বাপকঃ। কৃতি চেভি নির্দেশাই কর্মণাপি ভীষাদ্যাদেশাঃ। ভীষ্যতে। প্রয়োজকৈতি কিম্ । কান্তিকয়া ভাষরতি, ক্রপেণ বিশ্বায়য়তি ত্রিলোকীম্।

১১৬। গৃধিবঞ্চৌঃ প্রলম্ভনে।

অনয়োৰ্থেন্ড স্বাৎ। শিশুং গৰ্মাতে, বঞ্মতে। প্রলম্ভন ইতি কিম্প খানং-গ্রন্মতি, বঞ্মতি।

. ১১१। निर्त्रौ नार्णैः পুজাপরিভবর্মৌ की।

পূজাপরিভবয়ো বিবিদ্যাদে চ, লিয়োণেতঙ্ স্যাৎ।
লাপাদেশত। জটাভিরালাপয়তে, শ্রেনা বর্তিক।মূলাপয়তে,
শিশুমূলপয়তে। নামত ক্যামূলাপয়তি। জতালিয়েয়বেতিঃ
লাদেশঃ।

ं 35b । भिट्यान भनीय कृटकी २ छाटमें।

অভ্যারতো মিথ্যাশকপ্রয়োগে ক্রেণ্ডের ভারে। পদং গিথ্যা কারয়তে।

১১৯। স্বরিত-ঞিতঃ কর্ত্তুঃ-সার্থে ক্রিয়াফলে।

ক্রিয়া-ফলে, কর্ত্বার্থে গম্যে, গণপাঠে প্রদিদ্ধাৎ শ্বরিতেতো ধাজে। ঞি তশ্চ তঙ্ শ্বং। বঙ্গতে কুরুতে। পরার্থে যদ্ধতি করোতি।

১২০। স্বার্থশব্দযোগে বিভাষা।

স্বার্থ ক্রিয়াফলে যদাত্মনেপদং বিহিতং, তৎস্বার্থশস্বাধার বা স্থাৎ। স্বং কটং কুরুতে করোতি বা। এবং বক্ষ্যমা-শেভ্যোহপি।

३२५। जशीदमें।

शार्ष ७७ छार। बनार्थी जात्रमणवन्ति । ऽ२२ । यम् अमूनार्डी ३७८ई ।

এভায়েম: স্বার্থে তঙ্স্তাৎ। ব্রীহীন্সংবচ্ছতে, ভারমুদ্-যদ্ভে, বস্ত্রমায়ক্ততে। অগ্রন্থ ইতি কিম্ ? চিকিৎসামুদ্যক্তি।

, ४२७। जलार्द्युब्ह ३।

यार्थंच थानित्रहिछा**९ छ** छ । शाः जा नीर्ट, नतार्थंच गाःकानािक ।

248 1: 045 1

• শৃত্তাং স্থাং কার্য়াত খনার্থ, পাঠয়তে, পরার্থে-পাঠয়তি, কার্য়তি।

ं ५२६। ज्यान (श.ना मम। यम। यम निव्यूर कंटि नृष्टि वन वनः

বক্ষামাণনিষেধাপবাদোহয়মারস্তঃ। এভ্যোপ্যস্কেভাঃ স্বার্থে তওঁ স্থাও । স্থাদয়তে ধাপয়তে, পায়য়তে, সময়তে শক্রং, আবাময়তে, আবাসুয়তে, পরিমোহয়তে, পায়মোহয়মানঃ, রোচয়মানঃ, রোচয়তে, নর্তয়তে, বাদয়তে, বাদয়তে। অভ্যত্র— ভিক্ষাং বাদয়তি, দময়তি গজং, নর্তয়তি ভুজমিত্যাদি।

১২৩। ন নিগারণ চলন থেছ বুধ যুধ নশ জন প্রু ডে জুড্টি।

স্বার্থে ভক্ষণাদ্যর্থে ণেরিতি প্রাপ্তং মাত্মনেশালং ন ভবতি। আশর্মতি, ভোজরতি, চলরতি, কম্পরতি, ইঙ্ মধ্যাপরতি, বোধরতি, বোধরতি, নাশরতি, জনুয়তি, প্রাবয়তি, স্থোবরতি, প্রাবয়তি।

১২৭। অণীবুকর্মকালৈতনকর্ত্কাৎ।

আগতে যশ্চেতনক জুকোই ক শ্বিকস্ততো গ্রাৎ স্বার্থে তঙ্ ভাৎ। আন্তে বিপ্রঃ, আসমতি বিপ্রম্। চেতনেতি কিম্ ? শো-বয়তে ত্রাহীনাতপঃ। অগাবিতি কিম্ ? আরোহয়তে বিপ্রস্তং প্রয়োজয়তি, আরোহয়তে ক জুকী ক্রিক্স্র শাস্ত্রত দিয়তোনাধ্যা।

३२৮। শেষरि कर्छति शतरेयाशनम्।

আত্মনপদানিহীনান্ধাতোঃ কর্ত্তার পরত্যাপদান্তবিত।
য়াতি, প্রবিশতি, রর্জয়তি। প্রুনঃ কর্ত্তাহণং-কর্মাকর্তার নিরাসার্থং, বিস্পান্তার্থক। আত্মনেপদানিছে বি পরত্যাপদিনাং কচিৎ।
কলাতিৎ কুপাতে মাতা নোলরস্থা হন্নীতকী। প্রিরামুশ্য কিংপুরুষশ্চু চুম্বে। পরত্যোপদমপ্যাত্তঃ ক্ষতিদেশাল্পদেশদে। বল-

শাধাং কাধাং শিক্ষরয়ঃ। কিছে।শি কিছেনিছতি। কিছতি। পুরুষকারো, নামুগর্ভয়তি ভাগাানীতি।

১২৯। অনুপরাভ্যাৎ কুর্জঃ।

আভ্যাং কুঞাঃ সূর্বত্র পরস্থৈপদং ভবতি। অসুকরোডি পরাকরোতি।

১৩০। পরিপ্রবহ পরিমুষ্ট।

আভ্যাং পরক্রৈপদং ভব্তি। পরিবহতি, প্রবৃহতি, পরিমুষ্যতি।

১৩১। কিপেরভিপ্রত্যতিভাঁঃ।

এছ্য: ক্লিপেন্তৎ স্থাৎ। অভিক্লিপতি,প্রতিক্লিপতি।

১৩২। রমৌ ব্যাঙুপপরিভাঁই।

এভ্যোরমস্তৎ স্থাৎ। বিরম্ভি, আরম্ভি, উপরম্ভি পরিরমন্তি, পরিরমন্।

১৩৩। উপাদীকুর্মক্ষি।।

অকশ্বকাছুপরমস্তদাস্যাৎ। ভোজনাছুপরমতি উপরমতে বা।
১৩৪। হ্যুতাদেলু ডি ।

লুঙি ছাতাদেঃ পর্যেপদং বা স্যাৎ। ব্যহাতৎ বাদ্যোতিষ্ট অসুটৎ অংলাটিষ্ট। ছাতাদুয়ো দাবিশুক্তিঃ।

ू ५७१। इस्राहेग्यमत्त्रीहै।

সের সনি চ পরে রতাদেশুদাস্যাৎ। বৎ স্যাতি বর্তিষ্যতে। সনি বির্থস্তি বিবর্তিষ্তে। রত রধু সংগ্রু স্যান্দু কুপু, (এতে ব্রতাদয়ঃ।)

১৩৬। क्रांक्ष न्हिं।

তৰা স্যাৎ। কল্পানি, কলিতাসে। ক^{ল্পা} স্যতি, কলি-শুহুতে, চিক্তব্যতি, চিকলিয়তে।

५७१। यहीं करिश्रहीश्ल्लाम्यायारी है।

ছামধিজিয়তে। ১৩৮। সম্পর্যুপীৎ কুঞ্জঃ সমবায়ভূষণে। (৩৯)

সমাদেঃ কুঞ্জেকাৎপূর্কাঃ স্তট্ স্যাৎ। সমবারে ভূষণে
চ। সংস্কৃতং, অড়ভাঁগিব্যবাথে চ. সম্ক্রেণ্ড, পরিচস্কার
উপস্কৃত্ব। সমঃ সাধনবিশেষে চা সংক্রারঃ।

শ ১৩৯। উপা^থ প্রতিফতে বৈক্তবাক্যা-

উপালেষর্থেষু কৃঞঃ স্ট স্থাৎ। গুণানামুপস্কতে, বিকৃতে উপস্কৃতঃ সৃঙ্ক্তে, গম্মানকাক্তপ্রোপাদানে, উপস্কৃতঃ জল্পতি নিত্যমের কথং ভভো নিশ্চিমুমঃ পদার্থনি। (৪১)

380। किर्तिनवर्ग।

⁽৩৯) সংপর্য। অত্র সূত্রীসকারক ধারবয়বতাৎ বিস্পালোকঃ। সদ্বায়ো-হত্র সমূহঃ, তেন সংস্কৃতনিত্যাদৌ কথানাং সমূহ ইত্যগোহিত্বিংক্ততে।

⁽৪০) উপুর । উংক্রিণানং প্রতিযুত্ত । হরেরির চন্দ্রে দিবিরক্তেতি হরিশ্চল্রত । প্রতিগতং করং পাপমন্তেতি প্রস্কার । মা জিরতেহনেনেতি মকরের বেণুং। দওক মা কর্তুং নীলম্ভ মকরা পরিবাট্ । উষ্ঠারমক্তেতি কারিম্ । অজস্তের তুল্মপ্রমিভ অজ্ঞলং নগরশা কার্ড্রেই তি কারং করেরিউতি টং। রথম্পা ইতি রধং পাতাতি কং। কিছিলং ইতি কিছুকিং দ্যাতীতি কং। শতাং পরং পরং শতং, যোগবিভাগাং সমাসং, রাজ্যাদিং। এবং পূরং সহত্রমিত্যাদ্যং। প্রায়শ্ভিত্তা, প্রায়ন্ত্রপং, চিভিসংজ্ঞানে জঃ চিত্তং পাপাপনরনহেত্ত্বপং প্রায়শ্ভিত্তম্ব । আকৃতিগণোহর্ম্, উক্তঃ স্ট্।

উপকিরতেঃ কাৎ পূর্ব: মুট্ স্থাৎ। উপস্থীগ্য লুনাতি, লবণ ইতি কিম্ ? উপকিরতিপুষ্পাম্।

383। अटिन्हें हिश्मायार्मे।

প্রতেরুপাচ্চ কিরতেহিংসায়াং স্থট্স্থাৎ। উরোবিদরেং প্রতিচক্ষরে নথৈঃ। উপস্থীর্ণো দৃষ্ঠ্যঃ

১৪২। আশ্চর্য্মন্ত্রে। নিশাভাতে।
১৪৩। গোষ্পদং সেবিতাসেবিতপ্রমাণেয়।

নিপাতাতে। গোভিঃ সেবিতো গোষ্পাদা দেশঃ। অসে-বিতে গোষ্পাদং বনং, প্রমাণে গোষ্পাদং পুরং রুফৌদেবঃ।

১৪৪। আম্পদং কৃত্যপ্রতিষ্ঠয়োঁঃ। ভাং। ১৪৫। অপরস্পরাঃ ক্রিয়াসাতত্যে। অপরস্পরাঃ সার্থা যান্তি, অবিচ্ছেদেনেত্যর্থঃ।

১৪৬। পারস্করাদর্যৌঽপি সংজ্ঞারাম্।

এতে সংজ্ঞানাং সাধবং স্থাঃ। পারস্করোদেশঃ। কৃত্তম্ব কি বিতাকে। অপকরো রথাসে। অবস্করো বর্তকে। প্রক্রিকর প্রতিষ্ঠানির অকরন করিবে। বিশ্বপরিব্রাজকরোই। কান্তীর সজন্ত্র নগরে। কারস্করে। ব্রেক্সানির রথস্পানদা। কি ক্রিক্ষঃ পর্বতঃ। পরঃ শতাদ্যান্তে নেষাং পরা সংখ্যা শতাধিকাং। তত্ত্বতোভলোপেন। তক্ষর-কোরে। স্বহস্পতিঃ স্বগ্রহারী। বনস্পতিবির্ক্তিন প্রিক্সান্তির ভ্রত্তির ভ্রত্তিতির ভ্রত্তির ভ্রতির ভ্রত্তির ভ্রত্তির

১৪৭। ডলব্বেরিলব্রেশিন্ট ব্যক্তার্যো বহুলম্। (৪১)

এষাং মন্তেদ্ধ নােশ্চ ব্যত্যানাে বছলং ভবতি। চ্ছা. চ্লা.
জড়ং, জলং, বড়ভা, বলভা, প্রীড়া, প্রীলাং বিড়ালঃ বিলালঃ.
বিরালেশ্চ। রলয়ােঃ খল্প। বারঃ বালঃ। মূরং, মূলং, রঘুঃ,
লঘুঃ, অরং, অলং, অসুরিঃ, সসুলিঃ, কপািরকা, কপিলিকা,
কোম, লােম, বিরোচনং বিলােচনং, ভীরুঃ, ভালুঃ। রুপ মান্ত ১ঃলামর্থা। কল্লতে ক্প্রঃ। নান্ত ক্রপা রুপাঃ। রুপ মান্ত ১ঃলামর্থা। কল্লতে ক্প্রঃ। নান্ত ক্রপা রুপাঃ। বাা মন্তি। নিজেলিলতে, নান্ত গীর্ষাতে। অটি বা লিগতি লিলতি। গরােবিলে ললঃ ক্রেট। সয়তি প্রান্তি লিলতি। গরােবিলে ললঃ ক্রিট। সয়তি প্রান্তি। পার্নাহ, পালঘঃ, পর্যান্ত, পলালঃ। কচিৎপ্রস্তিঃ, কচিদপ্রস্তিঃ। কচিন্নিভাষ। কচিদ্যাদেব। বিধের্বিধানং বভ্ধা সামীক্যা চত্-

ইতি শ্রীপদ্ধনাভদত্তকৃতো তুপদ্ধ-ব্যাকরণে ভূচীয়ন্তাধ্যায়ত্র প্রথমঃ পাদ:।

⁽৪১) ভল। ব্যত্যয়ে বিপ্র্যাসঃ। শিষ্টপ্রয়োগাং কল্ম কন্ম, **অস্থাে-**হসুল ইত্যাদয়ঃ মুয়ঃ।

हे जि सूर्वाच्यक्रात्म नवस्याविसृः।.

অথ তৃতীয়াধ্যায়ে

দ্বিতীয়ঃ পাদ:।

ঙ্কিৎপ্রকরণম।

ैं। डिनेशिल्य मार्बश्करके। (:)

ব্যচেণিদসিভ্যামন্তপ্রত্যুয়ো ভিদ্ভবতি। বিচিত। বিচিতুৎ অণিদসিরিতি কিং ন্যাচয়তি, অসিঃ, উরুব্যচাঃ।

৩। অসংযোগাদলিলিট্ কিৎ।

অসংযোগ ভোদ্ধা তোর লিল্লিট্ কিন্তু কতি। চক্ত ভিন্তু কুত্রু জুত্রতু উচুঃ হুক্তরঃ সংবিব্যাং সংবিব্যারে, এচ আরং নবাং-জ্যাব্যেঞোলিড্ যপোরিতি যণ ইক্নিসেধা থ আলে। লুগিট্ কিঙিদচোরিত্যাকারলুক। অসংযোগাদিতি কিম্ ! বলির্ববিদ্ধে জলধির্মান্তে। অলিদিতি কিম্ ? বিভেদিথ। আমানেশে লিটোন স্থানিবত্বং, ওষাঞ্চার।

৪। মৃত্যুদগুধকুশক্লিশবদবসঃ ক্ত্বা।

⁽১) ভিং। ভিদিতি লুপ্তপ্রথমান্বিচনান্তং পদম্। প ইং যক্ত স পিং, স্কুড়্চ সার্কিধাত্কক লুঙ্ সার্কিধাত্কে, ন পিং অপিং, অপিডী চ তে লুঙ্ সার্কিধাত্কে চেতি কর্মধাররঃ।

বক্ষানানিষেদাপবাদোহয়য়ৢয়ড়াদেঃ সেট্জ্যা কিৎ স্থাৎ।
য়ড়ড়য়, য়দিয়া, গুধিয়া, কুশিয়া, ক্রিশিয়া, উদিয়া, উবিয়া।

৫। এइकनिविन्यूयः मर्भेडी।

এভ্যঃ সেট্ ক্ত্রা সংশ্চ কিতো স্থাতাম্। স্থীয়া জিল্লক্তি ক্রানিয়া ক্রেদিষতি বিদিয়া, বিবিদিষতি, মুষিয়া, মুমুষিষতি। তা তা হা হা ৬। ইক ইগ্রপান্তাচ্চ সন্নিট্।

ইগন্তাদিগুপধাচ্চ ধাতোরনিট্ সন্ কিৎ স্থাৎ। চিচী-মতি চিকীর্ষতি। ইগুপান্তাচ্ বিভিৎসতি বুভুৎসতি। অনি-ড়িতি কিং শিশ্যিমতে।

৭। উরিগুপর্ধাক্ষ লোঙ্সিচে তিঙি। (২)

ঝকারান্তাদিওপধান ধাতোরাত্মনেপদে লোঙ্দিচৌ কিতো স্থাতাম্। কুষীক হৃষীক অকৃত অহাত তী্ৰীক সভীক সন্ম্। ইশুপধাৎ ভিৎসীক ছুংদিক অভিত অবৃদ্ধ। অনি-ড়িত্যেৰ বৰ্দ্ধিকীক অবৃদ্ধিক।

৮। श्रार्योः निजीनिक।

স্থাপ্র জি দিচ্কিৎ সাং। আত ইন্ত। উপান্থিত যুং
আদিত আধিত অধিশতাম্ইট্দাহ্চর্য্যন্ত্রেণি অধায়িধাতাম্।
১ । নজুণী সেট্।

সেট্ ক্ত্বা কিল্ল স্থাৎ। শয়িত্বা দেবিত্বা বর্তিত্বা স্থানিত্বা।

্। ঋতিক্ষিম্যিত্যিবঞ্জিনোপধথ-কান্তাদ্বী

⁽२) উরি। **উ**রিডি পঞ্ম্যেকবচনাত্রং পদ্ম।

এভিয়া সেট ্জু । কিয়া ন স্থাৎ। শাতঃ সেত্রিঃ। শাতিকা অর্ত্রিয়া ক্ষিত্রা ক্ষিত্রা মুগিতা স্মিত্রা ত্মিত্রা, তর্ষিত্রা, বিহিত্রা, বঞ্জিয়া লুভিয়া লুঞ্জিয়া। নোপেশণকান্তাৎ এথিয়া এছিত্রা শুথিয়া শ্রুহিয়া গুক্ষিয়া গুক্ষিয়া।

55। इला दिनु जिथा मन्य मर्गे ने

উ-ই-নী উপধে যানত্ত্সাদ্ব্যুপদান্ধত্বোরবয়ন্তাং সেট্
ক্রো সংশ্চ কিতোঁ বা স্থাতাম্। হ্যাতিত্বা দেয়াতিবা দিহ্যাতিমতে দিদ্যোভিষতে লিখিতা লেখিত্বা লিলিমতি লিলেখিষতি।
অবয ইতি কিং দেবিত্বা ক্লোঘিত্বা। হলাদেরিতি কিম্!
এধিত্বা এঘিনিষতি। সেডিত্যেন, ভুকু ব্ভুক্তে।

১২। ने निर्छी भी পুঙ্ স্বি মি দি ক্লি ধ্বঃ।

এভা সেট্ নিষ্ঠা কিন্ন আৎ। শরিতঃ শরিতবান্ পবিতঃ
পবিতবান্ প্রমেদিতঃ প্রমেদিতবান্ প্রমেদিতবান্
প্রেক্দিতঃ প্রমেদিতবান প্রধ্যিকঃ প্রম্যিকবান্। স্বিদাদেরাদিতো ভাবারস্করোরিতি ইট্। উড্ডয়েকেশ্চাকিত্রং উড্ডয়েতঃ
নেহ, উড্ডীনঃ।

১৩। মৃষ্ট ক্লান্তে।

নিষ্ঠা কিন্ন স্থাং। মাৰ্যতঃ মৰ্যিতবান্। কান্তাবিতি কিম্ ? অপনুষিত্ত তে বাকাম্। ১৪ | উতুপ্ৰশ্বিকরণাত্বী ভাবারশুয়োঃ।

উচুপধাজ্জিকরণাদ্ধাতোর্ভাবাদিকর্মণোঃ সেট্ নিষ্ঠা কির স্থাদ্ধ। দুর্ভিতং দ্যোভিত্মনেন, সারস্তে প্রচ্যুতিতঃ প্রদ্যো-'তিলে ভামুঃ দ্যোতিত্যার্ক ইত্যর্থঃ। শব্দিকরণাদিতি কিম্পু নিগুধিতং তে বাক্যমু।

১৫। ধার্তোঃ।

আকুৎপরিসমাপ্তের্ধাত্যেঃ কার্য্যমধিক্রিয়তে।
১৮ ক্রেক্তবভূ নিষ্ঠা।

এতে নিষ্ঠাসংজ্ঞা সাভাষ্। ভিন্নঃ ভিন্নান্। ১৭। শিল্ট লোট লিঙ লঙঃ সার্ধাতুকম্।

অত্র গাড়ণিকারে শিদাদয়ঃ প্রতায়াঃ সার্বিগাড়ুকসংজ্ঞকাঃ
ভ্যঃ। সার্বিগাড়ুকপ্রদেশাঃ সার্বিগাড়ুকে যগিত্যেবমাদয়ঃ।

১৮। শেষभेन्द्धीर्क्षशक्रेम्।

শिमात्मत्रचाटाकंषः उल्लुख्वाङ्कं उमार्क्षभाक् कमः छः ।

্তাথ কালাধিকারঃ।

১৯। বর্ত্তমানে লট্। (৩)

আরকারাঃ ক্রিয়ায়া আপরিসমাপ্তের্বর্তমানকাল:। তত্ত্ব

অধ কালাধিকারঃ।

(৩) বর্ত্ত । নমু বর্ত্তমান্মিতি সমাখ্যাবলাৎ (বর্ত্ত ইতি সমাখ্যাবলাৎ) ' প্রস্তান্তিরের বর্ত্তমানপদেনে নাচ্যাত এক শ্রিন্নপি চিকার্থিতে বস্তানি ক্রিরাডেণ্ড লাশ্রয়াঃ কালাঃ প্রবর্ত্ত উত্তর্গ, দলা চ দহনীয়া চ দহনানা চ দৃশতে। বর্ত্তিরেকান্নি সংযোগান্ব র্ত্তমানঃ কিন্তাতে ইতি । তর্হি কা গতিরিত্যাহ আর-কান্না ইত্যুন্থ সাধরিতে প্রস্তা ক্রিন্না নাবতা সমাপ্যতে তাবানের বর্ত্ত-কানা বিব্যক্তিয়ঃ । অরু সাধনস্যাতীত-বর্ত্তমান-ত্রিষ্যতে প্রত্যামুংপদ্যর্থ কালািকারঃ কেনচিনিহিন্ডোছপি ন বিবীরতে তদ্যেই বিব্যক্তিত্যাহ কাল ইতি তেনামুন্থ সম্পাত্ত বর্ত্তমানে অতীতে ত্রিষ্যতি চ ধাত্তবে বর্ত্তমানান্ধাতোর্ল্ডাদরঃ প্রত্যায়ঃ প্রাঃ । নমু নিত্যব্যাপী কালঃ স কর্থ বর্ত্তনানাাদিক্রপঃ সত্তবেং। সত্যং কালক বর্ত্তমান্থাদিঃ ক্রিন্নান্ত্রাক্তা গতাহি

ধাতো: পরে লট্প্রত্যয়ো ভবতি। অভি ভবতি তির্ছপ্তি গিরয়ং স্রবতি নদী।

২০। ভূতে লুঙ্।.(৪)

অতীতে কালে ধাতোলুঙ্ স্থাৎ। অস্থ অগমৎ অমসৎ অজৈনীৎ অতৈনীৎ।

২১। অনদ্যতদে লঙ্। (৫)

অন্তনহানে ভূতে লঙ্ স্থাৎ। ষট্প্রহরাদুদ্ধিমনদাতন-কালঃ। আনীং অকরোং।

মৃত্তিমদির্ভিঃ সংযুজ্ঞাতে। সংস্কেষ্ ক্রিয়াঃ সমবেতাঃ, তত্ত সাষ্ক-সমবারেন ক্রিয়াগতো বর্তমানাদিব্যবহারঃ কালেহপুগণ চর্গ্যতে। তথাচোক্তং, ববৈকিষান্ ক্রিয়াভেদাত্তপাণাথা প্রবর্ততে। তবৈকিষান্ ক্রিয়াভেদাতৃত্য-দ্যাথা প্রবর্ততে। তবুক্তং কাতরে, নিজ্যোব্যাপী সম্প্রতি ভূতভবিষ্যৎ ক্রিয়াভেদাং আকাশকল একো দ্বাস্থো ভিদ্যতে কালঃ, ইহ মাংসং ন ধাদ-ভামিত্যাদে।, ইহ কুমারাঃ ক্রীড়িঙি তিষ্ঠিতি গর্মতাঃ কদাহগতোহিসি, এষো-হ্মাগচ্ছামি, বুভূগয়া নিজ্যা বা ক্রীড়িভানাং ক্রীড়ার্রহেপ্যবিরভঃ বৃদ্ধাধঃ প্রভূতেঃ কালক্ষ বর্তমানস্থাৎ। প্রব্রোপরতক্ষেত বৃত্তাবিরভ এব চানিত্যপ্রবৃত্তিঃ সামীপ্যো বর্জমানশ্রত্বিষ্টা ইতি কেন্চিক্রক্ষিতং তল্প লক্ষিত্ব্যং, উক্ত লক্ষণসত্বাৎ, অতএব নিত্যপ্রবৃত্তাব্রতি তিষ্ঠান্ত বিরয় ইতি।

- (৪) ভূতে। অনদ্যতনভূতে লঙ্ লৃটোলক্ষণীয়ত্থি অদ্যতন এবারং পরি-শিষ্যতে তেনাদ্যতনভূতকালে ধাত্বর্থি বর্তমানাদ্ধাতোল্ ঙ্বিধীয়তে।
- (१) অন্য। পূর্বিক্সাঃ রাত্রেশ্চতুর্থো ধামঃ পরস্তাঃ প্রথমঃ প্রত্যাসরক্ষ চতার ইতি তথাচোক্তং শেষো গতায়ঃ প্রহরো নিশায়াঃ আগামিনী বা প্রহ-রশ্চ হক্সাঃ। দিনক্ষ চয়ার ইমে চ যামাঃ কালং বুগা অদ্যতনং বদন্তি। ইতি ইবেণ, উভয়োরর্জরাত্রং বেতি মতে অন্তপ্রহরমপ্যদ্যতনমলক্ষি তেনাদ্যতমা-দক্ষমিষ্ঠিত বর্তমানধাত্র্থাদ্ধাতোর্ল্ড বিধীয়তে।

. २२ । मृजुिब्बान्वरमञ्चाम । (७)

স্মরণোক্তো ভূতানদাতনৈহার্থ লৃট্ স্থাৎ। সারসি কাস্থাং বংস্থানঃ, সম্ভবিস্থাব, একস্থামভিজ্ঞানাসি মাতরি। অ্যদিতি কিং যদেয়ারে মাভূৎ, বরস্থা জানাসি, যুৎ, কাশ্রামবসাম।

২৩। সাকাজ্ফে यनि বা।(१)

সাকাজ্যে কর্ত্তরি যত্ত্যপপদে অভিজ্ঞোক্তো কৃড় বা জাৎ। স্মরদি যন্মগণে বৎস্থামন্তত্ত ছুগাং পাছ্যামঃ, স্মরদি স্বন্মগণেধ-হবসাম তত্ত ছুগামপিবাম। অয়দেয়াগেইপীত্যেকে।

२८। পরোকে निष्। (৮)

ভূতানদ্যতনে পরোক্ষে লিট্ স্তাৎ। চকার, বর্ধে, স্থা-হং কিং বিল্লাপ, মতোহহং কিং বিচ্চার। লোকাথ্যাতে বিবক্ষাতঃ পরোক্ষে চাপরোক্ষ্যৎ। অহন্ কংসং বিষ্ণুন্যক্ষি-

⁽৬) লৃড়। অভিজ্ঞানাতি শ্বরণাতিশ্বরণার্থং অভিজ্ঞাবচনম্। অভিজ্ঞাত-স্থবচনং অভিজ্ঞাবচনম্। তদেব রুণোতি শ্বরণোক্তাবিতি অরমর্থঃ, শ্বর-ণার্থধাতারুপপদে ভূতানদ্যতনে অর্থে বর্তুমানাদ্ধক্কতালূ ড়্বিধীয়তে।

⁽৭) সাকা। অভীষ্টার্থনিপেহা-কাজ্জা, তরা সহ বর্ততে সাকাজ্জঃ. প্রাণি-ধর্মবাৎ সা ভূ প্রয়োক্ত বিশেষণং তেন সাকাজ্জে প্রয়োক্তরি স্থারণার্থোপপদে ভূতানদাতনার্থে বর্ত্তমানাদ্ধাতোল্ ভূষ্দি বিভাষাতে।

⁽৮) পরে। অক্ষাণাং পরং পরোক্ষং পরক্ষবাদিনিপাতঃ পরোক্ষমনিক্রিয়কং, যদ্যপি ক্রিয়াণাং সর্ব্বাসাং পরোক্ষত্ব-তথাপি সাধনানাং প্রত্যক্ষতাত্তংসাধ্যানাং ক্রিয়াণাম্পচরিতপ্রত্যক্ষরতার ব্যর্থং পরোক্ষমিত্যক্তম্।
তেন অনদ্যতনপরোক্ষরব্যবিদ্ধাতোর ওপবাদকো বিট্ স্থাং। নমু ইক্রিয়াবিষয়ঃ পরোক্ষঃ কালঃ, আত্মসাধ্যা চ ক্রিয়ার্পপ্রত্যক্ষা, তৎকম্মান্তিরয়কো বিট্
প্রবর্ততামিত্যাই স্থোহহমিত্যাদি অত্র চিডবিক্ষেপাৎ, ষয়ং কৃতাপি ক্রিয়ার্ণিরক্ষতে। কেবলং ক্লবলাদমুমীয়তে অভত্তম্ক্রানং মানসাতিরিক্রে-

शक्तिमः धन्नारः । भक्ते हेना विकटक, भागक हैना शहरनमाउन-वस्त्रधाः, अम्राक्रणबाधिकाम् ।

২৫। অত্যম্ভাপহ্বে চ। (৯)

লিট্ সাং। কপিখ্যাং দৃষ্টোহসি মলা, নাহং কপিখীং জগাম।

२७। इ-मधरानं छ ।

হান্তশন্তোর্থে লঙ্লিট্চ স্থার। ইতি হাকরোর শাখদকরোর চকার বা।

२१। প্রশ্নে চাসন্নকালে। (১০)

পঞ্বর্ষাভান্তরে প্রশ্নে লঙ্লিটো স্থাতাম্। প্রছামি স্থামগছকৈতঃ ? জগাম বা।

२৮। निर्यमाशितात्क ह। (১১)

পরোক্ষে অপরেক্ষে চ ভূতানদ্যতনেহর্থে স্মেন্যুক্তালট্ স্থাৎ। পচতি সাকরোতি সা।

২৯। নর্মা প্রশোতরে। ম র্ভ্যাং বা।

জিরাপ্রভাক্ষের। এবং বহজগদ চকর ইত্যাদর:। স্থজনজ্ঞানমণি জাঞ্জদশায়ামনুমীয়তে, মতেন ময়া কিং বিলেপেহত্রাণি তহুৎ। তথাচোজং, কৃতভাশারণে কর্ত্রত্যন্তাশস্ক্রেহণি চ। দর্শনাদেরভাবে চ ত্রিষ্ বিশ্যাৎ
পরোক্ষভামিতি। অহন্ কংসমিত্যাদে লোক্সসিজ্বামিটোহন্তে প্রভারা ন
দোববহা ইতি। বিভর্কে বিশায়ে বিক্লাবনাদ্যাতনেহ্ণান্যভনন্ত্রা বৃদ্ধিঃ

- (১) অত্যন্ত। অপঞ্বোহপলাপঃ, যত্র কারণাপঞ্চবপূর্বেকঃ কার্যাপঞ্চবঃ মোহত্যস্তাপঞ্চর:।
 - (२०) धरम । चढामत्रकानगरम्न शक्ववीरिक्तिः कान रेष्ठः।
 - (५১) लहें। ऋरवार्त्र मॅक्सिनसम्हका लहें छाए। (५२) धनमञ्जलाकति।

প্রাভক্তে বসুনাযুক্তান্ত্রনাতে গট্ আবে। স্কার্যীঃ
কটং, নসু করৌমি, স্কার্য্। ন সূভ্যাং বা। অকাষীঃ কটং, ন
করোমি, নাকার্যং, সু করোমি।

৩০। পুরা লুঙ্ চাম্যে।

ভূতানদ্যতনে পুরাযুক্তালুঙ্ লট্ চ বা স্থাৎ। অবাং-স্থারিহ পুরা বিপ্রাঃ, বসতীহ পুরা মুগাঃ, পক্ষে লঙ্ লিটোঁ, অবসন্ পুরা, উষুঃ পুরা। অসা ইতি কিমৃ ! পুরা বসন্তি সা। উক্তং ভূতে।

৩১। ভবিষ্যতি লুট।

ভবিষ্তি কালে লৃট্ স্থাৎ। করি**ষ্যতি করিষ্যন্**।

৩২। অনদ্যতনে লুট্।

ভবিষ্যদনদ্তনে লুট্ স্থাৎ। শঃ কর্ত্তা পরশো ভোকা।

৩৩। আশক্ষায়ামনদ্যতনে চ। (১৩)

লুট্স্তাৎ। ইয়ং নমু কদা গন্তা যৈবং পাদো দদাতি তে।

७८। यावरभूताच्यार नहें।

আভ্যাং নিপাতাভ্যাং মুক্তাদ্ভবিষ্যতি নট্ স্থাৎ। যাবদ্ গাড়ামি। পুরা শচ্ছামি।

७०। कमा कर्द्यां ।।

কদাকহিংঘাণে ভবিষ্যতি লভ্ বা স্থাৎ। কদা জয়তি জেষ্যতি জেতা বা। কহিঁ যাতি যাস্থতি স্থাতা বা।

⁽১৩) আ। আশকাত্রানুশোচনম্।

৩৬। কিং কভরকতবৈদ্যিকারাম্।

এতৈৰ্বোগে নিস্পায়াং লড় বা আছ। লক্কামঃ
প্ছতি-কত্তে ভিকাং দদাতি দাভাত দাতা বা। এবং কতরঃ
কতমণ্ট ।

৩৭। বাঞ্ছিতাদগুসিন্ধে চ।

ক্রিক্রাদক্সিকের চ পম্মানারাং কড়্বা স্থাৎ। যো দধ্যোদনং দদাতি স স্বর্গং গচ্ছতীতি—দাতারং প্রোৎসাহয়তী-তার্থঃ। পক্ষে লুট্ লুটো।

৩৮। লোড়র্থলক্ষণে চ। (১৪)

প্রৈষাদিলক্ষণে—বর্ত্তমানাদ্ধাতোর্লড় বা স্থাৎ। গুরুদেচদাগচ্ছতি আগামণ্ডি আগন্তা বা অথ তং ছন্দোহধীয়। থ্রেধৌহত্রাধ্য়নং, তস্তা লক্ষণং—গুরুষ্গমন্মিতি।

৩৯। উৰ্দাহৰ্তিকে লিঙ্চ। (১৫)

মুহূর্তম্বোপরি গুরুশ্চেদাগছেৎ আগচছতি বা অথ তং ছন্দোহধীয়। পকে সুট্লুটো।

८०। वर्जमानमाभी त्था वर्जमानवद्या।

বর্ত্তমানসামীপ্যে ভূতে ভবিষ্যতি চ বর্ত্তমানবৎ প্রত্যয়ো বা স্থাৎ। কদা স্থনাগড়োহসি, প্রমাগ্রহামি, আগ্রহমিমি পক্ষে অন্যাগমং আগতোহিমি কদা সংযাস্থাসি এই গ্রহামি।

⁽১৪) लाज । लाज्यी देशवाषिः एक तक्ष्यर जिम्मार्थ देखि।

^{· (}১৫) উর্জ । মৃহর্জাদূ**র্জং উর্জ্যুহর্জং তত্রে ভব ইকি**া**টকণ্ বর্জমা**নে ইবেভি বৃতিঃ।

৪৮ বিশাশ সামাং ভূতৰত (১৬)১

ত বাস্থারাং ভবিষ্যতি বর্ত্তমানবর্ণ ভূতবক্ত প্রত্যারো বা স্থাৎ।
ভক্তশেচদাগজভি আগমদাগতঃ আগমিষ্যতি আগস্তা বা যুকাশহন্দোহণীমহেহধ্যনীশ্বহি অধ্যেষ্যামহে অধ্যেজাশ্বহে চ।

8२। कि आर्थानशरम न है। (১१)

আশংসায়াং ক্ষিপ্রার্থোপপদে সৃষ্ট স্থাৎ। গুরুক্তেৎ কি-প্রাথামিব্যতি, ছরিতমধ্যে।

৪৩। লিঙাশংসার্থ্যে। (১৮)

আশংসাথির্যোগে লিঙ্ স্থাৎ। উপাধ্যায়শ্চেদাগচ্ছেৎ আশংসে যুক্তশ্ছন্দোহধীয়ীয়। অবকল্পে শীঅমধীয়ীয়।

88। ক্রিয়াসাতত্যসামীপ্রয়োর্যথাকাল-মনদ্যতনে লুঙ্ল্টো। (১৯)

ক্রিয়াপ্রবন্ধে কালানাং-সামীপ্যে চ যথাকালং ভূত ভবি-ষ্যদনদ্যতনে চ লুঙ্ ল্টাবেব স্থাতাম্। যাবজ্জীবং ভূশমন্ম-মদাৎ দাস্থাতি চ। যেয়ং পৌর্ণমাস্থাতিকাস্তা ভক্ষাং গুরুরগ্লী-নাধিত, আগামিস্থামাধাস্ততে চ।

⁽১৬) আশম্। অনাগতন্তেষ্টার্যন্ত লিপ্সা আশংসা।

⁽५४) कि । किलार्थास्ट्रिंग के न किलार्थः।

⁽५६) निडा। चरक्षि दामरेनार्यः।

⁽১৯) ক্রিরা। সভস্ত ভাবং সাতত্যং, ক্রিয়াণাং সাতত্যসামীপ্যে পূর্ব্ববং সমাসং। নমু ক্রিয়াসামীপ্যে বক্তব্যে কবং কালানামিত্যকর্থ, বৈবং ক্রিয়াসামীপা সভতকালনিরপৈকং নাজাবিত্যকর কালানামিতি। সর্বলকারা প্রাল্থিকেওং।

80। मीरमारलो जानरत मृह् । (२०)

সীমোজে দত্যাং অবর্থিন কালবিভাগে ভবিষ্যাননদ্য-তনে চ দৃট্ স্থাৎ। বোহরমা পাট্রিপুরাফান্তবাঃ পদ্ধান্তস্থ যদবরং কৌশাস্থ্যা স্তত্ত্ব বিরোদনং ভোক্যামতে।

৪৬। কালবিভাগে চানহোরাত্রাণাম্।

দীনোক্তেন অংহারাজসম্বন্ধিহীনে অবর্ঞিন কালবিভাগে লৃড়েব স্থাৎ। আগামিবৎসরস্থ বদবরং বৈশাখ্যা স্তত্ত গরাং বাস্যাম:। অনহোরাজাণামিতি কিম্? আগামিমাসস্থ বোহবর: পঞ্চশরাজ স্তত্তাধ্যেতাম্মহে।

৪৭। পরস্মিন্ বা।

পরিমান কালবিভাগে ভবিষ্যদনদাতনে লৃড়্ বাস্তাং।
আগামিবর্ষস্থাগ্রহায়ণ্যাঃ পর্মান ধর্মং শ্রোষ্যামঃ, শ্রোভামাঃ।
৪৮। লিউ নিমিতে লৃঙ্ ক্রিয়াভিপত্তী।(২১)

ভবিষ্যতি ভূতে চ ক্রিয়াতিপত্তিঃ সম্ভবতি। তত্ত্র হেছু-ফলয়োরভ্যস্তলিও বিষয়ে লৃঙ্ম্যাৎ। যদি বর্ষসহস্রমজী-

⁽২০) সীমো। চকারোহনদাতনমন্ত্রপ্তরতি, লৃটো বোগ্যতন্ত্র ওক্ত ভবিষ্যত্বিত্যাহ ভবিষ্যদনদাতনইতি, অবরশক্ষোহত্র তৎকৃতবিভাগপর: কাল: বক্ষামাণ্ডাৎ বিভাগমাত্রাবমেরমু।

⁽২১) লিও। ক্রিরায়া অবভিপত্তিঃ, কুতশ্চিবৈ গুণালনভিনিপারিঃ ওভাং' গমামানায়াং লিঙ নিমিতে হেতৃ-হেতুমলালো লৃঙ বিরীয়তে। বহু ভবিষ্যতি ভূতে চ ইতি স্বাতিং মনিনা কথমত্র তয়োলাভ ইতাহ ভবিষ্যতীত্যাদি ভবৈব তভ সভারাং, অভ্যন্ত ইতি ব্যভিচাররহিত ইতার্থঃ। হেতুফলয়োনিভাপনাকণং বদ্যবর্থী পরিব্রো দৃষ্টোই, ভবিষ্যক্তরা, উতা ভোকেত অপ্যানভাক। প্রথং নিপাতোপপদৈশ্চ সর্কর্মাভাবস্থতীই ধাতুরিভি মতে

विष्णुः क्षा भूखर्भीखानककः, जर्मक्ष्णुप्रदेशा द्वारत्र येति पर नायतियाथाः ।

8à। **जात्मवाद्भुटक वा**र्ग कर्म

শেষশব্দমভিব্যাপ্য ক্রিয়াতিপত্তী স্থতে দৃঙ্ বিক-লনীয়ঃ। উতঃ পরং নিত্যমেষ।

৫০। লড়পিজাত্বোং সর্বত্ত গর্হায়াম্।

অপিজাম্বোর্যে কালসামান্তে গর্হায়াং লট্ স্টাই। অপি-ভবান ব্যকং যাজয়তি, মত্রে জাতু বদস্তাজ্ঞাঃ। অলিঙ্বিষয়-ম্বান্তি।

৫১। क्थिमि निष्ठ् ह व।।

কথমি সতি গর্হায়ং লিঙ্লট্চ বা স্যাৎ। স কথং ব্যলং যাজয়েৎ যাজয়তি বা। পক্ষে যথা বিহিতঞ্চ, কথং যাজয়িষ্যতি কথমবীয়জৎ ইত্যাদি। ক্রিয়াতিপত্তে ভূতে লৃঙ্বা। ত্বমাশ-ক্ষিয়াণাঃ কথং, ভবিষ্যতি নিত্যমেব।

৫২। কিং কতর কতমেয়ু লিঙ ল্টৌ।

কিমাদিয়ু সৎস্থ গর্হায়াং সর্কালকারাপ্রাদৌ লিঙ্ল্টো ভাতাম্। কোনাম কতরোনাম কতমোনাম রুমলং যাজয়েৎ যাজয়িষ্যতি। ক্রিয়াতিপত্তী, অসাজয়িষ্যৎ।

৫७। अधिकामर्वदशां मह

चनवक्रकी रकार्य ह निक् न्रिंही छात्राय्। न खेब्राय

र्वेश्वाहः नाव मात्राज्ञः विनेशां रुषेवाह्या। नीक्षांज्ञेस् मिर्णः मर्सः व्यमाणु-

নাবৰপায়ামি স রাজসূরং বাজরেৎ বাজয়িধ্যতি। নমর্ধায়ামি তুর্জনঃ পূজাং লভেত, লপ্যাতে অলপ্যাত।

०८। किश्विनाखार्यस्मा म् है।

খনয়োর্যোগেই একাদে। লুড়েব স্যাৎ। কিং, কিল স ভবান জালাং যাজয়িষ্যতি, ন আক্ষণে ন ক্ষমে অভি, ভবতি। বিদ্যতে, বধীরোবেদমধ্যেয়তে।

००। यन् यमि यम। याजुरू लिए।

এষু সৎস্থ লিঙেব স্যাৎ। অপ্রদ্ধাদেন, নাবকল্পামিদং প্লায়েৎ যৎ কচ্ছেষু ভবানপি। ন মর্ষ্যামি যদি যাজয়েৎ, যদা যাজয়েং। যাতুসংমুছেৎ পণ্ডিতোজনঃ জিয়াভিপত্তো-ন সংহয় যুয়মযাজয়িষ্যত।

৫७। यक्यव्यार्गर्शशंकाः ।

अनत्यार्थात्म अञ्चलागर्यत्या गर्शयाक लिएडन जार। यक, यक ज्वान् गौराष्ट्र, नावकल्लयामि न मर्थयामि विगर्ट्स, कियाडिशको यकात्रमक्तियुर्ध।

७१। আশ्हर्या।

যচ্চ যত্রহোর্যেগেহস্কুতে লিঙেন ন্যাৎ। আশ্চর্য্যং যচ্চ যত্র ভনানু যান্ধ্রহে। ক্রিয়াতিপত্তী, চিত্রং যত্রায়ং বেদমগাষ্যৎ।

१४। भारत न , एयर न।

যক্ত যত্তাভ্যামন্ত্রিশ্বাশ্চর্য্যে লৃড়েব স্যাৎ। অস্ত্রমকো নাম গিরিমধিরোক্ষ্যভি, বধীরো নাম বেদমধ্যেষ্যভে, অয দাবিতি কিম্ ! চিত্রং যদি স ভূঞীত, আশ্চর্য্যং যদি সোহভোশ ক্যত।

(क)। उजादगुर्गान उचाज़दर्थ।

· বাঢ়ার্থয়েক্তাপ্যোর্ঘাণে লিঙ্ স্যাৎ। উত ক্র্যাৎ, অপি ক্র্যাৎ। স্তেবেতি নির্ত্তম্। অতো স্তেভবিষ্ঠি চ ক্রিয়া-তিপত্তো লৃঙ্ নিত্যং, উতাক্রিষ্যৎ।

৬০। শক্তিসম্ভাবনেইলমপ্রয়োগে।

मिक्किमञ्चावरन निरक्षव महार। श्राप्ति भावना भितिः जिन्हार, नृष्ठ्−श्राप्ति भानगरङ्गरहर । नानस्थारहारग–श्राप्त इस्टिनः इनिगुर्जि ।

৬১। বা ধাতো সম্ভাবনার্থেইযদি।

সম্ভাবনার্থধাতাবুপপদে লিঙ্স্যাৎ বা। সম্ভাবয়ামি অবকল্লয়ামি ভবান্ ভূঞীত ভোক্ষ্যতে বা। অযদীতি কিম্? ন শ্রাদ্ধে যৎ স ভূঞীত। লৃঙি—শ্রাদ্ধে অভোক্ষ্যত ভবান্।

৬২। হেতুফলয়োঃ।

খনয়েবির্ত্তমানাদ্ধাতোলি ও বা স্যাৎ। দক্ষিণকেৎ যায়াৎ
শকটং পর্য্যাভবেৎ। পক্ষে ল ট্। নেহ বর্ষতীতি ধাবতি
ইতি—শক্ষেনেব হেতুঃ সম্ভাবনস্য দ্যোতনাৎ। ল ডি—দক্ষিণং
চেদ্যাস্থ শকটং পর্যাভবিষ্যৎ।

৬৩। ইচ্ছাৰ্থাদ্বৰ্ত্তমানে।

ইচ্ছার্থান্ধাতোর্বর্ত্নানে লিঙ্ স্যাৎ বা। ইচ্ছাত, ইচ্ছেৎ বস্তি, উস্থাৎ।

৬৪। ইচ্ছার্থে বিধি সংপ্রশ্ন প্রার্থনে চ লিঙ্জ্ — লোটো।

रेट्डार्थ धार्को मुक्ति विधारमो है गरमा धारकानि है

লোটাবেব স্যাতাম্। কামজ্ঞ ছং কুলীবাং, ইন্দামি ছং ছুঙ্ কু।
বিধিরজ্ঞাতজ্ঞাপনং, নিয়োগো নিয়োগত: কর্মঞ্চ। তত্তাজ্ঞাতজ্ঞাপনংবিধিদ্ উার্থোহদ্টার্থন্চ। কৃষিং কুর্য্যাৎ করোত্
বা। স্বর্গকামো যজেৎ, যজতু বা। নিয়োগোৰত্বিধঃ,
অধীপ্তিরামন্ত্রণং প্রৈষশ্চ। তত্ত্ব সৎকারপূর্ব্বকো নিয়েগোহধীপ্তিঃ
ওরো। মামধ্যাপয়েঃ অধ্যাপয় বা। ঘদুজ্ঞানিয়োগ আমন্ত্রণং,
যথারুচি ভূজীত ভূঙ্কোং বা। দণ্ডপূর্ব্বক্রে নিয়োগঃ প্রৈষ্কক্তত্ত্ব—লোট্ কৃত্যাশ্চ বক্ষান্তে। নিয়োগতঃ করবং নিমন্ত্রগং
আদ্ধান্ত্রো—ইহ ভবান্ ভূজীত ভূঙ্কোং বা। সম্প্রশঃ—সম্প্রধারণং, কিয়ুত্রক্মধীয়ীয় কিয়ুবেদমধ্যায়ে। প্রার্থনে—লভেয়
ভিক্ষাং লভৈ বা।

৩৫। কামপ্রবেদনেইকচ্চিতি। (২২)

ইছোপ্রকাশনে তে স্থাতাম। ইচ্ছা মে কামো মে শৃণু য়াস্তবান্ শৃণে।তুবা। অকচ্চিতী কিম্ ? কচ্চিজ্জীবতি তে পিত।

৬৬। প্রৈবার্জ্ঞাপ্রাপ্তকালেরু লোট্ কুত্যাশ্চ। (২৩)

এষু লোট্ রুত্যাশ্চ ভবস্তি। পৃথমোট্ গ্রহণং রুত্যসমা-বেশার্থং। প্রামং গচ্ছ, দ্বয়া গন্তব্যো গ্রামঃ। অনুমতে এবং কুরু, কটকরণে, প্রাপ্ত স্তেকালঃ, কটংকুরু, কটস্তুরা কার্যঃ।

⁽২২) কাম। কাম ইচ্ছা তম্ম প্ৰবেদনং প্ৰকাশনং তশ্মিৰ খন্মে লিঙ্ লোটো ভবতঃ।

⁽২৩) প্রেষা। প্রৈষ: প্রান্তক্তঃ। কর্ত্ত্বিছেতোহত্ত্মভিরত্ত্তা। চিকীর্বিভারাঃ
, ক্রিয়ালাঃ অবসর: প্রাপ্তকালঃ। ক্ত্যানাং সমাবেশঃ, সমান্বিব্রোহর্ণঃ বস্তু স
ক্ত্যান্যাবেশঃ। অয়স্ক বিশেষবিধিঃ।

७१। निड्टाईस्मेहर्किटक ।

स्किर्माष्ट्रिक्टर्थ देववाली ग्रामा निक्तार विकास कार्यान करिया कि कि क्रिक्ट के क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक

७৮। त्य लाहे।

উদ্ধিনী ছুর্ত্তিকে হর্থে স্মযোগে প্রৈষাদৌ গম্যে লোড়েব স্থাং। উদ্ধং মৃহুর্ত্তাৎ কটং করোভূ স্ম ভবান।

७৯। जशीरकी ह।

অধ্যেদণায়াং স্মান্যোগে লোড়েব স্থাৎ। অঙ্গ স্মানিবন্মাং পাঠয়।

৭০। কাল সময় বেলাস্থ লিপ্ত ্যদি।

কালাদিযোগে যদি সতি লিঙ্ স্থাৎ। কালোয়ং যদি তং ভুঞ্জীথাঃ, সময়োহয়ং, বেলেয়ং, কালোহভাকুমিভি তুম্ভবিষ্যতি।

৭১। অহশক্যোঃ কৃত্যতৃচ**ন্চ** i

অহার্থে শক্তো চ লিঙ্কুত্য তৃষ্ট হয়:। ভবান কছামুদ-হেৎ, মুনা কন্সা বোদ্ব্যা, মুবা কন্সায়া উদ্বোদা।

৭২। আশিষি লোঙ্লোটো।

এতো স্থাতাম্। কল্যাশং বঃ ক্রিয়াস্থ্, চিরং জীব।

৭৩। মাডি লুঙ্।

মাঙি উপপদে সতি লুঙেব স্থাৎ। সা দাহসংকাষী: মোজ্জিগ্রহঃ স্বপৌরুষম্।

৭৪। স্পরে লঙ্চ। (২৪)

⁽২৪) মাপরে। মা: পরো বমাৎ স মাপর: মাপরে মাতি মান্ম ইডার্থে ভাৎ।

স্পরে মাঙি সভি সৃঙ্লঙে ক্রাভাষ্ কা সাজাকীৎ মাসাপশ্রং

৭৫। ধাতুসমস্কে প্রত্যয়াঃ। (২৫)

ধাত্বপিদ্ধক্ষে সতি ভিমকালা অপি প্রভায়া সিধ্যস্তি। অগ্নিটোম্যাজী পুরোহস্ত জনিতা, বনং গতঃ শোভবিতেতি রাম ইতি ভটিঃ। গোমানহয় মাসীৎ, বসন্দদর্শবিতরস্তমন্বরা-দিভি মাঘঃ।

৭৬। ক্রিয়াসমভিহারে লোট্, লোটো হি-স্বৌ, বাচ তধ্বমো, র্যথাবিধ্যন্ন চ। (২৬)

জিয়াসমভিহারে ধাতোঃ কাল্বয়েহপি লোট্ স্থাৎ।
লোটস্ত হিম্বো ভবতঃ। তোচ তথ্যংবিষয়ে বা। যথাবিধ্যমু চ,
যম্মাদ্ধাতোলোট্ বিহিত স্ত গৈয়বানু প্রয়োগঃ। লুনীহি লুনীহি
ইত্যেবায়ং 'লুনাতি অলানীৎ লবিষ্যতি, নছিনত্যাদ্যমু—
প্রয়োগঃ (অয়মর্থঃ)। ঈদৃগসৌ ত্বাবান্ যদন্তানপি প্রেয়য়ন্ তাং
ক্রিয়াং স্বয়মেব করোতি, এবং লুনীত লুনীত ইত্যেবায়ং
লুনাতি। তবিষয়ে হির্বা, লুনীহি লুনীহি ইত্যেবায়ং লুনাতি।
অধীয় অধীয় ইত্যেবায়ং অধীতে। অংধ্যেষ্ট অধ্যেষ্যতে

⁽২৫) ধাতৃ। ধাত্মস্বকোহর্প দারক এব ইত্যাহ ধাতৃ সম্বন্ধ ইডি। ধাতৃ সম্বন্ধে বিশেষ্যবিশেষণশক্ষণে স্বকাশত্যাগেন ভিন্নদানা অপি প্রত্যরা ক্ষিত্রক্ষদ্ধিতাঃ বিশেষধাত্র্যকালে সিধ্যন্তি।

^{্ (}২৬) ক্রিয়া। ক্রিয়ায়াঃ সমভিহারঃ পৌন:পুর্ছাং ভৃশার্থক, তামান্ গম্যে জ্বানিকডবিশেষণড়াৎ সর্ব্বকালেছপি ধাতোঃ সর্ব্বলকারাপবাদো লোট ধাং । জ্বানুশকঃ সহ্যাঃ ডেন মহ প্রযুদ্ধতে ইত্যুধ্য ।

वधीश्वत्रशैश्विष्णियां स्वाप्ति । स्वाप्ति विष्णि वा । व्यविष्णि वा । व्यवेश्वत्र प्रविष्णि वा । व्यवेश्वत्र प्रविष्णि वा । व्यवेश्वत्र प्रविष्णि । प्रविष्णि वा । व्यवेश्वत्र प्रविष्णि वा । व्यवेश्वत्य प्रविष्णि वा । व्यवेश्वत्य प्रविष्णि वा । व्यवेश्वत्य वा । व्यवेश्वत्

৭৭। সমুচ্চয়ে বা সামাগ্রবচনস্থার চ।

ক্রিয়াসমুচ্চয়ে পূর্ববলোড় বিধিব্বাস্থাৎ। অত্র সামাস্থান বচনস্থানুপ্রয়োগশ্চ। খমট দ্যামটোব্বীমট। ইত্যেবায়মটতি ইমাবটতঃ, ওদনং বৃঙ্ক্ষু, শক্তৃন পিব, ধানাঃ খাদ ইত্যেবায়-মভ্যবহরতি, অভ্যবহার স্তিষু সমঃ। পক্ষে যথা প্রাপ্তিক। এবং সর্বেষু বচনেষু (সর্বাকালেষু) মেয়ম্।

१४ । नः कर्न्-कर्म-ভार्तियू। (२१)

শকারাঃ কর্ত্তরি কর্মণি ভাবে চ ভবস্তি। ভবতি, ক্রিয়তে কটঃ, ক্রিয়েতে কটো, 'ক্রিয়স্তে কটাঃ, ভাবে-ভূরতে। একো হি ভাবঃ কেবলো ধাত্বর্থঃ।

৭৯। লট্ ল্টো স্তিপ্ তস্ অন্তি। সিপ্ থস্ থ। মিপ্ বস্মস্। তে আতে অন্তে। সে আথে ধেব। এ বহে মহে।

লটল্টোঃ স্থানেহমী তিবাদরঃ স্থাঃ। ভাতি, ভাতঃ. ভান্তি। ভাসি, ভাথঃ, ভাথ। ভামি ভাবঃ ভামঃ। শেতে শ্যাতে শেরতে। শেষে শ্যাথে শেধে। শ্য়ে শেবছে শেমহে। ল্টঃ পাস্থতি পাস্থতঃ পাস্থান্তি। দক্ষিতে দাস্থেতে দাস্থান্তে।

⁽२१) लः ; लः देखि अवजावद्यक्रमाख्य भन्त्।

৮০। লোট-স্তপ্তাম্ অন্ত। হি তম্ ত। আনিপ্ আবপ্ আমপ্। তাম্ আতাম্ অস্ম। স্ব আধাম্ধাম্। ঐপ্ আবহৈপ্ আমহৈপ্।

त्नाहेः ছात्मरभी ज्वामग्नः छाः। भाज् পाजाः भाखाः । পाहि পाजः পाज। अभी भाव भागः। मजाः मनाजाः मनजाम्। मध्य मनाथाः मध्यः। महेन मनावहेर मनामहेरः।

७५। निर्ही गन् अकृम् छेम्। थन् अथूम् अ। गन् न मृ। এ आटि हेरत् । स्म आरथ ४४१। এ বহে মহে।

লিটঃ স্থানেহমী পলাদরঃ স্তাঃ। পপে পপত্ঃ পপুঃ। পপিথ-পপাথ পপথুঃ পপ। পপে পপিব পপিম। দদে দদাতে দদিরে। দদিয়ে দদাথে দদিখে । দদে দদিবহে দদিমহে।

৮২। विद्नीन हो वी ३३ कि छी नवे।

বৈত্তেল ট আদিতো নব পলাদয়ো বা স্থাঃ। বেদ বিদত্ঃ বিদ্যা বেশ বিদথুঃ বিদ। বেদ বিদ্ব বিশ্ব। পক্ষে বেতীত্যাদি। ১০ ১০০ ১০০১ ১০০১ ১০০১ ১০০১ বিশ্ব বিশ

ক্রে লট আদিতঃ পঞ্চ পলাদরো বা স্থাঃ। ক্রব ক্ষাহাদেশন্চ। আহ আহতুঃ আহঃ। আথ আহথুঃ। পঞ্চেতি কিয় ?
ক্রথ। পক্ষে ব্রবীতীত্যাদি।
৮৪। লুট-স্তা তারো তারস্। তাসি তাস্স্

৮৪। শুচ-ন্তা তারো তার্য্। তান্তান্থ্য তার্ষ্। তান্মি ভাস্থ্য তাম্ম্। তা তারৌ তার্য্। তামে তানাথে তাথে। তাহে তাস্থাই তাম্থ্যে বৃটঃ স্থানেছমী আৰমঃ স্থাঃ। কর্তা কর্তারো কর্তারঃ। কর্তানে কর্তানাথে কর্তাধে। কর্তাহে কর্তামহে।

৮৫। লুঙ্-লঙ্-লৃঙাং দিপ্তাম্ অন্। সিপ্তম্ত। পম্বম। ত আতাম্ অন্ত। থাস্তাথাম্ধাম্। ই বহি মহি।

লুঙ্-লঙ্-লৃঙাং স্থানে প্রত্যেকং দিবাদয়ঃ স্থাঃ। দিপদিপোরিকারপকারে চিহ্নাথে । অভূৎ, অভূতাং, অভূত্ব।
অভূঃ, অভূতং, অভূতঃ অভূবং,অভূব, অভূম। অকৃত,অকৃষাতাং,
অকৃষভ। অকৃথাঃ, অকৃষাথাং, অকৃধ্বং। অকৃষি, অকৃষ্কি,
অকৃষ্ঠি। লঙঃ খল্পি, অভবং, অভবতাং, অভবন্। অভবঃ,
অভবতং, অভবত। অভবং, অভবাব, অভবাম। অবর্দ্ধত, অবক্রেতাং, অবর্দ্ধতঃ। অবর্দ্ধথাঃ। লৃঙ্—অভবিষ্যৎ, অভবিষ্যতাং,
অভবিষ্যন্। অবর্দ্ধিয়ত, অবর্দ্ধিষ্যেতাং অবর্দ্ধিয়ত্ত ইত্যাদি।

४७। लिखी-याद याजाम् यूम्। योम् याजम् याज। याम् याव याम। केल केशाजाद केत्। केथाम् केशायाम् केश्वम्। केश केविट केमिट।

লিঙঃ স্থানে যাদাদয়ঃ স্থাঃ। ভবেৎ ভবেতাং ভবেষুঃ। ভবেঃ ভবেতং ভবেত। ভবেয়া ভবেব ভবেবম। বর্দ্ধেত বর্দ্ধে-য়াতাং বর্দ্ধেরণ্। বর্দ্ধেথাঃ বর্দ্ধের বর্দ্ধেন্য বর্দ্ধের বর্দ্ধেন্য বর্দ্ধের বর্দ্ধিন বর্দ্ধিন

৮१। लाएडी याद याखाम् याख्म्। याम् याखम् याख। यामम् याख्य याख। मीख् जीकाखाँम्

मीत्रन्। मीक्षाम् सीयाक्षाम् मीय्यम्। मीश मीत्रिः मीगरिङ्गी किकीन्। किम्

লেঙিঃ স্থানেহমী মাদাদয় স্থাঃ। আদ্যর্দ্ধং চ কিংসংজ্ঞং

ত্যাং। তুকারন্তিতি প্রত্যাহারার্থং। তুয়াৎ তুয়ান্তাং তুয়াস্থঃ।
তুয়াঃ তুয়ান্তঃ তুয়ান্তঃ। তুয়াসং তুয়াস্ব তুয়াস্ব। বর্দ্ধিনীর্চ

বর্দ্ধিনীয়ান্তাং বর্দ্ধিনীরণ্। বর্দ্ধিনীর্তাঃ বর্দ্ধিনীরান্তাং বর্দ্ধিনীর্বাহ

বর্দ্ধিনীয় বর্দ্ধিনিহি বর্দ্ধিনীমহি।

১০০ ক্রিনিহিলি প্রাক্তি ক্রিন্ত্রী ক্রেক্স চ্প্রত্যাপ্রদ্মা

৮৮। नेखि পুরার্ক্ত শতৃকত্ব চপর সৈপদম্। তিঙি বিষয়ে লাদেশানাং পূর্বার্ক্তং নবকং, শতৃকসূচ, পরস্মৈ-

পদসংজ্ঞকাঃ স্থ্যঃ। পরস্মৈপদপ্রদেশঃ-শেষাৎ কর্ত্তরি পরস্মৈ-পদমিত্যেকমাদয়ঃ।

৮৯। পরার্কী নশ্চী অনেপদং-তও ট।

ভিঙিবিষ্যে লাদেশানাং পরাদ্ধং, শানকানয়োয়ানশ্চ, তে দে আত্মনেপদস্ভাকে ভবতঃ। তঙ্ সংজ্ঞাকে চ।

৯০। नुष्डेः मिकार्टीर्से छेमें।

সিজন্তাদাদন্তাক লুঙোহন উদাদিশ্যতে। অকার্ঃ, অসুঃ। সিজাত ইতি কিমৃ ! অভ্বন্।

৯১। লঙ্জে হিভ্যস্তবিদৌগুর্গদৈচকঃ।

অভ্যস্তসংকাদিদশ্চ লঙোহন উদ্ স্থাৎ। ইগস্তস্থ গুণশ্চ। অজুহবুঃ, অদ্ধুঃ, ঐয়ক্ষঃ, অজ্ঞশুঃ, অজাগকঃ, অশাস্থঃ, বিদ— অবিহুঃ, অবিদ্য়িত্যেকে।

৯২। অনভ্যস্তাৎ দিয়োঁ বাঁ।

অনভ্যস্তস্যাতো বিষশ্চ লঙোহন উস্, স্যাধা। অয়ুং, অয়ান্ত্রা। অবিষ্ণু, অধিষন্বা

৯৩। উষ্ণাতোলুক্। "

্মন উদি পরে আতো লুক্ স্যাৎ। অন্তঃ অদত্য । ১১ ১০ বা ১৪। অস্তো ২দভাস্তাৎ।

অভ্যন্তাৎ পরস্যান্ত স্থানেহন্ত্রতি। জুহাতি, বিভ্যতি, জিকত্, জাগ্রভু বোভুবত্

৯৫। তপ্তানতঃ।

আত্মনেপদেহনদন্তাৎ পরস্থান্ত স্থানেহন্ত্রতি। আত্মতে ব্যক্তিভাতে, দদতাং, ব্যক্তীণত, অকুর্বতি, অবন্ধিত। অনত ইতি কিম্ ? চ্যুবন্থে।

০১-১) ৯৬। শীঙ্কোরৎ।

শীঙ্কঃ পরস্থান্তঃ স্থানে রদ্ ভবতি। শেরতে, শেরতাং, অশেরত।

৯৭। বেত্ৰেৰী।

তিঙ বৈত্তেরস্তোরভবতি বা। সংবিদ্রতে, সংবিদতে;
সম্বিদ্রত, সম্বিদত।
সম্বিদ্রত, স্ম্বিদত।

৯৮। ভূবো বুগচি লুঙ निर्फोहा

অনয়োরচি ভুবো বুক্ স্যাৎ। অভ্বন, অভ্বং, বভুব। অস্থানিবভানলিড়ামি, বোভুবাঞ্কার।

৯৯। मीर्डी यूर्गे लिषि।

লিড়চি দীঙো যুক্ স্থাৎ। উপদিদীয়ে। প ১০ ও। ১০০। আতি ও পলং।

আদন্তাধন স্থানে ঔর্ভবতি। যথৌ, পপে।।

১০১। তুহোঁস্তাত্তাশিষি বা।

আশিষি বিষয়ে তুহি স্থানে ভাতত বা স্থাৎ। করে তু, কুরুতাং: পুষাণ, পৃষ্ণীতাং।

১০২। জেখ্বস্তোরস্ত ই

জেলে টিস্তারেন্ত ইৎ স্থাৎ। জয়তি, জয়ন্তি।

১०७। जट्ठी त्यम्याभियको।

काजः भारता लिए। या देर छार । याक देशम्। ভবেर, ভবেয়ন। অত ইতি কিন্ ? পুনীয়াৎ।

२०८। जामिनिशिर्।

অতঃপর আকার ইৎ স্থাৎ। পচেতে, যজেতাম। অপিদিতি কিমৃ ? যজাবহৈ, যজামহৈ। অত ইত্যেব ব্যতিভাতে।

১০৫। অতো দীর্ঘো বমি।

বকার মকারয়োঃ পরতোহতো দীর্ঘো ভবতি। ভবাবঃ, ভবামি, ভবামঃ, ভবিষ্যামি।

२०७। यूरमर्९।

যুসি পরে অতএৎ স্থাৎ। ভবেষুঃ দীধ্যেষুঃ। অত ইত্যেব श्रुनां युः। প্রকৃতীচঃ সীধ্বং লুঙ্ লিটাং ধো ঢো यन् राष्ट्रिनि वी हैं।

্র প্রক্রতেরিচঃ পরেষাং সীধ্বংলুঙ্লিটাং ধস্ত ঢ়ঃ স্থাৎ। চ্যোষীদৃং ি রুষীচুং, লুঙ্-অচ্যোচুং। লিট্-চকুচেু। য়পহকারস্থাদিং हें निकल्लन जाशियोष्ट्र, जाशियोध्यः, वा। व्यक्तातिष्ट्रः, व्यकान विभ्तः, वा। व्याहिष्ट्रः, व्याहिध्यः, वा। हें हें — निविधेष्ट्रः, निविधेष्ट्रः, वा। निविधिष्ट्रः, निविधिष्ट्रः, वा। निविधिष्ट्रः, विश्विधेष्ट्रः, वा। निविधिष्ट्रः, विश्विधेष्ट्रः, विश्वेषेष्ट्रः, विश्वेषेष्ट्रः, विश्वेषेष्ट्रः, विश्वेष्ट्रः, विश्वेषेष्ट्रः, विश्वेषेष्

১৩৮। দয়া২২স কাশ্যুমেকাচ্প্রত্যয়েভ্যো লিড়াম্, ক্বুন্তি লিট্চার।

দয়াদিভ্যঃ পরস্থ লিট আম্ স্থাৎ। রুভুস্তিবিহিতো লিট্চামু প্রমুজ্যতে। দয়াঞ্চকে, আসাম্বভ্ব, কাশায়াম. পলাল্ য়াঞ্চকে। মনেকাচঃ-চকাশাম্বভ্ব, দরিক্রাঞ্চকার, চুলুম্পাঞ্চলার, চুলুম্পঃ সৌত্রোধাতুঃ। প্রত্যয়ান্তাৎ, চিকর্মিমিছব, বোভ্য়াঞ্চকার, কারয়ামভ্ব। ব্যবধানেহ পি দৃশ্যতে, তংপাত-য়াম্প্রথমমাস পপাত পশ্চাৎ। পুত্রীয়াঞ্চকার, শব্দায়াম্বভ্ব, কণ্ডয়ামাস, অনেকাচ্ম্বেনেব সিদ্ধে প্রত্যয়্মাহণমেকাজর্থম্ বিস্পাকীর্থিঞ্চ। বিপ্-স্বাঞ্চকার।

५०%। अर्विकारमें तन्त्रम् १९०१।

গুরুরিচ্-আদিযাবৎ ততোলিট সাম্ সাং। রভ্স্তি লিট্চামু প্রযুদ্ধাতে। ঈহাঞ্জে, উন্তাঞ্কার ইন্ধাস্ত্ব। ছন্দদি নলোপাৎ, সমীবে। অনুচ্ছোর্ণোরিতি কিমৃ ! সানচ্ছ প্রোপুনাব। গুরিদ্ধানেরিতি কিম্ ! ইয়েম।

১১०। छेष-कागृ-विद्या वी-द्वितः छण्डाः

এভাো লিট আম্ ফাদা। কৃত্তি লিট্চামু। ওষাঞ্কার উবোষ। দাগরামাস জজাগার। বিদেরগুণশ্চ, বিদাঞ্কার

১১১। ভী-হ্রী-ভূ-হুবো দ্বিরত ইচ্চ।

এভ্যো লিট আম্ বা স্থাৎ। রুভৃস্তি লিট্চামু প্রযুজ্যতে।
দিরত ইচ্চ। বিভয়াঞ্চার বিভায়। জিব্রুয়াঞ্চার জিব্রায়।
অত ইচ্চ, বিভরামাদ বভার। জুহ্বাঞ্চার জুহাব। এষাং
দিরিতি ক্রণং থলুজ্ঞাপকম্, অভ্যস্থ লিড়ামি রুতে দিছং ন
ভবতীতি। আমাদেশে রুতে লিটো ন স্থানিবস্থম্।

352। विमाइद्रोचिनिं लाहि वी।

বিদেলেটিতি বা নিপাত্যতে। ইতিশব্দঃ প্রকারার্থঃ, তেন সংবিবচনাত্যের ভবন্তি। বিদান্ধরোত্ব, বিদান্ধকতাং, বিদান্ধ-বরন্তু, বিদান্ধ্বিত্যাদি। পক্ষে বেহু বিভাং, বিদন্তা।

১১৩। जर्थे भार्डी बिकतगों।।
>>8। न्ड न्टों। जर्रे।

লুঙি লুটি চ পরে ধাতোঃ স্তঃ প্রত্যয়ং স্থাৎ। অভবিষ্যুৎ। ভবিষ্যাতি।

১:৫। लु ि मि ।

লুঙি পরে ধাতোঃ সিচ্ প্রত্যাঃ স্তাং। অচেদীৎ অক। মাঁৎ।

३५७। म्ल्य-म्य-क्य-क्ल-क्ली वी।

কিমৃ ? গৈ-গানে অগাদীৎ পা-রক্ষণে, অপাদীৎ। অততীতি কিমৃ ? অগায়িষাতাম্।

১১৮। ত্রা-ধে-শা-চ্ছা-সো বা।

এভ্যোহততি সিজ্ লুগ্ বা স্থাৎ। অত্রাৎ অস্ত্রাদীৎ। অগাৎ
অধাদীৎ। অশাৎ, অচ্ছাৎ অচ্ছাদীৎ। অদাৎ অদাদীৎ।
তা প্যা পা
১১৯। তনাদেওখাদোরক্ঞঃ।

এভ্যস্তথাসোঃ পরয়োঃ দিজ্লু ধাস্থাৎ। অতত, অতথাঃ। অতনিষ্ট, গতনিষ্ঠাঃ। দকু–অসাত অসনিষ্ট অসাথাঃ অসনিষ্ঠাঃ। করোতেস্ত পরেণ নিত্যমেব অকুত অকুথাঃ।

১२०। इश्व-याली याली लारशीक्रनागमाँ ।

হ্রস্বান্তার্জনন্তার্জন কালি পরে সিচো লোপঃ স্থাৎ। বেতি নিরত্ম। আহত সমস্কুপাঃ। ঝলঃ; সভিত্ত অনুদ্ধ অভৈতাং অপান্তাম্। হ্রস্বোত কিম্ ! ব্যক্তেই। ঝল ইতি কিম্ * সমমংস্ত। বালাতি কিম্ ? সাহসাতাম্। অনাগমাদিতি কিম্ ؛ সকানিঠাঃ।

১>১। इहे केहि ।

১২২। শ-ষ-হ-ইগুপান্তাদৃদ্দোইনিটঃ কসঃ।

শবহান্তাং ইগুপধাদ্ধাতোল ডি কদঃ স্থাং। দিচোহপণ বাদং। অদিক্ষং, অদ্বিক্ষং, অদুক্ষং। অদৃশ ইতি কিমৃ? অদ্রাক্ষীং। অনিট ইতি কিমৃ? অকোষীং।

১২৩। শ্লিষ আলিঙ্গনে।

লিনঃ কসঃ ভাৎ। আলিকৎ কভাষ্। আলিকন ইতি কিষ্? সমালিকৎ জতুকাঠম্।

১২৪। লুখা ছহ-দিহ-লিহ-গুহাং ত-প্র ধ্ববেষু তিঙ্গি

ত্হাদেস্ত-থ-ধ্ববেষু পরতস্ত জি কসস্তা লুখা স্থাৎ। অত্তর, অতুক্ষত, অদিশ্ধাঃ, অধিক্ষথাঃ অলীঢ়ং অলিক্ষধাং অধুহ্বতি, অঘুক্ষাবহি। ঈষৎ পৃষ্টতর বকারোহয়ং(২৮)তেনাঝল্পরত্বাৎ ঢক্ষাভাবঃ, তুহেশ্চ ঘত্বং নাস্তি; অতুহ্বহি অধুক্ষাবহি।

১২৫। ণি-ভ্রি-ক্র-কর্মঃ কর্ত্তরি চঙ্জ।

ণ্যস্থাদে লু ছি কর্ত্রি চঙ্ স্থাৎ। গেঃ। অশিষ্য়ৎ অচীকরৎ শ্রোদেঃ—অশি শ্রিয়েৎ, অভূত্তবং অ**ব্রা**বিং, অচকমৎ। কর্ত্র-রীতি কিমৃ ? অকারয়িষাতাং কটো তেন্।

১২৬। ধে-শ্বিভ্যায়।

ধেটঃ শ্বয়তেশ্চ লুঙি চঙ্ স্থাদা। অদধৎ অধাসীৎ অধাৎ অশিবিয়ৎ অশ্বয়ীৎ অশ্বং। কর্তুরীত্যেব, অধায়িধাতাং গাবে বংসেন।

১২৭। ঋ-সৃ-শাস-সু-খ্যা-বচোইও।
এভ্যোল্ডাঙ্ স্থাৎ। আরৎ, সমারন্ত, অসরৎ, অশিষৎ, আস্থৎ,
পর্য্যান্তং, আখ্যৎ, অবোচং।

১২৮। হ্বা-লিপি-সিচঃ। তঙি বা।

এলো লুঙি অঙ্ স্থাৎ। আহাৎ, অনিপৎ, অসিচৎ। তঙি

⁽२१) मूपा। जेवः शृष्ठेण्यः परखाकितकातः,(वर्गाः) स्वातः मिक देणि छात्राः

বা। আহবত, আহবৃত্ত, অলিপত, অলিপ্ত; অসিচত, অসিক্ত। ১২৯। ৯দিদ্-ছ্যতাদি-পুষাদিভ্যোঁ২তিওঁ।

৯দিতো ছাতাদেঃ পুষাদেশ্চ পরস্থৈপদে লুঙি অঙ্ স্থাৎ। অগমৎ, অশকৎ, অঘদৎ। ত্যুতাদেঃ,ব্যুত্যুতৎ,অখিতৎ, অপুষৎ, অশুষৎ, পুষাদিদ্বিাদ্যন্তর্গণঃ তেনাগ্যত্র, অপোষীৎ। ১৩०। देतिक शि- उष्ट्र- य रू- यूर् भू दको वी।

हेतिमामिट्डा न् हाह् वा छाट । श्रांडम्ट, श्रोंडर्गीट, অজরৎ, অজারীৎ, অশং, অশ্রীৎ, অশিশিয়ত্ অস্তম্ভত্, অস্তম্ভীত্ অঅুচত্, অভোচীত্.অমুচত্, অস্লেচীত্,অগ্রুচত ,অগ্রোচীত্, অলু চত , অলু ঞীত। কেচিদ্লু পের্নলোপং নেছন্তি, অলু প দিতি ১০১। শ্বিবটোর ডি শ্ব-বোটো।

অনয়োরতি শ্ব-বোচো স্থাতাম্। অশ্ত ্অবোচত ।

১৩২। অস্তাতেরস্থা

অস্তে রঙি অস্ঃ স্বাচ্। আস্ত্। ১৩৩। পতেঃ পুম। পতেরভি পুম্ দ্যাত্। লপপ্তত্। ১७८। हेर्ने (छ श्रेम्हे।

ল্ডিতকারে পরতঃ পদ্যতেরুত্তরে কর্ত্তরি ইণ্ স্থাত্। উদপাদি শস্ম্। ত ইতি কিম্ ? উদপত্ সাতাম্। ১৩৫। मीপ-क्रम-तूथ-शृति-जाशि-भगारशि वी।

দীপাদেল ভি ভভ্তে ইণ্বা স্যাত্। ক্রোহদীপি, অদীপিক, অজনি অজনিক্ট. অবোধি অবুদ্ধ, অপুরি অপুরিক অতায়ি অতায়িষ্ট, অপ্যায়ি অপ্যায়িষ্ট।

১৩৬। কর্মকর্ত্তরি ন ৰুধতপোৰী-চ ছহাটোঃ।

ৰক্ষ্যাণ ইণ্কৰ্মকৰ্ত্তির রুণতপোন্স্যাত্। বাচছহাচোঃ অরুদ্ধ গৌঃ স্বয়মেব। অতপ্ত তপস্তাপসঃ। হুহেরজস্তুস্য চ বা। অহগ্ন গৌঃ স্বয়মেব অদোহি বা। অকৃত কটঃ স্বয়ং অকারি বা। অলবিফ কেদারঃ স্বয়মেব অলাবি বা। ইহ বিকরণম্য নিধেধো নাগ্যস্যোগঃ, অকারিষাভাষ্।

১৩৭। ণি-স্নু-ণম-শৃন্থি-গ্রন্থি-ক্র-কিরাদি-স্নাত্মনেপদাকর্মকাণাং ন-যগিণে।

ণ্যন্তাদেঃ কর্মকর্ত্তরি যগিণো ন স্থাতাম্। অত পারি শোষ্যাৎ, কর্ত্তরে রিহিত্বিকরণ এব। কারয়তে কটঃ স্বয়মেব। প্রামুতে গোঃ স্বয়মেব প্রাম্মের স্বয়ম্। নমতে দণ্ডঃ স্বয়মেবান স্বয়ম্। শ্রন্থতে মালা স্বয়মেব অশ্রন্থিত স্বয়ম্। প্রস্থতে মালা স্বয়ম্য অশ্রন্থিত স্বয়ম্। প্রাম্থিত স্বয়ম্। করতে কথা স্বয়মেব অবোচত স্বয়ম্। কিরতে হন্তী স্বয়মেব অকীফ স্বয়ম্। সনন্তাৎ—চিকীর্ষতে কটঃ স্বয়মেব অচিকীর্ষিষ্ঠ। তঙ্ধিকারেয়েইকর্ম্মকান্তে যাং; বিকুর্বতে সৈহ্ধবাঃ স্বয়মেব, স্বয়মশো—বাক্ত। কথং ? চেতাংগি—বিক্রিয়ের ব্যবস্থিতবিভাষানুরতেঃ।

১०४। इटिन गर्ने।

ছুহের্ফ্ন স্যাৎ। ছুপ্নে গৌঃ স্বয়মের লঙ্ অভুগ্ন গৌঃ স্বয়ম্।

১৩৯। কুষির**ঞ্জোর্যকি বা পর**ক্ষৈপদম্।

খনয়োঃ কর্মাকর্ত্তরি যথিষয়ে পরশৈর্মাপদং বা স্যাৎ
ক্রিত পাদঃ স্বয়মেব কুষ্যতে বা রজ্যতি বস্ত্রং রজ্যতে বা ।

यत्रमयत्रकान्य्रवात्रकतः। ११ ১७৮। कर्माञ्चराज्ययं कर्मार्वः कर्मकर्छः। (२৯)

কর্মখায়াং ক্রিয়ায়াং সভ্যাং কর্মণাত্ল্যক্রিয়: কর্ত্ত। কর্ম-বস্তবিভি। ইণ্যগাত্মনেপদার্থম্। অপাচ্যোদনঃ স্বয়মেব ভিদ্যতে কুশ্লঃ স্বয়মেব। কর্মস্থ ইতি কিম্ ? কর্ত্তিম্থ মাভূৎ গছতি গ্রামঃ স্বয়মেব। কথং কর্তৃদ্ধে, আরোহয়তে হন্তী

(२৯) क्या । क्विया हि विविधा, काहिए क्लंगमवायिनी, काहिए क्यांगमवायिनी তত্র কর্ম্মসমবারিক্সাং ক্রিয়ারাং সভ্যাং কর্ম্মকর্ডা কর্ম্মবছবতি। কর্ম্মণাভলাক্তিরঃ করা কর্মকর্জা মধ্যপদলোপী সমাস:। একস্থাং ক্রিয়ারাং বল্প কর্মত্ব মাসী-গুৱৈৰ তম্ম চেৎ কৰ্ত্তবং বিৰক্ষতে ভদাতম কৰ্মম্বনতিদিশ্যতে ন কথ্যেতৎ সম্ভব্তি। একস্তামেব ক্রিয়ায়ামেকস্ত কর্ম্মরং কর্জৃত্বক সাধ্যসাধনয়োরতাল্ত-তির্তাৎ, অত উচ্যতে যত্র ক্রিয়া কৃতাখ (স্থা) সাধ্যাশ্রয়ণাদিলফণো ব্যাপার: সৌকর্য্যেণ বিষক্ষতে কর্মান্যারে।পিতত নাহমেত দ্রিমানি কি এহি স্বস্থমের তদানীং নিশাদয়তীতি বিবহৃতে তদৈ কলাপি কৰ্মকৰ্ত্বৰোম্বল্য ক্ৰিয়ত্মবাধিতমেব ছাৎ। উক্তঞ্চ, ক্রিয়মাণক বৎ কর্ম সর্মেব হি সিধ্যতি। স্কর্টর: সৈও বৈদুর্জাঃ कर्षकरखंडि ७५ विदृः । किंक, श्रवााशास्त्र हि कर्जुषः मर्स्वरेखरान्धि कात्ररक । ব্যাপারভেদাপেকারাং করণতাদিস্তবং ইতি। নম্বেবং ন সম্ভবতি শক্তিঃ বারকমিতিদর্শনে কর্মাক্তর্কর্শক্যোরতাগ্রভিন্নতাত্তদযুক্তং মতোর্ভেদ্যাবিবক্ষিতত্বাৎ শক্ত্যাধারম্ভব্যমেব কর্তৃত্বং কর্মত্বমাপদ্যত ইতি। অধাতিদেশঃ স্ত্রমিদং পঞ্চানাং তেষাং কোহয়মিতি বিচার্যাতে। नामः निमिष्ठः जिल्लानः, कर्माना निमिष्ठः किमानालग्रदः, उरकथः कर्वरंगः वाजित्महे भकारक कर्कृकर्षा (वाजका स्विक् कार्याका नावि क्रवाजित्माः। অতিদিশ্র কর্মণোরপং তাবরজ্ঞারতে বোগাদিকং তদ্রপমিতি চেন্ন স এব कार्गाजित्समः किमामतिक नामि वाभाषणाजित्समः उस मरकात्रभदाद वद করণমিচ্ সাম্রমার্থং তেন কর্মসংজ্ঞামনান্ত্যাকর্মকন্ত কর্মকর্ত্ত: কর্মকার্য্যং বিধীয়তে ন ভূ তম্ম কর্ত্তমপনীয়তে, অতএব কর্ত্তরি ভাবাদ্রয়ঃ প্রত্যয়েছিল ध्वराज्य । वथा, चर्छाम कूमृत्वन चत्रत्यव, चाउवव त्योर्काट्किवः, कूर्यः বর্তা কর্ম ইতি অভিদেশোন কৃতঃ। অব শান্তাভিদেশোহণি ন মুদ্ধাতে। হস্তিপকং স্থামেব, বিশেষবিধানাৎ ক্রচিত । ছহিপচোঃ
সক্ষাক্ষোঃ কর্মাবং। ছথে গোঃ ক্ষীরং স্থামেব। উড়ুম্বরো
লোহিতং কলং পচ্যতে। কচিৎ করণেনতুল্যক্রিয়া কর্ত্তা কর্মাব বং, পরিবারয়তি কণ্টকৈর্ফাং জনঃ, পরিবারয়ন্তে রুকাং
কণ্টকাঃ স্থামেব।

বতঃ কর্মণো বচ্ছান্ত্রং সার্ব্ধগাতুকে যগিত্যেবমাদিকং তৎ কর্মকর্তুরতি দিশ্যতে ইত্যুক্তেহপি বংকরণস্থ স্থাশ্রয়ার্থত্বাং পরস্থাৎ শ্বাদিপ্রত্যয়া অপি প্রাপ্তপ্রতি হস্তা: সম্ভবেদু:, কিন্ধ কার্য্যাতিদেশ এবার্ম্। কর্মণি বানি বিহি-ভানি ইণ্যগাত্মনপদানি কর্মকর্ত্র্যাভিদিশায়ে ইত্যাহ ইণ্যগাত্মনপদার্থ-মিতি। অব দিতীয়াপি কর্মকার্য্যত্বাৎ কবং ন প্রাপ্নোতি। মৈবং তিভ্প্রক-রণতাৎ ধাত্বিকারাচ্চ ভবিহিতং কার্যমেবাতিদিশ্রতে ন প্রকারান্তরীয়ৎ কার্য্যমিতি। অথবা ক্রিয়াব্যাপ্যং কর্ম্ম কর্তা চ কর্মেত্যক্তা বদত্র প্রকরণে কর্মকার্যমতিদিষ্টং তদ্যতিরিক্তকর্মকার্য্যার্থমিতি। অব বক্সাং ক্রিয়ারাং বস্ত ৰূৰ্মত্বং তজ্ঞাতীয়ায়াং ক্ৰিয়ায়াং বদি তম্ম কৰ্মত্বং তদাকৰ্মবস্তাৰ ইতি কুতঃ প্রাপ্তং, অত্যোচ্যতে এভচ্চ প্রভ্যাসম্বেন্যায়াত্রভ্যতে, এক্সব্যসম্বায়িনী হি ক্রিয়া প্রত্যাসরা জব্যান্তরসমবেতা তু বিপ্রকৃষ্টা তথা যদ্মিন ধাতে কর্মতং তমিলেব কর্ত্ত্বং প্রত্যাসন্নং একত্র কর্ম্ম্যমপরত্র কর্তৃত্বং ইত্যপি বিপ্রকৃষ্টং, অতএব ভিদ্যমান: কুণুল: পাত্রাণি ভিনত্তি ইত্যত্র ন ভবতি। অত্তৈকাপি ट्यमनक्रिया रेनकक्रवामगरवण भहत्यापनः वांशाय्यापनः प्रयस्य देखाळ একস্থ কর্ত্মত্ব কর্ত্ত্বেহপি ধাত্বারুভয়োর্ভিরত্বাধিপ্রকর্ষ:। তথাপ্যস্থোত্ত-মাপ্লিষ্যতঃ শ্লিব্যমানগতয়া ক্রিয়য় পগতয়া চ ভিল্লম্। তথা আস্থানং হস্তি षाणाक्षां वांचातां रुखतां चार्र एक एक एक विकार, व्यक्तां प्राची का वांचा वांचा का वांचा वांचा का वांचा वांचा वांचा वांचा वांचा वा হননয়। আসকৃতত্ত কর্ম্বাতৃলাক্রিয় ইত্যত্রাপি গমকত্বাৎ সমাসঃ কর্মবা তুলালির: সদৃশক্রিয়: কর্ত্তা কর্মবন্তবতি। যথা তুলাশব্দ: সাদৃস্থবচনোহয়ও मानुश्रक किक्षिरह्माधिष्ठानः रेजामाधात्र धर कङ्ग्राभारता त्र्राज, न जू াখাননঃ, ডেন যশ্মিন কর্মণি কর্ত্র বছাং প্রতিপরেছণি ভাদুশীক্রিয়া 🗝 🕸 🕒 , বাৰুপী কৰ্মাবহায়াং স কন্তা কৰ্মবছবতীতি। পচত্যোদনং দেবদন্ত ্ডিনত ৰ বেলাফাৰব্যাপাৰ্দিসমূহশা ধে বল্লাঞ্জ কৰু বিভিন্ন জ্লাতি কৰ্মবিস্তাৰ

. ১৩৯। তথ গুপঃকর্মকস্থৈব।

তপঃকর্মককৈর তপঃকর্ত্ত। কর্মবন্তবতি। তপাতে তপ-ভাপদঃ। তপঃকর্মকভাবেতি কিম্ ! বিতপতি পৃথীং দবিতা। ১৪০। ইণ্ তে লুঙি ভাবকর্মণোই।

তভূতে পুঙি ভাবকর্মণোর্দ্ধাতোরিণ্ স্থাৎ। অভাবি কটেন। অংশহি গোর্গোপেন।

১৪১। ন তপোইরতাপে।

ইগান্তি। আজুনাম্বতপ্ত পাপেন কর্মণা।
তা তা তা
১৪২। ইণস্তলুক্।

সামান্তোণঃ পরস্থ লুঙ্ তকারস্থ লুক্ স্থাৎ। সমপাদি শস্মা।
১৪৩। সার্ধাতুকে যক্।

ভাবকর্মণোঃ দার্কাধাভূকে যক্ ভা**ং। ভূমতে**। জিয়তে কটঃ।

১৪৪। কর্ত্তরি শবনদ্ধাদি-যঙ্লুকঃ।

ইত্যাহঃ। কাতন্ত্রাস্ত কর্ম চাসে কর্তা চেতি কর্মকতা ইতি কর্মধারয়ং সমাচক্ষতে উপপত্তিত্ব প্রাপ্ত ক্রব, গচ্ছতি গ্রামং স্থামিতি সপরিম্পন্দ-সাধনসাধ্যত্রাৎ গমনং ক্রিয়া সা চ গস্তারি দেবদন্তাদে সমবেতা ন কর্মণি গ্রামাণে বিশেষবিধানাদিতি—পেরণীতি। কর্মকর্ত্তেতি কিং সাধ্যসি-শিচ্নতি, সাধু স্থালী পচতি। ভাষ্যমত্রমাবিকরে।তি কচিদিত্যাদি, ধিকর্মক্ষক্তাং বিদ্যামানেছপি কর্মণি কর্মবন্তাবে। বিধীয়তে কচিদিত্যাদি, ধিকর্মক্ষক্তাং বিদ্যামানেছপি কর্মণি কর্মবন্তাবে। বিধীয়তে কচিদিত্যানেন শিষ্টপ্রয়োগাস্ব্রোধঃ স্কর্চতে, ক্ষীরং মোচ্যমানা গৌং স্বং মৃক্তীত্যর্থঃ, এবং পচি-শিক্তানিভণার্থঃ, লোহিতঃ ফলং পচ্যমানঃ উড় স্বর্ধ্ধ স্বরং পচতীত্যপঃ, কচিদিত্যাদি স্পত্তীত্যপঃ,

খদাদি জুহোত্যাদি ষঙ্ লুগন্তাদশুশাদ্ধাতোঃ কর্ত্বাচিনি শার্কাণাতুকে পরতঃ শপ্প্রত্যয়ো ভবতি। পচতি, চিকীর্বতি পুত্রীয়তি, কারয়তি। খনদ্রোদেরিতি কিমৃ ! খতি, জুহোতি, বোভোতি।

১৪৫। দিবাদি ভ্যঃ শান্।

শপোপবাদ:। দিবাদিভা: সার্বিধাতুকে শুন্ স্থাৎ। দীব্যতি, সীব্যতি।

১৪৬। বা ভাশ-ভাশ-ভাম-ক্রমু-ক্রমু-ক্রসি-ক্রটি-লসঃ।

এভাঃ সার্বিধাত্কে শুন্ বা স্থাৎ। ভ্রাশুতে, ভ্রাশতে, ভ্রাশতে, ভ্রাশতে। ভ্রমু—চলনে, ভ্রমু—অনবস্থানে, দ্বাভ্যামের গ্রহণম্। ভ্রাম্যতি, ভ্রমতি, ক্রাম্যতি, ক্রাম্যতি, ক্রাম্তি, ত্র্যুতি, ত্র্যুতি, ত্রুটিতি, ত্রুটিতি, ল্ম্মতি, ল্মতি।

389। मर्सियमाई, त्करलाकी।

সম্পূৰ্কাদপ্ৰাদেশ্চ যশোদৈবাদিকাৎ শুন্ বা স্থাৎ। সংযস্তৃতি, সংযদতি, য়স্থতি, যদতি, অন্যতো নিত্যমেব, প্ৰয়স্থতি।

১৪৮। स्निन्छाः गुः।

স্বাদেঃ সার্বধাতুকে শপোহপবাদ: শ্ব: স্থাৎ। স্থনোতি । সিনোতি।

५८०। कृति-शिति-व्यवार कृ-शि-म् **ह।**

कृतराहिः श्रुक्त, खाद । क्रान्तराहिन्न । कृत्नािक, विद्नािक,

১৫০। অকে ব।

ৰকঃশুৰ্বাভাৎ। ৰক্ষেতি, ৰক্ষতি ১৫১। তন্কৃতে তক্ষ

তমুকরণে তক্ষাধ্বিষ্যাৎ । তক্ষোতি, তক্ষতি। তত্ত্তা-বিতি কিম্ ! সম্ভদ্ধি বাগিড়া । ১৫২। তুদাদিভাও শাঃ।

এভ্যঃ শঃ স্যাৎ। তুদতি, সুদতি।
তা তা
১৫৩। ব্ধাদেঃ শুম্।

এভাঃ শ্বয় স্যাৎ। রুণদ্ধি, ভিনন্তি।
১৫৪। ত্রাদিভ্য উঃ।

अन्य ने निष्ठ निष्ठ । ज्या कि निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ नि

এভাঃ শ্লাপ্রতায়ঃ স্যাৎ। পাদীনাং ক্রমণ্ট। জীণাতি।

১৫৩। স্তম্ভ-স্তম্ভ-স্তু-স্তু-স্তুভ্ট শ্বিট।

স্তম্বাদিভাঃ সোঁত্ৰেভাঃ স্কৃঞ্চ মা: স্যাৎ। শ্লাচ।
স্তম্বোতি, স্তভাতি, স্থাতি, স্বভাতি, স্বভাতি,
স্ত্ৰোতি, স্বভাতি, স্বোতি, স্বোতি। উক্তাবিকরণাঃ।
ইতি শ্লীপদ্দাভদ্দকতে স্পত্নে ব্যাকরণে তৃতীয়সাধ্যায়স দিতীয়ং পাদঃ।

অথ তৃতীয়াধ্যায়স্থ

ভূতীয়ঃ পাদঃ।

१। इ-यटना-टिश्टिमा — भारमम्हारखदत्र ।

জুহোতের্বলন্তাচ্চ হেদ্ধিঃ স্যাৎ। শাসেশ্চ শাদেশো হক্তেশ্চ এন্তর্বাত। জুহুধি, ভিন্ধি, চিছুন্ধি, শাধি, এধি l

२। रलेको जानमी दरी।

ুহো পরে হলন্তাৎ শ্বাপ্রক্যয়ন্যানশ্ ভবতি ৮ পুষাণ, বধান, অশান !

७। रख्किः।

হো পরে হন্তেজ: স্যাৎ। জহি অপ্রত্যায়াদ্ধেলু ক্ ন স্থাৎ।

8। शित्रारिनेषिनू के हैं।

হো পরে ঘুসংজ্ঞকস্যাদেত্তবতি। দ্বিক্ক্রস্য লুক্ চ। ८महि, ८४१ ।

৫। অযুক্ শূদতো হেঃ প্রত্যয়াৎ।

चनः यूक्तभू, उँ९, चं९, देखारुकाः প্রতায়েভা উত্তরদা হেলুক্ স্যাৎ। স্থু, কুরু, ভব। অযুগিতি কিমৃ । শহুহ প্রত্যয়াদিতি কিয়ু ? মুহি, স্তবি। ৬। উতশ্চ বা ব্যয়োঃ।

🔻 ব্ময়োঃ পরভঃ প্রত্যুদ্যোকারস্য লুক্ স্যাঘা। স্বঃ, স্পুর:, অতম, অতনুম। অযুগিত্যের প্রাপ্র:।

৭। নিত্যং করোতে রে চ।

বময়োর্গকারে চ কুঞা উতোনিতাং সুক্ স্যাৎ। কুর্কাঃ,
কুর্মঃ, যে-কুর্যাৎ।

৮। कूर्र डि॰ मार्बश्र कुर्ले।

ঙিংশাব্ধিতুকে বিনয়ে করোতেঃ কুরাদিশাতে। কুরুতঃ কুরুত্তি। ঙিদিতি কিমৃ ?ুকরোতি।

৯। শ্বমন্ত্রোরভীঃ।

লুগিত্যেব, ডিত্সার্কধিষ্ট্কবিষয়ে শ্লমোছস্তেশ্চাতে। লুক্স্যাৎ। রুশ্ধঃ রুগ্ধন্তি স্তঃ, সন্। অত ইতি কিম্ ? পর-ভালতি রুদ্ধো সত্যাং আসন্।

५०। में भिं।

সকারেহন্তেঃ সোলুক্ স্যাৎ। ব্যাতিসে। পিতি চ বক্তব্যং। অসি।
১১। হএতি।

এতি পরে অক্টে সোহঃ স্যাৎ। ব্যতিহে। ১২। শ্বাভ্যস্ত্রোরাতঃ।

ঙিৎসার্ক্রথাত্কেহননোরাতে। লুক্ স্যাৎ। পুনন্তি, অপুনন্, দত্তঃ, দদতি, জাুদ্রতি, দদ্যাৎ।

५७। त्रे श्लार्थीः।

হলি পরে শ্বাভ্যস্তয়েরেতে ঈং স্যাৎ। পুনীতঃ, পুনীয়াৎ, জিহীতে, জাজ্ঞীতঃ। অঘোরিতি কিম্ ং ধতে, দদ্যাৎ।

১८। ईफितिजाउँ।

ভিৎসার্কধাতৃকবিষয়ে দরিভাতেরীস্থাপবাদ ইৎ স্যাৎ। দরিভিত: দরিভিন্নাৎ। হলীত্যেব, দরিভতি।

30। जीशकार्वी । जो हैं हों हीं।

হলি তত্ত ভীহাকোরিস্বাস্যাৎ। ভিন্ন সত ইং। বিভিত্ত, বিভীৱাং, বিভীয়াং, জহিতঃ, জহীতঃ; আ চ হো হো। জহিহি, জহাহি চ।

১৬। লোপৌযি।

যাদে তিত্র জহাতে রাতো লোপ: স্যাৎ। জহাৎ, জহা:।

শুনি পরে ওদন্তস্ত ওতোলোপঃ স্যাৎ। সো-অধ্যবস্যতি দো-দ্যতি।

১৮। শ्यारमें मीर्वं।

শ্রুনি শ্রাব্যক্তিকার দীর্ঘঃ স্যাৎ। শাম্যতি। শ্রু ক্ল্যু, দম্ এমু ভ্রমু, ক্লমু, ক্লমু, মদী।

১৯। চিবু – ক্লয়াচমাঁৎ শিতি।

এষাং শিতি দীর্ঘঃ স্যাৎ। নিষ্ঠীবতি, ক্লামতি, আচামতি। ২০। ক্রমণ্ড পরক্ষৈপদে

निक्ति नीर्यः ना१। कामकि, कामन्। त्नह-क्रमरक। २५। स्ट्राप्टि खिक्षी मिर्ह।

শিতি হাদে: হানে তিষ্ঠাদিরাদি শুতে। তিষ্ঠতি। পাড়োঃ পিবজিজো। পিবতি, জিজতি। গ্লোধম। ধমতি। স্নোমন। আমনতি। দান্যমোর্যক্। যাছ্তি। দৃশেঃ পশ্চ পশ্চতি। অর্ত্তে শঁচছ। ঝাছতি। সর্ত্তেধ্বি বেগে। ধাবতি, অশ্বত্ত-সরতি। দিসদেশঃ শীয়সীদো। শীয়তে, সীদতি। ইধোরিচ্ছ। ইচ্ছতি। গমোপচ্ছ। পছতি। আজনোজা। জানাতি জায়তে। শিতীত্যেৰ পাতি, পাসাতি, পাহি।

२२। अमाद्यार्जी इक्षिः निर्जि हिने।

পিতি হলানে সার্বিধাত্কেছলালের দক্তক বৃদ্ধি: স্যাৎ। নোতি, রোতি, রোঘি, যোতি, কোতি, স্তোতি। হলীতি কিম্বরাণি, রবাতি, স্তবীতি, ঈড় বৈদিকে।

२०। छर्गिन लिखे वीग्रियम्।

উর্ণোতেন্তত্ত্ব লঙি রৃদ্ধিনান্তি দ প্রোর্ণোৎ, প্রোর্ণোঃ। বাষ্য-শ্মিন্—প্রোর্ণো তি, প্রোর্ণোতি,। পিতীত্যের প্রোর্ণ্ডঃ।

२८। ज्रेटमेद ज्राहर

পিতি হলি তৃহেঃ শ্নমোহত এৎ স্থাৎ। তৃণেচি, তৃণেক্ষি, অতৃণেট্।

२०। उन्ये केहैं।

পিতি হলি ব্ৰুষ ঈট্ স্থাৎ। ব্ৰবীতি, ব্ৰবীত্, প্ৰবীৎ, পিতীত্যেৰ আত্ম ক্ৰয়াৎ। হলীত্যেৰ ব্ৰবাণি।

२७। य**ॐ** नूदर्का वा।

পিভি হলি যঙ্লুগস্তাদীড়্বা স্থাৎ। লালপীতি, লালপ্তি; বোভবীতি, বোভোতি, পিতীত্যেব, ব্যতিবোস্ত্ত্।

२१। कनारने त्रिष्यिष्टि

व्यक्ति मार्क्यशक्ति ज्ञानात विष्टे छा । त्रामिकि जन्मिकः ''हिमागमः शत्रविष्ठि न छगः। व्यक्तिकि किः ज्ञमार, ज्ञानिक विष्या विष्टि विष्टे

२५। केंडीम्डार में बान नाम बान विकास

ं बांख्याः সে ধের চ পরে ইট্ ক্সাৎ। ঈড়িয়ে, ঈড়িধের, ঈশিসে ঈশিধ্বয়।

२०। मिटी मिट्यी ती हैं।

দিস্তোঃ পরতঃ শ্রেয়খাণসিচ উত্তরে ঈট্ স্থাৎ। অবাদীৎ, व्यामीः, वकार्धीः । ना ७०। मिथि माछि ভित्रा व।।

माछि चित्रः मिनि नेष् ्वा छार। मारेख्यौः मारेखः।

৩১। অন্তেলিঙ্কি।

দিস্থোরীট্ স্থাৎ। আদীৎ আদী:। ७३। कमारमज्ञा

उपनारमन छि निरचात्र मार । त्रेषे ह इरहाश्यामः, व्यदापर, व्यदापीर ; व्यवशर, व्यवशेर ; व्यवशः, व्यवशेः।

७७। जन्ः।

चारत हि मिरकांत्र छार । जानर, जानः। ७८। मिलि में उहे मिलि वी

দিপি সাম্ভস্ত স ন্তঃ স্থাৎ। অশাৎ অচকাৎ। সিপি বা। শশান্ত্রং অশান্ত্রা । নান্তে রীড্ব্যবধানাৎ। আদীঃ।
ত্যা সা
তিয়ে দিধো কঃ।

লঙ্ভি দিশি দক্ত ধতা চ ক্লব্বাস্থাৎ। অভিনক্তং অভিনৎত্বং বা। গুৰু ব্যব্তাচ্কত্বাৎ পতা বড়ে কতে ধতা ক্ৰছং-অবর্ধাঃ।

সাৰ্ব্বগাত্তকৰাত্তে শীঙঃ শেঃ স্থাৎ ৷ শেতে শ্রাতে পেরতে, পরানঃ।

৩৭। শুরু যি ক্সিভি।

यार्गि कि छि अ अरु मी छः नशामि अरु । সংশয্য, শয্যা, শংশয়তে। কিঙ্গুতীতি কিম্ ? শেয়ম্।

७৮। প্রাদেরহোঁ इस्ट।

यार्ता कि ७ वि थारमः भत्रण छेरहा द्वतः छार । मम्बर्छ, সমূহ গতঃ। কি ও গীত্যের স্ভূত্যে হয়মর্থঃ।

৩৯। इस्रयें नीर्सिंश्वरमार्वधाजूरकं।

অকুৎসার্ব্রধাতুকে কি ঙতি য্কারে হ্রস্বান্তস্ত দীর্ঘ: স্থাৎ। স্থায়তে, চীয়তে, বল্গুয়তি, তোক্ট্য়তে, স্তুয়াং। সক্ৎ-সাৰ্বাণাডুক ইতি কিম্ ? প্রকৃত্য স্তর্মাৎ, চিমুয়াৎ।

৪০। অতো দীর্ঘোন যকি।

यथ यरथायूः, विकीवार्ड, बड देखार्डा न क्। 85। इत्या ने लार्डि थाएँ ।

প্রাদের ভরস্থ ইণো লোভি দীর্ঘে। ন স্যাৎ। উদিয়াৎ, व्यविद्याद, धारनिति किय, नेवाद।

৪২। ঋতেঁ। বীঃ।

অকুৎসার্ব্রধাতুকে কি ভাত যকারে চ ঋতো রী: স্থাৎ। মাত্রীয়তি, মাত্রীমতে। তপরঃকিং নিজেগিল্যতে চেকীর্যান্ত। ৪৩। রি লোও্যকেঃ শে রিয়ঃ।

लांडि यकि व अट्या तिः नार । इत्रविधानावनीर्यः। ক্রিয়াৎ, ক্রিয়তে; বীত্যের ক্রবীক্ট। শে রিয়ঃ গ্রিয়তে, আজি: মতে, কিঙ্তীত্যেৰ হরতি।

88। गांगः गिर्ने इत्नांत्रमाणः।

অভি হলাদো কি ভতি চ শাসঃ শিসাদিশতে। অশিষৎ, শিক্ত:, শিব্যতে, ক্যপ্ শিষ্যঃ, শাদেশসামার্থ্যাহেহ শাধি। অনাভ ইতি কিমৃ ? আশাস্তঃ, আশাস্তে। আশীঃ। আঙঃ কিপি-শাসেঃ নিপাত্যতে।

8৫। अभै गृज-मृत्नी वनी कि ।

অনয়োর্যলাদাবকিত্যমাগমঃ স্থাৎ। স্রফী অস্রাক্ষীৎ, দেকী অদ্রাক্ষীৎ, অকিতীতি কিম্ ? স্ফাই নিস্কৃতি দুক্ষীক।

86। मृश-जृश-मृश-म्यू-म्य-क्यायी।

এষাং ঝল্যকিতি অম্বাস্যাৎ। অপ্তা, সপ্তা, স্পুষ্ঠা, স্পুষ্ঠা অকিতীত্যেব—অস্পৃক্ৎ।

89। रेमिटी वृत्री शास्त्री ।

ইদিতোধাডোমু মৃ ম্যাৎ। বন্দুতে, কম্পতে অভিনন্দতে।

८৮। भि यूठारमें।

এষাং শে নুষ্ স্যাৎ। মুঞ্জি, লিম্পতি, মুচ লুপ বিদ্ঠ লিপ বিচ কৃতী থিদ পিশঃ।

8à। यम्ब-नत्भाव मि।

অনয়োকলি মুম্ স্যাৎ। মদেজরন্তাং (১) পূর্বাং কুম-মিচ্ছন্তি। মঙ্কো, মজ্জাতি, নংফা, নজ্জাতি, ঝলীতি কিম্? নশিতা রখাদি।

৫০। রধি-জভৌরচি।

ু অনরোরচি পরে সুমৃ দ্যাৎ। রন্ধরতি রন্ধকঃ, জন্তরতি জম্ভক:। অচীতি কিমৃ ? রধবা জবা:।

৫১। त्रदेशिति निर्देशि

ইটি রধেলি ট্যেব মুম্ স্থাত্, নাম্যত্তা। রর্দ্ধিব রর্দ্ধিম। न करमोरत्रियोन् । नित्रमः किः त्रियेकाः त्रिष्ठ्य ।

৫২। तक-नर्जी तभवनिर्हीः।

অন্যোরচি কুষ্ স্যাৎ। আরম্ভয়তি, আরম্ভী, লম্ভয়তি, লম্ভরক:। অশবলিটোরিতি কিমৃ ? আরভতে, আরেভে।

৫७। नर्छ রাষ্ট্রোয়র্ভি।

আঙো লভেষতি মুষ্ স্যাৎ। আলম্ভাঃ।
৫৪। উপাৎস্ততী।

নুম দ্যাৎ। উপলম্ভ্যা বিদ্যা। স্তুতাণিতি, কিমৃ ? উপ-.লভ্যং কিঞ্ছিং।

৫৫। প্রানেঃখন্ খনোই। न কেবলস্থ জ্ঞাম।

जनर्याः शारमन कियू म्'नैरार्' इथनसः, विश्वनसः, । প্রাদেরিতি কিমৃ : ঈষলভঃ, লাভঃ, লভের্ঘণ কেবলাক দৃশাতে क्चे प्रिकेनखार, बाद्धेन्हः। न क्विनचक्काम्। स्नाटना प्रन जिः। (कर्तनिष्ठ किम् ने व्यक्ति श्रनकः। क्षेमिक्सनकः,

ন্ত্ৰভিদিক্ষো পশ্চাৎ প্ৰাদি সমাদেন। ক্ষা কা কা ও । পমিপৌরপ্রাদের্

অনয়োল ভেরপ্রাদেপু যু বা স্যাৎ। লম্ভং লম্ভং, লাভুং ना जः, बनस्ति, बनाहि। बद्यातिति किष् ! निजाः क्षनस् প্রাণম্ভি।

नेपेश्वनामिक-लार्श

বালি কিঙ্কতি।

এষাং ঝলাদে কিউত্যমুনাসিকলোপ: স্যাৎ। বতি:, ততং, সন্তুতি:, কণু ক্ষতি:, ক্ষা। দ্বিতি অতত, অতথা:, অনিটাং যমি রমিনমিগমি হনিমন্ত্রীনাং যন্ত্রা, যতিঃ। দ্বিতি হতঃ হথ:। ঝলীতি কিমৃ ? বনিত্র গম্যতে।

१५। न कि हि मीर्थ करे।

বৰত্যাদে: ক্তিচি মলোপো নাস্তি। ওম: কি-ৰৰো: কিঙ্ গীতি দীৰ্ঘশচন ভবতি । বস্তিঃ, তস্তিঃ, সন্তিঃ।

(के। कि-यरशीर्वक्नम्।

তেষামনুনাসিকঃ লোপঃ দ্যাত্। কৌ যপি চ বছলং
লুপ্যতে। অস্পত্, সংযত্, আরত্, আনত্, পরীতত্। বাছল্যামেহ ব্রহ্মহা। যপি সংযত্য, অনুমত্য। বাহুল্যাত্ অবসক্ত
মানিনীতি। বা পমাদেঃ। আগত্য, আগম্য; বিরত্য, বিরম্য;
উদ্যত্য, উদ্যম্য; বাহুল্যাদত উচ্চ অগ্রেগ্ঃ।

७०। श्रेंखि निर्हि।

তি দিচি হন্তের্লোপ: স্যাত্। আহত আহ্মাতাম্।
১১। যমে গন্ধনে।

হিংসার্থকসূচনে যমস্তাঙি সিচি মলোপঃ স্যাত্। উদায়ত।

গগদন ইতি কিম্ ৭ আয়ংস্ত শীদম্।

।

७२। वौशयमती।

স্থীকারে ভঙি নিচি যমোমলোপঃ স্যান্ধ। উপায়ত কন্সাং উপায়ংস্ক বা i

७७। गरमेंट्रनिष्टि है।

প্ৰেক্তভি লোভি নিচিচ মলোপো বা স্যাত্। সঙ্গনীক मणः मौकै। ममन् ममन्द्र ज्यातः महाक्रास्त ।

७४। खन-मन-थनाँभौजानि क्रिं मिने।

अवार अलारनो कि एडिंड मिन ह नकातमा छ मार्ड। काङः, कः काङः। गाङः मः गाङः। मिक् न्कि चमाङ, অসাধাঃ সিয়াসভি খাতং শাতিঃ। ঝলীতি কিম্ ? জিজনিষভি চিথ্ৰমন্ত।

७०। (ये वी।

জনাদেখাদে কিঙতি আছা স্যাত্। জাযতে জন্ত সায়তে সক্ততে। ধায়তে ধক্ততে চাথায়তে চং থক্ততে।

৬৬। তনেইকি।

আহাস্যাত্। তায়তে তভাতে। ७१। मन्दे लिही नूने ही दी।

मर्बाहरूः क्रिकि चाना न कृष्ठवामा। । मार्जिः मिरिः । ७৮। श्रीश्री नुकै।

শ্বঃ পরো নো লুক্ সাতে। ভনজি বিষয়ে। ৬৯। শপি দংশরঞ্জ সঞ্জ সঞ্জীম্।

এষাং শপি নো লুক্ স্যাত্। দশতি, রজভি, প্রসঞ্জি, পরিষকতে।

৭০। রঞ্জের্বণি ভাবকরণয়ে।

ঘণি রঞ্নোলুক্ স্যাত্। ভাবে রাগো বর্তে। করণে ज्ञानः कुकुमम्। त्रजनान्त्र खेशानिकाः।

१८। देनी मृगत्रभटने।

(भी तक्षिर्द्धान क् महाख् । तिक्का मृगाः तकति मृग्।

१२ | श्रुक्कि कि वि | नश्रुक्क नश्रुक्क वा । ৭৩। অনিদিতীমীর্যক্ষ ক্তিতি। (২)

কি ্ডত্যেরাম মুষঙ্গস্থা নোল ুক্ স্যাত্। সক্তং সনী অক্ততে। দনীধ্বস্তত। অনিদিভামিতি কিম্ : কম্পাতে।
৭৪। লঙ্গিকম্প্যাৰুপভাপাঙ্গবিকারয়োঃ।

अनः प्राप्त विक्रिक विक्रिक विक्रिक । १८। पर स्थि ज्ञा कि शिक्ति ।

बात मः स्मित्ति क् मार्ग । पर ममी कि मः मर्थः। १४ । खिनु कास्नुन भीर वी।

জান্তানাং নশেশ্চ জিল্নোলুখা স্যাত্। রজনু রঙ্জনু নট্বানং ট্বা। অক্তবা, অঙ্ক্রা। কিঙ্তীত্যের অঞ্জিয়া। প্রাত্য

ভঞ্জেরিণি জিল্চ নো লুখাস্যাতু । অভাজি অভজি বা। ভক্তা ভঙ্কাবা।

१४। मार्कः भूजाशाम्।

অতাংশ্রোলুক্ নান্তি। অঞ্জা গুরব: অঞ্তে। সমকোহভাত।

৭৯। ক্ত্রিকনস্থনোঃ। (৩)

খনয়োঃ ক্তি, নোলুক্ নান্তি। স্বৰ্ত্বী অন্তা প্ৰস্কা।

⁽২) হলভোগাভ্যো নকারোহমুবকঃ।

⁽৩) কাডয়াত্ত হলপ্রকোর্নলাগমিছ্তি।

পদকদশ্বকরণ্যু।

५०। त्म वृत्कादमः।

র্থাং শে নো লুক্ নাস্তি। তৃন্ফতি। তৃন্ফ, ছুন্প, ছুন্ফ, দূন্ফ, ঝন্ফ, গুন্ফ, উন্ভ, শুন্ভ।

৮১। স্তাদে। জবে। আৎ। (ধণি অদঃ) অন্দোহযাত।

৮২। এरशिकारवान-প্রশ্রথ-হিম্প্রথাঃ।

অমী নিপাত্যন্তে। ইন্ধী ঘণ্ এধ:, উন্দী মন্ ওদা, ওদ্মী কুর্বন্ কুচতটভূবম্। অচ্-অবোদ:-ঈষদার্দ্রে:। প্রভাগঃ, হিমং শ্রেপুাতি মুঞ্জি কর্মণোহণ্-হিমপ্রথশ্চক্রঃ।

৮७। कम्रेंगेरजीरि

নিপাতপ্রসঙ্গাল্লুগিভ্যেব। অচি কসস্থাতো লুক্ স্যাৎ। অধুক্ষি অঘুক্ষি।

৮৪। গম হন জন খন ঘসাং কি তেত্যনিঙি।

অজাদে কিঙতি গমাদেরতো লুক্ স্যাৎ। জগা: সংজাগে জমুঃ মন্ মন্তি, জড়ে, নিচধ্নুঃ, জমুঃ। অন্তীতি।কৃষ্ ? অগণ্
নৎ, অঘ্বং।

৮৫। ধি সো লোপঃ।

ধে সকারস্থ লোপঃ স্যাৎ। চকাধি আধ্বং বদ–নিবধ্বং বস্ত্রং, ঐক্ষিধ্বং লোপেহপি দিচি ইট্।

५७। जो जियग्ह्यत्त्री।

যণ্ অচ্পরে জকারে পরতঃ সো জো ভবতি। ভৃজ্ঞাতে মজ্জতি বভূজ্জান্।

भ्ना यव **उर्शिट**श ३१ वा

অধাঞো ঝবস্তাতথোর্য স্যাৎ। দোগ্নি অচুগ্নাঃ লকঃ অধ ইতি কিমৃ ? ধন্তঃ।

৮৮। সঁশুঃ সি লুপ্তেচার্দ্ধাতুকে।

আর্ধাত্কে সকারে পরতঃ স-স্তঃ স্থাৎ। জিম্বংসতি বংস্থাতি অবাৎসীঃ, লুপ্তে চ অবাতাম্। প্রত্যয়লোপলক্ষণেনৈব
সিদ্ধে লুপ্তগ্রহণমূৰ্তং থলু জ্ঞাপয়তি। মঢ়োঃ কঃসেহস্থপীত্যত্র
সিচোলোপে কত্বং মার্ভং-তেন অদৃষ্ঠাঃ অদৃড্তুমিতি। আর্দ্ধখাত্ক ইতি কিম্ ? বস্বে। আর্দ্ধাত্কে বিধিরাস্যমিব্যাঃ।

৮৯। আতৌলুগিট্ক্ডদটোঃ।

ইটি কি ওদিচ চ পরে আতো লুক্ স্যাৎ। পপিথ, পপিব, পপিম, পপতুঃ, পপুঃ, আর্দ্ধাতুক ইত্যেব–যান্তি।

৯०। प्रतिर्द्धीवश्वभू।

আর্ধাতুকে বছলং দরিদ্রাতেরাতো লুক্ স্থাৎ। দরি-দ্রাৎ, দরিদ্রাতি, স্চি-দরিদ্র ।

৯১। लु - मरना ति है हैनि वा।

আদরিজীৎ, স্বাগমে-অদরিজাদীৎ, আদরিজি, আদরিজারি, বা দিদরিজাসতি দিদদ্বিতি, কসে ন লিড়ামি, দরিজেবান্, দরিজা-বানিত্যেকে। বাহুল্যায়েহ-দ্রিজায়কঃ দরিজাণম্।

৯২। অতঃ।

আর্ধাতুকেছতো পুক্ স্যাৎ। বর:-যাযাবর: চিকীর্ষিতা, চিকীর্ষ্যতে।

৯৩। यस्य रलीश्नीर्याएउ।

শার্কধাত্কে হলঃ পরশ্ব যন্ত লুক্ স্যাৎ। বেভিদিতা, সুধি

जूः। त्वर नेशिजा। हल देखि किय्! **ला**न्शिजा, कथः পুত্র—কাম্যা, বহুলামুর্ক্যা।

৯৪। কাস্থা বা।

হলঃ পরস্থা ক্যান্স লুখান্যাৎ। সমিধিতা, সমিধ্যিতা, নম-সিতৃং নমস্যিতৃয়। ব্যবস্থিত বিভাষয়। নেহ. নমস্যা তপস্থা বরিবস্থা।

ac। लेट्निश्लीश्रिक्षवायग्रामरख्य रूपे।

रेड़ा निविक्टिं वार्द्र शाक्त निष्ट् निरहार नेट ना नार । কামনঃ যাষ্ট্রিঃ পাক্তিঃ পাচনং অচীকরৎ কারকঃ কার্যাতে কিপ্-ঘটকাঃ কন্ত্-চকাৰ্বান্। অনিড়াদিধিতি কিম্? কার-यिछा, इंहे माइहर्याानिन ह त्वर्वितिशांगत्म, यहेसियात्छ, न्ध्रान्:, न्ध्रायाः, न्याम्-कात्रामान, न्छ-मध्यस्टः,... अनामिक ইज्रु:-হর্ষায়জুঃ। শেরিফুশ্ছন্দসীতি নোচ্যতে। কার্মাঞ্রিতি। বহুলামুরত্যা যতি গণেয়ম্। ঙাপি চিস্তি: (य्रिंड व्यम्श्मीयानि छ।

মাদ্র। ৯৬। ইটি নিষ্ঠায়াম্।

ণের্লেপঃ স্যাহ্ম। ক্রারিকোগণিতঃ। ৯৭। যপ্তায়্ লঘুপূর্বিৎ।

लघुशृक्वावर्गाम्यि (गत्र मार । अविजिनग अग्मग्र লমুপূর্বাদিতি কিম্ ? প্রবোধ্য প্রপাঠ্য। ১৮। বী ২২ প্রোতেঃ।

আপোতের্যপি শেরয় বা সাাৎ। প্রাপয় প্রাপ্য। ১৯। অস্তিক্রবোভূবিচৌ

আর্দ্ধাতুকে অন্তেভুক্রি বশ্চ বচ্ স্যাৎ। ভবিতা ভুতঃ रका উবাচ। नारखन्य थायागण-त्रेशमाम।

५००। जरम्बी ७ अँ वीनु छै।

আর্মিপাতুকে ঋষিষয়াদন্তস্থ ভ্রেন্জাভর্কা স্যাৎ। ভ্রন্থী, ভর্কী, বভ্ৰক্ত বভর্জা অনুত ইতি কিমু ? ভৃষ্টম্।

२०३। जारमाजभः कि खियि।

কি একারে যাপিচাদোজন্ধঃ স্থাৎ। জন্ধঃ জন্ধা প্রজন্ধ্য কিন্তীতি কিম্ ? অভা, বছলামুরত্ত্যা—অন্মন্। ১০২। লুঙ্সনপি ঘস্কঃ, ঘণ্যনুপসর্গে, লিটি বা।

লুঙাদিয়দোঘদ্কঃ স্যাৎ। ৯দিবাদঙ্—অঘসৎ অঘাসি, জিঘৎসতি,অপ্-প্রঘসঃ নিঘসঃ। ঘণ্-ঘাসঃ,নোপসর্গে-ম্যাদঃ। লিটি বা। জঘাস জক্ষতুঃ আদ আদতুঃ।

३०७। त्वरकीवशियम कि कि ती-वी।

বেঞোলিটি বয়ির্নবাস্থাৎ। উবায়। কিতি যশ্চ বকারো বা উবতু: উয়তুঃ, পক্ষে—বর্বো ববতুঃ।

উবতু: উয়তু:, পক্ষে—ববে ববতু:। ১০৪। হনোবধ লোগ্ডানিণি।

লোঙি হন্তেৰ্বধঃ স্যাৎ। বধ্যাৎ বধ্যাস্তাং বধিবীষ্ট গনি-ণীতি কিমৃ ? ঘানিষীষ্ট ।

১০৫। টাতত্তিবা

ল্ভি. হন্তেৰ্ব্বধঃ স্যাৎ। অবধীৎ। তাও বা, আৰ্থিষ্ট আহত অবধি অ্ঘানি।

३०७। गाउँ हैं।

বধাঃ ঘাত্যঃ, ন জনবুধেতি বুদ্ধিনিষেধঃ। ১০৭। ইণিকোর্গা লুঙি।

लुडानत्त्रांशानार। जनार जमानार जानाति छानः च्याताति भार्ठः।

Sob । विमदनीर्गित्रवाश्वरने ।

ণো সনিচ ইণিকোর্গমিঃ দ্যাৎ। গময়তি গ্রামং জিগমিষতি অধিজিগমিষতি। অবোধন ইতি কিষ্? অর্থান্ প্রত্যারম্বতি অধ্যায়য়তি প্রতীমিষ্তি, ইক্—অধীধিষ্তি।

५००। रेष्ट्रें मनि।

সনীঙোগমিঃ সাাৎ। শাস্ত্রমধিজিগাংসতে।

550 । गांडें निर्धि।

निर्वेदिशंगार्थं महार । अधिकत्त्र । २११ मा २१ ३२५ । (११) स्थल्पार ।

সন্ চঙ্বিষয়ে গৌপরতঃ ইঙোগাঙ্বা স্থাৎ। অধি-জিগাপিয়িষতি শিষ্যং অধ্যজীগপৎ অধ্যাপিপৎ।

ऽऽर। नुड्नुर्छीर्गीहै।

व्यनत्त्राति (क्षांगीर्का नगार । व्यक्ती के व्यक्ति । नृष्ट्-व्यक्त-वशीगुड बरेशुगुड ।

১১७। ठिकिएः शाकः।

আৰ্দ্ধাতুকে চক্ষিত্তঃ খ্যাঞ্স্যাং। ব্যাখ্যাতা ব্যাখ্যা-স্তুতি ব্যধ্যাস্থতে ঞিহাত্তয়পদী। কর্মাণি ব্যাখ্যায়তে বহুলাসুর্ত্ত্যা নেহ, সঞ্চলা ছর্জনাঃ। স্বধাতুভোইসিং ১ न्हका बाक्रमः। हेनः विह्वनः। ১১৪। वी लिहि।

लिए ठिकिङः थर्गेक् वा महार । आहर्यहो बाहरसह बाह ठिक वा।

১১৫ অজেৰীরক্যঘণপ্র ।

অজেक्तीः महार। প্রবায়কঃ প্রবয়নীয়ং বীস্থা বীতঃ, অক্যাদিষিতি কিম্? সমজ্যা, সমাজঃ, সমজঃ।

১১७। हेनाकिक्रत्नी ।

টনেহকিদ্ধলিচাজেকীঃ স্থাদ।। প্রবন্ধনং প্রাক্তনং প্রবেদ ষ্যতি প্রাজিষ্যতি প্রবেতা প্রাক্তিতা।

229। शांबंह श्रीनिष् या है।

লিটি যঙি চ প্যায়ঃ পীঃ স্যাৎ। আপিপ্যে আপেপীয়তে। ১১৮। অপ্রাদেনিষ্ঠায়ীমাউইক্রিখসীঃ।

অপ্রাদেনিষ্ঠায়াং প্যায়ঃ পীঃ স্যাৎ। পীনোবাহুঃ পীন-বান্। অপ্রাদেরিতি কিম্ ? প্রাপ্যানঃ। আঙ্ত্ত্বনুধসোঃ স্বাপী-নোহস্কুঃ, আপীনষ্ধঃ। অদ্ধুধসোরিতি কিম্? আপ্যানঃক্ষ-কণ্ঠাংশমিতি ভট্টিঃ।

১১৯। চায়ঃকীর্যন্তি।

यां हे हो बार की है नहाद। (हकी ब्रांट । ३२०। इटनी ब्री इंश्नायीय।

যঙি হস্তেমীঃ স্যাৎ। জেম্বীয়তে। হিংসায়ামিতি কিম্? জ্বভাতে।

১২১। আদীত্র বিশ্বার।
যিও আধোরাত সং দ্যাৎ। ক্ষেত্রীয়তে দেখীয়তে

১২২ । मू-मा-न्या-गा-शिव-मा-हारका शक्यिशि क्छिन्ना

হলাদো ক্তিত এষামাদীৎ স্যাৎ। মু-দীরতে শীয়তে ধেট্-ধীতঃ ধীতবান, মীয়তে,স্থীয়তে তেন্তীয়তে, গৈ-গীয়তে,পেপী-য়তে,দীয়তে ব্যবদীয়তে,হীয়তে হীনঃ। পিবহাক ইতি কিম্? পাতেঃ—পায়তে, ওহাঙ্—উদ্ধায়তে হানঃ। অকিষপি ইতি কিম্? কিপ্ সংস্থাঃ, যপ্-প্রগায়। তেনোদগীয় থলেনে ত্যপি বাহুল্যাৎ। আপীয়েতি পীঙ্—পানে।

5२७। त्नार्हार ।

লোডি তেষামাদেৎ ন্যাৎ। দৈয়াৎ, ধেয়াৎ, প্রমেয়াৎ, স্থেয়াত, পেয়াত, পৈপিৰত্যোঃ—পেয়াৎ অধ্যবদেয়াৎ, ছেয়াৎ। ক্তিতীত্যেব—দাসীষ্ট।

১২৪। व्हीरुग्रम् मर्दयागारम्बी।

লোঙি তিষ্ঠতেরক্তস্থানংযোগাদেখাতোরাদেখাস্যাত্। খ্যেয়াত্, ধ্যায়াত্, গ্লেয়াত্, গ্লায়াত্।

১২৫ । দো-স্থৃতি মা-স্থা-মিত্তি কিতি, বা-চ শাচ্ছেঃ।

ভাগে কিতি এষামাণিত্ স্যাত্। দিলা নির্দ্ধিতং দিতি:, অবসিতবাদ, মিতিঃ মিদ্বা, হিতিঃ। শাচ্ছোর্কা—নিশিতং নিশাতং/ছিতঃ ছাতুং, বাছ্ল্যাৎ নিত্যং—সংশিতং ব্রন্তমিতি।

५२७। मिनिट्न्यी ।

তাদে কিতি দোদত্ স্যাত্। দত্তঃ দত্তবান্। খোরিভি কিমু ? অবদাতং বস্তুং, দ্যুতেরিছমুক্তম্।

১২१। मक्र्यामुक खो वी नीवें किर्ती-३নারভে।

मक्र १ नक्ष स्थारिक कार्या । हेगरुग मौर्यम्ह । मसम्बद्धा मक्रात्वा वा । श्रवस्य श्रवस्य वा । ञ्चनत्तः मृत्तः वा, मुराजद्रि — व्यवत्तां मातः। व्यव देजि किय् ? निर्मल्य। अनात्रप्र इंडि किये ? आपि कर्यांग न खर्जि। প্রদত্তম।

১২৮। ধাঞেহিঃ। ক্তি হাকশ্চ।

তাদো কিতি ধাঞো হিঃ স্থাত্। হিতা বিহিত্য । জি, হাকশ্চ, হিত্বা রাজ্যং বন্ত গভঃ। ত্রীত্যেব বিহায়।

५२ । कार्यः कीर्निष्ठायोग ।

নিষ্ঠায়ামস্ত স্থাঃ স্থাত । স্থাতঃ স্থাতবান্। ১২০। স্থ্যঃ স্থাঃ প্রাথ

স্থ্যায়তের্নিষ্ঠায়াং স্তী: স্থাৎ। প্রস্তীত: প্রস্তীন: প্রস্তীত-বান। প্রাদিতি কিম্ ? সংস্ত্যানঃ।

১৩১। শুঃ শীঃ স্পর্শ দ্রবমূর্ত্ত্যোঃ।

অত্রার্থায়েঃ শৈডঃ শীঃ স্থাত্। শীতোবায়ুঃ শীতবান্। দেবস্থ कार्कित्य-भीनः म्रज्द, भीना, वमा। म्लामार्ति किः वाश्वानः।

১৩২। প্রতেশ্চ। অভ্যবপূর্বস্য বা।

নিষ্ঠায়াং প্রতেশ্চ শৈঙঃ শীঃ স্থাৎ। প্রতিশীনঃ প্রতি— শীনবান্। অভ্যবপূর্ববস্থ বা—অভিশীনঃ অভিশানঃ অবশীনঃ ধ্বিশানঃ অবশীনবান্ অবশানবান্। ১০৩। শৃতং ক্ষীরহবিষোঃ পাকে।

আতেঃ অপেশ্চ নিপাত্যতে। সৃতং কীরং, সৃতং হবিঃ

অন্তর—প্রাণা প্রাপিতা যবাগৃঃ। ১৩৪। বচিম্বপিযজাদেঃ সাচোয়ণ ইক্কিতি।

কিতি বচ্যাদেঃ সাচো যণ ইক্স্যাত্। উক্তঃ উচুঃ প্রোচ্যতে। হস্তা হপাতে। যজাদেঃ যদি বপি বহি বসি বেঞ ব্যেঞ হেবঞ বদ খি। ইত্যেতশ্য-ইজ্যাত ইপ্তি:। উপ্যতে। উঢ়ং, উষিতং, উত্য। সাচো গ্রহণাত্ব্যেঞাে মহৈত্ব সংবীতম্। আহুতং, উদিতং, উচ্চুনঃ। সংবদিত ইতি বদ দৈৰ্ঘ্যে।
১৩৫। সনিপ্ৰচ্ছিঃ। যদ ইক্ স্থাত্। পিপ্চিহ্বতি।

১৩৬। স্বপেশ্চঙ্-যঙ্-লুকি চ।

এয়ু দনি চুস্বপের্গ ইক্ স্থাত্। অদূর্পৎ, দোস্প্যতে সোস্থণীতি সোষোপ্তি স্যুশ্তি।

১৩१। माभिरवेरीयं ब्लूरकी है।

অনয়োর্যান্ত যাত্লুকি চ সাচোষণ ইক্ স্যাত্। দেসি-ম্যতে দেখেন্ড। বেৰীয়তে বেবেতি বেৰয়ীতি। আৰ্দ্ধগতুক ইতি নিব্ৰত্যু।

১৩৮। ভাসি জু-এহি-ব্রন্টি-প্রচ্ছি-জ্যা-বয়ি-বঞ্চি-ব্যধি-ব্যচাং কি গুতি।

এষাং ক্ঙতি চ সাচো যণ ইক্ স্যাত্। ভূফং, ভূজ্যাত্, ভূজ্জতি বরীভূজ্জতে, গৃহীতং, গৃহ্ণাতি, বৃকং বৃশ্চতি, পৃষ্টং পুছতি, জীনঃ। কথং জিনাতি পাদীনাং ব্রস্থাত্। উন্তুঃ উয়ুঃ, বল উলিতং উশান্তে উলন্তি, ব্যধ, বিশ্বং, বিশ্বাতি, ব্যচ বিচিতা, বিচিত্বান্, বিচ্তিঃ, বিচিতঃ।

১৩৯। स्त्री दिक किटिश्टी निवावरित्र है।

স্বেঞাহত য়ণ ইক্ সাং। জুহাব জোহুয়তে জুহুষতি
শিব্যবায়ে চ-জুহাবয়িষতি অজুহবং। দিরুক্তিহেতাবিতি কিষ্?
আয়য়াঞ্কার।

580। स्वेदी निष्यु यद्धीर्गि हे मर्म्ह खीः।

অত্র শেষণ ইয়াস্যাৎ। লিটি—শুশাব শিখায় শুশুবৃত্ই শিখিয়তুঃ। যঙ্-শোষুষতে শেখীয়তে। গে চ সংশচ্ডোঃ। শুশাব্য়িষ্ঠি, শিখায়য়িষ্ঠি, অশৃশ্বৎ, অশিখ্যুৎ, শিখ্যিষ্ঠি।

১৪১। न वर्ग-करा-विद्यो निष्यत्री ।

এষাং লিটি যপি চ য়ণ ইক্ নাস্তি। সংবিব্যুঃ, সংব্যায়। জিজ্যতু: প্রজ্যায়। ববুং, প্রবায়। নব্য্যাদেশস্ত নিষেধঃ, পৃথ-শুপাদানাৎ। উয়ঃ।

श्रुभानाव । छेशूः । 38२ । शरतर्वते यशि वा ।

যপি পরের্ব্যা যণ ইয়া ন স্যাৎ। পরিবীয় পরিব্যার। ১৪৩। বশেন যভি।

যতি ৰশের্ঘণ ইক্ নান্তি। বাবশুতে। ১৪৪। শ্বি-ব্যা-জ্যা-স্থামিন্দীর্ঘট।

এষাং যণ ইন্দীৰ্যোভবতি। শূনং, সন্ধীতং, জীনং, আছুতং কথং জিনাতি পাদি ব্ৰস্থাৎ।

286 । बिंह भारते भिन्ति ।

অশিতি প্রত্যয়ে পরে ধাতোরুপদেশে এচ আছং স্টাৎ। ধেট্–ধাতা, ধাতুং, ধীয়তে, গ্রৈ–গ্রাভা জয়ো গ্রানং। দো–দাতা দাত্তব্যস্। অশিতীতি কিম্ন ধয়তি স্তনন্ধঃ।

शहकहत्रधक्रवेष् ।

38७। न त्यो निर्मिष्

' त्वारकानिलिंगायः नान्छ। मःविवाद्य मःविवाद्रिथ। লিদিতি কিম্ ? সংবিব্যুঃ। ১८१। मि-मीछ-मीछार यशि छ।

अशाद्म क्वियदम यिन ह विधिवनामिह चांकः मार्। প্রমাতব্যং প্রমায়, উপমাতব্যং উপমায়, উপদাতব্যং উপদায় चन्-डेशनायः।

১৪৮। न भि-भी-लिয়ं९ थल८পারচি **চ**।

केषन्त्रारश यतः। केषल्या लग्नः।

585। निरंश वी।

नौतौरिक्षारतक् विषया यि विविधनापिक आदः श्रीषा । जनामी व्यतिवीर वनार जलारे विनाज। विलानः বিলয়নং বিলাপয়তি বিলায়য়তি বিলায় বিলীয়

১৫০। নিত্যং ক্ষুর-ক্ষুলোর্ঘণ।

ঘণ্যনয়োরেচ আছং স্থাৎ। বিক্ষার্ট্র।—বিক্ষাল: বি ১৫১। চে সহি-বহো–রোদ্বর্ণস্থা।

চে পরে সহিবহোরবর্ণস্থ ওদ্তবতি। সোঢ়া, অসোঢ়াং, অবোঢ়াং সোঢ়া। সাঢ়েত্যপি ভাষায়ামপী ক্স্ত্যেকে।
১৫২। দীধীবেব্যো রীলুক্ বীবর্ণয়োঃ।

यीकांत छेक्रात्रगार्थः। यकादत्वर्गसाः शत्रद्यात्रनदमाती नुक् छार। बानीसाटक, बानीसा गठः, नीसिन्ः। द्वराटः। इन्मिनावित्भी श्राष्ट्र।

১৫७। जारमत्नी नहे ।

পাঠে ধাতোরাদের্থে নকার: স্যাৎ। কিছ – নরতি, শুমু–নমতি। ১৫৪। ষঃ সোহস্প্রতিবু–রুক্টীনাম্।

পাঠে ধাছাদেঃ মঃ সং আই ্ত্রা-ছাতা, খ্লিড — আয়তে,
অহ্বাদীনামিতি কিম্ ? অকাট্রাঃ— বোড়ীয়তি, বড় দন্তা
যক্ত্য-বোড়ত্ প্ষোদরাদি, বৈতৃত্তনাচন্টে ণিচ্ টিলোপঃ
পচাদ্যচ্—বোড়ন্ততঃ ক্যচ্। মিঠান্যতি, যুক্ত নুক্তি।
ইতি প্রীপল্প নাভদ্পকৃতে স্পল্প ব্যাক্রবে ভূতীয়ভাগ্যায়ভ ভূতীয়ঃ পাদঃ।

অথ তৃতীয়াধ্যায়স্থ

চতুর্থ: পাদ: ।

১। अर्धे शार्भिमार्डिं नूछ-नड्-न्ड् के टिना-जार्भिकें इसिन्टें। (১)

অমাঙি যোগে লুঙ্-লঙ্-লৃঙ্কু পরতোণাতোঃ প্রাণ্ডাগমো ভবতি। অভ্ৎ, অভবং, অভবিষ্যৎ। তেন অটা সহ অজাদেস্ত রদ্ধিন্চ। অধ্যৈষ্ঠ, অধ্যৈত, অধ্যেষ্যত। সং-প্রামরতেরূপদর্গাৎ প্রাণট্মিচ্ন্তি। অসংগ্রামরৎ। সংগ্রাম বুদ্ধে ধাত্রপ্যক্তি। অমাঙীতি কিম্ । মাত্রং ভূঃ, মাত্র ভব্ন্তো স্থাম্।

⁽১) অট্। অত্র টকার গ্রহণমাসেবাদিতার বিদেশণার্থ। না নিয়ার ! প্রতিষ্ঠাং ত্মগমঃ শশতীঃ সমা ইত্যত্র মাশকোবেতি কেচিডর মাঙি লুভিডি-স্কালনামান্তে ল্ভন্পপত্তঃ। তর্হি চিক্তামেতদিতি পুরুষ্থেভয়ঃ।

२। नौजामित्र्रभीश्कामास्य ।

অপারার । জাদ্যক্ত তৃ-ঔলচ্ । ইহাভ্যাসাদেশয়োঃ
কৃতয়োরজাদিছম্। খ-এবং । বশ্-উন্তাও যল্-প্রভাত ।
৩ । দ্বিরাদ্যকাজচন্দ্রদেশীঃ স্থানিবিদ্যা (১)

আদিরেকাজ্বর্ণ: প্রাণির্ম্পর্কতি। ইত্যধিক্রিয়তে। একাকিতি বহুত্রীহি:। 'আদ্যন্তর্গেকাথিপি সরো দিরুচ্যতে'। ইয়ায়,
পপাচ, আট; দিছে কর্তব্যেখিচি পরে কৃতাদেশ: স্থানিবং।
নিনায়, যয়:, কল্প:। আয়ুলুগাদেশয়ো: স্থানিবছেন দিছং।
আচীতিকিম্? কেন্ত্রীরতে। 'যঙীত্বং ন স্থানিবং'। এতদেব
জ্ঞাপকং অন্ত কার্যাং পরা দিরুক্তির্লিভাদিম্নিতি'। হেলঞ্জ—
জুহাব, তু-ভিতীর্কান্ পু—পুপূর্বগান্। "নিলোপোদিরুক্তেঃ
পরঃ, তেনাজাদেশ্বিভীয়ো দ্বিভবিত। আটিটং। "নৌ কৃতং
স্থানিবদেব"—অজহবং।

৪। হলাদিঃ সংযোগে শর্পুর্বস্ত-খর্

⁽২) বি। বিরিতি লুপ্রথম্মকবচনম্। ত্রিচত্র্তাঃ স্থরিতি স্প্রত্যায় ।
নবেকসরশ্চেরিস্কচাতে, কথং, হল্ সন্নিহিত্ত বিরুক্তিরিত্যাহ একাঞ্জিত
একোহচ্ অবরবো বত স তথা। অজ্বলসম্পারঃ সমাসার্থঃ অবরবত সম্পারে অস্ত্রিবাং, হল্ স্থিতাচোরিক্লিরিতি সিন্ধু। তর্হি কথমটত্যাদেঃ
সর্মাত্রত বিব্চনংত্রাং। অতঃ কর্মধারর ইতি চেত্তরসমাসাভ্যুপর্বো বাক্য
ভেদঃ ভাদিত্যাহ বৌ কৃত্রিতি। আদ্যন্তবদিতি। অলাদেশ স্থানিবিদিতি
ব্যাচটে বিস্বে ইতি। অভ কার্যাং পরা বিরুক্তি স্তং কথ মাটিটিদিত্যাহ
বিলোপো বিরুক্তেঃ পর ইতি। আলিকজ্ঞাণিতবিষ্ব্যোক্ষ্মিত্যা ইত্যুনিত্যাত্যুপর্মানিত্যভিপ্রারঃ। কথ মজুহবিদ্যাদে হৌ শব্দত বিরুক্তিরিত্যাহ, পৌ
কৃত্মিতি।

সংযোগে সাঁত আদিছতো ইলেকাচ্ বিভবতি। ধ্বনদধ্বান, শর্পূর্বস্ত খয়্ শরঃ প্রাণেকাচ্ বিভবতি। চুম্চ্যোত।
নিটিপ্তিব, চক্ষন্দ।

१ । अक्षारमिक् जिस्मा सनम्त्रारमिक्छ ।

অন্তাদেখাতোদি ভীয় একাচ্ দ্বিভবিত। অটিটিষতি, শের-লোপে—আটিটং। বনদরাদেন—সংযোগেহন্তোহলেকাচ্ দ্বিভ-বতি। ব-উব্জ্ঞাজিষতি। ন-উন্দিদিষতি উঞ্চিষ্ঠি, দ-অ দ্ডিডিষতি, র-অর্কিচিষতি, অর্কায়িতু মিচ্ছতি অর্কিকায়িষতে।

७। नेर्सिंगियं नर् वी। (8)

ৰিং স্থাৰা। ঈৰ্ষ্যিয়িষতি, ঈৰ্ষ্যিষৈষতি।

१। श्रुग्यदेशीत्रदनी।

৯। कछ्यारमध्या

⁽৩) হলা। ইহ হল গ্রহণমাদিভূতক হলোহিবঁচনং ন পুনবর্ণমাতৃক্ষ, ইতর্থা অচিক্ষিতীত্যালো পূর্বক বিক্তিন হিতীয়ক্তেতি, এতেনৈতহ্ত্তং ভবতি সংযোগালেরাদিহল হিক্তাতে ন সংযোগমাত্রকঃ। শর্ পূর্বেশ মুদ্মাৎ স. ন পুন: শর: পূর্বে;, পপ্রাবিত্যত্ত প্রারক্ষ হিক্তেট বৈষ্ণ্যাপত্তে:।

(৪) ক্রিন্নের্ক গ্রার্থ:। (৫) এব্র্ট্রেম্প্যাত্রান্—ঔলিচ্দিত্যালয়ঃ।

अवाः वाहिक्रगार्छ। कर्षित्रिविछ। अनुतितिविछ। ১०। अङ्गारिन दिन्न। यो, यर्थि छुट्टेनारिनः।

অন্ধানের যাকারো দ্বিবিশ্বার । অশীয়িরিষতি অশি-শীরিষতি। হলাদের্নারো যথেকং দ্বিক্লচাতে। পুপুত্রীয়িশ্তি পুতিত্রীয়িষ্তি, পুত্রীয়িয়িষ্ঠি, শুপুঞ্জিত্রীয়িয়িষ্ঠীত্যাদি।

১১। পূৰীেহভ্যানীঃ।

ধাতোদি রুক্তত্ত পূর্ব্বোহভাগে সংজ্ঞ: তাৎ। ১২। দ্বিকক্ত জক্ষাদিষটে কৃষ্ট্যন্তং।

দিক্তিমুভাং-জক্ষাদিষট্ককাভ্যস্ত সংজ্ঞঃ স্থাৎ। জুইবি দিদভি, জক্ষতি। জক, জাগু,দরিদ্রা চকাস্থ, শাসূ,দীধী। অভ্য-স্ত্রপ্রিদাঃ-অন্তেহিদভ্যস্তাদিভ্যেবমাদয়ঃ ।

১७। निष्-मन्- छड्-यड्-नूर्ने उन्छाम्या

এর ধাতোদি রুক্তি: স্থাৎ। উণু নাব ডুটোকে, চিকীর্ষতি চেক্রীয়তে। যঙ্ দানিধ্যাৎ যঙ্ লুকি চ। চর্করীতি চর্কৃতি। এতৎ পৃথগুপাদানং খলু স্থাপয়তি, যঙি যৎকার্যাং তৎ যঙ্ লুকি ন ভবভীতি। অমভ্যাসন্যেতি কিমৃং চেক্রীয়িষতে। অস্থানিবস্থামলিড়ামি দ্যাঞ্ত্রে ।

১৪। জুহোত্যাদেঃ কর্ত্তরি मার্বধাতুকে।

এষাং কর্ত্তরি সার্বাধাত্কে বি: স্থাৎ। জুহোতি বিভেতি জিব্রেতি জিহীতাং অমিমীত জহাৎ।

১৫। शर्मभाजीक्वावीक्वासी । (७)

चनरक्षाः इशिष्ठस्थः भारमव बिक्नाहरू । चार्कीरक्क-कृत्युः।

⁽७) नेक्र । माध्यक्रभावाः क्रिवादाः भूनः भूनः अर्वाखेवाजीकृत् । प्रका

ভুক্তা বজতি, নদী মবক্ষণ মবক্ষণমূপস্ণতি, বদতি বদতি,
লুনীহি লুনীহি ইত্যেবায়ং লুনান্তি, আমন্ত্ৰে—ভীম! ভীম!
পশ্য পশ্য। যুগপদ্যাপ্ত মিচ্ছা বীক্ষা। গৃহে গৃহে অখাঃ, নদীং
নদীমবক্ষণমূপস্পৃশতি, ইহাচ্যতর মাচ্যতর মান্য। ন সমাসে।
নদ্যবক্ষণ মাচামতি।

১৬। ত্রিশ্চতুরপি সম্ভূমে।

ত্বায়াং-পদং ত্রিশ্চত্রপি ভবতি। অহি রহি রহি:, পশ্য পশ্য পশ্য পশ্য।

১१। छ। मान्णशी जार्शृत्वर्षे वहने ममानवं ।

এর বিরুক্তং পদং বহুলং সমানবৎ স্থাৎ। গুণে-ছথ
ছথেন, প্রিয় প্রিয়েশ। সাদৃশ্যেপি গুণবচনস্থৈবেষ্যতে। পটু
পটুী, য়হু য়হী-পূর্বপদক্ত পুন্থং। মন্দ মন্দমুদিতঃ প্রযথোধং,
ভীত ভীত ইব শীতময়ুখঃ। পীড়ায়াং-গত গতা, নফ নকা।
আসুপূর্বে-জ্যেষ্ঠ জ্যেষ্ঠং প্রবেশয়, একৈকমক্ষরং জপতি।
বাছল্যাৎ মন্দং মন্দং মুদতি পবনঃ শ্চামুক্লো যথা ছামিতি।

५ । जेशर्यश्रुधमः मामीत्रीं।

এতে সামীপ্যে দ্বিঃ ভাৎ। উপযু পরি, অধ্যধি, অধ্যহধো আমং, সামীপ্য ইতি কিম্ ? সর্বভোপরিচন্দ্রমাঃ।

১৯। পরিরসমাসে বর্জ নে।

षिः छार । পরিপর্দধে: সমাসেত্-পর্দধি র্কৌদেব: ।

- प्रीव्यासभीनाः किवा क्ष्यक्षेत्राव्य त्रभवाश्च विष्यक्ष्यः। शृद्ध शृद्ध व्यवा दिस नर्स अन शृहाः वृत्रभविष्याः। क्षनगारशे क्-वात्मा वात्मा वस्योतः।

२०। छाटि शक्रुजी उँके नूरीव्कत्ति।

ডাচি পরে পদং প্রকৃত্যা বিউবর্তি। তাঁস্তস্ম তলুক্ত্ঁ চ।
অনুকরণে-পটপটাকৃত্য, খরটখরটাকরোতি। অনুকরণ ইতি
কিম্ ? অধাকরোতি।

২১। ইতরেতরাত্যোত্যপর স্পর্ব ক্লীবনৈকর্তে স্পাশ্ট স্ত্রীনপুংসকর্মোরাম্ বা।

ইদং ত্রয়ং কর্ম ব্যতিহারবৃদ্ধি নিপাতাতে। নিতামেকবচনং—ক্লীবঞ্চ, তেভাশ্চ স্ত্রীনপুংসকয়োর্বর্তমানেভাঃ স্থপঃ
আম্ বা আং। ইতরেতরং ইত্রেতরাং বা, স্ত্রিয়ো কুলে বা,
স্পর্কেতে। ইতরেতরেণ ইতরেতরাং বা স্ত্রীভাগে স্ত্রীভির্বা
কুলাভাগং কুলৈর্বা স্পর্কতে। এবং—অভোভাং, অভোদ্থেন
অভ্যোত্থাং, পরস্পরস্থ পরস্পরাং বা মিত্রে ব্যতিস্ততঃ।
পুংসি তু আম্ ন ভবতি।

२२ । यथादन यथायथम्।

অত্রেদং নিপাত্যতে। যথাযথং তাঃ সহিতা নভচরৈঃ।

२७। किष्टिष्वचिष्यभाषातीं।

এতো কচিদর্থে নিপাতেতে। বে বে বিদ:, কলহযুগায়োঃ, ঘন্দো নাম সমাসঃ।

२८। भकादनी यनायन । ठताठता मरशी वी।

এতে দিরুক্ত্যা বা নিপাত্যস্তে। চরাচরঃ, চলাচলঃ, পতাপতঃ, বদাবদঃ, পক্ষে চরশ্চলঃ, পতঃবদঃ। উক্তং দির্ব্বচনম্।

३५। अवाका व्यक्त विश्वीत । विश्वीत-खर्नेकी जी त्रींग कुँ कैं। (१)

ইতো পরে অব্যক্তামুকরণস্থাতো পুথা স্থাৎ। অপদান্ত-বচ্চ। অতো লুকি টকারাদেস্ত্তীয়ো ন ভবতি। ঘটিতি করোতি, ঘটিতি ঘটদিতি গল্পীরমমুদৈর্নদিত্য। আভীক্ষ্যে তু তকার সৈব লুখা, ইতো পরে। পট-পটেতিকরোতি, পটৎ পটদিতি বা। পদমিতি নির্ভ্যা

২৬। হ্রমৌ২ভ্যাসস্ট।

ধাতোরভ্যাসম্ম ব্রম্ব: স্থাৎ। যুগো জগ্নো জুঢ়োকে তুলোকে। ২৭। উর্ব্

অভ্যাসম্ম ধাতোঋ বর্ণস্থান্তবতি। বরুধে, চক্রে। ঋ৯বর্ণ-যোশ্চ সাবর্ণ্যাৎ—চক্রপে।

२४। क-श-होर टी-डिक्टिकेंड।

এষামভ্যাসানাং চঃ স্থাৎ। চুকুবে, চিখনিষতি, চেছিদ্যতে,

७ १० व्यः । व्यूष्ट्राय । अत्र विशेष्टि । स्कर्वार्थि ।

কুঙো যঙি কশ্চোন স্থাৎ। কোকুরতে, অকোকুরিন্ট।
৩০। ঘ-ঝ-গ-হোজঃ।

এষামভ্যাদানং জ: স্থাৎ। জ্বাদ, জ্বাম, জগাম, জ্ঞাহ, জুহাব।

⁽৭) অব্য । অশক্তিজ মসাধুশকরপমসুকরণম্। অব্যক্তমক্ট্মতুকরণং
বা, তক্ত চ সাদৃশ্যেনার্প্রভীতিঃ অভোক্তনিত্ব্যতামান্তিত্য ক্টবর্ণেন

তিহন্তিদ্যুত ইতি।

७५। हेक्ट्रशिवि जीशके अथटमी वर्षेक जर्भे।

অভ্যাসতা টুত্পোরিতীয়ত প্রথমো ভবতি। নিটিঠেব তথে, পকাল । ঝান্চ জেশ্— হচ্চত্র্যতা ভ্রীয়ো ভবতি। ভূচোকে দধো বিভর্তি।

७२। स्था-शार्त्कां डिएम-ध्न-छ-स्थै।

ঙিত্তি সকারাদে ধাঞোদস্থাপবাদে ধএবাবতির্গতে। ধংসে, ধংস্ব, ধংকং, ধতে, ধতাং, ধথা। যঙ্লুকি-ধাতঃ। দান্ত-শ্চেত্যেকে। ডিদিতি কিমৃ ? দধাসি।

७७। ब्राजि-स्रोति स्

অনমোরভ্যাসত্ত দিসূ ইত্যেতে) স্থাতাম্। দিপ্পতে দিপ্তা-ভ্যতে, স্বাপিন্যত্ত:-স্বাপরিষতি। ন মণস্তাদে:। স্বাপস্ততোঃ শিচ্—সিধাপরিষতি।

७८। निकारमे अ ने भार्यशाकुरके।

নিজির, বিজির, বিষু। এষাসভ্যাসশ্য গুণঃ স্থাৎ। নেনেক্তি, নেনিজ্যাৎ, অনেনেক, বেবেক্তি, বেবেষ্টি। সার্ব্বধাত্ক ইতি কিমৃ ? নিনেজ।

৩৫। অর্ক্তেরিয়ঃ।

অস্তাভ্যাদস্য ইয়: স্থাৎ। ইয়র্তি, ঐয়ঃ, ইযুয়াৎ। দার্কিধাতুক ইত্যেব—আর।

७७। श्र-क्कारमति हैं।

এষাং সাক্ষণাত্কেহচ ইৎ স্থাৎ। পিপর্তি, অপিপঃ, অপিপঃ, পিপুর্যাৎ। ডুভ্ঞ, মাঙ, হাঙ। বিভর্তি, অবিভঃ, বিভ্য়াৎ, মিমীতে, জিহীতে।

७१। निर्धि जूदैरीवह । (৮)

লিটি পরেহভ্যাসম্র ভূবোব: স্থাৎ। বভূব।

७৮। विज्ञानि-वार्थेत्रवर्धे हेनै यव-त्योर्वाकारमें वि-क्षि-म्या

বচ্যাদের্জ্যাবয়িত্যাদের্ব্যথেশ্চ লিট্রভ্যাসয়ের্যবিয়োরিণ্
ভাৎ। উবাচ, ইয়াজ, বিয় উবায়। ব্যক্তামে বিজিম্ম ইত্যেতে
ভা:। বিব্যায়, বিব্যথে, জিজ্যো, স্ত্রাপ। অবেঞ ইতি বেঞ্
রূপজ্যৈব নিষেধো-নাদেশস্ত। ববে।।

৩৯। আনট্টিউ ঋত্পধা-শ্-দ্বিহলাম্।

এষাম ভ্যাসস্থাচি পরে অতঃ স্থানে আন্ ভবতি। আনর্দ্ধ আনৃণত্থ, অশ্-ব্যানশে। দ্বিহলাং-আনঞ্জ আনঙ্গ। নাঞ্চেঃ। আছি আয়ামে—আঞ্, আঞ্জুঃ। অচীতি কিম্? চচার। দ্বিহ-লামিতি কিম্? আট।

80। इंदे मनिं।

খত ইত্যেব, সনি পরে খভ্যাসম্ম খভ ইদ্তৰ্তি। পিপা-স্তি, পিপ্কতি।

85। उँ श्र-यन्- उँ रवन शर्ती।

⁽৮) লিটি। ইহ পাণিনিমতে ভবতের ইতি শতিপা নির্দেশাৎ কর্জব্যেবায়ং বিধিরিতি কেচিৎ, তদস্তে ন মন্তন্তে স্থনোতি স্বতীত্যাদৌ শতিপা
নির্দিষ্টেহণি ভাবকর্মণোর্দ্ধিদর্শনাৎ। নব্যাস্ত মতভেদাৎ বিকল্পমিছ্নস্তি,
তেন, তৈইবীংষি জুহবামভূবির ইত্যাদি মাম প্রয়োগক্ত সিদ্ধিঃ। বোপদেবমতেহণি বভূবে বুভূব ইত্যাদি রূপমন্ত্র্য অক্ষমতেহণি পাণিনিপ্রামাণ্যাকুণবক্র্পাণার্কেতি বক্তব্যম।

অবর্ণরে প্রর্গে যণি জকারে চ পরে সম্মভাসের উকারত ইৎ স্থাৎ। পূ-পিপাবরিষতি, বিভাবরিষতি, যণি যিয়াবরিষতি, রিরাবরিষতি, লিলাবরিষতি, জু: সৌত্র:জিজাবরিষতি, গৌ-কৃতং স্থানিবদিতি স্থানিনোদিরুজি:। অবর্ণর ইতি কিম্ ? বুভূষতি।

৪২। ত্রা-ক্র-ক্র-ক্র-প্রত্-চ্যক্তাং বা।

এষাং য়ণ ব্যবধানে ওরিদ্বাস্থাই। পিপ্রাবরিষতি পুঞা-বরিষতি, দিদ্রাবয়িষতি, শিশ্রাবয়িষতি, সিপ্রাবরিষতি, পিপ্লাব-য়িষতি, চিচ্যাবয়িষতি চুচ্যাবয়িষতি। অবর্ণ পর ইত্যেব পুঞাষতে।

৪৩। গুণো যন্ত লুকোঁঃ।

যঙি যঙ্লুকি চাভ্যাদ্র গুণঃ স্থাৎ। লোল্যতে লোল-বীতি।

88। नीट्यीश्नागमञ्जीउँ:।

যতি যত লুকিচাবিদ্যমানাগমস্তাতো দীর্ঘ: স্থাৎ। শাপঠাতে, পাপঠীতি, অশাসীতে, অশাসীতিশ অনাগমদ্যেতি কিম্? জন্মতে।

৪৫। নীরত্তে বঞ্চ-অংসু-ধ্বংসু-ভংশু-কস-পত-পদ-ক্ষন্দাম্।

যঙ্ যঙ্লুকোরেষামভ্যাসস্যান্তে নীঃ স্যাৎ। বনীবচ্যতে বনীবঞাতি, সনীঅস্যতে সনীঅংশীতি, দনীধ্বস্ততে দুনী-ধ্বংসীতি, বনীঅস্ততে বনীঅংশীতি, চনীকস্ততে চনীক্ষীতি, পনীপত্যতে পনীপতীতি, পনীপদ্যতে পনীপদীতি, চনীক্ষ-দ্যতে চনীক্ষীতি।

৪৬। অন্নগধঙ্মাঁ জপ জভ দহ দন্শ-ভঞ্জ পশীক্ষাব্যারী ইত্তবীদী।

যঙ্লু লুকোরেষামভ্যাসন্যান্তেং নুষারাগম: স্যাৎ!
স চ পদান্তবচ্চ বা পরস্বর্ণার্থ্য। অচুপধ্তমান্তানাং, তন্তভাতে
তংতনীতি, জঙ্গরতে জঙ্গমীতি। জপাদে: জঞ্জপাতে জংজপীতি,
দলশাতে দংদশীতি, যঙ্লুকি চাস্য ন লোপ উক্তঃ। বস্তজ্ঞতে
বংভঞ্জীতি, পশবদ্ধনে-পম্পাতে পংপশীতি। অদিতি তপরঃ
কিমৃ ? বাভাম্যতে।

৪৭। চরফলোঃ পরীহৃতী।

যঙ্বঙ লুকোরনয়োরভ্যাসস্যান্তেহ সুস্থারাগম: স্যাৎ। প্রক্রতে রত উচ্চ। চঞ্র্যতে, চংচুরীতি, চঞ্রঃ। পক্ষ্ল্যতে পংফুলীতি।

८৮। उंडिं है।

পুনরুৎকরণময়ঙ্লু গর্থং। ভাদো চুমত উদ্ভবতি। চূর্তিঃ, ঞি-ফলা-বিসরণে; প্রফুল্তং পদাম্।

8a। त्री अग्रयार्थे। ^

ঋশাধ্যস্য ধাতোরভ্যাসস্যান্তে রী: স্যাৎ। যঙ্যঙ্লুকোঃ পরত:। বরীর্ত্ততে, বরীর্তীতি, পুরীপৃছাতে।

१०। क-तिरकी है लूकि।

समाधामा धारणार्थं न कि समाममाध्य स्तिरको माछ। म ।
तीम्ह । नर्नार्ख,नित्तनर्छि नतीनर्छि । अवः नम् जी । नित्नृतीि ।
नित्नित्तीला । समाधारमान,काथाणि । उमारको-काण्णः, कातीग्रा (वर्णारक । रिक्षिण्यर्थं स्त्र वि ये देकिम्बर्धि ।
कातीणीं कातीग्रीजीका नि ।

(८)। अउन्हा

ঝনন্তস্য চ ধাতোরভ্যাসস্যান্তে রু-রিকো স্যাতার।
রীশ্চ। চর্কর্ভি চরিকর্তি,চরীকর্তি, চর্করীতি। ঋ-অর্থ্রি অর্থীতি
অর্থারীতি অর্থ্য অর্থতীত্যাদি। তপরঃ কিম্ ? ক্-চাকর্তি,
করোতেশ্চর্করীতং, যঙ্লু ক্ সংজ্ঞায়াম্।

५२। (११-७ के निर्माणियतार्षे महाँ पार्में निष्टिं। (२)

চঙি পরে গে পরতো ধাতোরভ্যাসম্য লঘো ধাতুবর্ণে পরে সম্বং কার্যাং ভবতি। লঘিণাদীর্ঘণ্ট। অপীপঠং, অবীভন্তং, ওরিছং—অপীপবং, অবীভবং। এদ ত্রু জ্রু জ্রু ছাঙাম্বা। অপুপ্রবং, অপিপ্রবং, অনুদ্রবং, অনিদ্রবং, অলক্রবং, অনিজ্রবং, অলভিবং, লঘাবিতি কিম্ লম্বর্গ্রাভাবাম্নার্গরং, অনিলিপং। আটিটদিত্যক্র গে পরে লঘুপরত্বাভাবাম্নার্গরং। গাবিতি কিম্ লম্বর্গাভাবাম্নার্গরং। গাবিতি কিম্ লম্বর্গাতো লুকি অচকথং। দৃশদমাঝ্যাতবান্—অদৃশং, ঘটং কৃতবান্—অন্বর্গং। কথং অবীবদ্ধীগাং পরিবাদকেন। গে গিলোপে গ্যাকৃতি নির্দ্ধেশাং দিয়ং। জ্রাদেং জর প্রথ আদ স্মৃ দৃ স্তু স্পৃশ। অতত্বরং অসম্মরং অদদরং অভস্তরং। উর্ণোন্দার্গ্রং। প্রেণিন্নং । ত্রাণি

⁽১) পৌ। সনীব সবদিত্যথ:। অত্ত ত্বরাদের্যর্জনাদনেকবর্ণ ব্যবধানেছাশি লঘুনি সবং স্থাদিতি মতেন অজীজাগরদিতি কাতন্তং তর্মনোরসং, বতো বেন নাব্যবধানং তেন ব্যবহিতেছাশি স্থাদিতি। অচীকর্মিত্যাদাবৈক্ষণ ব্যবধানমান্ত্রপরিহার্মাভিরতে, নত্তেকবংশি বত্তরাদিবর্জনিং তদ্চিক্ষণ-ক্ষিত্রাদিত্যাদি, অনে কবর্ণব্যবধানক্ষাণকং স্বান্ধিবর্ত্ত দ ক্ষিত্রিল

७७। गटनित्री।

গণয়তেগে চিঙি সম্বদ্ব। দ্যাৎ । অজীগণৎ অজগণৎ, পর্বভীয় ইতি মাবজীগণঃ।

५८। विके किरकेरीदर्वे वे ।

ে প্রে চণ্ড্যনয়োরভ্যাসন্য ইকারস্যাদ্বা স্যাৎ। অববেইৎ অবিবেইৎ, অচচেইৎ অচিচেইৎ। ইত্যভ্যাস্ত্রিং।

৫৫। উপধা হ্রমৌইনগ্লোপিশাস্ দিতাম্।

চঙি পরে ণৌ পরত উপধা হ্রস্থঃ স্যাৎ। অচীকরৎ, অজী হরৎ, অসীসরৎ। উপধাহ্রস্বে ক্বতে দ্বিক্তনং মাভবানটিটৎ উপধেতি কিমৃ? অচকাজ্কৎ। অনগ্রোপিশাস্থাকামিতি কিমৃ ? মালামাথ্যাতবান্ অমমালৎ, মাতরং অমমাতৎ, শাসেঃ অশশাসৎ ঋদিতাং রাধু, অররাধৎ, চৌক—অডুটোকৎ।

৫৬। ভ্রাজ ভাষ ভাস দীপ জীব মীল পীড় কণ রণ বন ভন শ্রণীয়া।

এषाः त्नी ठढुानेशा **इत्या** व। मार। चवलां कर,

দিইমিতি। অবীবদদিত্যত্র নিলোপ ইত্যাদি। নিপদমত্র জাতিপরং জাতে-রেকত্বারিত্যত্বাচ্চ সর্বাহাবছানং নত্তয়োপিত্বং ন চ জাতিব্যতিরিকোনান্তীতি বাচ্যং, জাত্যাশ্রয়ং ব্যক্তেরের সত্বান্তর্হি তল্লোপেহয়োপিত্বাৎ কথং সহদিতি মহান আহ ব্যাকৃতিনির্দ্দেশাদিতি জাতিব্যক্ত্যোরনক্তবমিতি সাংখ্যসিদ্ধাত্বা-শেরণাং। তর্হি কথং নিলোপ ইত্যক্তমিতি চেং তত্তিরোভাবনিবন্ধনং ন তৃ সর্বাধা লোপোহন্তীতি। তথাচাত্বং সাংখ্যাং, নাসত্ৎপদ্যতে ন চ স্বিনক্ততি উংশক্তিবিনাশরোরাবির্ভাবতিরোভাবক্রপত্যানিতি। অবিভ্ৰম্প, অবভাষ্থ, অবীভ্ৰম্প, অবীভ্ৰম্প, অচকাণ্থ, অচী-কণ্থ, অবভাশ্থ, অবীভণ্ড, অশ্ৰাণ্ড, অশিল্ঞণ্ড, ।

৫৭। আলুক্ পিবভেঁঃ কুভাভ্যাসবিখেঃ।

ণো চঙি কৃতাভ্যাদকার্যাস্য পিবতেরূপধায়া অভো লুক্স্যাত্। অপীপ্যত্ অপীপ্যতাম্।

(४। इंद दुई। वी है कि खट उँ।।

ণো চঙি তিষ্ঠতের পধারা ইত্স্যাত্। অভি**ষ্ঠিপড**্, অোবা অজিভিপত্, অজিভাপত্।

क्षा अविदेश

ণৌ চঙুপেধারা ঋবর্ণস্থ ঋদ্বাদ্যাত্। ইররারীমপ্রাদঃ। ইর্—অচীকৃতত্, অচিকীর্তত্, অর্—অবীর্তত্, অববর্ত্থ, আর্— অমীযুক্তত্, অমমার্ক্ত্।

७०। इज्जानगर्मी मन्मि मीटर्शी हैं उत्में।

সন্সকারে পরত ইজন্তাদেনীর্ঘঃ স্থাৎ। চিচীষতি চিকী-র্ঘতি তৃষ্ট্রবিত। হন জিঘাংসতি। ইঙোগমিঃ অধিজিগাংসতে। ভনেব্বা। তিতাংসতি তিতংসতি চ। সীতি কিম্? জিগ-মিষতি ভিতনিষতি। শি

७५। मर्ख्यी भ्-िशरी दिन् के हैं।

দক্তেঃ সন্দি ধীপধিপো আতম্ ী বিরুক্ত লুক্ চ। ধীপতি ধিপাত। নীভ্যেব দিদন্তিয়তি।

७२। घू-भी-भौगित हमें।

এষাং সন্সি অচ ইস্ভবতি। দিয়ক্ত ক্ত্চ :- निक्-

সতি, ধিংসতি। মীঞ মিংসতি, ঞিকাত্ভয়পদী মিংসতে। মা মাঙ মেঙাং মা, প্রমিৎসতি প্রমিৎসতে।

৬৩। রভ লভ শক গতপদামিৎ।

এষাং সন্সি অচ ইং স্থাৎ। দ্বিল ক্চ। অপরিপ্রতে। আরিপ্রতে। লিপ্রতে। শিক্ষতে। পিৎসতি। উৎপিৎসতে। গীত্যেব—পিপতিষ্ঠি।

৩৪। রাথোঁহিংসনে।

আচ ইৎ স্থাৎ। দ্বিলুক্চ। অপরিৎস্তি। হিংসন ইতি কিমৃ ? আরিরাৎস্তি।

७०। अर नेत्। जाश्रुक्टरनेतीर।

এষাং সন্সি অচ ঈরীতো স্থাতাম্। দ্বিল্ক্চ। ঈৎ সিতি, ঈক্ষতি, জ্ঞাপেণিলোপে জ্ঞাপ্সতি। সীত্যেব অর্দ্ধিষতি। জিজ্ঞাপয়িষ্তি, ইব্তুর্দ্ধেতি বিকল্পেনেট্।

জিজ্ঞপিয়িষতি, ইবুন্তর্দ্ধতি বিকল্পেনেট্। ৬৬। মুটেরৌদ্ধী কর্মকর্ত্রি।

অস্তাচ ওৰাস্থাৎ। দ্বিলুক্চ । মোক্ষতে বৎসঃ স্বয়মেব সুমুক্ষতে বী। কর্মকর্তিনীতি কিমৃ ? মুমুক্ষতি বৎসং গোপঃ অচ ইতিনিয়ত্য্।

७१। पिछी मिति निहि

লিটি দেখে। দিগা দিগাতে।
১৮। অদেশী প্রতিপ্র ক্ট। দিগা দিগাতে।
১৮। অদেশী প্রতিপ্র কাদি শাসি দদেশী ইণিতি।

অণিতি লিটি পরেহনাদেশাভ্যাদক্ত ধাতোর্যধ্যহসংযোগ-

পেচিথ। পেচে। অনাদেশভাগেতেতি কিম্ ? বভণ্ডুঃ।
অসংবোগপার্থ ইতি কিম্ । ততকুঃ। তৎসরতুঃ। তৎসরুঃ।
শশক্থ। পপক্থ। ত্রেণিতীতি কেকিম্নে রর্মণ। পপাচ।
অন্তণাদেরিতি কিম্ ? বিশশরতঃ বিশশরিথ। বাদি ববলে
শস-বিশশসতুঃ। দদ-দদদাতে। রধিনশ্যোঃ সংযোগেহপ্যকুমি।
রেধা, নেশা। নেহ রর্দ্ধিব।

৬৯। তৃ ফল ভজ ত্রপ প্রস্থ প্রস্থ দন্ভাং নাল লুক্।

এনামণিতি লিটাত এৎ স্থাৎ । ছিল কৈ চ। নোপান্ত স্থান স্থা চলুক্। তরতেও ণার্থং বচনস্। তেরতৃঃ। তেরিথ, ফেল্ঃ কেলিথ, ভেজুঃ ভেজিথ তেপে তেপিরে, ভোথং, ভোথিথ, তোপুঃ, তোথিথ, দেভুঃ, দেভিথ। ভাছ গ্রন্থ দন্ভাং কেচিদেত্বং বিকল্লবন্তি। নশ্চলুক্ নিতানেব, তনাতে। শঙ্গুঃ জ্ঞাথুঃ দদভতুঃ।

পত। নশেলু ঠ্পমি চাঁ

পুষাদ্যঙ্ অনেশম্। মনেরাশিষ্কে। মেনকা।

৭১। রাটুধা হিং দারাম।

অস্তা বিধিবলাদাত এৎ স্যাধ। দিল কুচ। অপরেধতঃ।
অপরেধিথ। হিংসায়ানিতি কিম্ ? আররাধতঃ।

१२। वै जू जगू जिम विभि क्षिक्षिमीम्।

ক্ষানিতি লিট্যোমবর্ণস্থ এঘা সাহ। দিল কু চ। তেক: । ভলক: । তেরিগ। জজরিগ। এবং ভেমুঃ, বলুমুঃ, কুত্রেছঃ, ভত্তকঃ, বেমু: বৰমু:। ফণাদেঃ ফেণু:। পফণু:। ফণ, রাজ্, ভাজ, ভাস, ভাস, খামু, স্বনঃ।

१७। मिर्हि इक्षित्रको श्विका छैं। शतरेयशर्प ।

অক ইত্যবর্ণ উত্তরার্থঃ। ইগস্তস্ত সিচি পরিমাপদে রুদ্ধিঃ
আং। সজৈনীং। অংশীংশিং। অলাবাং। অশ্বিজাগুরিতি কিম্?
অর্থীং। অজাগরীং।পরিমাপদ ইতি কিম্ন্যজেন্ট। বোর্ণোঃ।
প্রোণ্বীং প্রোণ্বীং, অগুণ পক্ষে প্রোণ্বীং। ক্ষীতি ক্রেন্টেও
বান্তর্যেতি যাবং।

१८। अभिटी श्लास्या।

সিচি পরস্থৈপদেহনিটোহলন্তস্থাকে। বৃদ্ধিঃ স্থাৎ। অপাক্ষীৎ, ভ্ৰদৃদ্ধ অভাকীৎ, রন্ত অরাজ্কীৎ, অভৈৎসীৎ অনিট ইতি কৃষ্? অদেবীৎ।

१৫। रेटि नयुर्वेद्भव्ये नाख्य वन बन्नेम्।

লান্তরান্তাদেরিড়াদৌ সিচি পরশৈরপদে অতো রক্ষিঃ স্থাথ। অচালীং, অকারীৎ, অবাদীং, অব্রাজীং। লঘোরিতি কিমৃঃ অব্দ্রীত্।

१७। वीग्रेटिंग्येकार्टी श्लारमेतर्म्यु कन वथ श्रामिन्स्

লান্তরান্তাদেরকাত হলাদেরেকাচো হ্ মৃ যন্তাদিবজিত অ ইড়াদো সিচি পরশৈপদেহতোরিদ্ধিনাস্যত্। অপাঠীত, অপঠীত, অভানীৎ, অভনীত্। একাচ ইভি কিমৃ ? অচকা-নীতী অহম্যন্তাদীনামিতি কিম ? হ পথাহীথ। ম স্বমীৎ। য অব্যারী । কণু অকণী । চনোবণ-অবধী । খস অখসী । এদিতাং অহনীত্ অলগীত্। সিচী কি নির্ভষ্

११। ৠउँ इकेशशाशांकि।

অগুণর্দ্ধিবিষয়ার্থং বচনম্। ৠদন্ততা ৠত্পদতা চ ধাতো ৠ ত ইর্ আ ত্। কিরতি,। কীর্যাতে। দিকীর্ধতি। আ**ত্তীর্ণম্।** কুত কীর্ত্তিয়তি, কীর্ত্তি। পরতাদ্গুণর্দ্ধিত্যাং বাধ্যতে। বিচকরতুঃ, বিচকার॥ ন স্থাঃ॥ অনুন্যতে।

१५। डेर्लिं।

পবর্গাত্তর সা ৠত উর্ স্যাত্। পিপূর্ত্তঃ, পিপুরতি, পোপূর্বাতে, পুপূর্ষতি, বুসূর্ষতি। পরতাদ্গুণর্দ্ধী, নিপপক্ষঃ নিপপার।

৭৯। শিতি মিদের্গ্রেগ

निकामा छनः मार्क्। (समाकि, व्यासमार्क्।

ঋবর্ণান্ত গুণঃ স্যুত্। আরত্, অজরৎ, অদর্ত্। ৮১। ঋসংযোগাদ্যতোর্যক্যত লোভ ্যেরু।

এষর্ভেঃ সংযোগাদেখন দস্তদ্য চ গুণঃ স্যাত্। অর্থতে অরার্ভে, অর্থাৎ, অর্থান্তাম্। অর্থতে, সাম্ব্রতে, অর্থাৎ, ধর্যাতে, ধর্যাতে। ন স্টঃ কুঞো বগাদিমু । সংক্ষিয়তে, সঞ্জেয়তে, সঞ্জেয়তে, সংক্ষিয়তে, সংক্ষিয়তে, সংক্ষিয়তে,

সঞ্জেরতে, সংক্রিয়াৎ। ৮২। ঋচ্ছুতোশ্চ লিটি।

तिि अष्ट-क्षेपखरशयं मरयोगीनृत्रां अनः मुहोड् । चानष्ट् वानष्ट्रं शहः, निक्रगकः, द्वकः । स वाकः । मरोगी- গাদৃতেঃ সম্মকঃ। দধ্বকঃ। সঞ্চক্ষকঃ। ণিতি পরস্বাস্থৃদ্ধিঃ নিজগার॥ ৠতোন ক্সো॥ ভিতীর্বান।
শুদুপুষ্ঠেমী বাঁণ

এষাং লিটি হ্রস্বোবা স্যাৎ। শব্দু:। শশরু:। শশুবান্। भिनौर्वान्। पकः। पपतः। পঞः। प्रभकः।

৮৪। ইগ্লঘূপধয়োঁ কর্মী। ক্টাক্ডিতি।

প্রু দোসে নঞি কিঙতোহ অস্মিন্ পরেইগন্তস্য লঘ্পধন্য চ ধাতে।রুশোশ্চ বিকরণয়োগুণঃ স্টাত্। জয়তি। বর্দতে। করোতি। চিনোতি। লঘুপধস্যেতি কিষ্ ! সৃদয়তি। অক্ঙ-তীতি কিন্? জিতং। বিভিন্নঃ। চিকুতঃ। নিয়মঃ কিন্? व्यक्तिमः — हेटो न खनः

७०। निशारमधनारमी वन्नम्।

निथनः. (नथनः, निथनोत्रः, (नथनोत्रः, निथाः, (नथाम्। নিত্যং—লেখনী মীলনম্ । ষ্ঠিবু — সিবোদীর্ঘশ্চ । নিষ্ঠীবনং, बिट्छवनश्। भीवनः, भिवनश्

৮७। जा छेत्रवीशन् छि९ प्रा

প্রতিষেধবৃদ্ধিবিষয়ে চ জাগত্তিগুণঃ স্যাৎ। জাগরিত:। জাগর্যাং। জাগরয়তি। জাগরকঃ। অবীধল ডিংস্বিতি কিম্? উবাদিকেরিঃ জাস্বিঃ। ইণ্ অজাগারি পল্ জজাগার। পরসাধ লি বোত্তমে। অহং জজাগরেতি। ঙিতি জাগুরাত্।

५१। त्राई छन्ट्रिंगिंड।

্পোছোহচিওত উৎ স্যাত্। উপগৃহতি। নিগৃহনং। নিগৃ• হুৰ্যতি। ৰচীতি কিমৃ ? মোক্ষ্যতি। গোছ ইতি কিমৃ ? গুছা।

৮৮। মূজে वृह्यिः मश्रेलि क्छिम् है जू वी।

মূজেগুণাপবাদোর্দ্ধিং দ্যাত্। মাষ্টি। মাষ্টা । মাষ্ট্রিং। দনি কিছেহপি নিমার্ফ তি। ক্তিদ্চিত্বা। মম্জুং। মমার্জ্জুঃ মুজন্তি। মার্জন্তি। ব্যবস্থিত্বিভাষয়া—নিত্যং তুল্পরিম্জঃ।

৮৯। অহুপধেটোর্নিভি।

অতুপধস্য ইজন্ত চ ধাতোণিতি বৃদ্ধিঃ স্যাত্। পাচ-য়তি। পাচকঃ, নায়ং, ভাবঃ। কারয়তি সংবিব্যায়। ণেন্বৃদ্ধি-রিণাপনে। ঘটয়িষ্তে।

৯০। १नि दो उर्भ।

উত্মে ণলি বৃদ্ধিবাস্যাত্। অহং প্রপাচ প্রস্থা। চকার চকর বা।

৯১। ন'জন বধ মান্তানী মিণ্কতোরনাচমি কমি বমি যমি রমি নমি গমাম্।

জনাদেরিণি ণিংকৃতি চ রৃদ্ধিনাস্তি। অজনি জনঃ জনকঃ, অবধি বধঃ বধকঃ, অশমি শমঃ শমকঃ। অনাচনাদেরিতি কিম্ ? আচামি আচামকঃ,কামঃ, বামঃ,আয়ামঃ,রামঃ, প্রণামঃ গামুকঃ॥ জমের্গকে রৃদ্ধি শচুরাদিপাঠাছা॥ জামকঃ জমকঃ ঘণি আমশ্চাময়তেঃ॥ বেঃ শ্রেমের্ঘণি বা॥ বিশ্রামো রিশ্রমঃ।

कर। घटा दिन्द्रभी इस्ने कि

ঘটাদেশে বিন্ধনান্তি। দীর্ঘস চ হ্রম্মং সাৎ। ঘটরতি ঘটকঃ, ব্যথয়তি ব্যথকঃ, গময়তি গময়ঃ। উদ্ঘটিয়তি সংজ্ঞাম-য়তি ইত্যাপি চুরাদিপাঠাৎ। দীর্ঘস্য চ হ্রম্মন্ট। হেও হিওয়ুতি,
আ অপয়তি। ঘট ব্যথ প্রথ প্রস আদ স্থাদ কর্ম্ম দিক ক্রপ কিন্দি)

কল ক্রদ ক্রদ ঞিহর। ইতিষ্ঠিঃ। স্বর গড় হেড়। বট ভট পরিভাষণে। নট নৃতৌ, নট গতাবিত্যেকে। উক চক কথে রগেলগে হ্রগেইলগেষগে ঠগে সংবরণে। কগে নোচ্যতে। অক অগ কণ রণ গতো। চণ ষণ আণ দানে। চণ গতাবিত্যেকে। আথ ল্লথ ক্রথ ক্রথ হিংসায়াম্। চন্চু (বন্ধু) বন্ধু নোচ্যতে। জ্বল দীপ্রে। জ্বল হ্রল ক্ষল (ক্রণ) চলনে। লড় জিহ্বোমার্থনা মদী হর্ষপ্রেপনয়োঃ। আ আধ্যানে। ভূ ভয়ে। নূনয়ে। আ পাকে। মারণ তোষণ তেজন নিশামনেমুজ্ঞা। চল কম্পানে। ছদির্ উর্জনে। ধর্ন শব্দে। অন শব্দে। অন অবতং সন ইত্যেকে। জনী জৃষু ক্রুষু রন্জোহ্মন্তাম্ক। জ্বল ক্ষল নমামনুপ্রগাহ বা, মা সা বন্ধু বমাক। ন কম্যান্দ্রমান্ধান্ধির বা, মা সা বন্ধু বমাক। ন কম্যান্দ্রমান্ধান্ধির। অপস্থাদয়তি। ফণ গতাবিতি ঘটাদয়ঃ।

৯৩। ণমিণোদীর্ঘো বা।

পৌ ঘটাদেশনি ইণি চ দীর্ঘো বা স্যাত্। ঘটং ঘটং বা, অঘটি অঘটি ঘটয়িষ্যতে ঘাটয়িষ্যতে। শমং শমং, শামং শামং, অশমি অশামি, অশংশমি অশংশমি। অকঞ্জি অক্ষাঞ্জি। অদক্ষি অদাকি, অহিড়ি অহীড়ি। নুজন বধ, অজনি অবধি।

৯৪। ने खनत्रको निवाम्र द्यानिनाम्।

এষাং গুণ বৃদ্ধী ন স্যাত। য়। পিবতি কুরুতে। গিয়োহনিণি পিবাদিছা। অধ্যগীউ, ইণি অধ্যগায়ি। অশ্লোপিনাং
গুণয়তি লঘুরতি। চুরাদে কথবরপুণদেয়োহদন্তাঃ, গো
ভেষানশ্লোপিছাত্। কথয়তীত্যাদি। দীধীবেব্যে ছান্দ্রো
তিরোশ্চ পিবাদিছম্। আদীধ্যকঃ।

৯৫। कृष्टीरमंत्रिं।

ঁ অণিতি প্রত্যয়ে পরে কুটাদেও ণরন্ধী ন ভবড়ঃ। কুটিভা পুটিভা, সংকৃটিভব্যং, অধুনীৎ। অণিতীতি কিম্ ? ঘণ কোট: र्गा उँ ९ दका छे शक्ति।

৯৬। বিজেরিটি।

অস্তেটি গুণোন স্থাৎ। উদিজিতা, উদিজিত্ং। ইটাভি কিম্ : উদ্বেজনং। গাস্তাৎ উদ্বেজিতা রুষ্টিভিরিতি কুমার:। ৯৭। বৌর্ণিটি।

উর্ণোরিটি গুণরন্ধা ন স্থাতাং বা। প্রোর্ণবিতা প্রোর্ণবিতা াসচি প্রোণুবীৎ প্রোণ্বীৎ।

১৮। में जुरुर्द्धीन (इत्नारही ।

ভুবো লুঙি সূঙো লোটি গুণো ন স্থাৎ। অভূৎ, অভূ:। श्रुरेव, श्रुवावरेह।

৯৯। যন্তাদিলুগার্দ্ধগতুকে। বাতঃ।

यक्षानिनुभस्तानामार्क्षभाष्ट्राक स्वत्रुक्षी न ख्वरः। त्यान् नः, চঞ্বঃ, বেভিদিতা, মরীযুজঃ, নেক্তয়তি বোভ্বয়তি চরী-ক্রয়ভি,তাভূ–ভাতিরয়ভি ভাতিরাঞ্কার। ক্যবুক্। সমিধিতা সমিধকঃ। বিব্রোপস্য চ। বিশ্বরাতি রবিঃ। অতোর্দ্ধিবরা। পাপাচয়তি পাপচরতি বা।

১০০ ু ন লঘূপান্তাভ্যস্তভাটি পিতি সাৰ্ধাতুকে।

লঘূপান্তত্ত বিরুক্তত ধাতোরজাণো পিতি সার্ব্যাত্ত্ গুণো ন স্যাৎ। নেনিজানি অনেনিজং বেভিদীতি চঞ্রীতি।

বিবস্তস্ত চ। গোহুছতি। অচীতি কিমৃ ? বেভেতি। হলি দীৰ্বছে চঞ্জি।

১০১। इंडे यहीं संशक्ति।

যান্যজানিবজিতে আর্দ্ধাতৃকে পরভোধাতোরুতরে ইড়া-গমো ভবতি। ভবিতা লবিষীষ্ট পঠিয়তি। অয়চীতি কিন্ ? ভব্যং ভবনীয়ং। আর্দ্ধাতুকে বিধিরাপাদপরিসমাণ্ডেং।

১०२। युष्य भृष्य मित्रिक्ष्य-तथा नि-मतिष्ये ।

এভ্যোহয়চ্যাৰ্দ্ধাত্কে ইড়্বা স্থাৎ। স্বৰ্জা স্বরিতা। সৃতি
স্যত্যোঃ সোতা সবিতা। ধোতা ধবিতা। উদিৎ গাঢ়া গাহিতা।
গোপ্তা গোপিতা। মাই। মাৰ্কিতা। নিকোকী নিকোষিতা
রদ্ধা রধিতা, রধি নশি ভূপি দৃপি ক্রন্থ মুহ সুহ সিহ ইতি
রধাদি। দরিদ্রোতা দরিদ্রিতা দিদরি দ্রোসতি দিদরিদ্রিত।

५००। न भकारमंह।

শকাদেরিগান্তি। শক্তা শক্ষাতি, বক্তা বক্ষাতি। অনি-ডেক: শকি: কান্তে, চান্তে পচি বচীৰিচিঃ। সিচিমু চিরিচীটেক শ্ছান্তে প্রছিরুদাহতঃ। ভজি ভঞ্জি যক্ত্রি তাজি রঞ্জি রুজঃ, শুজি সঞ্জি বিজি স্বাজি মজ্জি ভূজঃ। যুক্তি ভূজিজ নিজোছপিচ জাতবংশ, গুণসিদ্ধভির্মির ইত্যানিটঃ। জদিং হদিং স্বাদ্ধি ভিদি চিছিদি ক্ষ্মীন, শদিং কদিং স্বিদ্যক্তি পদ্যকী থিদিং। ভূদিং মুদিং বিদ্যতি (১) বিন্দ ইত্যাপি, প্রতীহি দান্তান

अविशारि विकारें, जिल्ला त्विक, विटर्ज विकारिक विकार विकार

দশপঞ্চ চানিটা। বিন্দ ইতি শ্বা নির্দেশ: । জুধি রাধি ক্রিণকুধিবুধাতয়ো, ব্যধি শুধাতি সিধাতি বৃদ্ধি যুধা। সহসাধয় ইতানিটোধগণে, হনি মন্ততি চেতাপি নাজগণে।
অপি বিপি তপি তিপ্যাপি শপোহিশি ক্রিণি স্পি তৃপি ভূপি ভূপি
লিপি লুন্পি চহুপয়ন্চ পান্তগণেষ্থভান্তে যভি রভি লভয়োহপ্যনিটো মাতে যমি রমি নমি গময়ন্চ। শিষি শ্লিমী হ্রা
বিষি ছিমি বিষীন, শিষিং ক্রমিং পুষাতি শুষা তৃষা তীন্।
দিশিং দৃশিং দশিং মুশিং রিশিং লিশিং, ক্রমি স্পাদি জেশি
বিশোহনিটো জগুঃ। ঘসিন্চ বস্তিঃ সাতে, হাতে দহতি
সেহতী, দিহিছুহি লিছী রোহ, বহী নহি রিমেহনিটা।
য়াদ্দভাবনেকাটো রঞ্ রঙৌ রু ক্রু য়ু মুবাঃ। পু ক্র প্রঞ্
বি ভী শীতঃ, সেটোহজন্তা উদাহ্নতাঃ। এভ্যোহন্তে স্বস্তাঃ
সর্বেপ্যনিটা। ভোতা চেতা কর্তা। ক্রঞাদেণীর্ছছে লাক্ষিণকছায় ভবতি। চিকীর্ষতি তুন্ট্রতি বুস্বিতি।

১০৪। বর ন র তি তাদেরিতীভনাদেঃ।

বরাদো কৃতীয়ান্তি। বরঃ ঈশরঃ, ন-বাচ্ঞা, র-দীপ্রঃ, জিন্
দীল্ডিঃ, ত্র-বর্ত্তঃ, আদিশবাৎ কিশ্ বিহ্যাৎ, কু-ত্রমুঃ, তু জন্তঃ,
মণ্ ভত্ম, ত-হন্তঃ, থক্-কুর্চং, দি-কুক্ষিঃ, হু-ইক্ষুঃ, স-বৎসঃ,
ক-কল্কং, সর-অক্সঃ, এতে উণাদিকাঃ। অভণাদেরিতি কিম্?
ভণিতিঃ, নিপঠিতিঃ, সংকৃটিতিঃ, গৃহীতিঃ, সংকৃচিতিঃ।

30016 61

ইগান্ত। কৰ্মণি প্ৰস্নোতা প্ৰস্নোধীই। সতভিত্ প্ৰস্নবিস্তা।

১०७। कर्षेड्डईरि।

আন্মনেপদনি নিতাৎ ক্রমেরিয়ায় । প্রচিক্রংসতে উপক্রংস্থাত । তও ইরাৎ কৃতি চ । উপক্রান্তা । তও ইরাদিজি কিম্ ?
নিশ্বনিতা । তরত্যাদেস্ত্রমাদৌ বেত্যেকে । তর্ত্তুং তরিভুং,
তর্ত্ব্যং তরিতব্যম্ ।

১০৭। অন্যকোঁইজাগুঃ কিতি।

শ্রিঞ উগন্তাৎ কিতীগান্তি। শ্রেডঃ রুত্বা সূত্র সূতঃ কুত্র পূর্ত্ব জন্তা ক্রিয় জন্মেরপি নিবেশ্যিচ্ছন্তি। তন্মতেন জপুষ্। অভাগুরিতি কিম্ং জাগরিতঃ।

১०৮। मनि <u>थर छर छ</u>शारमन्ते।

গহাদেঃ প্রদান সনীপ্তান্তি। জিন্তুক্ষতি, জুবুক্ষতে, গুপাদেরনিছার্থে। জুগুপ্সতে তিতিকতে চিকিৎসতি। প্রদান শ্চ কিসাদগুণঃ। শিক্রীয়তি রুরুষ্ঠি।

১০৯। ঋ পূঙ্ শিঙশু কিরাদিভা ইট্।

এতে নিমেধবিকপ্পাপবাদঃ সনীট্ স্যাৎ। অরিরিষতি পিপবিষতি সিমায়িষতে, অশু অশিশিষতি। কু চিকরিষতি, গু কিগরিষতি, দুঙ্ দিধরিষতি, প্ত দিধরিষ্টে। প্রছ পিপু দিশেতি।

১১০। ইবন্তর্দ্ধ ভ্রমজ দন্তু শ্রি স্ যূর্ভরতি জ্ঞাপি সনি তুনি পতিভোঁ বা।

একাঃ সনীড় বা স্যাথ। ইবস্তঃ দিদেৰিষতি তুদ্যৰতি বা।
ক্ষিত্ৰিকতি সংস্কি। অসুজ বিভাজ্যতি বিজ্ঞাতি। দন্তু
দিদভিষতি ধিকতি শীক্ষাকি। আঞ্ শিক্ষায়িষতি শিক্ষীয়িত।
স্প্ৰিনিকি অমুহতি। যু বিস্বিয়তি যুম্বতি। উৰ্ণ ঞ

প্রোণ্নবিষতি প্রোণ্নুগতি। ভূঞা বিভরিষতে বৃভূষ্তি। জ্ঞাপণ্ডে: জিজ্ঞপয়িষ্তি, জ্ঞাপতি। সন্ সিমনিষ্তি দিয়াস্তি। তন্ ভিতনিষ্তি, তিতাংস্তি তিতংস্তি চ। পৎ পিণ্ডিষ্তি পিৎস্তি।

১১১। বৃতঃ

র্ঞ রঙঃ ৠতঃ দনীড়্বা স্থাৎ। প্রাবিবরিষ্ণু: প্রাবিবরীষ্ণু: প্রাব্ধর্থ। ৠতঃ তিতরিষ্ণ তিতরীষ্ণ তিতীর্ধ্। লাক্ষণি-ক্যামেহ চিকীর্যতি।

১১২। তিওঁ লোঙ্সিটোঃ সংযোগা-দ্যতিন্টীস্থটি

লোঙ্ সিচোরাল্নেপদে বৃতঃ সংযোগাদ্যদন্ত জিচ ইড়্বা স্থাৎ। বরিষীক র্ষীক। আন্তরিষীক, আন্তীষীক, প্রেরিষীক ধ্রুষীক। সিচি অব্রিক অব্ত আন্তরিক আন্তীক অধ্বরিষাতাং অধ্ব বাতাং। অস্টীতি কিমৃ ? সংস্কৃষীক সমস্কৃত ভন্তীতি কিমৃ ? আন্তারিকীম্ আন্তারিষু: নিত্যমিট্।

'১১৩। कृ मृ इ ङ् ख क्र व्यः व्यः दोने निर्हि।

এভা এব লিটি ইপ্লান্তি। চকুব চকুদ্ে সম্প্ৰ সম্বহে বর্ব বভ্ব বভ্বহে ভূমী ব ছুজ্ৰুব শুজ্ৰুৰ স্কুল্ম। অন্তটাত্যেৰ সঞ্জ করিব সঞ্জ্যারিষ। নিয়মঃ কিং বিভিদিব ভূপসেদিবান্॥ রধানে-ব্বেভ্যেকে ॥ রিশ্বনিক রব্দিক রেশ্বন্দ্রাহিশ মুক্ষোট্।

५५४। बर्जं चार्रिक्नों

ঝনস্তাৎ স্ত ফ্র প্রভাগের প্রনামান্তি। স্বর্থ ক্রার্থ্র খত একাচ ইতি বল্লব্যং। জন্তাগরিগ ইতি। স্থাদিরাহণ পর- विकल्लाभवामार्थः। ज्ञाब, ज्ञाब, ज्ञाब, ज्ञाब। व्यक्तिरंकाव मक्कित्व।

550 । ञन्जुक मृ**भवर**िश्निरों वी। (२)

শকাদিপাঠেছ নিটোছণস্তাৎ স্কিদ্শিভাকি অত্ত শ্চ থলীড় বা আছে। অণস্তাৎ প্ৰিণ, প্ৰাথ বা। জিগরিথ, জিগেথ বা। জুছবিথ, জুহোথ। স্কি, সমর্জ্জির সম্রষ্ঠ। দৃশি, দদশিথ দদেষ্ঠ। অত্তঃ শেকিথ, শশক্থ; বভ্রজ্জিথ, বভ্রষ্ঠ; জহুনিথ জঘন্থ। অনিট ইতি কিন্? লুলবিথ, জগ্রহিথ, তুধ-বিথ। অত্ত ইতি কিন্? কুরোহিথ, বিশ্রভদিথ। তপরঃ কিন্? ররাধিথ।

১১৬। अनार्खि इ विशिष्टा हेर्छ।

अजुम्बि श्रिक्ति विकन्ना भवाम हे हे नार। जानिश मन्तारमभाक । जमनिश । जातिश । वर्षतिश । व्याद्धावित — छेव-विश । श्राव्यारम्भियमार निवासिक जिजाबिन विश्वामन भवा । (वाक्क हे हे निक जव । मर्विवासिश ।

১৯৭। বদৌ সন্ধিকক্ত্যেকাজান্দ্যসঃ।

कृडिविकित्निकां कामखांक घरमण्ड वर्गाविष्टे मार्थ काविवान, श्वितान्। श्रीन्यान्। वम क्रिक्वान्। मिक्रिक्सकांकिङ किम् ! विविवान्, निर्ध्विवान्।

SSE । वो शम इस विम्र विम्र पृत्री

अत्कारताविष् ्या नार । क्यानन्, अवदान् । कप्रियोन

⁽২) **অ**থ, অকার: বিদ্যুত্তি বত্ত স**-অভং** ।

क्वश्राम् । विविधिकाम् विविधान् । विविधान् ।

SSA । सबनेह टिक्र

অভাবিত ইট্নাহ। করিয়তি। শহনিষ্থ, হনিষ্তি। ১২০। ব্যাদেশীক লোড সিচোঃ।

हेए गार । विधिष्ठे, जनविकाः । जन्नितार विधार । अन्नितार । अन्नितार । अन्नितार ।

ইট্সাং। উদিৰেন বিষয়ে প্ৰাপ্তে নিত্যাৰ্থং বচনং। অঞ্জিবতি,আঞ্জীং।

১২২। স্ত-স্থ-ধূঞঃ দিচাতত্তি। (৩)

ইট্সােং। অস্তাবীৎ, অসাবীৎ, অধাবীৎ। অভঙীতি কিম্ ? অস্টোক্ট, অসোক্ট; অবৈক্টি, অধ্বিক্ট।

১২৩। यम तम नमांजी ची है।

এভাঃ দিচীট্ স্যাৎ। স্বাপমশ্চ। অবংসীৎ, অবংসিন্টাং।
ব্যবংসীৎ, ব্যবংসিন্টার্। অনংসীৎ, অনংসিন্টার্। আদন্তাৎ
অ্যাসীৎ, অধাসীৎ। দরিত্রো বা । অদরিদ্রাসীৎ, অদরিশ্রীৎ।
অততীত্রের অগ্নিংস্কু, অরংস্কু, অনংস্কু, ব্যত্যভাস্তু।

১২৪ । जी च यू मर लू क्य तिर्वा वी।

जिंचा की बीना निक् वामार । देवू-प्रकी प्रविद्धा, त्राहा

⁽৩) বুনোতি চম্পুক বনানি ধুনোত্যশোৰং, ।

যুক্তমৃ। বায়ুর্বিগ্নয়তি চম্পুক্তপ বেগুন, ধর্ম কাননে ধরতি চুন্দ্রম্ভানীত,।
বীতি কবিন্তিত্তি।

সহিতা, লোকা লোভিতা, রোঝা রোধিতা, রেঝা রেষিতা, ইব গতৌ নিত্যং । প্রেষিতা।

১২৫। भैंशिहिं क् ज इन इन इन न्डें।

কুতাদে: দকারাদাবিড়্বা স্যাৎ। কং স্মৃতি কর্তিস্থিতি, অকং স্থাৎ অকর্তিষ্যাৎ। চূতী চং স্মৃতি চুর্তিষ্যতি, ছং স্মৃতি ছিদিয়তি, তং স্মৃতি তদিয়তি, নিন্তিষ্তি। অসিচীতি কিম্ ? অক্তীং।

১২७। गर्भंत्र छोटे।

পুনরিড় গ্রহণং নিত্যার্থম্। সেহতঙ্বিষয়ে গমেরিট্ স্যাৎ। গনিষ্যতি, জিগমিষ্তি। ইঙো গমেশ্চ কৃতি। অধিজিগমিষিতা ব্যাকরণস্তা অতঙীতি কিম্? সংগংস্থাতে সঙ্গংগীত, অধিজিগাংসতে।

১২৭। তণ্ডি রতাদেঃ ক্মপৌ লুটি চ।

সোৎ। বৃত্তিয়তে,বর্দ্ধিয়তে,বর্দ্ধিয়ী ই অবন্ধিয়ত, নিজ্ঞালিষতে।
ক্রপা লুটি চ। কল্লিয়তে, কল্লিভাসে। তঙাতি কিম্?
বং স্থাতি, তঙি নিয়মাৎ পরিমাপদে জ্ঞালিক্রপিভ্যাম্দিছেন
বিকল্লোহিপি নিষিদ্ধা। ব্যবস্থিতবিভাষয়া বা। সিজ্ঞাৎসতি
চিক্রপতি কল্প্রাসি। কৃতি চ বির্থসিতা বির্থসিত্থ
সেহতঙ্বিষয়ন্ত্রামেট্।

১২৮। न श्रीमिमानिष्णी शश्चित विश्वा-विटिट है। निक्षात्राम्।

ं भित्रीनिष्ठ व्यानिष्ठित्रारम्क निष्ठाक्षाविशास्ति। मूनः मूनदान्। जेनिक

नवः छिषाः। स्निन्धः वित्रः कितः, गुर्का वृद्धः। गृष्टि छेछि छात्रकाणिशाणिषः। छोत्रालः छोत्र ইछि श्वना मिर्क्तनः छेछ्छोनः छोट्छाट्छोराणिकाणशिक्तिस्थः छेड्छितिङः। स्वः, पाछः। विछा-विट्यटिछ। यश्च विकल्लन किलिए कुल्यश्चारः छेणिङः-गृषः गृष्ट् वान्, छेणिङः तृष्ठः, तथार्णो नस्थः।

১২৯। श्रवभारमी देवयादर्जी।

আভ্যামবিনীতভায়াং নিষ্ঠায়ামিলান্তি। ধুক্টঃ বিশস্তঃ অক্সত্র ধর্ষিতো বিশসিতঃ।

১৩०। कर्यः कृष्ट् गश्नरशिः।

निर्शामिशासि। ककेः वाकितगः, ककेः वनः, किष्ठमण्य । ১৩১। घूटवेत्रविश्वकत्ने।

নিষ্ঠায়ানিপ্লান্তি। ঘুকী রজ্জুং, বিশব্দনেত্ অবস্থিতং তেবাক্যং প্রতিজ্ঞাতং খ্যাতস্থা। ১৩২ । অর্দেঃ সন্নিবিভ্যঃ। অভেঃ সন্নিকর্ষেঃ। ইপ্লান্তি। সমর্গং অর্গং ব্যর্গং। অভ্যর্গা সেনা, অভ্যাদিতম্মুত্তা।

১৩৩। মনুপতি নিষ্কুষ গত্যথাব ইট্।
এভোগ নিষেধ্বিকল্লাপবাদ ইট্ল) দ্যাৎ। মনিতঃ পতিতঃ নিষ্কৃ
বিতঃ ধাবিতঃ। গত্যথেতি কিষ্ ং ধোতং বস্তুষ্।

ऽ७8 । क्रिके-विद्विकान्देशं श्री श्री अतानिये।

ক্ষিত্ৰ নিৰ্দ্ধ দিয়া হনিটা সাধবা হয়। দিউং ক্ষিত্ৰ হৈ ক্ষেত্ৰ ক্ষাত্ৰ ৷ বিশ্বিকা শবে, বিশ্বেভিতৰ্যত লাদিশকাং কুৰোমছে। স্বান্তং ছদি। ধ্বান্তং তমসি। শবেন-নুগ गःगरकः। गग-काले समग्रारमः वास (र) वाहर क्षेत्रिका छुनाताः। दुरुव रहन्द-भित्रहार विल्याः मृद्दम् हः मृनवनिताः।

५७०। वित्रश्रास्त्री इडिम्।

ণ্যন্তস্থ রতের্জ্তং নিপাত্যতে। অধ্যয়নক্ষেৎ, রস্তং সূত্র-মনেন।

১৩৬। বা দান্ত শান্ত পূর্ণ দন্ত স্পট চ্ছন্ন জ্ঞপ্রী

এতে গ্রাবা নিপাত্যন্তে। পক্ষে দমিতঃ শমিতঃ প্রিতঃ দাসিতঃ স্পাশিতঃ ছাদিতঃ জ্ঞাপিতঃ ।

'১৩৭। ৰুষাম ত্বর সংঘ্যাস্বনঃ।

এভ্যো নিষ্ঠায়ামিড্ বা স্থাৎ। রুফঃ রুষিতঃ, অভ্যস্তঃ অভ্য-নিতঃ, ভূগং ছরিতং, সুংঘুটং সংঘুষিতং আস্বাস্তঃ আসনিতঃ।

১৩৮। স্মোলোন বিশিত প্রতিহতেরু।
লোলি কর্ত্রি বিশিতাদার্থে চ হুষেনিষ্ঠায়ামিড্ বা দ্যাৎ।
ফকং হুবিতং লোম, কেণেঃ হুফোছবিতঃ—বিশিতঃ প্রতিছুতো বা।

১৩৯। অপ্চিতশ্চ।

চায়তেব্বা নিপাত্যতে। পকে অপচারিত:। অপচিত্তি-নিত্যসূ।

১৪০। আদিতোভাবারস্তরোঃ।

আনিতে নিষ্ঠারাং পূর্বেণ নিষেধে প্রাপ্তে ভাষাদিক প্রণো-রিড়্ব। বিধীরতে । মিন্নং মেনিত মনেন, প্রমিশ্রঃ , ५८५। श्रुमिवरमण्डा

খন্ত: খনিতঃ, খান্তং ব্নিত্ম। ১৪২। শুক্ত কর্মনি ভৌ।

ইড়্বা শ্বাং শতে। ঘটা কর্ং শবিতো বা। ১৪৩। ক্লিশপুত্ত ক্ত্রানিষ্ঠয়োও।

হিড়্বা ভাৎ। ক্লিট্য ক্লিখিছা, ক্লিটিঃ ক্লিটিবান্। পূছা পৰিছা, পূতঃ পৰিতঃ পৰিত্যান্।

১৪৪। ক্ষুধি বসতি বিমোহনার্থলুভি পূজা-র্থান্ধ ইট্রী।

अकाः ख्यानिष्ठरयातिष्ठे गार । क्षित्र। क्षितः, उतिश छिषिठः। আক্লী क्तरम मुख्यः मुख्या मुख्यः। পृक्षातामकरणः आकिश अकिरठा छत्यः । अग्रज छोष्म श्नुर्छि जी प् तो । मृत्था मुख्यः, श्नारम त्रिप्शामिष्ठ अकिर्य देना छित्रा । हैर हेष् निर्विषः । मूकः, উम्लुभूषकः कृषार ।

১৪৫। জ্বশ্চেঃ ক্রি।

निरंघधिकञ्चाभवाम हेहे छाए। खतिहा, दुन्छिश।

১৪৬। উদিতো वी।

উদিতঃ ক্রীড়্বা স্থাৎ। শাস্তা, শমিছা, শিষী, শাদিছা, অস্তা অপিছা। উব্লিব নিশামনে, বুৱা ব্লিছা।

:89। अर्देशिङ्गं मीरवीश्लिषे।

এহেরিড়্ দীর্ঘ: স্যাৎ। গৃহীয়া এহী হুম্। স্বিদিতি কিম্প অগৃহিব। F

১৪৮। বা বৃতেহিলোক পরবৈষণদসিচোঃ।

বৃত্ত বৃঞ্জ শ্বত ইড়্ দীর্ষো বা আহ । বরিডা, বরীডা; প্রাবরিউ, প্রাবরীউ; তরিডা, তরীড়া; বৃত্ত ইতি কিম্? করিয়াতি। অলোডালো কিম্ বিনিষীউ, আতরিষীউ। পরিস্থাপদসহচরিতে সিচি, প্রাবারিষ্ণ, অন্তরিষ্ণ। অলিটিং ত্যেব তেরিখ।

১৪৯। স্থা সিচ্লোঙ্লুটি ভাবকর্মণোঁ-রজান এহ দৃশোবেণ্।

অজন্তানে: স্থানে ভাব কর্মণো রিণ্ বা স্থাং। ভবিষ্ঠত ভাবিষ্ঠতে বা, অকারিষ্ঠত অকরিষ্ঠ ইনিষ্ঠত ঘনিষ্ঠে, প্রহীষ্ঠতে গাহিষ্ঠতে, দ্রক্ষ্টতে দর্শিষ্ঠতে। দিচি অনিষ্ঠাং অনারিষাভাম্। অহসভাং অঘানিষ্ঠাং, অগ্রহীষ্ঠাং অগ্রহীষ্টাং, অনুকাতাং অদর্শিক্তাম্। লোভি দাসীই দারিষীই, ঘনিষীই বধিষীই, গ্রাহিষীই গ্রহীষীই, দৃষ্ঠীই দশিষীই। লুটি নেতা নারিছা, হস্তা ঘানিতা, প্রহীতা গ্রহিষ্ঠা, দৃষ্ঠীই গ্রহিষ্ঠা, দুষ্ঠা দর্শিতা।

देखि जीनसमाजनबङ्काको जनास वाानहत्व क्लीरबारशावः नमार्थः।

অথ চতুর্থাধ্যায়স্থ

थ्यवः भाषः।

क्र धक्रवन्।

১। कृष्ण्लभ्।

ক্ৰিত্যখিত্ৰিয়তে, স চ বছলং স্থাদিতি চ। ২। লট্লৃটোরস্মাদেশিত্ শানশ্চ।

লট ল্টোঃ স্থানে ক্লং শংজকঃ শভ্, শানশ্চ বছলং ভবিত ।
পূথক নির্দেশাহ যথা সংখ্যার্থঃ। ভবন জুবাং চিকীর্ষন্ ধারয়য়ৢপনিবদম্। শানঃ—পবমানঃ বজমানঃ অধীয়ানঃ কুর্বাণঃ ক্রীণানঃ
ভাব্যমানঃ ভূয়মানম্। লৃটঃ অল্পি, করিষ্যন্ কার্রিষ্যন্
করিষ্যমাণঃ । ক্রিয়ায়া ক্রেলেগেরাঃ (১)। অর্জয়য়াজে
জল্লভো ভ্রাভব্যাঃ ॥ মাঙ্যাক্রেপে ॥ মাজীবন্ মাপক্র্যমাণঃ
বাহুল্যাং কচিমিত্যং। হে পচন্, হে পচনান, পচন্তং প্রনানং
পশ্চ। পক্যভা পক্যমাণেন কৃত্য্। কচিমিয়মঃ। অর্ছন্ পূজ্যে
বিষন্ শত্রো। ভ্রন্ বজমানে। ক্রিম স্থাৎ। প্রতি ভ্রাং
অস্যাদাবিতি কিম্? প্রতি ক্ষ্, করোভি ক্ম পূরা, যাতি ক্ষ।

७। विद्याल के श्रुष्यु । चार । विदान, विवस्ति ।

^{(&}gt;) হেতৃরংপতি:। শক্ষণং সাধারণোধর্ম:। অর্জয়রাজেহর্জসক হেতৃ:। জলভো জাতব্যা ইতি অয়নং জ্ঞানত শক্ষণ। ক্রিয়ায় ইতি কিং, বং কলতে সোহর্যতঃ, বর্ৎপ্রবাতে তল্লব্। অতা কল্যানস্থাক জ্লাক্রাক্তিং-প্রবাহ কার্যক ওপত শক্ষন্।

৪। ইঙঃ শতু শক্তো।

हेक्षः मामर्था निष्टः भड़ मारि। व्यथीयन् भातायनः, त्नर कालिमाधीरक।

ে। শানঃ শক্তি বয়ঃ শীলেয়ু, পরবৈষভাষাক।

শক্তাদো সর্বাগৃত্ভ্যা লটঃ শানঃ স্থাৎ। হস্তিনং নিম্নানঃ, শিবওং বহমানঃ, হসমানো বিপ্রঃ।

७। निष्ठेः कमूकात्ने।

লিটো বছলং কতকানী স্থাতাম্। শুলুবান্, শুপ্রাব উপসেদিবান্ তস্থিবান্ উপ্রিবান্ তিতীর্কান্। কানস্তঙি,পেচানঃ তিক্যানঃ। দাস্থানাদি জ্ঞান্দসম্।

৭। ঈরিবান নাখানহচানঃ।

এতে নিপাতাতে। ইটি ঈয়িবান্ উপেয়িবান্। ইড়ভাবে-নঞি অনাখান্, ধৃত জপধ্তেরনাশুষঃ। অমুবচেরতঙাপি কর্তরি-কানঃ। অমূচান্ঃ।

৮। কৃত্যাঃ প্ৰান্ত প্ৰকাৎ।

্ পকাৎ প্রাক্রতঃ কৃত্যসংজ্ঞকাঃ বেদিতব্যাঃ।

৯। তব্যানীয়ৌ।

খাতোত্তব্যানীয়ে স্থাতাম্। ভবিত্ব্যং, ভবনীয়ন্।

১০। বাস্তব্যঃ কর্ত্তরি। বসতীতি বাস্তব্যোজনঃ।

১১। যদনন্তাদেরাত এক।

समञ्जातमध्यः स्थारः। जामस्यास्य (क्रिकः) मिश्रयः, स्थितः, रमप्रः (ध्यः (नग्नः हताः चताः। जामिनसार विज्ञकाम् ॥ छिनिः শাকি শাসি সহি চতি যতি জনশ্চ। তক্যং শাক্যং শাস্তং সহং
চত্যং যত্যং জন্মন্।

১২।পবর্গাদবণি রপি লপি ত্রপি দভি চমং।

জপ্যং লভ্যং রম্যম। বপাদেস্ত গৃৎ ভবিষ্যতি। বাপ্যং রাপ্যং লাপ্যং ত্রাপ্যং দভিঃ সৌত্র অবদাভ্যং, আসম্যম্।

১৩। शक यक ठत यरमार्थारकः।

ं भनुः, यानुखाटनन यनुः, ह्याः ययाः। आदिनख आभानाः। कथः निष्याः, भन्हाः आनि भयाटमन ।

১৪। আচরেরগুরো।

चाहर्रितापर्यः । खरतो जु गुर चाहार्रिता छत्रः ।

১৫। অবদ্যং গর্হো। পণ্যং বিক্রুরে। পাণ্যমন্ত্র।

১৬। বর্ষ্যোহনিরোধে।
মুখ্য ইত্যর্থ:। অন্যত্র বার্য্যা ঋষিক:।

১৭। অজর্য্যৎ সঙ্গতে। ১৮। বছং করণে। বহস্তানেন বহাং শক্টন্।

১৯। অর্য্যঃ স্বামিবৈশ্যয়োঃ। পার্য্যাৎকর। ২০। উপসর্ব্যা স্থাদৃত্যত্যাম্।

२८। युर्भावमः कार्भ् ह।

হুপঃ পরাঘদঃ ত্যুপ স্যাৎ। বন্ধ। ব্রক্ষোদ্যং ব্রক্ষ্থক্যং সভ্যোদ্যং সত্যবদ্যম্। তদক্ষাতীত্যৎ। সত্যবন্ধ্যে রম্ভ্রমঃ সুপ ইতি কিষ্ ? বাদ্যম্। বাহুল্যাৎক্চিল্লিভাষ্। মুৰোদ্যম্। প্রাদ্যম্। প্রাদ্যম্। প্রাদ্যম্। প্রাদ্যম্।

২২। ভূবো ভাবে।

হুপো ভুবঃ ক্যপ্ স্থাৎ। ত্রক্ষভুরং ত্রক্রম্।

২৩। হনঃ জ্রিয়াৎ, নন্ত চ।

ভাবে ক্যপ্সাং । ব্রশহত্যা।

২৪।ঋত্রপথ শাষে-তি স্ত দৃর্ঞ জুষোইক্৯িপ চৃতেঃ ক্যপ্।

ঋত্পধাদে: ক্যপ্ স্যাৎ। বৃত্তাং গৃধ্যং শিষ্যং, ইণ ইত্যঃ, স্তত্যঃ, আদৃত্যঃ বৃত্তাঃ জুষ্যঃ, বৃত্তস্ত বার্য্যঃ, অক্মপিচ্ভেরিতি কিষ্ ? কম্পাং চত্যি।

· ২৫। খে চ খনঃ।

ক্যপ্ স্থাৎ। খেয়ম্।

২৬। ভূঞোইসংজ্ঞায়াম্।

ক্তুপ আং। ভ্তাঃ সংজ্যান্ত ভাষ্যা । বা সমঃ॥ স্ভুত্যঃ সম্ভাষ্যঃ।

২৭। এতেঃ পদ পরতন্ত্র পক্ষ বাহাস্থ।

এরবের এতেঃ ক্যপ কাং। প্রগৃহং পদং, প্রগৃহং পর-তন্ত্র:, পক্ষে-অর্জন্যুছোহরিঃ, প্রামগৃহা সেনা গ্রামবাহ্যা ইত্যর্থ:।

२४। कठाकृष्णे नहा वाषा ।

• নিশাত্যতে । রোচতে রচ্চাঃ, কৃত্তিন প্রতিতে কৃতিপচ্যাঃ শাল্যঃ, নহারতে অব্যথাঃ । ২৯। রাজস্থাঃ ক্রতী। ৩০। সূর্য্যাইকে।

৩১। কুপ্যং ধনে। গোপ্যমন্তর।

৩২। আজ্যং মতে। আঙ্গ্যমন্তর।

৩৩। প্রাসিধ্যে নক্ষতে।

৩৩। পুষ্যসিধ্যৌ নক্ষত্তে। ৩৪। ভিদ্যোজ্যৌ নদে।

ভিদ্যঃ, উদ্ধ্য:। উজ্ব্যমন্তত্ত্ৰ।

৩৫। যুগ্যং যানে। ৩৬। বিপূ্যোমুঞ্জে। ৩৭। বিনীয়ঃ কল্কে। ৩৮। জিত্যা হলো। জিত্যা ভাং। হলিক্হিদ্ধনঞ্ছে।

৩৯। কৃ রষি মৃজি শংসি ত্রহি গুহিভো বা।

এভা: ক্যপ্ ভাষা। রুতাং কার্যাং, রুষ্যং বর্ষাং, মৃজ্যং
মার্গাং, শভাং শংস্থাং, তুহাং দোহাং, গুহাং গোহান্।

८०। श्र श्लामु यूरवा-गार।

ঝবর্ণান্ত হলন্তাদের্গ্যৎ স্থাৎ। কার্য্যং, পাক্যং, আসাব্যং যাব্যম্।

৪**১। সূজঃ পাণি-সমরাভ্যাম্।** গ্রু ক্তাৎ। পাণি দর্গ্যা রচ্জুঃ, সমরদর্গঃ।

৪২। ওরাবশ্যকে।

উবর্ণস্থোদাবশ্রকে গম্যে প্যৎ স্থাৎ। অবশ্রভাষ্যং অবশ্রলাব্যং, লব্যমন্তত্ত্ব।

८७। अभावरमर्गक।

অমাপুর্বাঘদের্যৎ তাৎ। গাল্ড। সহবদত্তাহ তাং চন্দ্রার্কা-বিত্তি,অমাবেক্সা, অমাব্যক্সা।

88। প্রণায্যোইকামাসম্মতয়োঃ।

व्यगारगा-निम्मृत्हारंगमाज्य ।

80 । आनारया मिक्गारशी जारे।

৪৬। পাষ্যং মানে। মাঙো নিপান্ততে।

৪৭। শালায্যং হবির্বিশেষে।

8b। निकारिया गृहर।

চিছো নিপাত্যতে।

৪৯। ধায্যা সামিধেন্তাম্।

' धार्त्का—धागा, मामिरधनी क्षक्।

৫ । ক্রতৌ কুণ্ডপায্য সঞ্চায্যে ।

এতো ক্রতো স্থাতাম্। কুণ্ডৈঃ পীয়তে দোমোহন্দিরিত কুণ্ডপায়াঃ, দঞ্চীয়তে দোমোহত্তেতি দঞ্চায়াঃ।

৫১। অগ্নে চিত্যোপচায্যপরিচাষ্য সমূহাঃ। চিত্যা চ।

এতে অগ্নি বিষয়ে হয়:। চিত্ত্যোছগ্নি: উপচীয়তে উপ-চাষ্যঃ পরিচাষ্য, সমূহ্য:। স্ত্রিয়াং ভাবে-চিত্ত্যা, অগ্নিচিত্যা।

৫२। कर्षकर्जित किनिया-रनः।

হলন্তাদে: কর্মকর্ত্তরি কেলিম: স্থাৎ। পচেলিমা মাসা: বর্মেব, ভিদেলিমং কার্চং স্বর্মেব । উক্তা: কৃত্যা: ।

৫৩। পকতৃচৌ কর্ত্তরি বর্ত্তমানে।

এতো কর্ত্তরি বর্ত্তমানে চ স্থাতাম্। কারক:. কর্তা। বাত্তল্যাৎ, পাদাভ্যাং হ্রিয়তে পাদহারক:।

৫৪। ণকোভবিষ্যতি, তুমর্থে চ।

বর্ষশতক্ষ পূরকঃ। ওদনং ভোজকো ব্রজভি–ভোক্তার্মতার্থ:।

৫৫। गीलाठातमाथुयु निन्नादनः।

নিন্দক: হিংসক:। নিন্দ হিংস ক্লিশ থাদ বিলাসি পরিক্ষিপ পরিরট পরিবাদি-ব্যাভাষ অসূয়।

ab | आरमदर्मिविक्यू भेका । शतित्वकः चारकामकः ।

৫৭। নৃতি খনি রজেঃ শিপিনি টকন্।

এড়াঃ শিল্পিনি টকন্ স্থাৎ। নর্ত্তকঃ নর্ত্তকী থনকঃ খনকী, রজকঃ রজকী নিপাতনান্তবাপঃ।

(४) थ्रिमृत्वाक्तः माधुकाति।

এভ্য: সাধুকারিণ্যক: তাৎ। প্রবক: সরক: नरक:।

५२। कीवारमत्रामिषि।

অক: স্থাৎ ! জীবতাৎ জীবক:।

७०। नन्तर्रात्मत्रनः।

এচ্যা কর্ত্তরি বর্ত্তমানেহনঃ স্থাৎ। গ্রন্থাৎ নক্ষরতীতি নক্ষনঃ, বাস (শ) না মধনঃ দূষণঃ সাধনঃ মগুনা। অণ্যন্তাৎ তপনঃ রমণঃ সহনঃ সংক্রেদনঃ। পুতে লবপঃ এ অণ্বিষয়ে চ ॥ জনার্দনা মধুসুদন ইত্যাদ্যাঃ।

৬১। ক্র্ধভূষার্থান্ছীলাচারসাধুষু (চ)।

काधार्थार क्राधनः क्राधनः। क्राधीर क्राधनः मा

৩২। চলনশব্দার্থাদকর্মকাচ্চ।

চলনার্থাৎ চলনঃ কম্পনঃ। শব্দার্থাৎ শব্দনঃ রবণঃ। শব্দব্যকাদিতি কিম্ ং পঠিতা তন্ত্রেং তৃন্ ভবিষ্ণতি।

৬৩। আত্মনেভাষাদ>্য-দীপ-দীক্ষ-স্তিতো হলাদেঃ।

শীলাদো, বর্ত্তন:, বর্দ্ধন:, দের্-দেবন:। অযক্তাদেরিতি কিম্? আপ্যায়িতা দীপিতা দীক্ষিতা শয়িতা। হলাদেরিতি কিম্? এষিতা। অকর্মকাদিত্যেব বসিতা বস্ত্রম্।

৩৪। জু চংক্রম্য দংদ্রম্য শৃ (সৃ)গৃধি জ্বল শুচ লস পত পদঃ।

শীলাদো, জু: সোত্র:—জবনং, চংক্রমণঃ, দংদ্রমণঃ, (স) শরণং, গদ্ধনঃ। পূর্বেবিণব সিদ্ধে পদগ্রহণং সকর্মকার্থম্। প্রপদনঃ।

७०। भठाटमत्र ।

এভ্যঃ কর্ত্তরি বর্ত্তমানেহচ্ স্যাৎ। পচতীতি পচঃ, বদতীতি বদঃ, কছদঃ দেবঃ মেইঃ খেতঃ স্পর্শঃ লেহঃ শ্লেষঃ
স্মরঃ লোলুবঃ চঞ্রঃ চোরঃ ॥ প্রাযোহণ্ বিষয়ে চ ॥ খপচঃ
জাতিস্মবঃ শক্তিধরঃ গঙ্গাধরঃ ।

৬৬। ছঞোইরুৎক্ষিপ্যকর্মণঃ।

অংশহরঃ, মঁনোহরঃ, পিতৃহরং কীরং, বাক্যহরা দূতী অমুৎক্ষিপ্য ইতি কিম্? ভারহারঃ।

৬৭। বয়সি চ।

বয়সি গমোহচ্ স্থাৎ। কবচহরঃ ক্ষত্রিয় ক্মারঃ, অস্থি হরঃ খা॥ আডি ভাজীলে।। পুষ্পহরঃ॥

> ७৮। अईः। श्रृहारः। ५৯। শক্ত্যাদের্গ্রহঃ।

শক্তিগ্রহঃ। শক্তি লাসূল অঙ্কুশ যষ্টি তোমর ঘট ঘটা ধনুষঃ।

৭০। সূত্রাদবধারণে।

সূত্রমর্থতোহ বধারয়তি সূত্রতাহঃ, সূত্রতাহে।হস্তর।

१५। किश्रह्य छनः कृष्णः।

কিন্ধরা, বহুকরা, যৎকরা, তৎকরা।

१२ । न्या मर्डा स्याप्त । भक्ष मा भक्ष मा भक्ष ।

৭৩। স্তম্বেরমো-হস্তিনি।

৭৪। কর্নেজপঃ সুচকে। ৭৫। শীঙ্কঃ সুপঃ।

উ ত্রানঃ শেতে—উত্তানশয়ঃ, অবমুদ্ধশয়ঃ, পার্যাভ্যাং শেতে পার্যাশয়ঃ, থে শেতে থশরঃ, গুছাশয়ঃ॥ দিয়স্হপ্রাচ্চ॥ দিয়সহশয়ঃ।

१७। ज्लारमत्रशारमर्गन्छ।

জ্লাদেরি জাব। অচে। জ্লাং জ্লাং। ক্সপর্যাজ্লাদয়ং অপ্রাদেরিতি কিষ্ ? প্রস্কাং।

৭৭। শাৰ্যধাঞ্জ সংঅবতীনবসাবহ তন শ্বনঃ।

अर्जानः जार्द**्यायायः जानकाः त्राम्म**र्जात

কৰাধনাৰ্থম্। আতঃ—দায়েধারঃ, ব্যধানের্যাধাং, আঞাবঃ সংস্রাবঃ অত্যায়ঃ অবসায়ঃ অবহারঃ বিতানঃ বাসঃ।

१०। इ नी अर जूता वार्त्रभगत्र।

এভ্যো ণো বা স্থাৎ। দাবোদ্রঃ, নায়োনয়ঃ. প্রাচ্ছা-গ্রহঃ, ভাবোভবঃ। উপদর্গেড় প্রভবঃ।

१०। रेखभय-ख्वारमः कः।

ইগুপধাৎ জ্ঞাদেশ্চ কর্ত্তরি কঃ স্থাৎ। স্থানা বৃধঃ কুশঃ মুড়ঃ
রুশঃ। জ্ঞাদেঃ জানাতীতি জ্ঞঃ, প্রী-প্রিয়ঃ, কু-কিরঃ, পূ-পুরঃ
প্রহ-গৃহং গৃহাঃ। বাহুল্যাৎ স্বপ্যুপপদে চ । মুলং বিভুজতি মূল
বিভুজোরথঃ, নথমুচং ধনুঃ, কৌ মোদতে কুমুদং সরোরহং
ক্ষেপ্যবিভর্তীতি অল্রং, মহীপ্রঃ।

৮०। শোকাপর্দঃ প্রিয়ে।

৮১। जुन्मश्रित्रहाङ्ग्या । जुन्मश्रिमार्कार्याकः । ৮২। করণাদৌ চ।

আয়ুধ্যস্তেখনেনিতি আয়ুধঃ, আবিধ্যস্তেখনেন আবিধঃ, ত্রবোদীব্যস্তাতেতি ত্রিদিবঃ স্বর্গঃ।

৮৩। कृठारमर्गः।

কৃতন্ন: শক্রম: প্রলম্ম: স্থাহেন্সতে স্থম, গোইসতে-হুমো গোলোহতিথি: ॥ উপস্থ শার্তায়ে॥ নিম পায়তে॥ বিল্লোহস্তরায়ে।

৮८। जाजः शास्त्रशास्त्रे मुशंक।

আদম্ভাৎ প্রাদেরের ক: স্যাৎ। প্রস্থঃ হুস্থঃ প্রস্থাঃ ॥ অসতি প্রাদৌ স্বস্তমাত্রাক্তঃ সংগ্রেশকাতীতি সোদা, নৃণঃ, সর্বস্তঃ. অফ নিত্রঃ. আত্রপাত্রায়টত আত্রপজ্ঞং ছুক্রং, ঘাত্যাং পিবতি विशः, कष्टशः, बश्नुभा कीक्ष्मा जी, ज्ञानः वशुण्यः, नतीयः नतीकः वेजार्थः। कथानविकि किय् ? कर्षाणाद्य (शानमायः।

৮৫। ममार्की आरजः।

ञ्चभः मंश्य्वारमो ह मिक बर्गाट कः महार । त्रामः भाः जहाबाः।

> ৮৩। প্রে দাক্ত। শুভগ্রদ: পথি প্রক্র:। ৮৭। উদক্ষো ভাবে চ।

আধুনামুত্থানং আখুত্থোবর্ত্তে। কর্ত্তরি চ। তত্তী তিষ্ঠতি ততুত্থঃ, দরীমুখোত্থেন সমীরণেন।

৮৮। গেয়াদাউক্।

গেয়াৎ গায়তে ফ্টক্ স্থাৎ। বেদগঃ সামগী।

৮৯। সুরা-শীধ্বোঃ পিবতেঃ i

এত রোরুপপদয়ে পিবতে ইক্ স্থাৎ। স্থরাশী শীধুণী কথং মধুণী ভ্রমরী, জাতে জী।

৯০। लक्तर काशायरजाईनः।

व्यनस्माईनकेक् छार। जायाची त्रथा, পতিच्रखिनकानकः।

৯১। অমনুষ্যকর্তৃকে छ।

অমসুষ্যকর্ত্বক উপপদে হনউক স্থাৎ। বাডস্থং তৈলং পিতন্মী তিক্তা, শ্লেমসং ত্রিকটু। নেহ স্থাম্পা নান্নী।

৯२। नगतामरिखनि।

न्गतत्री गांखी। त्नर् नगत्रपारजार्खी।

৯৩। শক্তো হস্তিকবাটয়োঃ।

অনয়ের্নউক্ স্যাৎ। হস্তিখ্নঃ, ক্রাটখ্নী। শক্তাবিতি কিম্? হস্তিখাতো বিষেণ।

৯৪। ণনো হো ত্রীহিকালয়োঃ।

बौर्श् काल्वाकिर्धरा दश ननः म्यार । शहरना बौहितकम्ह ।

৯৫। ক্জো হেতো। গনঃ ভাব। কারণম্। ৯৬। গস্থক টনগোঁ।

সায়তেম্থক টনগো স্থাতাম্। গাথকঃ, গায়নী।

৯१। शा खा शा (४ मृगः भः।

এভাঃ শঃ স্যাৎ॥ ততোবিকরণশ্চ॥ পিবঃ জিভাঃ উদ্ধমঃ উদ্ধয়ঃ পশ্য উৎপশ্যঃ।

৯৮। অপ্রাদের্লিম্প বিন্দ ধারি পারি বেদি চেতি শাতি সাহ্যদেজিভ্যঃ।

এভ্যোহ প্রাদেঃ শঃ স্থাৎ। লিম্পঃ বিন্দঃ ধারয়ঃ পারয়ঃ বেদয়ঃ চেত্রয়ং,. শাতিঃ সোত্তঃ শাত্রয়ং, সাহয়ঃ উদেজগ্রঃ। গবাদেবিবিন্দঃ সংজ্ঞায়াম্। গোবিন্দঃ। কৃবিন্দঃ, অরবিন্দম্।

के । निर्मिटिशे । निनिश्वा नामत्मवाः।

५००। मध्य भर्तका वा।

(मा वा महार । नत्नानातः, नत्थायाः।

३०५। अशासिन्।

এভাঃ কর্ত্তরি শিন্ স্থাৎ। গ্রাহী স্থায়ী পরিভাবী।

५०२। ञावणकाथमर्गरताः।

অবশ্যকারী কটস্র, ঋণে—শতং দারী।

১০৩। শীলাভীক্ষ্যে সুপোইজাতেঃ।

অত্তার্থরোঃ স্বস্তাদ্ধাতোর্ণিন্ স্থাৎ। শীলে, শীপ্রভাজী নিত্যস্নায়ী, মৃত্তাষী বৃদ্ধদেবী, আত্মানং প্রাবয়তি আত্ম-প্রাবী। আতীক্ষ্যে পুনঃ পুনর্মধু পিবতি মধুপায়ী, ক্ষীরপায়ী। অজ্ঞাতেরিতি কিম্ ? তৃণং নেতা, শীলে তৃন্।

১০৪। সাধোণ্ড। সাধুকারী সাধুদারী। ১০৫। ব্রহ্মাবেশবিদঃ। ব্রহ্মাবাদী। ১০৬। কুমারশীর্ষাদ্ধনন্তেঃ। কুমারঘাতী শীর্ষঘাতী।

১০৭। কর্ত্পমানাৎ।

ণিন্ স্থাৎ। সিংহ ইব নৰ্দতি সিংহন দী, হংসগামী।

১০৮। ব্ৰতে। স্থিলশায়ী অশ্ৰাদ্ধভোৱী। ১০৯। মৃদঃ।

স্থামেন্সতের্ণিন্ স্থাৎ। দর্শনীয়াং মন্মতে-দ্র্শনীয়মানী-ভার্যায়াঃ, রিপুমানী ভাতুঃ।

५५०। शाम्हाज्यात।

ৰাজ্মানে গম্যে মনঃ খ্যঃ স্থাৎ। গিন্চ। পণ্ডিভমানানং মন্ততে পণ্ডিভমান্যঃ পণ্ডিভমানী, সাধুন্মন্যঃ সাধুমানী।

১১১। করণাব্দূতে যজঃ।

निन् छार । हरिया देखेवान्-हरिवीक्षे ।

১১২। गर्शशार कर्यालाहमः।

ভূতেশিন্ স্থাৎ। পিতৃব্যং হতবান্-পিতৃব্যঁঘাতী অসা-শক্তঘাতী।

১১७। हेन् विकियः।

ভূতে গৰ্হায়ামিন্ স্থাৎ। তৈলবিক্ৰয়ী মুভবিক্ৰয়ী। ১১৪। ভবিষ্যতি গমি-গাম্যাদয়:।

এতে ভবিষ্যতি কর্ত্তরি চ ইনন্তা শিনস্তাঃ সাধবঃ স্থাঃ। গমী গামী আগামী, স্থায়ী ভাবী ভবী। ১১৫। আক্টেঃ শীলাচারসাধুষু। অয়মধিকারঃ।

১১৬। তৃন্।

কর্ত্তরি শীলাদে গম্যে ধাতোন্ত্ন স্থাৎ। মণ্ট্রপত্যা-বর্ত্তমানইত্যেব। শীলে, বিরুদ্ধংবক্তা থলঃ। আচারে বৃধুং মুগুয়িতারঃ আবিষ্ঠায়নাঃ। সাধে, গীন্তা থেলঃ, নির্বেড। বেদার্থং মনুঃ।

১১৭। সম্পৃচ বিবিচ ত্যজ রজ ভজ সংসূজাদেখিরণ্।

এভ্য: শীলাদে ঘিমুণ্ স্থাৎ। সম্পর্কিণীনদীরাজ্ঞা, বিবেকী, ত্যাগী, রাগী নিপাতনারলোপঃ। ভাগী, সংস্গী সরিতা নৃপঃ। আদিশব্দাৎ যুদ্ধ যোগী। শনাদের্ম জনবধ্যাস্তানামিতি বৃদ্ধি-নিষেধঃ, শনী তনী দলী ভ্রমী ক্রমী রাদী।

ি ১১৮। দ্বির ত্ব ত্র ফ্রেহার্ক্ধ বিক্ধ সংজ্বাভ্যাহনক। দেশ শভ্যাঘাতী। ১১৯। আড়ো যম যস মুষ ক্রীড়ঃ। আয়াদী।
১২০।প্রে যস লপ স্তুত মথ বদ বসঃ। এয়াদী।
১২১। পরেঃ স্ দেবি ক্ষিপ রট ছহ মুহ বদঃ।
পরিদারী।

১২২। বে সূক্ষ বস (লষ) বদ লস কথা এন্তঃ। বিদারী, বিকাষী, বিবাদী, বিবাদী, বিলাদী, বিকথী, বিশ্রস্টী।

১২৩। অপল্যক্ত। অপল্যনী (বিলাষী)। ১২৪। সমত্যপাচ্চরঃ। সঞ্চারী, অভিচারী, অপচারী।

১২৫। ইন্জি দৃ কি বিশ্রীণ বমা-ব্যথভ্যেম পরিভু প্রজু প্রস্কুডাঃ।

बड़ाः भीनारमी हेन् छार। छहा जामवी कही विधारी, जा हारी विधारी, बड़ाभी शक्ति ही। जूः (मोदाः, श्रक्ती-श्रमवी।

১২৬। ইফুঃ সহ চর রতু রধু কচি আজ নিরাকৃঞলংকৃঞ প্রজনাপত্রপ ভূৎপচোৎ-পতোমদঃ।

এভাশ্চতৃদ্শভা: শীলাদে ইকুং তাং। সহিকুং চরিকুং, ৰাইফুং বিশ্বিষ্ণুং বোচিফুং, ভাজিফুং, নিবাকবিষ্ণুং, কন্যামলক-রিফুং প্রজনিকুং অপত্রশিষ্ণুং ভবিফুং॥ শেরিকুং ছন্দ্রশীন্তি নোচ্যতে॥ ভাবরিষ্ণুরিভি। উৎপচিষ্ণুঃ উৎপতিষ্ণুং উনাদিষ্ণুঃ।

১২৭। ভূ জি গ্লঃ কমুঃ। এক্যঃ কমুঃ ভাৎ। ভূফুঃ জিফুঃ গ্লামুঃ। ১২৮। স্থান্ত। অদীকং নিপাত্তে।
১২৯। ত্রসি গৃধি প্রবি ক্ষিপেঃ কুঃ।
এডাঃ কুঃ স্থাং। ত্রসুঃ গৃধ্যুঃ ক্ষিপ্ত।
১৩০। উকণ স্থা সৃ ভূ রব হন কম গ্ম লস
পত পদঃ।

এভ্য উকণ্ স্থাৎ। স্থায়ুকঃ, সারুকঃ, ভাবুকঃ, বর্ষুকঃ,
গাড়ুকঃ, কামুকঃ, গঙ্গাং গামুকঃ, লাস্তকঃ, পাতৃকঃ, পাতৃকঃ।
১৩১। জল্প ভিক্ষ কুট্ট লুণ্ট রঞ আকট্।
এভ্য আকট্ স্থাৎ। জল্লাকঃ, ভিক্ষাকঃ, বরাকী।

১৩২। শীত্ত স্পৃহি গৃহি পতেরালুঃ। এভ্য আলু: স্থাৎ। শয়ালুঃ পতয়ালুঃ চৌরাদিকো ণিচ্।

১৩৩। দা ধে সি সদ শাদে কিঃ। এভ্যোকঃ স্থাং। দাক্রদানশীলঃ, ধাকঃ সেকুঃ সজ্ঞঃ শজ্ঞঃ।

১৩৪। সৃষস্তদো-মরক্।

এভ্যোমরক্ স্থাৎ। স্মরঃ, ঘশ্মরঃ, অন্মরঃ।

১৩৫। ভঞ্জ ভাদ মিদোঘুরঃ।

এভ্যোযুরঃ স্থাৎ। অনঙ্গমানভঙ্গুরম্। কর্মকর্ত্তরি চ।।
ভঙ্গুরং কার্চম্ স্বয়মেব। ভাস্তরং মেতুরম্।

১৩৩। বিদি ভিদি চ্ছিদেঃ কুরঃ। এভাঃ কুরঃ স্থাৎ। বিছুরোজ্ঞাতা, দোষান্ধকারং ভিক্তরঃ. করীন্দ্র দর্শন্তি হুরং মুগেক্রম্ । ভিম্নিভিদেঃ কর্মকর্ত্তরি চ। ভিত্রং কার্চং স্বর্মেব, ছিত্রা এজ্জুঃ স্বর্মেব।

১৩१। ইণ্ জि मर्जि नमा कर्त्र

এভ্যঃ করপ্ স্থাৎ। ইত্রঃ দ্বিত্ত্রঃ নশ্রঃ।

১৩৮। গত্রঃ।

অবল্পরভামলোপো নিপাভাতে।

১৩৯। জাগৃ যাযজি জংজপি দংদশি বাব-দেরকঃ।

এভা উকঃ স্থাৎ। জাগ জাগরকঃ, যঙ্ লুগন্তাৎ বাষজ্ঞাদেঃ যাযজুকঃ, জংজপুকঃ, দংদশুকঃ, বাবদুকঃ।

১৪০। কিন্ সহি বহি চলের্যঞ্জঃ।

সহাদের্যঙন্তাৎ কিন্ স্থাৎ। ত্রৈলোক্যভারং সাস্থিঃ, বাবহিঃ, চাচলিঃ॥

১৪২। স্মাজনি কমি কম্পি নমি হিংস দীপোরঃ।

এভ্যার: স্যাৎ। স্মের:, নঞো জস:-অজতা। শব্দ প্রবৃত্তিঃ কত্রঃ, কম্প্রঃ, নত্রঃ, হিংত্রঃ, দীপ্রঃ।

১৪৩। সনাশংস ভিক্ষ উঃ।

मनलातः भीनाति छः गार कहेः विकीयूः, त्क्रममानः दः, क्रिकृतः।

১৪৪। বিন্দুরিচ্ছুঃ।

र्घा निभार्कारक।

১৪৫। স্বপি তৃষি ধ্বের্নজিও।

এভ্যোনজিঙ্স্যাৎ। স্থাক্, স্থাজো। তৃষ্ণক্তৃষ্চে । ধ্যাক্ধ্যাজো ধ্যাজঃ।

38७। शृ वत्मत्रोकः।

আভ্যামারুঃ স্যাৎ। শরারুঃ বন্দারুঃ।

১৪৭। ভিয়ঃ কুঃ।

भीनामि जियः कुः मा९। जैकः, श्वार्थ कः जैककः। नाष जीनुकः।

>৪৮। স্থেশ ভাসপি (স) ষক (স) শো-বরঃ। এভ্যোবরঃ স্যাৎ। স্থাবরঃ ঈশবঃ ভাসবঃ পেম্বর বিক্ষরঃ।

े १८८। यो यङ्गा

याटि र्वं ७ छा ९ व इः महा ९। यायावट बार्शन वा ३।

১৫०। किल् विष् मन् वन् कृनिशः श्रादेश।

কিবাদয়ঃ প্রত্যয়াঃ (কর্ত্তি) ধাতোঃ প্রায়েণ ভবস্তি। প্রায়আহণাৎ কচিন্তাবকারকয়োশচ। কিবিচাঃ সর্বাপহারী লোপঃ।
কিপ্ বিভাজতে বিজাট্। ভাঃ ভাসোঁ। ধ্বাঁ–ধৃঃ ধুরো। বিতাৎ।
উকর্ক, উর্ক্তো। পু–পৃঃ পুরো। হুপশচ। আবস্তৎ। প্রাদেদ
দীর্ঘশচ। প্রীঃ জৃঃ কটপ্রাঃ জঃ। হোর্ঘিত্বক। হুরতে অনয়া জুহুঃ।
ধ্যায়তের্দ্ধাতেবনা নীঃ॥ গনাদের্ঘিত্বক। জগৎ দিতাৎ দদৃৎ
উধাত্তাৎ পর্ণবাৎ নাংস্পিপক্ শোক্তিহে। ভুলঃ সংস্ক্রায়াং। ভুঃ
পন্ত গ্রাজভবন্তরভাগ। দিবিষৎ প্রসঃ প্রবিট্ পোধুক্, নিজার

জন্মতি মিত্রঞ্জক, প্রযুক্ অখ্যুক্ বেদবিং শক্রজিং প্রবীঃ সেনানীঃ, রাজতে রাট্, সম্তমতি ইতি সম্যাৎ। সম্রাট্ ক্রব্যাৎ॥ অমাদঃ কণাদঃ (জ্ব্যাদোহিপি) কর্মনোহণ্। দীর্ঘাসুনাসিকলোপাদজাদ্যাঃ॥ অপস্কায়তে—অজাঃ, অপ্রো-গাঃ উদ্ধিক্রাঃ॥ সম্পদাদেস্তিয়াস্তাবে॥ সম্পৎ স্থিৎ বিপৎ প্রতিপৎ সংসৎ পরিষৎ চিৎ ভিৎ বিৎ ছিৎ শুক্ কৃক্ লুক্।

১e১। बन्नां निश्रू श्नां मर्जू ত।

ব্রহ্মাণং ছত্তবান ব্রহ্মহা। জনহা স্ক্রহ পুণ্যক্রং, কর্ম্মর্থ, পাপক্রং সোমস্থ, অগ্নিং চিত্তবান্ অগ্নিচিং। প্রেনাদেরগ্ন্যাখ্যায়াম্। প্রেনচিং রথচক্রচিং ॥ উক্তং শীলাদে।।
বিচ, বেট্ শুভংমাঃ। মন্, স্থশর্মা দেবশর্মা স্থলামা।
দীর্ঘঃ সূত্রামা। সন্ত—অখ্থামা। বন্, যন্ত্রা, মৃত্যাবা
ভ্রিদাবা। কনিপ্, স্ঞে—স্থা ধীবা পীবা।। ভূতে দৃশঃ
কর্মণঃ। মেরুং দৃউবান্ মেরুদ্ধা, পারদৃধা।। যুধি কুঞোণ
রাজ্ঞঃ সহাচ্চ। রাজ্যুধ্বা রাজকুত্বা।

२०२। वहादमर्निः।

এভ্যো শিঃ স্যাৎ। বাক্ শব্দ প্রাট্, এজ-পরিব্রাট্।

১৫৩। ভজ मह বट्टिश कर्यनः।

শৰ্জং ভজতে আৰ্জাক্, পাদভাক্। সহবহেশ্ছশাসি।। ত্রীষাট্ প্রতিবাট্।

১৫৪। बुकारमः किन्।

अणाः कर्डति किन् जार । युड् यूर्को । नमारन व्ययुकः । व्ययुक् । जुरकरका निषार । जुड् जिन्तो ॥ वास्तीर कर्जारको । विचारकर्टनी किक्, मृखेरकर्टना मृक् ।

२००। बद्धः सुनः।

প্রাঙ বিশ্বসাঙ্।

১৫৬। স্পৃদেশাইর্দকাৎ।

মৃতস্পৃক্, মন্ত্রেণ স্পৃতি মন্ত্রস্কৃ। অনুদকাদিতি কিম্? উদকস্পর্শে। বিপ্রঃ।

১৫৭। ঋত্বিক্ দগ্ধক্ অগুঞ্চিইঃ।

এতে কিনন্তা নিপাত্যন্তে। ঋতৌ যজতি ঋত্বিক্। ধ্বে-ৰিত্িঞ্চ দধ্ক্। স্জ্যতেহসো অক্॥ উতঃ (দঃ) সিহেন্তলোপঃ বত্ন্যা উফিক্।

১৫৮। সমানাগ্যতদাদেঃ কর্মগুগেমানাৎ দৃশ্যুক্সকো চ।

সমানাদের পমানাৎ পরস্থাৎ দৃশঃ কর্মণি কিন্ টক্ সকাঃ
স্থাঃ। সমান ইব দৃশ্যতে সদৃক, সদৃশঃ সদৃকঃ। অন্যতদাদেকৌরাৎ, অন্যাদৃক্ অন্যাদৃশঃ অন্যাদৃকঃ, তাদৃক্ তাদৃশঃ তাদৃশী
বাদৃক্ যাদৃশীভ্যাদি।

১৫৯। বিসং প্রেভ্যোভুবোডুঃ।

এভ্যো ভূবো ড্: স্যাৎ। বিভবতীতিবিভূ:, সম্ভবতীতি সম্ভঃ, প্রভূঃ।

२७०। भेजब्रामञ्च

শৃতক্রনিত্যাদ্যাঃ সাধবঃ স্থাঃ। শৃতক্রঃ, শিতক্রঃ শংক-শ্যানং ভবতি (তে) প্রাপ্নোতি (যন্মাৎ) শস্তুঃ শিবঃ, ভূপ্রাপ্তো। ১৬১ । কর্মণোহণ্। কর্পোপপদাদ্ধাতোরণ্ বহুলং স্থাৎ। ক্স্তং করো-ভীতি কুম্বকারঃ ছত্রধারঃ সূত্রধারঃ শত্রুলারঃ বেদাধ্যায়ঃ ক্রুভিপ্রায়ঃ দারপালঃ।

১৬২। আতঃ মোপদগাং।

(शंजन्मश्रः।

১৩৩। স্থাবামোইপ্রাদৌ চ।

স্থিরি: তন্ত্রবায়: ধান্তমায়:। নেহ, গোদঃ ক এবাত্র পূর্ববিপ্রতিষেধেন, বাহুল্যাৎ তুমর্থে সর্বতঃ, গোদায়ো ব্রজতি গোসন্দায়ো ব্রজতি ওদনভোজো ব্রজতি। কচিন্ন স্থাৎ। আদিত্যং পশ্যতি গ্রামং গভেতি কচিদচ্প্রভূতয়ঃ, পয়োধর: ময়ুস্দনঃ। কথং মাংসশীলা মাংসকামা, মাংদে শীলমস্থা ইতি সমাসেন অচ্-প্রত্যেন বা. তেন তা ন ভবতি। এবং মাংসকামা মাংসভক্ষা কল্যাণাচারা স্থপ্রতাক্ষা তুষ্থক্ষমা।

১৬৪। হুহঃ কো হুঘ চ।

হুহে: কর্মণ: কঃ স্থাৎ। ছুখাদেশন্। কামহুখা গোঃ, কিপ্কামধুক্।

১৩৫। সুপাঃ। অধিকারোহয়ম্। প্রাণ্জীর্ঘতেঃ। ১৬৬। চরেষ্টঃ।

স্বস্তাচ্চরেষ্টঃ ভাৎ। কুরুর চরতীতি কুরুচরঃ কুরুচরী থেচরী নক্তঞ্জী ভিক্ষাচরঃ। আদারসহাচ্চ। আদারচরী সহচরঃ সহচরী।

১৬৭। পুরো২এতো২এেভ্যঃ সর্ত্তেঃ।

এভা: দর্ভেট্ট: স্থাৎ। পুর: দর:, অগ্রত: দর:, অগ্রেদরী। বাহুল্যাৎ পুরঃ সরা বাচঃ ইত্যচা।

১৬৮। পূর্বাৎ কর্ত্ত্রঃ।

সর্ত্তেকঃ স্থাৎ। পূর্বাঃ সরতীতি পূর্বাসরঃ। কর্ত্ত্রিতি কিম্ ? পূর্বাং সরতীতি পূর্বাসারঃ।

১৬৯। ক্ঞােহেভুশীলানুক্ল্যেশধানে

হেত্বাদে গমের স্থপঃ করোতেইঃ স্থাৎ। যশস্করী বিদ্যা, শীলং স্বভাবঃ স্বাত্নকরঃ, আতুক্ল্যে বচনকরঃ। এবং শীলাদৌ দিবাকরঃ নিশাকরঃ। এবং বিভা প্রভাভাস কার অন্ত অনন্ত আদি বহু নান্দী কিম্লিপি লিবিবলি ভক্তি কর্ত্ চিত্র ক্ষেত্র একাদিসংখ্যা জংঘ। বাহু অহন্ যৎ তৎ ধনুস্ অরুস্ ইত্যাদি। কর্মকরো ভূত্যে। কর্মকারোহন্মত্র। হেম্বাদাবিতি কিম্? কুম্ভকারঃ। অশকাদেরিতি কিমৃ ? শককারঃ। শক শ্লোক কলহ গাথা বৈর চাটু সূত্র মন্ত্র পদাঃ।

১৭০। স্তম্বকরিশকুৎকরী ত্রীহিবৎসয়োঃ।

ইদন্তো নিপাত্যেতে। স্তম্বকরি র্ত্রীহিঃ, শকুৎকরির্ব্বৎসঃ।

১৭১। দৃতিহরিনাথহরী পশৌ।

এতো পশো কর্ত্তরি স্থাতাম্। দৃতিহরিঃ খা, নাথ হরিরখঃ।

১৭২। আত্মোদরকুক্ষিভ্যো ভূঞ ইখ্।

এল্ডোড়ঞ ইখ্ সাং। আত্মানং বিভক্তীতি আত্মস্তরিঃ উদর প্ররুশ্চকোরাঃ, কুকিন্তরিঃ।

১৭৩। ফলেগ্রহিঃ।

স্থাৎ। ফলানি গৃহ্লাভীতি ফলেগ্রহিঃ।

১৭৪। এজেঃ খন।

স্থা এজয়তেঃ খশ্সাৎ। অঙ্গমেজয়ঃ জনমেজয়ঃ।

५१৫। (४८ में युक्तितिहै।

মুষ্টিকরোবালঃ স্তনন্ধরী ধাতোষ্টি তাৎ তী। শুনিকারঃ পাপঃ ।
মৃষ্টি স্তন শুনী ঘটা থারী বাতাঃ। নাদিকাদেশা । নাদিকাদ্ধমতি নাদিকদ্ধমঃ, নাদিকা নাড়ী পাণি কর ঘটা থারী
বাতাঃ। বাতক্ষমঃ।

১৭৬। বাতাদজঃ। বাতমজো মৃগঃ।

১৭৭। শর্দ্ধাজ্জহাতেঃ। শর্দ্ধং জহা মাষাঃ।

১৭৮। তিলবিধ্বৰুষস্তদঃ।

তিলস্তদঃ काकः, विश्वरमा রাহুঃ, অরুস্তদোমশ্মস্পৃত্।

১৭৯। অল্প মিত নখ পরিমাণাৎ পচ্ ।

অল্পস্সচঃ নিতস্পচঃ নথস্পচা যবাগৃঃ। পরিমাণাৎ প্রস্থ-কটাহঃ। প্রস্তিস্পচঃ।

১৮০। বহাব্তালিহঃ। বহং লিহা গোঃ অব্তংলিহোবায়ঃ।

১৮১। কুলাছক্ৰজোধহেঃ।

ক্লমুক্তজো গজঃ। ক্লমুদ্ধ। নদী।

১৮২। দৃশেৰতাইস্ব্যাৎ

উগ্রংপশ্য: সূর্য্যং ন পশ্যতীতি অসূর্য্যাপশ্যা দেবী। নঞ্জো দৃশিনা সম্বধ্যতে।

১৮৩। ললাটাতপঃ। ললাটন্তপঃ দূর্যা:।
১৮৪। প্রিয়বশাদ্দঃ।

প্রিয়ম্বদঃ, বশং বদোহসুকূলঃ।

১৮৫। मर्बक्लाजकत्रीयां क्यः।

मर्क्तक्षयः थनः, कृनक्षया नमी। अलक्षरयात्रिविः कृतीः यक्षया वाल्या।

১৮৬। বাচংযমোব্রতী।

বাচং যমঃ স্থাৎ। ত্রতী চেৎ। অন্যত্র বাগ্যামঃ।

১৮৭। সর্বং সহেরম্মদ পরন্তপ দ্বিস্তপ ভগন্দর পুরন্দরাং।

এতে খণন্তা নিপাত্যন্তে। সর্কং সহং সাধুং, অসংজ্ঞার্থমস্ম গ্রহণং, ইবয়া মাদ্যতি ইরম্মদোমেঘজ্যোতিঃ পরন্তা।
পরতীতি পরন্ততপঃ দ্বিষন্তপঃ ভগন্দারয়তীতি ভগন্দরোরোগঃ। পুরন্দরঃ শক্রঃ।

১৮৮। মেঘর্তিভয়াৎ কৃঞ্চঃ খঃ।

এভ্যঃ করোতেঃ খঃ স্থাৎ। মেবদ্ধরোবাতঃ, ঋতিঙ্করঃ ভয়ন্ধরঃ।

১৮৯। क्ल्या श्रियका मन् ह।

এভাঃ কৃঞঃ খোহণ্চ স্থাৎ। কেমঙ্করঃ কেমকারঃ প্রিয়-, স্কুরঃ প্রিয়কারঃ মক্তেশ্বঃ মক্তকারঃ। বাত্ল্যাৎ কচিচুৎসর্গাপ- বাদয়োঃ সমাবেশঃ, তেন ক্ষেমকরস্থ হিতস্থাস চ প্রজানা-মিতি ভট্টিঃ। ভদ্রাক্ষেত্যেকে। ভদ্রং করো ভদ্রকারঃ।

১৯০। আশিতাদ্ভুবঃ করণভাবয়োঃ। (২)

আঙাইশাতে: ক্তান্তাদাদিতাদ্ভুবঃ বঃ স্থাৎ। আশিতেন তৃপ্তেন ভূয়তেহনেন আশিতন্তবঃ ওদনঃ, ভাবে ফলৈয়েশ্বা-শিতন্তবং তৃপ্তিরিত্যর্থঃ।

১৯১। ভৃতৃর জি ধারি সহি তপি দমো-নামি হ্রস্ক্র

স্থ এভ্য: সংজ্ঞায়াং খং স্থাৎ। বিশ্বস্তরো বিষ্ণু: বিশ্ব স্থরা ভূ: রথস্তরং সাম, পতিম্বরা কন্মা ধনঞ্জয়ঃ। ধারেছ্র স্বশ্চ বস্তুমরা সর্বাং সহা ভূঃ শক্রন্তপঃ বলিন্দমঃ কৃষ্ণঃ।

১৯২। গমঃ।

গমঃ খঃ স্থাৎ। প্লবসমঃ ভুজসমঃ হৃতসমঃ পূর্বং গমেহেয়ং পদ্ধাঃ হৃদয়সমা বাচঃ।

১৯৩। প্রবন্ধ তুরঙ্গ বিহন্ধ বিহণ ভুজন্ধাশ্চ।

অত্র মলোপো বিহায়সো বিহশ্চ নিপাত্যন্তে। লছে প্রবঙ্গশচ।

১৯৪। প্রিয়াইচ্য স্থভগ স্থূল পলিত নগা-স্কাদচ্টেভু বঃ থিফু খুকণো।

⁽২) আ। আঙ্ প্রাদ্মাতে স্প্রাণ্যাদকর্মতে কর্ত্তি জঃ ভাৎ। সকর্মত্বেংপি, ওদনম্পত ইতি প্রয়োগদিন্দ্রাতেঃ কর্ত্তি জো দীর্ঘণত নিপাতাতে ইতি ভাষান্।

প্রিয়াদিভ্যোহচ্যুক্তেভ্যান্চ্ দাদৃশ্যাচ্চ্যুর্থে বর্ত্তমানেভ্যঃ পরাদ্ ভ্বঃ থিফু খুকণো স্থাতাম্। অপ্রিয়ঃ প্রিয়ো ভবতি প্রিয়ন্তবিষ্ণুঃ প্রিয়ন্তাবৃকঃ আচ্যন্তবিষ্ণুঃ আচ্যন্তাবৃকঃ অচ্বেরিতি কিম্ ! আদীভবিতা রসবিধিঃ।

ऽक्ष। क्रता कृष्णः थन है।

প্রিয়াদিভাঃ করোতেঃ করণে খণট স্থাং। অপ্রিয়ং প্রিয়ঙ্কুর্বস্তানেন প্রিয়ঙ্করণং দানং, আঢ্যঙ্করণী বণিজ্যা স্থলঙ্করণং দানং, স্থলঙ্করণমৌষধং, পলিভঙ্করণং তৈলং নগ্রং করণং দাত্য, অস্করণঃ শোকঃ। চেন্ন ইনেন ভবিতব্যয়্ আঢ্রাকরণো রসবিধিঃ।

১৯७। गर्भारम र्डः।

স্থপ ইত্ত্যেব, গমাদেঃ কর্ত্তরি ডঃ স্থাৎ। ভুজগঃ তুরগঃ থগঃ প্রবগঃ প্রবিগঃ অন্তগঃ অত্যন্তগঃ অধ্বগঃ দূরগঃ পারগঃ সর্ববগঃ সর্বত্তগঃ আ্রাগারগঃ । উরসঃ সলোপশ্চ॥ উরসঃ পদ্ভ্যাং ন গছতীতি পশ্লগঃ সর্পঃ।

১৯৭। সূত্র্ত্যা মধিকরণে। হৃগং ছর্গং। ১৯৮। নির্গো দেশে।

আদিশব্দাৎ গিরে শেতে গিরিশঃ ক্রঃ আৰ্সতে আথা পরিথা ॥ উদস্তলোপশ্চ ॥ উথা।

১৯৯। जानिषि रनः।

শক্রং বিচাৎ শক্তহঃ, কচিদনাশিষি, বরাহঃ কটাছঃ । শ্লপাজবক্রেশতমসঃ ॥ জ্বাপহঃ ক্রেশাপহঃ তমোপহঃ। ২০০। রাজ্যঃ, পাণিঘতাড়ুযো শিণ্পিনি। এতে নিপাত্যন্তে। রাজ্যন্তীক্ষঃ পাণিনাহন্তীতি পাণিমঃ।

🚁 ২০১। ভূতে জনঃ।

ভূতে জনো ডঃ স্থাং। উপসরে জাতঃ উপসরজঃ। মন্দুরায়া ব্রস্থান । সন্দুরকঃ তজ্জঃ কৃতকঃ আল্লাজাতো আল্লাজো-ধর্মঃ বৃদ্ধিজঃ কোশন্যাকোরামঃ ন জাতোহজঃ দির্জাতো দিজঃ সহজঃ অনুজঃ আগ্লাজঃ রামানুজঃ পুমনুজঃ স্থানুজঃ প্রজাতাঃ প্রজাঃ অভিজঃ অধিজঃ প্রথমজঃ কেন জাতঃ কিঞ্জঃ কচিমজাতেঃ অখাজ্জাতো (৩) দার্কাঘাটাদয়ঃ প্রোদরাদো ডেয়াঃ স্থাইতি নির্তম্।

২•২। জীর্যাতে রতৃ।

ষশান্ত তেই হঃ স্থাৎ। জরন্ জরতী।

२०७। निष्ठा।

পৃথক ছাদ্ধাত্মাত্রাদ্ভতে ক্তক্তবত্ ভাতাম্। কৃতঃ কৃতবান্।

২০৪। জ্ঞানেচ্ছা পূজার্থক্রীতঃ ক্তোবর্ত্ত-মানে চ। (৪)

⁽৩) দার্কা। দারুবাহস্তীতি দার্কাবাটঃ, দার্কাবাতক, এবং পক্ষি সংখাতঃ জন্ত সংখাত ইত্যাদয়ঃ স্থাঃ।

⁽৪) জা। বাহল্যাদক্তেভ্যোহপি। নীলিতো রক্সিত: ক্ষান্ত: আকুষ্টো জুই ইতাপি। রুইন্চ রুষিতন্দোভাবভিয়ান্তত ইতাপি। কুই তুটো তথা কাস্তত্ত্বোভৌ নংখতোল্যভৌ। কইং ভবিষ্যতীভ্যাহরনৃতা: পূর্ববং ব্যুজা:। কইমিতি ভবিষ্যতি কালে ক্ষিয়তীতি কই:। ন ব্রিষ্ক ইত্যমুভা:, বহন্ত্

এভাঃ ক্রোবর্ত্তমানে চ ভবতি। জ্ঞানার্থাৎ রাজ্ঞাং বতঃ
বৃদ্ধোহবগতঃ রাজভিজ্ঞ য়িত ইতার্থঃ। ইচ্ছার্থাৎ ইন্টঃ
বাঞ্ছিতঃ। পূজার্থাৎ সতাং পূজিতোহর্চ্চিতঃ। জীতঃ থল্পপি
জিমিদা–বিন্নঃ কিন্নঃ। বাহুল্যাদক্ষেভ্যোহপি। দান্তঃ শান্তঃ
কান্তঃ কান্তঃ কুন্টঃ তুন্টঃ কুন্টঃ উদ্যতঃ।

২০৫। কৃত্য ক্ত খলর্থা ভাবকর্মণোঃ।

কুত্যাদয়োভাবে কর্মণি চ স্থাঃ। ভবিতব্যং, সকর্মকেভ্যাদ্য ভাবে বিবক্ষ্যতে। সভাং বা ন প্রবেষ্টব্যং, ভূতং, কুতং
তব, ঈষদাচ্যং ভবস্তেন। কর্মণি কর্ত্তব্যঃ, কটঃ কুতঃ, স্কুকরঃ
কটো ভবতা!

২০৬। গেয়াদয়ো বহুলম্।

স্থাঃ। কর্ত্তরি গেয়োহয়ং দালাম্। কর্মনি গেয়ায়নেন দামানি। এবং ভব্যোহয়ং, ভাবে ভব্যমনেন, প্রবক্তীতি প্রবচনীয়োগুরুদর্শক্ষ দমাবর্ত্তনীয়োগুরুক্পনীতক্ষ উপস্থানীয়ঃ শিব্যোগুরোঃ উপাদক ইত্যর্থঃ। লোচনং লোভয়ভীতি লোচনলোভনীয়া দক্ষপঙ্জিঃ জায়তে বা জন্মঃ আপ্রবতে আপ্রাব্যঃ আপত্তি বা আপত্যঃ পুনর্বহলগ্রহণং স্পান্টার্থং করণাদ্যর্থকা, করণে স্থানীয়ং চৃণং, সম্প্রদানে দানীয়ো ভিক্ষঃ অপাদানে ভেত্তব্যা রজনী প্রপতনীয়ো ভৃগঃ। আধারে শয়নীয়ং বস্ত্রং, রমণীয়া বাপী, রম্যুদ্ধানং, ভিক্তজ্যালিতি ক্ষেঃ।

নাদিম্ভাদিনবং দ ভেন স্থাং, শরিভঃ, আশিভঃ, বিশ্বঃ, বিশ্বঃ, ভ্গ _ইংগাদি।

২০৭। আরম্ভে ক্তঃ কর্ত্তরি চ।

আদিকশ্বণি ক্রঃ কর্ত্তরি চ ভবতি। প্রকৃতঃ কটং চৈত্রঃ, যথাপ্রাপ্তঞ্চ, প্রকৃতঃ কটদৈচত্ত্বেণ, প্রদ্যোতিতোভানুঃ-দ্যোতি-তুমারধ্ব ইত্যর্থঃ।

২০৮। গত্যথা২কৰ্মক শ্লিষ শীঙ স্থাস-বস জন ৰুহ জীৰ্য্যতিভ্যশ্চ।

এভ্যঃ ক্তঃ কর্ত্তরি চ ভবতি। প্রামং গতোহসৌ, বনং গতঃ খোভবিতেতি রামঃ। যথা প্রাপ্তক, প্রামোগতন্তেন, প্রামে গত .
মমুনা, ইমং দেশ মহিঃ স্প্রঃ, অয়মহিনা স্প্রঃ, ইহাহিনা
স্প্রং। অকর্মকাৎ-ভৃতোহয়ং, ভৃতমনেন। প্রিষাদেঃ-অয়মাপ্রিকঃ
ক্যাম্, অনেনাপ্রিক্টা দা, অস্তাপ্লিক্তং॥ শীঙাদেঃ পৃথগুপাদানং
উপদর্গাৎ সকর্মকার্যম্॥ অধিশয়িতঃ খট্বাং, খট্বাধিশমিতানেন
অধিশয়িতমন্তাঃ, এবম্-উপস্থিতোগুরুং, উপাদিতোগুরুং,
অধুমিতস্তরুম্, উপজাতঃ পুত্রম্, আরুড্সুরুম্, অমুজীর্নোহয়ং রুষলীং॥ ক্তবতুঃ কর্তুর্বের ব্যবস্থিতঃ॥

২০৯। অধিকরণে চ গত্যাহারার্থাকর্ম-কেভ্যঃ। (৫)

अर्डाः (क्लार्शिकत्रान ए खर्वा । शत्क यथाथाश्वक । रेनम

⁽e) অধি। ত্বাসিতানের মিহান্তি গলং ভূক্তং শরিতক তত্তেতি ব্যোষঃ। ক্বং পিবতি ভল্পত্যাঃ কর্ত্তরি ক্তঃ স্থাদিত্যভিপ্রেত্যাহ ক্বমিতি শীতাগানঃ প্রাংসি, বিভক্তা ভাতরো বিত্তং ইত্যধ্যাহার্য্যং, যথা শীক্ষাণ্ডবদ্ধানং নামিতি কালিদানঃ।

(ইহা) হেগতং, ইদমহে: স্পুষ্, ইদমশ্য ভুক্তং, পীতম্, ইদমণ স্থাসিতং শ্য়িতম্। কথং পীতা গাবং, বিভক্তাং ভ্ৰাতরঃ ইতি, পীতং বিভক্তং চাস্থান্তীতি মত্বৰ্থীয়োহং।

ইতি শ্রীপদানাভদত্তকৃতো শুপদোব্যাকরণে চতুর্থস্থাধ্যায়স্ত প্রথমঃ পাদঃ।

অথ চতুর্থাধ্যায়স্থ –

দিতীয়ঃ পাদঃ।

উণाদि প্রকরণম্।

১। উণাদয়ো বহুলম্। (১)

উণাদয়ঃ প্রত্যয়া ধাতে।র্বহলং স্কাঃ। যদাহঃ-উণাদরো-হ্ব্যুৎপন্নানি প্রাতিপদিকানীতি। বর্ত্তমান ইত্যুবর্ত্তে।

⁽১) উণা। উণাদিপ্রত্যয়াতাঃ শকাঃ; অব্যুৎপন্নানি প্রাতিপদিকানি রুচা ইত্যথা। অয়মর্থা, ঔণাদিকা হি সংজ্ঞাশকা স্তে চ ব্যুৎপত্তি মন্তরেণ লোকে বিশিষ্ট বিষয়িতয়া প্রসিদ্ধাঃ, ন চ তেষাং ব্যুৎপত্তিঃ কর্ত্তুং শক্যতে আনত্যাৎ, কভান্ত প্রকৃতিপ্রত্যয়বিভাগো দর্শিত এব তত্র তেষাং শক্তেঃ। নম্ম মৃত্রেমের প্রাপণীতা ইতি চেং। মৃত্র মৃকং, বালবুৎপত্তয়ে স্ত্রে প্রথমনং, যে পুনর্গৎপত্তিমাদ্রিয়তে যদৃচ্ছাশকানাং তেছি কাং স্নিন প্রকৃতিপ্রত্যয়াদিরতে যদৃচ্ছাশকানাং তেছি কাং স্নিন প্রকৃতিপ্রত্যয়াদির দর্শয়িত্বং ন শক্তাঃ, রুচিমের প্রতিপদ্যক্তে যত্র কচন। তথাচোক্রং, নাম চ গাড়ক্রমাহ নিক্রকে ব্যাকরণে শক্তিম্ম চ তোক্রম্। (তোকং পুত্রঃ)। বন্ধ পদার্থনিশেষসমুখং প্রত্যয়তঃ প্রকৃতিশ্বত তদৃশ্বমিতি। অস্তার্থঃ নিক্রকর্কারো নিক্রকে প্রমান্তন নাম গাড়ুক্রমাহ—চকারোছবর্ধারণে ন কেবলং স এবাহ।

२। क्वांनिक्डा हेन्। कार्याः कार्यः वाशः। ७। मस्त्रत्नह्।

মঙ্গলম্। কেচিদ্ভূতে চ। রুক্ত তদিতি বলু। ভদিতং ভন্ম।

৪। ভীমাদয়োঽপাদানে।

ভीমঃ ভীমাঃ। পুনর্বাহল গ্রহণং স্পান্টার্থম্।

(। ग्र'रमः कतरा बहे।

নীঞাদেঃ করণে এট্ স্যাৎ। নয়স্তানেন নেতাং, দাপ্ দাস্তানেন দাতাম্। নী দাপ শস যু যুক্ত স্কুদ সি সিচ মিহ পত নহঃ॥ শস্তাং যোতাং স্তোতাং তোতাং সেতাং সেক্তুণ মেড্ডুণ পতাং নদ্ধী।

৬। পোত্রং হল শ্করয়ে মু থে।
বাহুল্যাং—'ধঃ কর্মণ। দীয়তে অসো—ধাত্রা।
৭। দংফ্রা দশনে। আবস্তা নিপার্যতে।
৮। অর্ত্রাদেরিত্রঃ।

শাকটারনোহপি তথাজনান, ষৎপুনরবিহিতপ্রকৃতিপ্রতারবিশেবং শক্ষ জাতং তংকবং নিশ্চীরতামিত্যাহ যরেত্যাদি, প্রকৃত্যাদিরিহ পদার্থ উচ্যতে, পদমর্থ: প্রয়েজনমন্তেতি পদার্থ:, প্রকৃতিপ্রতারবিশেষাৎ সম্থঃ প্রাত্তিবি যক্ষ স এব যর ভবতি তৎসমূহং উহ্নদারেণ প্রতিভাতমাত্রাৎ প্রভারাং প্রকৃতেশ্চেভি, তত্তক লোকপ্রসিরেষু প্রকৃতিপ্রভারবিকল্পো ন কার্য্যঃ তথাচোজং, সংজ্ঞাস্থ ধাতুরপাণি প্রভারাংক ততঃ পরে। কার্য্যবিদ্যাদমূব্য মেতজ্ঞকাম্পাদিনিতি। কার্য্য এণ রন্ধ্যাদিলক্ষণৈঃ, অস্বস্থ শকারাদিন বজানীরাং। ব্যৎপত্তি পক্ষমাপ্রিভ্যাহ বর্তমান ইত্যাদি প্রস্তুচী ইভ্যাদিতঃ

এভাঃ করণে ইত্রঃ স্যাৎ। অর্যাতে অনেন অরিত্রং নোবাহনং, রিপুলবিত্তোবাণঃ, ধুবিত্রং ধবিত্রঞ্চ ব্যঙ্কনং, সূ
সবিত্রং, থনিত্রং, সহিত্রং, চরিত্রং, পবিত্রম্। বাহুল্যাৎ—'পুরঃ
কর্ত্তরি চ॥ পুনাতীতি পবিত্রোহগ্নিঃ, পবিত্র ঋষিঃ।

৯। খণ্ভাব কারকয়োরকর্রি।

অনয়ের্ধাতোর্ঘণ্ স্থাৎ। ভাবে,—পাকঃ ত্যাগঃ রাগঃ
কারকে সংজ্ঞায়াসসংজ্ঞায়াঞ্চ ॥ লিখ্যতেহসোঁ লেখঃ, বেদঃ
প্রাস্থতে প্রাসঃ, রজ্যতেহনেনেতি রাগঃ কুঙ্কুমং, দাস্থতেহল্মৈ দাসোবিপ্রঃ, আহরন্ত্যমাদিত্যাহারঃ, আপ্রিয়তে
অম্মিনিত্যাধারঃ ॥ বহুলাধিকারাৎ—'পদাদেঃ কর্তুরি চ ॥
পদ্যতে পাদঃ। রুজতি রোগঃ। সরতি কালান্তরমিতি
সারঃ স্থিরাংশঃ। অতিসারো ব্যাধিঃ, বিনারোমৎস্তঃ।
বহুতীতি বাহোহখঃ। কলয়তীতি কালঃ, সরস্তানেন সারোবলমিত্যাদি।

১০। শৃণাতের্বায়ু বর্ণ নিরত্তেয়ু।

শারো বায়ুর্বর্ণন্চ। নীশারঃ প্রাবরণম্। অতোভাবেহকর্ত্তরি কারকে চ বিধিঃ।

১১। পরিমাণার্থে সর্বেভ্যঃ।

ষত্র সর্বধাত্ভ্যো ঘণ্ স্থাৎ। সর্বগ্রহণাদপবাদবি-নয়ে চ। একস্তভুলনিশ্চান্তঃ, দ্বৌ সূর্পনিষ্পাবৌ । বাহল্যামৈ কোপি তবনিশ্চয়ঃ।

३२। इद्धारमञ्च।

অপেহিপবাদার্থেহিয়নারস্তঃ। ইঙাদের্ঘণ্ স্যাৎ। অধ্যায়ঃ উপেত্যাধীয়তেহস্মাদিত্যুপাধ্যায়ঃ দীর্ঘতেহ মীভিদ্রোই জীর্ঘতে অনেন জারঃ।

১७। मरमाङ्गः। ১८। खन्म यर्डः।

সন্দাবঃ। সংস্তাবঃ ছন্দোগানাং। অযুক্তেত্ সংস্তবঃ।

30 | निक्ष श्रेतः । निल्लावः छेरलावः।

১७। ममूरमा यू यन्वः।

मः यावः छेन्यावः, मः जावः छेन्छावः (याव क)।

১৭। প্রে দে স্ত ব্দবঃ।

প্রদ্রাবঃ প্রস্তাবঃ প্রস্রাবঃ। স্রাব*চ।

১৮। दिः कु व्यन्तः। विकादा विवादः।

১৯। প্রে স্থোইয়জে । প্রস্তারঃ, যজে হু-বর্হিঃ প্রস্তরঃ

२०। প্রথনে বেরশবে।

वातिविखातः। भरक्क्-वाधिखतः।

২১। ছন্দসি চ। বিষ্টারঃ প্ত্তিল নাম ছন্দঃ।

২২। ৰুবঃ প্রাদেঃ। সংরাবঃ, বিরাবঃ।

২৩। আঙো বা কেবলাচ্চ।

व्याद्भावः व्याद्भवः। तार्वा तवन्तः।

२८। अजूतिश्योतिः।

শ্রায়ঃ ভাবঃ । প্রভাবাদিস্ত সমাদেন ॥

२०। উन्हे जित्रा वा। छेळ्नाः छेळ्नाः

২৬। অবান্ধিয়া। ত্রারার । ২৭। উদোবা কেবলাচ্চ। উন্নায়ঃ উন্নয়ঃ। নায়ো নয়ঃ।

২৮। জালমানায়ঃ। ২৯। পরিণায়ঃশারীণাং সর্বতোনয়নে। ৩০। অভেলুবিঃ। অভিলাবঃ।

৩১। ब्राप्ति श्री । ७२। कित्र 🕶 धारिया।

নিগারঃ উদ্গারঃ। নিকারঃ উৎকারঃ-এতে ধান্যোৎ-ক্ষেপণাথে । অন্যত্র-নিকরঃ, পুস্পোৎকরঃ।

৩৩। অবাৎ তৃ স্তৃঞ্জ। অবতারঃ অবস্থারঃ। ৩৪। স্থামো নয়ে। ৩৫। নীবার স্তৃণধাস্তো। ৩৬। পর্ব্যায়োইকুক্রমে।

৩৭। উপশায় বিশায়ে পর্য্যয়শয়নে।

অদ্য মমোপশায়ঃ, তবাদ্য বিশায়ঃ।

৩৮। হস্তাদানে চেরস্তেয়ে।

হত্তেন পুষ্পপ্রচায়ঃ, ফলোচ্চায়ঃ। হস্তাদান ইতি কিম্? রক্ষাত্রে পুষ্পপ্রচয়োহ্য়ং, অস্তেয় ইতি কিম্? চৌর্য্যেণ পুষ্পপ্রচয়ং করোতি হস্তেন।

৯। গৃহ দেহ রাশীকরণে ছাদেশ্চ কঃ।
নিকারো গৃহং, কায়োদেহঃ, কায়নিকায়ঃ।

८०। मुख्य मर्श्वार्यशिक्षा

একধর্মাকুসারিণাং ভিক্ষ্নিকায়ঃ। সধর্মিণামিতি কিম্? শৃকরনিচয়ঃ।

> 85। উদি গ্রহঃ। উদ্যাহঃ। ৪২। স্থবাদাকোশে।

নিগ্রাহন্তে ভূষাৎ, অবগ্রাহন্তে ভূষাৎ।

৪৩। সমি মুফৌ। वरहा मलक मः वारहा-मूछिति छार्वः।

৪৪। পরের্যক্তে।

উত্তবপরিগ্রাহঃ। অনজ্জে তু-পরিগ্রহঃ।

८৫। প্রালিপ্সায়াম্।

[·]পাত্রপ্রাহেণ চরতি ভিক্ষুঃ।

৪৬। বা বণিজাম্।

বণিক্সম্বন্ধিন্যভিধেয়ে প্রাদাস্থাৎ। তুলাপ্রগ্রাহঃ। তুলা-প্রগ্রহো বা।

८१। त्राभी ह।

রশ্মিরশাদিধারণরব্দ্ধুঃ তত্ত্র বা। প্রত্রাহঃ প্রত্রহঃ।

৪৮। অবাদ্বফীবিবন্ধে।

অবগ্রাছো অবগ্রহন্ট মেঘস্ত।

৪৯। খনঃ। বেত্যের, আথানঃ আথনঃ।

৫०। इ अ व्यक्ति। वावातः वावतः।

৫১। আঙি প্লুবঃ। আপ্লাবং আপ্লবং।
৫২। পরেভু বোইবজ্ঞানে। পরিভাবং পরিভবং।
৫৩। উদক্ষোইরুদকে। নেহ-জলোদক্ষনম।
৫৪। শ্লাদিণ্যমাদে রপ্।

ৠদন্তা-দিণন্তাচ্চ গমাদেশ্চ ঘণপবাদোহপ্ স্থাৎ।

ৠতঃ, করঃ, আকরঃ, তরঃ, গরঃ, সঙ্গরঃ, ইণন্তাৎ চয়ঃ জয়ঃ।
কথং ? ভয়ং (২) ক্রাবে, লোকাশ্রেয়ভালিঙ্গদ্যেতি। জবঃ প্রবঃ
দ্রেঃ, বিদ্রেহ, উৎসবঃ। গমাদেঃ খল্পপি, গমঃ, নিগমঃ; গ্রহঃ,
নিগ্রহঃ, বিগ্রহঃ; লত্তে অক্ষেয়ু গ্রহঃ। পরিসরঃ, উপসরো গর্ভ গ্রহঃ। চ্ছদঃ প্রচছদঃ, অপি হ্রস্কশ্চ। সঞ্চরঃ বহোব্রজঃ ব্যজঃ পলঃ আপাঃ মদঃ। প্রমদ সম্মদৌ হর্ষে॥ অন্যত্র প্রমাদঃ।
রু-করঃ, দুঞ্ আদরঃ, বশঃ রশঃ ভরঃ।

००। शादनत्रमः।

व्यचनः, विचनः। व्यथातस्य-चानः।

(७। तिहीं। नियमः, चानः।

৫१। वाथ जरभारे आरमः।

वाभः जनः। आरम्ख वावाधः छन्जानः।

(७। अन्हरमा व।

স্থনঃ, স্থানঃ; হদোহাসঃ; অপ্রাদেরিত্যের প্রহাসঃ উপহাসঃ।

⁽২) ভরম্। লোক: শাস্ত্রকার: তদ্ধীনতাৎ লিক্ষা। উক্লণ্ট, লিক্ষ বৃশ্বং লোকাশ্রমান্ত্রিকভাতি

৫৮। यभा-नि वि ममूशाक।

ख्यारमञ्ज ॥ यरमाशामध । नियरमा नियामः, वियरमावियामः, मংयमः সংযামः, উপযমঃ উপযামঃ ।

৫৯। त्नर्गम नम शर्र खनः।

বেত্যেব। নিগদো নিগাদঃ, নিনদো নিনাদঃ, নিপঠো নিপাঠঃ, নিশ্বনো নিশানঃ।

৩০। কণোইপ্রাদেশ্চ নেশ্চ।
কণঃ কাণঃ, নিকণো নিকাণঃ।
৬১। প্রাদেশ্চ বীণায়াঃ।
প্রকণঃ প্রকাণ ইত্যাদি।

৬২। নিত্যৎ সমুদো-রজঃ পশোঃ।

পশুসদ্ধিন্যভিধেয়ে। সমজঃ-পশ্নাং সংঘঃ, উদজঃ পশুপ্রেরণং। অন্যত্ত্র বিপ্রসমাজঃ।

৩৩। হ্বো হুশ্চ। হবো ছুতি:।

৬৪। বিশ্রভ্যুপাক।

বিহবে। নিহবঃ অভিহবঃ, উপহবঃ।.

৩৫। আহাবো নিপানে।

৩৬। আহিবোযুদ্ধে। ৬৭। হনোবধ চ। স্থাৎ। বধঃ। বছলাধিকারাৎ ঘাতশ্চ।

७৮। मृट्डी घनः। मृट्डीश्ता वनः छार।
७৯। अञ्चर्यत्नाटम्या। व्ययव्यक्तम् छार।
१०। गृरिश्करम्यन् थ्रय'न'। थ्रय'न'र्गि।

१८। উদ্যনোইত্যাধানে।

যত্রাধার কার্চং ভক্ষ্যতে স উদ্ঘনঃ।

१२। जगश्याभेरक।

৭৩। স্তশ্বারোবিদুভ্যঃ করণে।

এভ্যোহণোহপ্, ঘণাদেশন্চ। স্তম্বঘনঃ, কে স্তম্বাহপি, অয়োঘনঃ, বিঘনঃ, ক্রঘণঃ কুঠারঃ। সংজ্ঞায়াং ণত্তম্।

৭৪। পরের্ঘণ্ড। পরিঘা। পরের্হনোহপ্, ঘাদেশশ্চ। পরিঘা।

१৫। मुख्यांगरम।

१७। উদ্घঃ প্রশংসায়াম্।

৭৭। নিখে নিমিতে।

নিঘা রক্ষাঃ, পরিতঃ সমা ইত্যর্থঃ।

৭৮। গোচরাহ্বয়ে।

नाम्नि धटको निशारकारक । भृकवकाना छेनानिकाः ।

৭৯। যজ যাচ স্বপ যত রক্ষো নঃ।

এভ্যো যথাযোগং ভাবেহকর্ত্তরি কারকে চ নঃ স্থাৎ। যজস্তান্মিমিতি যজ্ঞঃ, যাচ্ঞা ক্রিয়াং, স্বপ্নঃ, যত্নঃ, রক্ষঃ।

৮০। বিশ্বপ্রশো। विছপ্রছোর্নিপাত্ত্যেতে।

৮১। যোৰপসগাৎ কিং।

खेलमर्शाकाशाचाः किः छार । जानिः, निधिः, विधिः, अधिः, अधिः, अधिः, अधिः, अधिः, अधिः, अधिः,

৮२। कर्मार्गाविषकतर्ग।

কৰ্ম্বোপপদাদ্যোঃ কিঃ স্থাৎ। জ্বলংধীয়তেহ স্মিন্নিডি জলধিঃ, ৰালধিঃ, ইযুধিঃ, ওষধিঃ স্তিয়াম্।

৮৩। টিবতাইথুচ্।

টুকারেৎসংজ্ঞকাদথুচ্ ভাব। বেপপুঃ, বনথুঃ, ক্ষবপুঃ

৮৪। ড্রিত স্ত্রিমক্ তদ্ভাবনির তৈ। 📜

ভদ্তাবনির্কাতে হর্পে । জুকারে দেক্তে কাৎ ত্রিমক্ স্থাৎ। পাকেন নির্কাতং পজিনুমং, কৃত্রিমং, ক্রীত্রমন্ লব্দ্রিমঃ। ৮৫। হুঃস্বীযদ্ভ্যঃ কৃচ্ছু কিচ্ছু বৈর্ভ্যঃ খল।

তুরাদিভো ধাতুভাঃ খল্ আৎ। ক্চেন্থ ক্রিয়তে-তৃষ্করঃ অক্চেন্ত্র ক্রিয়তে-স্করঃ কটো ভবতা, স্থলভা বিদ্যা ভবতা ঈ্ষৎকরঃ। ঈ্যল্লভামিতি-লভাসিদ্ধো পশ্চাৎ সমাস্যে।

৮৬। কর্তৃকর্মভ্যাঞ্চ ভূক্ত্যাম্।

ছ্রাদি পূর্বাৎ কর্ভু বিং, কর্মণং ক্রঞঃ খন জাৎ। কছে-পাঢ়োন ভূমতে-চ্রাচ্যন্তবম্। ঈনদাচ্যন্তবম্। কছেণায়মাচ্যু ক্রিয়তে-চ্রাচ্যন্তর স্থা পুত্রং। স্বাচ্যংকরং অপুত্রং। ঈষদা-চ্যন্তবা কলা।

৮৭। আদ্দৃশিধ্বিয়বিযুধিশাস্বভ্যোইনঃ।

व्याकां ताखाम् शार्तम् इत्रामित्नाश्चार नः खार । इल्लानर स्र्णानः क्रेयर्शानः इमित्नार्शाः । इमिन्नः, इम्बर्गः, इन्धर्यः, इर्र्यापनः, इःभामनः ।

৮৮। ই কি শতিপো ধাতুকথনে।.

এতে ত্রেয়: প্রত্যা ধাতু নির্দেশে স্থাঃ। ই-ইন্ধিঃ যজিঃ। কি-যুধিঃ, রুধিঃ, রুধিঃ। শতিপ্—ভরতিঃ, করোতিঃ॥ দৃষ্ট্যর্তি সর্ভয়ো নিপাতনাৎ॥ আকারাদ্যান্তদ্বিতাঃ॥ কারশব্দেন সমাদেন চ॥ এবং কারঃ, বষট কারঃ ইত্যাদ্যাঃ।

৮৯। ইক্ ক্ষ্যাদিভ্যঃ। কৃষিং গিরিং কিরিং।
৯০। ইণ্ অজাদিভ্যঃ। আজিং আতিং আটিং।
১১। পদাদে স্থিঃ।

পত্তিঃ যষ্টিঃ, শক্তিরাযুবং, জ্ঞাতিঃ, উণাদিকাশ্চৈতে।

৯২। টনঃ কর্ত্তরি চ।

ধাতোর্ভাবকারকয়ে। ইনঃ স্থাৎ। গমনং, দানং, পয়ঃপানং
গুড়ভোজনম্। কর্ত্তরি—উপশময়তীতি উপশমনঃ, দ্বিষত্পশমনী
বিদ্যা, গুণমুক্তবান্ গুণবচনঃ। কর্ম্মণি—রাজভোজনাঃ শালয়ঃ,
অবসেচনোরক্ষঃ। করণে—প্রমাণং উপমানং, ছেদনঃ পরশুঃ,
ইশ্বশচনঃ কুঠারঃ, পলাশশাতনং। সম্প্রদানে—দীয়তেহস্মৈ
দানো বিপ্রঃ। অপাদানে—প্রপতনোভ্গুঃ। আধারে—গোদোহনী, মৎস্থধানী, রাজধানী, ওদনপচনঃ কটাহঃ, ব্রীহিহরণঃ
কুশ্লঃ (মড়াই)।

৯৩। পুংসি ঘণপ্ কি নাপুচঃ।

এতে পুংসি স্থাঃ। তথৈবোদাহতাঃ। কথং ! সার্মিদং সারেয়ং। অপ্ধনং, বনং। কি-ওধধিরিয়ং। ন-যাচ্ঞা। বাহুল্যাৎ, আহুশ্চ-'লিক্সশিষ্যং লোকাঞায়ত্বালিক্ষেতি।

৯৪। ভাবে টনক্তৌ ক্লীবে।

হসনং হসিতং তব।

৯৫। इनश्रं ভिविदश इिन्द्रां तिरा ।

অভিব্যাপ্তো ধাতোর্ভাবে ক্লীবে চ ইনণ্ স্থাৎ। উপদর্শ-স্থানের্বি, ক্লিন্ট। সাংবাবিশং, সাংকোটিনম্।

১৬। স্ক্রিয়া মিকণ্ ক্তিনৌ।

ত্রীলিঙ্গে ভাবে চাকর্ত্তরি কারকে ইকণ্ক্তিনো স্থাতাম্। ভবতঃ শায়িকা, আদিকা। সংজ্ঞায়াং—প্রবাহিকা বিচর্চিকা প্রছদ্দিকা প্রসন্দিকা, দমনকপুষ্পভঞ্জিকা নামক্রীড়া, পর্য্যায়ে—আদ্য তব শায়িকা, অর্হে—অর্হদি ছমিক্ষুভক্ষিকাং, ধারে—ধার-য়িদি মে পয়ঃ পায়িকা। উৎপত্তো—উৎপন্না মে পয়ঃ পায়িকা। জিন্—কৃতিঃ হিতিঃ ইষ্টিঃ গীতিঃ কীর্ত্তিঃ কীর্ণিঃ।

৯৭। প্রশাখ্যানয়োরিণ্চ।

অনয়োর্ধাতোরিণ আৎ। ইকণাদয়শ্চ। প্রশ্নে-ত্বং কাং কারিমকার্মী:-কাং কারিমকাং, কাং কৃত্যিং, কাং কৃত্যাং, কাং ক্রিয়াযা। আখ্যানে-সর্বাং কারিমকার্মণ, সর্বাং কারিকাং সর্বাং কৃতিমিত্যাদি।

৯৮। উতিযুতিজৃতিসাতিহেতিকীর্ত্তরশ্চ। নিপাত্যন্তে। অবতের্বেঞো বা—উতিঃ, অতেঃ দিঞো বা–দাতিঃ। হি–গতৌ, হেতিঃ।

৯৯। গ্লা-মা-জ্যা-হাভ্যো নিঃ।

এভ্যো নিঃ স্তিয়াং ভাৎ। গ্লানিঃ মানিঃ জ্যানিঃ হানিঃ।

১००। किकार्भिय नामि।

আশিষি ধাতোঃ ক্তিচ্ স্থাৎ। তমুতাৎ-তন্তিঃ, বন্তিঃ ভূতিঃ।
১০১। ব্যান্তি ব্যতীহারে নট্।

ক্রিয়াব। তীহারে ব্যাঙি সংঘা**ডোপপদেহত্ত শচ ধাতোঃ** ব্রিয়াং নট্ স্থাৎ। ব্যাকোশী ব্যাবহাদী ব্যাত্যকী।

১০২। ব্ৰজাদেভাবে ক্যপ্।

ব্রজাদের্ভাবে স্তিয়াং ক্যপ্ স্থাৎ। ব্রজ্যা ইজ্যা পরি-চর্যা। জাগর্যা গুণবিধানার তুক্। কুত্যা।

५००। मध्खातार ममजारमः।

সমজ্যা সমস্থা নিষদ্যা নিপত্যা মন্থা বিদ্যা, স্থা স্ত্যা শ্য্যা ভূত্যা, ইণ্ইত্যা।

১০৪। ক্রিয়াটাট্যা মৃগয়। পরিসর্য্যেচ্ছাঃ। পঞ্চৈত স্ত্রিয়াং ভাবে নিপাত্যন্তে।

১০৫। সনাদি ষিদ্রিদাদিভ্যোপ্তাপ্।

এভ্যো ভাবেহ কর্ত্তরি কারকে চ স্ত্রিয়াং গুল স্থাহ। সনস্তাহ
ক্রিনীয়া পুত্রীয়া পুত্রকাম্যা লোলুয়া চংক্রেমা কণ্ড্রা। বিতঃ
পচা ত্রপা, ক্ষিয়–ক্রিয়া; ঘটাদেঃ বিতঃ; ঘটা ব্যথা প্রথা
বাহুল্যায়েহ উপলব্ধিঃ। ভিদাদের্যথা দর্শনম্। ভিদা, বিদা,
ছিদা, পুচছা, ক্রিপা, রুজা, গুহা, স্থুজা। বিদ্যন্থাতেন্ত্রা,

১০৬। গুর্বাদিহলোইদীপাদেঃ।
শিক্ষা ভিক্ষা চূড়া শীড়া মেধা ঈহা উহা বাধা রাধা। বাহুল্যাৎ
উহঃ বাৰঃ রাধঃ। অদীপাদেরিতি কিমৃ ! দীপ্তিঃ আপ্তিঃ।

५०१। माश्रमर्गामामखाद ।

शुका, कथा, कृषा, ठकी।

প্রমা প্রতিমা প্রভা আখ্যা আহ্বা। প্রপিবস্তাস্থাং প্রপা। আস্থান্যবস্থা উপধা বিধা অন্তর্জা ॥ প্রতশ্চ-শ্রদ্ধা নিপাতনাৎ।

১०৮ । ज्या श्रांतामय्र**म्ह** ।

গুণর্দ্ধিভ্যাং ঙাবস্তা নিপাত্যস্তে। জরা ধারা শোভা জাগরা। অপ্প্রত্যয়ে জাগরশ্চ। লেখা, রছে রেখা, ধারা ভারা হারা আরা জালা॥ জপেশ্চ কুপা নিপাতনাৎ।

১०৯। गामगुराप्ततनः।

ने शिखारिकः खिद्यां मनः खाद। কামনা কারণা ভাবনা বাসনা। উপাসনা, গ্রন্থনা। আদিশব্দাৎ—গ্রন্থনা ঘটনা বন্দনা বেদনা গবেষণা॥ ইবেরনিছার্থাৎ॥ অস্থেষণা পর্য্যেষণা॥ বাহুল্যাৎ কচিৎ সামান্ত বিশেষয়োশ্চ সমাবেশঃ (৩)। পরীষ্টিঃ, পাচয়তেঃ পাক্তিঃ।

১১০। আক্রোশে নঞ্যনিঃ।

আজোশে (শাপে) নঞ্পপদে ধাতোরনিঃ স্থাৎ।
'মা জীবন্ যঃ পরাবজ্ঞাহুঃখদগ্ধোহপি জীবতি। তস্থাজননি
রেবাস্ত জননিক্রেশকারিণঃ ইতি মাঘঃ। অকরণিস্তে ভূয়াদ্হঠ।

১১১। তুম্ তাদর্থ্যে ভাবস্থা।

ধাত্বপত্ত তাদর্থ্যে গম্যে ধাতোন্তম্ তাং। জ্বা মান্ত কৃত-শ্চাব্যম্। পক্ত্র ভোক্ত্রজতি, পাকায় ভোজনায় ইত্যর্থ:। এবং শক্ষোতি ভোক্ত্র্, অলং ভোক্ত্র্থ মল্লোভোক্ত্র। কালো-ভোক্র্র সময়োভোক্ত্র বেলা ভোক্ত্র। গন্তমনাঃ, গন্তকামঃ, লোত্রং প্রবণং, দেক্ত্র চক্ষ্রুং, যোদ্ধ্র ধক্রঃ, বক্ত্রুং জড়ঃ, গৃন্তমলসঃ, পাত্র পয়ঃ। ত্মর্থে বক্তপ্রান্তক্রঃ। ওদনং ভোজকো ব্রন্তি।

⁽৩) বাহল্যাহ্ৎ দর্গাণবাদে পরিক্তা তদক্ত প্রবর্ততে ইতি পরীষ্টি:।

১১२। ज्यारेनश्रावाः প্রতিষেধয়োঃ।

প্রতিষেধার্থরোরলং থবোর্যোগে জুবা স্থাৎ। অলংকৃত্বা থলুকৃত্বা, থলুজুবা থলুবাচিকং, ন বক্তব্যমিত্যুর্থঃ। বাহুল্যাৎ অলং বালে! রোদনেন, অলং ভোজনেন। (প্রতিষেধ্য়োঃ কিমৃ ? অলক্ষারঃ। (অলছাব্যাঃ কিমৃ ? মা কার্যীঃ)।

১১৩। ময়তে ব্যতীহারে, বা মিশ্চ যপি।
মেঙঃ কর্মব্যতীহারে জ্বা বা স্থাৎ। যপি তম্ম মিশ্চ বা
স্থাৎ। অপমিত্য-যাচতে, আপমাতৃং যাচতে বা, বিনিময়ং
কর্জুমিত্যর্থ:। পক্ষে অপমায়ঃ। (যাচিত্বা অপময়তে)।

১১৪। এককর্তৃকয়োঃ পূর্বকালে। (৪)

এককর্তৃকয়োর্ধা (ত্বর্থয়ো) ত্বোর্যঃ পূর্ব্বকালে বর্ত্ততে, তত্মাৎ ক্ত্বা (৫) স্থাৎ। ভূক্ত্বা ব্রজতি, কটং ক্তবা শেতে। দ্বিত্বমতন্ত্রং। (৬) তেন–স্বাধা ভূক্ত্বা পীড়া ব্রজতি।

⁽৪) সমান কর্জকরোঃ পূর্বে কালে ইতি পাণিনিনা স্ত্রিতম্। অনুনাসিক-লোপে—বিষ্ণুন্নত্বা স্তোতি। ক্র্যুক:—কিতীতি পূর্বে বিপ্রতিবেধন নিত্য-মিড্ভাব:—স্মৃত্বা, স্ত্বা, ধ্বা ইতি।

⁽৫) জ্বামান্ত ইতি। জ্বা থিতি 'অব্যয় কতোভাবে' ইতি বচনাৎ ভাব এবেত্যর্থঃ। ভাবশ্চেহ ঘণাদাবিব ন সিদ্ধাবস্থঃ, কিন্তু সাধ্যাবস্থস্থ কুতং হরিণা—''অব্যয় কৃত ইত্যুক্তেঃ প্রকৃত্যর্থে তুমাদয়ঃ, সমান কর্তৃকথাদি দ্যোত্য মেধামিতি ছিতি" রিতি। যথা চৈষাং সাধ্যক্রিয়াদ্যোতকত্বং তথাপ্রপঞ্চিতং শক্ষার্থ রয়ে।

⁽৬) বিত্যমিতি। "গুণানাঞ্চ পরার্থতাদসংবন্ধঃ সমস্থাৎ স্যা দিতি স্থারেন ক্রিয়াণাং ন পরস্পারবিশেষাবিশেষণভাবঃ কিন্তু সর্ব্ধাসামের প্রধান ক্রিয়ায়ামবর ইত্যাশয়েনোক্তং বিত্যমতন্ত্রমিতি, এতচ্চ বিশেষণক্রিয়য়োরসতি তথা তাৎপর্য্যে বোধ্যং, যদি ভূ বিশেষণক্রিয়রোরিপি পুর্ব্ধাপরকালতং বিব-

পরাপেক্ষা বা॥ এককর্তৃকয়োরিতি কিম্ ? ছয়ি গতে জন্নত্যসৌ। পূর্বা কাল ইতি কিম্ ? ভুঙ্ক্তে জন্নতি চ।

१५४। পরাবর-যোগে छ।

পেরেণ পূর্বিভাবরেণ পরস্থ যোগে গম্যে ধাতোঃ জ্বা স্থাৎ)। বাল্যমতিজম্য যৌবনং, বাল্যাৎ পর্যমত্যর্থঃ। (অতিজম্য পর্বতং স্থিতা নদী, (৭) অবরপর্বতযোগোহত্র নদ্যাঃ) অপ্রাপ্য নদীং পর্বতঃ, নদ্যা অবর ইত্যর্থঃ (পরনদী যোগোহত্র পর্বত্ত্ত্য) (৮)। অত্রাপি পূর্বেকালতা এক কর্ত্ত্বতা চ বর্ত্ততে, ভবত্যস্তীতি পদাধ্যাহারাৎ। যথা— যানৎ কৃত্য পততি, মুথং সম্মাল্য হসতীত্যত্র বাক্যাদেব পূর্বেকালতা গম্যতে। যদি সমকালং বিবক্ষতে, তদৈবং স্থাং। বানংকুর্বন্, বানঝনায়মানো বা পততীতি। ইহ স্নাড়া স্থং ভবতি, পাপং কৃত্বা অনুতাপঃ স্থাদিত্যাদে), স্থিতস্থেতি পদমধ্যাহার্য্য।

১১৬। আভীক্ষ্যে ণম্বা।

ক্ষিতং তদাক্তৃত্যান্তরকৈব বিশেষণতয়া পৃস্ম কালিকক্রিয়য়ামেব কে,ভি, তথাচ পক্তৃ ৷ ভুক্তৃ অপিতীত্যের প্রয়োগঃ, ন তু ভুক্তৃ ৷ পক্তৃ । অপিতীতি ।

- (৭) দক্ষিণ দেশস্থানামেবারং প্রয়োগঃ। অত হি গলায়াঃ পুর্বো বিষ্কাঃ ইতি গম্যতে ইতি বিশেষঃ। ইহ ত্রিস্ত্র্যাং জ্বা প্রত্যমুক্ত ভাবার্থত্বেহিশি বিশেষ্যবিশেষণ ভাবসংস্পৃত্তেশে বোধ্যতে ইত্যবৈষ্যার্থ্যম্।
- (৮) জত্র নদী পজা, পর্বে তোবিকাঃ, তথাচ দক্ষিণছানাং প্রসামপ্রাপ্য বিকাঃ, পজাপ্রান্তিবিরহবিশিষ্টকেশক্ষোবিকাঃ ইতার্থঃ। তেন বিকাশং পরা পক্ষেতি প্রমাতে।

পূৰ্বাৰ্থে পোনঃ পুষ্ণে চধাতোৰ্য্ বা স্থাৎ। ক্যাচ। ভোজং ভোজং এজতি। ভুক্তা ভুক্তা এজতি।

५५१। अ८०१-श्वम-शूर्वम्।

এষু প্রযুদ্ধানির শম্ জাচ ভবতঃ। মগ্রেভোজং, মঠো দুক্রা অজতি। প্রথমং ভোজং, প্রথমং দুক্রা, প্রথং ভোজং প্রবং ভুক্তা বা।

১১৮। कर्मनहादकारम क्ख श्यून्।

কর্মগুপেপদে কুঞ্চ খমুণ্ স্থাং । বাজাশাদের । তং চোরস্কারমান্দিপতি।

১১৯। স্বাহ্বচনে চ।

স্বাদ্ধে চি কুঞঃ খমুণ, স্থাৎ। স্বাদ্ধারং ভূঙ্কে, মিউ-ক্ষারং, লবণক্ষারং ভূঙ্কে॥ নচ্চে । স্বাদ্কুত্য।

১২০। অন্তথৈবিষিত্থক্কথমো গম্ সিদ্ধা প্রক্রোগে।

এভ্যঃ কুঞো ণম্ স্থাৎ। সিদ্ধার্থপ্রেরাগশ্চেৎ। অন্যথা-বক্তীতি অন্যথাকারং বক্তি, এবঙ্কারং, ইর্থস্কারং, কথকারম্।

১২১। যথা-তথাভ্যামসূমোতরে। কুঞোণমু স্থাৎ। যথাকারং, তথাকারং ভুঙ্ক্তাং, কিন্তুবানেন।

১২२। कर्माणा मृश्यि-विषः भाकतना।

কর্মণ আভ্যাৎ ণম্ স্থাৎ। ত্রাহ্মণদর্শং প্রণমতি, সর্বান্ ত্রাহ্মণানিত্যর্থঃ। ভিক্ষুবেদং ভোজয়তি॥ অতঃ কর্মণো বিধিঃ।

১২৩। যাৰতো বিন্দ-জীবেঃ।

যাবদ্বেদং ভুঙ্ত্তে, যাবজ্ঞীৰস্বীতে।

১২৪। চর্মোদরাভ্যাং পুরেঃ।

ণম্ স্থাৎ। চর্মপুরং ভিলান্দলাতি। উদরপুরং ভূঙ্কে।

১২৫। রফিপ্রমাণে উলোপো বা।

त्रष्टि अभारत नम् जार । छेरनारमा वा। मान्निम अर त्राकी। (प्रवृह, (गाष्ट्रीपशृहः वा।

১২৬। চেলার্থাৎ ক্লোগেঃ।

वृष्टि श्रमार्ग । ८० नरका भः ब्रह्मे (एन वह, बद्धारका भः ब्रह्मो एन वह।

১২৭। প্রাগুপদৎশো যথা বিধারপ্রয়োগঃ।

ইতো যলাদ্ধাতোৰ্ম্ বিভিত ভটেল বালুপ্ৰয়োগঃ কাৰ্য্যঃ (৯) মণ্ডুকগত্যা নিদ্ধার্থা প্রযোগশ্চেতি প্রাওপদংশঃ।

ऽ५৮। नियृल-नयृला९ कयः।

निमृलकाषः कर्षात्र, नमृलकाषः क्य शैठार्थं ।

১২৯। অকৃতাৎ কৃঞ্ঞঃ।

ণম্ স্থাৎ। অকুতকার কুরুতে।

300 । जी राष्ट्रश्रा भग्याः । जीनवाहः गृहाि ।

১৩১। শুক্ত-চূর্ণ-কৃক্ষাৎ পিষঃ। অভ্যোগর্মপ্রাৎ। শুক্পেষং, চুর্নপেষং, কৃক্পেষং পিনষ্টি। ১৩२। इनः ममूला ९। १म यार। मम्नचात्रः ख्रावी १।

বধা, মণ্ড কঃ প্রবে পক্তৃন মধ্যং ন প্রাণতি তথায়মধিকার ইতি।-

১৩৩। করণাক।

কর্ম্মণ ইতি নির্ত্তং ॥ হনঃ করণোপপদাগ্রম্ স্থাৎ । পানিনা হন্তীতি-পানিঘাতং হন্তি, শর্ঘাত মরীন্ হন্তি।

১৩৪। স্নেহোদকাৎ পিষঃ।

স্নেহোদকাৎ পিষো শৃষ্ স্থাৎ। স্থতপেষং, তৈলপেষং (উদপেষং) উদকপেষং পিনষ্টি।

১৩৫। হস্তার্থাদ্বর্তিগ্রহেঃ।

হস্তার্থাৎ করণাদাভ্যাং ণম্ স্থাৎ। হস্তবর্ত্তং বর্ত্তয়তি, হস্ত• গ্রাহং, পাণিগ্রাহং গৃহ্লাত।

১৩৬। স্বার্থাৎ পুষঃ।

আত্মাত্মীয়-ধন-জ্ঞাতি-করণাৎ পুষের্ণম্ স্থাৎ। স্বেন পুষ্ণাতি পুষ্যতি পোষতি বা-স্বপোষং, এবং আত্মপোষং আত্মীয়পোষং ধনপোষং রৈপোষং গোপোষং পিতৃপোষম্।

১৩१। वस्त्राञ्चिकत्रगाद।

বধাতের্ণম্ ভাৎ। চক্রে বন্ধঃ-চক্রবন্ধং বন্ধঃ, গুপ্তিবন্ধং বধাতি।

১৩৮। কর্ত্ত্রহ্মাচ্ছু যি-পূরেঃ।

আভ্যামূদ্ধাৎ কর্ত্ব্য স্থাৎ। উদ্ধ: শুষ্যতি-উদ্ধশোষং শুষ্যতি, উদ্ধপূরং পূর্য্যতে।

১৩৯। পুৰুষাদ্বহঃ। জীবারশঃ।

পুরুষাৎ কর্ত্বিহেজীবান্নশেশ্চ ণম্ স্থাৎ। পুরুষঃ সন্
বহতি-পুরুষবাহং বহতি, জীব এব নইঃ-জীবনাশং নইঃ।

. ১৪০। উপমানাৎ কর্মণস্ট।

উপমানাৎ কর্ত্তঃ কর্মানক ধাতোর্গ স্থাৎ। মুগ ইব নফঃ
মুগনাশং নফঃ, মুভবিলায়ং বিলীনঃ। কর্মাণঃ-রজ্ববি নিহিতঃ
রজ্বনিধায়ং নিহিতঃ, ময়ুরিকাবদ্ধং বদ্ধঃ।

১৪১। উপদংশব্তীয়ারাঃ।

• যথা বিধ্যুক্নির্ভৃষ্। তৃতীয়ান্তাতুপদংশোণম্ স্থাৎ। মূল• কেনোপদশ্য–মূলকোপদংশং ভুঙ্ক্তে, মূলকেনোপদংশস্বা। অতো বিকল্পেন সমাসঃ॥

১৪২। হিৎসার্থাদভিন্নকর্মকাৎ।

তৃতীয়ান্তোপপদান্ধিংসার্থান্ধাতোর্ণম্ স্থাৎ। দণ্ডোপ-ঘাতং গাঃ কালয়তি, দণ্ডেনোপঘাতং বা। দণ্ডভাড়ং গাঃ কাল-য়তি, দণ্ডেন ভাড়ং বা। অভিন্নকর্মাকাদিতি কিমৃ ? দণ্ডেনাহত্য-বৃক্ষং গাঃ কালয়তি, অর্থাস্তরপ্রয়োগাদ্ ভিন্নকর্মতা।

১৪৩। সপ্তম্যাদেচাপপীড-ৰুধ-কৰ্ষঃ।

সপ্তম্যন্তাৎ তৃতীয়ান্তাচ্চ উপপীড়াদের্গম্ স্যাৎ। উপাদের
পীড়োহন্যন্তোহনিয় (মঃ) মাৎ (১০) পার্ষোপপীড়ং শেতে,
পার্যে উপপীড়ং শেতে, পার্যে নোপপীড়ন্ধা। কর্ণরোধং, হক্তে
রোধং হস্তরোধং হস্তেনোপরোধং বা ধনুর্দ্ধাতি। পার্ণিকর্ষং
বটুকমানয়তি, পার্ণো কর্ষং পার্ণুপকর্ষং পার্ণনা কর্ষমা।

১৪৪। সমাসত্তি-প্রমাণরোঃ।

সন্নিধানগতো প্রমাণে চ সপ্তম্যন্তাৎ তৃতীয়ান্তাচ্চ খাতো-

⁽১•) সপ্তমান্তাৎ তৃতীয়ান্তাচ্চ উপাদেব পীড়োণম্ ইতি নিরমঃ, জন্ত-ভোহন্তমান্ত্রপসর্গাদ্নিরমঃ যথাবোগ্যমিতি।

র্ণিয় দ্যাৎ। কেশগ্রাহং যুখ্যন্তে, কেশেরু গ্রাহং কেশৈগ্রাহং বা। দ্বাস্লোৎকর্ষং দ্বাস্লেনোৎকর্ষং দ্বাস্লে-উৎকর্ষং বা দ্বং ছিনতি।

১৪৫। অপাদানাত্ ত্রায়াম্।

অপাদানাদ্ধাতোর্ণম্ স্যাৎ। ত্বরা চেৎ। শ্য্যোত্থায়ং ব্রজ্জি শ্য্যায়া উত্থায়ং বা।

১৪৬। দ্বিতীয়ায়াশ্চ।

দ্বিতীয়ান্তাৎ হরায়াং শম্ স্যাৎ। লোক (ষ্ট্র) গ্রাহং মুধ্যন্তে লোকং (ষ্ট্রং) গ্রাহম্বা। (লোকঃ-চেনা)।

১৪৭। অপগুর ও-রা-দা।

অস্যুপগারং যুধ্যন্তে, অস্যুপগোরং বা, অসমপগারং, অসি-মপগোরং বৃ। ॥ অত্বায়াঞ্চ ॥ এক বর্জ্জম্।

১৪৮। স্বাঙ্গদশ্রুবাত্। ক্রিশ্যমানাচ্চ।

বিতীয়ান্তাৎ স্বাঙ্গান্ধাতোর্গন্মাৎ। জ্রিকেপং বক্তি, জ্বংবিকেপন্থ। অজনাদিতি কিমৃ ? শির উৎক্ষিপ্য কথমতি ক্রিশ্যনান্চ। উরঃ প্রতিপেষং যুধ্যন্তে, জ্বার্থমিদং। 'মত্র হতে প্রাণী ডিয়তে তদ্জবম্।

১৪৯। বিশি-পতি-পদি-স্বন্ধো ব্যাপ্যমানা দেব্যমানাভ্যাম্। (১১)

আভ্যাং কর্মভ্যাং বিশ্যাদের্গম্মান । ব্যাপ্যমানাদীপ্য মানদ্রব্যাৎ। সমাসে দ্বিক্তেরপ্রয়োগঃ। ত্রিকানুপ্রবেশ-

⁽১১) ত্রিয়াভি: সাকল্যেন স্রব্যাণামের সম্বের্যাপ্তি:, তৎসম্বন্ধং পদং

মাতে, গেহঙ্গেহমতুপ্রবেশখা, লতাতুপাতং পূজাং গৃহ্নতি
লতাং লতামতুপাতখা, গেহাতুপ্রপাদং, গেহঙ্গেহমতুপ্রপাদং
বা আত্তে। নদ্যবন্ধন্দমাচামতি, নদীংনদীমবন্ধন্দং বা। আদেব্যমানাদাভীক্ষ্য ক্রিয়ায়ায়। গেহাতুপ্রবেশমাত্তে, গেহমতুপ্রবেশমতুপ্রবেশভা এবং নদ্যবন্ধনাং, নদীমবন্ধন্দ মবন্ধন্দা।

১৫০। কালাদস্থ-তৃষোইন্তরে।

অন্তরে বর্ত্তনানাৎ কালাৎ কর্মণোছ্স্যতি ভ্রিভ্যাং পৃষ্
স্যাং । দ্বাহাভ্যাসং গাঃপার্রতি দ্বাহ্মভ্যাসন্থা দ্বাহন্তর্বং
দ্বাহতর্ব্যা। অন্তর ইতি কিম্ ? দ্বাহনভ্যাস শ্রান্ গতঃ ।

১৫১। নাম আদিশিগ্রহেঃ।

নাম্নঃ কর্মণঃ আভ্যাং গম্ স্যাৎ। নামাদেশমাচন্টে, নাম আহং পুচছতি।

১৫২। অযথা-যুক্তাখ্যানেংব্যয়াত্ কৃঞ্চঃ জ্বা বা।

অব্যয়াৎ কৃঞঃ ক্ত্রা বা স্যাৎ। পক্ষে ণম্ ভবতি। অযথাযুক্তাখ্যানঞ্ছে। আদ্ধাং পুত্তত্তে জাত ইতি নীচৈঃকারমাচন্টে
নীচৈঃকৃত্য; নীচৈঃকৃত্বা বা, উচৈচরিছাখ্যানং যুক্তং। আবেদরন্তঃ ক্ষিতিপালমুকৈঃকারং মৃতং রামবিয়োগশোকাদিতি
ভটিঃ, নীচৈরিছাখ্যানং যুক্তম্।

১৫৩। তির্য্য (কো) চোইপবর্গে।

ব্যাপ্যমানমিতার্থঃ, অতোহত্ত জ্বাস্ত দ্বির্মচনম্। ক্রিরায়া আজীক্সমাসেবাম্, অতঃ ক্রিরায়াঃ দ্বির্মচনমিতি।

তির্যাক শব্দাৎ কৃঞঃ জাণমোঁ দ্যাতাম। সমাপনঞ্ছে। তির্যাক কৃত্য, তির্যাক কৃষা, তির্যাক্কারং গতঃ সমাণ প্যেত্যুর্থঃ।

১৫৪। তম্মস্তমাঙ্গ-না-ধার্থপ্রত্যয়েভ্যো ভুবশ্চ।

এভ্য: কৃঞো ভ্বন্চ জ্বাণমো স্যাতাম্। তস্যস্তস্বাসাৎ।
মুখতঃ কৃত্য, মুখতঃ কৃষা, মুখতঃ কারং। পৃষ্ঠতো ভ্রা, পৃষ্ঠতো
ভূষা, পৃষ্ঠতো ভাবং। নাধার্থপ্রত্যয়াস্তেভ্যন্চচ্যুর্থেহ ভিধানং
নানাকৃত্য, নানাকৃষা, নানাকারং। নানাভূয় নানাভূষা নানাভাবং। এবং বিনা চ, বিনাকারমাদি বিধাকৃত্য বিধাকৃষা
বিধাকারং, বিধাভূয় বিধাভূছা বিধাভাবং, এবং বৈধং তৈরংং
বেধা তেধাদেশ্চ।

১৫৫। তৃষ্ণীমঃ। অশ্ব (ক) চ আরুকূল্যে।

'চাকুক্ষীং ন সর্বাত্তি' কৃঞ্জ নির্ভঃ। আভ্যাং ভুবঃ জ্বাণমো স্যাতাম্। ভূফীংভূয় ভূফীংভূছা ভূফীংভাবং। অন্বগ্-ভূম অন্বগ্ভূত্বা, অন্বগ্ভাবং রশ্বুর্ষভ্যোঃ।

১৫৬। অব্যয়কৃতোভাবে।

অব্যয়কৃতোভাবে ভবন্তি। তৎ কথং ওদনং পঁজুং ব্ৰহ্মতি, কটং কৃত্বা ব্ৰহ্মতি। তত্ৰাহুঃ "ভাবেহপি হি প্ৰভ্যয়ে সকৰ্মকান্ধাতোঃ কৰ্মসম্বন্ধো ভবত্যেব" যথা—ওদনস্য পাকঃ, কৰ্মাণি ষষ্ঠী ॥ উক্তাঃ কৃতঃ প্ৰভ্যয়াঃ ॥

ः १९। त्कि। यथ ममोरमञ्ज्य १

সমাদে নঞোহফাশ্মিন্ পূর্বেকে ক্রেন্ব যপ্ স্যাৎ। প্রকৃত্য বিনীয়, সন্ধায়, শুক্লী কৃত্য, নানাকৃত্য, উচ্চৈঃ কৃত্য। কথং পরম কৃষা, যদৃচ্ছাদরশৈচতি নিপাতনাং। অনঞ্পূর্ব ইতি কিমৃ? অকৃষা। সমাস ইতি কিমৃ? উচিচঃ কৃষা। কচিৎ কেবল-স্যাপি দৃশ্যতে, অধনং ত্যজ্ঞা গছতি, সন্ধ্যাবধুং গৃহ্য করেণ গাড়মিতি।

১৫৮। অমদো দান্নিষ্ঠাতো নো দশ্চ।

দকারাৎ পরস্য নিষ্ঠাতকার্দ্য নঃ স্যাৎ। দকার্স্য চ। ভিন্ন: ভিন্নবান্। অমদ ইতি কিম্? মতঃ মত্বান্।

১৫৯। র-ম্বাদি-সূয়ত্যাদ্যোদিতো ২পৃমুচ্ছ ।

दिकारिप निष्ठां छका तथा नः खार । की भीः, পূরী – পূর্ণং । কথং চরিতং, ইড়্ব্যবধানাং । কথং কৃতজ্ঞাপত্যং কার্ত্তিঃ আঞ্চঃ আর্ত্তঃ, বৃদ্ধে বিহরপতাং । বাদেং – লূনঃ লূনবান্, ধূনঃ, জীনং, রীণঃ লীনঃ । সূয়ত্যাদেং – সূনঃ দূনঃ দীনঃ উড্ডীন্ইত্যাদি । ওদিতঃ মগ্রঃ লগ্নঃ ॥ লস্কের্লোনোব। ॥ নগ্নোদিগন্ধরঃ । অপুমূর্চ্ছিতি কিম্ ং পূর্তঃ, মূর্ত্তঃ মূর্ত্তবান্ ।

১৬০। দ্বোদীর্ঘলত। নিষ্ঠানত্ত । দৃনং গ্নং। ১৬১। আতো যণ্সংযোগপূর্বাদধ্যাখ্যঃ।

ষণ্ সংযোগপূর্বাদাদ ভাদ্ধাতো নিঠাতো নঃ স্থাৎ। সংস্থানঃ, প্রাণঃ নিদ্রাণঃ, স্লানঃ স্লানবান্। অধ্যাথ্য ইতি কিম্ ণ্ ধ্যাতঃ খ্যাতঃ খ্যাতবান্। যণ্ সংযোগপূর্বাদিতি কিম্ ণ্ স্লাতঃ। ধাতোরিত্যেব—নির্যাতঃ।

১৬২। क्रिয়ोनीर्च কর ধিকরণয়োঃ।
क्रिशा निर्माण । কর্ম-ক্রিকা

ধর্মঃ, অধিকরণে—ইদমস্ত প্রক্ষীণং। অনুয়োরিতি কিম্? ভাবে কিত্যস্ত জাত্ম্।

১৬৩। বাকোশদৈখ্যয়োঃ।

ক্ষিয়োহত্ত নিষ্ঠা নত্তং দীর্ঘোবাস্থাৎ। আক্রোশে ক্ষীণাযুস্তং, ক্ষিতাযুস্তম্ভব বা, দৈন্দ্যে–ক্ষীণোবিপ্রঃ ক্ষিতো বা।

३७८। त्यार्भ्यार्म।

শ্রৈঙো নিষ্ঠাতো নঃ স্থাৎ। শীনং স্নতং। সম্পর্শ ইতি কিম্? শীতোবায়ুঃ।

১७৫। অঞ্চোইনপাদানে।

নিষ্ঠাতো নঃ স্থাৎ। সমকো শকুনেঃ পাদো, সমকঃ পকে। অনপাদান ইতি কিম্ ? উদক্তমুদকং কূপাৎ।

· ১৬৬। পুঞো বিনাশে।

নিষ্ঠাতোনঃ স্যাৎ। পূনা যবা। বিনাশ ইতি কিম্? পূতং ধাক্তম্।

১৬৭। সিজো গ্রাসকর্মকর্তৃকস্থ।

় নিষ্ঠা নত্বং স্থাৎ। সিনোগ্রাসঃ স্বয়ুদেব, অভাজ সিতো-গ্রাসোহনেন।

১७৮। मिर्वाश्विकिगीयाश्राम्।

নিষ্ঠা নতং স্থাৎ। আদূন্নঃ—ঔদরিক ইত্যর্থঃ। (সদ্গৃহিণ্যের প্রায়েয়্যফ্যাবলন্তিত ইতি ভারবিঃ)। পরিদ্যুনবান্ অবিজিগী-শায়ামিতি কিমৃ ? দৃতিষ্।

১৬৯। নিৰ্বাণোইবাতে।

নিপাত্যতে। নির্কাণোমুনি:। অবাত ইতি কিম্? নির্কা-তোবাতঃ, গত ইত্যর্থ:।

১৭০। শুষঃ কঃ।

শুষোনিষ্ঠাতকারতা ক: স্থাৎ। শুদ্ধ: শুদ্ধবান্।

- ३१५। शटावः।

भटानिष्ठीटा वः छार । भकः भक्तवान् ।

३१२। कार्यामः।

कारशांनिष्ठारका यः छार । टेक-कायः कायवान्।

১৭৩। প্রস্ত্যো বা।

প্রস্তারতেনিষ্ঠাতোমোবা স্যাৎ। প্রস্তীমঃ প্রস্তীতঃ।

১৭৪। অপ্রাদেঃ ফুল-ফীব-ফুশেৎফুল-সংফুলো-লাঘাঃ।

এতে নিষ্ঠাতকারেণ সহ নিপাত্যান্ত। জ্লঃ, নিষ্ঠাধিকারে, নিপাতনাৎ ফুলবান্ কীববান্। অপ্রাদেরিতি কিম্ ? ক্রিকলা আদিছালেট্ প্রফুল্ডং পদ্মং। ক্রীর-প্রক্রীবিতঃ, রুশ প্রকৃশিতঃ। লার্ন-প্রোল্লাঘিতঃ। কথং প্রফুল্পুওরীকাক্ষং, পশ্চাৎ (প্রাদি) সমাসেন। উৎফুলাদয়ো, নিপাতিতা এব ॥ কেচিৎ ক্রবতোর্নেছন্তি তেষাং, মতে, ক্রীবিতবানিত্যাদি। অথ নস্ততে পাণিনীয়েচেতি নিষ্ঠাধিকারে নিপাতনাৎ। অস্থা-শেষে ক্রাধিকারে এবোক্তং স্থাৎ। ভক্ষ ইতি অপ্প্রভারাম্বঃ কৈশ্চিৎ ক্রান্তো নিপাত্যতে।

५१६। इत्मान्म-विन्मि-छा-छा-झीरङ्गा वा।

এভ্যো নিষ্ঠাতো নো বা স্থাৎ। সুনং সুত্তং, সুনবান্ সূত্ৰবান্ উন্নং উত্তং বিদ-বিচারণে–বিন্নং বিত্তং, ত্রোণং ত্রোতং ॥ দেবতাত ইতি নিত্যং । আণং আতং ব্রীণং ব্রীতম্।

५१८। अगर शित्त। यार । अठमण्य ।

১৭৭। বিত্তং ধনাখ্যাতয়োঃ।

বিন্দের্নিপাত্যতে। বিভং ধনং, বিভঃ পাণ্ডিত্যেন, বিশ্লময়ত্ত্র।

১१৮। ভিত্ং শকলে।

ভিতং খণ্ডে স্থাৎ। ভিন্নমন্তত্ত।

১৭৯। ধূর্ত্তঃ কিতবে। স্থাৎ।

১৮০। ৠল্বাদেঃ ক্তিন-স্তো নোইপিপর্ত্তেঃ।

ৠকারান্তাল্লাদেশ্চ ক্তিনস্তো নো ভবতি। কীর্ণিঃ গীর্ণিঃ লুনি ধুনিঃ লীনিঃ। পিপর্তেস্ত পূর্তিঃ।

১৮১। স্লাদো হ্রস্বঃ ক্তিরিষ্ঠয়োঃ।

स्नारमार्व इयः छार । श्रस्तिः श्रस्तमः श्रस्तमगान् ।

১৮২। ছাদেরদু যুপদর্গস্থাপি।

ছাদেরপ্পত্যের হ্রমঃ স্থাৎ। ছদঃ, প্রছেদঃ, উর**শ্ছদঃ,** অদ্বুপেসগ্সেতি কিম্! সমুপচ্ছাদঃ।

১৮৩। ইস্মন্-ত্ৰ-কিষু চ।

अयु कारम इत्यः नगार। इमितिनः, मन्-इन्न, ज-इजः किश्थाकः।

२५८। कित्रामीर्या यशि।

😘 📒 धनि किटब्रामीर्थः मार्थः। श्राकोत्र (यः)।

১৮৫। আনে২তো২ম্।

আনে পরে অতোহস্তবতি। পচ্যানঃ করিষ্যমাণঃ। অত ইতি কিম্ ! দদানঃ।

১৮७। ञाम ञानीए।

আস: পরস্ত অভিঈদ্ধবতি। আসীনঃ উদাসীনঃ।

১৮৭। ইম্বাতুক্ পিতি কু (কি) তি।

ত্রস্বান্তান্ধাতোঃ পিতি কু (কি) তি পরে তুগাগমঃ স্থাৎ। প্রকৃত্য জিম্বঃ অগ্নিচিৎ। সংযৎ ব্রস্বাদিতি কিম্? গ্রামণী। পিতীতি কিম্? চিতং। কথং গ্রামণি (১২) কুলং, ব্রস্তা বহিরস্ভাৎ।

১৮৮। খিতি নাজন্ত-দ্বিদক্ষোইনব্যয়স্থ মুম্ হস্বশ্চ।

খিদত্তে পরে নাস্তাজন্তাদেম্ম্ স্থাৎ। রাজমেন্যঃ রাজস্মন্থঃ জনমেজয়ঃ গুণিসান্যঃ। দীর্ঘান্তস্ম ব্রক্ত। কালিমেজয়ঃ মহিল-সান্যঃ স্ক্রেস্মন্যা থলপুমান্যঃ। বিষদক্ষােরন্তলাপশ্চ। বিষ-মেজয়ঃ অক্সন্তলঃ। অনব্যাম্যেতি কিম্ ? দিবামন্যা রাত্তিঃ দোবামন্য মহঃ। নাস্তাদেরিভি কিম্ ? বিদ্যান্যঃ।

১৮৯। ইচ-একাচোইম্ দিতীয়াবদ । ইজন্তাদেকাচঃ থিদত্তে পরেহ্যাগ্যঃ স্যাৎ। স চাম্

⁽১২) গ্রামণি। ধাতুঃ স্থন্ধ নান্তাতি পূর্বাৎ কর্ত্রাদিকারকৈঃ। উপদর্শনি দিভিঃ পশ্চাদিভি ক্লাভি কোবিশাঃ।

দিভীইরকবচনবচ্চ। গাংমন্তা জ্রীংমন্তা জ্রিয়ংমন্তা জ্রুষংমন্তা নৃ-নরংমন্তঃ।

১৯০। কারেইগদ-সত্যাস্তভ্যঃ।

এভ্যঃ কারে পরেহম্ স্থাৎ। অগদকার: ূসত্যকার: অস্তর্কার:।

১৯১। শ্যেনতিলাত্পাতে ণে। (১৩)

্ আভ্যাং ণান্তে পাতেপরেহস্কবতি। শ্যৈনম্পাতা মৃগয়া, তৈলম্পাতা স্বধা। (গ ইতি কিন্নু। শ্যেনপাতঃ, তিলপাতঃ)।

১৯২। রাত্রেঃ কৃতি বা।

কৃতি পরে রাত্রে রম্ভবতি বা । রাত্রিঞ্রো রাত্রিচর: রাত্রিমটো রাত্র্যটঃ। থিদন্তে তু.মুম্ নিত্যং। রাত্রিমাক্সমহঃ।

. ১৯৩। তিমিঙ্গিলাদিষু চ।

তিনি সিলাদিষু অম্ বিতী য়ৈকবচন বিনিপাতাতে । তিমি-সিলঃ দীপক্ষরঃ সর্বাদ্দাঃ । ধেনোর্ভব্যায়াম্। ধেমুং ভব্যা গোঃ। অগ্নিভাষ্ট্রাদিকে। অগ্নিমিক্ষঃ ভাষ্ট্রমিক্ষঃ।

১৯৪। উষ্ভদ্রত করণে।

উक्छक्रतगर, एक्टक्रतगम्।

ইতি শ্রীপন্ধনাভদতকতো হুগদে ব্যাকরণে চতুর্থসাধ্যারত বিভীয়: পাদ।।

⁽১৩) খ্যেনপাতজিয়া দ্বস্যামিতি বাক্যে খবক সাজাং জিয়েতি প ইতি)

অথ চতুর্থাধ্যায়স্থ

তৃতীয়ঃ পাদঃ।

সমাস প্রকরণম। ১)। ১। সমর্থানাৎ সমাসঃ। (১)

किर्वाद्योर्भे । अङ्गल्भातमञ्चलिश्यानीः अनीनाः मभारमा

⁽১) সম। অধ ব্যাত্মকতামত স্চর্নাহ, অধিকারোহ্যমিতি, ব্যাপক-ত্বাদিকমুক্তম্। ওবাহি, সমাসেহমুক্তরপদক্ষোনি ত্য বিত্যাদে সমাস ইতি সংক্ষदेशय वाविङ्गरण। **खब সমর্থপদার্থ লক্ষ**রতি, পরস্পরেতি। পর-স্পারেণ, সম্বন্ধোহর্থো যেষাং তানি, পরস্পুরসম্বন্ধার্থানি, ইহ বছবচনমতন্ত্রং সমর্থে চ, সমর্থানি চ. ইতি বা বিগ্রহ:। তৎপুনরাকাজহা যোগ্যভাসতি-মতাং ভবতি। অভিধানাপধ্যবসান মাকাজ্জ, বাধবিরচগবোগ্যতা, অবর বিরোধিপদাক্ষপদোপত্মিতিরাসন্তিঃ, অব্যবদানেনাবরপ্রতিষোধ্যপত্মিতিরা-এতেনাকাজ্যা-বোল্যভাসত্তিমং পদকদস্বকং বাক্যং। মেব সমাসীভবভীতিপক: স্বীকৃত:। সমসনং স্থানঃ रेष्डार्थः। त भूनर्सद्नाः भणानात्यकभणात्रमानपत्रिष्ठात् चतनकभणत्रप्रिष অত্ত সম্বন্ধাৰ্থানামিতি বক্তব্যে বং প্রস্পারেত্যকঃ, তণ্যস্ত বেন সহ সম্বন্ধ-স্তম্ভ তেন সমাস ইতি প্রতিপত্ত্যর্থং, তেন ভার্য্যা রাজ্ঞঃ পৃত্তবাদেবদভাসে-তাত্ত বাক্যান্তরাবরবদ্যে রাজ্ঞঃ পুরুষ ইতি পদরোনীতি সম্বন্ধার্থতৈতি, বধা প্রভাৱত করে। ত্রিভাগর্মনিত। নিত্যসমাসবাহিনক অব্ধবোধনার সমর্বানাং সমাস ইতি। তৎপূরুবাদিব্যপদেশার, বিতীয়াল্লিভাতীতেত্যাদিসুত্রাশীতি मर्फारकः। ब्राब्धः शृक्षय देखानियाकानि, नमानवाभिएका विवादकय। 'ওখাট ভর্হদিং। ' অবুগান প্রত্যাদায়াত বিচিত্রাপ্রতিশভয়ে। শবা-

(विकिञ्जाः। অনেকপদীয়েকপদত্বং সমাসঃ। यथा-तोछःः পুরুষে। রাজপুরুষः। সমর্থানামিতি কিমৃ । ভার্য্যা রাজ্ঞঃ পুরুষো দেবদত্তস্থা।

স্তরতাপত্যকং ভেলোবাক্যসমাসংখা:। উপায়মাত্রং নানাত্রং সম্হস্তে ক এব সং। ভিনাঃ সম্বন্ধিনোপায়াঃ প্রুষেশনবন্থিতা ইতি। ভেদঃ সংসর্গ ইতি নানাত্বং যত্তং প্রতিপত্যপারমাত্রং, সমূহক্তেক এবাসৌ ভেদসংসর্গরপো नत्रिश्शिक्षित्रकाक भूक्ष्यावितिष्ठि ভावः। नयु भत्रस्थत्रमञ्चार्थप्रः अवर्षपु-মিতি লক্ষিতং, তদ্ধুন্দে নান্তি, তম্ম স্বপদপ্রধানতাৎ পরস্পরসম্বন্ধার্থতা-মুপপতে:। সত্যং ধবধদিরপলাশাংশ্ছিদ্ধীতি বাক্তে সাহিত্যেন ছেদনং প্রতীয়তে, নতু প্রত্যেকং, ততঃ পরস্পরসম্বদ্ধার্থতা বিদ্যুত এব। অথ ক্রিরাসম্বন্ধাৎ প্রাকৃ সমাসে ক্রিরমাণে কবং সাহিত্যমিতি চেলেবং সমাসে বুদ্ধিবিষয়ীকৃতে কন্মিংশ্চিৎ ক্রিয়াৰিতে বুদ্ধাবেব সাহিত্যবিবক্ষেতি শাব্দসন্থ-क्र अभार कार्याः। यदा क्रियामातः विषयीकृष्ण ममास्म कृष्ण अभावित्यय, विवटक्कि । छह्र प्रार्थवानिन्छ जिल्लार्थटेख्य अनुमृश्हेखकार्थाः म्याम-है के क्रुजी । उमा প्रम्भव्रमञ्जार्थ । उपा विनाह-म् भनार यणः। উक्तक, कृष्टि प्रशृक्ष्मानच श्वारणदत्रकवस्ति। भन-স্পূর্ব্যপেক্ষায়ামেবং বন্ধোবিবক্ষাতে। অনেক্সৈক্ষোগঞ্চ যোগমিচ্ছ্তি বৃত্তরে। তলা পরস্পরাপেকা ছলেনাহবশ্রমিষ্যতে। নমু পরস্পরসম্বন্ধা-র্থানাং চেৎ সমাসো বিবলিত তত্ত কথম্ম্বান্ত রাজপুরুষ ইত্যত্ত উত্তম-विश्विष्ठवक्षेत्रखनाष्ट्रभागि नियानः चार है फि त्वन, कर्रवार्यनाष्ट्रिया ममर्चिकरमञ्ज অপ্রতিযোগিনা কারকেডরেণ চ পদেন সম্বন্ধো নেয়তে। বক্ষাতি চ, সমস্ক্রভাসমস্তের নিত্যাপেকেণ সংহতিরিতি। তেননিতা मार्शक्तरहर्नाष्ट्र । बद्धहर प्रार्थनाहिमर्डश्ले ममार्मा बादनगरमया ইতি স্থিতন্। তচ্জং, প্রতিষোগিণদাক্ষ্মৎ বদশ্বৎ কারকাদণি, বৃদ্ধি भरेकरामक मद्यक्त निवारः। कात्रकथािरवाभिष्णाः वर्षक्षणा करा वार्थिक वाहियार दुविया ह त्वार्थ है हि। वदा पहानी इंबनीणांगा हेि। क्यानः সমक्त्रांच, विक्रीविह्वाकृत्यविकारमः भूतियाच अन्। नम् कवमनर्वकच आरमनर्थकः कृष् हेचाः मर वन्नान

१। यूर्ये यूर्यो। (१)

স্বন্তেন সহ স্থবন্তং সমস্তাতে । ইত্যাধিকুতং বেদিতব্যং । বিধিশ্চায়ম্ । ভূতঃ পূর্ব্বং-ভূতপূর্ব্বঃ, বিস্পান্তপটুং, পুন্নবঃ, অধ্বগন্তব্য ইতি ।

৩। অব্যয়ীভাবং। (৩)

তৎপুরুষাৎ প্রাক্ষরায়ীভাবনাম সমাসোবাচ্যঃ। অন্বর্থ সংজ্ঞেয়ং, তেনায়মন্যুরবদ্বোদ্ধন্যঃ।

সক্ষার্থ হা ভাষাদপদ হাচ্চ সমাসঃ স্থাং। সভ্যং, বিশেষৰচনাং বাহলকাচ্চ। তথাচোক্তং, প্রাদেরনর্থক স্থাপি কৃষ্ঠ তারপদৈঃ সহ। অপের্বাহলকাদেব সমাসোন বিরুধ্যতে। প্রস্থায়াণীত্য সংস্কা প্রবিম্ন্য নিধ্য্যুত। সংবিশ্যান্ত্রানির্ব্তা প্রপ্তাত্যের মাদিশু।

- (২) হৃপ্পূণা। অথ কচিং হ্ববন্ধন্বভোনালি সমস্ততে বাহলকাং। যথা, সঞ্জল নিৰ্জ্জেল ভূমী নীললোহিতে পট্টো সামান্তভাৱপুংসক বিবন্ধায় সিধ্যতী-ত্যুক্তে। অথাক্ত দ্ব্যান্তক ক্ষুমাৰিক, ক্ষিলাহ বিশিক্ষায়মিতি। যত্ৰাক্তল্পণং নাম্ভি তত্ৰায়ং বিধিরিতার্থং। যথা, পুরুষ উত্তমং, পুরুষোত্তমং; মুনিপ্রবন্ধ জ্ঞানদ্ধাসিক্তা, আগামিবর্ত্তমানাহর্ত্তলায়াং নিশি পক্ষিণীত্যাদি। তথা পুনং প্রস্তমং পুন্মুলং সহভূতং সহভাবং কিন্তাবং অধ্যাভ্বনং হিছু বনং হিছু তিনং, অন্তম্ম সমান্তেমাহন্প্যনেন বথা অরণ্যানীস্থানং ফলনমিত নৈকক্রমমিতি। তথাচ বামনং, নৈক শক্ষা হুপ্পুণেতি সমাসাৎ আরুতি গণোয়ন্।
- (৩) অব্যয়ীভাব:। অবর্থসংক্রের্মিতি। অমুগতোহর্থো মন্তা: সা
 অবর্থা, ততঃ কর্মনার্থে পূক্ষ। তথাহি, অনব্যয়মব্যরং ভবত্যনেন ইত্যব্যয়ী।
 ভাব: চ্যন্তান্থ্যবাধন প্রত্যর:। অত্ত পূক্ষণিদমব্যরং পরপদমনব্যরং ভবদেন
 সম্পায়োহব্যরত্থ প্রতিপদ্যতে ইভি প্রক্রিয়াবাদে, অক্তত তু সভাবাদেনা-

৪। অব্যর্থ সপ্তম্যত্ত্রম-সমীপ-পশ্চাদ্-যথাত্যয়াভাব-শব্দপ্রকাশ-যৌগপদ্য-সম্পদ-সম্প্রতি-সাকল্যান্তার্থেয়ু। (৪)

সপ্তম্যাদ্যথেষিব্যরং স্থবন্তেন সহ সমস্ততে। সপ্তমার্থে-স্ত্রীষধিক্তা যা কথা প্রবর্ততে—সা অধিস্ত্রি কথা। অমুক্রমে অমুজ্যেষ্ঠং বথারুদ্ধং প্রবিশস্তা। সমীপাহুর্থে উপকৃন্তং। পশ্চাদর্থে অমুরথং পাদাতাঃ। বথার্থা বছবঃ, যোগ্যতা বীক্ষা পদার্থানতি-বৃত্তিঃ সাদৃশ্যং। যোগ্যতায়াং—অমুরূপমস্তা দানং। বীক্ষায়াং

ব্যন্ত্রমিত্যাহ তেনেতি। অব্যন্তবিদিতি লিঞ্গবোগাৎ পূর্ব্বপদাব্যন্তর প্রান্তিকং তিষ্ঠানো প্রকরণাৎ।

(৪) অব্যয়্রাতি। এষর্থেষু বর্ত্তমানমব্যয়ং সমসনীয়মিত্যর্থঃ। অয়ং তাব

রিত্যসমাসঃ। বিভাষারা বক্ষমাণত্বাং, সপ্তম্যর্থ ইতি সপ্তম্যর্থেষ প্রাধিকরণঃ,
তত্র বর্ত্তমানোহধি শক্ষঃ সামানাধিকরণ্যাং স্ত্রীশক্ষেন সপ্তম্যুক্তেম সমস্ততে

ইতি বির্ণোতি স্ত্রীম্বিতি নিত্যসমাসতাদ্বাক্যান্তরেণেয়ং বির্তিঃ। এবমধিপাণি
কপোণো। অক্সক্র প্রথমান্তেন স্ত্রীশক্ষেন সমাসঃ ক্ষাধিনাহধিকরণার্থস্থান্তত্বাদিত্যাহ অধিস্ত্রীতি সমাসে সতি অব্যয়ীভাবশ্চেতি নপুংসকত্বং, ব্রুম্বো
নপুংসক ইতি ব্রুম্বত্বে অব্যয়ীভাবাদনত ইতি স্থপো লুকু। এবমস্ত্রতাপি ফলমুহ্মম্। উপকুম্ভমিতি কুম্বস্ত সমীপ মুপকুন্তঃ অতোহমপঞ্চম্যা ইতি স্থপো
হম্, এবমসুর্থং রবস্থাসপ্তাদিত্যর্থঃ। যথার্থা বহব ইতি চত্বার ইত্যর্থঃ। যোগ্যভাদি ভেদাৎ অনুরূপমিতি ক্রপন্ত যোগ্যমিত্যর্থঃ। বীপ্সায়াং ক্রিয়াত্যপদ্রব্যান্ত্রীপা
ম্বির্ণ হির্মেরা মন্ত্রীতি বক্ষাতে, তথাপি বীপ্সায়াং দিতীয়াবিধানমেভাসেই প্রমাত, পক্রথা তদমুপপ্তিঃ স্থাদিতি। র্থাশক্রীতি শক্তেরনতিক্রমেণ্ড্যেং। সাদৃশ্রে ইতি কিথিবান্ত্রী কিথিঃ শুগাল ভেদঃ। ইতি শব্দার্থ
ইতি গোমীচন্দ্রঃ, এবং সলন্ধীতি অব্যয়ীভাবে চাকাল ইতি সহিত্য সভাবঃ শ্রীপ্তি

প্রতিদিনং দদতি। পদার্থনিতিক্রমে—যথাশক্তি করেন্ডিসাদৃশ্যে—সদৃশঃ কিখ্যাঃ নিক্তি সলক্ষি ক্রী সবীণং ধ্বনতি
অত্যয়ার্থে—নিন্দীতং অতিকােশনী এলাবঃ সম্বন্ধিভেদাদনেকবিধঃ। তত্র খাল্যভাবে—বিগতা খাল্লক্ষেনাং ভূষ্বনং, ভূজিকং
অর্থাভাবে—অভাবো মক্ষিকাণাং নির্মাকিকং। শব্দপ্রকাশনে
পাণিনেঃ শব্দে প্রকাশঃ ইভিপাণিনি উৎপাণিনি। যৌগপদ্যে—সচক্রং নিধেহি বাণং, সম্পাদ্ বিবিধা, আত্মতাসম্পত্তিঃ
সমুদ্ধিক, সম্পাণ প্রশ্ন সপ্রক্ষা বাজবানাং, সমুদ্ধির্মদ্রাণাং সমুদ্ধং
স্থাজিকং। অনুস্প্রত্থি—নায়ম্যা ভোগকালঃ অতিকৈস্কং
হিমং, তিস্কাগ্রামে ভবং—তৈপ্তকং বস্ত্রং। সাক্ষ্যো—সভ্গনভাবহরতি। অন্তার্থে—সভ্বিভিন্নীতে।

দত্তত্ত সভাব সম্পদ্যেশি পদ্য সদৃশ সাদৃশ্যেষিতি স্তেষিত্ব। সাদৃশ্যং কিখ্যাঃ
সকিথিমজ্জিরিকায় ইতুদাল্তবান্ তদিপ ব্যেয়্ । অত্যয়র্থ ইতি অত্যয়েহতাতিত্বং, তেন নিঃশীওনিত্যত্ত শীতভাতীতত্বং গ্য়াতে । অভাব ইতি ।
য়দ্যপ্যভাবস্থ নিরপ্তেন ভেদো ন সম্ভবতি তথাপি মলাহলবভাবস্তম্ভ ভেদাভিদ্যত ইতি আহ সম্বন্ধিভেদাদিতি । (তথা) অর্থাভাবস্থানেকবিষ্ত্রেইপি দর্মত্ত গৃহতে ইত্যাই তত্তেতি, অত্র পরস্পারাসম্বন্ধেতি সমাসঃ, যবনানাং ঝর্মভাবো ন তু ববনানামভাব ইতি । অর্থাভাব ইতি । অয়্মত্যম্বাভাবঃ কচিদেশে মন্ধিকানাং বন্ধু লাং সর্ক্রাভাবঃ নতৃংপদানামিতি ধাংসাছেদঃ । পৌরশ্বো ন ভবতি ব্রাহ্মণো ন ভবতি ইত্যত্ত অক্যোভাবার্যম্বাভাবেয়ের্নান্তি সমাসাভিষানমন্ত এব বথা ভিধানমিতি বির্তম্ । শব্দপ্রকাশন ইতি শব্দ প্রকাশনং খ্যাতিবিত্রতাই ইতি পাণিনীতি পাণিনিরিত্যয়হ সংজ্ঞানকো লোকে খ্যাতিং পত ইত্যর্থঃ । বোগপদ্য ইতি চক্তেণ সহৈক্রালং বাণং নিগেহি ইত্যর্থঃ । সম্পন্ধিনিতি আত্মনোভাব আত্মতা স্মাস্বিষয়ন্ত ব্রহ্মাদিশিক্ষ প্রস্তুতিনিমিতঃ ব্রহ্মমন্ধিতি আত্মনোভাব আত্মতা স্মাস্বিষয়ন্ত ব্রহ্মাদিশক্ষ প্রবৃত্তিনিমিতঃ ব্রহ্মমন্তিরতাদিত্বক্ত সম্পত্রিরতি ।
ভাষিকা ক্ষিঃ সত্রহ্ম নাভ্রমানামিতি বাভ্রাণাং ব্রহ্মমুক্তীনিত্যর্থঃ ।

৫। यथा न जूत्ना। (৫)

যথাশনঃ নাদৃশ্যার্থে ন সমুস্তার্তে। যথাশক্তস্তথার্জ্জুনঃ। ৬। য়ার্দ্ধিয়তায়াম্। (৬)

অবধারণে যাবৎ সমস্ততে। যাবদমত্রং বিপ্রানামন্ত্রয়স্ত।

14 1

সমৃত্ত্রমিতি, অস্ত্র পূর্ব্বপদার্থপ্রধানতাৎ মটে বিশেষ্যমানায়াঃ সমৃত্ত্রেঃ প্রাধান্তং বদা তুমজাঃ সমৃদ্যা বিশেষতে তদাে তরপদার্থপ্রধানতাং প্রাদিতৎ পুরুষাে ভবিষ্যতীতি। ষথা, স্থাজা ইতি, এবমন্ত্রাপি গ্যেষ্য। অসম্প্রত্যর্থ ইতি সম্প্রতি বর্ত্তমানকালাে হয়নিতানেন স এবােচাতে। তৈত্বপদার্থং বির্ণাতি, তিত্বাগ্রামে ভবমিতি। সাকল্য ইতি, সাকল্যমশেষ্মিত্যর্থং। সদৃশমিতি বাবদভাবহার্য্যং তত্র কিঞ্চিদ্পি ন তাজতীত্যর্থং। অন্তর্থ ইতি তদ্ধিতমধীতা ন কিঞ্চিদ্যাত ইতি তদ্ধিতশান্তমং বিবিক্ষিতং তেন সাকল্যাা-তেদং, সাকল্যক্র পরিগ্রহাপেক্ষয়া শেষগ্রহণং, শরভঙ্কং প্রনিশ্রাম স্থতীক্ষম্মিকেতনমিতি কণ্ডকান্ দক্ষিণেনাহং সরিভাহেজীন্ বনানিচেতি ভট্টি প্রয়োগ দর্শনাদেবং বিধপ্রয়োগেহনভিরানং মন্তব্যম্

- (৫) যথা। পূর্ব্বেণ সাদৃশ্যাণে প্রাপ্তে নিষেধ আরভ্যতে। নম্বত্র শক্ত্র উপমানমুপমেয়মপেক্ষতে ততঃ সাপেক্ষত্বাৎ সমাসো ন ভবিষ্যতি কিমনেন নৈবং, অত্র হি সমুদায়স্ত্র সাপেক্ষত্বং নৈকদেশন্ত, সমুদায় সাপেক্ষত্বে সমাসো ন বিদ্যুত এব সমসনীয়াবয়বস্ত্র পদস্ত সাপেক্ষত্বে সমাসো নাভিণীয়ত ইতি। কথং যথা শুভনমন্ত্র শীলং নাত্র শুভ সদৃশমিতি বাক্যং কিন্তু শ্রুতিবাগ্যমিতি তেন যোগ্যতায়াং সাদৃশ্যারোপো ন তু মুধাতয়া।
- (৬) যাবং। অনব্যয়্যাবচ্চকসমানার্থো যাবচ্চকোহসে সমস্ততে অব-ধারণার্থে যাবদমত্রমিতি যাবস্থি অমত্রাণি সন্তি পঞ্চ ষড়্বা তাবতো বিপ্রানাম-রয়ক্ষেত্যবগাবণং পরিচেদ:। অত্রামত্রেয়ত্তরা বিপ্রেয়তা বিবক্ষিতেতি। ইয়-ভালামিতি কিম্ ? যাবদত্তং তাবভুক্তং কিয়্মন্তং কিয়ভুক্তমিতি নাবধারিতম্। ইছ যাবতাবং শকাভ্যামেককালতা দ্যোত্যতে ন তু দত্তমবধার্যতে।

৭। প্রতিনা মাত্রাথেঁ। (৭)

স্থবিত্যেব অল্লার্থে প্রতিনা সহ স্থবন্তং সমস্ততে। শাক-প্রতি সূপপ্রতি।

৮। পরিণীকশলাকাসংখ্যা হ্যুতেইয়থা-রত্ত্বো (৮)

অকাদয়ঃ পরিণা সহ সমস্তান্তে। দূাতেহ স্থার তিশেচ । অকাভ্যাং দূাতে অকোণদং ন তথা রক্তং যথা পূর্বঞ্জিয়ে অক্ষপরি। পঞ্জিঃ শলাকাভিদূর্ত একয়া শলাকয়া ন তথা রক্তং শলাকাপরি। তথা সংখ্যা—একয়া সংখ্যা ন তথা রক্তং একপরি দ্বিপরি তিপরি।

- (१) প্রতিনা। স্থবিত্যেবেডি, ইহ স্থবিত্যনেনাব্যধানব্যরমূচ্যতে।
 অল্লার্থবাচকোহত্র মাত্রাশকঃ মাত্রার্থবৃত্তিনা প্রতিনা সহেত্যর্থঃ।
 শাকপ্রতীতি অনুযোবলো অংশ ইত্যর্থঃ। ন যত্রপাপঃ প্রতিনর্ম্মণাং তাং
 পক্ষেম রাজ্বতি ক্য়াচিদ্চে ইতি ব্যোষঃ। অব্যয়স্ত স্থাপ্রতি সায়ংপ্রতি।
 মাত্রার্থ ইতি কিমৃ

 গ্রেমং প্রতি বিদ্যোত্তে বিচ্যুৎ, অত্র লক্ষণে প্রতিশ্বনাবর্জকে।
 শক্ষা বর্জতে, প্রতিনা মাত্রার্থ ইতি নামগ্রহণমব্যরব্যাবর্জকমিতি বর্জমানঃ।
- (৮) পরিণা। দ্যতবিষয়েহয়্যথা-রুবে বর্তমানেন পরিণা সহাক্ষণলাকা সংখ্যা: সমস্যতে। অকাদীনাং ক্রীড়নজব্যানাং পাতরিত্ব: পরাজ্যর-সাধনী ক্রিয়া অক্সথা-রুব্তি:, অত্রাক্ষাদয়স্তৃতীয়াস্তা এব সমস্ততে। তথাচোক্তং অক্ষাদয়স্তৃতীয়াস্তা:, পূর্ব্বোক্তম্ম ধ্বা ন তং। কিতবব্যবহারে চ একত্বেহক্ষণলাকয়োরিতি। প্রীপতিক্ষ ষষ্ঠ্যতেনাহ ইহাক্ষণলাকয়োরেকত্ব বর্তমানয়ো-রেবায়ং সমাস: সভাবাং, তথা হি (অক্ষণলাকয়োরেকত্ব ইতি) প্রীপতিস্তরং, তথা সংখ্যেতি ইহ সংখ্যা চত্তঃ পর্যাস্তা অভিধীয়তে, তথাপাক্ষাদিভিরতি ধীয়তে তলৈব ক্রীড়নকত্বাং, তথাহি একেনাক্ষেণ হারিতং একপরি বিপরি

৯। বিভাষী। (৯) অতো বিভাষাধিকারঃ। ১০। আন্তপ পরিবহির্ঞ্চ পঞ্চমী। (১০)

এতে পঞ্চাতেন বা সমস্ততে। আপাটলিগুতাং রুটোদেবঃ আপাটলিপুত্রাদ্বা। অপত্রিগর্ত্তং অপত্রিগর্ত্তেভ্যঃ পরিত্রিগর্ত্তং পরিত্রিগর্তেভ্যঃ বহিন্ত্র মিং বহিন্ত্র মাথ। অঞ্চ্যন্তঃ প্রাগ্রামং প্রাগ্রামাথ।

১১। লক্ষণেনাভিপ্রতী আভিমুখ্যে। (১১)

আভিমুখ্যার্থেইভিপ্রতী লক্ষণবাচিনা স্করেন সহ সমস্তেতে।

ত্রিপরি কিরপঞ্চিকা নাম দ্যতং, পঞ্চিরকৈশ্চ শলাকাভির্মা ভবতি, যথা পঞ্চ জ্ঞানা অবাঞ্চোবা পত্তি তদা পাত্রিতা জয়তি অভ্যথা পাতে হারয়তি ইতি। দ্যত ইতি কিমৃ ? একেন শরেণ ন তথারতং যথা পূর্মাং যুদ্ধং। অভ্যথা রুত্তাবিতি কিম্ ? অক্ষেণ তথা রুত্তং যথাপূর্মাং জয়তি।

- (৯) বিভাষা। অতঃ সমাসো বিভাষ্যতে ইত্যর্থ:।
- (১০) আঙ। আপটিলিপ্ত্রমিতি সীমাভিবিধ্যোরাঙ্যোগে ইতি
 পঞ্মী ততঃ সমাসে স্থাহেম্। ইহাপ পর্য্যাদি সাহচর্য্যাহপপদবিভক্তা
 পঞ্চম্যা সমাসঃ। ন ঈষদর্থেনাঙ্ শব্দেন সমাসঃ। যথা, আচ্ছোরারা
 আগতঃ ঈষচ্ছোরারা আগত ইত্যর্থ:। ঈষদর্থক্ত আঙ্ শব্দক্ত পঞ্চম্যা
 সহ সমাসো ন সম্ভবতি সাপেক্ষত্বাদিত্যক্তে। অপতিগর্ভমিতি, অপপরিভ্যাং বর্জন ইতি পঞ্চমী। বহিন্ত্রমিং প্রভ্যগ্রামমিত্যাদে অক্সর্থারাদাজাহি বহিরিতি পঞ্চমী। যদা তু বহির্তিত্বাদিনা উত্তরপদার্থপ্রধানতং
 বিবক্ষাতে তদাপ্রাম্ বহিন্ত্রমি ইত্যাদে কর্মধারয়ঃ ক্রাদি তি।
- (১১) লক্ষণে। আভিম্থ্যার্থে বর্ত্তমানাবভিপ্রতী লক্ষণীভূতেন স্থ্বস্তেন সমসনীয়ে ভবতঃ। প্রভ্যায়ি ইতি, অত্যাগ্নির্দ্দণং তেন শলভানাং পাডো লক্ষ্যতে ভয়োর্জকাল ক্ষণসম্বয়েছিনা দ্যোভ্যতে, লক্ষণনীপ্সেভ্যাদিনা

ভাভাগ শিলভাঃ প**ভ**ভঃ পিতারি। লফণেনতে কিম্ণ প্রতিগতঃ **শে**সেং গত ইভাগং।

১২। अर्रेर्दर्गमाभी शारती । (১২)

জনুরত্র সমসতে। অতুগঙ্গং বাবাণদী গঞাবদ(য়তা অনুবনং বাপী তৎ সমীপা, অভুজনাদাংগ পূর্বন্যুক্তস্।

১৩। তিষ্ঠशामीनि है। (:৩)

তিষ্ঠদ্ওপ্রভ্থীনি নিপাত্যন্তে। তিছারি গাবে।হান্ত্রি

ধিতীয়া, এতে শক্ষাক্তি-বৈচিত্রাং যথালক্ষ্যলক্ষণসম্বন্ধং দ্যোভয়ভস্তথা-ভিমুধ্যমপি। অতএবাগেরভিমুধ্যমের শলভাঃ পতন্তি ন পার্মডো ন পৃষ্ঠত ইত্যর্থো লভ্যতে। ক্রেম্বং প্রতিগত ইতি ক্রেমারখ্রাং চলিভোদিকে মাহাং ক্রেম্বের নিবর্ত্ততে, নাত্র লক্ষণং কিন্তাভিমুখ্যং বর্তত এব, অভিমুখ্য ইতি কিমৃং রক্ষমভি বিদ্যোততে বিভাং।

- (১২) অনু:। অনুদৈর্ঘ্যনামীপ্যরোবর্ত্তমানস্তদর্শেণ শালনীভূতেন সহ সমস্ততে। অনুগঙ্গং বারানসীতি দীর্ঘ্যা গঙ্গয়া ইহু দীর্ঘা বারানসী লক্ষ্যতে তেন গঙ্গা বদু দীর্ঘা বারানসীতি প্রতীতি: ছাং। এবমনুবিদ্ধং দওকা: অনুদি-প্রথবিশালা অতএব ভেদাভাবাং প্রথমেব, ভেদে ভু যন্তা তাৎ, হথা, অনু-পঙ্গং বারানছা ইতি বর্দ্ধমানঃ। অনুবনং বাসীত্যত্ত সমীপ্রশ্বেষ্ণ ধর্মিবচন-স্তেন ভংসমীপেতি, ব্যাখ্যাতবান্। পূর্বেণ নিত্যপ্রাপ্তে বিকলার্থমিদং সামীপ্য গ্রহণং। অথামুক্তমান্যর্থে কথং নোদান্তিয়ত ইত্যত আহ অথামুক্তমান্যর্থে প্রেম্কমিতি নিত্যত্বাদিতি শেষঃ. অনুযোগ্রিত কিমৃ গু বুক্তমনু বিদ্যোজতে বিহুৎ পেক্ষে অনুগ্রেক্ত অনুবন্দ্য।
- (১৩) তিষ্ঠ দ্বাদি। তিষ্ঠন্তি বহন্তি, আয়ান্তি গাবোহ ম্মিন্ কালে ইতি বাক্যে নিপাতনাচ্ছত্: প্ৰভাবোহং সমাসান্তন্চ, তথা থলে যথা যক্ষিন্ কালে, থলেষবমিত্যত্ৰ সপ্তম্যা অলুক্। এবং ল্নম্বং লুয়মানম্বং, সংক্ত-

কালে তিষ্ঠদ্ত কালঃ বহদ্ত কালঃ আয়তীগবং খলেববং লুন্যবং সংক্রিয়মাণ্যবং সংজ্তযবং উন্মন্তগঙ্গং নাম দেশঃ লোহিতগঙ্গং সমস্তুমি সমস্পদাতি সুষমং বিষমং নিঃষমং ছুঃষমং অপরসমং আয়তীসমং প্রাহ্লং প্রবং প্রমৃগং প্রদক্ষিণং সম্প্রতি অসম্প্রতি পাপসমং পুর্যুসম্মত্যাদি।

यवः সংক্রিয়মাণ্যবং পূত্যবং পূর্মান্যবং ধলেবুসং সংজ্তবুসং, সভাবা সমাসাঃ ন হি বাক্যাৎ কাল বিশেষসংজ্ঞা প্রতীয়তে কালে অক্সপদার্থেহপি প্রথমান্তা এবেতি শ্রীপতি:। বর্দ্ধমানমিশ্রাক্ত, তিষ্ঠদ্ও বহদ্ও আয়তিগবানাং প্রথমান্তমাত্রং নেচ্ছন্তি, তথাহি তিষ্ঠদ্ত বহলাায়তীগবানি কালবিশেষেণ চাত্তেন সমাসঃ লুন ল্যমান পুত প্রমানা যবেনাঞ্পদার্থেন চ ব্যতিরেক-বিভক্তি:, খলে সংগ্রুত সাহ্রিয়মাণ বুসেন চেতি তেষাং স্থতাণি ব্যোষেষ্ঠেপ তিষ্ঠ তারা ইব কান্তিভাজে। বহদ ও পদ্মিন্ত ইবাজনেতা ইতি প্রয়োগং। ষ্পত্র স্থান্ত চকারোহ্বধারণে তেনাপর: সমাসোন ভবতি। পরমং তিষ্ঠদ্ও ইতি বিজাতীয়ো ব্যাবর্ত্যতে. সজাতীয়ন্ত ভবত্যেব। তথাহি, আতিষ্ঠদ্ও জপন সন্ধ্যামিতি ভট্টিঃ। কেচিত্ত বাক্যমেবেদং মন্ত্ৰতে, অথোমতগঙ্গাদিদেশবিশে-ষাভিধানার্থৎ ক্লটো তু নদ্যেতি কেনচিৎ স্থত্তিতং, তদিহ ন বক্ষব্যং অনেনৈৰ সিদ্ধতাদিত্যাহ উন্মতগঙ্গং নামদেশ ইতি। অত্রাপি নিত্যসমাসে রত্ত্রীহে· র্বাধক:। সমং ভূমি সমং পদাতীতি সমত্ত্ব ভূমে: সমত্ব পদাভেরিতি विज्ञहः, जमरत् जममसाग्रः निष्ठाविषयास्यव ज्रष्ठेवामिति औलिषः। वश्चमानसः, দমং ভূমি পদাতিভ্যামিতি স্তায়িত্বা, সমা ভূমির্যশ্বিলিতি বিগৃহু পূর্ববিদয় মান্তবং নিপাতনাদিত্যাহ কালদেশয়োরেবায়মঞ্চপদার্থে ভবেং। তথাট সমাঃ পদাতয়ে। বিশ্বিন্ দেশে কালেবেতি ধাতৃপারায়ণং। তেন সমা ভূমির্ঘশ্বিন্ আনে স সমভূমিপ্রামঃ। উত্তরপদার্থপ্রাধান্তে তু সমভূমিরিতি কর্মধারয়ঃ। অ্যামিড্যাদি শোভনত্বং সম্ভ নিন্দিতত্বং সমক্ষেতি বিপত্তং সম্মিতি क्षीविमयाज्य वाकार। जीलिक्स वायुक्तीयः ममात्रा वायुक्ती ममः, विसम्भव-

भगाम धकर्मम् ।

38। शादत-गरशु वर्ष्ट्रा वी। (58)

এতো ষষ্ঠান্তেন সম্ বা সমস্যেতে। নিপাতনাদেছং। পারেগঙ্গং, গঙ্গায়াঃ পারম্। মণ্যেগঙ্গং, গঙ্গায়াঃ মধ্যং। বাহমু-বৃত্তো পুনর্বগ্রেহণাৎ-গঙ্গাপারং, গঙ্গামধ্যম্।

সমং পাপসমং এষ্ ত্রিদ্ ভাবপ্রত্যয়য় ল্গিপাতাতে। স্বমং বিষমং তৃঃবমং
নিঃবমং প্রস্থাং প্রবাং প্রদক্ষিণিমানি ভাবপরা (প্রধানা) প্রবাংনি, মধ্যদিশোরপদিশমিত্যাহ। বর্জমানস্ত-স্বিনিচ্ রবপরায়তীপাপপ্প্যানি সময়েতি
স্ত্রে শোভনা সমা যশ্মিলিতি স্বম্মিত্যাদ্যভিধায় সমৃদ্ধিঃ সমায়াঃ স্বম্মিতি
প্রেণি সিদ্ধং, উত্তরপদার্থপ্রাধান্তেত্ব, শোভনা সমা স্বম্মেত্যাহ। আয়তী
সমমিত্যের আয়তী আয়ত্যা বা সমা বংসর ইতিক্রমদীপরঃ। প্রগতত্বং প্রকাণ্ডির
ত্বং বাহ্বঃ প্রাহ্বং, উত্তরপদার্থপ্রাধান্তে, প্রকান্তমহং প্রাহ্বঃ ইত্যাদিয়
প্রাদিতৎপ্রস্থান্ত, প্রবাং প্রম্বাং প্রদক্ষিণা বর্ত্তমানাবর্ত্তমানির
রিতি বর্দ্ধমানঃ। সম্প্রত্যসম্প্রত্যপ্রদক্ষিণানি বর্ত্তমানাবর্ত্তমানাবিদ্ধিতি
সংপ্রতি বর্ত্তমানং, অসম্প্রতি অবর্ত্তমানং, অপ্রদক্ষিণং বামতায়ামিতি বর্দ্ধ,
মানঃ। নমু সম্প্রতিপ্রদক্ষিণশক্ষেনি প্রসমাসে রূপদ্বং সিধ্যতি, কিম্ত্রে
পার্টেন
প্রবাং অনবাঃ পার্টোপি সমাসাম্ভরাদেতানি ব্যাবর্ত্ত্রতি। আদিশক্ষাদপসব্যং অপদিশমিত্যাদ্যহম্। কৃতাপস্ব্যাদ্রক্ত তংপুরুবং কৃত্য বহ্বব্রীহিণা সাধ্যাঃ।

(১৪) পারে। পারেমধ্যে ইতি লুপ্তপ্রথমান্বিচনং পদং, জ্ঞারারী ভারসমাসে স্তানির্দ্ধোদনরোরেত্বং স্থাদিত্যাহ নিপাতনাদেরমিতি। ইহ বিভারাধিকারে পুনর্জাবচনং কিমর্থমিত্যত আহ বাদুর তানিতি, তেন রূপত্রয়ং বিকল্পদের, পারে গঙ্গং গঙ্গাপারং গঙ্গান্থাংপারং। কর্ণার্পতেন্দীররপত্রমকং, মধ্যেকপোলং প্রতিবিশ্বসক্তং। পুরন্ধি মধ্যং সম্পাগতায়াঃ ব্যরাজ্ঞতাপপ্রনিবাবলায়া ইতি ব্যোবঃ। বাদ্বরে পারে মধ্যেহত্তরে ইতি প্রীপতিনা জ্বরেহন্তরেশনি সমাসো বিহিতঃ। সোহপীরতে বাহলাজ।

১৫। मरश्री वरश्रममिन्हिः। (১৫)

সংখ্যাশব্দা বংশভবৈর্নদীবাচিভিশ্চ সমস্যন্তে। দ্বৌ মুনী ব্যাকরণস্য বংশ্যো-দ্বিম্নিব্যাকরশং, ত্রিমুনি শাখা, দ্বিগঙ্গং, পঞ্চনদং সমাহারে।

১৬।তৎপুৰুষঃ। (১৬)

তৎপুরুষোনাম সমাদোবাচ্যঃ। আকর্মধারয়াৎ।

১৭। নঞ্। (১৭)

- (১৫) সংখ্যা। সংখ্যাপদেনাত্র দ্বিপ্রভৃতিরিষ্টঃ। বিদ্যরা জন্মনা বা এক লক্ষণঃ সজানোবংশঃ। যথা, বৈয়াকরণবংশঃ তত্রভবো বংশ্যঃ। দিমুনিব্যাক-রণসৈবেত্যুদাহার্য্যং ছৌ মুনী সম্প্রাদায়প্রবর্ত্তকাবিতি র্ক্ত্যা বিভাব্যতে। বিদ্যরা পাণিনিকাত্যায়নরোরেকযোগঃ। ব্যাকরণস্থেতি সম্বন্ধে ষষ্ঠা। জয়াদিত্যক্ত বিদ্যু রা সহ বিদ্যাবতোরভেদবিবক্ষয়া সামানাধিকরণ্যমিত্যুক্তবান্, তত্মতমাবিজরোতি দ্বিমুনিব্যাকরণং ত্রিমুনিরাগম ইত্যাদাবক্ষপদার্থপ্রধান-ভারত্তরীহিরপি। জয়নৈকরপসভানে, গৌগার্গ্যেনিরাগম ইত্যাদাবক্ষপদার্থপ্রধান-ভারত্বাজং। দ্বিপ্রভৃত্তেরিষ্টত্বাদেকমুনির্ভাব্যক্ত একভারত্বাজঃ, কর্মধারর এব। দ্বিগ্রমাজঃ। দ্বিপ্রভৃত্তেরিষ্টত্বাদেকমুনির্ভাব্যক্ত একভারত্বাজঃ, কর্মধারর এব। দ্বিগ্রমাজানি, দ্বেরার্গলয়োঃ পঞ্চানাং নদীনাং সমাহার ইতি বাক্যং নদীনিরি পৌর্থনাক্তাহামণীভ্য ইতি টঃ সমাহারে ইত্যভিগানাদিতি নেবঃ। তেন একনদীতি, তথাচ ব্যোবঃ। বয়ং পুরৈক্ষিত্বহি সপ্তসিদ্ধ প্রভাব বথা পঞ্চনদং তথালা ইতি।
- (১৬) তং। বাচ্য ইতি তৎপুরুষ ইত্যয়ং শব্দঃ সংজ্ঞাত্ত্বনাধিক্রিত ইত্যার্থ:। গুরুসংজ্ঞান্ত্রনাধ্যবিদ্যার্থ তংপুরুষত্ত কভাবারা।
- (১৭) নঞ্ । অব্ৰাহ্মণ ইতি । নতু সদস্তী নঞা ন নিষিধ্যেয়াতাং (অ)শক্য
 দ্বাং সিম্বস্থান্ত । তথাচোক্তং সতাং ন চ নিষেধ্যেইন্তিসোহসংস্কৃত নবিদ্যুক্তি,

न 🗢 एवर खन गर ममगुरक। न बाक्यरगरिबाक्यगः।

জগত্যনেন স্থায়েন নঞৰ্থ: প্ৰলয়ং গত ইতি ন চ সন্নিষেকুং শক্লোতীতি বাচ্যং, পাপং মে নাস্তীতি প্রায়শ্চিত্তং ন কুর্য্যাং, ততঃ কুত্র নঞ্প্রবর্ত্তামিতি নৈতদন্তি সর্কোহি জ্ঞাতমর্থ: জ্ঞাপয়িতুং শব্দান্ প্রস্নক্তি, তত্ত জ্ঞানমুভয়ং প্রমা ভ্রমণ্ড, তত্র পূর্বিমিন্নঞোব্যাপারঃ পর্যান্নরিস্ত তত্তারং ত্রাহ্মণ ইতি লতীতির্ন্ধিব্যেতি নঞা খ্যায়তে, স চ বিবিধঃ, প্রমূর্যদাসবৃত্তিঃ, প্রসঞ্চাবৃত্তিক আদ্যে ব্রাহ্মণাদক্তো ব্রাহ্মণত্বেনাধ্যাসিতো রাজ্ঞাদিরব্রাহ্মণো ব্রাহ্মণ সদৃশ ইতি প্রতীয়তে, উত্তরে তু, মিধ্যানির্ভিরেব, ত্রান্ধণোহয়ং ন ভবতীত্যত্ত রান্ধণবেনাধ্যসিতো ন ভবতীত্যর্থঃ। ভশাহভয়ত্রাণি পুর্ব্নপদার্থপ্রধানং, ত্বশেন সদৃশনিরভ্যোঃ প্রতীতেঃ, এবঞ্চ, নসতোনাপ্যসতঃ প্রতিষেধঃ কিন্তু ভ্ৰমাণত স্নিং স্তাদিতি প্ৰযুক্ত বাহ্মণশন্ধাৰণে নিষ্ধাতে ইতি তথ্ব। ইহ নিপা-ভানামনেকার্যস্তান্তরাসাদৃশুক্তাদ্ব্রতা তদক্ততা, অভক্ষো গঞ্জনকঃ, অপেয়া হুরা ইত্যাদাবব্যাবহার্যাতা নিষেধ এব নঞা খ্যায়তে। অনুতমধর্মাভিক্ষুরিতি র ঢ়িবিষয়ত্ত ভদতাতা এবমভাদ্তং। উক্তক, তৎসাদৃশ্যমভাব-৫ তদভাতঃ তদ-ন্ধতা, অপ্রাশন্তং বিরোধন্চ নঞর্থাঃ ষট্ প্রকীর্ত্তি। ইতি। অত্ত তৎপুরুষ-স্থোত্তীরপদার্থপ্রধানতাৎ অবর্ষ। হেমন্তঃ অসর্ক্ষান্য ইত্যাদে। তু স্ববিঙ্গরচন সর্বনামত্বাদিকং ন বিহন্ততে। এক শব্দন্ত উপাত্তসংখ্যা ধিত্বভাৱেন বক্তীতি একবচনমুৎপদ্যতে অনেকশক্ষপাপ্যক্তক্সায়াওথৈব নিয়তং, ষথা—করেণু: व्यप्रिटणश्टाक हेि । यस विकाणीयानामर्थानामरानक पुर প্রত্যেকং বিবক্ষাতে। বধা—কথং ৰমী সন্তত্মশ্ৰ সায়কা ভবস্তানেকে জলদেরিবোর্ময়ঃ ইতি ভারবি:। ন ভত্ত হরিণা ব্যবস্থিতমিতি। পূর্ব্বপদার্থপায়ত্ত অব্রাহ্মণমিত্য-ন্যয়ীভাবঃ, ব্রাহ্মণস্থাভাব ইত্যর্থঃ। নমু অব্রাহ্মণ ইত্যাদে উত্তরপদার্থসাদৃশ্রস্থ বিশেরতাবিবেরের প্রাধান্তঃ, প্রতিষেধাংশে তাৎপর্যাভারাং। উক্তঞ্। প্রধানত্বং বিধের্যত্র প্রতিষেধেহপ্রধানতা। পর্যুদাসঃ স বিজ্ঞোর বজ্ঞোন্তর-পদেন ৰঞিতি অতএবোত্তরপদেন সহ পর্দাসক্ত পরস্পুরসম্বন্ধার্থস্থ বিদ্যুষ্থান-খাদক্ত সমাসঃ। কিঞ্চিল কুর্বাণ ইত্যাদৌ তু বিগ্যংশভাপ্রাধান্তঃ, প্রতিষেধ-टेक्टर थाधाकः, उपर्यत्वन मक्यद्याताः উত্তরপদেন সহ ন্ঞ: সম্বকোনাস্থি

১৮। त्रेयम् ७८१ने। (১৮)

ঈনংশকো গুণবাচিনা সুবস্তেন দহ সমস্ততে। ঈষ-দ্রুক্তঃ, ঈনংপিঙ্গলঃ।

ক্রিয়য়। সহৈব সম্বর্ধাং কথমত্র সমাস: ? তথা চোক্রম। অপ্রাধান্তং বিধের্ঘত্র व्यक्तिराद व्यक्तमणा। व्यक्ता व्यक्तिराद्या । क्षित्रात्रा मर यव निक्रिष्ठ। সত্যৎ অনভিধানমের সমাসনিষেধকারণং। অত্র তৃ তদভাবাদেব অত্যে তৃ অলুগৰিশিষ্টাতৃত্রপদে। **খণ ভাবকারকযোর-**কভরীতাদি নির্দেশাং সমাস ইত্যাত:। অপ্যানকারাৎ কচিদসাকাৎ সম্বক্তেপে সমাস ইতি শ্রীপডি:। ২থা প্র্যাং ন পশ্রত্যস্থ্য স্পৃত্ত কিকিন্ন কুর্ন্তাণোহকি কিৎকুর্ন্নাণঃ, মাৎসং ন হরমাণোহমাং সংহরমাণঃ, ন পুনদীয়ত্তেহপুনর্দেরা: প্লোকা: প্রাদ্ধং ন ভুঙ্ভে অপ্রাদ্ধভোজী, এবমলবণ-ভোজী, কর্ণবেষ্টকাভ্যাং ন শোভতে অকার্ণবেষ্টকিকং মুধ্য। বংসেভ্যো ন হিতঃ অবাৎসীয়োগোধুকু, বধং নাইতি অবধ্যো ব্রাহ্মণঃ, সম্ভাপায় ন ভবতি অসান্তাশিক:, অসহপদেশিক:। অভভিভেদেন ৰধূর্মবলে ইত্যাদি অক্তর ন স্থাৎ, ব্রাহ্মণো ন ভবতি। অথ কেনচিন্নঞ্সমাস কর্মধারয়াস্ত-নিবেশোহস্পীকৃতঃ, স তু বিহুষামসম্মতঃ, বিশেষণবিশেষ্যভাবস্থাপ্রসঙ্গতঃ लक्षणकन्ना जु कन्नदेनक किका ७३ रेजाएनी वित्मयगवित्मयाजावानिम्र उठमा পূর্ম্মনিপাতসন্দেহঃ স্থাৎ। অকর্মধারয়ত্বাৎ অপথী অপথিকঃ ইত্যত্ত ইনিকৌ স্থাতামিতি শ্রীপতি:।

(১৮) ঈষং। ঈষণিতি লুগুপ্রথমৈকবচনং পদং,। গুণশক্ষেছত্র গুণবচনপরঃ ঈষণ গুণবচনেনেতি ভাষ্যকারবচনাদিত্যাহ গুণবাচীতি। সমাসকলত ঐষজ্ঞিরিত্যাদৌ তদ্ধিতাংপত্তিঃ এবমীষদ্বিকটঃ ঈষত্রতঃ ঈষং পীতং বাসঃ, ঈষংপিঙ্গলং চক্ষুরিত্যাদি। গুণবচনেনেতি কিমৃণ ঈষদার্গ্যঃ অরং জাতিশব্দোহত্র অব্যবচনঃ, গার্গ্যজ্ব্যাত্রিত গুণক্রিয়েরোস্থোকতাং গম্মিত্রং প্রযুজ্যতে। যথাগোচর ইত্যক্রজাতাবুংক্র্যাজ্বব্যঞ্জ্জ্ব্য শক্ষা গুণক্রিয়াপ্রকর্ষণ গম্মিত্বং প্রকর্ষপ্রতায় ইতি গোয়ীচক্রঃ। ঈষ-দেছাণিয়া, ঈষৎপাকঃ, ঈষৎসারভ্যিত্যাদি প্রত্যুদাহতং শ্রীপতিনা।

১৯। পূর্বাপরাধ (ব) রোত্তর্মেকদেশিনী ষষ্ঠ্যন্তেন। অর্কং নপুংসক্ষ্। (১৯)

পূর্বাদয়োহবয়বিনা ষষ্ঠান্তেন সমস্তত্তে। পূর্বাং কায়স্ত-

(১৯) পূর্ব্বা। পূর্ব্বাপরা(ব)ধরোত্তরমিতি সমাহারদ্ধ:। এক দেশ: প্রদেশোহবয়ব ইতি যাবং। ততোমত্ববীয়ঃ, তেন একদেশোহবয়বীত্যাহ অবয়বিনেতি, অর্থাৎ পূর্মাদয়্যোহবয়বাঃ, অতোহবয়বাবয়বিসম্বন্ধ এবাত্র ষষ্ঠা, দিগুলক্ষণাত পঞ্মী অবধ্যবধিমংসম্বন্ধে ভবতীতি। অধাবয়বিনঃ ষষ্ঠান্তত্বে পূর্ব্বাদে: প্রথমায়ন্ত সমাসোভবতি ষষ্ঠীসমাসাপনাদকত্বাৎ এবং পরত্রাপি। নমু ওদাবয়বিনা পূর্ব্বক্ত পূর্ব্বাদেরিতি প্রীপতিঃ ষষ্ঠ্যেকচনাস্তেন সমাসমীহতে, কিম্ত্র ব্যাপকবচনেনেতি। মৈবং পূর্কাং বর্ষাণাং পূর্কাবর্ষা ইত্যাদে। নক্সাদিতি ব্যাপকত্বমূক্তম। নমু বিভাষাধিকারাৎ পাক্ষিকোহয়ং সমাস:, তদ্বিরহিতপক্ষে ব্যাসমাস: কবং ন স্থাৎ। তত্রাপি পক্ষে বাক্যং স্থাদিতি ? সত্যং উত্তরত্র বাগ্রহণমেবং জ্ঞাপয়তি মহানধিকারো বাক্যমেব ব্যবস্থাপন্নতি, ন তু সমাসান্তরপ্রবৃত্তিরিতি। অব একদেশসম্পায়োপচারাৎ পূর্ব্বকায় ইতি বিশেষণসমাসেটনৰ সিধ্যতি কিমনেনেভি । নচোদ্যমেবং তর্হি ষষ্ঠীসমাসোহপি প্রসজ্যেত ইত্যাহ ষষ্ঠীত্যাদি, অর্ধং নপৃংসকমি-णांकि वार्शायरण, मयजानव्यार्क्षत्यकरक्षिना विशेष्णन मयमनीयः **जा**र । व्यर्कः निश्रनाः, व्यर्कनिश्रनी। नवर्किमिष्टारङ्गेन नमाः नव्यक्रमारमा-লভ্যতে, লক্ষণপার্থক্যাদক্তবা একমেব লক্ষণং বিদধ্যাৎ তৎ কিং নপুংসক গ্রহণেন ? সত্যং নপুংসকগ্রহণমিহ জ্ঞাপরতি, স্থরে লিম্বচনমতম্বমিতি ফলমক্ত কর্মণা ষমভিত্রৈতীতাত্র দর্শিতং শিবদেবেন। নপুংসকমিতি কিনু ? खामार्कः, देश मगाः भव्यविनार्क्षभायन मश न अथमाण्यभूकरमा नाभि कर्म-ধারর:, কথং তর্হি মাসার্দ্ধং পূপার্দ্ধং ভক্ষিতং ময়া, নিশার্দ্ধমতীতমিতি ভাষ্যাদে প্রযুক্তং, সত্যং পৃথক্ বোগাৎ, পক্ষে ষষ্ঠীসমাসঃ কর্মধারয়ো বা ভবিষ্যতীতি। नम् माकनाद्वार्कमस्यन मनामार्थमक्षयवीयार्करवममार्काकाम्य देखि লক্ষণং কেনচিল্লক্ষিতং, তদিহ কিং বাচ্যং ? ন বাছল্যান্তদপীষ্যতে; তথাহি পূর্বকারঃ, অপরকারঃ, অধ (ব) রকারঃ, উত্তরকারঃ। অদ্ধণিপ্রলী, অদ্ধিং সমভাগে ক্লীবন্। নেহ গ্রামাদ্ধঃ। ষষ্ঠীসমামাপবাদোহয়ন্। তেন, কায়পূর্বমিতি ন ভবতি। মধ্যাহ্লাদরো
বিশেষণসমাসেনৈব সিধ্যন্তি।

২০। দ্বিতীয়-তৃতীয়-তৃরীয়-চতুর্থ-তুর্য্যয়। (২০)

এতে হবরবিনা ষষ্ঠ্যন্তেন বা সমস্তন্তে। দ্বিতীরং ভিক্ষারাঃ

অর্জন্মতীয়শব্দেহর্জন্মতীকাননে বর্ত্তে, তথাচ অর্জো জনত্যা: কাননমিতি ভাষ্যং, অর্জা চাসে জনতীচেতি অর্জোজনত্যা বা অর্জন্মতী তদিব
যত্তদেজনতীয়ম্। ইবে কুশাগ্রাদিভ্য ঈয় ইত্যেকে ভবার্থে গর্হাদিতাদীয়
ইত্যক্তে, আদিপদাদর্জবিলোকিভাদয়: স্মুঃ, ঐপতিদত্তত্ত্ব অর্জনাতোহর্জন্মভারতীত্যসাকল্যন্তেরর্জন্ম তৃতীয়াসমাসঃ, প্রবমনয়োরর্জেন
বৈ সম্ভানীতি, সা খন্তর্জন পুমানিতিবাক্যেপি তৎ প্রয়োগো দৃশ্রতে
ইত্যাহ। কিঞ্চ ভাষ্যকারেণার্জং ন পৃংসকমিতি পাণিনীয়ং লক্ষণমপি নিরস্তং
ভতঃ পৃংলিঙ্গার্জনব্দোহিপি নির্ক্রিরোধঃ। একদেশিনেতি কিং প্রক্রং ছাত্রন্থ
অপরমুপাধ্যায়ন্ম সম্বামিসম্বন্ধলক্ষণেয়ং ষষ্ঠা। নমু সায়াক্ষমধ্যাক্ষমধ্যান্দিন
মধ্যরাত্রাদয়শ্রেতি একদেশিসমাসনক্ষণং কেনিচিং কৃতং, তদিহ ন বক্তব্যমিত্যাহ মধ্যক্রাদয় ইতি, ইহ অহরবয়বেহহঃ শক্ষঃ, তেন মধ্যঞ্চ তদহস্তেতি
মধ্যাক্ষঃ, রাজাহঃ সধিভ্যন্ত ইতি টঃ, টেক্রোহক্ষ একদেশাদেরিত্যক্রাদেশঃ,
এবং প্র্কাক্ষঃ সায়াক্ষঃ পশ্চিমরাত্রঃ অপররাত্রঃ। উপারতাঃ পশ্চিমরাত্রগোচরাদ্পারয়ন্ত্রী পতিতৃং জবেন গামিতি ভারব্রিঃ। গ্রহনম্পররাত্রপ্রাপ্তর্শালাঃ কবয় ইব মহীপাশ্চিতয়ম্বয়্রপ্রতিয়িতি মাখঃ।

(২০) বিতীয়। এতে বিতীয়াদয়ঃ ষষ্ঠান্তেনাবয়বিনা সমস্তত্তে বা।
নমু কথং ভিক্ষাবিতীয়মিত্যাদে ষষ্ঠাসমাসঃ। কায়স্ত পূর্বমিতিবছাক্যমেব
ভবিত্মইতীভ্যাহ পক্ষে ইত্যাদি। অত্র সূত্রে তুরীয়৸কঃ পাণিনিনা প্রভ্যা

দিতীয়ভিক্ষা, তৃতীয়কথা, তৃত্তীয়বাপী, চতুর্থগাথা, তৃর্ঘারেলাকঃ পক্ষে বিভাষাধিকারে পুনর্বাগ্রহণাৎ পূরণপ্রত্যয়ান্তেনাপি ষঠীসমাসঃ। ভিক্ষাদিতীয়ং, বাপীতৃরীয়মীত্যাদি।

२**ऽ। काला**ः शक्तिभागिना । (२১)

পরিমাণিনা ষষ্ঠ্যন্তেন কালশব্দাঃ সমস্থান্তে i মাদো জাতস্থ-(যস্থা স) মাদজাতঃ, বর্ষজাতঃ, (দ্যুহজাতঃ)।

খ্যাতঃ, কিন্তু মুক্তত্তেবেণাক্তবাদনেন বিহিতঃ। তথাচ ব্যোষঃ। বিয়ন্ত্রীয়ং সবিতা বিমৃচ্য ছিতস্তরীয়াস্তমহাদ্রিশৃত্ব ইতি প্রায়ৃঙ্ক। কবং হস্তাগ্রমগ্রহস্তঃ পাদতলং তলপাদঃ, অভিধানাৎ সমাসোভয়মিব্যতে। তথাচ বামনঃ হস্তাগ্রাগ্রন্থাদয়ো খ্যাখ্যনিব্যে ।

(২১) কালা:। পরিমাণ মন্তান্তীতি পরিমাণী—পরিমাণিনা পরিচ্ছেদ্যেন ষষ্ঠান্তেন, পরিমাণবচনাঃ কালশব্দাঃ সমস্তন্তে। যদ্যপি দ্রোণাচকাদীনাং পরিমাণং প্রসিদ্ধং তথাপাবচ্ছেদহত্ত্বাং কালজান সাণং পরিমাণতং, তথাহি মাসাদয়ো জাতজ্ব সম্বন্ধিনীবাদির গময়ন্তীতি ভবন্যাবচ্ছেদহেত্বঃ অক্র স্ত্রে কালা ইতি বহুবচনাৎ কালপরিচ্ছেদিকাঃ সংখ্যাহপি কালা ইত্যান্তাং। তেন বে অহনী তে বে পদে পরিমাণিনা সমক্ত্রেতে, পশ্চাদনয়োবে-বে'বরপদে দিওর্ভবতি। যথা বে অহনীজাতজ্ব দাহত্তাতঃ, রাজাহ ইতি ট প্রত্যারে টেছোক্ত একদেশাদেরনেকাদনমাহার ইতি অক্তাদেশঃ। এব-মন্ত্রাপি তদহর্জাতঃ ইত্যাদিসিগ্রতি। তুর্গজ্ঞমাসোজাতঃ সম্পন্নোহস্তেতি, বহুরীহিণা সিদ্ধমিত্যাহ। শ্রীপতিজ্ব মাস্ত্র জাতঃ মাসজাতঃ কুমারঃ, এবং পক্ষজাতা কলা, পরিমাণং হি কালঃ, পরিমাণিনম্প্রতি ষষ্ঠ্যস্ততা মাসাদের ইতি। যথা ত্রাহক্ত দ্বীদং পঞ্চাহন্তান্ত্র্যুরঃ বর্ষশতজ্ঞায়ৎ ব্রাহ্মণ ইতি। জাতজ্ব মাসঃ পরিমাণং ইতি বিগ্রহে স্মাসোহর্মিতিমতেহপি, পর্মাণ্যের সমাসার্থ ইতি ভাষ্যাদাব্দাহ্রত্বাদিহ নার্থো বি(ভি)দ্যতে।

২২। প্রাপ্তাপন্নে দ্বিতীয়রা। (২২)

এতেদিতীয়ান্তেন বা সমস্তেতে। প্রাপ্তো জীবিকাং প্রাপ্তজীবিকঃ, আশমজীবিকঃ। পক্ষে—জীবিকাপ্রাপ্তঃ।

২৩। দ্বিতীর শ্রিতাতীত-পতিত-গতাত্যস্ত প্রাপ্তাপন্নার্ন্ন-গম্যাদেটঃ। (২৩)

শ্রিতাদ্যৈদি তীয়ান্তং সমস্যতে। কইংশ্রেত:-কইশ্রিত:, কুফ্লিভ:, লোকাতীতঃ, খল্রপতিতঃ, আমগতঃ, তরঙ্গাত্যন্তঃ, হৃথপ্রাপ্তঃ হৃথপিমঃ, বৃক্ষারূচঃ, গ্রামগমী, গ্রামগামী, ওদনবু-ভুকুঃ, দিনদীর্ঘ্য নিরাক্রিফুঃ, বিপ্রায় বেদবিহুদে।

জাতকমাসঃ পরিমাণ মিত্যত্র তু পরিমাণসম্বন্ধে সাক্ষাংষ্ঠীয়মিতি কুতোহস্ত-মাসেন সমাস ইন্ডি ব্যাচচকে।

- (২২) প্রাপ্তা। বা শব্দবিবৃতি: স্পষ্টার্থা, বিভাষরা অধিকৃতত্বাৎ। পক্ষে
 জীবিকা প্রাপ্ত ইতি, দ্বিতীয়া প্রিতেত্যাদিনা সমাসঃ, উভরোর্ম্মিভাষিতত্বাৎ
 বাক্যমেব পক্ষেতিষ্ঠতি। নকু প্রাপ্তাপদের বিতীয়য়েতি মুনিনা যদাবত্তাবিমৌ
 সমস্তেতে, তদাদস্তাদেশার্থি স্ত্তিতং, তদভাবে কথমত্র ক্রমঃ স্থাৎ।
 সত্যং ভ্যাপোনামি বহুলমিত্য ব্রু বহুলগ্রহণাদসংজ্ঞায়ামপি ক্রচিৎ ক্রমঃ
 প্রাপ্রোতি ব্রথা, প্রাপ্তজীবিকাং প্রাপ্তজীবিকা এবমাপরজীবিকা।
- (২৩) বিতীয়া। রক্ষার চ ইত্যারোহতের্গত্যর্থহাৎ কর্ত্তরি ক্তঃ, প্রাম গমীত্যাদি ভবিষ্যতি সমিগাম্যাদয়ঃ ইনন্তণিনজে সাধ্, গকেণোভবিষ্যদাধ-মর্ণ্যয়েরিতি ষষ্ঠীনিষেরঃ। ওদনং বুভুক্সঃ, বিষদ্বীর্যাং নিরাকরিষ্ণুং, বেদং বিদ্যানিতি বাক্যং. নলোকিনব্যয়েত্যাদিনা ষষ্ঠীনিষেরঃ, তথা নৌচেপ্র্যু, মুখেপ্রু। কচিং ক্রিয়াবিশেষণমপি সম্প্রতে। দীর্ঘান্তা ন ঘোষেরিতি ময়্বঃ, পরিগাঢ়কুষঃ, নিতাভক্ষামঃ, নিকামসুধী নিত্যভীকঃ নিত্যস্লায়ী শীপ্রভোজীত্যাদি। তত্ত্বং সমাসবিধিষু লক্ষণমুপ্রক্ষণমিতি। হংসা

२८। जिन शहीरकर्थ। (२८)

ক্তান্তেন বিতীয়ান্তা খট্টা সমস্ততে। খট্টারটো জালাঃ। ২৫। স্বয়ৎসামি। (২৫)

এতৌ[®]ক্তান্তেন সমস্থেতে। স্বয়ং কৃতং সামিকৃতং। সামী-ত্যর্থগ্রহণাৎ–নেমিভিন্নং অর্দ্ধকৃতঞ্চ।

২৬। কালা অত্যন্তসংযোগে চ। (২৬)

বিতীয়ান্তাঃ কালবাচকশব্দাঃ ক্তান্তেনাত্যস্তসংযোগে চ স্বত্তনে সহ সমস্তত্তে। অহনতিস্ত গাঃ রাত্যারুঢ়াঃ বর্ষংভোগ্যো বর্ষভোগ্যঃ মুহুর্ত্তমুম্।

মণ্ডলত্যতিজিঞ্ রদুভোঞ্বাবণমিত্যত্তাপ্যনেনৈব সমাসঃ। শৈষিক্যাঃ ষষ্ঠ্যাঃ সমাস ইতি শ্রীপতিঃ, নিষ্টাদিশ্বপি হি শিব্যতে। যথা সভ্যান্থরকা নর কম্ম জ্বিন্ধব ইতি মাঘঃ। এভিরিতি কিমৃ ? ওদনং ভুক্তবানু কটং চলোণঃ।

- (২৪) কেন। ইহ বিভাষাধিকারে সত্যপি নিত্য এবাক সমাসং, বাক্যাভাবান্নিলারা অপ্রতীতেঃ, বঃ খলু গুরুণানমুজ্ঞাতঃ খট্টামারতঃ স খট্টারতা,
 লজ্যিতাচারতাদবিনীভোহভিধীয়তে, অতএব জাল ইতি বিশেষিতম্।
 আক্লেপে তুখটামারটো রাজা।
- (২৫) স্বয়ং সামি। স্বয়ংসামীতি লুপপ্রথমাধিবচনং পদ্মিত্যাহ

 এতাবিতি স্বয়মাল্পনেত্যর্থেহব্যয়ম্। সামীত্যদ্ধার্থে তরায়মর্থপর ইত্যাহ সামীত্যর্থ-গ্রহণাদিতি-সামিত কবিষয়াঃ সমাগমা ইতি কালিদাসঃ। অর্দ্ধোপত্তকন

 বিষেপ জায়ামিতি চ ত্রিপদেহপ্যয়মিতি বর্জমানঃ। তথা স্বয়ং ধৌতে
 পাদে স্বয়ংবৌতপাদঃ, তল্পাপত্যং স্বায়ংবৌতপাদিঃ, স্বব্রেকপদ্যেতদ্ধিতোংপত্তিঃ ফ্রমিত্যাহ ক্রেনেতি কিং স্বয়ং কৃত্বা ত্যাগম্।
- (২৬) কালা:। কলয়তীত্যতি কাল:, স্ত্রনির্দ্ধেশং দীর্ঘ ইন্ড্যেক। বিতীয়ান্তা: কালবাচিন: শব্দা: ক্তান্তেন সমস্তত্তে ইন্ড্যেকং বাক্যং, অন্ত্যন্ত-সংযোগেহভিবিধে ক্তান্তেনাক্ষেন চ স্থবন্তেন সমস্তন্ত ইন্ডাপরমু। অন্তঃ

২৭। তৃতীয়া তৎকৃতগুণবচন-সমোনার্থার্থ পূর্ব-নিপুণ-কলহাবর্মিশ্রশ্লীট্রো (২৭)

শুণমুক্তবান্-শুণবচনঃ। তৃতীয়ান্তক্তেন গুণবচনেন সমার্থ উণার্থ অর্থশবাদিভিশ্চ তৃতীয়ান্তং সমস্ততে। শলাকয়া কাণঃ-শলাকাকাণ: শঙ্কুলাথওঃ। ইহ কম্মান্ন ভবতি, স্থাতেন পাটবং। নেদং তৎকৃতগুণমুক্তবৎ, কিন্তুৰ্হিণ্ তদ্ভক্ষণে পরি-

সংক্রাস্তঃ মাসপ্রমিত কর্মাঃ মাসংপ্রমাত্মারক ইত্যর্থঃ। কেনেতি কিং ওদনং ভূকবান্, অতএব নক্রতেতি বর্দ্ধমানস্ত্রং, বর্ষং ভোগ্য ইতি কালাদ্ধ ভ্যামতিসংযোগ ইতি বিতীয়া, অত্র ক্রিয়য়া কালস্ত বিচ্ছেদঃ। মুহুর্ভ স্থাণিত্র ওবেন, এবং ইবর্ষ স্থী অহোরাত্রকামুকঃ, সর্বরাত্রকল্যাণী। অত্যস্ত-সংযোগ ইতি কিম্ ৭ মাসমাস্তা দেবদত্তস্ত।

(২৭) তৃতীয়া। অত্র গুণবচনশক্য কিং গুণমাচন্টে কিমুভয়োগ্র ণৈ বর্ত্তিত্বা তরিমিন্তীকৃত্য গুণিনি বর্ত্তিত্ব তমাচন্টে নতাবদাদ্যা, বচনগ্রহণাদিত্যাহ গুণ মুক্তবানিতি তচ্চন্দেন তৃতীয়া পরাম্যাতে ইত্যাহ তৃতীয়াস্তকতেনেতি তৃতীয়াস্তমকোহিপি তৃতীয়াস্তার্থপর ইত্যবধেয়ম্। তংকৃতগুণবচন ইতি কর্ম্মারয়ঃ সমোনার্থ ইতি মুন্দর্যভাগি বহুতীহিরিত্যাহ সমার্থ উনার্থ ইতি, ডতঃ সর্করঃ সংমানার্থ ইতি মুন্দর্যভাগি বহুতীহিরিত্যাহ সমার্থ উনার্থ ইতি, ডতঃ সর্করঃ সংঘানার্থ ইতি মুন্দরাকাণ ইত্যাদি, অত্র কাণখণ্ডশক্ষা নিমীলনে খণ্ডনে চ বর্তিত্বা পশ্চাদর্শ আদিত্বাদ্য ভালাবাহার তহুতি পুক্ষে বর্ত্তে ইতি গুণ্ধ্যেশ ভবতঃ স চ শলাকাবাচ্যেন শক্ষ্পাবাচ্যেন চ কৃতঃ তংপ্রবৃত্তির ভবতঃ সত শলাকাবাচ্যেন শক্ষ্পাবাচ্যেন চ কৃতঃ তংপ্রবৃত্তির কিমুণ গাব করণাং। এবং গিরিকাণ গিরিন্ম ক্রীড়নং দ্বেয় গুণিভূতকর্তির বৈয়াকরণসম্মতঃ, তেন শক্ষ্পাথণ্ড ইত্যুদাহরতি, তথা প্রমাদকাণঃ প্রমাদম্র্থঃ মুর্থশকোহিপি জড়পর্য্যায়ো জাড্যে বর্তিতা তথিত বর্ত্তিতে। তৎকৃত্তিতি কিম্ণ গাত্রেণ শ্রামঃ অক্ষাকাণঃ। ইহ ত্র তাভ্যামন্যত্র ভ্রায় ইতি প্রীণতিঃ, অক্ষিকাণ ইতি ভাগর্ত্তিকারঃ। নহলোচনঃ ভূামো ভবতীত্যক্ষঃ করণত্বং। জন্মকাণ ইতি ভাগর্ত্তিকারঃ। নহলোচনঃ ভূাণো ভবতীত্যক্ষঃ করণত্বং। জন্মকাণ ইতি ভাগর্ত্তিকারঃ। নহলোচনঃ

ণামোপাধিরিতি। সমাথি দৈছ-পিতৃসমঃ গুরুত্ল্যঃ একোনঃ দ্বাঙ্গবিকলঃ। ধাতার্থঃ, মাসপ্র্বিঃ, বাঙ্নিপুনঃ, বাক্লহঃ, মাসাবরঃ কনীয়ান্, গুড়মিশ্রঃ, বাক্লগ্রঃ।

२৮। कर्क् कतर्गे क्लो वहनम्। (२৮)

তৃতীয়ান্তে কর্তৃকরণে কুদন্তেন সমস্তেতে। চৌরছতঃ শরভিনঃ দধ্যপদিক্তঃ অশ্বয়নং। বাহুল্যান্নেহ দাত্রেণ লুনবান্।

মুপদর্শিতবান, ন হি তৃতীয়ায়েন দেবদত্তক্ত কাণত্বং কৃতং, কিন্তার্হ্ কেনা-প্যনেন অক্সাপুনঃ কেবলং কাণ্যুক্তো দেবদত্তো লক্ষ্যতে। ক্যাসকৃতাপি ব্যাখ্যাতম্। নৰ্মান্ন কাণমস্থ্ৰেতি অক্সিকাণ ইতি ভবিষ্যতীতিচেন্ন, ভলাকাণাক্ষ **ইতি বিশেষণক্ত পূৰ্ব্ব নিপাতপ্ৰসন্ধাং। নহুলোচনঃ কাণোভৰ**ভীাত লোচ-अांति कानजाबार कावनज्ञिजित्हदेववर त्नोकिकी विवदक्कि विश्वानः। ওপবচনেতি কিমৃ ? ধাল্ফেন ধনবান্, নচায়ং গুণমূল্। গুণিনি বর্তে ইতি ত্ত্ববচনঃ, কিন্তুর্হি দ্রব্যবচনঃ, অথোভয় (থা) দ্রাম্পুটং প্রভ্যুদাহরন্নাই ইহ ক্ষান্ন ভবতীতি সিদ্ধান্তর্তি তছক্ষণপরিণামোপাধিরিতি তদিহ ভক্ষিতং चुउः পाक्ति পाটवः विज्ञताि न भूनवृ जिमातः পाটविमिषि अक्ष धन-বচনঃ, ন তু গুণমুক্। গুণিনি বর্তত ইতি। পিতৃসম ইত্যত্র তুল্যাইপরিতি ত্বতীয়া। অন্মেষাং যোগে অস্মাদের সমাস্বিধাননাম্ব্যাং তৃতীয়া ভবতীভ্যর্থঃ কুক্রর্থং বাপেক্যা করণবং কর্তৃত্বক সিদ্ধমিতি প্রীপতিঃ। একোন ইতি একেন উন ইতি বিগ্রহঃ, তথা বন্ধবিধুরঃ রথশূতাঃ। মিশ্রশব্দোহত্ত সোপ-मर्गानिक्रभमर्गन्छ गृश्वर्ष मिञ्जकानूनमर्गमयक्रमिष्ठ भागिनीयक्रतस्र त्व অনুপদর্গে মিশ্রশব্দে উত্তরপদে অন্তোদাত্বিধানাৎ সোপদর্গেণ চ মিশ্র-শব্দেন সমাস উক্ত:। এভিরিতি কিং মাসেন পর:, মাসেন ক্রীয়ানু।

(২৮) কর্ত্। ইহ বছণগ্রহণ: সর্বোপাধিব্যভিচারার্থ তেন আজ্বনা প্রকাশ, আজ্বন: পূর্ব ইত্যসূত্। তথা বাক্শ্র: ক্রমশঙ্কট: মদ্মনীম্পঃ প্রকৃতিকৃপণ: প্রকৃতিভাল: সত্মংকুল: অর্থপণ্ডিত: বণিক্ধনাচ্য: আশীয়-রাজন্তক হাজিকাচ্য: বিরহত্বল: স্বেদার্জ: ত্রাসবিহ্বল: বিদ্যার্ভ: ত্রা-

২৯। ক্**তি**লুর্ধিকার্থোক্তে। (২৯)

কৃত্যৈস্তীয়ান্তং সমস্ততে। অধিকার্থোক্তিশ্চেৎ। শলেছঃ কৃপঃ, কাকপেয়া নদী, বাস্পচ্ছেদ্যানি তৃণানি।

ধিকঃ বয়োধিকঃ বয়োজ্যেষ্ঠঃ তথা একোনবিংশভিঃ একালুতিংশৎ একালু-দংগ্যাদনীদীনীত্যেকে। তথা হি এতায়ন্তর্তক্রিয়াস্তরাণি তৃতীয়াসমাস-ক্রপাণি নিপাতাত্তে, দল্লা মিপ্রিতমোদনং দল্পোদনং, এবং দ্বিশক্তবঃ अटमीष नः उटक्रीपनः स्ट्रिशिष्मः भाटकीपनियञ्जापि, हेर बाक्षन বিশেষাণামলবিশেষৈঃ সমাসঃ। গুড়েন মিপ্রা ধানাঃ গুড়ধানাঃ, এবং মধুলালাঃ ফাণিত প্রথ্কাঃ উদকশক্তব ইত্যাদি, ইহ পিণ্ডিতদ্রবোণ, পিণ্ডী-করণযোগ্য গুড়াদে: সমাসঃ। অখেন যুক্তোরথঃ, অধরথঃ, এবং বড়বারথঃ বাংীকরথঃ পুলাপশকট ইত্যাদি। ইহ যানেন রথাদিনা বাহনম্র সমাসঃ। मधार्विष्ठः प्रिविष्ठः এवः खेष्णाली थेखनर्गती, शास्त्रकृम्लः भाषात्रिकः, শাটকমঞ্বা ইত্যাদি। ইহ ভাতেন তৎপুরণদ্রব্যক্ত দধ্যাদেঃ সমাসঃ। অত্যে তুত্তীয়া সমাসং কৃত্বা পুনঃ কর্মধারয়ে শাকপার্থিবাদে মধ্যপদং কুম্পুস্তি। বাহুল্যাৎ গলে চুপ্যতে, গলেচোপকঃ, পাদাভ্যং হ্রিয়তে-পাদ হারকঃ, অয়ং নিত্যসমাসসংজ্ঞাৎ। তথা পরাক্তাধ্বনি মুখরঃ শ্রদ্বি ইত্যাদি। ক্রমদীশ্বরস্ত, ষ্ঠীসমাসং বিধায় প্রতীতির্হি বিষমপ্হরতীতি-স্থানাদর্থসন্তরিত্যাখ্যৎ, মণ্ডপবৎ। কর্তুকরণে ইতি কিমৃ ? ভিক্ষাভি-ক্ষিতঃ কক্সয়া শোকঃ। কৃতেতি কিমৃ ? ক্সমাংসলঃ বাছল্যালেছেতি, অত্রক্তবত্বব্যরকৃতোঃ সমাসং বছলং ব্যাবর্ত্তরতি। यथा দাত্রেণ লূনবান্, রথেন গকং সময়: দাত্রেণ কৃত্বা অলংকুতেন ভোক্ত : সময়:। তথা এপিতি সূত্রং— কর্তৃকরণযোরনব্যয়ে ক্তেতি। ম্লকেনোপদংশং ম্লকোপদংশমিত্যনয়ো-र्कित्मयविशाना पुः।

(২৯) কুতৈয়া। কুত্যপদেনাত্র থকার এবেষ্যতে প্রযুক্তহাৎ। তথাচ বেন প্রায়েণেতি পরস্ত্রাং তেনায়মর্থা সম্পদ্যতে, কুত্যপ্রত্যয়ান্তস্থাতিস্থাতী রাজ্যে কুর্তৃকরণে সমস্ক্রেতে। অধিকার্থোক্তো গম্যমানায়াম্। স্থাতিনিলা (ফলক)

৩০। চতুর্পী প্রকৃত্যর্থ-বলি-হিত-সুখরক্ষিত-দের্বৈঃ। (৩০)

প্রকৃতিবাচিনা সুবন্তেন সহ অর্থনকাদিভিশ্চ চতুর্থ্যন্তং সমস্ততে। যুপায় দারু-যুপদারু, কুগুলায় হিরণ্যং কুগুলহিরণ্যং প্রকৃতীতি কিমৃ ? রন্ধনায় স্থালী ॥ অর্থেন সহ নিত্যসমাসঃ সর্বালিঙ্গতা চ, বহুলামুর্ত্ত্যা। বিপ্রায় ইদং-বিপ্রার্থং পয়ঃ বিপ্রার্থা শাটী, বিপ্রার্থঃ পটঃ যক্ষবলিঃ গোহিতং গোহুথং গোরক্ষিতং, দেবদেয়ং পুপ্রাং, বরপ্রদেয়া ক্যা।

নিমিত্তমধ্যারোপিতার্গবিচন মধিকার্থোক্তিঃ। শ্বলেছা কৃপ ইতি লিহের্ণ্ড, শুনা লেছা শ্বলেছা, ইতি পূর্ণতোভাবনং স্কৃতিঃ, নিলার্থমারোপ্যতে শ্বলেছারং নাম। এবং কারুপেয়া নদীতি, বাস্পছেদ্যানি ত্বানীতি ছিদের্গ্যং, মৃত্তোভাবনং, অষত্রছেদ্যত্বং নিলার্থমধ্যারোপ্যতে ইতি লোচনাদিমতে, একত্রেব স্কৃতিনিলারোপঃ। অক্টে তু কুত্রচিং স্কৃতিং কচিং নিলামাননিত্ত। তথা হি কারুপেয়া নদী শ্বলেছা কৃপঃ ইতি পূর্বভারাম্। দস্তভেদ্যং দধি, পাণিছেদ্যং তৃবং পাণিমৃদ্যাঃ কন্টকাঃ, ওঠাবলোপ্যং মাংসমিতি কুমারে। দাত্র-ছেদ্যং প্রস্তরঃ ইতি নিলায়াং। কঠিণত্বং হি প্রস্তর্গ্র ত্বণ ইতি প্রাপতি কৃক্তবান্। অধিকার্থোক্তাবিতি কিম্ ? কাকেন পেয়া, কথমিকের্ণ্যতি বুসো-পেক্যং কৃত্তু সাধ্যং ঘন্যাত্যং, বহলগ্রহণাৎ পূর্বস্তায়ং প্রপঞ্চ ইতি বর্দ্ধানঃ।

(৩০) চতুর্থী। যূপাদের পাদানকারণং ইহ প্রকৃতিরুচ্যতে। তথাচ
মীমাংসাবার্জিকরার:। প্রকৃত্যা বিকৃতির্যনাচতুর্গুন্তা সমস্ত্রতে। তাদর্থ্যে
মূপদার্কাদি বথা কুশুলকাঞ্চনমূ । অর্থেনেতি বিভাষাধিকারেইপি বাক্যমিই ন
সম্ভবতি নিত্যতাং। পরং লিঙ্কং হল্ডংপুরুষকর্ম্মারয়ে ইতি নিয়মেহপি বাচ্যলিক্ষতা। তত্তোপপন্তিমাহ বহুলানুর্ন্ত্যেতি, তেনায়মর্থং সম্পদ্যতে
ইদমর্থোহয়মর্থনকঃ তত্তোর্ভিবিষয়্ত্রার্থনকত ইদমর্থর্ভিত্যাভ্তরপদার্থ
প্রাধান্তেইপি সমাস্ত সর্ক্রিক্ষতা ভবতি। তথা চ, নিত্যমর্থেন ইতি বর্দ্ধমান-

• ৩১। পঞ্চমী ভয়াদৈট্ট। (৩১)

ভয়াদিভিঃ পঞ্চয়তং সমস্ততে। রাজোভয়ং-রাজভয়ং
রকভীঃ চৌরভীতঃ ষভীতিঃ, সিতেতরঃ আমনির্গতঃ অধর্মজুওপাঃ।

৩২। অপেতাপোঢ়-মুক্ত-পতিতাপত্রস্ত-রম্পেশঃ। (৩২)

স্থাপেতঃ কম্পিনাপোঢ়ঃ রোগমুক্তঃ মঞ্পতিতঃ রণা-পত্রস্তঃ। অল্লশ ইতি কিম্ ? প্রাসাদাৎ পতিতঃ।

স্ত্রম্। শ্রীপতিস্ত বহুরীহিণা দিদ্ধান্নিত্যমর্থনৈতি নাস্ত্রংং। তথাচ বিপ্রার্থং পয় ইভ্যত্র বিপ্রশক্ষো বিপ্রভাজনপর ইভ্যবধেয়য়্। তথা মহদর্থমিত্যত্র মহত্যর্থং প্রয়েজনমস্তেতি বাক্যমতৃল্যাধিকরণত্বানাকারঃ। তথা হিতস্থখাভ্যাং বর্তীসমাসং। তথা অখ্যাসং রক্ষনগৃহং নাট্যশালা ক্রীড়াতড়াগং, শয়নপর্যক্ষং, পরিশ্রমন্থলী বিশ্রামগৃহমিতি, প্রতিবিহিতং ভাষ্যে, অশ্বদাসাদয়ঃ ষতীসমাসা ইতীদমপ্যাহ ইহাবাসগৃহাশ্বদাসাদয়য় চতুর্থীযোগবিভাগাৎ ষতীসমাসেন বেতি ত্রিম্নিসংগ্রহকারঃ। বলিরক্ষিত দেয়েনেতি চ তাদার্থ্যেহধিকারার্থং সম্প্রশানার্থক বচনং। দেয়েতি কিম্প বিপ্রায়্য দাতব্যম্।

- (৩১) পঞ্মী। সিতেতরাস্তরেণোক্রোদাহরণেশ্বধিরপায়াদিশ্বপাদানে গঞ্চমী, অত্র পুনরস্থার্থে পঞ্চমী, তথাক্রিপামাণমসিতেতর ভাসা শস্তুনেব করিচর্মচকাশ ইতি ভারবিঃ। আন্যাশকাং পরলোকভীকঃ অপবাদভীকঃ, দ্বীপান্তরানীতলবঙ্গপুল্পৈঃ। ভাস্বদ্ গ্রাবোদ্যাতেন স্থানভ্তঃ শাথাচ্যুতঃ বেশ্বহিদ্ধতঃ পাপবিরতঃ তল্লকঃ তৎপ্রাপ্তঃ তদ্সুরং ত্বস্থ ইত্যাদি কামাচারতোহমুসর্ভব্যং, ভ্রাইদ্যারিতি কিমৃ
 ং প্রত্যারধ্যে তা প্রামার্চ্ন্।
- (৩২) অপে। ভালশ ইতি উক্ত কর্মণ: শৃশ্ এভি: সহ ভালবিষয়া পঞ্মী সমস্থতে। তথাচ বর্দ্ধমান:। ভালশ ইতি সমাসন্তালবিষয়তামাচটে ইতি

৩৩। স্তোকান্তিকদুরার্থ-কৃচ্ছ্কাণি ক্রেন। (৩৩)

পঞ্চম্যা অলুক্। স্থোকাম্ক্তঃ অল্লাম্ক্তঃ, অন্তিকাদা-গতঃ নিকটাত্থেতঃ, দ্রাদাগতঃ বিপ্রকৃষ্টাত্থেতঃ, কুচ্ছাদ-বাপ্তঃ।

081 (08)

ষষ্ঠ্যন্তং স্থপা সহ সমস্থতে। রাজ্ঞা পুরুষো–রাজপুরুষা।
৩৫। ক্রীড়া-জীবিকয়োর্নিত্যম্। (৩৫)

সমস্ততে। দমনকপুপাভঞ্জিকা নাম জীড়া উদ্যানপুপা-ভঞ্জিকা, জীবিকায়াং—দন্তলেখকঃ কুক্দিলেখকঃ।

ব্যাচষ্ট । তেন প্রাসাদাং পতিতঃ পর্বতাৎ পতিতঃ মহারোগধন্মক ইত্যাদিধ বাক্যমেব, বন্ধনবিরহার্থোম্চিরকর্মক এব।

- (৩৩) স্থোকা। অর্থকয় প্রত্যেকসম্বন্ধাৎ, স্থোক্থাজিকার্বল্রার্থ
 কৃচ্ছু শব্দাঃ প্রক্রান্তাঃ ক্রান্তেনৈর সমস্তন্তে। প্রুম্যা অলুগিতি পঞ্চয়াঃ
 স্বোকাদিভ্যঃ ক্রেইত্যনেনেতি শেষঃ। তথাচ ব্যোষঃ। দ্রাত্পেতং প্রমাঃ
 দদায়া তথাজিকাদাগতমন্ততাপং কৃচ্ছু াদবাপ্তং জননীব পুত্রং করোত্যশং
 দশনিতাহপি লোক্ষিতি। বতু কৃচ্ছু লক্ষ্যপি লক্ষ্বর্ণভাগিতি রঘুবংশে
 প্রযুক্তম্ব। ততুতীয়াসমাসেন সিদ্ধ্য
 - (৩৪) ষষ্ঠী। রাজপুরুষ ইত্যত্র অন্তর্কার্তিনীং বিভক্তিমাগ্রিত্যেতি নলোপ:।
- (০৫) জীড়া। জীড়ায়াং জীবিকায়াঞ্চ ষষ্ঠাজং স্থপা সহ নিত্যং সমস্ততে, নিত্যসমাসহামাক্যং স্থপদেন নাস্তি। অকঃ জীড়াজীবিকয়োস্কৃচস্তৃতীয়ভাব ইত্যেক এবোদাহত ইতি জয়াদিত্যেনোকং। অকে জীবিকার্থে ইতি স্বস্বত্রে রমনীয় কর্ত্তেতি নিত্যং জীড়াজীবিকয়োরিতি সমাস ইতি বাসন উক্তনবান্। দন্তবেশক ইংগ্রু দক্ষো হস্ত্যাদেঃ, লীখনং চিত্রীকরণম্।

ত । ন নির্ধার্য্যপুরণ-গুণ-স্থাহিতার্থা-ব্যয়লাদেশৈঃ। (৩৬)

নির্ধার্থনে প্রণাদিভিশ্চ ষষ্ঠী ন সমস্ততে। গবাং কৃষণা আইপুণানাং ধাকতঃ নাধ্তমঃ:
সম্পন্নকীরতমা ছাত্রাণাং পঞ্চমঃ। গুণেন প্রতিষেধোবছলং
পটস্ত শুক্তমঃ, বলাকায়াঃ শৌক্রাং। বাছল্যাৎ—তৎসামীপ্যং।
অধিকরণৈতাবত্বে চ। বস্ত্রপীতিমা উদরগোরবং দেবকাঠিক্তং
মুনিচাপলং চন্দনগদ্ধঃ অঙ্গম্পর্শঃ নান্দীঘোষঃ ফলরসঃ কন্তারূপমিত্যাদি। ফলানাং স্থহিতঃ, ফলানাং তৃপ্তঃ, ফলানামাশিতঃ

নির্দ্ধার্যেতি, 'জাত্যাদিভিঃ সমুদায়াদেকদেশস্ত করণং নির্দারণং' ইত্যুক্তং অবধেয়ং। গবাং কৃষ্ণেতি ষতো নির্দারণমিতি ষ্ঠী। সম্পন্নকীরতমেতি ন সমাসপ্রয়েজকং, ছাত্রাণাং পঞ্ম ইতি পঞ্চানাং পূরণঃ পঞ্চম ইত্যত্ত নান্তায়া অসংখ্যাদেমট্। তেন প্রণপদং পূরণপ্রত্যয়পরং গুণেন প্রতিষেশে বহুলমিতি গুণশব্দোহত্ত ভাবপ্রত্যয়াস্তপরঃ অতএব ভাবপ্রতায়াত্তেনাপি শৌক্যাদীনাং প্রতিষেধ ইতি ভাষ্যং। ন নির্দ্ধার্যপূর্ব ভাবোপপলৈরিতি চক্রস্ত্রক, পটস্ত শুক্রত্থ বলাকায়াঃ শৌক্র্যনিতি দর্শয়তা বৃত্তিকৃতাপি তদেবাবিক্ষতং। ননু তৎদৈছও বৈঃ ষ্ঠা সমস্ততে ন তৃ তৰিশেষ-লৈরিতি ভটবার্ত্তিকম্। অস্থার্থঃ। গুণবচনৈত্ত হৈঃ কেবলগুণচ্ছুঃ ষষ্ঠী সম-अराज, न जू जिदिनांव देनः। यथ। ठन्मनशकाः, शक्तांचरशा दि दकवनः छन धव বর্ত্তে, ন কদাচিদ্গুণিনি। তথাচ ভট্টঃ, ন কদাচিৎ প্রয়োগোহস্তি, চদনং গন্ধ ইত্যয়ং। চন্দনস্থৈব গন্ধো হি, স্বপ্রধানং প্রতীয়তে ইতি। ততঃ শৌক্ল্যাদি শব্দোহপি কেবলগুণবৃত্তিত্বাৎ সমস্ততে। যদাহ ভট্টঃ, ষদাগন্ধাদি-ভিস্তল্যা তেযামপি গুণস্থতা। পটশৌক্ল্যাদিবত্তেন সমাসোহপি তদেষ্যতে ইতি। তদ্বিশেষণৈক্ত গুণগুণিকৈ: সমাসো ন ভবতি। পটক্ত শুকো গুণঃ ইতি। চন্দ্রস্মৃত্তং স্পর্শঃ ঘৃতস্ত তীর ইত্যাদৌ বদাহ ভট্টঃ, কাদাচিৎক প্রমোগোহতি গোঃ ভকো ওণ ইত্যন্ত। তেনৈবমাদিষু প্রাপ্তঃ সমাসো ন অব্যেন, কটি হৃদ্ধা, লাদেশেন, কটন্ত কুর্বান্ । কারকষ্ঠী চন সমস্তি । সার্পিয়ো জ্ঞানং, রাজ্ঞাং সভঃইদমেষামাশিতং, আশ্চর্যো গ্রাং দোহোহগোপালকেন, ভবতঃ শায়িকা, ভবত আদিকা, তন্ত কঠা তদনস্ত ভোজকঃ। এমাং সন্ধর্মে ষ্ঠীসমাসেন তৃ ভবিতবাম্। স্পিঞ্জানং রাজসন্ম ইদমেতদাশিতং গোদেহেই ভবদাসিকা তৎকতা ওদনভোজকঃ

বিহন্তত ইতি। তর স্পর্ণানিসাপেকস্বাদেবাস্থাস ইতি বার্ত্তিকবারঃ, তর বিশেষ্যসাপেক্ষরে ব্রীসনাসভেত্তরাই। যথা রাজনপ্রিণো রাফ্রণাং, ওপ-श्विनिटया मुनिवित्तारणो देन जनकि जलनमुङ्गादनी भागणाखायाः। यनि छापरम्बि शुल्कीरवाल लेल्य किर छन्धश्रामामा न वहमानमाभीरा ইতি, অবি মন্ত্ৰিতাৰতে চুট আলি পালিনাম্পত্ৰাপকাল্লিদম্ল । জ্ঞাপ-ক্ত লক্ষ্যান্ত্রোন গ্রান্তল্য নোর্থতেত্যাত্ বাত্রগালিত। পঞ্চালীপিত্বলিয় ইত্যত্ত ষ্ঠীনন্দো অমন্নতঃ। আদিৰকাং বুজিৰেভণীং পু<u>ক্ৰমামাঞ্</u> व्यक्षमानितः अन्तनारत्यः कत्रनगार्डेयः अष्टाश्रागः व्यर्धातिवरः छन्। इत्रान्त्रान-ভূষত্তুং, গগনমালনিমা গডপাত তা বদ্নমৌরভং শিলালামলভা দয়ঞ্ছ-দারুণিমা, অভাদ্পি শিস্তব্যবহারতে।হন্ন সর্বীরং। ন জনে অনিরুত্তির সংখ্যারেডি শ্রীপতিঃ। অল্লার্থঃ ভূণিরট্রত্ত গে বর্ত্তগালৈঃ সংখ্যাবতি ট্রাজ স্থাবেশে ন ভবতি। পটকা পরুণ, জ্লত গাঁতং, কামপেন ভু প্রমণ্রশীত। ইতি পুংমি গুণে শীতশক উক্তঃ। অসংখ্যাবতি কিং গোবিংশতিঃ। তথা নির্দ্ধার্থ্যে গুপি-ন্যতিশয়ে ইতি। অঞাধীঃ, অতিশারে বিবক্তিত নির্দ্ধরেণীয়েণ গুণবচনেন সহ বিহিত। যদ্ধী সম্ভতে। সংস্থামতিশরেন শুরুং স্বর্ণিরং গ্রামতিশয়েন কৃষ্ণা লোক্ষণ পুক্ষাণামতিশয়েন উত্তমঃ পুকুষোভ্মঃ, বিজ ভদ্ধিভাতি-ধেয়েছতিশ্যে ন স্থাং। বস্থায়ে। খেততরং বস্তাণাং খেততমমু। জ্ঞাজতরণ ভরলোপদের্ভ বর্দ্ধমানঃ : খেতদেঃ খেততরং খেতখেতং খেতানাং খেতখেওং खनखतः सूहिजावी देखाया। विकास कामार स्वरित देखि स्टेनखु छ हेजावी। অব্যয়েনেতি অব্যয় কুডেতার্থঃ। লাদেশ সাহচর্য্যাদিত্যেকে। তথাচাব্যয়কুদিতি

যাজকাণিছিঃ সহ কারকষ্ঠী চ সমস্ত ে বিশ্বনিশ্যাজকঃ
শুরুপুজকঃ, ইহাপি ভবতি ব্রাহ্মণকর্ত্তব্যঃ, ইহ কামান্ন ভবতি
রাজ্ঞঃ শ্রোম্বস্থ ধনং সামানাধিকরণ্যেন সম্বন্ধাভাবাৎ, ব্রাহ্মণস্থোচ্চৈগৃহিমিত্যত্ত সাপেক্ষরাম্ব্যাৎ।

ক্রেমদীশবঃ সৃত্রিতবান। কটস্ত কুরেতি কর্মাণ এব সমন্ধবিবক্ষায়াৎ ষষ্ঠী। সা লক্ষ্মীরূপকুরুতে যুয়া পরেষামিতিবং। সর্ব্বপশ্চাৎপ্রভৃতিষেবাব্যয়েনেতি সূত্রয়তোনেদং মতং: সক্ষেষাং প*চাং সর্ব্ধপশ্চাৎ, স্বংকৃতে সোন্মনায়তে, কৃতে ইতি নিমিত্তভাবেহব্যায়ং। যংক্তেহগীল্যপৃত্নীম সমুদ্রমতরাম চেতি ভট্টিঃ। ইহন স্থাৎ, প্ৰতিন ভূকীং, প্ৰজানাং দিছাা, গ্ৰীষাভ নকং, গ্ৰীষাস্থা দিবা বুক্ষস্যাধঃ, গিবেরপরিষ্টাং, ছাত্রস্থ পুরস্তাং ছাত্রোপকুস্তমিত্যাদিশব্যথীভাব-স্থানব্যয়পুর্বাব্রভাবঃ। অব্যার্থিশেষ্পেতাক্ত মতমুনীয়তে। কারকষ্ঠী চ ন সমস্ততে ইতি, সর্পিষোজ্ঞানমিত্যত্ত কৃতঃ কর্তৃকর্মণোরিতি কর্মণি ষষ্ঠী। অস্তাপবাদমাহ, যাজকাদিভিঃ সহৈতি। আদিশকাং যাজক পূজক পরিচারক পরিষেধক অধ্যাপক উৎসাহক উৎপাদক উদ্বর্ত্তক, হোড়পত্যথ ভর্ত্ত, পংক্তিরপাভ্যামের গণকঃ। ভূভত্ত্ব: শিরসি নভোনদীর রেজে ইতি প্রয়োগাং ব্যক্তিচারোহপি পত্যর্থস্ত। নমু কার্ক্ষ্মীসমাসে নিষিদ্ধেহপি, যদি সমন্ধ্যম্ভা সমাসো ভবিষাতি, ততঃ কো বিশেষঃ, শিষ্টপ্রয়োগাশ্চ বছবো অন্ধিগতার্থাকরণং, ইত্রকারকপ্রয়োক্তরং, ক্রিয়াফল-ভোক্তৰং, পুলেষ্যু বিকাশবাচকশক্ষাঃ, কর্মাবিশেষ ছাত্রপদর্গত্যেতি বার্ত্তিকং, গুণোগুণবিশেষক ইতি ভাষ্য। সতাং কর্ত্তর্যকেনেত্যাদীনাং পাণিনীয়-স্ত্রণাৎ ব্রোপদী ও তার্গরিণা স্বর্চিন্তারাম্পরোগো দর্শিতঃ। অতোহত রুতিকৃতা সর্ব্রান্ত্রের প্রধর্শিতানি। তথাচোকং, লৌকিকব্যবহারেয়ু যথেষ্টং চেটভাং জনঃ। বৈদিকের চ মার্গেরু বিশেষোক্তিঃ প্রবর্তাম। ইতি পাণিনিস্ত্রাণামন্নেতবামসৌষতঃ। জনিকর্জুরিতি ক্রতে তৎপ্রয়োজক ইত্যাপি। কথা ওহি জনিকর্ত্ত্রিতি সমাসঃ। বেদাঙ্গবেদবৎ স্ত্ত্রং কর্ত্ত মিতে পাণিনিঃ। এবং কারমুপালকো জবং মৎসরিভিঃ পরৈরিভি। নত্র

৩৭। সপ্তমী শোগুদিভিঃ। (৩৭)

শোভাদিভিঃ সপ্রাস্তঃ সমস্তে। অক্ষেয়ু শোভঃ অক-শোভঃ অক্ষুত্তিঃ রণপভিতঃ কার্যানিপুণঃ কাম্পিলাসিদ্ধঃ ছায়াশুকঃ কুন্তাপকঃ চারকবদ্ধঃ। সংভাষাং বনেকিং-শুলুকা জলুক।

পুরণ গুণ স্থৃহিতার্থসদব্যয় ত্র্রাসমানা কির্পেনেতি মুনিনা ত্রেনে ব্রতীসমাসে নিষিদ্ধঃ। ন চ স্বার্থং ত্র্যগ্রহণমিতি বাচ্যং। বাক্যসমাস্থ্যোরহ স্বার্থিশেষাভাবাদিতি কটাক্ষয়াই ইহাপি ভবতীতি, তার নিষেধবৈয়র্থ্যাং। অথ সমানাধিকরণেনেতি যারিনিষিদ্ধং তং কথং নোচ্যতে ইত্যাই ইহ ক্ষাার্ম ভবতীতি, রাজ্ঞঃ শ্রৌমুস্ত ধনং ইতি সিদ্ধান্ত্রতি সামানাধিকরণ্যে সম্বনাভাবাদিতি অত্র ধনসম্বন্ধে সমানাধিকরণ্যাঃ পরস্পর্যেকার্য ইং নাজীত্যতো নিষেধবৈর্থান্। ননু রাজ্বত্যাহৈচ্চবিতি কথং ন সমাস ইত্যাই সাপেক্ষত্তাদিতি, তথাহি ব্রাহ্মণক্ষেক্তিকঃ কিং গ্রমিত্যপেক্ষতে, যথা ব্যাহ্রণক্ত ভক্ষাঃ কে দ্বাইত্যপেক্ষতে, অব মুক্তিক কৈত্ব।

(৩৭) সপ্তমী। অক্সে শোও ইতি। নমু কথমত সপ্তমী, অধিকরণ ইতি চেৎ তদেব কথং ক্রিয়ায়া অভাবাং। সত্যমস্তোবাত্র প্রস্কিং ক্রিয়ায়া সভাবাং। সত্যমস্তোবাত্র প্রস্কিং ক্রিয়ায়া সাতু সমাসান্তভূতিতি ন সূজ্যতে তামবলম্য অত্যাধিকরণমিতাদোষং। শৌওবৃত্তিকিতব্যাভূসংবীতব্যাত্রপ্রবীণমণ্যার্থাত্রর অধিপট্পগুতকুশলচপলনিপ্রসিদ্ধক্ষবস্বদ্ধ-উত্তরসাহনিক বাপ্যামশ্বাবাপ্যশ্বা নদ্যামশ্বা নদ্যাশ্বা ইতি ভাষাং। এবং শিরং শেখরং, হস্তক্টক আপাতরমণীরং অস্তে গুরু, মধ্যে গুরু-গলে চোপক ত্রচি সার্মিত্যাদ্যো ত্রিয়াং। অত্র গণে মধ্যার্থোহত্তঃ শব্দঃ পঠ্যতে সভু সভাবাদ্ধিকবণার্থপ্রধানং। তেন বনে অন্তর্মনান্ত র্থনে মধ্যে বস্তীতি সামান্ধিকরণ্যম্। প্র্বিপদার্থপ্রাধান্তে ত্র্যনী ভাবং, যথান্তর্মনাহ্ব বন্মধ্যবৃত্তী তদ্ভিরিত্রো মধ্যভাগ উচ্যতে, যৎ পুনর্ধিশব্দঃ স্ক্রিশব্দঃ স্ক্রিশব্দঃ স্ক্রিশব্দঃ স্ক্রিশব্দিকঃ স্ক্রিশব্দঃ স্ক্রিশব্দে স্ক্রিশব্দিকঃ স্ক্রিশব্দঃ স্ক্রিশ্বাধান্তে ত্র্যনী ভাবং, যথান্তর্মনহ্বন্মধ্যবৃত্তী তদ্ভিরিত্রো মধ্যভাগ উচ্যতে, যৎ পুনর্ধিশব্দঃ স্ক্রিশব্দঃ

७৮। कृष्ठायुष्टी नियद्धी (७৮).

নিয়মার্থে কৃত্যয়তা সহ সপ্তম্যকং সমস্তে। মাসদের-মূণং পূর্ববাহ্নগেরং সাম।

৩৯। তত্রাহোরাত্রাবয়বাঃ ক্রেন। (৩৯)

এতে সপ্তায়তাঃ ক্তাত্তেন সমস্তে। তত্তেতিগ্ৰহণসামথাৎ সপ্তায়া অলুক্। তত্ত কুকং ত্সাদেং, তাত্তক্তং অহোরাত্তাবয়বাঃ পূকাহক্তং মধ্যাহ্নী তং প্রারাত্তক্তং। অব্যাব
ইতি কিম্ ? অফি রুডম্।

নাস্তো অষ্টব্যঃ, যথা দৈবাধীনমিদং জগং অত্রাধ্যেপ্রাধান্তং। কাম্পিল্যসিদ্ধ ইতি কাম্পিল্যস্থান্তে এ দেশবিশেবন্চনঃ, চারকবন্ধ ইতি চারকশন্দো বন্ধকরণবৃদ্ধনঃ। • ইহু সংক্রামানিতি ন বাচ্যমিত্যাহু সংজ্ঞানামিতি বাহুল্যা-দিতি মেবঃ। বনে কিংগুলুকা ইতি সংজ্ঞানিনোধা প্রমাণ হলদন্তেভ্যোনামি হতি শেবঃ। বন কিংগুলুকা দ্যোরিতি। অনুগতি সপ্রমাণ হলদন্তেভ্যোনামি ইতি শেবঃ। এবং কূপে বিশাচিকা গবিষ্টিরো সুবিষ্টির ইভ্যাদি শৌগুদিভিঃ কিং বনে তিষ্ঠন বনে যুধ্যমানঃ।

- (৩৮) কৃত্য। অবশ্রকবণং নিয়মঃ, মাসদেয়মিতি, মাস এব দেয়মিতি বিগ্রহঃ। মাস ইত্যোপশ্রেষিকমিবিকরণম্। মাসেহতীতে বোহনন্তরো দিবসঃ স মাসং প্রত্যুপলিপ্রো ভবতি। এবং শৈশবদেয়া কল্পা, প্রভাতপ্রাব্যং বপুঃ। কৃত্যেতি কিং অশ্বিদ্যাং জাগব্যা বর্ষাস্থ নাব্যঃ শোণঃ। যতেতি কিং শর্মিণী স্নাতব্যং, শিরম ইতি কিং নিশি হার্যাং বিত্তং, হর্ত্ত্রং শক্যমিত্যর্থঃ।
- (৩৯) তত্তা। তত্ত্তেতি তচ্চকঃ সপ্তম্যস্তরগং, তত্ত্তেতি স্তুনির্দ্ধোশং
 ইত্যর্থঃ। তংপুরুষে কৃতি বহুলমিতি বা তত্ত্ত কৃত্মিতি সমাসপ্রয়োজনং
 , বানক্তি তত্ত্ত কৃত্মিতি। একপদত্তে সতি তদ্ধিতোৎপক্তিঃ। কৃষং রাত্তিকৃষ্ণং দিনস্কৃত্মিত্যাদি কর্ত্ত্করণে কৃতেতি তৃতীয়াসমাসঃ, রাত্রিপকং দিবা-

৪০। পাত্রে সমিতাদয় কেপে। (৪০)

শ্বী শব্দাঃ কেপে সমস্তত্তে। পারেসমিতঃ পিণ্ডীশ্রঃ গোহেনদী মাতরিপুরুদঃ তার্থগাঙ্কঃ তার্থকাকঃ উভুদর্মশকঃ প্রবাহেমুত্রিতং বনেরুদিতং ভস্মনিত্তম্।

পকং রাত্রিশুদ্ধং দিনশুদ্দমিত্যাদি শৌগুদিরাং স্থাদেব। ক্রেনেডি কিং পূর্দ্মাস্কে কৃতবান্ প্রদোষে পীতবান্।

(৪০) পাত্তে। কেপো নিন্দা, কেপে গম্যমানে পাতেসমিতাদর: সমুদায়া নিপাত্যন্ত ইত্যর্থ:। পাত্র এব সমিতা: সঙ্গতা ন পুন: কচিৎ কার্য্যে পাত্রে সমিতাঃ, অত্র ষ্থাপাঠমলুক্ বছ্বচনান্ততা চ। তথাচ বৃতস্তুৎ পাত্রে সমিতৈরিতি ভট্টিঃ। কিঞ্চ স পাত্রেসমিতো হৃত্র ভোজনাখিলিতো ন য ইতি ত্রিকাণ্ডশেষে একবচনাস্ততাপি, পাত্রমবধারণে, সমিতবছলাভ্যাং ন চাজেন সমাস ইতি বর্দ্ধমানস্ত্রং, তেন পাত্রে বছলান্ড, পিণ্ডীশুরঃ ইতি পিণ্ড্যামেব শুরঃ, অক্সকার্য্যাক্ষম উচ্যতে, তথা ধ্রহেনর্দি পিণ্ডী শুরৌ নিরীহণায়মিতি সূত্রে, য আবশ্রককার্য্যেহপি বহি ন'পচ্ছতি ভোজন-মেবাভ্যবহরতি স এবমুচ্যতে ইতি বর্দ্ধমানঃ। এবং গেংনদী গেছেশুরঃ গেহেকেড়ী, গেহেনজী, গেহে বিজিতী বিজিত মনেনেতি ইষ্টাদিকতপূর্মা-দেরিন। বেহেব্যাড়:, গেহেপণ্ডিড:, গেহে প্রগল্ভ: তথা গোষ্ঠে শূর ইত্যাদি গেহে গোটো শুর ক্ষেড়ি নর্দি বিজিতি ব্যাল পটু পণ্ডিত প্রগল্ভিরিতি তৎ স্ত্রমু। মাতরি পুরুষ ইতি প্রবিদ্ধসেবীভূচচতে। যথা মাতরি পুরুষত্বং নিষিদ্ধং ভবদম্ভত নিষিদ্ধাচরণেন কেপো গম্যতে তীর্থগাজ্ঞ ইতি যস্তীর্থে ইব কর্ত্তব্যে শাজ্যে ইব চিরং ন তিষ্ঠতি স এবম্চ্যতে, কার্য্যং প্রভানবন্থিত বং ক্ষেপঃ, অত্র স্বার্থপরিত্যাগেন তীর্থাদিশব্দানাং ব্যাক্তমাদিশব্দানাক পৌৰে-হর্ষে বৃত্তিঃ, অতঃ কারকার্থেনেতি ন বক্তব্যম্। উড়ুম্বরমণক ইতি উড়ু-মরমধ্যে মনকা একস্থা এব নাত্তং কিঞ্চিৎ পশুন্তি তরা বং পুরুষং আনুষ্ঠ-**८क्ष्मा**खदः, म উড्रुश्वत्रमभकाषिभदेषक्रकाट्य। छ<u>ङा</u>ख्यन **উ**ङ्कः, उदा रक्षमानञ्जान अङ्खदः कृषिमभकाख्यास्त्रभाग्नाम्। अवहे कृत्नी

85। कूथान दशीनिछा में। जनेरे ज्याती। (85)

কৃশবং প্রাণয়শ্চ নিত্যং সমস্ততে। ভূরণে অলং শব্দের।
নিত্যসমাসানাং স্বপদবিপ্রহোনান্তি। পদান্তরেণার্থপ্রদর্শনমু।
কুৎসিতোনৃপঃ কুনৃপঃ কোফং প্রণতঃ প্রণায়কঃ প্রকৃত্য

কচ্ছপমগু, কাভ্যাণ, নগরং কাকা দিভিরিতি উদাহরণানি, ঔড়ু মরকুমি: ঔড়ু মর-মশকঃ অবটকচ্ছপঃ কৃপমও কঃ নগরকাকঃ নগরবায়সঃ নগরখা এভিঃ সর্বৈ उज्ञन्त्रान উচ্যতে। অত আখনিক ইতি ক্রমদীশবুস্ত উদাহরণমৃ। অস্তার্থঃ আধন্ততে আধনিক: থ্যাত: জড়কে করকাশ্চেতি ইক:, তত্ত্ৰক ইব, অনেনাপ্যলদ্খোচ্যতে, বস্তু ইকবকপ্রত্যয়াত্তঃ আর্থনিক বকশব্দঃ স আর্থাত-পর্যায়:, তথা গর্ভস্থিত: গর্ভতৃপ্ত:, ষ: পুনরলীকাভিধানাদনোচিত্যমাচর্তি স এবম্চাতে। তথাচ গর্ভ: ইছিড: ভৃঠিপ্রনৌচিত্য ইডি তং সূত্রং, তথা কর্ণে টিরী টিরী চুরুচুরাভ্যামিতি, টিরী টিরীতাস্করণম্। চুরু চুরেতি বাক্যামুকরণং, তৎ করোতীতি নিজন্তাৎ ডাবস্তো নিপাত:। চাপলেনামুচিতে চ নেষ্যতে ইতি; কিঞ্চ পাত্তে সমিতাদীনাং, ন চাচ্ছেন সমাসে। বাছল্যাৎ, যথা পরমঃ পাত্রে সমিতঃ পাত্রে সমিতস্থাপত্যং ইত্যাদি বাক্যমেব বছব্রীহর্ভবত্যেব ইতি ক্রমদীপর:, বহুপাত্রেসমিত ইতি। কৃতি বহুলমিত্যলুক্। ক্তেন আক্ষেপ ইতি ন বক্তব্যং ইহ ক্তগ্ৰহণে প্ৰাদি-কারকপূর্ম্যাপি গ্রহণং, ষথা অবতপ্তেন কুলম্বিডং, ন কুলম্বিড্রাকেন সমাস ইহ চাপল্যং গম্যতে, সপ্রপঞ্মিদং ব্যাখ্যাতৃৰ।

(৪১) কু। নমু পরস্পরসম্বন্ধার্থ: পদসমূহো বাক্যং ওত্তৈর সমাসশ্চেত্র জেন সহ বিকল্পাপজিঃ, অথ চেলান্তি বাক্যং পরস্পরসম্বন্ধার্থতাপি ন জ্ঞায়তে ইত্যাহ নিত্যেতি, কুংসিতো নূপ ইতি কু শক্ষোহয়মব্যয়ঃ প্রাদি সাহচর্গ্যাং। কোফমিতি ঈষতৃষ্ণং কোফমিতি কাপথ্যক্ষয়োরীষদর্থে চেতি কাদেশঃ। তেম কুং পালেশ্বদর্থয়োঃ সম্ভতে ইতি ভাবং। কুদেশ ইতি বিপুরত্বং চেতি শ্রীপতিঃ। প্রশৃত্ত ইত্যাদৌ ক্রিলাপ্রক্ষঃ। তুকু নুমিতি চুর্নিশাল

विक्रिका इक् लः स्वासूती विक्रिकः वाणित्रनः वालक् कः क्यांद्रा वलः क्यांद्रा वलः क्यांद्रा वलः क्यांद्रा वलः क्यांद्रा वलः क्यांद्रा व्यानसार्गकामार्थं विक्रांद्रा व्याप्त व

কচ্চ্ রো:। স্থকতমিতি স্ঠ্ কৃত: স্কৃত: এবং স্বাজা অভিরাজা স্পন্থ। অতিপদ্ধা: ইতি পুরায়াং স্বতী, অভিষ্টু তমিতি সমন্তাদর্থে অভি। আপিস্ক देखि चाडीवन्दर्ग। चाडीवन्यां जित्रादिशातिज्यिक्ष मानः थार । चाननविष्णु-माहतं जि. मा अवसाहारत ह आशिककरकार्कनिवक्रवारेनविष, उथा अश्मारम्। তৃষ্পুরুষো ভূব্বনো বিপথং জুম্পারং বিনৎক্তা বিবর্ণ: ইতি কুংসায়াং। বিশি-গিতি রুঢ়ো, অনিপতিঃ অধীশ্বর ইত্যাধিক্যে। উপনাতা উপবন্ধ: উপপতি-রিত্যসাক্ষাদ্যাবে, উৎপথং বিহীনং বিপ্রিয়ং নিরাকুলং নিস্কুত্রকমিতি নঞ্জে অভিনবং প্রতিনবং ব্যাকুলং সমাকুলং বিপাতু বিলীনং সমুংস্কৃং পরিকৃশং পরিপাও পরিধুসরং পর্য্যাকুলমিত্যতিশরে, এবমম্মদুপি শিষ্টপ্রয়োগতো অলংকুমারিরিতি গোস্বিয়োরস্থার্থ ইতি হ্রস:। গতালার্থে প্রথমরেতি, প্রাচার্য্য ইতাত্রোভরার্থ ইতি বাশবেন স্চাতে। তথা বিক্ষঃ পক্ষো বিপক্ষঃ অভ্যৰ্থপক্ষঃ প্ৰতিপক্ষঃ প্ৰতিবন্ধং বচঃ প্ৰতিবচঃ উপ-শিষ্টঃ পতিঃ উপপতিঃ উপস্তান উপনারকঃ অবুকৃলে। নায়কঃ অবুনায়কঃ, প্রতিকৃলো নারক: প্রতিনারক: ইত্যাদর: এবমতিক্রান্তো নদী মতিনদি: ক্রি कमलम्: चिष्ठिक्ता, अत् वह्वीहिटन्डः कः छार । चित्राकः चित्रवः অভিগব: ইত্যত্র অন্ন সাধ। অভিগর্ম: অভিনার ইভি গর্মস অনু আরারা জানিশ্চ তাং। অধিরচুং জ্ঞাং অধিজ্ঞাং গৃহঃ উল্পাতো বেলা উত্তেপঃ, অভিৰো বরাহঃ প্রভিনতোহকং প্রভাক: পটঃ কর্পড়ো লোমান্তপুলোম: चित्रता म्राविष्यः, এवार क्वांचाम्रार्थ तृष्टिः चार्चाविकी। स्रताम्ब कासामार्थ शक्तमा॥ निकासः त्कामानाः निकामानिः निकातानिः। स्व्विधिवस्याः श्वाहनो त्वस्य । इकः श्वितिमान्यक्ति।

৪২। কৃত্য তদর্থোপপদম্। (৪২)

কৃদন্তেন সহ তল্লিমিভোপপদং সমস্ততে। ইদং সমাস-

ইত্যাদি। অবকুষ্টমিতি সশকীকৃতমিতার্থঃ অবকোকিলং ক্রারতে ইতি ভাবে. পরিণদ্ধং বীরুধা পরিবীরুং সৈশকং. সল্লদ্ধো বর্ম্মণা সংবর্মা সক্ষতমশনেন সমশনং। পরিণতাঃ সন্থৎসরেণ পরিসন্থৎসর। অধিপতোহকেণ অধ্যক্ষো ঘটঃ প্রতীতোহকেণ প্রত্যক্ষঃ পদার্থঃ, সুসম্বতো বেলয়া হুবেলঃ শৈলঃ অনুগুতুমর্থেন অন্বর্থঃ সঙ্গতমক্ষেণ সমক্ষঃ, বিমৃক্ত-मर्पन वार्थः वह देखानि. এयाः क्षृष्ठीनार्प द्वावः श्वाखिकौ। पर्यानम ইত্যাদি। উত্যক্ত: সংগ্রামায় উৎসংগ্রাম: পরিগ্রানো বচনায় পরিবচন: অলং কুমার্ট্য অলং কুমারি: অলং সুখঃ অলং পর ইত্যত্র নিত্যত্বাৎ, এষাং সমাসালো হুস্বং ন বাধতে বছনদীকবদিতি শ্রীপতিঃ। এমর্থেষ্ তেষাং স্বাভাবিকী বৃত্তিঃ পরত্রাপ্যেবম্। নিরাদয় ইতি। এবং নির্কারানসিঃ উৎক্রাস্তা কুলাৎ উৎ দুলা উদ্পাতো বেলায়া উবেলঃ সমুদ্র: উচ্ছাত্তং বচঃ উৎসূত্রো ন্যারঃ উচ্চ শ্রনঃ করভঃ অপগতমর্থাদপার্থং বচঃ অপরতং শাখায়া: অপশাখং কর্ম, বিচ্যুতো মুথাৎ বিমুখ:। স্থাকিধিবিষয়া ইতি স্থাকি-विर्क्तियरत्रा द्वार एक शामुत्रः शारमी जर्म न्यारक, मर्द्वाश्तर व बन श्रमक **এব। ইবেদ নিং** যুং বিভক্তা লোপশ্চেতি বক্তব্যং ইবেন সুবন্তং সম্প্রতে নিভ্যং বিভক্তিক ন লুপ্যতে। অগ্নিরিব বার্রিব পরমোটেক্ররিতি ব দব্যরম্। কুঙিব অ্গণিব অত্ত হিত্বাভাব:। অগ্নিরিব পাশ: অগ্নিরিব সমুচ: অগ্নিরিব রাজ:। অধিরিব সধ: ইত্যৎ সমাদান্তরং সমাদান্তক স্থাৎ কেচিন্তাবারামিকং न मकुर्छ।

(৪২) কৃতা। হুতেতি কৃদত্তেন ধাতুনেতার্থঃ, তদর্থোপপদানিতি ভাইকো-হত্ত কং পরামর্শকঃ স এবার্ণঃ প্রয়োজনমভেতি, তম্ভ ইদং ইভি ভদর্থং উপ- वहनः श्रीक् स्कृरणएकः। कृषः करताजीजि कृषकातः श्रीमनैः जगर्दाज क्रियः १ कहेः कृर्यन्।

८७। अधिवीवादत्रने। (६७)

অব্যয়কৃতা যতুপপদং সমস্ততে। তদমৈব। স্বাতৃক্ষারশ্। নাজেন নিষেধে অলং কৃত্য।

পদ্মিতি সমীপোচ্চারিতপদ্মিত্যর্থ: ততঃ কর্ম্বারয়ঃ, এতদেব বিরুপোডি তল্লিমিভোপপদমিতি। নমু মাৰকুত্বং বপতা মাৰকুত্ববাপেণ ইত্যাদে। व्याणिनिकाञ्चम्बिककीनामिषि कथः नषः छार १ सनाड नमवावादा (छि নিষেপ্রাপ্তে:, কিঞ্চ প্রবাণিশীতাত্ত প্রাভিপদিকান্তত্বাভাবাৎ কবং নকারত ণতং স্থাৎ ইত্যত স্থাহ ইদং সমাসবচনং প্রাঞ্ অবুৎপত্তরিতি। সুৰস্তম্পত রেণ সমাসে সতি পদতাভালাভি বত্ত নিবেংঃ, পরত ত্পঃ প্রাক্ সমাসে প্রাতিপদিকাস্তত্মস্থ্যে। তথাহি শক্ষোহি সার্থমডিধার এব্যমভিবতৈ তভোলিত্বং ততঃ কর্মাদীনি, তদমুসম্বতাং সংখ্যাং ততঃ স্বস্তোহরাবিতি অভিধানক্রমেণ সুবপেক্ষয়া লিক্বাব্রিডক তীপ্রত্যবন্তাক্তরকতা অনিহিতে তু সুণি কৃতে সমামে প্রাতিপদিকাম্বত্মক্যেবেতি কুতোৰত্বাভাৰ ইতি, ইন্মধি वाष्ट्रिकः वहनद्यनकपुर । एउन हर्षकात्रीष्ठात ऋत्रभएको नकप्निवस्ता न लाला ভवछाद, উভরপদে ह एव्रश्यको भगाम धनकोछि इसकात देखि कर्षावाधिवान वाषात्रः, बामनैतिषि बामर नत्रकीषि किन्, देह কর্মবিহিভারাঃ বট্যাঃ মমাস ইভ্যেকে। তর্হি সতি বাক্যে রাজঃ প্রুষ ইতি ব্যিক্ষেৎপি সিধ্যতীতিচেল, নিডাতাম্ভ তল প্রমুক্তাতে কৃষ্ণসূপ্র তেষাসহমাশরঃ, শক্ষোহ দিবিশঃ, নিডাঃ কার্যান্ড, ডত্র নিডাপক্ষে অঞ্চাৰ निक्चावाकार न श्रृकाटक कार्याटक मरमात्रदेशवानाविकार श्रवाह-निकारण्यि, पहुँ कर प्रकृशिक्षा, निकारक क्यकरक वा द्वामाणिनविष्यदेखे প্রাধিনামির নাটেরাং ব্যবস্থা নিভাভোচ্যতে ইছি। 🔑

(१९) चरेन्या। भूर्यान नयारम निर्देश भूनविष्टनः विदेशालेकः। चरेन्यान्यस्य कर्णाननार मञ्चरकः नार्छनः क विदेशानन

88। তৃতীয়াদীনি বা ভা চ। (৪৪)

উপদংশস্তীয়ায়া ইত্যাদীস্থাপপদানি আমা জ্বাচ্বা সমস্তত্তে। মূলকোপদংশং মূলকোপদংশং বা, উটিচঃ কৃত্য উচৈঃ কৃত্যা বা কথয়তি, তৃতীয়াদীনীতি কিমৃ ? খলু কৃত্যা।

৪৫। চিবুডাজুর্য্যাদীনি চ। (৪৫)

অতদর্থেপপদর্থনিদং নিত্যং ক্তেতি চামুবর্ত্তে।
চিনুডাচ প্রত্যান্তে উর্যাদীনি চ ক্লান্তেন নিত্যং সমস্তান্তে।
চিনুঙগুরীকত্য শুরীভূর । ডাচ্ পটপটা কত্য । উর্যাদীনি চ উরী-কৃত্য উররী কৃত্য উরী উররী উরবী চাঙ্গীকারে 'এবিস্তারে চ।
তলু গুর্থাপীডার্থে কুল ফুলী বিকারে । সসমস্থা হিংসার্থে ।

মিতি, স্বাগ্ৰচনেচেতি ধম্প, অলংক্ত্তিভি জ্বালং ধৰোঃ প্ৰতিষেধরো-বিতি জ্বাঃ

⁽৪৪) তৃতী। ক্তেতি তৃতীয়ৈক্বচনাস্তঃ, উপদংশস্তৃতীয়ারা ইত্যাদি অবস্থ আমুক্লো ইত্যহস্ত্রোপাভান্যপ্রদানীত্যর্থঃ। উচ্চৈঃ কৃত্যেতি, অবধাযুক্তাব্যান ইতি জ্বা।

⁽৪৫) চ্নীড়া। নিতাং ক্রেডি চানুবর্ত্ত ইতি অবিকারভেটবির্থাপথ, পৃথপ লক্ষণকরণাথা, অব চিড়াচো: প্রভারতাত্তপথে পৃথেতে ইত্যাই চিড়াচপ্রতারাবিতি, চ্নীউ ভক্তীকুতোতি চিঞ্জুতেতাদিনা চিট্ট ঈচ্চ পটপটাকুতোতি প্রাথক্তমেব, সর্বত্তি এককর্ত্বরোরিতি জ্বা। অব উর্যাধীন্যান্যাহিতাভাই, উরী উরবী উরবীচ, অসীকারে বিভারে চ ইতি এবইবী ক্রাম্বরীকৃতং উরবীকৃতক, তল্ তথা শীড়ার্থ ইতি শীর্ষোক্ষাক্ষ ওল্বথেকি এই ক্রাম্বরা বিভারে ইতি ক্রাম্বরা ভক্তবাক্ষতা ক্রিয়ামিতাভাই ক্লিক্সারে বিভারে হিছারে ইতি ক্রেম্বরা ক্রাম্বরা বিভারে ইতি ক্রেম্বরা ক্রাম্বরা বিভারে হিছারে ক্রেম্বরার বিভারে ইতি ক্রিনেট্নর ক্রেম্বরা ক্রিয়ারে ক্রেম্বরার ক্রিয়ারে ক্রিয়ারে ক্রেম্বরার ক্রিয়ারে ক্রিয়ার ক্রেয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার

শোষট বেষট বৰট কারা সধাপ্রাপ্তর আবিষ্কার্থি আবিষ্কার্থি।
সজ্ব সংগ্রেমি কারিকাশকণ্ড ॥ কারিকাক্তা ইত্যাদি ।
অকুকরপকানিতি পরম্ ॥ খাট কুতা থটং কুতা। অনিতিপরমিতি কিন্? খাড়িতি কুতা নির্ম্ভীবাং।

৪৬। সদসতী আদরানাদরয়ে। (৪৬) সংক্তা গুরুং, খদং কৃত্যখলান্ গতঃ।

সকলা ভংসকলা অলম্বা কেবালী সেবালী (ছ) পর্য্যালী সমসমা মন্মসা এতে দশ হিংসায়াম্। অপুরে তু সকলাদয়ণ্ডভার: পরিভবে। অলম্যাদয়োহপি চত্বার: প্রাকাশ্তে, অস্তো চ হো চুর্বে. ইতি ত্রিলোচন:, অলৈব () পর্দালী-স্থানে (বৰ্দা) ৰাদলীতি ক্ৰমদীখনঃ পঠতি। তথা বুলীকাে ি তালী অভালী এতো বর্বে, বেডালী,আতালী এতো বৈকল্যে পর্কেতে। ভৌষট্ বেষট্ ব্যট্ খাহা খবা প্রাতৃস্ আবিস্ এৎ প্রার্থ ইতি। অন্তে তৃ প্রাঞ্চ: পঞ্চালানে, অপরে সামাজেন কেবতা সম্প্রদানে বিশেবে চ, ব্রজিক্রার স্বাহা অগ্নরে কথা পিড়ক্তা ইজাহঃ, বন্যপি চুড়াচ্ সাহচব্যাৎ ভৃত্ত্যাবেশাং সমাসভবাপি প্রজ্ঞো **খ্যাতিযোগে** প্রক্রাতে, অভিগানাৎ প্রকার প্রাতৃণ্ অত গণে পঠিতব্য: बाइबादिन् अक्टबादिश्लार्थः, श्रांकृत् कावित् खाकाटक नाकावाद्रिश्रद्ध **চ পঠाएक कृत्वा मर विकलार्थः, लाक्ष्मण लाक्ष्मण जाविक्रण, जाविक्र**श ষ্পত্ৰ প্ৰাৰ্ভ ৰ আৰিভু বেতি নিতাং। সজ্য সহাৰ্থে ইতি সজ্য কুত্য বৃতিং ৰমেৎ ইতি ভট্টিঃ। কারিকাশকশেচতি ভিরব্যোগাল সহার্থাঃ। ক্রিকারিকা मर्दाङ्ग रप भेरेजात् । अनुक्रतभागिकः भत्रम् । देखि शस्त्रा रत्यानिकः भन्न निकिश्तक्रिकि भवनोक्ष्मयगुकाब्रुक्तप्त कृता गर निकार गमक्र कि विदेशीयोक ছিতি, মানোহ হপ ইজ্ঞাদিনা সন্থাভাব: । প্রিবুল্লাচমাংরিজীতি কীর্মান্ত ं्रा(३७) जनमञ्जे । चारतानार अत्यादा अवनत्यात र्वाका नम नक्ष्या क्रा जार स्थापान्। कारक शिविषक्षकः अन्यकः शविष्ठाकोशासीवाम् वर्षाकारम् रमक्तिहरूनमः कार्यास्त्रमः । व कृष्णसः । अवस्थानक्षणार संस्थानः । अवस्थानकं अर्थाः

841 अखडी अस्टर्ने (84)

শন্তর্হত্য ছিতশ্চীরঃ। ন গ্রহণে। শন্তর্হরা বর্তিকাং গড়ঃ শ্রেনঃ। গৃহীত্বেতার্থঃ।

८৮। कर्णमनर्भी अकारकी। (८৮)

কণেহত্য মনোহত্য পরঃ পিবতি ভৃষ্ণান্তং যাবদিত্যর্থ:।

৪৯। অত্তৎ পুরৌইব্যয়েী। (৪৯)

অন্তং গত্য পুরোভ্য়।
ত । অদেহিরপদেশে । (৫০)

খনঃ কৃত্য স্থিতঃ, উপদেশে তু ঋদঃ কৃত্বা গচ্ছ।

আছেল সং কৃত্য শুরুমিতি ভবের তৃ ভৃত্যমসংকৃত্যেতি বোগ্যতরা মৃত্ত্বতি লত্য: স্পান্তার্থং প্রসিদ্ধার্থক আদ্বানাদ্রশ্নেত্নিতি কিং সংকৃত্য অসংকৃত্য অত্তেমো শোভনাশোভনামো বিদ্যমানাবিদ্যমানাধোঁ বা।

- (৪৭) অস্ত । অগ্রহণাদন্তশিশ্বর্থেছতঃ কৃতা সহ সমস্থতে, অন্তর্জ্বতাতি মধ্যে হত্তেতার্থঃ। প্রত্যুদাহরতি ন প্রহণে ইতি, অন্ত অন্তর্জন্তিপ্র হণার্থঃ।
- (৪৮) কণে । কণেশকা: সপ্তমান্তরাতির পকোনিপাতোহ ভিলাবার্থ: তৎ সাহচত্যাৎ মনঃ শকোণ্যভিলাবার্থ:। এতে তৃঞ্চাবিগমার্থে সমস্তেতে, কণেহড়েতি বাৰ্দ্মাভিলাবো ন মিবর্ত্ততে তাবৎ পিবতীত্যর্থ:। প্রভাগ ইতি কিয় ? কণেহছা মনোহছা অত্র কণশকা: প্রস্কৃতভূলাবয়বেহ কিন্তুণে বর্ততে সমস্তেত্রি।
- (६৯) चयम्। चमानारकार्यो क्या तर जनस्य जनस्य नाम जानगः प्रकारकार्यः। जनमान्द्रः स्टब्स्यम् स्वत्रका निवर्तिन्तः, चनावानिकित्विनः । चनाः क्या विद्येर क्रामणार्थः स्वत्रकार्यः स्वत्रकार्यः स्वत्रकार्यः ।
- (e) पानः। व्यक्तनग्राक्षांचारः प्रकः कृषाः गर्मान्नरम् व्यक्षकरणः।

৫১। তির 🤻

ভিনোস্য হিতদেব:। অন্তর্জাবিতি কিন্ ! তিরোস্থা হিতং কাওম্।

৫২। कुछ व। जिन्नक जिन्नक न। (৫২) ৫৩। माकानानी मि । (৫৩)

কৃঞা বেভ্যেব, সাক্ষাৎকৃত্য সাক্ষাৎকৃত্য বা। সাক্ষাৎ
মিথ্যা চিন্তা ভটা লো(র)চনা অমা আত্মা নমস্ লবণং উষাং
জীতং উদকং আদ্রং। লবণাদেশ্মান্তত্বনিপাতঃ। অসে)মে)
বশে বিকল্প(স)নে বিহসনে। এবাং সপ্তমান্তনিপাতঃ। উপাজে

উপদেশেছি পরার্থ: সম্ভবতি তদম্মিন্ স্থপতালোচ ইতি তাৎপর্যাৎ, আদঃ কডেভি এতৎকৃত্বেতার্থ:।

- (es) ভিরো। ব্যবধানাথে ভিরোহব্যরং সমস্ততে কৃতা সহ। ভিরো-ভূরেতি ব্যবহিতে। ভূত্বেভ্যর্থ:।
- (৫২) কুঞা। ডির: কুঞা কুদক্তেন বা সমস্ততে। ডির্ছ্ডোডি ডিরস-চাসমাসেহণি ইডি বত্তম্।
- (००) जालागिति । हुएएँ ध्वाधितार जालागिति के को क्रमएक जर हुएएँ वा जवल्य । जजालार जालार क्रमा जालार के छ।
 जालार क्रमाखितरकरर थार द्वाचीर खित्रर खित्र देखि चक्कि । चेन खु
 जालाइ क्रमाखितरकर थार द्वाचीर खित्रर खित्र देखि चक्कि । चेन खु
 जालाइ क्रमाखितरकर क्रमाखित खुक्कि वाजर्थर प्रवाद । जालाक्रिन क्रमाखित जालागित जालागित क्रमाखित क्रम

অন্বাজে এতো বলাধানাথোঁ। উরিদি ধনদি মধ্যে পদে নিব-চনে চানতিল্লেষে। উরিদি কৃত্য মন্ত্রং শেতে উরিদি কৃতা বা, নিবচনে কৃত্য নিবচনে কৃতা বা, তৃষ্ণীং কৃত্বেত্যর্থঃ। অনতিল্লেষ ইতি কিমৃ ? উরিদি কৃতা হস্তং শেতে।

৫৪। নিত্য হত্তে পাণে বিবাহে। (৫৪) ক্রেডেরে, হত্তেক্তা, পাণেক্তা কলাম্।

নিষ্ঠাক্তর নঞ্ সমাসে সভ্যাকারান্তোনিপাতঃ, তদা অর্থান্তরানভিধানাৎ প্র-कुछार्वद्विदेख्य नमारख। उवा शाक्या शाक्यक्र वोक्या वोक्रक्रा वोक्रक्रा वोक्रक्रा वोक्रक्रा তথাহি সম্ভার্যসাম্বর প্রাদিসমাসে প্রাক্ষর্য ইতি নিপাত:। প্রাক্ষ-পূর্বাক্রতে: कः প্রাক্তরুহা, বীজেনার্য ইতি সমাসে অর্যাশকভাকারলোপো-निপाতनार। वीक्करहिं পूर्वार कः, श्राभार्यभामध्यामध्यामध्या সংস্থা প্রয়োজনসম্বরণয়ো:। অর্থশব্দ: প্রয়োজননিবুর্ব্যো:, অত্তৈবাঞ্ সংখ্যান পঠछि । মনসিতি মত্যর্থে অনন্তরং প্রাহ্ম আবিস্ শব্দোপঠ্যেতে। লবৰ্ণমিত্যাদি লবণং কুচাৰ্থে, লবণং কুতা লবণং কুদ্বা। উষ্ণমভিনবে উষ্ণং कुछा छेक्टर कुछा। भीजमनाम्दत्र, भीखर कुछा भीखर कुछा, छेम्बर क्रिट्रन खर ह, छे हकर कुछा छे हकर कुछा, आखर भाका छिनवरमाः आखर कुछा चार्क र कुना, च्याविज्ञानि च्यावेटिज्जा वरमञ्जाजस्ता वरम कुना नमग्रीवः ইতি ভট্টি:। বিকৃন্ধনে প্রকৃন্ধনে চ,বৈরূপ্যে বিহুসনে চ উৎসাহে সামর্থে চ, তেন্ রুত্তাবেতো নস্তঃ, প্রপত্নে ছহিংসায়ানিতাপি দৃশ্যতে, উপাজে ইজ্যাদি ট্লাজে কৃত্য বলমর্পনিত্বেতার্থ:। উন্নসীত্যাদি। অভিশ্লেব:. मः (यात्रक्षकृत्वान्यम् छेत्रकान्यः कृष्णं कृरस्यन वा সমস্তম্ভে, উत्रति कृरस्य षण्डानगरमाणार्थः, मराग कुछा नरम कुछा करणे मुध्युष्य अविक्रुनरको निना-তাবিতি অনুসঃ, নিবচন ইতি অর্থাভাবে অব্যায়ীভারঃ নিবচনে; কুতা, বচনং নিয়মেতার্থ, উর্বিষ ক্ষেণ্ হল্পং শেতে ইতাত হল্পীদ্বিশ্বন। পূদে করা **चित्रक दलेवण हो।** से १९५५ है। जा प्रतिस्था हे हुए है। इस कर स्थान

(१८) निज्ञम् । मश्रमस्याद्वा (ददादादर्भ कृष्ण कृपरक्षमः सर्विकार

००। शास्तर रासे। (००)

(রক্ষা) বন্ধার্থাকুক্লো। প্রাধ্বং কৃত্য কুট্ম্বং স্থিতঃ। বন্ধ ইতি কিম্ ? প্রাধ্বং কৃত্যা শটকং গতঃ।

৫৬। জীবিকোপনিষদাবৈপিমোঁ। (৫৬)
জীবিকাক্ত্য, উপনিষৎকৃত্য কণয়তি সদৃশী কুত্তত্ত্বর্থই।
৫৭। অচ্ছগত্যুর্থবিদৈঃ। (৫৭)

সমস্ত্রো তঃ, বিবাহ ইতি স্বীকারোপলকণং তেম তাং হচ্ছে কৃত্য মাখসীরিতি ভট্টিঃ। নিপাতনাদলুকু সর্পত্র সপ্তয্যাঃ। বিবাহ ইতি কিয় ? হতে কৃত্য পরস্ত কার্যাপণং দদাতি।

- (৫৫) প্রাধ্বয়। নমু বন্ধাক্ল্যার্থকং প্রাধ্বনিত্যভিগানাৎ বন্ধ ই ভি
 বিশেষণং নোপপদ্যতে ইতি সামর্থাতাদর্থ্যমবসীয়তে ইত্যাহ বন্ধার্থান্দ্রন্ত্য ইতি, বন্ধ ইতি নিমিন্তসপ্রী বন্ধোহর্থে হেতুর্বন্ত (স) তত্তথা বন্ধেনামুক্ল্যং কৃত্বেত্যার্থং, দ্বতঃ পুক্ষান্তরন্ত্বিশং পাণে কৃত্য কলাং মৃগরক্ষম। তং
 বাভারয়া পরে প্রঃ প্রাধ্বং কৃত্য কৃত্যবিতাং মুর্রিভি ব্যোসঃ। প্রাধ্বং কৃত্যা
 লকটং পতঃ প্রগতো গত ইতি, প্রগতোহধ্বানং প্রাধ্বং প্রাদেরক্ষন ইতি ইঃ
 অধ্বেগমনে সমর্থমধ্যাভিম্বং বা লকটং কৃত্যা গত, ইত্যর্থঃ। নমু লাক্ষ্যিক্তা
 ক্ষেন্তন লভবিষ্যতি কিং বন্ধগ্রহণেন নৈতদন্তি লাক্ষ্যিকেহাপিপ্রাধ্বং প্রাদেরক্ষ্য ভালিতি জ্ঞাপনার্থং তেন যদা বন্ধন্তম প্রকটনিত্যপি
 স্যাধ্বনি সমর্থ্যমানঃ সমস্পীয়ঃ ভালিতি জ্ঞাপনার্থং তেন যদা বন্ধন্তম প্রকটনিত্যপি
 সিধাতীতি।
- (৫৬) জীবিকোপ। উপনীয়তেহনরেত্যপরা সোপসর্গাদান্তাদিতি ভাপ ওর্জ ভার উপরাং তত্ত ক্রিয়াকারকলম্বন্ধঃ ওত্মিন্ বিষয়ে মন্যে বা এতেও কঠা কুটভেন সহ সমস্ভেতে। স্বভাসি জীবিকা জীবনোপান্ধ উপনিম্বন্ধ অহন্তং ওবাপ্যনাল্যাং স্থানে ভার্মপরিজ্ঞান্ধাং সাদৃভ মেবার্থঃ পর্যাবভানিত্যাভ্ সদৃশী কুত্তেওার্থ ইতি। উপন্ত ইতি কিন্ স্ জীবিকাংক হা তীর্থং স্বতঃ।

অচ্ছেত্যগ্যং আভীক্ষাবৃত্তিং গত্যর্থৰন্তিং কৃদক্তিনিত্যং সমস্ততে। অচ্ছগত্য অচ্ছোদ্য।

५৮। विट्नियंगरमकार्थमें कर्मधात्रदशी वक्तम्। (५৮)

বিশেষণবাচি স্বস্তং বিশেষ্যেণৈকাধিকরণেন সৃহ সম-স্থাতে। সমাসশ্চ কর্মধারয়সংক্ষোভবতি। নীলঞ্চ তৎ উৎপল-

- (৫৭) আছে। অচেতেতি পৃথপ্রথবিষক্ষকনং পদম্ব্যস্থাদিত্যাহ অচ্ছে-ত্ব্যস্মিতি অনব্যস্ত ন স্থাং। যথা উদক্ষছেং পথা স্থাতি, অচ্ছোদ্য ইতি বছ-ব্যক্তান্থাচি বজাদিত্বাং সাচো যথ ইকু পুনংপুনকুকে ত্ত্ত্থা, ইহ্ আছেশকোহতিশকাৰ্থ ইতি কাশিকা, অভিরাভিম্থ্য ইতি স্থাসং।
- (१४) विस्थव १। नम् यः मामाञ्चाकात्व প्रवस्तक श्रकात्व । প্রকারাস্তরেভায়ে ব্যবছিদ্য একম্মিলর্থে ব্যবস্থাপরতি তথ্যবচ্ছেদকং বিশেষণং म भूमत्रर्थः कथर एउन ममामः मःशब्ह् जामिजार, वित्मवनवाठीिक वित्मत्या-(बिंड हेर विस्मववाहिना च्यरखन हेडाबरवतः। हेमक शाहिरमयाम्बर, वट्णा. विटमबननामानाधिकत्रगार विटमवाटेळव, न जु विटमबनाखतळ अना-काखिक उदार । उब् छिब अतुविनियि छ द्वादिक विवाद द्विः, . अव धव, नीत्नाः भनपुरवा । नवारणारवरकाः भनजवाति ज्ञारणामानिकवगार । नविन द्याविष्ठिविद्यांदव नीनश्चनाराज खद्या जागार्जन নীলশকোবর্ত্ততে, উৎপলশক্ষাহপাৰিদিতগুৰে, গুণবৃতি জুবাৰিশেষে বৰ্ত্ততে। তত্ৰ, নীল সামান্তমন্ত্রদেরেং পর্লব্যতিরেকেশেং পলসামান্তমণি, নীল গুণনিরপেক্ষমের, वश दिवक्ट, छन। मामामानाः भवन्नदाभकार्द्याभकावकावनक्वः क्षयत्रः स्नामक विषयः सामान्यानावसाविशः। मचरका 'नाखि। मजार, नोत्नार ननभाव्यो विभिष्ठ धव स्वत्य श्राह्माक् किसीवस्थिको पहर विषटनन विषि अके क्षणरहा छ देवन, अहरू पूर्व नामा स्वित्य देवन क्षण था। विभिक्षेत्रकारमञ्ज अकारबर्देक्कवाद्यानमञ्ज्ञिक मनमस्यो जादव क्नााधि

কেতি নীলোৎপানং লসদিসভেদঃ ইদংপ্রেষ: ইদংস্ত্রী চত্-র্বনাঃ। দ্বীন্দ্রিয়ে পূর্ববাহ্নঃ অপরাহ্নঃ প্রথমপ্রুদঃ চরমগিরিঃ ভ্রত্যাদেশঃ সমানদেশঃ মধ্যদেশঃ সধ্যমপুরুদঃ বীরপ্রুদঃ এই-পত্নী সর্বকালঃ ভরকারঃ প্রান্নতরুঃ ন্বান্নং কেবলারং পাপ-

ক্রণত্তেন ব্যবহিতে লেখনে গুলি ধাদনে হক্তো ক্রব্যক্তে দ্বিবারোপ্য নীল্ अस छेर्थलमकः विभिनेशैवारग्रेष्ठा छेर्थलाका छेर्थलमका नील-वानिष्ठिन नीवारकारचा। नीलारवाचाः श्रवाधंवः शूनवश्य-মেবৈতদিতিপ্রতিপ্রা', তাণনিন্দো জবাবিষয়শ্চ যঃ সংশয়স্তমেতে বাপনরত ইত্যেত্রোজাতি গুণাভি ।বিনো ভিন্পার্তিনিমি এরোডেখ-মাবোপ্য ভেদ্যভেদকভাবং প্রতিপদ্যতে। তথাচাত, দ্বোচনির্ণীত াতীয়ে নীলশকঃ প্রবর্ততে। অবিনিত ওবে চৈবোংপ্রশক্ষঃ প্রবর্ততে। সামান্তানামসম্বন্ধারে। বিশেষব্যবস্থিতে। রূপাতেদাদ্বিশেষং ভার্যাভ-ব্যক্তং ন শক্তঃ। তাবেব সন্নিপাতিতো ভেদনেপ্রতিপাদনে। অবক্ষেদ্যবাধার সংশয়ংব্যাপকর্মত ইতি। নন্ত্রপ্রতি সামাতা। काटन ध्रवाद गौनारमञ्जलनकथकावनभन्न ध्रकावाभरत्यका नानिष्ठभा একম্মিন্নতেথ ব্যবস্থাপয়তি, ইতি বিশেষণং ভবেং। নাগুলীতবিশেষণা বুদ্ধিঃ বিশিষ্যে প্রবর্ত্ত ইতি ক্যানাজ। এবক সতি বিশেষবাবিশেবভানিয়তেঃ পূর্ম্বিপাভানিষয়ঃ লাং। উচ্যাতে, ষদ্যুপি উদ্রোদ্যাবজ্বে। বাবজ্বেদকত্বে मगारमाच्याभिकि निवकः, एथानि लाटककथानानः निर्मयनः अवानक विरमया-भिতि राज्यातः। उथाता ज्ञः, अतार्थं सार्थनित्मलान श्रमानः विरम्भनम्। विस्थार हि अभागर आर अर्थिय अकामनामिति, नौलमरका हि. धनत्वा प्रत्य त्वथानथनानः छे: शननमञ्च छाछित्वा खंतात्वः-হাৎপ্রধানম্। মলোগুণঃ সজ্যেবদ্রব্যে নিবর্ত্তে প্রবর্ত্ততে চ, ইতি দ্রব্যক্তা-ৰায়ভূতবাৰপ্ৰধানম্। জাতিক অব্যক্তোংপকে: প্ৰভৃত্যা বি<mark>নাশং এব</mark>াং নোজ্রতীতি, দ্রব্যাগ্রভূতত্বাৎ প্রধানং: যথা, শ্বেডং ছাগলমীলভেতেতাত্ত্র বেতগুণভাজস্ভাগস্থাপ্রাপ্রে, বর্ণাস্তরভাগপি ছাগ আলভাতে, স ডু

পুরুষ: অণকভার্যা । বিশেষণেন চ । শীতোক্ষং উক্ষণীত্র্য । সন্মহৎ পরমোত্তমোৎকৃষ্টাঃ পূজ্যমানেঃ । সংপুরুষঃ, মহা-পুরুষঃ, পরমপুরুষঃ, উত্তমপুরুষঃ, উৎকৃষ্টপুরুষঃ। পূজ্যমানে-রিতি কিম্? উৎকৃষ্টো গোঃ পঙ্কাব। বাহুল্যাৎ কচিমিত্যং

শেতগুণযুক্তঃ, পিষ্টকপিগুদিঃ। কিশোভয়োগুণিত্বে ক্রিয়াত্বে বা নিয়া-মকাভাবাৎ প্রাঙ্নিপাতানিয়ম:। যথা, কুজকুর্গ:, কুর্গুকুজ:, ছিলভিল:, ভিন্নছিনঃ। নীলক্ষেত্যাদি, নীলম্ৎপলমিতি বাক্যা, নিত্যসমাসবাদিমতে তুর্থপ্রদর্শনার্থমিদং। দিকু সংখ্যে সংজ্ঞায়ামিতি মূনিস্ত্তং। তদিহ ন বাচ্যং, ব্যভিচারদর্শনাৎ ইতি স্টয়য়াহ, চতুর্ব্বর্ণা ইতি, এবং চতুর্দিগীশানব-মক্তমানিনীতি। যত্ত চতুর্দিগিতি সমাহারে কেনচিৎ সমর্থিতং, তলমনোরমং সমাহারার্থানুপপত্তে:। কিঞ্চ বাছল্যাৎ, পূর্ব্বাপর্বস্যুব দিশ ইত্যাদি সমর্থনীয়ং, यथा, পূর্ব্বপুরুষঃ, রুচ্চে তু নিত্যমেব পূব্বে যুকামসমী অপরেগ্-কামসমী পুরুর্ব পঞ্চালাঃ অপরপঞ্চালাঃ বক্ষাতি চ ক্রচিল্লিতামিতি, সপ্তর্ধয়ঃ, পঞ্চাত্রা ইতি। কৈচিল্ল স্থাৎ উত্তরা শালা, দক্ষিণো ব্রাহ্মণঃ পূর্ব্বোক্তমনুবদ্তি, মধ্যাহ্ন ইত্যাদি। কিঞ্ পূর্নাপর প্রথম চরম জ্বতা সমান মধ্য মধ্যম বীরাশ্র, ভথা পূর্ব্বকালৈক সন্ত্র জরৎ পুরাণ নব কেবলাঃ সমানাধিকরণেনেত্যপানর্থক-মনেটনৰ সিদ্ধত্বাৎ ইত্যাহ, প্ৰথম পুরুষ ইত্যাদি। এক শব্দোহত্ৰ সংখ্যান্তা-সহায়াদিতীয়েষ্, সর্ব্বৃশকোপি ডব্যাবয়ব প্রকার গুণকাং স্ক্রেয়ু, যথা, একপুরুষঃ, একর্ষভঃ, একচৌরঃ, একগনুর্দ্ধরঃ, সর্ব্ববৈশাঃ সর্ব্বরাত্রঃ, সর্ব্বান্থং সর্ব্বশেত ইতি বর্দ্ধমানঃ। অথ নিন্দ্যং কিতবাদিভিরিতি সমাসেন নিন্দ্যস্য পূর্ব্বনিপাতে তদিহ বাছল্যাৎসমাধেয়মিত্যাহ, পাপপুরুষ ইত্যাদি, এবং হতবিধিঃ पद्मरेपनः, कृष्टेगाजा देजानि देशनत्याः भाभानकत्याः भूक्षयानिनिभवीज-ক্রিয়া গম্যতে। বিভ্ময়াণকভাষ্যয়েতি ভট্টি:। অব্যাপ্তিং পরিহরলাহ। क्षण्यन्तरहाजि, भौष्ठाक्षत्रिजि **भौष्ठाकर**ग्राश्च वृद्धाः खरेगुरका दृष्डः, গ্রা ্রিজরণাম। অব বছলপ্রপঞ্চমুপক্রমতে সন্নহদিতি। এতে প্রা-্র বি বি ব্যক্ত স্থাসত কর্মধারয়োজের:। পুজুমানৈরিতি

কৃষ্ণ দৰ্শন বিশেষণ নিতি কিমৃ ? তক্ষকঃ দৰ্শন বৃদ্ধ বৃদ্ধ লিংশপাঃ।

वहनार, পূজাবচনাः मनानः प्रातिकायत्य । তেনোয়রপন্ত পূজামানতং সভবতি, উত্তমপুরুষ ইত্যত্র বিশেষণ্ঠ পরনিপাতাং, সপ্তমীসমান্ত্রো পুরুষোভ্যাঃ, উৎকৃষ্টো গোরিতি পঙ্গাৎ উদ্ধৃত ইত্যর্গঃ। এবং সন্দৃত্যঃ विनामान रेखार्थः। रेर পृष्णमानमञ्जातनात्रि भिक्षेत्रपूरुण मभस्य पृष्टेशः। প্রায়েরতৌ সংজ্ঞায়া ইতানুসুত্তী মহদিতি প্রীপতিনা স্থাততঃ, মহাজনঃ, মহাপুরুষঃ মহেশ্বঃ, ইত্যাদয়ং জ্ঞাে, মহাচৌরঃ মহাশাুমঃ মহা-নীলঃ মহাক্ররঃ মহাকুপণঃ, ইত্যতিশয়ে, মহানটঃ, মহেশাঃ মহেশাঃ, মহাদেবো হরঃ, মহামূলো হস্তী, মহালতং নাম চ্যান মহালাট্রোজনগদঃ মহা भृत्कादनाभः, मटशेषधः विषकः, मटशामिः मशाविक सरकः, मटश्टकां निनि-**(দবেক্রো, এতে)** রুচো, মহাতরুঃ মহাকুটং মহাক্রদং ইতি মহতে। মহাপথো-মরণবলু, মহাবনং খাশানং, মহারাহ্মণঃ কাপালিকঃ, মহানিশা মৃত্যুকালঃ, মহানিজা, মহাযাত্রা মর্পমিত্যনর্থান্তরে, ইত্যুদাহতক । বাহুল্যাৎ, ক্ষচিন্নিত্য-মিতি নীলোৎপল মপিহোদান্ত্তমকৈঃ। অতএব রুচাৎ কর্মাণগ্রাকৃত্বীয়োহণি चारलव, नीत्लार्भनवर प्रवः. कृष्णप्रश्वान् वणीकः, त्लान्डभालिमान् धावः, অরঢ়াত কর্মধারয়ায়য়্থীয়ে বত্তীহিরেব. বছলগ্রহণাৎ, থা চিত্রগুশ্ছাতঃ ন তু চিত্রগ্রীমান। নম্বনয়োঃ সংজ্ঞােনহি বিরোধঃ। প্রকৃতিসংজ্ঞাধিকারা-স্ত্যং তত্ৰ তত্ৰ বিক্লাদিবিধানাৎ, কারকসমাসাত্মনেপদাদিষু বিহিতেতরেযু সংজ্ঞরোব্দিরোগঃ স্থাদেবেত্য কম্ ু তেন চিত্রপবঃ স্বামীতি न छाए। कृतिवाकारम्दर्शक वीर्यन्तवायनः, बारमा बामवधाः, बामः शामार्याः ইত্যাদি, লোহিতন্তক্ষক ইতি বিশেষণপ্ৰত্যু**দাহরণমন্তেৰায়। তথাহি** न छा९। लोहिछावाजिहाबिलाहि, लाहिलाविल्यवर, अब्रह्म लाहिए धव व्याठकर छ, कथर छर्डि म रमवमालक भरविकामार। करमारम खानकाः कदिक-লভদন্তত্যতিমুখীতি, ইহ দেবদারোজ্র মন্থং, কলভন্ত করিত্বং ন ব্যভিচরতি। সভ্যং শিষ্টপ্রয়োগেরু বাহল্যাৎ সমর্থনীয়ন্। কিঞ্চ, ওক্ষকঃ সর্পঃ বৃক্ষঃ শিংশপা ইত্যত্ত, যদা তক্ষোতীতি তক্ষক: ক্রিয়ার্থ: প্রত্যয়বোপাৎ শি: শুণাপিফল-

००। भाक अधाना दमें शार्थिना दमी मध्र-शमरना श्रेम्हें। (००)

শাকপ্রধানশ্চাসে পার্থিবশ্চেতি পাঁকপার্থিনঃ অজাতে । ললিঃ দধ্যপ্রিক্তশ্চাসো ওদনশ্চেতি দধ্যোদনঃ গুড়মিশ্রা ধানাঃ গুড়ধানাঃ তিল্তপুলাঃ বিদ্ধনামা গিরিঃ বিদ্ধগিরিঃ শ্রীহর্ষনৃপতিঃ কর্বকারকং তর্ক বিদ্যা ব্যাকরণশাস্ত্রমিত্যানি।

तछ। छेलमा नावधातरगा (८७)

উপশানং বিশেষণং। শহা ইব পাওরঃ শহাপাওরঃ শন্ত্রী-

রজিঃ মাং তদোভরোব্যিচ্ছেদ্যব্যব্ছেদ্নত্ত্ব সতি সমাসোভবত্যেব।
নন্দাহরণে ভক্ষকসপ ইতি প্রয়োগ এব নাস্তি, যংসামাক্তাভিধানপূর্ব্বকং
ক্রেমে নিশ্বেপ্রয়োগঃ, যথা রাহ্মণমানয় গাগ্যমিতি। যত্র তু বিশিষ্টঃ প্রযুজ্যতে
তত্ত্ব বামন্দ্রক্ষ কথং প্রয়োগ উক্তার্গভাং সভাং স্বরূপকথনেহপ্যক্তার্থক্স
প্রয়োগোদ্শতে , যথা নীভং হিমং, উফোব্ছিরিভি ভর্দিহাপি। একার্থেনেতি
কিম্ গ্রাছঃ পুরুষঃ মহতঃ পুত্রঃ।

(৫৫) শাক। শাকপ্রধানাদের্গণ স্থা পার্থিবাদের মধ্যপদমপি লুণ্যতে, সমাসং পুর্বেইণব, শকনং শাকং, শাকং প্রধানমন্ত শাকপার্থিবং, অত্ত পৃথিবী-শকাদ্দীপ্রকল্যাদিকোচিত্যন্, পৃথিবীসর্বজ্যামিত্যন্, পৃথোরপত্যামিত্যন্, পৃথোরপত্যামিত্যন্, পারকার্থিব ইতি পালঞ্জলাং, এবং শক্তু সৈদ্ধবং স্থতকোটং, প্রদান্তার্থিয়ে অজ্ঞাতীেরলিরিতি তুল উন্মাদে ইতি চৌরাদিকাদ্ধাতোর্গদ্ধবনেত্যাদিনা লল চ্প্রত্যে তুল্লাম্নিং তুল্লভাপত্যং তৌরলিং, অজ্ঞোপলক্ষিতক্রিলির ক্রিপাদ্দী, শুক্লভাপিত্যং তৌরলিং, অজ্ঞোপলক্ষিতক্রিলির মুখ্যাদ্দী, এবং মুর্গাদ্দী নুর্গাহতিবিধিং মর্যাদাভিবিধিং, বর্ণান্থাবিধিং, বর্ণবিধিং কিলা জগতী ত্রিজনতী, এবং ত্রিলী, অর্দ্ধবিশিষ্টং শৃতং অর্দ্ধিং বর্ণবিধিং ক্রিণা জগতী ত্রিজনতী, এবং ত্রিলী, অর্দ্ধবিশিষ্টং শৃতং অর্দ্ধিং নেক্রাম মহাভ্র । অথ জয়ায় ন মেরুমহীভূতঃ ইতিভারবিং, বাজ্ঞাত নেরুবাচ্যো ম্হীভূদিতি বাচ্যবাচক সম্বন্ধপ্রাপ্ত বিসিমাস ইত্যপরে।
ক্রিণ্ডাই মেরুবাচ্যো ম্হীভূদিতি বাচ্যবাচক সম্বন্ধপ্রাপ্ত ব্রিগাহতে, ইতর্ভিল

শ্যামা। ব্রিয়াঃ পুষতে চ মুগীৰ চপলা মুগচপলা কাকণদ্যা অবধারণে গুণ এব গনং গুণধনং স্থুকৃতবন্ধুঃ।

৫৭। কতাদিঅকতাদিভিঃ। (৫৭)

কৃতঞ্চ কিঞ্চিদ্কৃতঞ্চ কিঞ্চিৎ কুতাকুতং অশি গান শিতং কৃতাপকৃতং গতপ্রত্যাগতং জ্যাজ্যকা, ফলাফলিকা, মানো-মানিকা।

(৫৭) কৃতাদীনি। কৃতাদীনি পদানি অকৃতাদিভিঃ পদে; সমস্তত্তে,
সমাসণ্ট কর্মণারয়ঃ। নমু কৃতাকৃত্যিত্যাদৌ কথ্যৈকার্থ্যং, নছেকং ব্স্ত কৃত্যকৃতং স্থাদিত্যাহ, কৃত্তঞ্চ কিঞ্চিদিতি, অব্যব্ধর্মিণঃ সমুদায়ক্ত তথাব্যপদেশঃ, কৃতাব্যবসম্বনাৎ কৃতং, অকৃতাব্যবসম্বনাদকৃত্যিভি কিঞ্চিত্রেন স্চ্যতে। এব্যশিভানশিতঃ, অশিত্যব্যবস্ত্তথাং অন্পিতং তংকার্যাকর্মাৎ। এবং ভুকাপভুক্তং, ক্তাপ্স্তং, যাতায়্যাতং, গত-

৫৮। পূর্বকালরতর**শ্চ। (৫৮)**

পূর্বাং দগ্ধঃ পশ্চাৎ প্ররুচ্ন দগ্ধপ্ররুচ্ন সাতামুনিপ্তঃ লিপ্তবাসিতঃ!

৫৯। শ্রেণ্যাদয়ঃ কুতা**তিঃ**ক্যুথেঁ। (৫৯)

অশোনয়ঃ শ্রেণয়ঃ কৃতাঃ শোণিকৃতাঃ প্গভ্তাঃ। শোণি-পূগ কৃট পটু মৃত্ন দেব শ্রেবণ পণ্ডিতাদ্যাঃ শোণাদয়ঃ। কৃত ভূত মত সমাখ্যাত অবকল্লিতাদিঃ কৃতাদিঃ।

প্রত্যাগতং, ক্লিষ্টাক্লেশিতং, ভূকবিভূকং, পীতবিপীতং, ক্লেমাক্রমিকেতি ক্রীণাতেরপ্ ক্রুয় ততোর সালমারিতি কঃ তত আপি ইদস্ত কাদিতি ইকারঃ ক্রেমেকিতি মহান্যঃ স ক্রেয়ঃ উচ্যতে, স্বলাচক্রমিকাক্রমান্সক্রিয়র সম্বায় উচ্যতে, উভয়াবয়ব সম্বায় অবয়ব ধর্ম্মেক সম্বায় তবাব্যপদেশাং অভেদরপতার্পিতা ইতি ভাবঃ। অভেবামপি দৃশ্যত ইতি দীর্মঃ। এবং প্টা প্রিকা মানোম্মানিকেত্যাদি।

- (৮) পূর্বা। পূর্ববালে বৃত্তিব্যাপারো বেষাং তে পূর্বকালসিক ক্রিরাবাচিলঃ। অর্থাচ্তরকাল সিক ক্রিরাবাচিলঃ সমস্তত্তে। সমাসশ্চ কর্ম্মারয়ঃ, পূর্ববশভাচ্চকৌ পৌর্বাপেষ্যপ্রতীত্যর্থং প্রমৃক্তৌ, এবং ল্নপ্ররুত্তঃ বন্ধ-তাড়িতঃ ছাপিততাড়িত ইত্যাদয়ঃ, লিপ্তবাসিত ইতি পূর্বং বাসিতঃ পশ্চারপ্রঃ, লিপ্তবাসিতঃ রাজ্ঞাদন্তাং পরনিপাতঃ। এবং দৃষ্টলুঠিতং লম্ম্বিতঃ পাছঃ, অর্থিতোতঃ সিক্তসংস্টং ক্রিরপক্ষিত্যাদয়ঃ পূর্বনিপাতানিয়মে
- (৫১) শ্রেণ্যাদয়:। অভ্ততভাবোহি চ্যর্থ:, তত্র বর্ত্তমানা: শ্রেণ্যাদয়:
 কৃতাদ্যৈ: সহ সমস্তত্তে, অত আহ অলেণয়: শ্রেণয়: কৃতা ইতি। বদা শ্রেণ্যাদিশ্রুলামর্থা অনিপালা এব নিপালাত্তে, তদা সমাস:, বধা, শ্রেণকৃত্যাবাঃ,
 প্রভূতা বকাঃ। কদা তু নিপালা এব রূপান্তরেণ ক্রিলাভ্ত, তদা শ্রেণয়: কৃতা
 ইতি দক্তিতাঃ সংকৃতারা ইত্যর্থবিবক্ষায়ান্তবৃত্তি, কৃতশক্ষম দত্তিতাদর্থতা
 করোতেঃ ক্রিয়ামায়্রবাচিতাছাত্নামনেকার্থতাদবসেয়া, চ্যুন্তানান্ত নিত্য-

৬০। কতরকতমৌ জাতিপরিপ্রশৌ। (৬০)

কভরকঠঃ কতমকালাপঃ। ৩১। কিং সংজ্ঞাক্ষেপয়েঃ। (৩১)

কিম্পুরুষঃ কিন্নরঃ, আক্ষেপে-কিং রাজা যো ন রক্ষতি প্রজাঃ, কিং পুত্রোদৌঃশীল্যাং কিং গৌরদোহবাহাৎ।

সুমাসঃ। চিড়াজিতি শ্রেণীকুতঃ পুণীভুতঃ। শ্রেণি ব্রাহ্মণ নিপুণাঃ পট্ পশুত কুশল চপল পুগুলিত। দেবক্ষত্রিরমুকুলাঃ, শ্রম ণোবাগীক্স বিবিধনিধনানি। অধ্যাপকঃ, কুলু মাবিশেষোনিচয়োহপি। ভ্তপুথে চ কৃতমিতি ভৃতমুকং কৃতং মতং আৎ নিরাকৃতং কুলিতং সম্ভাবিত্যক্ষারিত্যবক্ষিত্যপ্রাদাক্তঃ বিদ্যাৎ। খ্যাতদ্বাতা জ্ঞাতাঞ্চপি মিলিতাঃ। পরিগণিতঃ শ্রেণ্যাদিঃ কৃতাদিরপিশেষমাস্ত্য। কুলুম্ননিচয় স্থানে পদার্থ বিষয়ে ক্ষিচিচ্চ পঠ্যেতে। ক্ষুচিদপি পৃস্ককভেন্তে মুগু কুপ্গাৰপি চ দৃশ্যেতে ইত্যক্তে।

- (৩০) কতর। এতো জাতিপরিপ্রশ্নে গম্যে সমস্থেতে, সমাসং কর্মধারয়ং ছাই। কত্মশকো বা বছনাং ডত্যোজাতিপরিপ্রশ্নে ইন্টানেন জাতিপরি-প্রশ্ন এব ব্যুৎপাদিতত্তৎসাহচর্ঘাই কত্রশকোছিপ তদ্ধি:। কতরকঠ ইতি কঠশকো জাতিবচনং, গোত্রক চরলৈ সহেতি বচনাং। তথাহি কঠেন প্রোক্তমিত্যুক্, কঠ চর(কা)ণালুগিতি ভক্ত পুক্, কঠ শুক্ত করিং প্রোক্তার্কে, সত্রহ্মনিত পুক্। কত্মকালাপ ইতি, কলাপিনোহণিত্যুক্ প্রোক্তার্কে, সত্রহ্মনিত স্কালোচিতি টিলোপং। তদ্ধীতেবেদবেত্যর্থে বিহিতক্সাকং প্রোক্তান্তি পুক্। জাতি পরিপ্রশ্নে ইতি কিন্তু কত্র শৈচত্যে তবভোঃ।
- (৬১) কিং। নামি নিলামাণ গমে কিং শক্তঃ সমাসন্ত কর্ম্মধারম্ম সাং। সংজ্ঞামাং নিত্যং বাক্যান্তপথ্যতীতেঃ। কিন্তবাদেববাদিভেদঃ, কিং রাজেতি কিমংক্ষেপে ইতি নিষোং টোন স্থাং, খোন
 বিক্ষতীতি নিলাব্যঞ্জকং, মহীয়ক্ষণং হি রাজ্ঞাধর্ম স্তদকরণাত্ম নিলা। এবমন্ত্রত নিলার্থঃ কং শব্দেহম্। ততঃ কোরাস্থা কলিক্ষেত্রিতান্ত্র ন
 ভবতি।

७२। वर्तीवर्तने। (७२)

খেতরক্তঃ কৃষ্ণলোহিতঃ স্পান্তার্থং, বাহুল্যেন বিশেষণং প্রদর্শিতঃ, অথাস্থা পর্যনিপাতার্থং প্রপঞ্চমাহ। ১০ তিপ্রেয়ং ব্যান্তাদিভিঃ শ্রেষ্ঠার্থে।(৬৩)

শ্রেষ্ঠার্থে ব্যান্তাদিভিক্রপর্মোরং সমস্ততে। পুরুষোহ্যং ব্যান্ত্র ইব পুরুষব্যান্তঃ পুরুষাসংহঃ বাজ্লতা করপদাং স্ত্রী-বুন্দারিকা মুনিকুঞ্জরঃ পুরুষনাগঃ। শ্রেষ্ঠার্থ ইতি কিমৃ ? পুরু মোহ্যং ব্যান্ত্র ইব শুরঃ সামান্তপ্রয়োগোহয়ম্।

- (৬০) বর্ণো। বর্ণোহত্র শুক্লাদিঃ বর্ণবাচিনা সহ সমস্থতে,
 সমাসন্চ কর্ম্বাবয়ঃ স্থাং। শেতরক্ত ইতি, কৃফলোহিত ইতি। ইহ রক্ত্র লোহিতশকৌ মুখারয়্রা সমুদায়রত্রী অবয়নসিদ্ধেঃ সমুদায়সিদ্ধিব লীয়সীতি বার্ত্তিকস্মরণাং। শেতকৃফাবয়বসস্বনাত্তাবতাপি সমুদায়ে বর্ত্তেতে ইতি সামানাধিকরণ্যমস্তোব, অত্র গৌণত্বেন বিশেষণয়াদনয়োনিয়তপ্রাপ্,ভাবঃ,
 যারয়বসম্বন্ধাদ্বাবপি সমুদায়রত্রী তত্ত্রোভয় নিপাতঃ, শুস্কুক্ষঃ কৃষ্ণশুক্রঃ।
 অথ বিশেষণবিশেষ্যভাবত্ত, সর্ব্ত্রে বিদ্যমানত্বাৎ কিমেভিলক্ষ্ণগৈরিত্যাহ
 স্পান্তাগিদি। অথাত্তেতি বিশেষণস্তা, এতেন সর্ব্বোহয়ং বহল প্রপঞ্চ
 ইতি স্টিতং। তথাচ চক্ত্রগোমী, বিশেষণমেকার্থেন কর্ম্বধারয়ো বহলমিত্যের
 স্থাত্রতবান্।

৬৪। জাতিঃ প্রশংসাবচনাট্ডেঃ। (৬৪)

এভিঃ সহ জাতিশব্দাঃ সমস্তন্তে। গোমতল্লিকা গোমচর্চিকা
অশ্বপ্রকাণ্ডং বিপ্রোদ্যং। আদিশব্দাৎ পোটা যুক্তি স্তোককতিপয় গৃষ্টি ধেকু বশা বেহৎ বস্ধানী প্রবক্ত প্রোত্তিয়
অধ্যাপক পূর্ত্তিঃ। গোপোটা ইভাযুক্তিঃ অগ্লিস্তোকঃ মৃতকতিপয়ঃ গোগৃষ্টিঃ গোদেকুঃ গোবশা গোবেয়হৎ গোবস্কয়নী
কঠপ্রবক্তা কঠপ্রোত্রিয়ঃ বিপ্রাদ্যাপকঃ বকপূর্তঃ। জাতিরিতি
কিম্ং যজ্ঞদতে। পূর্ত্তঃ।

সাপেক্ষতার সমাদ ইত্যেকে, ইদমেব জ্ঞাপয়তি, প্রধানসাপেক্ষঞাপি সমাসোহস্তীতি। তেন বাজপুরুষোহতিরূপ ইতি পুরুষোভ্যঃ।

(৬৪) জাতিঃ প্রশংসাবচনা মতলিকাদয়ং পক। মতলিকা মচর্চিকা
প্রকাওমুদ্দতন্তর । প্রশন্তবাচকাল্লম্নীত্যনুশাসনাং। প্রশংসাবচনা রাটিবশাৎ অবিশিপ্তলিকা এতে জাত্যা সহ সমস্তমানা অপি প্রশিক্ষং ন মুক্ষি।
প্রশংসাবচনাদেষাং নিত্যসমাস এবেতি বর্দ্ধমানঃ। ভট্টো রক্ষং প্রাকাশুন
কাবিত্যসায়মর্থং, রক্ষং প্রকাণ্ডঃ বারণং স গ্রামণীরনয়ারিতি কং প্রত্যায়
পোটাদিল্লয়োদশকং, পোটেত্যাদিপাণিনীয়স্ত্রালিণিতঃ, পোটাল্লীপৃংসলক্ষণা, গৃষ্টিরেকবার প্রস্তা, নেহুং প্রত্যাগ্রহমা, বর্ণা বন্ধ্যা, বেহদ্ গর্ভোপঘাতিনী, বন্ধয়নী, ভরুণবংসা বস্তরঃ প্রোচ্বরুদ্ধেং সোহস্তান্ত্রীত্যর্থে পামাদেন
ইতি ন ইতি প্রীপতির্ব্যাজহার। জলাভিষেকাহিতশীতকলা স্ত্রী স্তোকভাজং সহ সাধুপোটা। উপেক্ষ্যমাণং বকণ্র্রমন্ত্রা স্মালিলিকা শুবিমুচ্যমানশ্।
তিমিকতিপয়সংমুক্তে সমস্তাদলিব্বতি ব্রজসেবিতাজ্বাসো। প্রসি কবিবশেব
কাচিত্র্কা ভ্রমতীব প্রাল্ন স্থীজনং বিশক্ষেতিব্যোম্বঃ। কথং কতিপয়সহকারপুপ্রম্যেতি ভারবিঃ। জাতেরবিবক্ষিত্তাং। নতু পোটাদিগ্রে পৃষ্ট্রা
শক্ষঃ কথং পঠ্যতে, নিন্দাং কিত্রাদিভিরিত্যনেন সমাসনিক্ষত্বাৎ, সত্যাৎ
বক্র্র ইত্যক্র জাতেরনিন্দ্যত্তা ধ্রুত্ব সমন্ত্রাহ্বিবক্ষিতঃ, ন ডু তেন শক্ষ

৬৫। নিন্দাই কিতবাদিভিঃ। (৬৫)

সমস্ততে। যাজ্ঞিককিতবঃ ছাত্রহছ্ রিচঃ বৈয়াকরণখ-সূচিঃ ময়ূরব্যংসকঃ বিগতাবংসাবস্থেতি ব্যংসকঃ ধূর্ত্তো বা কম্মেজমুণ্ডঃ যবনমুণ্ডঃ। (এবমন্থেহপি প্রয়োগাঃ ভোজেয়)

७७। ह्यू भारमें गिर्डिंगों।

চতুষ্পাদবাচ্ন এব গবি্র্ভণ্যা সমস্তন্তে। গোগবি্র্জণী অশ্বসবি্র্জণী। জাতিরিত্যেব কাণাক্ষী গবির্জণী।

প্রবৃত্তিনিমিত্তম্প, বকজাতেনিশা গম্যতে ইতি অনিশার্থং ধৃর্ত্তগ্রহণং, ষজ্ঞদ-জোধৃর্ত্ত ইতি যজ্ঞদভোহত্র দ্রব্যাশকঃ। একব্যক্তিবাচিতাৎ হরিহরাদিবং।

(৬৫) নিক্যম্। ইহ কিতবাদিশকসানিধ্যাত্তৎ পূর্ব্বপদন্ত নিকাবগম্যতে ইভ্যহার্থ: প্রভ্যয়েন স্চ্যতে, যাজ্ঞিক্কিত্ব ইতি, যথা ধন্মপে**দ্যুমাণো**-গ্যুতে প্রবর্ত্ততে ন্যাজ্যাদিকং তর্দযাজ্যরাজনে প্রবর্ত্ত মাণোজাজ্ঞিক: কিতব ইব কিতব:। এতেন লোভাদযাজ্যযাজকোহভিগ্নীয়তে । ছাত্র-দুর্ত্ত ইত্যবিনীত উচ্যতে। বৈয়াকরণধন্তচিরিতি যঃ পৃষ্টঃ সন্ ধং স্করতি নিরীক্ষতে নিপ্পতিভতরা স এবম্চ্যতে। ধস্**চিরিতি শিন্** প্রত্যরা**তঃ** ইপ্রত্যন্নান্তকেত্যুভয়রপুমুদাহূতং বুদৈঃ। মহুরব্যংসক ইতি ব্যুৎপত্যা কিঞ্চিৎ কর্জু মহ্মাহভিহিতঃ। ধৃর্ত্তো বেত্যনেন রুতা। মন্থুর ইব ধৃর্ত ইত্যর্থোছব-গমাতে। কমোজমুও ইতি, কম্বোজঃ শঝঃ মুও ইব মুওঃ জবনহুও ইভি, মুখো মুখিতমুগুলভুর্থাভামী তল্প ্যবনঃ, আভ্যামসুচিতচেটোছভিশীমতে। এবং তার্কিক ধস্টিঃ, তাপসইস্ত্রণঃ, ত্রাহ্মণবার্দ্ধ বিকঃ, বাজ্ঞিকম্বঃ, ত্রাহ্মণ-ক্রবঃ, ক্ষত্তিরচেলঃ, জাতিচেলং ব্যলাপদদঃ। নিল্যমিতি কিমৃ ? বৈরাকরণ-(শ্চীর: নহি চৌর্যোণ বৈয়াকরণজ্ঞানমপক্ষয়তে, কিন্তুনাচারবান্ স প্রুষ: I মধ্বছাত্রেব্যং সকেনোপমানারাং নচাক্সেন সমাসঃ। কম্বোজ যবনৌ মুডেনেডি হুত্তরতো বর্দ্ধানমিশ্রস্থ, মধুর ইব ব্যংসকঃ, ধবন ইব মুগুঃ, কম্বোক ইব মুতঃ, কমোজমুতঃ, ব্বনমুতঃ, নচানেন সমাস ইত্যানেন প্রযোগমুরব্যংসক অল্পেন হয়ং সমস্তত এব। মহূরবাংসক প্রিয় ইতি সভ্যং বাহুল্যা দিদ্বত্রাপি সমর্থ্যতে।

৬৭। যুবা খলতি পলিত বলিনজরতী ভিঃ। (৬৬

খলত্যাদিভিযু বা সমস্ততে। যুবখলতিঃ যুবপলিতঃ যুব-বলিনঃ। ইছ সামানাধিকরণ্যাৎ যুবতির্জ্বতী পুষত্তি চ যুব-জবতী।

৬৮। কুমারশ্রমণাদিভিঃ। (৬৭)

সমস্ততে। ভিন্নলিঙ্গ লিঙ্গ বিপরিণাম:। কুমারী আমণা কুমার আমণা, কুমার ভিক্ষুকী, কুমার পণ্ডিতঃ। আমণা কুলটা ভিক্ষুকী তাপদী গবি্ভণী পণ্ডিত অধ্যাপক পটু মৃছ্ নিপুণাদি।

৬৯। কৃত্যতুল্যার্থা অজাত্যা। (৬৮)

কৃত্যান্তান্তল্যসমানার্থাশ্চ অজাতিবাচিনা স্বন্তেন সহ সম-

- (৬৬) ব্বা। ইহ জরতীতিনির্দেশাদভোষাং নিক্সান্তরেহণি সমাসং, ধণতিঃ
 নিক্ষেশিরাং, ব্বাধনতি রিয়ং, ব্বধনতিরিবাজিনীবরেক্সে ইতিব্যোঝা।
 পলিতোজরসা শুরুলোমা, গ্রপলিজঃ, ব্বপলিজা, ব্ববলিনঃ, ব্ববলিনা ইহেডি
 সামানাধিকরণ্যাৎ পুস্তাব ইতার্থঃ। স্ত্রীলিঙ্গনির্দেশঃ কিম্
 গুর্বা জরন্
 ব্রজরনিতি জরতাপি বিধিরয়মিত্যন্পদকারঃ। ভাষ্যে তু অনুদাহতভাৎ
 সক্ষেহ ইতি কাতন্ত্রীকা।
- (৬৭) কুমার:। আম্যতি তপস্থতীতি নন্দ্যাদেরন: অমণা। ইহ স্ত্ত্তে অমণেতি ক্রীলিক্ষনির্দ্ধেশাৎ ক্রিয়ামের অমণাদিভি: সমাস: তহিকবং সামা-নাধিকরণ্যমিত্যাহ, ভিন্নলিক্তাদিতি। ধর্মিকলনাতো ধর্মকল্পনৈর জেরসী-ভিন্তারাং। অমণা কুলটা লাসী তাপদী বন্ধকী তথা। গর্ভিণাপি প্রক্রজিতা সপ্ত স্থা: অমণাদর:। কুত্রাপি বন্ধকীস্থানে ভিন্ক্কীতি পঠ্যতে। ক্রিয়ামের অমণাদ্য: কুমারীতি সমস্থতে। পটু মৃত্পতিত কুমলা, অভিক্রণো-হুংগাপকো নিপুণ চপলো। অষ্টাভিরেতে:, পুংসি ক্রিয়ামিপি স্যাৎ কুমারশ্চ।
 - (🖦) কুতা। তব্যানীয়ক্যপ্রবাৎকেলিয়াঃ কুত্যাঃ। ভোজা বর্ণমিতি

স্থান্তে। ভোজ্যলবণং পানীয়েষ্ণেং তুল্যখেতশ্চন্দ্রেণ সদৃশ-মহানিত্রেণ। অজাতিবাচিনেতি কিমৃণ ভোজ্যগুদনঃ বিশেষণ-সমাসোহপি নিষিদ্ধঃ।

৭০। যদৃচ্ছাদয়ক্ত। নিপাত্যন্ত। (৬৯)

যা ইচ্ছা যদৃচ্ছা উচ্চাবচং প্রমক্সা প্রোব্যপাপীয়ান্। এহাহাদয়োহন্যপদার্থে॥ ইহ এহীতি মন্তোচ্যতে তদেহীহং কর্মা। অব্যয়ং কুতা। প্রাতদেহিঃ প্রাতরাশঃ অবশ্যকর্ত্ব্যম্।

লবণাদয়ঃ শব্দাঃ সর্ব্বেগুণবচনাঃ। সনৃশমহানিক্রেণেতি, সন্মহদিত্যনেন সমাসঃ, তম্ম পুনরজুল্যার্থেন সমাসো মহাপুরুষ ইত্যাদেন, ভোজ্য ওদন ইত্যত্র ওদন শব্দো জাতিবচনঃ।

(৬৯) যদুচ্ছা। অমী যথাভিধানং কর্মধারয়ে সাধবঃ স্থাঃ। উচ্চাবচ-মিত্যুদক্ চ অবাক্ চ উচ্চাবচং, উচ্চেশ্চ নিচৈশ্চ উচ্চনীচং, আচিতকোপচিতঞ্ আচোপচং, আচিতঞ্চ পরাচিতঞ্চ আচপরাচং, নিশ্চিতঞ্চ প্রচিতঞ্চ নিশ্চপ্রচম্। ন কিঞ্চনেত্যব্যয়েনাপি সমাসোনিপাতনাঘাচ্যলিম্বতা, ন কিঞ্চনস্থ বা কিঞ্চিত্ত, অকিঞ্কন:। অকিঞ্নাত্তে গুণিনো যে সভায়া মনা দৃতা:। নাস কুতোভয়মন্তীত্যকুতোভয়ঃ, ইহা মৃত্র চ স শ্লাঘ্যঃ, প্রজাযন্তাভয়াঃ। পরমক্ত্বেত্যাদি, নিপাতনাদেব ক্রেষপ্ন স্থাং। প্রোষ্পাপীয়ানিতি। প্রোষ্যপাপীরসঃ পুত্রঃ প্রৌষ্যম্যপাপীরসং ধনমিতি তরিতোৎপত্তিঃ। অকি-ঞ্না কুতোভরাভ্যাং ন কশ্চিং সমস্ততে, ময়ূরব্যং স্কাদিত্বাধ। কিঞ্চ, স্নাথা কালকঃ, পীতান্থিরকঃ, ভুক্তাস্থহিতকঃ, উৎপত্যপাকলা নিপত্যরোহিণী নিষরপ্রামা, জাতেরিতি সমাসত্বাৎ। স্বাত্বাকালকিঃ স্বাত্বাকালকীয়ং, ধনমিত্যাদে তিদ্ধিতাৎপত্তি:। তৎকথমেতানি বাক্যান্সেবেতি গ যথা কেন-চিৎ সমাসোত্র নিরস্তঃ। এহীহাদয়োহক্সপদার্থ এবাভিধানং তথাচ স্তর্বং, এইার্জবাভ্যামক্সপদার্গে নপুংসকঞ। এবমেহীহং বর্ত্ততে, এহিজবৈ-যত্ৰ ষত্চ্যতৈ তদেহিজবং, এহিবাণিজেতি ষস্থাং ক্ৰিয়ায়াং সা এছিবাণিজা এহি স্বাগতমিতি বস্তাং ক্রিয়ায়াং সা, এহি স্বাগতা

। জহি জোহাদয়োহভীক্ষং তদাক্যবাদিনি। জহি জোহনিত্যভীক্ষমাহ জহিজোহঃ জহিস্তম্ভঃ । আখ্যাতমাখ্যাতেন ক্রিয়াসাতত্যে । অশীত পিবতেতি বত্রোচ্যতে সা ক্রিয়া অশীতপিবতা পচতভ্জ্জতা থাদতমোদতা ইত্যাদি।

৭১। দ্বিতীঃ সংখ্যা তদ্ধিতার্থসমাহারয়োঃ। (৭০)

এবমপেহিস্থাগতা, এহিদিতীয়া, অপেহিদিতীয়া, এহিবিঘসা, অপেহি-বিষদা, এহিপ্রঘদা, অপেহিপ্রঘদা, এবং প্রেহিসাগতা, প্রেহিবাণিজা, তথাচ স্তত্ত্বয়ং, অপেহি চ বাণিজ স্বাগত দ্বিতীয় বিষদ প্রথমাদিভিঃ क्रियागार । ८ शहराव वाविकाच्यामित यथा उथा ८ शाहकरी त्याहकर्मगा, প্রোহেতি তিঙ্কং, তথাট সূত্রং, প্রোহকটকর্দমাভ্যাং দ্বিতীয়য়েতি। তথাচ णाह्यवन्नना, आह्यटहना, आह्यवनिछ।। आह्यटहन्यननयनिछानिछितिछि প্তম। তথা কৃদ্ধিবিচক্ষণা, ভিদ্ধিলবণা, উদ্ধিচ্ডা, কৃদ্ধিভিদ্যুদ্ধিবিচক্ষণ লবণচড়াদিভিরিতি সূত্রম্। তথা উদ্ধেবাংসজা, উদ্ধবাবস্থা, উত্তমবিধমা উদ্ধবোৎস্ক্রাবস্ক্র'ভ্যাং, উত্তমোবিধমেনেতি স্থত্তে। তথা উৎপচনিপচা উৎ-পতনিপতা, উদ্বপনিবপা। পচপতবপাস্তদক্ষেনৈৰেতি সূত্ৰং। এথাউন্জাবমূলা উন্মূ জাছবমুজেনেতি স্ত্রম্। এষামসাতত্যার্থৎ পৃথক্ করণম্। ইতরণা পরেণ-সিকেঃ। জহিজোহাদ্য ইতি, জহিজোহাদ্যঃ সাধবঃ স্থাঃ। অভিক্ষং জহি-क्षाट्टि वाकाः य चाठाहे, जिमान वाटा क्षिटिखारः नातः, मःशानः वा ইত্যাভিকুং, য আহ, স, এব উচ্যতে। এবমুজ্জহিজোহ উজ্জহিস্ততঃ। আখ্যাতমিতি, আখ্যাতং তিঙ্তং তিঙ্জেন সহ ক্রিয়াসাতত্যে গম্যে সমস্তত। অশ্লীভপিবতেতি সাতত্যেন ৰত্ৰোচাতে সৈবমুচাতে। অশ্লীত-পিতীয়ন্তীতি ভট্টি:। তথাহমেবপুরুষোহত্রেতি সম্ভবনা, আহোপুরুষিকা, নিপাতনার দ্বিরপি, অহং পূর্ব্বমত্তেতি বিক্রিয়া, অহং পৃর্ব্বিকা, অহং প্রধান মত্তেতাহস্থ তিরহমহমিকা, ইহ বিতীয়া, ইহ পঞ্মী, এহিরে বাহিরে ইতি ৰক্তাং সা এহিবেয়াহির৷ বিকৃত্ঞ প্রকৃত্ঞ ৰক্তাং সা বিচ্প্রদা रेर्विजीत्त्ररुपक्राहित्व यादिवादश्युक्षिकार् अथिका अर्यस्थिका-বিচপ্রচাদর ইতি স্থতিতম।

তদ্ধিতার্থে বিষয়ে সমাহারে চাভিধেরে একার্থেন স্থা সহ সংখ্যা সমস্তে। সমাসশ্চ দিগুসংজ্ঞা ভবতি। পঞ্জ্ কপালেয়ু সংস্কৃতঃ পঞ্কপালঃ সূপঃ দিগোরজাদেলু গ্ন-পত্যে ইত্যাণো লুক্ পঞ্চানাং পুলানাং সমাহারঃ পঞ্পুলী পঞ্চাবম্।

(৭০) বিশ্বঃ। একাপীয়ং সপ্তমী অর্থবশাদিধা ভিদ্যতে ইতি ব্যাক-রোতি তদ্বিতার্থবিষয়ে ইতি। তদ্বিতার্থস্তদ্বিতপ্রয়োজনম। তত্তমূর্থঃ। পঞ্চ কপাল ইতি সমাসে কৃতে, সংস্কৃতং ভক্ষা ইত্যনেন বিহিতক্ত, দিগোরিত্যা-দিনাহণোলুকু। পঞ্চ শরাবেষু উদ্ধৃতঃ পঞ্শরাব ওদনঃ। বৌ বেদাবধীতে দ্বিবেদঃ। প্রঞ্চানাং গর্গাণাং ভূতপুর্কোগোঃ পঞ্চগর্গরূপ্যঃ, পঞ্চয় ব্রাহ্মণেরু সাধুঃ, পঞ্চবান্ধণ্য:, পঞ্চানাং নাপিতানামপত্যং, পঞ্চনাপিতিঃ, দ্বাভ্যাং নৌভ্যাং क्लीजः (दोनाविकः, मञ्जर्षजिक्षज विषया विश्वदर्भग्राट अनिक्शानाः । श्रकानाः পুলানাং সমাহার: ইতি। সমাহাতিঃ সমাহার:, স তু, সমূহ এব, তত্র তদ্ধিত বিষয়ত্বাদেব সিজে:, সমাহারগ্রহণ মভিধেরার্থৎ, তেন পঞ্চগ্রাসী, পঞ্চগ্রী, পঞ্চমানবী, পঞ্চবাড়ৰীত্যাদিয় তাদয়োনস্থাঃ, পঞ্চুমারীত্যত্ত নপুংসকে द्वयः। नयु शक्रभूलीमानरत्रजात সমাহারলক্ষণধর্মসানরনা সম্ভবাৎ কথমবয়ং, সত্যং, তত্ত্র কার্য্যাসস্থবাভদ্ধর্মবতো অব্যস্তানম্বনং ভবতি। বধা গৌরাল-ভাত ইতাত্র জাভেরালম্ভনাভাবাৎ, জাত্যাগ্রিভকাকিরালভাতে। ল্রব্রুত্ত্থপি সমাহার লক্ষণমেকত্বং সিদ্ধং। যথাশতং সমূহক্ত তু ভেমে, দ্বিত্বছত্ত্বে স্থাতামের। যথা দ্বে পঞ্চপুল্যো, পঞ্চপতানি, তথাচ ভাষা মেকশেষে প্রতিষেধ ইতি। ন চ সমাহারশক্ষা কর্ম্মাধনঃ, তথাহি, পঞ্চ পুল্য: সমাজ্তা:, পঞ্পুল্য ইতি বহুনাং প্রাধান্তে, বহুত্মের স্থাং। অমুপ সর্জ্জনত্বাৎ হ্রস্বন্দ স্থাৎ। পঞ্চনবমিতি গোরতদ্ধিত লুকীত্যৎ। তথা পঞ্চ-রাজী পঞ্চরাজমিতি ভাষ্যয়। একপুপী ওদন সম্ভ্রমাভ্যা মকস্তাখ্যাহারোহপি বহুত্বাৎ সমাহার ইতি ক্রম্বীশবঃ। উত্তরপদে চ। উত্তরপদে পরে সংখ্যা একার্থেন সুৰপ্তেন সহ সমস্তে। স চ সমাসোধিওভবতি। পঞ্-পাবোধনমন্ত পকগৰ্ধনং, গোৱতদ্বিতলুকীতাং। বিশোরস্তরক্ষতাৎ তবা

৭২। অনেক্ষ্মতাথে বহুব্রীহিঃ। (৭১)

শনেকং হ্বন্তমন্তপদার্থে সমস্তে। সমাসশ্চ বছ্ত্রীহিসংক্ষো ভবতি। দ্বিতীয়াদ্যত্তপদার্থেইভিধানম্। আরুটোবানরো যং রক্ষং স আরুট্রানরোরক্ষঃ উট্যেরথোযেনাথেন
স উট্রথোইখঃ দত্তবলিদ্নিবঃ চুত্তফলস্তরুঃ হুসূক্ষজটকেশোব্রতী বহুমৎস্থোদেশঃ প্রথমার্থেতু ন ভবতি। বুইটে

পঞ্চনাবধনঃ, বিধারধনঃ, নাবোদিগো থার্যাবেতি অং। দিক্ প্রেলিছস-মাহারে, ভদ্ধিতার্থোত্তরপদরোর্দ্দিক্ প্রেলিছিগুর্ভবিতি। পূর্বস্যাং শালাযাং ভবঃ, পৌর্বশালঃ, দিক্ পূর্বপদারণ্যার ইতি গং। এবং পূর্বপ্রবিদ্রঃ, উত্তরপ্রবিদ্রে ইত্যাদি, সমাহারে তু পূর্ববাসাং শালানাং সমাহদ্রঃ, ইদ-মৃপি বহুলবৈভ্রম্।

(१১) **অনেকম্। নৰধিকৃতত্বাৎ পরস্পার সম্বদ্ধার্থত্বে সমাসো ভবত্যেব, ডৎ** किमानन । मछामिन्यय ज्ञानशिक, व्यक्तजावित्नय विभन এव ममार्टमा বেদিতব্য ইতি। নমুচাঞার্থং পদমশ্রপদার্থে কথং প্রবর্ততাং গু নতাবল্লক্ষণয়া ভস্যা: পছমাত্র বৃত্তিভাব। সভ্যংখানি পদানি বাক্য বিশেষবানি বিশেষ্যে-হস্তপদার্থ বিষয়ে বর্ততে, তাজেব রুত্তো তত্তবিশেষণাক্তমপদার্থস্য বাচকানি **ভবন্তি সভাবাং। অত**এবায়মর্থ: সম্পদ্যতে সামর্থ্যাৎ সমস্যমানাভ্যাং, সমস্মানেভ্যক, পরেভ্যোহক্তস্য পদস্যার্থে বোর্ব্রতে স বছরীছি-बिण्डिः सम् कथ् जवारमत्नाक्त माज्यभार्षमा श्रातानः, वर्षा हित्व श्रदर्भव-षक ইতি। সভ্যং, মতুর্থীরোহয়ং বহুরীহিরভিধানাং. স চ সামাশ্রমভিহিত-वान्। न जु विरामव इंछाविरवायः। न छ विरामवाधिधारन वृश्विविष्ठ नार्ष-কথাৎ, **চিত্রগাবোদে বছন্ত**দ্যেতি বাক্যমেব। নমু চিত্রও সর্বাৎ, চিত্রও **एक्डि कथः मार् १ मण्डः, मामाग्रमभीश वित्नवज्ञाः वादर्जकथाः i** ज्याहि, निर् हिज्बद्धत्वः किं नर्स धाराज्यः। नमू क्यमजास्त्रकृषात्र-कर्पक्षात्रवः १ विटमयनविटमयाखायमा मण्डार । देनदर हेटशख्यमरख्याममान বেশোনাভীত্যকং প্রাকৃ, তথাহি বিশেষণবিশেষ্যভাবে মত্যন্তপদার্থ প্রাধান্তেক্ত্রীত্রিভরপদার্থপ্রাধান্তে কর্মধারর ইতি। অধৈক্ষির ভর

দেবে গতো বঃ। সমস্তত্থাসমস্তেন নিত্যাপেকের সংহতিঃ
কমলেঃ সমকেশন্তে রাজা দত্রধনো যথা। অব্যয়মন্তিনান্তি
চ। সমস্ততে। অন্তিকীরা ব্রাহ্মণী লেখকো নান্তিদোষকঃ।
কচিত্রতার্থতামান্যপদলোপশ্চ। কঠেছিতঃ কালোহস্তেতি
কঠেকালঃ উরদিলোমা উষ্ট্রম্থঃ কাকজ্জ্যঃ কেশসংঘাতশচ্ডা অস্তেতি কেশচ্ডঃ স্থবর্ণবিকারোহলঙ্কারোহস্তেতি
স্বর্ণালঙ্কারঃ। কচিদ্বা। অপুত্রোহবিদ্যমানপুত্রোবা প্রপর্ণঃ

সমাস গ্রাপ্তের কঃ স্যাৎ ইতি চেদ্রুচিমন্তরেণ লাখবাগছত্রীহিরেব, ন কর্ম-ধারয়ঃ, যথাবীরপুরুষকোপ্রামঃ, বহুপদ্মং সরঃ, তর্হিকথং বিস্কিসলয়চেছ্রদ পাথেয়বন্তঃ। হংসাবলীবলয়িনোজলসন্নিবেশা ইতি, সত্যং ভূমান্যর্থপ্রাপ্তেঃ। যত্র জু রুচিস্তত্ত স্থুতরামেব, যথা নীলোংপলবংসরঃ ইতি কর্মধারয়ঃ, বহু-ত্রীহিরর্থ প্রতিপত্তি করঃ। নিপুণ বুদ্ধি শৈচত্রস্যোতি ন স্যাথ। এতেন বিপর্যয়েছিপি ব্যাখ্যাতঃ। লস্থিসভেদং সর্স ইতি ন স্যাৎ। সুস্তার্কটকেশ ইতি, সুস্তা। জটাঃ কেশেয় বঁস্যু স তথা। ভ্যাপোনামি বছলমিতি হ্রস্বঃ। অনেকগ্রহণা-্দিহ ত্রিপদাভ্যাং বিধিঃ, এবং মত্তবত্মাতকং বনং, আর্চ্র্দ্ধবানরো রুক্ষঃ। প্রথমার্থেত্ন ভবতীত্যভিধানাদেব : নমু রাজ্ঞা দত্তং ধনমন্মৈ ইতি एखरन हेळाळ সমাসে গুণীভূতস্যান্তপ্লার্থে বর্তমানস্য দ্ভংনশ্বস্য রাজ্জেত্যনেন সহ কথং সম্বন্ধো ভববিত্যাদ্য শঙ্কাৎ নিরাকুর্বরক্ত্রভূৎস্বার্থ-বাদিপক্ষমুররীকৃত্যাহ, সমস্তন্যেত্যাদি, নিত্যাপেক্ষেণেতি কারকাণাং, ক্রিয়া-পেক্ষয়া সম্বন্ধিশকানাঞ্চ সম্বন্ধান্তরাপেক্ষা, তথাত্যকোদাহরণে দানক্রিয়য়া নিত্যং দাতা তৎক্রিবাকারকমপেক্ষতে। এবং মুলারস্য প্রহারেণ রথাৎ পতিত-সার্থি রিত্যাদিয়ু সংগতিঃ কার্যা। মমেয়ং ভাতৃজারা, মমায়ং দেবরো অথা, रेजारको जाञ्रकवरेतः मर मन्नकाखन्मरभक्ता । ज्या कमरनः ममरकम्ध কংশির ইত্যর্থঃ। যত্র নিত্যাপেক্ষতা নাস্তি তত্র ন স্যাৎ। পৌড্স্য রাজ-্প্রুষ ইতি। নতু স্থপ্তপেত্যধিকারাৎ কথং তিওছেন নাজীত্যনেন সমাস ইতি চোদ্যং মনসিকত্যাহ, অব্যৱমিতি, এবস্বিধানি ভিডক্তপ্রাজরপ-काञ्चरांश्रानि मरन्त्रान, कित्कार्यकाषिक ममारमत्नाकानि अञ्चारक

প্রপতিত্বর্গ । কর্চিৎ সমাদো ন ভবতি। পঞ্চিভুক্তমন্তেতি প্রপক্ষোহয়ং বহুলামুর্ভে:।

१७। अवाह्यामहाद्वाधिकमरशाः मरशहाः मरदेशदः। (१२)

শংব্যেবাচিকা সংখ্যা সহ অব্যাদয়ঃ সমস্তত্ত। অতঃ

বছলাধিকারাবা লুপান্তে। কঠেকাল ইতি, স্বাঙ্গাদম্জ্মস্তকাদকামে ইত্যলুক্। কচিছ্দ্রিম্পেত্যাদো সমানাকৃতিশব্দে। লুপান্ত ন প্নস্তং-পর্যায়:। এবং মৃগস্য নরনে ইব নরনে বস্যাঃ সা মৃগনরনা। ইছ ন স্যাং; শরচ্চক্রমরীচিরোচিষ্মিতি মাখঃ। এবং অবজ্ঞো ভিন্নাধিকরণে ভাষাজ্যেগ ইতি স্ত্ত্তিতং। বধা, মন্ত্র্যজন্ম, ইছ যদ্যপি নির্ফিশেষণং মধ্যপদমুক্তং তথাপি সপ্তমান্তম্পনানং সম্ছমন্ত্রিবিকারসন্ত্রোব গ্রাহ্ণমিতি গোনীচক্রঃ। যথা প্রপর্বঃ, তথা প্রাগতান্তঃ প্রাহঃ পঞ্চিত্রিন্ত্রেম্বেরের গ্রাহ্ণমুক্তরভাছস্যেত্যন্ত্র । অথ যদ্বিদ্ধির বিশেষতং তৎকৃতস্তামিত্যত আছ প্রপঞ্ক ইতি।

(৭২) অব্যয়। সংখ্যের ইতি দ্রব্য ইত্যর্থ:। ন্যন্তপদার্থপ্রধানতাৎ পূর্বেণ সিদ্ধান্তি কিমনেনেত্যাহ, অতঃ প্রথমার্থ ইতি। উপদশা ইতি
উপশব্দেহত্র সমীপার্থে ইত্যত আহ সমীপে ইতি। তেন নব একাদশ
বা উচ্যন্তে। অতোহত্র বহুরীহিরপি পূর্বেপদার্থপ্রধানঃ, কথা তর্হি অব্যয়ীভাবেন সহান্ত বিষয়বিভাগ ইতি চেং সমীপিপ্রাধান্তবহুরীহিঃ সামীপা
প্রাধান্তহব্যরীভাব ইতি। সংখ্যের ডোবহোরিতি ডঃ টের্ডিডি ইডি টি
লোপঃ। আসমবিংশা ইতি আসমঃ বিংশতে র্য ইতি বাক্যে বিংশভেরতেবিত্তি অভিনক্ষণোলঃ। তেন একবিংশতিক্রনবিংশতির্বোচ্যতে। অনুরক্ষা
ইতি, অনুরে দশানাং বে তে নবৈকাদশ বোচ্যতে। অবিকল্পা ইতি,
একাদশ এবোচ্যতে। বৌ বা এবোবা ইনে বিত্তা ইতি। চার্থে বার্থেছিয়ঃ সমানঃ
বভাষাৎ, বার্থক সংশরোনবিক্রার্থ ইহাপ্রীরতে। বিক্লার্থতে হোরেতাত্র বিব্যনমন্থপদার সং। তথাৎ সংশর্মার্থতে ব্রব্রন্থ ভ্রতি।

প্রথমার্থেই ভিধানম্। দশানাং স্মীপে বর্ত্ত যে তে উপদশাঃ আসমবিংশাঃ অদুরদশাঃ অধিকদশাঃ দ্বৌ বা ত্রয়ে। বা ইমে দ্বিটাঃ তিচতুরাঃ পঞ্চয়াঃ।

৭৪। দিগ্দিশা দিশান্তরস্থাম্। (৭৩)

মধ্যায়াং দিশি বাচ্যায়াং দিখাচি স্থবস্তং দিখাচিনা স্থবস্তেন সহ সমস্ততে। পূৰ্বস্থাশ্চ দক্ষিণস্থাশ্চ দিশো হা মধ্যা দিক্ সা পূৰ্বিদক্ষিণা দক্ষিণপশ্চিমা।

ষধা কৰি ভবতঃ পূত্ৰা ইতি। উক্তঞ্চ তাব্যে, অবিজ্ঞাতাৰ্থে বছবচনং প্রশ্নেতি। যথা সংশয়জ্ঞানক্তোভয়াশ্রিতত্বাং পঞার্থা বৃদ্ধিবিষয়ঃ সমাসে বাচ্য ইতি বছবচনং। ত্রিচতুরা ইতি, ত্ররোবা চত্বারোবা ইমে ত্রিচতুরাং, চত্র-ক্রিনঞ্ স্ব্যুপাদিত্যং সমাসান্তঃ। পঞ্চ্যা ইতি, পঞ্চ বা ষড়ুবা ইমে ইতি বাক্যে পূর্বিবং 'ডঃ। এবং স্কর্থেছিপি সমাসোহয়ং স্বভাবাৎ, ত্রিদ্দশাং, স্বজ্ঞপ্রসমাসেনা ভিহিতত্বাদ প্রয়োগঃ। যথা বার্থকা। অক্যে তৃ, উপনতা অদ্রা অধিকাঃ আসন্ধা বাদশ এযাং তে উপদশা ইত্যাদক্তে স্থাপার্থ সিদ্ধা ইত্যাহঃ। তথা দ্বো বা ত্রেরাবা পরিমাণমেবামিত্যেব ত্রিদশাং, বিত্রাঃ। পরিমাণশন্দসানিধ্যাৎ ঘাদশ সংখ্যাপি সংখ্যানে বর্ত্ততে। বথা পঞ্চ পরিমাণমেবাং পঞ্চনাং শক্রনঃ, ইতি সংখ্যানাঃ সংজ্ঞাসংক্ত্রাধ্যননেধিতি কঃ ইত্যপ্যাহঃ। তন্মতে অধিকদশা ইত্যন্ত পরেঃ সহ সমাসন্ত কন্ত্রাধ্যা স্থাৎ। দশাদ্রাদশাদশাসনা ইতি ষ্ঠীসমাসে প্রাপ্তেহিপি, অভিধানং শরণং চেন্তদ্পি কন্ত্রিনিত্যাক্তা। সংখ্যের ইতি কিন্তু প্রথিকা বিংশতির্গবান্ধিতি বাক্যমেব।

(৭৩) দিন্দিশ।। অত্রাভিধানসামর্থ্যা দিক্শকো দিয়াচিপর: ইভ্যাহ দিয়াচীতি, স পুনরিহ পূর্বাদিষু রুচ স্তেন যৌগিকেরু সমাসোন স্যাৎ। ঐত্যাশুচ কোবের্ঘ্যাশ্চ দিশোর্ঘা মধ্যা দিগিতি বাক্যমেব। দিশীতি কিং? পূর্বস্থাশ্চ দক্ষিণভাশ্চ দিশোর্ঘা মধ্যা ভূমিঃ সা পূর্বাদ্যালিতা সর্বনামে। বুজিমাত্রে পুস্তাবঃ।

পা। তেমু তেক্চ যুদ্ধমিতি সরূপে। (৭৪)

সপ্তন্যন্তে তৃতীয়ান্তে চ সমানরূপে দ্বে পদে সমস্তেতে। ইতিশব্দো নৌকিকবিবকার্থঃ। কেশেষু চ কেশেষু চ গৃহীত্বা যুদ্ধমিদং বৃত্তং কেশাকেশি, দত্তৈশ্চ দত্তিশ্চ প্রহৃত্য যুদ্ধমিদং বৃত্তং দণ্ডাদণ্ডি। যুদ্ধমুপলক্ষণং তেন জল্লাজ্ঞলি প্রবাদিনাং কর্ণাকর্ণি ভূতম্।

৭৬। সহ তেন বর্ত্তনে। (৭৫) ফিডিক লাণং

(৭৪) তেষ্। তেষ্ তৈকেতি ভচ্জেন সামাত্মেন বুদ্ধিছপরামর্শকেন সপ্তম্যস্তত্তীয়াভেন স্থম্যস্ত্তীয়াভং গৃহতে ইত্যাহ, স্প্রম্যন্তে তৃতীয়াভে देखि। देखि भरका लोकिकविवकार्थ देखि. लोकिकविवकार्थः भूनअ इनः প্রহর্থক। পৃত্তেহ্যারিতি গ্রহণং, কেশাদি। প্রয়িরতেহনেন প্রহর্ণং দণাদি, মুদ্ধমিত্যনেন ক্রিয়াব্যতিহারোহপি লভ্যতে। তেনায়নর্থো• ভবতি। मधमारक ज्ञीयारक भरन ममानकर्त एक गृशीया. एवन शक्रा যুদ্ধমিত্যস্তপদার্থে ক্রিরাব্যতিহারে সমক্তেতে। কেশাকেশীতি, **অক্সেবা-**अभि मुक्क देकि मीर्थः, किशाविनिमशार्थामवाश्रतककीः, देशवाशाद्ध-হপ্যনভিধানাদক তর্তমাদয়ো ন হ্যঃ। কেশাকেশিকং, কেশাকেশি-ভরত, কেনাকেশিতমং। সুন্ধমিদং বৃত্তমিতি, অত্তভূতি ণার্থত্বাং বর্ত্তিত-মিত্তর্থ:। অন্তবা ভিন্নকর্ত্তে জা ন ভাং। দতাদতীতি প্রব-किक अगुमानिक्शार्यकाधिकत्रवर कत्रवंक। कर्जु कृष्णिशारण कु ন সমস্তেতেহনভিগানাং। বীরেণ বীরেণ প্রস্তা বৃদ্ধমিশং বর্তিতং, যুদ্ধস্তোপ্-লক্ষণভাৎ মুষ্টামৃষ্টি হসিত্মিতাত্র পূর্বাপদেকারস্যাপি দৃষ্ঠতে। তথা বাছৰা-হবি মুখ্যেতানিতি মাখ:। তেবু তৈশ্চেতি কিমৃ ? কামক কামক প্রছাতা মুদ্ধ: तृष्ठम् । উত্তে ठवक्तियावाजिराद्य ह न मार । वृद्ध वृद्ध ह विष्ठा यूक्र वृष्णम् । वृक्षमिणि किर १ राख व राख व श्रीका मधार वृक्तः। महारण रेकि किर १ र्रेनण्ड मुक्रेनण्ड প্রজ্তা युक्षिक्र वृद्धम्।

সহশব্দস্তীয়ান্তেন সমস্ততে। বর্ত্তনঞ্চেৎ। পুত্রেণ সহ বর্ত্ততে সপুত্রঃ সবিদ্যঃ সদর্পঃ।

প্র ১। ৭৭। চার্থে ছন্দ্রঃ। (৭৬)

অনেকমিত্যেব, চার্থা বছবঃ, তত্ত্র সমাহারেতরেতরয়েঃ

(৭৫) সহ। ইহ সংহতি নার্থণের ইত্যত আহ, সহশক ইতি, বর্ত্তনকেদিভি, বর্ত্তনং বিদ্যমানতা, অনেন গ্রন্থকা তদেবাসীকৃতং, ব্যাপকত্বাং। তথাচ তেন সংহতি তুল্যযোগ ইতি স্ত্রে তুল্যযোগ ইতি বিশেবণং প্রানিকমিতি জয়াদিত্যেনোকং। সহ পুরেণ, সহ পুরোহণীতে, সবন্ধভার্যঃ, সমিরোগোমান্। ত্রিপদেহপি সহ পঞ্চতিরমাত্যৈঃ সপঞ্চামাত্যো রাজা মল্লয়তে, ইহ প্রাদিরগায়নাদিনা মুজ্যতে ইতি তুল্যযোগঃ
সহার্থঃ। বিদ্যমানতায়াং তু ব্তাবুদালতং। অক্তচ্চ, সপ্র্রা দিশঃ, সবংসাঃ
প্রস্কুবতে, সভর্ত্কা গর্ভিণী, সপিতৃকা বিধবাঃ, সহর্ধাঃ ক্রীড়ন্তি, সশোকাঃ
সীদন্তি, সভয়া,বেপত্তে, সধনা স্তৃপান্তি, সকর্ত্ত্কং জগদনিত্যঃ, সকর্মকা ধাতব
ইত্যাদি। কচিবিদ্যমানার্থে নেম্বতে। সহেব দশভিঃ পুরেভারং
বহতি পর্দভী, বিদ্যমানের্থ দশত্ব পুরেভিত্তাই। তথা সহাকৈঃ পশ্চতি।
সহ মুকৈজন্তি, সহ পদ্ভিধ্বিতি, সহ বিধিরঃ শ্রেণিতি, ইহানাদীনাঃ বিদ্যমানতৈব সহার্থঃ। ইহ সহ স্বর্পগ্রহণাৎ, পর্যায়োনেষ্যতে।
তেন অমা পুরেণ সার্জং পুরেণেত্যাদিষু মাভূৎ।

(৭৬) চার্থে। চার্থা বহব ইতি। খদ্যুপি চক্তর্বর্থের, চশব্দোবর্ত্তে, তথাপি পরস্পরসম্বদ্ধার্থতা যত্র বর্ত্তে তয়োঃ সমাহারেতরেতরবেধাগরোর্বর্ত্ত-মানমনেকং স্বরুং সমস্ততেইত্যাহ, সামার্থ্যাদিতি। শুরুপ্রতিপাদ্য এর সম্বন্ধ-মাত্রে পরস্পরাপেক্ষা গৃহতে। যথার পরস্পরাপেক্ষা ভবতি ততুপর্বর্ণিতং প্রাণের । তত্র সমাহারলক্ষণমূহে সংহতি প্রধান্ত ইতি, হি শব্দোহবধারণে। সংহতেঃ সমূহস্প প্রধান্তঃ নতুব্যবস্থা। যুক্ত সমাহারস্করৈক্ষত্রনং। বাক্রে চকারে ল যুক্তাতে। বাক্রিভ্রেনিতি, সাহার্তি ক্যোভাতে। সমাসে জু, উক্তর্থাতা-চকারা ল যুক্তাতে। বাক্রিভ্রেমিতি, পীঠছেত্রোপানহমিতি, বদচ্ছোহন্দে সমা

সামর্থ্যদনেকং স্থবন্তং স্থিতি। স্মাস্ট দ্বন্ধ জে ।
ভবতি। সংহতিপাধাতো ছি সমাহার স্তান্ত বাক্ চ স্ক্চ
বাক্ স্বচং পীঠছ ত্রোপানহং। সংহত্যমান প্রাধাতো ছি ইভরেতরয়োগঃ, কুফার্ছনে ধ্বথদিরপলাশাঃ। সমুচ্চয়ায়াচয়য়েয়র
সামর্থ্যায়ান্তি সমাসঃ। সমুচ্চয়ে এক ত্রানেক প্রচয়ে গামশং
পুরুষং পশুমহরহর্মমানো বৈবস্বত্ত স্থিং নোপ যাতি, যন্মিন্
কালে গাং নয়তি তিন্মিন্ কালেহ্শং ন নয়তীতি ভিম্নকালতা।
দিসামর্থ্যম্। অলাচয়ে মুখ্য দিদ্ধাব প্রধাননিষ্পত্তো ভো বটো
ভিক্ষামট যদি পশুদি গাঞ্চানয়েতি।

१४। প্রথমী পূর্বী সমাদে। (११)

সমাসসূত্রে প্রথমানির্দ্ধিন্টং যৎপদং তৎপদং পূর্বাং নিপ-ততি। অধিন্তি বাজপুরুষ:।

হারে ইতি ট:। সংহস্তমানপ্রাধান্ত ইতরেতরবোগ ইতি সংহস্তমানামানবরবানাং প্রাধান্তং যত্ত স তথা; অতএবাব্যবাপেক্ষয়া বথাসন্তবং বিবচন বছ-বচনে ন্তঃ। কৃষ্ণার্জু নাবিতি। অত্ত কৃষ্ণান্ধোহজু নাথোভবতি, অজু ন-শক্ষ কৃষ্ণার্থোভবতি বৈশিষ্ট্যাৎ। একত্রানেকপ্রচর ইতি, একত্রিমারাৎ প্রাধান্তেন চানেকেবাং, সম্চীরমানতা ভিরকালত্বাদসামর্থ্যমিতি। আকাক্ষা যোগ্যভাসন্তিমং পদসম্হন্ত পরস্পরসম্বর্গার্থং সামর্থ্যং। অত্ত তু ভিন্ন কাল-ব্যোসভ্যভাবাদসাম্প্রমিত্যভিপ্রায়ং। বটো ভিক্ষামট গাঞ্চানরেতি, অত্ত-ভিক্ষাটনত্র প্রধানত্ত্বনিরপেক্ষ্যাদ্যাক্তক্ষাবির্হ ইত্যসামর্থ্য ।

(৭৭) প্রথমা। ইহ প্রথমেতানেন প্রথমান্তমূচ্যতে ইত্যাহ, প্রথমান্ত-মিতি। সমাসপদেন চ. সমাস প্রেম্চাত ইতি ব্যাচটে সমাস প্রে ইতি, অধিক্রীতি অব্যাহ সংযাদি প্রে অব্যামতি প্রথমান্ত মতোহবিশকঃ প্রান -মৃত্যতে। এবং রাজপুরুষ ইতার বহীতি।

१०। ताजन छानियूँ भत्रम्। (१४)

এর প্রথমান্তং পদং পরং নিপত্তি। দন্তানাং রাজা রাজদন্তঃ অন্তর্বনং অগ্রেবনং আদে বাসিতং ততোলিপ্তং লিপ্তবাসিতং নগ্নমুষিতং সপত্নীমাতা। দ্বন্দ্ব পুর্রপশ্ স্বাতীচিত্রে
ভার্যাপতী । জায়ায়া জন্তাবে দন্তাব শ্রাপ্তী দশ্যতী
জায়াপতী চ।

৮০। ধর্মার্থাদিষূভয়ম্। (৭৯)

ধর্মাথোঁ অর্থধর্মো শব্দাথোঁ অর্থশব্দো কামাথোঁ অর্থ-কামো চন্দ্রাকো অর্কচন্দ্রো অন্তাদী আদ্যন্তো সর্পির্মধুনী মধু-সর্পিয়ী গুণরদ্ধী রুদ্ধিগুণো ইন্দ্রায়ী অগ্নীন্দ্রো।

৮১। দ্বন্ধে যান্ত্রমূজাতাদন্তর্মাপাট্লঘৃক্ষর-মভ্যহিত্র যথোত্তরম্। (৮০)

দ্বন্দ্বে ঘান্তাদি যথেতেরং পূর্ববং নিপত্তি। হরিহরৌ

- (৭৮) রাজ। প্রথমান্তমিতি প্রান্ত নিপাতার্থ ইত্যর্থ: অতঃ পুত্র-পশৃ ইত্যাহ্যদাহত্য,। চিত্রাফাতী ইতি মানবিকে ইত্যধ্যাহার্যং। অনক্ষত্রা-পোহয়মারতঃ। জায়ায়াঃ ইত্যাদি জমিতি দমিতি আদেশো চ ভবতঃ প্রকৃতি-রপ্যবৃতিষ্ঠিতে।
- (৭৯) ধর্মার্থা। দরোর দে ধর্মার্থাদাব্তয়ং পূর্বং ক্লাক, অজাদ্যক্তাদিতবতি। ইল্রাগ্নী ইতি, ব্যন্তং অক্তব্দাহিয়তে অগ্নিসমীরশৌ দ্মীরণাগ্নী আকাশবায় বাঝারাশো, রহিক্ষয়ো ক্লারহনী লঘুদীর্ঘো দীর্ঘলমূ গভিহিংসোঁ, হিংসাগভী শীধ্ররে অ্রাশীধূনী হেত্লক্ষণে লক্ষণহেত্ ত্রীহিকালো কালত্রীহী দীপ্তিভং সনে ভং সনদীপ্তা, গভিবিনাশো বিনাশগভী, তত্ত্বীজে বীজতজ্ব।
 (৮০) হলে। হলে ব্যক্তং পূর্বং নিপভতি অজাদিচ অক্তবৈতি অজাদ্য

সিন্ধু শৈলো। বহু দেকত নিয়ম:, পটু শুরু মুদৰঃ। অজাদ্যদন্তং ইস্ত্রেয়্। অলাচ্ধবাধকর্ণ। লঘু করং, কৃশকাশং। অভার্হিতং. যুদিক্তিরাজ্জুনো মাতাপিতরো।

৮২ ৷ ঋতুনক্ষত্রবর্ণসংখ্যাঃ ক্রমেণ ৷ (৮১)

ঝারাদয়ঃ ক্রমেণ পূর্বাং নিপাকন্তি। হেমন্তশিশিরবসন্তাঃ
ভরণীকুত্তিকারোহিণ্যঃ আক্রানক্তিয়বিট্ শূদাঃ পঞ্চনট্।
সংখ্যায়া অল্লীয়। একাদশ দ্বাদশং প্রায়িকং সর্বানেক্রাভি•
চারদর্শনাৎ। উদ্থলমুমলে চিত্তরথবাহলীকে অক্লিভ্রুবং
দারগবং শরদ্গ্রীয়বসভেষু প্রায়শো দ্ধি গহিতং শূদ্বিট-

দত্তং তদপিপূর্কাং অলোহচ্ যন্ত তদলাচ্ তদপি পূর্কাং লখ্কারং লখ্যাত্রপরং তদপি পূর্কাং অভ্যহিতমপি। অথ ঘ্যন্তাদিন্ বলোব দ্যে প্রং পূর্বাং নিপততি। বহুদেকতা নিয়ম ইতি, সজাতীয়ের্ বহুদেকোনিয়মতে পট্টক্রম্পর ইত্যত্র পট্শক্ষ খ্যন্ত প্রাণ্ভাবঃ ইতর্রোরনিয়ম:। এতেন ত্রিপদে প্রাণ্ভাবি-ধিন বহুপদে ইতি ভাবঃ। লখুমাতেতি কিন্ গু পালক্ষান্তকে কাকোলীচিক্রবং। মৃথিষ্টিরাজু নাবিত্যত্র সোইত্বাদ্ভিত্তঃ। মাতাপিতরাবিত্যত্ত সহ-জ্বেপিতুর্শ্বাভা গৌরবেণাতিরিচ্যতে ইতি স্কৃতের্প্রাভ্রু ক্তরত্ব্য়।

(৮১) ঋতৃ। ঋতৃনক্ষত্রে সমানসরে, ইতি বিবক্ষাতে। ঋতৃর্বস্থাদিঃ, নক্ষত্রমবিস্থাদিঃ মাসোপি সমান সর ইতি বক্তবাং স চ চৈত্রাদিঃ। চৈত্র ভাজে পৌৰমাধে অন্তর্ত্ত প্রীমবসরে); জ্যেষ্ঠাভরণ্যে ভ্রুলমাধ্বের এগু ইরোনি রম ইক্ষেব্ধেরং। অনেকেরু ব্যভিচারং দর্শরিব্যতি। সংখ্যায়া অনীর ইতি অন্তর্ত্তরং বং তং সংখ্যায়াঃ পূর্বাং নিপভতি। একাদ্রশেভি একত দ্ব চ, বোড়শৈকাদশ চেতি দীর্ঘঃ। এবং হৌ চ দশ চ, বাদ্রশ; হাবিং শতিঃ, বাত্তিংশাদ্রঃ। অত্র পর্বাক্ষরচনত্বস্বি। মতভেদাদ্রম্ভন্ত্র্ প্রাক্ষ্বভারত কর্মধাররে ভত্তেদ্র্বাহরিষ্যতি। স্বাষ্ট্রেনাদশাদ্যবিভি টেরাগ্রে ব্যক্তির বির্দ্ধা এবাং ত্রিদ্বাধার বিত্তি প্রাথার বির্দ্ধা এবাং ত্রিদ্বাদ্যার বির্দ্ধা এবাং ত্রিদ্বাদ্যার বিত্তি প্রাথার বিত্তি প্রথার বিত্তি বিত্তি প্রথার বিত্তি বিত্তি প্রথার বিত্তি বি

ক্ষত্তিয়বিপ্রাণাং কাশকুশাবলম্বনং নরনারায়ণাবিত্যাদি বিপ-র্যায়দশনম্।

৮৩। वङ्बीरशे मश्चमीनिक्ठाविर्ण्यगाश्च म ७३ छामियू। (৮২)

বহুত্রীহো সপ্তম্যস্তাদি পূর্বাং নিপত্তি। কণ্ঠেকালঃ কঠেগড়ুঃ কথং গড়ুক্ঠঃ গড়পলক্ষিতঃ কঠোছুস্তেতি বিতাহে; নিষ্ঠা, কুতকটঃ প্রাপ্তজীবিকঃ; বিশেষণং, চিত্রগুঃ

তচ্ছাল্সং, ছলোবংশ্তানি কবরঃ কুবন্তি ইতি আয়াং। প্রায়িকমিতি বথোত্তরং বিবল্লায়াদ্ধ কুতঃখননং শিষ্টাম্শিষ্টত্বাং। তথাচ প্রীপতির্ন চণ্ডুলক্ষিন্দ্রালে ইত্যস্তরং। তণ্ডলক্ষিন্ধে, চিত্ররথবাহ্লিকো রাতকরাজ্ঞানো উষীনরভাজো উদ্ধলম্বলে, প্রতিষ্ঠালিন্দে ইত্যাদাবলাজ্ঞপি ন পূর্বং। অক্ষিক্রবং দারগর্বমিতি তুনোদাহর্ত্তব্যং তথৈব নিপাতনাং। কাশকুশাবলম্বন্দিত্যত্ত লখ্লারং ন পূর্বং নরনারায়ণাবিত্যাদ্যর্চ্চিত্তং ন পূর্বং বিশ্বক্সেনার্ভ্রেনা শুজাচার্য্যো অবভ্যাধকো দেবাম্বরে হস্ত্যমৌ ইত্যাদাবজ্ঞাদ্যদত্তং ন পূর্বং; মেধাতপদী দীলাতপদী লখ্লার্যং ন পূর্বং; কচিয়া তপশ্রতে শ্রুত্তপদী জোণভাব্যো ভীন্মজোণো শৃচিশুল্রাবিত্যাদে নালুপূর্বং বাহল্যাদ্ভ্রদ্প্রহ্ম।

(৮২) বহুরীহোঁ। নমু পড় শব্দাং সন্তম্যন্ত প্রার্ নিপাতো যুক্তাতে তৎ কথং পরনিপাত ইত্যতঃ সিদ্ধান্তরতি গড় পলক্ষিত ইতি। বিগ্রহে ইত্যনন্তরং মণ্যপদলোপ ইতি শেষ:। নমু কত কট ইত্যাক্ষা কৃত্যনক্ষ ক্রিয়াবিচনত্বন বিশেষণতাং প্রান্ত নিপাতঃ সিদ্ধ এব তৎ কিং নিষ্ঠাইত্যনে সত্যং কৃত্যন্ত্রকট ইত্যক্র ছরোরপি কৃত্যন্তরাহিশেষণত্বে কাত্যন্তর প্রাণ্ডাবার্থং। বলা তমুদ্যতনিশাতাসিং প্রভাগাচ ক্রিকীবিহুরিতি ভটিঃ। এবং কৃত্য সর্ক্র ভক্ল ইতি। নমু সর্ক্রনামসংখ্যরোক্রপসংখ্যানং কেনচিং কৃত্য তৎ কথং নোক্তমিত্যাহ সর্ক্রনাম সংখ্যে বিশেষণে ইতি। তেন বিশেষণ্ডা-

জাতে:-সাবস্বজ্ঞী পলাণ্ড্ৰজিতঃ নৃজ্ঞা। কালাৎ মাসোজালোহস্তেতি মাসজাতঃ বৰ্ষপ্ৰমিতঃ। স্থাদেঃ-স্থ-জাতঃ সুধহীনঃ কুজুজাতঃ।

দেব প্রাপ্তাব সিদ্ধঃ। তয়েমিথঃ সংখ্যেচেতিবক্তব্যং দ্যন্তঃ, ত্যন্তঃ, দ্বি-ভৌষুমাদিতি বিগ্রহঃ বিশেষণাত তু প্রাপ্তাবো যুক্ত এব. নাগ্রীতবিশেষণা বৃদ্ধির্মিশেষ্যেটোপকায়তে ইতি ভাষাং। তথা অনেকশো নির্জিতবাজকন্তঃইতি ভটিঃ। অধাপ্রধানং বিশেষণা বিশেষগমিতি কর্ম্পাবয়বৎ ইরাদি বাবছা, কথং তর্হি কর্ত্রালঃ প্রধানগিরিঃ অস্তসমূদ্রঃ কর্ত্রপ্রমঃ প্রমিবিপ্রঃ আদিবকঃ ইতাংগৌ বিশেষগ্রাং কর্ম্পাবয়ে কর্ত্রাদিপদানাং প্রাণ ভাষঃ, বছরীহে তিন তথা কলালকর্ত্রেঘটঃ, বিশিপ্রধানো দেশঃ সম্ভ্রান্তা নহী, প্রমকর্তৃকং কগং, বিপুপুর্সাং বৈবং চৃত্তরা রক্ষাঃ কর্মন্থারের হি কর্ত্রাদিপদানাং বিদ্ধান্তা মন্ত্রাদাদ প্রাধান্ত্রের শ্বরু তু তেয়াং সাধ্যক্রপেণাদানাৎ প্রাধান্ত্র্যা তথাহি কুলালঃ কর্ত্রা যাত্রিন ঘটে ইতি কুলালক্ত্রেঘিই সাধ্যম। এবমন্ত্রোপি। দণ্ড হন্ত ইতি দণো হন্তে যক্ত ইতি বিগ্রহঃ, এবং শ্বপ্রাণিঃ ইন্দুশেগরঃ চন্ত্রশেধরঃ পল্যনাভঃ উর্থনাভঃ, অভঃ প্রহরণেভ্যন্চ ক্ত ইতিনোকং জ্যাক্তিগণ্রাং। প্রহ্রণ্য ক্তেনোভয়-বেতি বহুক্তং, ভদপি ন বাচাং আহিভামিপাঠাবিভাষা।

(৮৩) জাতি। জাতেঃ কালাং স্থাদেশ্চ জঃ পরো বিনীরতে, সারস্বজন্ধীতি সারসো জন্ধে বয়া সা তথা জাতেরনাচ্ছাদনাবেতি তী, স্থজাতঃ স্বাণীতো নৃজন্ধো মাল্যধারম ইতি ভট্টিঃ। স্থপ তৃঃথ আলীক
করুণ কুপণ তৃপ্ত কৃছু প্রতীপ সোঢ় অঞ্চ দেশৈবেতে রুখাদয় ইতি নব্যবর্দ্ধমানঃ। আরুতিগণোহয়ং ইত্যক্তে। প্রাপ্তোদকঃ উপাক্তপশুঃ, তমুদ্দত
নিশাতাসিমিতি ভট্টিঃ। উদ্পূর্ণবাপঃ সংগ্রামে ইতি চঃ উদ্পূর্ণবাছিল-

৮৫। বাইইহিতাগ্যাদিয়ু। (৮৪)

এয়ু নিষ্ঠাদিকং পূৰ্বাং বা স্থাৎ। আহিতাগ্নিঃ জ্বাগাহিতঃ উদ্যতাদিঃ অস্থাদ্যতঃ, জাতপুত্ৰঃ পুত্ৰজাতঃ, জাতশাঞ্জঃ শাশু-জাতঃ, পীতয়তঃ স্থতপীতঃ, উঢ়ভাৰ্য্যঃ ভার্য্যোঢ়ঃ, গুঢ়প্রিয়ঃ প্রিয়গূঢ়ঃ।

৮৬। কড়ারাদীনি কর্মধার্যে। (৮৫)

কড়ারাদীনি শব্দরপাণি কর্মধারয়ে পূর্বাং বা নিপতন্তি। কড়ারজৈনিনিঃ জৈনিনিকড়ারঃ, গড়ুলকাণঃ কাণগড়ুরঃ অঞ্জকুজঃ কুজ্ঞঞঃ, খলতিখোড়ঃ খোড়গলতিঃ, গোরস্কঃ বুদ্ধগোরঃ, খেতকুষ্ণঃ কুষ্ণশেতঃ ইত্যাদি।

৮१। मत्रभागीरमकर्भरयोद्धरान्धे।.(৮৬)

ছল্ছে ভুল্যসাপাণামেকোহ্বশিষ্যতে। ঘটশ্চ ঘটশ্চ

ত্তি পরিতোহ মুরুদ্ধমিত্যাদি শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাৎ প্রায়িকমিতি ক্রমদীশবঃ।

- (৮৪) বাহিতা। নিষ্ঠাদিকমিতি নিষ্ঠাশব্দোহত্র ক্রপরঃ ইহাগ্যাদীনামে-বাহিতাদিভিরাহিতাদীনামেবাগ্যাদিভিরিত্যভয়থা বহুত্রীহিরেবেতি নিয়মাং আহিতাগ্রিঃ আহিতানলঃ ইতি পূর্ব্ববৈশ্ব ক্রন্স বহুত্রীহিরিতিমতমিতি শ্রীপতিঃ।
- (৮৫) কড়া। প্রাপ্তে বিভাষা, আদিপদাৎ কুজক্ষতিয়ঃ ক্ষতিয়কুজ্ঞা কাণর্ষলঃ ব্যালকাণঃ ত্রগধঞ্জঃ ধঞ্জত্রগঃ, খলতিকঠঃ কঠধলতঃ ইত্যাদি। কড়ার
 পঞ্জ কাণ কুজ থঞ্জ ধোড় ধলতি কুচ্ছু বৃদ্ধ পিসল ভিক্ষুক বরট শুক্র কৃষ্ণ
 ইতি বর্দ্ধমানঃ।
- (৮৬) সক। সমানং রূপং যেষাং তে সরপাঃ বিভাষা রূপেত্যাদিনা সমানস্ত সং, সরপর্যত্ত সভাবং, দক্ষণকোহত দ্বদারস্তকবাক্যপরং, সরপাশাং ইতি বত্তব্যন্মতম্বং, তেনায়ুমর্থং, দ্বদারস্তকবাক্যে স্রূপানাং পদানাং সরূপ-

ঘটো ঘটাঃ। সরপগ্রহণান্তিরার্থানাঞ্চ। নার্যা ব্রীহিমান মুর্থাঃ পাদা রশ্যান্তির ভূর্য্যাংশাঃ। একার্থানাং ভির্রন্তপাণাং কচিদেক-শেষোবক্তব্যঃ। ঘটশ্চ কুস্তশ্চ ঘটো। দ্বন্দ ইতি কিমৃ ? কেশা-কেশি।

৮৮। রদ্ধোয়ন তলকাণে স্ত্রীপুরটা (৮৭)

যুনা সংহাক্তোরদ্ধা শিষ্যতে। স্ত্রী চ রদ্ধা পুদ্ধতাতি।

বোশ্চ পদ্যোবেকং পদং শিষ্যতে, স্থাপ্যতে, অপরং নিবর্ততে, ঘট। ইত্যতঃ প্রাকু ঘটত ঘটত ঘটত ইত্যাধ্যাহার্যাং । সক্রপপর্যায়াভ্যাং বৃদ্ধঃ প্রায়োনে-ষ্যতে তেন একণ্চ হৌচ হোঁচ ইত্যত্র নৈকশেষঃ। নরু বৃক্ষাদিশব্দানাং প্রকৃ-ভ্যুপাত্ত সংখ্যানে একবচনং, দ্বিবচনবছ্বচনে নস্থাতামেব, পঞ্কপক্ষে একত্ব বদনেকত্মপি প্রকৃত্যর্থ ইতি বধাসমভিব্যঞ্জকানি বচনানি হ্যঃ। কিমেক-শেষবিধিনা কার্যাং। সভ্যং ব্যবহারোপায়িকত্বাদ্যাক্তিরের পদার্থ ইতি দর্শনে যথাদং শক্ষবিনিবেশাং যাবস্তব্যে পদার্থাস্তাবতাং শক্ষানাং প্রয়োগে প্রাপ্তে একশেষবিধিরয়ং, অতএব চুতপনসাদিত্বেন ভিন্না অপি সাধী রুক্লা ইত্যনে-নোচ্যন্তে, কিঞ্চ অনেক্সাণানেকশকো সুগণং প্রভ্যাস্থিতুং লশকোতি। শন্ত বুদ্ধিকর্ম্মণাং নিয়ম্য ব্যাপারাভাব ইতি দর্শনে তান্ প্রত্যায়িছেং প্রস্কানাং শকানামেকঃ শিষ্যমাণঃ সমুদায়ত বাচকোভবভীত্যকুমেয়ার্থমজিব্যক্ত, তাৎপর্যাৎ বিরুপোতি সক্ষপগ্রহণাদিতি। অভিধানাদিহ ন স্থাং। মাতা জননী মাতা বাল্ডা তে মাত্মাতরাবিতি ক্রমণীবর:। একার্থানামিতি স্বর-পস্ত স্বভাববাচিত্বাশ্লিকাক ভাবপি স্বক্লপার্থ প্রভাৱেশ বিদ্যুত এবেতি বক্লব্যাভি-শব্ধভেদাদর্থভেদ ইতি নয়ে তু, বহুলার্থঃ সার্ত্তব্যঃ। এবং বক্তদন্তশ্ন, কুটিলদন্তশ্চ, বক্ত দত্তো, কুটিলদখো। দ্বন্ধাকক চেৎ, ঋক্ চ अकृत. अठः পद्रानः।

(৮৭) বুলো। অত বৃদ্ধকো গোত্রনাচন্টে অতএব বক্ষাভি, গোত্রমেৰ বন্ধমাহঃ; তংপুনঃপৌত্রাদ্যপত্যং গোত্রং, মুবা চ জীবতি বংশ্রে সুবাগ্রজেহিপি, বৃদ্ধকি পূজায়াং, মুবা চ নিলায়ামিতি লক্ষ্যায়িব্যতি। তেন গোত্রপ্রত্যয়াজো বন্ধযুবভন্ধি চপ্রতায়ে তল্লকণকেও। গার্গান্চ গার্গায়ণশ্চ গার্গো, গার্গী চ পর্গায়ণশ্চ গার্গো) নেচ গার্গ্যবাৎস্থায়নো।

৮৯। পুমান ক্রিয়া। (৮৮)

স্ত্রিয়া সংহাজে । পুনান্ শিষ্যতে। তল্লকণে, দেবশ্চ দেবী চ দেবোঁ এবং ব্রাক্ষণে কুরুটো গোঃ স্থ্রী গোনো গাবোঁ শিবশ্চ শিবা চ শিবোঁ।

যুবপ্রত্যয়াষ্টেন সহ যুববচনেহবনিষ্টে। যুবপ্রত্যয়াষ্টোনিবর্তে। গোত্র-প্রত্যয়াষ্ট্রয়র্থ কি পুষ্টবিত। তমংপ্রত্যয়নিমিত্রকবিনাষে সতি অতস্তম-ক্ষণকেটের প্রত্যয়াষ্ট্রায় । তথাচ রুদ্রো যুনা তল্পনিক্ষের বিশেষঃ ইতি মুনিপ্রণীতং স্তাং। গার্গ্য ইতি গণাদিলো ষ্ট্রিতি গোত্রাপল্যে যন্ গার্গ্যয়ণ ইতি ইণ্ যণ্ হারিত্যাদিল্য ইতি টারনণ্। এবং দাক্ষিক দাক্ষা-স্রণক্ষ দক্ষী, এক এবোভয়ার্গলাগ্লেগ ভবতীতি। দ্বন্দ ইত্যের গার্গ্য গার্গারণোহণাক্ষে বৃদ্ধ ইতি কিমৃণ গার্গগরিগারণো। যুনেতি কিমৃণ গার্গগরিগারণো। হংং। বৃদ্ধ ইতি কিমৃণ গার্গগরিগারণো। যুনেতি কিমৃণ গার্গগরিগারণো। তল্পকতিক্তমপি বৈরূপ্যং। তল্পক ইতি কিমৃণ গার্গ্রমারনো, অত্য ভিন্নপ্রকৃতিক্সমিপ বৈরূপ্যং। তল্পত্র প্রবিষ্টি বক্র্যাং কুং সাক্তমপি ভাগরন্তিশকান্তাগর্ত্তিকট্রস্ব বৈরূপ্যং। অন্তং পুনর্নিয়মাভাবাং ভাগরন্তী ইণ্যপি মন্তে।

(৮৮) প্মান্। ত্রীলিঙ্গেন সহোক্তো পুংলিঙ্গঃ শিষ্যতে। ত্রীলিঙ্গোনিবর্ত্তি, জন্নগণে সভি, ত্রীত্কত বৈরূপ্য ইত্যর্থঃ। ব্রাহ্মণাবিতি ব্রাহ্মণত নাহ্মণীচেতি বাক্যং, এবং ধ্বানো; যুনোর্দ্মনস্তদিপ বাস্থতি জেতুমেবেতি মুরারিঃতথা স্থাক্ষণ্ড স্থাক্ষাচ শাক্ষেরী, ইহ বহুলাবিকারাৎ তন্মাত্রবৈষ্ম্যে সমানাকভাবের। ইহু ন স্থাৎ। কুশশ্চ কশাচ কুশকুশে, কুশশ্চ কুশী চ কুশকুশো, জাত্রকুশো দর্ভঃ কুশা রজ্জঃ কুশী ফাল ইত্যর্থকুত্মপি বৈষ্প্রং, সারূপ্যে লুনারং বিশেবঃ। ইমো কুশ্ভী ত্রীপুংসয়োর্ভের্যাং দুশ্ভিঃ। ত্রীপুংসয়োর্ভিয়াবেকাক্তাবিপি সারূপ্যে দুশ্ভঃ। ত্রেক্ষণ ইতি কিম্ ও ইক্তেন্তাপ্যে প্রান্ত্রপ্রাণ কৃত্মপি বৈরূপ্যং অন নির্মাভাবাৎ। ইক্তে এবং বঙ্গুণী

৯০। স্থ্রা ভাতী। পুরৌছহিত্রী। (৮৯)

স্বস্থ ছহিত্ভ্যাং দহোকো ভাতৃ পুত্রে) শিদ্যেতে। ভাত। চস্বসা চ ভাতরো. পুত্রশ্চ ছহিতা চ পুত্রে।।

৯১। তদाि निर्वे मर्दिखे हे श्रेम्। (৯০)

স্কৈতিবিজেদাদিভিরতৈয়েশ্চ সহোক্তো তদাদিঃ শিব্যতে। তত্ত্র তদাদো চ প্রমৃ। স চ বিপ্রশ্চ তোঁ। যশ্চ কশ্চ কো, স চ ত্বঞ্যুবাং স চ ত্বঞ্জহ্ঞ বয়ম্।

৯২। অনেকশফ গ্রাম্পশ্নীং সংস্থে-২তকণে দ্রী। (৯১)

*অতরুণান।মনেকশকগ্রামাপশূনাং 'সভ্যে সহোক্তো স্ত্রী

ভবে সর্কৌ মৃড়াবিত্যাদি, নহেকশেষনিমিত্তত স্ত্রী হক্ত বিশেষণং ভেদকং ভবতীতি মতং। পুমানিতি কিম্ ? প্রাকৃ চ প্রাচী চ প্রাক্ লাচ্চো প্রানিত্য-*
ব্যয়ং। তথা একক একাচ দ্বেচি দ্বেচ এয়ক্ত তিপ্রক ইত্যত্র দক্ষ এব নাভি-ধীয়তে কথ্যেকশেষঃ স্থাং ?

- (৮৯) স্বস্ত্রা। পুরো। ইহ স্ত্রাসহোক্তো ভ্রাতা শিষ্যতে, ছহিত্রা সহোক্তো প্রঃ শিষ্যতে। ইহ তল্পকণং নামুবর্ত্ততে। পৃথগে যাগঃ স্পটার্থঃ ইহ পুত্র-ভারোঃ প্রত্যেক মৃভর্বাচকতঃ হিতমেব সমানোদরোসিদ্ধস্থ স্থারিপি সমানত্বাদিত্যেকে।
- (৯•) তদাদি:। অত্ত তত্ত্তেতি তচ্ছকস্তদাদিপরামর্থক ইত্যাহ তদাদে । চেতি বিষয়সপ্তমীয়ং নির্দ্ধারণে বা। পর মত্র তদাদিগণ পাঠসাপেক্ষম্।
- (৯১) অনেকম্। অনেকঃ শফঃ ধুরোযেষাং তে অনেকশফাঃ অনেকশফান্চ তে গ্রাম্যপশবন্চেতি কর্মধারয়ঃ প্রাগক্তোহিপ তেষাং সজ্যে বতুত্বে
 বিষয়সপ্তমীরং। সভ্যস্ত তরুপত্বং ন সম্ভবতি নাপি তত্ত্যবচ্চেল্যং ভুকুপত্ববিভস্তবিশেষণানাং পশ্না ং বিশেষণমিত্যাহ, অতরুণানামিতি। অত্র পুমান্

শিল্যতে। গাৰ ইমাঃ অজা ইমাঃ। অনেকশফ ইতি কিম্? অখা ইমে গৰ্দভা ইমে। অত্ৰুণ ইতি কিম্? বংসা ইমে বৰ্কবা ইমে।

৯৩। অক্লীবেন সরপেণ ক্লীবমীস্টেক-বচনবঙ্গা (১২)

সমানরপেণারীবেন সহোক্তো ক্লীবং শিষ্যতে। অস্তৈ-কবচনবচ্চ বা স্থাৎ। শুক্লঃ পটঃ শুক্লা শাটী শুক্লং ব্রুং তানি ইমানি শুক্লানি তদিদং শুক্লঘা।

৯৪। মাতৃ শ্ব্রজভ্যাং বা পিতৃশ্বস্থরো। (৯৩)

মাতৃ শ্বজ্ঞাং সংহাক্তো পিতৃশ্বস্থরো বা শিষ্টেত,। মাতাপিতরো পিতরো বা, শ্বজ্ঞারে শৃশুরো বা ।

স্ত্রিরেতি পূংসঃ শৈবে প্রাপ্তে স্ত্রীশেষো বিধীণতে ইতি জরাদিতাঃ। গাব ইমা
ইতি গাবশ্চ ধেনবো গাবশ্চ বুষা ইমা গাবঃ। ইমা ইতি স্ত্রীত্বং বানক্তি। এবং
গাবোঁ চ নীলো গাবোঁ চ নীলো নীলোঃ। গাবঃ, অজাশ্চ ইমে অজাশ্চ ইমাঃ
এবং মেষ্য ইমাঃ ক্ষিয়েইমাঃ। সজ্ল ইতি কিম্ণ গোশ্চ ধেনুশ্চ গোশ্চ ব্ৰভশ্চ
ইমো গাবোঁ। যদ্যপি দ্যোরপি সজ্যো ভবতি তথাপি বহ্ববয়বোহত বিবক্লিডঃ। প্রাম্যেতি কিম্ণ ক্রন্থাশ্চ ক্রন্থাশ্চ ইমে ক্রন্থাঃ, ক্রবশ্চ মূগাশ্চ
ক্রবশ্চ মূগাঃইমে ক্রবঃ সারূপ্য তল্লক্ষণ ইতি ইহ স্থাতে, তেনমেষ্যুরভাঃ।

⁽৯২) অক্লীবেন। নপৃংসকানপৃংসকরোঃ সহোক্তো নপৃংসকং শিষ্যতে।
অন্ত শিষ্টক্ত একবদ্রপঞ্চ বাস্থাৎ। শুক্রঃ পট ইত্যাদি, পটাদীনাং প্রয়োগোলফ প্রদর্শনার্থঃ, বহন্দ্রীমপ্যফলেহর্থজাতে করোত্যসৎকারহতামিবোক্তিমিতি ভারবিং, সরূপাণামিত্যনুর্ক্তো সরূপেণেতি স্পষ্টার্থং, অক্লীবেনেতি কিম্ গ শুকুঞ্চ শ

⁽১৩) মাতৃ। বথাক্রমমিতিশেষঃ। তেন মাত্রাসহোক্ষে পিতা ধ্রু। শৃত্রঃ শিষ্যত ইত্যুগ:। অত পিত্রাবিতি প্রকৃত্যন্তরঃ মাত্রপিত্রার্থং

৯৫। পর্^{থী} লিঙ্গং দ্বন্দ্তৎপুৰুষকর্ম-

স্বন্ধাশিষু পরং লিঙ্গং স্থাৎ। কুরুটম্যুর্য্যা ময়ুরীকুরুটো। তৎপুরুষে অদ্ধপিপ্লা রাজকুলম্। কর্মধারয়ে মুগতক্রঃ কর-পদ্ম।

৯৬। পূৰ্বমশ্বভ্ৰয়োঃ। (৯৫)

অসমহারে অধবড়বয়োঃ পুর্বাং লিস্তং ভাং। জন্মবড়বে। ।
১৭। অন্সবৎ প্রাপ্তাপনালম্প্রাদিপুরে
ইৎপুৰুষে। (১৬)

জনকত্বসমান্তাং সংস্থাবপি সংক্ষাধশুরার্থি ভদপভ্যোধহনুসম্বন্ধ সামা-ভাইন্নকশেষ ইতি প্রপঞ্চ।

- (৯৪) পর:। হলেহের সামাহারেতরঃ সচোভয়পদ্র নান, তত্র সমাস,
 লিঙ্গাবয়ববিধানমনর্থকং। স যদা ভিন্নলিঙ্গাবয়বো ভবতি, তদা পূর্ব্বোভরয়োর্ভিন্নলিঙ্গয়োরর্থগ্রাহকমেকং নান্তি, যেন সম্দায়োরস্পিশিশুতে।
 উভাভ্যাং যুগপদ্ সন্থবাৎপ্রত্যাদেশং কর্ত্তুং ততঃ পর্যায়েগ ভ্রতে। তবৈবোলাহতবান্। কিঞ্চ পরং লিঙ্গং, পরপদশ্র লিঙ্গমিত্যর্থঃ। তেন অপ্ররা,
 যক্ষরক্ষোগন্ধর্বভিন্নরা ইতি তংপুরুষশ্রোভরপ্রধানমান্তরপদশ্র লিঙ্গং
 ভবত্যের তং প্রত্যনর্থকোবিধিঃ। যন্ত, প্রপ্রাদার্গতবান্, এতেন শেষোহিশি
 ব্যাব্যাতঃ। সমাসার্থক লিঙ্গবিধানাং ত্রিশেষণ্যাঞ্পি লিঙ্গবিধান
 মুপপন্নং পূর্বে জি মুক্তেঃ।
- (১৫) পূর্কা:। ইহাশবড়বয়োরিতি নির্দেশাণিতরেতরবোগে বিধিরয়-মিত্যাহ, অসমাহার ইতি, ইহাপিপূর্কাং পূর্কাপদসম্বন্ধি, দ্বিত্বসভন্তরং। তেনা-শবড়বা:।

প্রাপ্তাদিপূর্বে তৎপুরুষে বাচ্যানিসং স্থাং। প্রাপ্ত-জীবিকঃ গাপরস্থাঃ গলংকুমারিঃ নিকোশামিঃ প্রতিগতো-২কং প্রত্যকঃ পটঃ।

৯৮। পথঃ সংখ্যাবায়াৎ ক্লীবে। (৯৭)

ক্তসমাদান্তঃ পথঃ সংখ্যাব্যয়াৎ পরঃ ক্লীবে স্থাৎ। তত্ত্ব সংখ্যাপুর্বে। দ্বিডঃ। ত্রিপথং অপথং বিপথং কাপথং, কণং ত্রধ্যোবিপথঃ কদধ্য কাপথঃ, ব্যবস্থিতবিভাষানুরুতেঃ, নাম্য-পদার্থে, অপথোদেশঃ।

৯৯। मरख्डा ही र वर्ष्ट्री भीन दिन् । (৯৮)

- (৯৬) অন্তবং। পূর্কশকঃ প্রত্যেকমভিসম্বধ্যতে,। প্রাপ্তপূর্কে আপনপূর্বে অলং পূর্বে চ তৎপুরুষে পূর্ব্বোতরপদাভ্যামন্তর সমাসঃ, বাচ্যার্থস্য
 যনিকং তদ্ভবতীত্যাহ বাচ্যালিজমিতি। প্রাপ্তক্ষীবিক ইতি প্রাপ্তাপরেতি
 সমাসঃ। অলং কুমারিরিতি অলং কৃতঃ কুমার্যাঃ অলং কুমারিরুবা, অলং
 ভূষণ ইতি সমাসঃ। নিক্ষোশান্বিরিতি নির্বতঃ কৌশন্তা। ইতি বিগ্রহে নিরা
 দয় ইতি সমাসঃ। প্রত্যক্ষ ইতি অত্যাদয় ইতি সমাসঃ।
- (৯৭) পথা। অব পথশকা কিম্মুমদন্তা, কিন্তা সমাসাহৈতকদেশ ইতি সন্দেহং নিরস্যারাহ কতেতি, তত্র সংখ্যা প্র্রেকোদিগুরিতি নেষ্যতে ইতি শেষা। সমাহার দিলোঃ ক্লীবমেকং সমাহারে ইত্যনেন ক্লীবন্থং সিদ্ধং। তাদ্ধতার্থস্থ ত্ বাচ্যলিক্ষত্বং। তথাচ চতুপ্পথং পঞ্চকপালঃ স্পাং। তৎপুরুষ্টামুর্বেঃ, ত্রিপথমিতি ষ্ঠীসমাসাং। ততোবক্ষ্যতি, নাক্সপদার্থ ইতি, ঝক্পথি প্রপ্রতিং, অপথমিতি নপন্থাঃ অপথং নঞ্জং প্রুষাদ্বত্যং। এবং বিরুদ্ধঃ প্রাং বিপথং কুংসিতঃ পন্থাঃ কাপথং। কথমিত্যাদিঃ, অব্যাপ্তিং পরিহরতি ব্যাস্থিতি। অক্সৈক্রচন্বচ্চেতি ব্রত্যতঃ কৃতসমাসাইস্কদেশনির্দ্ধোং অপন্থাঃ অতিপন্ধ। ইত্যাদিরু ন ক্লীবম্।
 - . (১৮) সংজ্ঞায়াং। তৎপুরুষে পরলিঙ্গতাপ্রাপ্তে ক্রীবং বিধীয়তে।

উশীনরাভিধানে ষষ্ঠান্তাৎ পরা কছা ক্লীবে স্থাৎ। সৌশ-মিকছ্ম্। সংজ্ঞায়াৰিতি কিন্ ? বীরণকছাঃ পর্কাতঃ। উশীনরেম্বিতি কিন্ ? দক্ষিণকছা নাম পর্কাতঃ।

১০০। উপজ্জোপক্রমৌ उमानिवकथरने।(১৯)

ষষ্ঠীতৎপুরুষে হয় ক্লীবে স্থাতাম্। তারারাদিত্বকথন-থেকং। পাণিনোপজ্ঞমকালকং ব্যাকরণং চাল্রোপজ্ঞম-সংজ্ঞকং নন্দোপক্রমাণি নামানি।

১০১। मट्डिख्तामंत्र्यार्थीनताब्दैः। (১০০)

ঈশ্বরার্থাদমনুষ্যার্থাচ্চ ষষ্ঠ্যস্তাৎ পনা সভা ক্লীবে স্থাৎ। ঈশ্বরসভং ইনসভং রাক্ষসসভং পিশাচসভম্। অরজ্ঞে ইতি

উশীনরো দেশভেদঃ, তেরু সংজ্ঞায়াং নামি বাচ্যে ষঠ্যাঃ পরা কন্থা ক্লীবে বিধীরতে। উশীনবদেশৈকদেশঃ কন্থা, সৌশমিকন্থমিতি স্বস্তু শ্রেষ্থ্য স স্থামস্তস্থাপত্যং সৌশমিঃ, ভক্ত কন্থা ইতি বিগ্রহঃ। এবমার্ছেঃ কঃ আর্দ্ধিং, ভক্ত কন্থা। সংজ্ঞায়ামিতি কিমৃ গ্রীরণ্কন্থা। উশীনরেছিতি কিমৃ গ্রাফিকন্থা নামপর্বতঃ।

⁽৯৯) উপজ্ঞো। উপজ্ঞায়তে ইত্যুপজ্ঞা, সোপসগাঁদিতি ভাপ্। উপক্রমতে ইত্যুপক্রম: ঘণ্। তদাদিত্বপনে ভাজ্যামাদিত্বপনে গম্যে এতে
কীবে জাভাম্। পাণিনোপজ্ঞমিতি, পণিনোহণত্যং পাণিনস্তজ্ঞোলক্ষা
অকালকং কালাধিকাররহিত: তেন প্রথমমুপজ্ঞায়তে ইত্যর্থ:। অব প্রাচেন্
তসোপজ্ঞং রামান্ত্রপমিতন্তও ইতি কালিদাস:। নন্দোপক্রমাণি নামান্ত্রি
মন্দেন আদানুপক্রাম্যন্তে ইত্যর্থ:। তাবিতি কিম্ । বাদীবিঃ প্রোকঃ। তদ্দপ্যাদিকধননের। অনাদিত্বপন্ত ইতিকালিজ্ঞাবেদঃ।

⁽১০০) সভে। ঈশ্বরশ্চামনুষ্যশ্চ নিশ্বরামনুষ্টো তাবর্থে। বস্তু গুলাক্ষ্ বঠ্যজাৎ শালার্থা সভা ক্লীবে তাৎ। ঈশ্বরসভং ঈশ্বরগৃহ্যিতার্থ্য। ইছে-শ্বরার্থত্বেন গ্রাপ্তের রাজশক্ষঃ পর্মুক্ততে ন তু তদর্থ ইভি বিতক্ষাভি । কঞ

কিষ্ ? রাজসভা। কথং মৃপতিসভাষগমদিভি মৃপত্যপদক্ষিতা
সভা মৃপতিসভা ইতি শাকপার্থিবাদিছাং। অমমুষ্যার্থাদিভি
কিষ্ ? নরসভা। অমমুষ্যা রক্ষঃ পিশাচাদয়ঃ, তেন দেবসভেতি।

১०२। जनान है। (১০১)

অশালার্থা চ সভা ক্লীবে স্থার্থ। স্ত্রীসভং গোপীসভং তৎসমূহ ইত্যর্থঃ।

১०७। ছाয়ी वहद्य वीश्याद्य। (১০২)

ষ্ঠীসমানে বহুত্বে চছায়া ক্লীবে স্থাৎ। শলভানাং ছায়া-শলভচ্ছায়ং বহুত্বাদন্তত্ত বৃক্ষচ্ছায়ং বৃক্ষচ্ছায়া বা।

্মিতি নৃপতিসভামগমনবেপমান ইতি কীচকবধে প্রয়োগঃ। ইহা
মন্ত্রস্থাশকো রাক্ষসাদে রিড়ঃ, ন ত্বস্তুত্ত ভেনামন্ত্রস্কর্তকেচেতি স্ত্ত্ত প্রেক্সন্থার ত্তিকটু ইত্যুদাহতং। কিঞ্চমনুষ্যসদৃশগ্রহণাৎ কাঠসভমিত্যপি স্থাৎ।

- (১০১) অশালা। অশালাথা সমূহার্থেত্যর্থ:। পৃথরে যাগকরণাৎ পুর্বেষিক্তে বিশেষোনাজীত্যবধেরং। 'তেন নরসভং রাজসভ্যত্যিশি সাধু:। ভর্হি কথং ধ্বতিসভেতি, ইহাপি স্বত্যপলক্ষিতা সভেতি ব্যাব্যেরং। শালাথা তু অনাথসভা, অনাথকুটীত্যর্থ:। সূর্বোর্ণে গৃহশশাভ্যামিতি বক্তবাং। গহন্ত সূ্বা গৃহস্থুবং শশস্তোর্ণা, শশোর্ণং। কেচিজু ভাৎপরক্ত চ প্রক্ত স্থাবি হিছিও। ভগণং তহ্কুমক্রনদ্বতেন, শশাহ্বা গৃহাৎ সূ্বা ভশস্বা হ্রবোগণ ইতি।
- (১•২) ছায়া। ষষ্ঠীসমাসে পূর্ববেদার্থবহুতে প্রেয় ছায়া ক্লীবে

 স্যাৎ। শিষ্টাম্মবোধার হুয়াপ গৃধুছারে বক্লখিনী। অকান্তা মার্থছারমিতি

 ছাট্টঃ। ব্যাছারমিতি বৃক্ষম্য বৃক্ষরোধে ত্যর্থঃ।

১০৪। দেনাশালাসুরানিশাঃ। (১০৩)

अडाह क्छांखाथ क्रीटन वा खुः। भक्तरमनः भक्तरमना ना रभामालः रभामाला ना यन्छ्द्रश्यवछ्द्रा वा श्रीनेभा श्रीनेभा ना।

১०৫। পুरचेंट्सेताजें होंगगीर । (১०৪)

অক্ট পুংসি স্থাৎ। পূর্বাক্ট মধ্যাক্ট রাত্রোইগণাৎ অহোরাত্রাবিমো পুণ্যো পশ্চিমরাত্রঃ। গণাৎ ক্লাবে গণরাত্রম্।

५०७। अरहीं३म्मिनशूर्गी९। (५०৫)

অহঃ পুংদি স্থাৎ। দ্ব্যুহঃ ত্রাহঃ একাচঃ। স্থাদনপুণ্যাৎ ক্লীবে স্থাদনাহং পুণ্যাহম্।

⁽১০৩) সেনা। খনিশ্যিতি শূনাং নিশা খনিশং। যত্ত ষ্টা নিশি খানঃ খনিশং খনিশা চ সেতি ত্তিকাগুলেখঃ।

⁽১০৪) পৃংসি। কৃতসমাসাভাইক ইহ গৃহতে। পূর্মাক ইতি, পূর্মক তদহন্তেতি কর্মনাবরে পরলিকপ্রান্তে। পৃংসি বিনীয়তে। নাত্র-চাহগণাদিতি চশব্দোভেদে রাত্র: পূন:কৃতসমাসাত্তঃ পৃংসি ইয়তে ন তু গণাং। অহোরাত্রাবিতি দল্পে পবলিকতাপ্রাপ্তে নিধিঃ। পশ্চিমরাত্র ইতি কর্মনারয়ঃ। এবমহন্চ রাত্রিশ্চ সমাহারেইহোরাত্র: ক্রীপৃংসাদিনা নিপাতঃ। গণাং ক্রীবে ইতি গণাডাত্রং ক্রীবেহনুনিয়তে। রাত্রিশব্দোহত্রাহোরাত্রগালিবাং। গণানাং রাত্রীণাং সমাহারঃ সংখ্যাপ্র্বেলা ছিঞ্জঃ। রাত্রীণাং গণ ইতি রাজ্বনাদিত্বাং পরনিপাতঃ রাত্রেব্বেত্যাদিনাহং।

⁽১০৫) অহো। অহা কৃতসমাসান্তঃ পৃংকি তাং। বয়োরছোঃ
সমাহারঃ; ক্রীবমেকং সমাহারে ইতি ক্রীবতপ্রাপ্তো পৃংকি বিদিঃ। একাহ
ইতি কর্ম্মাররে পরলিস্বভাপ্রাপ্তো; স্থানি প্রাাৎ ক্রীব ইতি পূর্বভাস্থান্তঃ।
কথং স্থানাহমিতি পর্যায়বাং, নৈতদন্তি স্থাননাক্ষাহত্ত ত্যকাব্যবার্থঃ
প্রশন্তবাচী মহলার্থো বা।

५०१। अक्किम् यह क्रीटवे हो। (५०७)

ক্লীবে পুংমি চ অন্ধৰ্চালয়ঃ হাঃ। আন্ধৰ্চমন্ধৰ্চাঃ শতমানং শতমানঃ অফাপদমন্তাপদঃ ইত্যাদি। অসমাসে চ যৃথং যুথঃ কৰ্মা কৰ্মা ইত্যাদয়ঃ।

১০৮। অব্যয়ীভাব কৈ। (১০৭)

(১०७) व्यक्तकान्यः। हकायः पूरमौष्ठि ममुक्तमार्थः। श्राहार्द्धः व्यक्तक ইতি। অর্দ্ধং ন পুংসক্ষিতি স্থাসং। ঋক্ প্রিপ প্রপ ইত্যংস্থাসাভঃ। অষ্টাপদনিতি পর্যুদানে নঞ্, বধারু চিসংজ্ঞায়ামিত্যত্র অষ্টনোদশাদাবিতি দার্ঘ:। অসমাসেচেতি গণপাঠাদিত্যর্থ:। ক্ষপয়ত্য ভভং কর্ম কর্মাণং চিমুতে ভভমিতি প্রয়োগঃ। আদিশব্দাৎ কার্যাপুণ গোমর চষক শীধু রুচক শব্দ পদ্ম গৃহ দিবস শরাসন বাসর অন্ধকার রশ্মীক চক্ত কর্ম্ম কার্পাস ধর্ম মোদক মান বিমান মলিন ধলীন করিষ চরণ স্থুবর্ণ চক্র বজ ছত্র পবিত্র সার গুড় সৈন্ধব ঔষণ আঢ়ক জোণ বারবাণ কবচ বেণু ইত্যাদি। দিং মাত্রমিদং লিম্বত্ত লোক-ভএব ভেরং। নমু-সুত্রোদ্যম মধু সম্বমোপবাস বনবাসাদ্যোহণি তত্র পঠিতাঃ; उंदु उन्ममत्रिंगरहन व्यक्तिकारि चुलानीनाः शुःखानाः देवनिकः अविभित्त । नम् जीविज्ञानाश्वत्रवाषीनामिव क्रियविज्ञानाः नगः। षीनामिव पुरविज्ञानाः तुक्या-भीनाभित, मर्कालकानाः उद्योगीनाभित, कालकानाः युवानाभीनाभितास्याजारा यामिशितमाचित्राजि, कित्मकत्मत्भाभकात्मन मण्डः व्यवसीखात्वज्द-जनरवानवन्तारंकी जरश्रूककर्यभानत्त्र ह जावनवन्त्रः कार्या। यदः जनस्यना-দত্তদপ্যভিহিতমাচার্ট্যে:। অথ তদপি তত্ত্বৈব প্রতিপত্তব্যমিতি চেৎ, সত্যৎ मर्त्रकर्याद्यः विवानः। क्रिक्षं (क्रांत्रनानि निकारकरणामुणारकः। यदाः नेषा-পরশক্ষে নির্বিষ্ঠ নি পুংলিকো জলজে তৃতর্বলিকো। ধর্ম্মনক স্বাস্থ ওণবিশেষ प्रशिकः, ७२ मार्गत नशूरमकलिकः। मात्रमंक छैरकाई श्रुशिकः। कमनमान है । अधापनत्भाष्य मभूरमक्षित्रः । देनजरमात्रमिष्ठ । देमस्वनत्सानवत्भ উভর্গিকঃ, সিদ্ধুদেশোন্তবে তু বাচ্যুলিকঃ। এব্যক্ততাপি।

(>• १) वर्गत्री। ठावूक्डेश न नर्सद्खिष श्रुनोष्टि निवृष्टम्।

क्नीत थार। वशिक्ष. (উপর্ক্ষনিত্যাদয়:)। ১০৯। ক্রিয়াবিশেষণী কর্ম চ। নপুংসক্ষী (১০৮)

সাধু ভবানান্তাম্। (শীত্রং গচ্ছেত্যাদয়ঃ)।
১১০। ক্লীবমৈকং সমাহারে। (১০৯)

সমাহারে দ্বিগুঃ দ্বন্দ্র ক্লীবমেকবচনং স্থাৎ। দ্বিপাত্রং

(১০৯) ক্লীবং। সমাহারেছভিধেত্রে বিশ্বর্থ স্থা বিহিতো, অভতাবের ব্যাকরোতি বিশুঃ বন্দুল্টেতি। নবনেকার্থাভিধারিনঃ শব্দ একাজিধারিছেবচন শতৈরণি শক্তে। কর্মমুখং শকানামধাভিধানক সভাবসিদ্ধান তথা-

⁽১০৮) किया। विरमयगरमकाधिकवर्गर, कियाबा विरमयगर। कियाविरमयगर অভেদবিবক্ষবা বিভক্তিবিপরিণামেন নপুংসকঞ্চেত্যকং। ক্রিয়ারা একড়াবি-শেষণস্থাপ্যেকতং। কর্মাত্রত বিত্তীয়াকারকবিধাবেবাভিধীয়তে। ধাত্রর্থোপীদ-মেতভ্যাং শীড্রাদিবদিশিষ্যতে ইতি মডে ইদমত্র ছীয়তে ছাত্রৈঃ অংশা এনদীহ चीत्रटा व्यशीत्रादेनः। এতদিহ चान्त्रार পচতি মাধান व्यथ এन पिर कार्रिः স্থাল্যাং পচতি মাধানিতি বিতীয়ায়ামেনং স্থাৎ। বিতীয়াসমাসক শীস্তং গতঃ শীন্ত্ৰগতঃ। স্তোকং গতঃ স্তোকগতঃ । কারকবিধো স্তোকং বিধ্যতি স্তোকবিৎ, স্তোকাত্তঃ স্তোকার্থঃ। কর্ম্মোপপদতাৎ কিপ্নি নিত্যসমাসে ছৌ স্তঃ, অক্সত্র নাভিনীয়তে। স্তেইকং গত্তেতি ন বঠী। স্তোকং স্থাপ-বতি ছাত্রমিতি কর্ত্তঃ কর্মত্মকর্মকরাৎ, স্থিতানি সুধ্মগারাণি ছাত্রস, অধিকরণে ক্তঃ স্তোকং ভীত ইতি কর্ত্তরি ক্তঃ। কথং স্তোকঃ পাকঃ রুদন্ত-বিশেষণত্বাৎ 1 ক্রিয়াবিশেষপত্বেন তু স্তোক মোদনম্ব পাক ইতি স্তাদেব। কিঞ্চ ক্রিয়ায়াঃ সাধ্যত্তে ভবিশেষণ স্যাপি সাধ্যতে কর্মপ্রত্যয়েহপি তক্স:নোক্তা-थक्र भीज्ञत्वापनः भठाए । वर्षमानमिखास नाक्षकार ज्ञापीनार क्रिमाविट्य-यन कद्रवम् । अटकन वीकाल कार स्थान नाति ॥ यथ वृःवानीनार वा स्थः পচতি তৃঃৰং পচতি তৃঃবেৰ পশ্চতি ইতি সলক্ষণং ব্যাচক্তুঃ৷ অব্যশ্ববিশেষণ-यि क्रीवयण्याना । ज्या नयस्य वियव थाणः एति थाणः नम्रम् অতঃ প্রবিশ্ব গরারামত্তোকবনরাজিনীতি ভাগবতম্।

অখনড়বং কার্পদাদং। কথা বিদিভিদিভিদেরিতি পুংস্তং সূত্রে লিগবচনমতন্ত্রনিতি।

১১১। দ্বন্দ্বী ২র্বাদে চরণানাং স্থেনো-লু ডি। (১১০)

চরণানামসুবাদবিদয়েছেনোলুঙ্ প্রয়োগে দক্ষঃ ক্লীব-মেকবচনং স্থাৎ। উদগাৎ কঠকালাপং প্রত্যন্তাৎ কঠকো-থুমা, চরণঃ শাখা তদ্বান্ বিপ্রশ্চ। অমুবাদ ইতি কিম্! উদগুঃ কঠকালাপা:।

বচনসামর্থ্যাদভিদেশোহয়: বিজ্ঞায়তে। সমাহারে একং ভবতি একবদর্থোভবতীত্যর্থঃ। নত্ত্বেজ্যমের বিধীয়তে। অব সমাহরণং সমাহারঃ
সম্পায়ঃ সচৈক এব অত্র স্থায়প্রাপ্তমেবৈকজং কিং লক্ষণেন, মৈবঃ সম্হিভৌহনক্তঃ সম্হ ইতি দর্শনেন অনেকার্থকত্বাং। সম্হট্মের বচনং ন সিণ্যভীতি লক্ষণমভিহিতং সম্হিভ্যোহক্তঃ সমূহ ইত্যত্র দর্শনে তু ম্পট্টার্থমূক্তঃ।
স্থায়লভ্যাচ্ছকোহর্থঃ প্রপ্রতিপদোমন্দ্রিয়াং ভবতি। কান্তদ্পদমিতি।
বদ্দ্হোঘন্দে সমাহারে ইতি টঃ। কথমিতি ক্লীবে মুম্ স্থাত্তদভাবাং কবং
অয়ং প্রয়োগ সাধুরিভিভাবঃ। প্রে লিঙ্গবচন মতয়মিতি ছালসত্বাদিতি
সিদ্ধং। আগম শাসনমনিত্যমিতি বা।

(১১০) ছন্দো। প্রমাণান্তরপ্রতীতার্থন্ত শব্দেন সংকীর্ত্তনমন্থ্রাদঃ।
কঠকোথ্যমিতি কঠেন প্রোক্তং ছন্দোহণীয়তে কঠঃ কৌশিকাদিত্য শ্ববিভ্যোণিনিতি প্রোক্তার্থে নিন্। তদবীতেবেদবেতি বিহিতস্তাণঃ কঠচরকার্নু
গিতি লুক্। কুথ্যিনা প্রোক্তং ছন্দোহণীয়তে কৌথুযাঃ। স ব্রহ্মচার্যাদেঃ
সজ্লাদৌচেতি টিলোপঃ। তেন প্রোক্তমিত্যপ্। তথা কলাপিনা প্রোক্তং
কলাপিনোহনিত্যপ্, তাজ্যামধ্যেত্বেদিত্রপ্রিহিতস্যাণঃ প্রোক্তার্নিতি লুক্।
স্পত্রচর্বানামিতি বত্রচন্মতন্ত্রম্। শিস্তৈশ্ব বহুত্ব এবোলাহরপ্রত্যুদাহরণানি নিদ্নিতানি, চরণ্শকার্থং বির্ণোতি চরণঃ শাখা তহান্ বিপ্রশেতি।
স্পত্র তথান্ এবাভিষতঃ স্থেলালু ভি শাখাবানন্বাদে ইতি ক্রমণীবস্ত্রা-

১১২। যজুষ্কতৃনামনপুংসকানাম্। (১১১)

্যজুর্বেদ্বিহিতসদোমক্যাগনোং শুক্লীবানাং ছল্ভঃ ক্লীব-মেকং স্থাই। শুক্লিখনেশং। শুক্লীবানানিতি কিমৃ ? রাজসূর বাজপেয়ে।

১১৩। সমীপাধ্যয়নানাম্। (১১২)

পাঠে সন্ধিকৃষ্টানাং দ্বন্ধঃ ক্লীবমেকং স্থাৎ। পদকক্ৰমকং ক্ৰমকবাৰ্ত্তিকং। সমীপেতি কিমৃ ? যাজ্ঞিকবৈয়াকরণৌ।

১১৪। অপ্রাণিদ্রব্যজাতীনাম্। (১১৩)

তুদনাৎ কঠকালাপং প্রত্যন্তাৎ কঠকোঁথুমং। যদ্য যজ্ঞে বিজ্ঞাতীনাৎ তিথি-ঘাতিভির্নিত্মিতি ব্যোষঃ। কচিত্ব প্রত্যন্তাৎ কঠকালাপ মুদ্যাৎ কঠকোঁ-থুম্মিতি চ পাঠঃ। যত্র তু প্রথমোপদেশস্তত্ত্ব প্রত্যুদাহরনং। ত্থেনোরিভি কিং গ আনন্দিয়ুঃ কঠকালাপাঃ। লুঙীতি কিং গ অতিষ্ঠন কঠকালাপাঃ।

- (১১১) বজুং। ইহ ক্রতুপদেন সসোমকবাগ এবোচ্যতে ইত্যাহ, সসো-মকেতি অর্কাখনেধমিতি অর্কাণ্ড অখনেধান্ডেতি বিগ্রহং। বজুরিডি কিং ! ইবু বজুো উভিদবলপ্রদৌ এতৌ সামবিহিতো। ক্রতিতি কিং ! দর্শ-পৌর্ণমান্ত্রো।
- (১১২) সমীপা। সমীপেহগ্যাবং ঘেষাং তে সমীপাধ্যয়না বর্ষাণঃ ইত্যাহ পাঠে সনিক্ষানামিত। পদকক্রমকমিতি অধীতে বেদ বা ইত্যমুর্ভৌ ক্রমা-দেরক ইত্যকঃ। পাঠপদানাং ক্রমস্য প্রত্যাসনা। অধ্যয়নেতি কিং গ পিতা-প্রৌ জন্মনিমিত্ত সনিছিত মেতপ্রোনাম। বাজ্ঞিকবৈশ্বাকরণাবিতি ব্যাকরণ-বিদ্যা প্রথমাধ্যেয়া বজ্ঞবিদ্যা চ অধীতব্যেত্যস্য শেষাধ্যেয়া নানাম্বোঃ ক্রিয়া প্রত্যাসন্তির্নাতি।
- (১১৩) অপ্রাণি। জাতি রিহ তমন্বাত্তমনির্ভব্যক্তিকং বস্তুচাতে। আরাশক্তীতি আরা চর্মপ্রভেদিকা শক্তী ছুরিকা, তথা কাচদৃশদং হিরকমো

প্রাণিভ্যাহ কোষাং উর্বাজাতীনাং ছম্ম ক্লীবমেকং তাং। ভারাশস্ত্রীক্রমশৈলং। অপ্রাণীতি কিমৃ ? বিট শুন্তো। দ্রব্যেতি কিম্ ? রূপশন্দগন্ধরসম্পর্শঃ। জাতীনামিতি কিম্ ? বিদ্ধা-হিমালয়ো।

১১৫। নদীদেশনগরাণাং ভিন্নলিঙ্গানাম্।(১১৪)

এনাং দ্বন্ধঃ ক্লীবমেকং স্থাৎ। গঙ্গাদোণং ক্রুকুরু-ক্ষেত্রং মধুরাপাটলিপুত্রং। এমামেবেতি কিম্ ? প্রামাণাং মাভূৎ জাম্ববশাল্লকিয়ো। ভিন্নলিঙ্গানামিতি কিম্ ? গঙ্গাযমুনে মাজুকেকয়ো।

ক্তিকং ছালীকৃত্তঃ পীঠচ্ছত্রোপানহং ষ্টীপিঠরং। কথং রঞ্জিতা নু বিবিধান্তকুলৈলা ইতি ভারবিং। তকুণামপি বিশিষ্টটেতফ্রাভাবাং অপ্রাণিডাং।
তক্ষপ্রধানাঃ শৈলান্তকুলৈলা ইতি শাকপার্থিবতাং কর্মধারয়ঃ। রঞ্জিতং মু
বিবিধং তকুলৈলমিতি ক্রমদীশ্বরঃ পঠতি। ইছ জ্ঞাতিশন্ধানামপি জ্ঞাতিপরত্বে
বিধিরয়মিতি শ্রীপতিং। তেনেহ ন স্যাৎ ইমাঃ পীঠচ্ছত্রোপানহঃ, তত্রান্তবেড
প্রাণিনামিতি বছত্ব নির্দ্দেশারহুত্বে এবায়ং বিশিরতি কেন্চিং সমর্থিতং তদত্তে
ন মক্তত্বে জ্ঞাতিত্বাৎ নন্দক পাঞ্চক্রাবিতি বুট্ছঃ প্রত্যুদান্ত্র্বাচ্চ।

(২১৪) নদী। নদীগ্রহণেন নদগ্রহণমিতি দেশং কুরুকাশ্বীরাদিঃ নগরং
মণ্রাদিঃ। ভিন্নলিক্ষানাং ত্রগণামেষাং প্রত্যেকং পরস্পর হন্দ ক্লীবমেকঃ স্যাৎ।
গঙ্গাদোণমিত্যাদি গঙ্গা চ নদী শোণত দেশঃ কুরুক্ষেত্রঞ্চ, এবমন্সকুরুজাকলং মণ্রা নগরী পাইলিপ্ত্রঞ্চ নগরং। এবং বরণাপঞ্চনদং উজ্জন্ত্রনীগোধপ্রং। জান্থবশাক্ষিক্তাবিমে গ্রামে। ইহ প্রত্যেকহন্দ্রবিধানাৎ
গ্রামনগরহোহ দ্বঃ ক্লীবং ন স্যাৎ। বলা শোর্যাঞ্চ নগরং কেতবতা চ গ্রামঃ
শোর্যাকেতবতে। শাক্যান্ত গ্রামনগরহন্দ্রো নগরগ্রহণেন গৃভতে তেন শোর্যাকেতবত্রমিতি ব্যাচক্ষতে। দেশ ইহ জনপদাধ্যাসিত্যো গৃভতে। প্রস্কুনদীগ্রহণাং তেন কৈলাশগন্ধমান্তন গৌরীকেলাশো প্রক্রেটা গ্রামনগরন্থার্মিব্রক্ত শীক্ষতো লোকত্যচ মন্তব্যঃ।

১১৩। নিত্যবৈরিণাম্। (১১৫)

নিত্যবিরোধিনাং দ্বন্ধঃ ক্লীব্যেকং স্থাৎ। কাকোলুকং অহিনকুলং অশ্বমহিষং। নিত্যেতি কিমৃ? নৈমিত্তিকবিরোধ ধিনাং মাভূৎ দেবাস্থ্যাঃ কৌররপাগুবাঃ।

১১৭। শূজাণামনিরবিসতানাম্। (১১৬)

শূদাণাং দ্বন্ধঃ ক্লীবমেকং স্থাৎ। তক্ষায়কারং রজক-তন্ত্রবায়ং। অনিরবদিতানামিতি কিম্? চণ্ডালমৃতপাঃ।

५५৮। भवाशामीनाम्। (५५१)

এষাং ছল্বঃ ক্লীবমেকং স্থাৎ। গৰাশ্বং অজৈড়কং কুজ-বামনং পুত্রপৌত্রং দবর্ভশর্মিত্যাদি।

⁽১১৫) নিতা। নিতাং নিকারণং বৈরমেষামন্তীতি নিতাযোগ ইণ্ তত্তু প্রাণিনাম্বাং অপ্রাণিন ক্ষেণিচারিকমিতি সহানবন্ধান লকণবিরোধস্যেহ-প্রহণং, মুখ্যাভাবে গৌণদা প্রহণমিতি স্থারাৎ, তেন ছায়াতপৌ কাকোলুক-মিতানেন মৃগশক্নি দৃন্দ প্রাপ্তমিণি বিকল্পং বাধিত্বাহয়মেব প্রবর্ততে ইতি স্চ্যতে। নৈমিত্তিকবিরোধিনামিতি নিমিত্তে ভবো নৈমিত্তিকং, অধ্যাত্মাদিভাষ্টিকরিতি টিকণ্। দেবাস্থরৈরম্তমন্থ্নিধির্মান্তে ইতি ভারবিং। পৃথী-নিমিত্তম্ভবং কুরুপাওবানামিতি প্রয়োগং।

⁽১১৬) শৃত্তাণাম্। শৃত্ত স্তরীরোবর্ণ: নিরবাল্যাং স্যতে: কে নিরবসিতাে বহিদ্ধতঃ, কুতঃ, পাত্রাৎ বস্য ভোজনাদপূতং কাংখ্যাদিপাত্রং পুনর্বটনেলৈর ভগতি স ইতিহাতে।

⁽১১৭) গবা। গর্বাধমিতি গোরদন্তাবোরান্ত ইত্যবাদেশ:। প্রাধ-মিত্যাদৌ বথোচ্চরিত এবারং বিধি:। রূপান্তরে তু, গোহশো, গোহজোঁ গোহজবিকো, গবেডকাবিতি। পশুতাবিভাবের গবাধং গবেডকং গরাবিকং অজাবিকং উট্টমুর মুট্টশেমিতি বরাং পশুতাত্বিকলে প্রাপ্তে বিধিরয়ম্। দাসীদাসমিত্যত্ত নৈকশেবোগনপাঠাৎ, ত্রীকুমারী দাসীমানবকং শালীপ্রজ্ঞান্ত

১১৯। প্রাণিত্র্যাক্ষানীম্। (১১৮)

প্রাণ্যঙ্গাদীনাং দ্বন্ধঃ ক্লীবমেকং স্থাৎ। পাণিপাদং, মার্দ্ধকিপাণবিকম্।

১২০। সেনাঙ্গ कुष्डक खुकला नार वहर् ।(১:৯)

रमनामारम र्वछए इन्द्रः क्रीवरमकः छार। इछिनम्हायाम्ह

কুটীকুটং ভাগবতীভাগবতং কুজকেকরং কুজবামনং কুজকিরাতং পুত্রপৌতং মৃত্রপুরীষং মৃত্রশক্ষং শক্ষমেদঃ। ইহ শাটীপ্রচ্ছদাদয়ো ব্যক্তয়ঃ। অক্সধা, প্রাণি-দ্রব্য জাতিছাদেব সিধ্যতি, দব্রভারং ভ্লোলপং অর্জুনপুরুষং, এয়ু ভ্ণরদ্ধে বিকল্পেপ্রাপ্তে বিধিঃ। শ্বচণ্ডালমিতি ভনা চণ্ডালো বিশিষ্যতে ন ভূ জাতি কৃত্তাং। তথাচাম্থেবাসিনৌ শপুক্ষশাবিত্যতা ন আং।

, (১১৮) প্রাণি। অন্ধাৰন্ত প্রত্যেকং সম্বন্ধং প্রাণাস্থ গৃহ্যতে ইহাপ্রাণিডব্যন্ধাতিত্বাদেব মৃদস্পণবমিতি সিদ্ধে তৃথ্যান্ধগ্রহণং তদ্বাদন শিল্পিরং, তেনোদাহরতি মার্দ্ধান্ধকপাণবিকমিতি, মার্দ্ধান্ধকপাণবিকং গদা পরিষ পট্টিশং। দধানং রাক্ষসসভং বিবেশ সচিবৈঃ সহেতি ব্যোষঃ। পূর্ব্বেণ সিদ্ধে প্রাণ্ডস্থানামিতি বচনং ব্যক্তিকরনিবৃত্ত্যর্থং। তেন পাণিপণনে শোভনাঃ ধরুত্ত বচনপাণিপাদাঃ। এবং প্রকরণেহপিজ্ঞেয়ঃ। ইহ বহুলাধিকারাৎ ব্যক্তিচারোপি, মুখনাসিকে ইতি ভাষ্যে চিন্তিতং। মুখনাসিকাভ্যামিতি দধি পর্মাদির্ পাঠাদিতি রক্ষিতঃ, গ্রীবা কুক্ষি ললাটেগ্ নিত্যং স্বেদ্ধ প্রশাস্ত্রত ইতি বৈদ্যকং। গণ্ডে চুম্বো ললাটাক্ষিকক্ষোক্রভগ্যক্ষিত্ব ইতি কামশাস্ত্রং। রাজ-ইংসাক্ত তে চুঞ্চ চ রনৈর্দোহিতৈঃ সিতা ইত্যমরঃ। বক্তান্তে ইত্যপি।

(১১৯) সেনাক। ইষ্যত্তে পৃতনাক্ষানি হস্তশ্বরপত্তর ইতি কাত্যায়নঃ অত এব হস্ত্যশ্বরপগাদাতঃ সেনাকং স্যাচ্চতৃষ্টয়মিত্যমরঃ। অপঠিত পরিন্মাণা ইং ক্ষুড়াং, তে চ তে জন্তবশ্চেতি কর্মধারয়ঃ। অত্য স্মৃতি ভেদাৎ অনস্থিকাঃ প্রাণিনঃ স্থাণিতরহিতাঃ, যেষাং সহস্রেণাঞ্জালঃ প্র্যতে, ধেষাং গোচর্মাতরাশিংননেহপি ন পাতিত্যং শ্রুতিভ্যামৃক্তং। তে চ নকুল-

रुष्ठायः मः मम्मकः वनतामनकः । वक्ष देखि किम् १ रुष्ठात्थी मः मम्मदिको वनदामनद्व ।

১২১। রক্ষ মৃগ শকুনি তৃণ ধান্ত বিশে-যাণাসা। (১২০)

রক্ষাদেকহিছে দলঃ ক্লীবমেকং স্থাৎ বা। প্লক্ষবটং প্লক্ষবটাঃ, ক্রক্রপৃষতঃ করুপৃষতাঃ, মৃগশকঃ কুরঙ্গে, পশুমাত্রে চ বর্ততে, দিংহাজারভ্রং দিংহাজারভ্রাঃ, হংদকারগুবং হংদকারগুবাঃ, কুশকাশাঃ, তিলমাদং তিলমাদাঃ। ন দ্বিষে প্লক্ষবটো। অথ সমাহার এবৈকত্বে দিদ্ধে প্রক্রণমিদং নিয়মার্থং। চরণাদীনাং দ্বন্ধঃ সমাহার এব। রক্ষমুগাদীনাম্ভ্রাত্রিব দ্ধিপায় আদীনামিতরেতর্যোগ এব।

পরিমাণপর্যান্তা জন্তবো ইতি পঞ্চা, ইতরাসাং পরস্পরবিরোধাৎ পরৈরশ্বৈতি প্রমাণং। তথাচ শ্লোকঃ, ক্ষুজ্জনুরন দ্বিঃ আদ্বার ক্ষুত্র বহঃ। সহস্রং
প্রস্তাতা বেষাং কেচিকাইঃ কুলাদপীতি। হস্তিনশ্চেতি জাতার্থে বৈকশ্বিন্ বহুবচনমিতি বহুবচনং। শাক্যানান্ত জাতে বহুবচনবিধানাভাবাৎ,
ব্যক্তে বহুত্বমিতি, সুকামংকুণং মশকমন্তিকং ক্রমিগগুপদং জলোকঃকিঞ্সুকং, ল্তাপিপীলিকঃ বিবানশ্বঃ পরিভ্রম্য কাকোলৃকমিব শিতে। মক্সমানং মদান্তর্জুর্লংকাটপিপীলিকমিতি ব্যোষঃ।

(১২০) রক্ষ। অত্ত বিশেষণকঃ প্রত্যেকমভিসমণ্যতে। রক্ষাদীনাং
ত্যাণাং অপ্রাণিজব্যজাতিস্থান্নিত্যে প্রাপ্তে বিকল্পার্থং বচনং। ইতর্য্নোরপ্রাপ্তে। ইহ মৃগশকঃ পভ্সাত্তবাচীত্যাহ মৃগশক ইত্যাদি। নমু পশুস্ক
প্রয়োগাদেবাভীষ্টসিন্ধে কিমিতি মৃগপদং প্রস্কুং সত্যং মৃগবাচকপক্তর
বাচকর্যোর্যাতিকরনিরাসার্থং। তেন রুকুমহিষমিত্যসাধুং। ইহ প্লক্ষাদরঃ
শাধিবিশেষবাচিত্যাজ্ঞাতিশকা ইতি চাক্তাঃ। নমু সর্ব্যোহি দ্বন্ধী বিভাষ

३२२। वाङ्गनाक। (১२১)

অপ্রাণিজ্ব্যকাতিছানিত্যে প্রাণ্ডে বিকল্প আরভ্যতে। দ্ধিয়তং দ্ধিয়তে, শাক্ষসূপং গ্লাকসূপো।

১২৩। বিরোধিনামজব্যাণীম্। (১২২)

বিরুদ্ধানাম দ্ব্যবাচিনাং দুল্বং ক্লীনমেকং বা স্থাৎ। সুথতুঃখং স্থতঃথে, শীতোফং শীতোফে, হিমাতপং হিমাতপো অদ্ব্যোণামিতি কিমৃ ? সুধতুঃখাবিমো গ্রামো ।

১২৪। নৈকং দ্বিপায় আদীনাম্। (১২৩)
এয়াং দ্বৰ একং ন ভবতি। দ্বিপায়নী দ্বিশ্বিনী

মেকবছবতীতি কারকপাদে জ্ঞাপিত', ততঃ কিমিতি বিকল্প আরভ্যতে ? ইত্যত আহ অখেত্যাদি।

- (১২১) ব্যঞ্জনা। যোগবিভাগো ব্ছজ নির্ভ্যর্থ:। অভোষধিছতে ইত্যুদাহতং ব্যঞ্জনপদং স্থদশাসন রুচ্ম।
- (১২২) বিরোধ। স্থ দৃংথে ইত্যাদৌ সহানবন্থানলক্ষণো বিরোধঃ। কামজোধৌ, ক্রুদ্ধোহিপি কামমাচরতীতি নানয়ার্কিরোধঃ। স্থ দৃঃধাবিমৌ গ্রামাবিতি অভব্যবাচিনঃ সন্তি যে ভ্রব্যবাচিনক্তে, ইহ প্রত্যুদারির তে । যথা প্র্বাপরে তার্যনিনী, যে পুনর্নিরতন্ত্রব্যবাচিনক্তেমাং বিভাষ্ট্রব্য । যথা ছারাতপং ছারাতপো রাত্রিদিবসং রাত্রিদিবসে।।
- (১২৩) নৈকং। দ্বিপয়সীত্যাদীনাং ত্রয়াণাং ব্যঞ্জনানাঞ্চেতি বিকল্পে প্রাণেও শুকুকুফাবিতি বিরোদিনামজব্যানামিতি বিকল্পে প্রাণ্ডে নিষ্ধেঃ। আদিশকাৎ, ইপ্নাবহিষী, অভ্যেষামপি দৃশ্যতে ইতি দীর্ঘঃ। আদ্যবসানে শানামেধে মেধাতপসী শ্রুততপসী, দীকাতপসী, অধ্যয়নতপসী, বাজ্যামুন্বাক্যে প্রস্তিপ্রাণ্ডিদ্ধলম্যলে হরিবাসরে ব্রহ্মপ্রজ্ঞাপতী নিববৈশ্রন্থ স্কর্মবিনাথে পাতঞ্জিকিনিকৌ আদিশক্ত প্রকারার্থিত্যং। ব্রেত্ত্বে

अधुम्थिती शक्तकृरको शक्तमात्मे स्वाद्धनः निवरत्यान।-विভ্যাদ।

250 । मश्याम् अत्यादगं है। (१५8)

हेर चत्त्व। तिकः छाट । जनगर्फाक्रकन्नर्गावकाः । ३३१ वा मभीदन्ते । (১২৫)

সমীপে সংখ্যাপ্রয়োগে দ্বন্দ্ব একং বা স্থাৎ। উপদশং বৈণিকবৈণবিকং, উপদশাঃ বৈণিকবৈণবিকঃ।

১২१। जनरस्रिष्ठिः खौँ मगशरतं २१। जनरस्रिष्ठः । (১২৬)

অদত্তো বিগুঃ স্ত্রীলিঙ্গং স্থাৎ। পঞ্চপূলী দশশতী। অকা-

ভরবোগোদৃষ্ট:, ওত্ত্রবাস্থ বিষয়:। ছাতঃ স্থাচন্দ্রমুসে মিত্রাবরুণো আগ্রীসোমে সোমরুদ্রো নারদপর্কতে নরনারায়ণো রামলক্ষণো ভীমার্জুনো কম্বলাশ্বতরো মাতাপিতরো পিতাপুত্রাবিতি চ।

- (১২৪) সংখ্যা। সংখ্যার্গন্ধ প্রয়োগে সতি হন্দোনকবিদয়তে, বুক্ত- কৈডৎ, গণনায়াং ভেদেনার্থভ ব্যবস্থাপিতহাৎ। দশমার্দ্দিকপাণবিকা ইতি
 ভূষ্যাঙ্গদীলিনামেকত্বং প্রাপ্তং নিষিধ্যতে।
- (১২৫) বা ন সমীপবিষয়ক সংখ্যা ইত্যর্থ:। ইহ সংখ্যা সহাব্য রী ভাবো বছত্রীহিশ্চ বিহিতস্থ ত্রাভেদেন সামাহারে সামীপ্যপ্রাধান্তাদেকার্থেই ব্য রীভাবো বিশেষো যুদ্ধাতে, ভেদেন ত্বিভরেত রযোগসামীপ্য প্রাধান্তাব হবে বছত্রীহিরেব, অভ এব ভবাভিধানমেবোপ ক্তম্ব। ভাষ্যেইপ্যেব্য ব্যালৃতং উপদশ্মিতি, অন ইতি টঃ, উপদশাইতি সংখ্যেরভোবহোরি ডিডঃ।
- ্(১২৬) অদত্যো। সমাহারেছকারাত্তে প্রকৃত্যান্রিতা বিতঃ স্ত্রীলিকোভবতি। ইহ বিহিতং স্ত্রীলিক্ষং ক্রীবৃলিক্ষং নিবর্ত্তরতি। নত্তেক উৎসর্গতৎ সন
 সমানবিষয়ত্বাদপবাদত্ত। পঞ্চপুলীতি পঞ্চানাং প্রানাং সক্ষাহার ইতি

রান্ত প্রক্রেরেরাভিধানারেই: পঞ্গবং। সমাহার ইতি কিম্? তাদ্ধিতার্থে পঞ্চপালঃ সূপঃ। অপাত্রাদিভিরিতি কিম্? রিপাত্রং ত্রিভূবনং চতুর্গম্॥ আবন্ধস্তঃ ক্লীবঞ্চ নশ্চ লুক্॥ পঞ্যটুং পঞ্ঘট্টী পঞ্চকং পঞ্চক্ষী।

১২৮। ছম্বৌনপুংসকে প্রাতিপদিকান্তস্তা।(১২৭)

ক্লীবে প্রাতিপদিকান্তস্ত হ্রমঃ স্থাৎ। সোমপং কুলং সহএন সং বহুপথেয়সি কুলং॥ এচ ইণ্ হ্রমথেয়ে অভিরি অতিমু সূত্যু বহুগু।

বগ্রহে দ্বিগোরিতি ছী, পঞ্চবমিতি পোরতদ্ধিত লুকীতাং। আব্রন্তঃ ক্লীবঞ্চ নশ্চলুক্ ইতি আপ্চ অন্চ আবনো তাবন্তো যক্ত স আবন্ধতো বিশু: সমাহারে স্ত্রীলিঙ্গং ক্লীবলিঙ্গক বিনীয়তে। অনন্তত্ত নশ্চ লুপ্যত উভয়ত্ত। পঞ্চুমিতি নপৃংসকে হ্রন্থং, পঞ্চুমিতি দিগোরিতি দ্বী। আপ ইতি কিন্ ? পঞ্চানাং ভভংবৃাং সমাহারঃ পঞ্চভংযমিতি নিত্যং ক্লীবমেব।

(১২৭) ব্রুকো। সোমপমিতি সোমং পিবতি ইতি কিপ্ সোমপা,
সহ এনেতি সহ এন বিষ্ণুনা বর্ত্ত ইতি বিগ্রহে সহস্য সোবেতি সালেশে সা
ইতি রূপং। অথেরসো বহুব্রীহো প্রতিষেক্ত ইতি স্ত্রুবতো নপুংকেতি
প্রসম্পতীতি নির্ভন্নাহ বহুপ্রের্গীক্ষি, তরিষেক্স্য বক্ষ্যমণিস্থাদিই ভাদেব।
নম্ম রায়মতিক্রাস্থ কুলং নাবমতিক্রান্তামিতি বাক্যে অতিরি অতিমুইত্যাদে
ক্রেল্ডবন্ কতরোভবিষ্টীত্যাহ এচ ইণ্ ক্রমত্বে ইতি ক্রমত্বে বিধীয়মানে এচ্ইণ্ ভাং স্থানেহস্তর্জম ইতি ভাষাং। ষদ্যপি এদৌতোঃ
কিঠতালব্যস্থাৎ ওদৌতোঃ কঠোঁষ্ঠস্থং ইত্যেতো প্রবর্ত্তে তথাপি কঠাদকারান্তাবের প্রত্যাসন্নো ষত অতএবোভয়সাদৃশ্রেহপ্রাপ্রেইস্ক্যেন্টোল্
হামতি বর্দ্বেরং পঠন্ত্যকে। তদাচোভয়মের নাজীতি হুর্জঃ। নপুংসকভামিতি বর্দ্বেরং পঠন্ত্যকে। তদাচোভয়মের নাজীতি হুর্জঃ। নপুংসক-

১२०। लिखिदशैतिचारथैर्जामीयमे । (১२৮)

অন্তপদার্থে গোশকত দ্রীপ্রতায়ান্তত চ ব্রহঃ তাং।
চিত্রগুঃ নিকোশাদিঃ অভিগট্য বহুবামোরঃ। অন্তার্থ ইতি
কিম্? সংগাঃ সুকুনারী। অপ্রাণীয়দ ইতি কিম্? স্থানীঃ
স্থানীঃ সুলক্ষ্মীঃ সুত্রীঃ সুত্রীঃ সুলা বহুপ্রেয়দী রাজা।
ইয়দঃ প্রাণি তৎপুরুষে ন বিপ্রতিষেধ ইতি বক্তবাং, অতি-'
প্রেয়দি নূপ্তিঃ।

১৩০। তদ্ধিতলুকিলুক্স্ত্রিয়া অগো-ণ্যাদেই। (১২৯)

তদ্ধিত লুকি সতি স্ত্রীপ্রায়স্থ লুক্ স্তার্। পঞ্সস্কুলঃ

ইতি কিং ? কাণ্ডীভূতং কুলং অণিজ্ঞাদব্যয়ন্ত । প্রাতিপদিকন্তেতি কিম্ ? রমতে কুলং। অন্তপ্তে কিং ? গ্রামণি কুলং পূর্দান্ত হুদোন লাং। কথং বনায় বনাগ্রমিতি অসিলং বহিরস্মিতি লায়াং। উপার্থমিতি অব্যয়ীভাবস্তং- পুরুষো বা।

(১২৮) গোরিয়ো:। অন্তপদার্থে বর্তমানো গোশকোহত এব সম্ভবতীতান্তভেতি নোক্রং পবন বিধের বিশেষণমন্তামিতি প্রায়েগারণ; স্ত্রীপ্রত্যয়াল্প গ্রার্থন্তক্ষা: ক্রমেণোলাস্তাঃ। ক্রীরিত্যাদিরয়ং সানিতমেব তুলন্তীরিতি লক্ষেম্পেচতি সাং, হতন্তীঃ ত্তরীরিতি অবিভ্ন্তুত্রিভ্যু সীরিতি সাং।
কথং বছকুমারীকঃ কল্মান্তরক্ষরাং পরত্বাক্ত, বছপেরসী রাজেতি নেয়স ইতি
কপ্ প্রতিষেধা। সিয়সন্তং প্রধান প্রতিষেধ ইত্যভিনানাং। অভিপ্রেম্বনিরিতি অভিক্রোন্তঃ প্রেম্বামিতি বিপ্রতঃ। অভ্যাদ্যঃ ক্রোভাদ্যুর্পে তৎপ্রকাঃ।

(১২৯) তদ্ধিত:। পঞ্চশস্ত্ৰ ইতি পঞ্চি: শক্লীভি: ক্ৰীড: ইতি বাক্য:। তথা পঞ্চেল্লাব্যো দেবতা অস্ত দাদ্য দেবতেতি বিহিত্সাণো সুকি ভীপ্ৰত্যমুক্ত লুক্ ডেড: সমিধোগৰিষ্টানামেকাগায়ে অক্তরম্বাণ্যপায় ইতি তেন জী গমিত্যর্থে টিকণ্ দ্বিগোরধার্দ্ধান লুক্ সংজ্ঞান মিতি লুক্। অগোণ্যাদেরিতি কিম্? পঞ্গোণিঃ পটঃ পঞ্জ সূচিঃ।

ইতি এপদানাভদ বহুতে। স্থাদে ব্যাকরণে চতুর্থ সাধ্যায়স তৃতীয়ঃ পাদঃ।

অথ চতুর্থস্থাধ্যায়স্থ

চতুর্থঃ পাদঃ।

ष्वनुक् श्रकत्रगम्।

১। অলুগবিশিফীইতরপদে। (১)

অধিকারোহয়ম্। উত্তরপদে পরতোহলুখক্তব্যঃ।

স্থায়াদানোপি নির্তি:। পঞ্চেরোযজ্ঞ:। পুক্রোণিরিতি। লুকঃ প্রতি-বেদাং। পুর্বেণ হ্রস্থা, সিদ্যতি, আদিপদগ্রাফঃ স্চীশক্ষা, তথাচ, ইদ্যোণী স্চ্যোরিতি চাক্রস্তুম্। লুকীতি কিং ? হরীতকীফলং, অত্ত্র পুষ্পফলম্লেম্ লুক্ক্লমিত্যণো লুপ্। এবমস্ভুর্বেয়ম্।

हेि रूभस्मकदर्ण शक्य स्थाविणः।

(১) অলুক্। সমাসে সর্বান্তশ্বেরপদমিতি বক্ষাতি তমিন্ পরে ঐকার্থে চেত্যনেন প্রাপ্তঃ স্থালুিভ্গাত্যতে। অবিনিষ্টাদিতি বিশেষণং প্র্পেদং বিশেষ্যমপেকতে তংপ্নর্মক্যমাণ মোজঃ প্রভৃতি, ডম্মারেহ বির্তিতি।

१। अवह महारूखसमञ्जीताताः। (२)

এভার্ড বীরারা অনুক্ ভাব। ওজসাকৃতং সহসাকৃতং তনসাব্যাপ্তং অন্তসার্তং। অবিশিক্তাদিত্যের মহৌজঃকৃতং নৈশতনোর্তম্।

৩। মনসঃ সংজ্ঞায়ামাজ্ঞায়িনি চ। (৩)

নার্মি মনসভ্তীয়ায়া অলুক্ স্থাৎ। মনসাদেবী। আজ্ঞা-য়িনি চ মনসাজ্ঞায়িনো বোগিনঃ।

৪। আত্মনঃ পুরণে। (৪)

তৃতীরায়া অলুক্ স্থাৎ। আজানাপক্ষঃ।

१। शूरमीर्द्धा अत्रधीरकी।

थनुक् छार। पूः माजूकः कनुमाकः।

৬। বৈশ্বাকরণাখ্যায়মাত্মপরাভ্যাং চতুর্থ্যাঃ।

আন্ত্যাং চতুর্থ্যা অলুক্ স্থাৎ। বৈয়াকরণী আখ্যা চেৎ। আত্মনেপদং পরস্মৈপদং পরস্মৈভাষঃ।

প। পঞ্চম্যাঃ ভোকাদিভ্যঃ ভে ।

⁽২) ওকঃ। ভৃতীদৈকবছনকৈ বানুগিতি কেনচিত্চাতে, দিবচনবছ-বচনীলোরিভাজৈত। ভ্রম স্থানে ভগদ ইভি চাত্রাঃ পঠিভি, অল্পে তু, দেব বিধিক্তক্তমিভি নিয়মাৎ মহোকসা কুত্মিতে ব্যক্তিভি।

⁽৩) মনসং। মনসাদেবীতি কর্মস্থেহণি কর্মসন্থাৎ কর্মপোছ্রিজ্ঞান, ক্রিক্সেন্ট্রিজ্ঞান, ক্রিক্সেন্ট্রেল্ডান, ক্রিক্সেন

⁽०) जोजना गराउ रैंछाड़ि जोजरनगर नज रेिंड वा। ध्रयाजरमस्याः।

ত্তোকার্থ অন্তিকার্থ দুরার্থ ক্রচ্ছেছাঃ ক্রান্তে পরে পঞ্ন্যা অপুক্ স্যাৎ। তোকামুক্তঃ অল্লামুক্তঃ কুভূামুক্তঃ। ৮। मक्षमा श्लम खर्डी मामि।

रलखानमखाक मरळाग्नार मखगा चन्त् चार । पितनातः वत्निक्थनुकाः।

১। মধ্যান্তার্ত্তরো (৫)

न श्रमा अनूक नारा । मर्या छ त्रः वर्ष छ तरः ।

২০। অপোযোনিমতিযেমু। *

এম্পঃ সপ্তম্যা অলুক্ স্থাৎ। অপ্যোনির্গ্নিঃ অপ্-মতিঃ, দিগাদের্যঃ অপ্রুভবোহপাব্যঃ।
১১। স্বাঙ্গাদি মূর্দ্ধমন্তকাদিকামে। বন্ধে বা।

সাঙ্গাৎ হলদন্তাৎ সপ্তম্যা অনুক্ স্থাৎ। কঠেকাল: ্উর'সলোগা। হস্তেণক্ষো হস্তবন্ধো বা। অমূর্দ্ধমন্তকাদিতি কিম্? মূজিশিখিঃ মস্কশিখিঃ। অকাম ইতি কিষ্ণু সূথকামঃ। হল-मरखङा देराजव अन्नु तिमूद्धः।

১২। তর তম কাল তদেয়ু কালনামঃ।

বেত্যেব, তরাদৌ কালনামঃ সপ্তম্যা অলুক্ স্থাৎ। বিধি-বলাৎ সপ্তমান্তাত্তবতমো। পূর্বাচ্ছেতরাং গায়তি একারা। স্তাদাম্, পূর্বাক্ততরে বা, পূর্বাক্তেমাং পূর্বাক্তমাম্ বা।

⁽०) यहा क् मगुनहतानी ममामखना मशु सम्बिति खर्कि ।

^{*} অপ্ বোনিরিত্তি শৌণাদিতাৎ তংপুরুব:। বছত্রীহী অবে্বানিরেব। वटकटबिं পृष्य द्वातां श्वाक्षक्षकाकावि छार, इक्षवक देखानि !

পূর্বাকেকালকুতং পূর্বাক্তনালকুতং পূর্বাক্তেনং পূর্বাক্তন তনং বা। পূর্বাকাপরাকাদেতি তনট্। হলদন্তেত্য ইত্যেৰ রাত্রিতমায়াং স্থাগতি।

১७। তৎপুৰুষে कृति वहनम्।

তৎপুরুষে কুদন্তে পরতো বছলং সপ্তায়া অলুক্ আৎ।
দিবিষৎ বনেচরঃ, ক্তন্মেরমঃ, ফ্রদিছঃ জ্রিম্পাক্ ॥ প্রার্ট্শরৎ
কাল দিবাং জে। প্রার্ষিজঃ শর্লিছঃ কালেজঃ দিনিজঃ।
বর্ষ ক্ষর শর বর মনসো বা । বর্ষেজঃ বর্জঃ করেজঃ করেজঃ
শরেজঃ শরজঃ বরেজঃ বরজঃ মনসিজো মনোজঃ। সরস্যোক্ত হে
। সরসিজং সরোজং সরসিক্তং সরোক্তহম্যা শয়বাস
বাসিষকালাও ॥ থেশয়ঃ থশয়ো বা, বনেবাসঃ বনবাসো বা,
গ্রামেবাসী প্রান্বাদী বা । অকালাদিতি কিম্ ং প্রেক্শিয়ঃ,
বাছল্যাৎ ক্তিলেব, স্থেলশায়ী বিষ্মস্থঃ সাঞ্কাশুনিদ্ধঃ ।

১৪। ষষ্ঠ্যাঃ সংজ্ঞাভৎ সনয়ে। (৬)

সংজ্ঞারামাকেপে চ ষষ্ঠ্যা অলুক্ আং। শুনংশেকোনাম মুনিঃ, দিবোদাসঃ, আকেপে চৌরস্কুলং রুদল্যাঃ পতিঃ
দেবানাং প্রিয়ঃ পুর্ত্তে বা । দাস্তাঃ পুর্ত্তা দাসীপুর্ত্তা বা।
১৫। বানিদক্পশ্যন্তি যুক্তি দণ্ডহরেষু।

⁽৬) মনসিশর ইতি নিতাম। বঠা। হলদভেতা ইত্যেব জুরিনার।
বটাশরঃ, বাহলাৎ বহুরীহাবপি। বাস্তোশতি দিবশাভি জনালাভি
ভরতি প্রভাবের বাহলাৎ হ্যাঃ। বাসাতেহলৈ দাসোবানপাত্রং বিবোধালাঃ
নৃপভেদঃ।

যুক্ত্যাদে। বাগাদে: বর্ত্তা অনুক্তি। বাজেছিকিঃ দিশোদগুঃ পভার্তাহরঃ।

১७। जनमधोत्रम्कृ निकानियु ।

এরদস: ষষ্ঠ্যা অলুক্ স্থাৎ। অপজ্যে আমুষ্যায়ন:, কুলি-কৈতি ভবিষ্যজ্যপগ্রহণ:, ভাবে আমুষ্কুলিকা আমুষ্যুপুত্তিকা অমুষ্যুপুত্ততা।

১৭। ঋতোবিদ্যাযোনিসয়দ্ধে বা চ স্বস্-পত্যোঃ। *

ঋদন্তাৎ ষষ্ঠ্যা অলুক্ স্থাৎ। বিদ্যাফোনিসম্বন্ধে; হোভুরস্তে বাসী, হোভুঃ পুত্রঃ। বাচ স্বস্থাত্যোঃ মাডুঃ স্বসা, ছহিছুঃ পতিঃ, মাতৃষ্বসা ছহিভূপতিঃ। উক্তোহলুক্।

১৮। ঋদন্ত পুত্রয়োরাদৃতো দক্ষে।

স্বন্দে ঋণস্তপ্তয়োঃ পরয়োঃ ঋণস্তস্ত ঋতঃ স্থানে আদ্-ভবতি। বিদ্যায়োনিসম্বন্ধে, হোতাপোতারো মাতাপিতরো পিতাপুত্রো।

১৯। इन्मारमंत्र छ। रेमवर्ड।

দেবতাদ্বন্ধে ইন্দ্রাব্যেত আন্তর্বত। ইন্দ্রার্হস্পতী মিত্রাবরুণো সূর্য্যাচন্দ্রমসো। লোকে বেদে চ সহচরিত্তয়োরে-বাভিধানামেহ শিববৈত্রবণো।

२०। ३७ ने एश्वे भाषवक्ष रशीतहरू

অনুয়োরগ্রেরিত ঈৎ স্থাই। অগ্রীসোমো অগ্রীবরুবো।
অর্দ্ধাবিতি কিম্? আগ্রিসোনং আগ্রিবারুণং কর্ম।

^{*} বিষ্যা চ যোনিশ্চ তাভ্যাৎ কৃতঃ সম্বন্ধয়িন।

्रेश इंबीतीविद्यी।

त्रुक्तिमिक विरक्षो भरत व्यक्षितिक व्यक्तिवि । व्यामारिक्षिवर । ११ ३। इस्टि हैं। व्यारम्बर्सिक्तिक ।

२२। मिट्नी मंग्रीती।

रेनवटक बत्त्व निर्वामहावा छाट । महावाङ्गी महावाधवरणही । २०। निर्वेम्हेश्रीयवहाँम्।

পৃথিব্যাং দিবোদিবস্দ্যাবা চ স্থাৎ। দিবস্পৃথিব্যৌ দ্যাবাপৃথিব্যৌ দ্যেতিনিদ্দেশান্ন বিসর্গঃ।

२८। डेवारनीयमें है।

দৈবতৰদ্বে উষদ উষাদা স্থাৎ। উষাদানক্তং উষাদা-সূৰ্য্যং (ইতি দমাহারে)।

২৫। মাতরপিতরৌ কুশীলবৌ চ।

র্থা নিপাত্যেতে। চকারাৎ মাতাপিতরো কুশলবো চ! ২৩। স্ত্রী পুংবন্দীবিত পুংস্কীর্তীতুল্যাবেগী স্ত্রিয়ামপুরণীপ্রিয়াদিব্যা

ভুল্যাধিকরণে বর্ত্তমানায়াং স্ত্রিয়াং পরতোভাষিতপুংক্ষং উঙ্জ-

⁽१) ত্রীপু। নমু ভাষিতঃ পুমানু বেন স ভাষিতপুংখোহর্থঃ শব্দো বাধ্যপদার্থঃ ন ভাষদান্তঃ অর্থকার্য্যাভাষাৎ, নাড্যঃ, জোবীভার্য্য ইত্যা-দার্যপি ভাৎ, তক্ষাৎ সমানানামাকভাষিত্যচ্যভামিতি চের বুমাসপ্রপ্রক্তিন নিমিভতে অর্থ এবাজীয়তে। শোতনভার্য ইভ্যাদে প্রোভনভার্যসম্বদ্ধাৎ পুংসি-ত্রিয়াক বোভনখনো বর্ততে, ভোষী শব্দ পরিমাণবিশেষে প্রবৃত্তি-নিমিভমানার পুংসিক্ষনকেশণার্থমানার ত্রিয়াং বর্ততে ইভি ন ভবা, অভ-

বর্জিতং ত্রীলিঙ্গং পৃংবস্তবতি। কর্মারয়ে শোভনভার্যা পট্নতার্যা। বহুত্রীহো যুবভার্যাঃ পট্টভার্যাঃ। ভাষিতপুংক্ষেতি কিমৃং ঘট্টাশয়ঃ। অনুভিতি কিমৃং ধীবজুভার্যাঃ। তুলার্থ ইতি কিমৃং কল্যাণ্যা মাতা কল্যাণীমাতা। ত্রিয়ামিতি কিমৃং মানিনাজনঃ কল্যাণী প্রধানঃ। অপূরণী প্রিয়াদিন্ধিতি কিমৃং ক্রেছাপ্রক্ষী কল্যাণীপঞ্জমী রাত্রির্যাসাং তাং কল্যাণীপঞ্চমা রাত্রয়ঃ, ইহু প্রধানপূরণ্যা এব নিষেধােহৎসমাসাস্তশ্চ। তেন সংজ্ঞায়াং গৌণ্যাস্ত্র কপ্, কল্যাণপঞ্চমীকঃ পক্ষঃ। প্রিয়াদে কল্যাণীপ্রিয়া মনোজ্ঞাত হিতা বিহুষীকান্তঃ মানীনী হৃহিত্কঃ। প্রিয়াকান্তা হৃত্তা বিহুষীকান্তঃ মানীনী হৃহিত্কঃ। প্রিয়াকান্ত হৃত্যা বামনা দৃঢ়া বিহুলী ভক্তি ক্রমা সমা হৃহিতা চপলা ইত্যাদি।

ভাগবিতঃ প্মান্ বৈনেতি ক্রমণীব্রব্তিরিতি। ন বিদ্যুতে উৎ বস্থাদিত্য নূর্। ধীবৃদ্ধা ইতি বাক্যে উড্। ক্রীতি কিং প্রামণি কুলং দৃষ্টি-রস্তেতি প্রামণিদৃষ্টিঃ, ইহাপি রপাতিদেশঃ সম্ভবতীতি, এবং দারদবৃদ্ধারিকা উড্বিড্র্লারিকা অত্র দারদাণীনাং ক্র্যপত্যপ্রভাগ্ত পুক্, রপাতিদেশে তৃ প্রত্যপ্রভাগ্তঃ। কথং গর্ভিভার্যঃ প্রজাতভার্যঃ প্রস্তৃতভার্য ইতি, ক্রীণাং গর্ভিগাদয়ো ধর্মাঃ, অন্ত এব সভ্যমন্তর্বর্ভিড্মাত্রাদিত্বং বিবক্ষিতং, চক্র-পোমীতৃ, অত্রার্থে প্রস্তৃতা প্রজাতা গর্ভিণ্য ইতি স্ত্রমেবপ্রণিনায়, কচিদন্তনাপি স্ত্রে ক্রমণীবরোহপ্যেতজ্ঞরনেবোদাহরতি। কল্যাণী পঞ্চমা রাত্রয় ইতি, কল্যাণী পঞ্চমী রাত্রির্যাসাং রাত্রীণাং ইত্যবয়বেন বিগ্রহঃ। অবস্তৃন্ত ক্রমণীবরহন্তর্ভবতি, রাত্রয়ো ক্রিয়ো মৃধ্যা ইতি, অংপুর্ণীত্যৎ, ইং প্রধানপূর্ণ্যা ইত্যত্রাভিধানাদিতি দেবঃ, অত্রব প্রধানপূর্ণপ্রত্যক্রাভ্ততিতি নিবেংস্ত্রম্ । প্রিয়াদের্ভক্তি প্রমিরেধাৎ কর্মং স্কৃতভক্তিরিতি জ্যেতে, স্ইভক্তিরিলা; ইত্যাদি সভ্যং, অবিব্রিভক্তিরীত্বনিতি প্রত্তিত বাল্লা; ইত্যাদি সভ্যং, অবিব্রিভক্তিরীত্বনিতি ক্রমণ্ড ত্রভিদ্যক্রিত প্রস্তৃত্বিদ্যার প্রস্তিত বাল্লা; ইত্যাদি সভ্যং, অবিব্রিভক্তির কর্মেন্তরাত্র বিরাদিসাহ্বর্যাৎ ধর্ম্মিবনার কর্মনাবনো

ं २१। शिके थिशानियु है।

পুরশীবিরাদ্যপরাদোহয়য়। এর জীপুরেং। লিউপিয়ঃ বিমুক্তকান্তঃ দৃঢ়ভক্তিঃ প্রিরহৃহিতা মুগ্রপনা মহাপক্ষী পুণ্যবন্ধী গ্রাদি।

२৮। कल्मानिजिन्दि ।

কশাদো তদ্ধিতে চ স্ত্রীপুংবৎ ভবতি। অত্র পনিগণনং কয় দেশ্য দেশীয় তর তম চরট্ জাতীয় রূপ পাশ পমু থা দা হি প্র। বৃদ্ধ কয়া রম্যতরা পট্টরী বৃদ্ধপাশা কয়া আরুত্যা কথং তয়া আরুত্যা তথা তস্তাং বেলাযাং তদা তহি জ্বপা। দিবি বহুরার্থস্থা। বহুরীভ্যো দেহি বহুশো দেহি অল্পাঃ। ত্বাপোত পবচনস্থা। পট্যা ভাবঃ পট্ছং পট্তা মৃত্তং মৃত্তা। গুণবচনস্থেতি কিম্? কঠাইং দণ্ডিনাছং। ব্যক্তিনার্থিকাপীনাতে। গুণে চ তরীকুর্ম মিত্যপি। ভ্রমাতিরে ভদ্ধিতা। হল্তিনীনাং সমুহো হাত্তিকং অটেয় ইতি কিম্? বেলিহেশার প্রিশেয়।

্বা এবং জন্ম বাজা ও। ২৯। তদাদো চ বহোঃ।

পত্র বহোঃ স্ত্রীপুংবৎ। বহুনীভোগ বহুতঃ বহুনীয়ু বহুত্র।
৩০। ক্যন্ত মানিনেঃ।

ক্যি মানিনি চ পরে ত্রাপুংবং। এণী-ক্রতায়তে দর্শনীয়াং
বস্তুতে দর্শনীরমানী ভার্যায়াঃ।

^{&#}x27; পৃহতে ভবানী ভক্তিরভ তবানীতকি: তথা তকে বুর্মদাধনারাক্তি ভোজা পঠতীতাজে, চপলেত্যাদিশদাৎ সাহা সচিবা আছা বালা জন-ব্যুতি। শ্লিষ্ট। শ্লিষ্টপ্রবোগদৃট্যা অভৈরবৃক্ষণানেন স্থাতিবভি।

७। गर्बनात्में इंडिमार्ट्ड जमारमी है।

একার্থে রন্তিমাত্তে সর্বনাম্রঃ স্ত্রীপুংবং। স্বাসাং প্রিরঃ সর্বপ্রিয়ঃ অন্তনমঃ তস্তা মূবং তন্মুবং একজীরং। তদ্ধিতে একজা আগতং একরূপ্যং একমাং।একজং ভবদীয়ং। তসাদো চ, তস্তান্ততঃ, তস্তাং তত্ত, কস্তাং ক। ভবতীপ্রসাদাদিত্যপী-ব্যতে।

৩২। কুকুট্যাদীনামগুদিষু। (৮)

এরু স্ত্রীপুংবর্থ ভবতি। কুরুট্যা অওং কুরুটাওং মুষপদং মুগক্ষীরং কাকশাবঃ।

৩৩। ন নাম পূরণী কোপধস্থাপাকাদের-কর্মধারয় জাতীয়দেশীয়ে। (৯)

কর্মধারয়াদেরকাত্র সংজ্ঞাদীনাং ভাষিতপুংস্কা স্ত্রী পুংবর ভবতি। দত্তাভার্য্যঃ দত্তামানিনী দতাকরা পঞ্চমীভার্য্যঃ বিতীয়াকরা কোপধায়াঃ—মদ্রিকাভার্য্যঃ পাচিকাভার্য্যঃ পাচিকাকরা পাচিকায়তে পাচিকাসাস্থানং মন্ততে পাচিকা মানিনী। অপাকাদেরিতি কিমৃ ? পাকভার্য্যঃ একভার্য্যঃ।

⁽b) खदः **अवक्रि**म् अकक्षीदः स्मरकोतस्। श्रातातातारककृत्ममर्खराम्।

⁽৯) ননা। প্রণপ্রত্যরাভা ত্রীপ্রণী সংজ্ঞায়ামেব, ব্যক্তিনিব্ভাতাবে কথং পুংবত্তপ্রান্তিঃ, নৈবং সংজ্ঞাশক্ষোহণি বহুব্যক্তিনিটো লোকে শাজে চ দৃভতে, দেবতভাতিঃ ধাছাদিক, বদ্যেবং সমানামাক্তীনাং নামাকৃতীনাং ভাবিতপ্রভাগ মাজি সমানপ্রবিনিমিভাভাবাৎ, সত্যুৎ দভা গুলাভি নামকৃতিনিমিভাভাবাৎ, বত্ত ভ্রাভি নামকৃতিলাং সপ্রপাদিবং সমানপ্রবৃত্তিনিমিভাগ্রহেত্য্ব, বত্ত ভ্রাভি ভ্রাভি স্বর্গামের প্রকৃতিনিমিভাগ্রহেত্য্ব, বত্ত ভ্রাভি

শুকশার্থঃ। কর্ম্মধাররাদে তু পুংবদের দত্তরন্দাারিকা পঞ্চম-রন্দারিকা পাচকরন্দারিকা কারকজাতীয়া দত্তদেশীয়া। ৩৪। রন্ধিহেতোশুন্ধিতস্থারক্তবিকার্মোঃ।

র্দ্ধিনিমিত্ত তদিতত স্ত্রীপুংবর ভবতি। উপগবীভার্যাঃ।

হবে মাথুরিকল্লা মাথুরীমানিনী। বৃদ্ধিহেতোরিতি কিমৃ!

মধ্যমভার্যাঃ। অরক্ত ইতি কিমৃ! কারায়রহতিকঃ হারিদ্রেশ
পতাকঃ। অবিকার ইতি কিম্! লোগী ঈষা অত্য লোহেষোলবংঃ। অকন্মধারয়াদাবিত্যেব মাথুররন্দারিকা মাথুরজাতীয়া।

৩৫। জাতি সাক্ষাদীনিমানিনি।

জাতেঃ স্বাঙ্গাচ্চ পরা স্ত্রী ঈংপুংবন্ন ভবতি। কুম্বুকারীভার্য্যঃ করে জী হ্রন্থঃ কঠিকল্লা স্থকেশীভার্য্যঃ স্থকেশিকল্লা। অমানিনীতি কিমৃ ? কঠমানিনী স্থকেশমানিনী। অকর্মধারয়াণাবি-ত্যেব কঠরুন্দারিকা স্থকেশদেশীয়া।

৩৬। তর তম কল্প রূপ চেলড় ব্রুব মত হত গোত্রে জ্ঞানেকাটো হস্তঃ।

তরাদে পরে অনেকাচোণ্ডান্তস্ত তী হ্রম্ম স্থাৎ। ব্রাহ্মণি-তরা পটিবসা পট্তমা গুণাত্তয়ম্। ভুজঙ্গিকয়। গেটার্রিপা রহনি(চেলা ব্রাহ্মণিব্রুবা তরুণিমতা গোরিহতা পটিবুণোত্রা ভাষিতপুংস্ক ইত্যেব বুদ্রীতরা।

ভাষিতপুংস্ক ইত্যেব বুদুরীতরা।
৩৭। উপিতঃ শেষনদী চ বা পুংবদ্যোগিতঃ।

কোপধগ্রহণেন ভদ্ধিতকোপধা ন কার্কটিকণস্তা গৃহতে, তবৈব শিষ্টেরিইং, মজিকা ভাষ্য ইতি। মজবজিভ্যামিতি কং। কি ক্রিটিয়া ক্রেটিকে ক্রেটি

উগিতোঙা শেষনদী চ তরাদো ব্রমো বা স্থাৎ। কাহসো শেষনদী, একাচ্ডী উঙন্তাচ কৃদন্তাচ উগিতঃ পুংবচ্চ বা পুংবহুং তদ্ধিত এবেষ্যতে। শ্রেয়দিতরা শ্রেয়ন্তরা শ্রেয়দীতরা, বিহুষিকল্পা বিহুৎকল্পা বিহুষীকল্পা, পচন্তিতরা পচন্তীতরা পচন্ত্রা। একাচ্ডী স্ত্রেতরা স্ত্রীতরা। উঙ্ ধিবন্ধৃতমা ধীবন্ধু তমা, কৃৎ লক্ষিকল্পা লক্ষীকল্পা। স্তিয়ামিত্যেব স্ত্রীকল্পঃ কৃষদ্যাঃ প্রতিষেধ ইত্যেকে। লক্ষীতরা লক্ষীতমা ইতি।

७৮। वरने नीरशिश्वः। (১०)

বলপ্রত্যয়েহণন্তক্ত দীর্ঘঃ স্থাৎ। দন্তাবলঃ কৃষীবলঃ।

৩৯। নহি রতি রষি ব্যধি ৰুচি তনিষু क্যন্তেষ্ । (১১)

এবু কিবত্তেষু পূর্বকাণো দীর্ঘঃ স্থাৎ। উপান্ধি নীর্থ প্রারট্ মর্মাবিৎ নীরক্ পরীতং। প্রাদেঃ কৃষ্ণিনিত্তোপপদ্যা-ভিধানায়েহ তিমারুক্।

^{(&}gt;•) দন্তাবল ইতি ক্ষ্যাদিজ্যো বল ইতি বল: এবমান্ধবীবল:। ইত্যেব গৃহুতে তেম্ন নাম্ভং। যথা উৎসাহিবল:। অণ ইতি কিং জাড়-বল: পিড়বল:।

⁽১১) নহি। ক্রিয়াবিশেষণত কর্মানে স্থোকং বিধ্যতীতি স্থোকবিং, উরসি তৎ বিভারো যত স উরসিতং। দত্তে রুগ্ ষত স দতক্রিভাবের ক্রান কার ন দীর্ঘ ইত্যাহ প্রাক্তি, উক্তঞ্চ বার্ত্তিকক্রতা, ইতিকাররোপধাত্যা মত প্র্যাত্ত দীর্ঘ নেইমিতি, তত্ত্ত ইতি প্র্যাত নিতাভাং স তং সাহচর্দাং কারকপ্র্যাতি নিতাক্ষমাসাভ্যপগ্র ইতি পুরুষোভ্যাদরঃ।

80। कर्न नक्तरणाब्द्यार्वार्वे । (52)

কর্ণে পরে লক্ষণবাচিনোদীর্ঘঃ স্থাৎ। দাত্তাকর্ণঃ স্থুলা-।
কর্ণঃ স্থাকর্ণঃ। অফ্রবাদেরিতি কিমৃং অফ্রকর্ণঃ। আফর
স্বস্তিক ছিন্ন ভিন্ন ছিন্দে রিন্ট অন্ট পঞ্চ।নক্ষণাশ্যেতি কিংশোচ

85। रेंक्निवरर्शिकाः।

वटर देशसमा नीर्यः मा। श्राचीवहः क्षीवहः। श्रीत्नास्य न शीन्वहः।

8र। थारिनर्धनि वहनम्।

ঘণি প্রাদেশীর্যঃ দ্যাৎ। বীমার্গঃ অপামার্গঃ ৰাছল্যাৎ।
সাদকারয়াঃ কৃত্রিমে। প্রাসাদঃ প্রাকারঃ। অন্তত্র প্রসাদঃ
প্রকারঃ নিষাদঃ নিকারঃ। কৃচিদ্রা প্রতিবেশঃ প্রতীবেশঃ
প্রতিহারঃ প্রতীহারঃ। কৃচিদ্র স্যাৎ। প্রবাহঃ। প্রহারঃ
ইহাপি নিয়মঃ॥ ইকঃ কাশে॥ নীকাশোহন্কাশঃ॥ নেহ
প্রকাশঃ।

৪৩। বিশ্বস্থা বস্থরাটোঃ।

অনয়োর্বিশ্বন্য দীর্ঘণ স্থাৎ। বিশ্বাবস্থাং বিশারাট্। রাট্-নির্দেশান্নেহ বিশ্বরাজো।

88। নরে চ নামি। মিত্রে চ খরে।

मीर्घः मार । विद्यानदः विद्यामिळ अधिः । (১৩)

⁽১২) যং পশ্নাং স্বামীনা সম্বন্ধবিজ্ঞানার্থং দাত্রাকারাদিচিক্সং জিরতে ভদিহ লক্ষণম্। (১৩) বিশ্বো নাম নরঃ বিশ্বাসরঃ। -

৪৫। যথারু টি^থ সংজ্ঞার মৃ।

নান্ধি দীর্ঘাং ন্যাং । সংস্কৃতাহসংস্কৃতাবাপিপ্রায়: * সংজ্ঞা যথাপ্রতা । কোটরাবণং মিপ্রকারণং কিংশুলুকাগিরিঃ রোহিতাগিরিঃ । মতোচ । উড়ুম্বরাবতী বারণাবতী মশকাবতী শরাবতী অহীবতী মুনীবতী পদ্মাবতীত্যাদি । যথারু চিবচনা- মেহ অজিরবতী মলয়বতীত্যাদি ॥ শুনৌদং ট্রাদে ॥ শ্বাদং ট্রাং (১৪ শ্বাপুচ্ছাং, শপুচ্ছোহপি ॥ অফানো বক্রাদে ॥ অফাবক্রঃ ঋষিঃ অফাপদং শকটম্ ॥ কপালে হবিষি ॥ অফাকপালং হবিঃ ॥ প্রাবি তদ্যুক্তে ॥ অফাগবং শকটং দিগুরয়ম্ ।

৪৬। চিতেই কপি।

চিতেঃ কপি দীর্ঘাং ন্যাং। একচিতীকঃ দ্বিচিতীকঃ।

৪৭। অনুস্থামপি দৃশ্যতে।

व्यत्मिमार्गान नीर्यः महार । मछामछि, बाकूवाहित, यष्टीयष्टि,

^{*} সংস্কৃতাবেতি, সংজ্ঞা ষথা শুকা মুনিভি: প্রযুক্তা প্রায়ঃ প্রযুক্তান্তে ইত্যর্থঃ। অসংজ্ঞায়াক কোটরবনং ণত্ত্ব ন স্থাৎ। কিংতলুকানাং গিবিতি ষ্টীস্মাসঃ। কোটরমিশ্রকসিধুকপুরগণারিকপ্রয়োগাশ্চ পঞ্চাহ্মী। কিং শুলুক শাব নড় অঞ্জন ভঞ্জন লোহিত কুকুট বন পিজল সাল ভলুকানামিত্যক্তো। অজিন (র), খলিরপুরপুলিনকারওবচ্কুবাককলহংসাঃ মলর্গ্ড। দিজনাদিঃ। শার বংশ ধ্ম অহি কপি মণি মুনি শুচি হনুঃ শারাদিঃ।

^{(&}gt;৪) छनः। छत्नाम्ररञ्जेत मर्श्वा तक म चाम्रश्वेः उर्श्वरस चाम्रश्वेशि। छत्नाम्छम्रश्वे। ठूर्गश्रृष्क् शर्षापि वामवज्य। वतार्व्श्वे। ठूर्गश्रृष्क् शर्षानार भवार ममाहातः उउद्वे; धर्म आमिश्वाम्य। अवम् मूर्यक जूष्कित्य्।

পুত্রপত্যাঃ পরতোগোত্তে দ্রিয়াং যাপ ঈঃ স্যাৎ। কারীষগন্ধীপুত্রঃ,* জাতৃকর্ণীপতিঃ। তৎপুরুষ ইতি কিমৃ ? কারীষগন্ধ্যাপতিত্রামঃ।

৪৯। বন্ধে বহুত্রী হো বা চ মাতৃক্মাতৃ মাতেষ্ট্র।

বন্ধে পিরে বহুত্রীহো যাপ ঈঃ স্যাৎ। কারীষগন্ধ্যা বন্ধু-রস্থ কারীষগন্ধীবন্ধুঃ। বাচ মাতৃকাদিয়ু হে কারীষগন্ধী মাতৃক! হে কারীষগন্ধ্যামাতৃক! হে কালেনীমাতঃ! শিকালেন্থামাতঃ! বারাহীমাতঃ! বারাহামাতঃ!।

कात्मशामाण्डः। वाताश्चिमाण्डः। वाताशामाण्डः। वाताश्चिमाण्डः। वाताश्चिमाण्डः। वाताश्चिमाण्डः। वाताश्चिमाण्डः। विश्व विष्व विश्व विश्व विष्व विष्य विष्व विष्व विष्य विष्य विष्य विष्

দৃগ্দৃশ দৃক্ষেষ্মতদাদেক্টেরান্তবতি। অন্যাদৃশঃ অন্দৃশঃ, তাদৃক্ তাদৃশঃ তাদৃকঃ, অমৃদৃক্ অমৃদৃশঃ, এতাদৃক্ এতাদৃশঃ, ভ্রাদৃক্ ভ্রাদৃশঃ।

৫২। मञ्जेरेकीकाधिकत्र काजी सरसी ।

অত মহতটেরাদ্রবতি। মহাপুরুষঃ, মহানৃ ভুজোহস্যেতি মহাভুছঃ, মহাজাতীয়ঃ। একাধিকরণ ইতি কিমৃ? মহতঃ

^{*} করীবগরেঃ পৌত্রাদ্যপত্যং স্ত্রী, অণিন ইতি বাপ্ কারীব্যবসা।

१ कालक **बनः कालनः उक्रा**পछार क्वी कारमञा। সুমাসাভাচ म।

পুত্রো মহৎপুত্রঃ। ন চ্যুর্থে। সহদৃষ্ঠঃ॥ ঘাদকরবিশিটের পুংবটিলী মহত্যা ঘাদো মহাঘাদঃ, মুহাকরঃ মহাবিশিটঃ।

५७। मार्केटनीम भारमी ती के ठवातिश्भ-मामियीनवर्णत्रवस्वीयभीरात्रीः। विश्वत्रम्

দশাদো দ্বাষ্টনটেরান্তবতি। তেশ্চ ত্রয়্। দ্বাধিকা দশ
দাদশ দাবিংশতিং, দাত্রিংশৎ, অন্টাদশ, অন্টাবিংশতিং, অন্টাত্রিংশৎ, ত্রয়াদশ, ত্রয়াবিংশতিঃ, ত্রয়স্ত্রিংশৎ। বা তু চত্বারিং
শদাদির্ দ্বাচত্বারিংশৎ, দিচত্বারিংশৎ, অন্টাচ্ছারিংশৎ, অন্টচত্বারিংশৎ, ত্রয়শ্চ ত্রিচন্থারিংশৎ, ত্রয়শচ্ত্বারিংশৎ, এবং যাবমবতি দানবতিঃ, দিনবতিঃ, অন্টানবতিঃ, অন্টনবতিঃ, ত্রয়োনবতিঃ, ত্রিনবতিঃ, আনবতেরিতি কিম্? দিশতং অন্টনহত্রং
ত্রেয়ুতং। অবহুব্রীয়্শীত্যোরিতি কিম্? দিদশাঃ ত্রিদশাঃ
দ্বাশীতিঃ ত্রাশীতিঃ।

৫৪। বোড়**শৈ**কাদশ চ।

समा छेष्ठः, ममा छवः भीर्षवक निभाजाट । त्यांक्म वकामम ।

(१) व्याप्त कि विभाग ।

(१) विभाग कि विभाग ।

উত্তরপদে পরে নঞােহ দ্ভবতি। অব্রাহ্মণঃ, অশোচ্যঃ
আচি তু, অন্। অনুফঃ অনুকঃ। সর্বান্তমূত্তরপদং ততােনেহ
নাতিশুকুং। অনখাদেরিতি কিমৃ ? নাস্তি খং শৃত্তমিমিরিতি
নখঃ। ন আজতে নআট্ ন পততীিতি নপাৎ পুষােদরাদিঃ,
ন বেক্তি নবেদাঃ অসস্তঃ, ল নাস্ত্যসত্যমিরিতি নাস্ত্যঃ
সংজ্ঞায়ামেব নমুচি নকুল নপুংসক নক্তনাকাঃ॥ নগাে বা
বা
ক্রমনালয়াঃ॥ পক্ষেহগঃ।

^{*} अम्बः अन्यकाषास रेकार्यः।

৫৩। তিভিচাকেপে।

নঞ্জধা স্যাৎ। অপচনি জামা। অঘটতে নিভরাং, অন-শান হৃষ্।

৫৭। একদিন্ত।

विकास (क्षार महत्त्र) विकास विश्व कि । विकास विश्व कि । विकास विश्व कि । विकास विश्व कि ।

অত সহস্য সো বা স্যাৎ। সপুত্রঃ সহপুত্রো বা। বছ-ব্রীহো কিং সহযুধ্বা।

(क) आभिवि त्गावरमहत्नद्वर ।

আশংসায়াং গ্ৰাদিষেব সহস্য সো ৰা স্যাৎ। স্বস্থি তে সগবে সহগবে বা। স্বস্তি তে স্বৎ্যায় সহবৎসায় বা। স্বস্তি তে সহলায় সহহলায় বা। নাততে স্বস্থি তে সহ পুতায়।

৬০। নিত্যং সংজ্ঞা গ্রন্থাধিকার্মেয়ে।

এষু নিত্যং সহস্য সং স্যাৎ। সংজ্ঞায়াং সার্থং স্থানং গ্রন্থান্তে সাঙ্গান্ধীতে অঙ্গান্তানাদীত ইত্যর্থঃ। অধিকে সচ্চোণা থারী। অনুমেয়ে সাগ্রিঃ কপোতঃ, গৃহে কপোত। প্রনান্ত্যাব্যগ্রিরসুমীয়তে। স্পিশাচিকা বাত্যা।

৬১। অব্যয়ীভাবে চাইকালে।

অত্ত সহস্য সঃ স্যাৎ। সচক্রং নিধেহি বাণং। অকাল ইতি কিম্? নহ মধ্যাহ্নম্।

৬২। সমানশী গ দৃক দৃশ দৃক জ্যোতি-জনপদ রাত্রি নাভি বন্ধু ব্রহারি পক্ষেয়। এযু সমানস্য চ সঃ স্যাৎ। সদৃক্ সদৃশঃ সদৃকঃ, সজ্যোতিঃ সজনপদঃ, সমানং ব্রহ্মচরতীতি সব্রহ্মচারীত্যাদি।

৬৩। বিভাষী রূপ গোত্রনাম স্থান বর্ণ ধর্ম বয়োজাতীয়োদরেষী।

রূপাদে সমানদ্য দো বা স্যাৎ। সরপঃ সমানরপো বা। সংগাত্তঃ সমানগোতো বা, সনামা সমানন্মো বা, সংশা সমান-ধর্মা বা, সবয়া সমানবয়া বা, সজাতীয়ঃ সমানজাতীয়ঃ, সোদরঃ সমানোদরঃ সোদর্য্য ইত্যপি।

৬৪ ৷ অনুস্টান্ত কারকেয়য়েরিবষ্ঠা তৃতীয়াস্থ্যা বীশীরাশাস্থাস্থিতোৎস্থকোতি-রাগেবু"৷ (১৫)

কারকে ইয়ে চ পরে সামান্তেন অন্তথান্তরতি। অন্তোহন্তম্য কারকঃ অন্তংকারকঃ অন্তিমিন ভবোহন্তদ্যেদং বা
অন্তানীয়ং, আশীরাদো পুনরষষ্ঠ। তৃতীয়াস্থ্যা বুঁ অন্তম্যান্তৎ
অন্তা অন্তিমিন্ বা আশীঃ অন্তদাশীঃ। এবং অন্তদাশা অন্তদাস্থা অন্তানিস্থিতঃ অন্তদ্ধ্যুকঃ অন্তদ্ভিঃ অন্তানিঃ। অষষ্ঠ্য
তৃতীয়াস্থ্যেতি কিম্? অন্তম্যাশীঃ অন্তানীঃ অন্তানিস্থিতোহন্তান্থিতঃ।

७৫। अदर्थ वी।

⁽১৫) অন্তদিতি দাজাদেশ:, আশীরাদে বিষ্ঠান্ত তৃতীরান্তপ্রান্তরিবেধাৎ সামাজেনেত্যাহ অক্সদীর্মিতি অবস্তান্ততীরাম্ভেতি নঞ্ বরপ্রান্তর্গান্তরিক।

অর্থে তথ্বৈবাফ্যান্তবা, সাথে। অক্সদর্থে। অক্তার্থের বা ।
১৬। কোঃ কৎ তৎপুক্ষেইচ্ত্রিবদরথের ।

অজাদো পরে কোঃ কৎ ন্যাং। কদমং কছ্ফাং কল্লয়ঃ। কৃতশস্তো ন য়োজিফুনশ্চাট্যো যজ্ঞানস্পৃহঃ। কামী যশ্চ জর-মেতে ক্তবংশেষু কল্লনঃ। কৰদঃ কদ্রথঃ। এষিতি কিম্পু কুবাক্সনঃ। তৎপুরুষ ইতি কিম্পু কাশয়োহরং জনঃ।

७१। इति है बारजी।

তৃণে কোঃ কৎ স্যাৎ। কর্ত্ণং। জাতাবিতি কিম্? কুতৃণম্।

७৮। की श्रथुक्तरंशातीयन्तर्थं है।

পথ্যাদে । কা সাং । কাপথঃ কাক্ষঃ * । ঈষদর্থে চ ॥
काञ्चः काমধুর্ম ॥ বা পুরুষে ১ কাপুরুষঃ কুপুরুষঃ ।

७ । क्वरम्हरिष् । (१७)

উष्क काः कवः का ह महाचाः करनाकः कावः कष्ट्रक्षम्, ह । । १०। समग्रमा सम्याव (लथलारमव् । (১৭) यार्ग समग्रमा सद्धनि । नित्रसूरक्षक्षथा । समग्रमा

^{*} কুৎসিত্মক্ষং কাক্ষঃ কটাক্ষঃ, কাজেণানাদবেক্ষিত ইতি ভট্টিঃ। অবিশেশদনিক্রিয় পর্যায়েহপি, কাক্ষোদ্যতঃ। বর্ত্তমানজ, বছরীহাবপি, কুৎসিতে অক্ষী বস্ত কাক্ষঃ। অফি স্কিশ্ভ্যামিত্যৎ। বার্ত্তিকভাষ্যসৈন্মত-মেতৎ, অক্স পক্ষে ভূ কুপথঃ। ঈ্রদর্থে বর্ত্তমানক্ত কোঃ কা ভাদিত্যথঃ।

⁽১৬) कव । जेराक्क् सम्राका करण दिशीयटण।

⁽১৭) मना नार ज्ञापियां ज्वारियां मृश्चरकः स्वा, ज्ञाहः स्वः द्वर रुक्ताम्। क्षम् अत्यारलास्काम्।

প্রিয়ং হৃদ্যং তিস্যে দ্যিত্যণ্ হার্ক্ষং । হৃদ্যং লিখতি হল্লেখঃ
হল্লাসঃ । অত্ত হৃদ্ধবোহপাতি তেনোভয়ং স্যাৎ । হৃদ্য
শোকঃ হুচ্ছোকঃ হৃদ্যরোগঃ হুটোগঃ সৌহাদঃ
সৌহদ্য্য ।

१५। नम् नामिकांश य তमि क्यु एक वर्ष नगतरशिः।

যাদো নাসিকায়া নদ্ ভ্ৰতি। নস্যং,নন্তঃ পতিতং নং কুদেং, অবৰ্ণ নগৰয়োৱিতি কিম্? নাসিক্যোবৰ্ণং নাসিক্যং নগৰম্। ৭১। পাদস্য পদে। গোপাহতাত্যাজিষ্ । (১৮)

গাদিরু পাদস্য পদঃ স্যাৎ। পদগঃ পদোপহতঃ পদাতিঃ পদাজিঃ।

৭৩। পদিমকা শিহতি গেষু। (১৯)

যে পাদস্য পদ্ধবতি। পাদে বিধ্যন্তি পদ্যাঃ কণ্টকাঃ পাদে ভবঃ পদ্যঃ শৃদ্ধঃ। অতদর্থ ইতি কিম্ ? পাদ্যং জলং কেবলস্য গ্রহণামেহ দিপাদ্যং, অপিশদাদিকে চ, পাদাভ্যাং চরতি পদিকঃ।

,१९। अठः त्नी।

খাচঃ শে পঞ্জদ্য পদ্ধবতি। বিচ্ছাগায়ত্রীং শংসন্তি, বিপ্সায়াং

⁽১৮) পাদাভ্যাং প্রচ্ছুতীতি ড: পদা:, পা:।ভ্যাং উপহত:। এবং পাদা-ভ্যামজতি অভতীত্যাদি বাক্যম।

⁽১৯) পাধয়োহিমম্ । পাগাভ্যাং কশিতৃং হি:সিতৃং শীলমস্তেতি বাক্যম্

শস্। ঋচ ইতি কিমৃ ? পাদশঃ কার্যাপণং দদাতি। পছজো-হপ্যস্তি তেনাফত্রোভয়ং স্যাৎ। পদ্বোষঃ পাদঘোষঃ পশ্মিঞঃ পাদমিশ্রঃ পছকঃ পাদশকঃ পশ্লিফঃ পাদনিকঃ।

্ৰুঙ। উদকস্যোদে ধি পেষং বাস বাহ-নেষু। (২০)

এযুদকস্য উদঃ স্যাৎ। উদধিঃ উদপেষং উদবাসঃ উদ-বাহনঃ।

११। मध्बारामस्मा है। (१५)

নান্দ্রি সমাদে পূর্ব্বস্যান্ত্রস্য চ উদক্ষ্য উদঃ স্যাৎ। উদ-মেঘো গ্রিরিঃ উদপেয়ঃ ক্ষীরোদঃ লবণোদঃ লোহিভোদঃ।

৭৮। বা মুস্থোদন শক্তা বিন্দু ব্জ্র ভার হার বীবধগাহেষ্ট্র (২২)

মস্থানো পরে উদকস্যোদো বা স্যাৎ। উদমস্থ: উদকমস্থং উদোদনঃ উদকোদনঃ উদশক্ত্যুঃ উদকশক্ত্যুঃ উদবিন্দৃঃ উদকবিন্দুঃ উদবজ্র: উদকবজ্রঃ। ভারহারগাহাঃ কর্মণোহপন্তা ঘণন্তাশ্চ, উদভারঃ উদকভারঃ উদহারঃ উদকহারঃ উদবীবদঃ উদকবীবধঃ উদগাহঃ উদকগাহঃ, অণি উদকগাহী স্ত্রী।

⁽২০) শসংজ্ঞার্থং ধিগ্রহণং উদধিরিত্যধিকরণে কিঃ, উদকেন পিনসীতি প্র উদ্পেবং। উদবাস ইতি বঞ্জীসমাসঃ। মধ্যপদলোপীতি পল্পনাভঃ।

⁽२১) छेक्कशुर्त्कारमणः बद्धाः क्षीत्रमुक्कमस्त्रकाकि वाकाम् ।

⁽২২) উদকেন সিক্তঃ শকুরিভি বাক্যং।

१८। उद्भूर्यी देवेक्श्लारमी। (२७)

তৎপূর্যো পরে উদকস্থোদো বা স্থাৎ। উদক্তঃ উদক-কুন্তঃ উদপাত্রং উদকপাত্রং। এক হলাদাবিতি কিমৃ ? উদক-স্থানম্। তৎপূর্যো ইতি কিম্ ? উদকগিরিঃ।

৮०। रेकी इत्सीरुडारमभरमयूर्वः।

উত্তরপদে পরে ইণ্ডানাং হ্রেষো বা স্থাৎ। প্রামণিপুত্রঃ প্রামণীপুত্রো বা. ভমুলতা জমুলতা। অঙ্যাদেরিতি কিম্ ? গার্গীপুত্রঃ। আদেশস্থা কারীষগন্ধীপুত্রঃ শুক্রীভূতং। সেমুবঃ জীকুলং জাকুলম্।

৬১। ভ্রুবঃ কুংস কুট্যোর**চ্চ**। (২৪)

জনয়োক্র বা হ্রপো বা স্থাৎ। অচ বা। ক্রকুংসঃ ক্রকুংসঃ ক্রকুটঃ ক্রকুটিঃ ক্রকুটিঃ ভুকুটিংশ্চত্যেকে।

४२ । छार्थीनामि वहनम्।

'সংজ্ঞায়াং ভাগেবিত্লং হ্রস্বঃ স্থাৎ। রেবতিপুত্রঃ বাহিনিপুত্রঃ বৈদেহিবল্বঃ শিলবহং শিলপ্রস্থং নামনগরং কচিনৈব নান্দীঘোষঃ। কচিদসংজ্ঞায়াঞ্চ কলজঃ মন্দুরজঃ সমুক্ষজটকেশঃ।

- (২৩) তৎপু। একোহসহায়েহল আদির্যন্ত তিমান প্রিয়িতব্যে পরে উদকল্প উলাদেশো বা আৎ। পূর্বকাধিকরণং তদেব গ্রাহ্ণং। বধা উদক্তং, অসহায়ত। তু' হলজন্যজাতীয়াসালিগ্যাৎ হলবন্নস্যাদ্যভাবাদৈকশব্যঃ। সংখ্যাত্থ ব্যান্য্য ভাবাত্তেনা সংযোগাদাবিত্যর্থঃ।
- (১৪) জ । জবো: কু:সং, কুসিল্ডোরাদ্বিং দওকোভাষণার্থোদন্ত্যাবঃ ক্রান্থো: কুটিব্রিতি কুট কোটিল্যে ইতি কুট + ই:।

৮৩। ইফকৈষীকামালানাং চিততৃণ ভারিষু।

ইউকাদেশ্চিতাদো হ্রমঃ স্থাৎ। ইউকচিতং। স্বিশেষণা-নাঞ্যোতে। পরেক্টক্চিতং ইধীক্তৃণং মালভারিণী উৎপল-মালভারিণী করা।

५८। किर्लोश्किली প্रত্যয়ে। **आ**र्थः কপি বা। (২৫)

🍟 কে প্রত্যয়েহণে। হ্রন্তঃ স্থাৎ । জ্ঞকা চণ্ডিকা বিশ্বকা প্রাম-ণিকঃ, নৈশাদকৰ্কঃ। অণ ইতি কিম্? নৌকা। অকপীতি কিম্ ? সন্ত্ৰীকঃ, সবস্ত্ৰঃ। আপঃ কপি বা। বহুখটুকো বহু-थ्टोकः।

५०। हेम्य कार्श्वयानि यार्थश्किन-कारमंह ।

আপি পরে প্রায়ককারাৎ পূর্বভাহবর্ণ ইম্কুতি। কারিকা, পাচিকা। প্রকারার্থে জটিলিকা মুপ্তিকা। মামক-ন্বক্ষেট্ট । মামিকা নবিকা ॥ ত্যণ্ত্যপেট ॥ দাকিণাত্যিকা অমাত্যিকা। স্বার্থ ইতি কিম্[?] বহুপরিব্রা**জকা পুরী। অকি-**পকাদেরিতি কিমৃ ় ক্লিপকা, ধ্রুবকা, উপত্যকা, অধিত্যকা,

(२८) कि। व्यवस्त्रमा धार्तिनिक्तमाति (भवः, क्राव्यति सार्व कः। নিষাদকর্: দেশতত ভাতার্থে টিকণ্ উগিছরিতীক: ক:। আটিল্পকার रेिं पूर्वारमः वः कृष्टिनिका। सरसम्बन्धार्य अव्यवस्थारम् । नावर কায়তীতি ড: নবিকা। দক্ষিণ + ত্য়ণ স্বার্থে ক:। অধ্যুণাভ্যাং ত্যকু। দেব-

দেবনত্তকা, উত্তরপদলোপে চ দেবকা ॥ তারকা জ্যোতিষি ॥
তারিকা অন্যত্তে ॥ অপ্টকা পিতৃ দৈবত্তো ॥ যতদোশ্চ ॥ যকা,
সকা, যকাভ্যাম্ তকাভ্যাম্ ॥ আশিষি চ ॥ জীবকা, নন্দকা ।
তান্ত্রা ১১

৮৬। স্তকাদীনাং বা। (২৬)

এষামবর্ণ ইন্তবৃতি বা। সূতিকা সূত্র সংপুত্রিকা
সংপুত্রকা রন্দারিকা রন্দারকা ॥ আপোয়ক পূর্বস্থি ॥
ইভাকা ইভাকা, ক্ষত্রিয়িকা ক্ষত্রিয়কা, চটককা চটকিকা,
আপ ইতি কিম্! শকশকায়তে কিপ্ শকশকা ততঃকঃ
শকশকিকা নিত্যং ॥ দ্বিষয়োশ্চানঞ্জঃ ॥ দ্বকে দ্বিকে এষকা
এষিকা। নঞ্জ পূর্বিয়োস্ত নিত্যং । অদ্বিকে অনেষিকা ॥
ভস্তাজাজ্ঞাস্থানাং নঞ্ পূর্বাণামপি ॥ ভস্তকা ভস্তিকা,
অভস্ত্রকা, অভস্তকা অজক। অজিকা জ্ঞকা জ্ঞিকা স্বকা স্বিকা।
৮৭। নিত্রশ্রীণাং প্রকৃত্যাবাপ্ । (২৭)

সর্বাস্ত্রীণাং প্রকৃত্যা বাহপ্ স্থাং। মালাক। মালিকা মালকা, খটাকা থটিকা থটকা।

'দতকেতি সংজ্ঞায়াং কঃ। তারকাৎ সংজ্ঞায়াৎ কঃ। অশা-তিকন্ আইকা। এবং কারিকা বধিকাদয়ঃ প্রয়োগতো জ্ঞেয়াঃ।

- (২৬) স্তকেতি স্বার্থে কঃ। শেষাম্বেতি কপ্। সংপ্ত্রকা অজ্ঞাতাদিস্বাংক ইতি শ্রীপতিঃ। অস্তার্থে শৃন্ধবৃন্ধাত্যামারকঃ। এবং বর্ত্তনকাদ্যঃ। যকে পূর্ব্বেটি যুমাৎ তস্থাপঃ কাৎ পূর্ব্বস্যাপীয়াসাং। ইচ্চা ইত্যজ্ঞাতাদ্যর্থেকঃ। এবং ভ্রাত্তিকা ভ্রাত্ব্যকা। হৈষয়োশ্চানঞ্ইত্যনরোঃ কাৎ পূর্ব্বস্যাকোহকারস্তেবিভাষ্যতে। ভস্তকেতি অজ্ঞাতাদ্যর্থে কঃ। কেছণ ইতি মুস্বঃ।
- (২ং) নিতাম্। ঘন্তাঃ কচিবপি ন স্ত্রীত্ব্যভিচারঃ সা নিতান্ত্রী, তন্তাঃ
 কপ্রতারের সহাপি প্রকৃত্যা বিভাষ্যতে। মালা কুৎসিতা বন্তা ইতি কুৎকিতার্থে কঃ নালাকা। পক্ষে ব্লক্ষঃ।

৮৮। घुडिक भगामिन दिन्ते के भेगे। (२৮)

দ্যাদেঃ পরস্থাপ্শক্ষসপ্ স্থাৎ। দ্বীপঃ অন্তরীপঃ অস্থীপঃ নীপঃ সমীপঃ। অন্ত ইতি কিম্^ম প্রাপঃ কুপঃ। অনুপৌদেশে। নিপাত্যতে।

৮৯। প্ৰোদরাদীনি যথোপদিউম্। (২৯)

শিকৈষ্থা প্রযুক্তানি পৃষোদরপ্রকারাণি তথৈব সাধুনি
স্থাঃ। পৃষত্বনমস্ত পৃষোদরঃ, মছাং রৌতি ময়ুরঃ, ব্রুবন্তঃ
সীদন্তাস্যাং রুষী। বারিবাহো বলাচকঃ, পৃষান্তে গলন্তি
চ পুর্গলাঃ, তথ্যা ভাবঃ তথতা মমেত্যবায়স্য ভাবঃ মমতা
মমহং, রতেন্তনং রত্রং, বাহিতং পাপমনেন ব্রাহ্মণঃ, যশং
স্কৌতি যক্ষঃ জিতং পাপমনেন জিনঃ, কৌ জীর্যাতে কুঞ্জরঃ.

- (২৮) ঘান্ত। ক্রিয়াদ্যোতকত্মপসর্গতং তদিহ প্রাচ্যুপসর্গলকণং অপ্নশকং প্রতি তদভাবাং। দ্বীপমিত্যাদি দ্বাভ্যাং পীতা আপোদরেতি বাক্যে ঋক্ প্রীত্যং। নির্ম্বতা আপো যত্রেতি নীপঃ। এবং বীপপ্রতীপাদয়ঃ। অনুসতা আপোষত্র ইত্যন্পঃ দেখঃ।
- (২৯) পূষো। বথোপদিন্তমিত্যনীভাবং, আদিশকং প্রকারার্থে, শিষ্টাং মুনয়ং তে ধলু প্রমাণং ভাষত্তেহত আহ শিইন্তরিতি। পূলোদর ইত্যত্র তলোপো-বিকারং। এবং পৃষোদ্যানং। ময়বং ইত্যত্র রোতের্ডপ্রত্যমে হীশকন্ত মুবিকারং। ময়বর রোতীত্যক্তে। বলাদান্তবং কমনেনেতি বলাহক ইতি শ্রীপতিং। মুব্রেরা দভোহস্যান্তীতি রপ্রত্যরেহিপি কুঞ্জরং। বোঢ়া বোঢ়ক ইত্যত্র ববোহন্তব-প্রেত্যে পরস্থাকেইবর্গালেশং। যবং স্বার্থেহিপি ধাপ্রত্যরমিক্সন্তি অভএক্সমুং বিধিরিতি বার্ত্তিকৃথ। নানার্থেহপীতি কার্মিকারো প্রকারান্তিকৃত্রে, রোচ্চা-বেতি তল্পত্রমাহ বাতা চ ধাপ্রত্যরে ইতি ভাষ্যীক্ষান্তং। শাক্ষানাধ্রণো-বাত্তি তল্পত্রমাহ বাতা চ ধাপ্রত্যরে ইতি ভাষ্যীক্ষান্তং। শাক্ষানাধ্রণো-

হিনন্তীতি সিংহঃ. কেন উত্তাতে কৃষ্ণঃ, আগত্যতেতি অঙ্গণং, বধা ধাদত্ভ্যাং, ষোঢ়া য়েড্ড ষোড়ন্ বৎসঃ বাঢ়া চ ধাপ্রতায়ে। তৃতীয়ং পিইং ত্রিপিইপম্ ইত্যাদি। বর্ণাগমো বর্ণবিপর্যায়শ্চ ঘৌচাপরে বর্ণবিকারনাশো। ধাতোন্তদর্থাতি-শয়েন যোগন্তত্ব্যতে পঞ্চিধং নিরুক্তম্।

ইতি শ্রীপল্পনাভদতকতো স্থানে ব্যাকরণে চতুর্বভাধ্যারত চতুর্ব: পাদ:।

তন্মতং, তেন ষোঢ়া ষোঢ়া ইতি। আদিশবাং তীরস্ত ভাবঃ দক্ষীণতীরং ष्ववारभारत जः मानिबरणारमारभा विकासारण, ष्ववण्यः वण्यः, ष्ववत्तरहाव-ক্রন্থঃ, অপিনদ্ধং পিনদ্ধং, অপিহিতং পিহিতং, অপিধতে পিধতে। জীবনক্ত মূতেবাদে: জীবনক্ত মৃত: পটবন্ধো, জীবনং মূত্রয়তীতি বা জীমুতেতি, কে कीम् छ थे शिक :। इक्षां भर छ नृक्षा भः, इनी भर छ नृत्या । वृक्ष छार छ नृत्या । খমিলাশু অশিক্তিযু নশ্চ লুকু বাগ্যাদখবসোভ্য ইণ্ বা মুনিঃ, গদ্ধ ডত্বং দস্য লত্বং বালোক্সকৃত, গানং ধুর্মনক্তেতি গন্ধর্ম:, পিশিতমন্নাতি পিশাচঃ, অধা-স্তিষ্ঠত্তামিলখথা, এযু ত্রিযু সস্তঃ, উদ্ধতো হল্পরং উড়ু স্বঃ ইদোরাগবাদঃ, উদ্ধিং 'খলাতে উদ্ধলং উল্থলঞ অস্য নিত্যং লত্বং ক্স্য তৃ বা মধ্যে উত্ঞ, কুম্-क्षानग्राठ क्रकानः, जेनानित्नानः किथिजितिकार् किकिका भाषा नित्कवः. অপি কিছিকেত্যপি। কিং কলবতীতি কিছু: ডু:। এষু ত্রিয়ু মৃদ্ধন্য:। (मग्रीदबाटकाश्टमाणि मिटवीकाः,वर्गाश्रमः मिवमटकनाणि मिकः, श्रकावनिवृज्यर्थः পাঠ: ওকার মধ্যোছপি দুর্ভাতে, ইশেন্তালব্যন্তাদপ্প্রত্যয়ে হলীশা লাক্ষালী-শেতি, এতে মুর্দ্ধণ্যস্তাবি তাত্তে। অপ্সলোলতীতি লুনাপঃ, মহাং শেতে মহিৰ ইতি বৰ্দ্ধমানঃ, বৃত্তিৰ জ্বটাংস্যোতি ধৃৰ্জ্জাটীরিত্যাদয়ঃ। ইহ নিকৃক্ত কারস্য শাক । রনস্য মতং পঞ্বিধং বর্ণাগম্ ইতি কুতল্ডিং প্রাপ্তির্বিপর্যয়ং भौकी नेपाकतनः विकास छ टाएनः नात्नातानः, ज्यार्किकान्नान द्योषि -ব্লিপ্রবৃত্তিং, অর্থক্ত চ তেন যোগোগাডোঃ, যথা, ভাষ্যন্ রোডীতি ভ্রমরং, चंद्र रव्योधामार मान रेजि निवम ।

তদ্বিতপ্রকরণে

र्शक्षमधायमा अवनः शकः।

२। उत्तिष्ठ ॥ अधिकादा १ ११ २। विकि त्र क्षित्र हो भारत

ণিতি তদ্ধিতে পরে প্রস্কৃতেরচাৎ মধ্যে আদেরচোর্দ্ধিঃ
ন্যাৎ। গার্গ্যঃ, দাক্ষিঃ ॥ সমানে পূর্বীপদন্য ॥ ঐপগবঃ ॥
ত। প্রালয় কেকর মিত্রগুনাৎ যাদেরির চ॥

এষাং য়াদিভাগস্য বৃদ্ধিসহচরিত ইয়াদেশঃ স্যাৎ। প্রদায়াদাগতং প্রালেয়ং হিমং, কেকয়স্যাপত্যং কৈকেয়ঃ, মিত্রয়োর্ভাবেন শ্লাঘা মৈত্রেয়িকা।

৪। দেবিকা শিংশপা দিত্যবাড়্দীর্ঘসত শেরসামাৎ ॥

এষামাদেরচ আদ্ভবতি। র্দ্ধেরপবাদঃ। দেবিকারাৎ ভবং দাবিকং পরঃ, দাবিকাকূলাঃ শালয়ঃ, শিংশপারাঃ বিকারঃ শাংশপশ্চমসঃ, দাভোঁহঃ, দীর্ঘসজ্ঞে ভবং দার্ঘসঞ্জঃ, জ্যোসি ভবং আরসং।

e। देरनीरवृत्रिवाभकारमेरेत्ररयोदनी

महाबाद ए तिन्यां कार्यका कार्यकारणाः चार्यकार्याः गाजिर । देवनाकानः, अवस्तानजार स्मीतिकः। जन्म

^{ः।} विवर्गिविकः। त्या-विकि-विकिः पटनरे क्या गावेः विकार त्याकिः, विकार वस्क्रीकि विकासके वक्षी विरक्षीय वेशविकानि वीवक्रीया

গতাদেরিতি কিং, স্বাগতমাহ স্থাগতিকঃ, ব্যবহারেণ চরতি-ব্যবহারিকঃ, ব্যাড়স্যাপত্যং ব্যাড়িঃ, অত্রাদেশস্থানিবং কচিদিতি রণাদেশস্যাস্থানিবস্থাদিণোর্ছিন ভবতি ॥

७। चार्त्वज्ञचन्नगरम् ॥

অনিণাদেশার্থং বচনং। খাদের্য্বেরিয়েরিবের্নিরারি স্যাতাং।
শুনইদং শোর্বিং, খাদং ট্রায়ান্তবং শৌবাদং ট্রং, ভারেনিযুক্তোদোবারিকঃ, খোভবিতা শোবস্তিকঃ, স্বস্তীত্যাহশোবস্তিকঃ, স্বরমধিকৃত্য ক্তোগ্রন্থঃ সোবরঃ॥ ন্যগ্রোধস্যাসমন্তব্য় । নৈয়গ্রোধঃ, সমস্তদ্য তু ন্যাগ্রোধস্লাঃ শালয়ঃ।
অখগণাদেরিতকিং, খগণেন চরতি খাগণিকঃ, স্বাদেরিকারাদাবেব নিষেধঃ, খাদং ট্রিঃ, স্বাস্থাং, স্বাজন্যুং, স্বপত্যে সাধ্ঃ
স্বাপতেয়ং, স্বার্থিকঃ, স্বাভাবিকঃ। খাপদস্য ব্য় খাপদং,
শোরাপদং॥

. १। ७ कनच्चित्रक छत्र भमें ॥

শুক্লব্প্রভ্তেরভরপদস্য র্দিঃ স্যাৎ। শুরুলাঘবং, প্রকাশ্বং, পিতৃপৈতামহং, গঙ্গালোতোন্যারেনাত্র র্দিবিশিওং॥ খতোরসে॥ পূর্ববার্ষিকঃ প্রাবার্ষিকঃ প্রাবার্ষিকং, অপুর হৈমনং। অকইতিকিং, পূর্বাহ্ম বর্ষাহ্ম ভবং পৌর্ববার্ষিকং, অনুশতাদিঃ॥ স্থার্বাদ্ধিজনপদস্য॥ স্থাত্রঃ, সর্ববাধালকঃ, অর্বাঞ্চালকঃ, বহুবচনবিষয়াদিত্যকণ্॥ দিশঃ প্রস্থামদ্রাণাম্। জনপদস্যেত্যের, পূর্ববাঞ্চালকঃ। অমন্ত্রাণালিতিকং পৌর্বামন্ত্র। আদিগ্রামনগরাণাক্ষ। দিশইত্যেব-পূর্বব্রুষ্থামস্মা গজাঃ, ইরুকামস্মী গ্রামঃ, পূর্বকান্যক্ত্রাক্ষ্যান্ত্র, পূর্ববাধ্রঃ। সংখ্যামী সংবৎসরসংখালোই। বি-

সাংবৎসন্থিকঃ, জ্বিসাংবংসন্থিকঃ, জ্বীতার্থে ॥ বর্ষ স্থাভবিষাতি ॥
নংখ্যাঘাইত্যেব, দে বর্ষে জ্বীটো ভূতো ভূতো বা দিবাবিকঃ, ত্রিবাধিকঃ, জ্বভবিষ্যতীতিকিং দে বর্ষে ভাবি দৈবাধিকঃ, ত্রিবাধিকঃ, জ্বভবিষ্যতীতিকিং দে বর্ষে ভাবি দৈবাধিকঃ ভক্তং, ত্রেবার্ধিকং ধান্যং ॥ পরিমাণস্থাশাণস্থা ॥ সংখ্যায়াইত্যেব জ্বীতার্থে টিকণ্ দিনৈদ্ধিকং, জ্বশাণস্থেতিকিং,
দৈশাণং দিত্রিপ্রবাদণ্ড ॥ প্রোষ্ঠপদভদ্রপদ্যোজাতে ।
তত্রজাতঃ প্রোষ্ঠপদোবালিঃ, ভদ্রপাদঃ ঋত্তসন্ধাদেরবর্ষাভ্যোহণ্। জাতইতি কিং, ভ্বার্থে প্রোষ্ঠপদোমেঘঃ ।
৮। জ্বুশতার্দিকভ্রেষ্টি ।

অমুশতাদীনামূভয়োঃ পদয়ের্বিদ্ধি স্যাৎ। তত্ত্র ভবঃ
আনুশাতিকং অধ্যায়াদিঃ। শাতকে স্কং সার্বপৌরুষাং। তত্ত্বদীয়তে আনুসাংবংসরিকং পাঞ্চভোতিকং সার্বভোমঃ আধিভোতিকঃ পোল্করসাদিঃ পোর্ববার্ষিকঃ আধিদৈবিকং চাত্ত্বৈদিকং আমুহোডিকং কোরুপাঞ্চালকঃ॥ সিন্ধুলোকভগাভুসা॥ সোরসৈন্ধবঃ ঐহলোকিকঃ সার্বলোকিকঃ। কথং
তিলোকাং, ভাবিবহুলবচনাং। সোভাগাং দোর্ভাগিনেয়ঃ॥
হল-ভুসা বছলং॥ সোহাদিং সোহাদং সোহাদঃং। পুড়াদের্বারে। পোগুনাগরঃ সোন্ধাভানাগরঃ॥ দেবতাত্ত্বে সূক্তহবিষোঃ॥ সোর্বাচাক্রমসোমন্ত্রঃ আয়িমারুত্বং হবিঃ।
স্কুহবিষোরিতিকিং ত্রাক্রবিশাথং॥ নিক্রসা পর্সা॥
সোমক্রক্রঃ। পরস্যেতিকিং ঐক্রাবার্কণংক্রা। দ্বিলিভিকিং আয়িবার্কণং
ল্যা। নেত্রের, ঐক্রাবক্রণংক্রা। দ্বিলিভিকিং আয়িবার্কণং
। জন্ত্বল ধেনু বলজান্ত্রী বিভাষিতীমূত্রং।

স্নাদ্যন্তদ্য উভরপদ্সী বৃদ্ধিঃ স্যাহা। ক্রেক

बननः क्लिक्षांत्रत्ना वा । नग्रह काक रिश्वरः कृकि रिश्वरः वा । त्रीक्षवानवः त्रीक्षवनत्वावा ।त्रक्षवनक्ति उद्

১০। অর্ভাৎ পরিমাণস্য। পূর্বেস্য ছু বা।

व्यक्षीर পরিমাণস্য বৃদ্ধিঃ স্যাৎ। পূর্বেস্য ছুবা। व्यक्ष-ডোণিকং আর্দ্ধটোণিকং, ক্রীতার্থে টিকণ্। ১১। নপরস্যাতঃ।

অদ্ধাৎপরস্য পরিমাণস্যাতোর্দ্ধির্নান্তি। পূর্বস্য তু বা। অদ্ধপ্রস্থিকং আদ্ধপ্রস্থিকং। নপ্রবাহণস্য টেয়ণি। প্রবা-হণেয়ঃ (পূর্বসাতুবেতিকেচিত্তেন প্রাবাহণেয়ঃ।) ১৯২০ শেকাং

২২। नकः छहीयत क्वा कूमन निश्वभागांग्।

নঞঃ পরেষামেষাং রৃদ্ধিঃ স্যাং। পূর্ব্বস্য তু বা। অশোচং আদুশাচং অনৈশ্বর্যঃ, আনৈশ্বর্যং অকৈত্রজ্ঞং আকৈত্রজ্ঞং অকোশলং আকোশলং অনৈপুণং আনিপুণং।

নঞঃ প্রয়োরনয়োঃ পর্য্যায়েণ ণিতি বৃদ্ধিঃ স্যাৎ। আয়ুখাতখ্য অয়াথাতথ্যং আয়ুখাপূর্য়ং অয়াথাপূর্য্যং। জন্মাত্ম ক্রিবিধিঃ।

> १। ज्या

যাদাবজাদে চ তদ্ধিতে পরে পূর্ববিদ্যকার্য্যংবক্তব্যমিত্যধি-কৃতং॥

३६। नरकेरनारभारकारभाः।

নান্তস্য ভদ্য টের্লোপঃস্যাৎ। আগ্রিশুর্নিঃ, ঐভুনোমিঃ, অঙ্যণোরিতিকিম্ হপ্রেন্নী, সৌছনঃ, সামনঃ।

এ। লোরোহপড়োবু বহবকার:, তেন ওঁজুলোনা: ইতি নাধান্।
 লোকেন-প্রেম্বান্তান্।

२७। जनि होशर्डी हैरनी शिथि विषयि किनि शनि शनि-गर्याशिविक्क्री

অপত্যার্থেহণি চ পরে ইণস্তস্য টিলোপঃস্যাৎ। মৈধাবঃ প পুত্রঃ, গাধ্যাদিবর্জমিতিকিং গাথিনঃ, পাণিনঃ, সংযোগাদেঃ বান্দিনঃ, আধিনঃ। अस्य সপ্তং-

১৭। মনশ্চাবন্মণ:।

মনন্ডদা চাপত্যেহণি টিলোপোভবতি। ভাত্রদামঃপুত্র:। অবন্মণইতিকিং, চাত্রুবন্মণ: পুত্রঃ।

३। १३ २३ ११ २१ ३৮। मञ्जाहार्यादमः मरचात्मीह ।

এষাং সংঘাদোঁ চাণি টিলোপোভবতি। সাত্রক্ষচারাঃ পৈঠসর্পাঃ, তদ্যেদমিত্যণ্। সত্তক্ষচারি পীঠদ্র্পি কলাপি কুথ্মি তৈতিলি জাজলি জাগলি শিলালি শিথণ্ডি শ্কর সন্ম হ্র-পর্বাণঃ।

३१ १११ १३ **अङ्ग्र्टिन** (य़िष्ट)।

পূর্বেণ নিত্যে প্রাপ্তে নিয়মার্থং বচনং। টেনয়োরেবাহ্ন-ষ্টিলোপঃ স্যাৎ। সমাহারে দ্বাহং ত্রাহং, দে অহনী ভূতো-ভূতোভাবী বা-দ্বাহ্নিং। অহোরাত্রিসংবৎসরাচ্চেতি ঈনঃ। টেনয়োরিতিকিং আহ্নিকং।

२०। जाजाध्वरनात्रनीरन।

অনয়োরনীনে টিলোপোভবতি। প্রত্যাত্মং প্রাধ্বং। অনীন-ইতিকিং স্বাত্মনীনো ২ধ্বনীনঃ।

२)। य जुरना-ভाবকর্মণোঃ।

व्यनस्त्रमा यात्मी कावकर्षात्माद्वय कित्माश्व महाद्या-

ভাবঃ কর্ম বা রাজ্যম্। ভাবকর্মণোরিতিকিং তদলং গামীত্য-ধ্বন্যঃ। তত্ত্রসাধুঃ সামন্যঃ স্থান্যঃ ব্রহ্মণ্যঃ, তত্ত্ব ভবঃ শীর্ষণ্যঃ।

२२। य्तार्कावान-करमः।

যুনোভদ্য টিলোপঃ দ্যাৎ। যৌবঃ, ভাবাণকয়োস্ক, জণি- । যৌবনং, অকে যৌবনক্ং, মনোজ্ঞাদিন

২৩। শুনঃ সঙ্কোচ-বিকারয়েঃ।

অত্তার্থে শুনষ্টিলোপঃ দ্যাৎ। শৌবঃ সঙ্কোচঃ, বিকারে শৌবং মাংসং॥

> ়। ৩। ৭। ২৪। বা হিতনাম্লোহপত্যে॥

ি হিতনাম্বস্তিলোপঃ স্যাদ্বা। হৈতনামঃ পুত্রঃ হৈত-নামনোবা ॥

> ্র। ৭। ২৫। অশ্মনো-বিকারে॥

টিলোপোবাস্যাথ। আশাঃ প্রাসাদঃ, আশানোবা। তস্যেশমিতাণি আশানোনিতাং ॥ ব্রাক্ষোহজাতে ॥ স্যাথ। ব্রাক্ষোনারদঃ। জাতো তু ব্রাক্ষণঃ ॥ কার্ম্মতাচ্ছীলো ॥ স্যাথ। অন্যত্র
কার্মণঃ। চার্ম্মঃ কোষে। স্যাথ। চার্ম্মণোহন্যত্র ॥ উক্ষমনপত্যে ॥
স্যাথ। উক্ষথ পদং, অপত্যে তু উক্ষোবৎসঃ ॥

২৬। আথব্বণিক জৈক্ষাশিনেয় দাণ্ডিনায়ন হান্তিনায়ন বাসিনায়নি ভৌগহত্য ধৈবত্যানি॥

ইমানি নিপাত্যতে। অধর্ষণ উক্থাদিঃ, জিল্পাশিনঃ শুজাদিঃ। দণ্ডিনহস্তিনো নড়াদী। বাদিনস্তিকাদিঃ। জ্লেশ্ছন-ধাবন্ এতো ভবিট্যণত্তো॥

े २१। नामश्थाजनातम् ॥

ভদ্য টিলোপঃ দ্যাৎ। দায়ৎপ্রাতিকঃ, পৌনঃপুনিকঃ, নেহ আরাতীয়ঃ, শাখতঃ, শাখতিকঃ া

२৮। यमा

ইকারস্যাবর্ণস্য চভস্য তদ্ধিতে লোপঃ স্যাৎ। বালে-য়াস্তণুলাঃ,বৎসপ্রীঃ বাৎসপ্রেয়ঃ,অস্যাপত্যং ইঃ, জ্ঞোদেবতা অস্য জঃ। গাগী কুমারী। তদ্ধিত ইত্যেব, ছে কাণ্ডে॥ বিল-कीशारमत्रीयन्थळवाः। विल्लकः। किष्टि विल्लका स दे कि

২৯। ভরবধাতোর ক্রিয়াম্।

উবর্ণান্তস্য ভস্য তদ্ধিতে ওরবাদেশোভবতি। ঔপগবঃ বাজব্যঃ। অধাতোরিতিকং স্বায়স্তুবং পৌনর্ভৃং থালপুং অম্রিয়ামিতিকিং পট্টা কুরঃ। কথং পোনর্ভবং পুনর্ভব-শব্দারঞা নির্দ্দিউমনিত্যমিতি বা।

৩০। এয়ণি লোপৌহকট্রীঃ॥

এয়ণি পরে ওলে পোভবতি। কামগুলেয়ে। জাম্মেঃ অকাদ্র। ইতিকিৎ কাদ্রবেয়ঃ।।

शांखीली जनशनमें।।

>

ণ্যে জনপদস্য পাঞ্চোরুলোপঃ স্যাৎ। পাত্যঃ।। ৩২। সারবৈক্ষাকহিরপ্রয়ানি॥

অমৃনি নিপাত্যতে। সর্যা অণি যলোপঃ সারবং জলং ইক্ষাকোরুলোপঃ, তস্যাপত্যং ঐক্ষাকঃ, বহুত্বে ইক্ষুক্থাং ইক্ষাকবঃ, হিরণাদ্য ময়টি বাদিলোপোছিরপাবম্।।
৩৩। হলভিদ্ধিত্যৌধ নাতি।।

হলঃ পরস্য তদ্ধিত্যকারস্য ভস্য তদ্ধিতে লোপঃ স্যাৎ ৷

গাগী, দোমী ইন্তি:, আমুপ্ৰবী উচিতী গাগীয়:, গাৰ্গ্যানাং সমূহোগাৰ্গকং। হলইতিকিং কৈকেয়ী আত্ৰেয়ী। তদ্ধিত্যইতি किः देवमात्रा खाद्या देवमी। अनाजीजिकिश्वर्गीग्रायः। अकादा হানাপত্যস্য যস্য লোপো নান্যশ্বিন্তেন সাংকাশ্যকঃ।। ৩৪। তিষ্যপুষ্যয়েনিক্কজাণি।।

যলোপঃ স্যাৎ। তৈষঃ পোষঃ
১৯০ ৭০-১০
১৯০ ৭০-১০
১৫। সোধ্যাগস্তায়োও নিনীয়েচ।।

यत्नाभः मत्। त्मोती त्मोतीवाखणुनाः। वागछी वाग-खीयः अनुस्तियः।

७७। श्रीरमस्मामा ॥

যলোপঃদ্যাৎ। মৎদী। গুামিতি কিং মাৎদ্যোন্যায়ঃ প্রবর্ততে।।

৩৭। কাচে গারাপত্যসা॥

ক্যে চেট্র পরে আপত্যদাৈব যকারদা লোপঃ দ্যাৎ। বাৎসায়তে বাৎসীয়তি বাৎসীভূতঃ। হলইত্যেব আত্রেয়ীয়তি॥
৩৮। নাকে রাজন্যস্থা। মসুষ্যস্যগ্রাঞ্চ।

যলোপোনাস্তি। সমূহে রাজন্যকং মাসুষ্যকং অস্যঙ্যাঞ্চ-यसूयी।

ডিতি ভস্ম টের্লোপঃ স্থাৎ। ডট্ একাদশঃ, ডকঃ তিং-ঃ॥ ডিতীভস্থীতদ্ধিতে চী। কুমুদান্, প্লবঁগঃ। ৪০। বিংশতেরতেঃ।

ডিতি বিংশতেরতের্লোপঃ স্যাৎ। উনবিংশকোহশঃ **छेनविर्भर्भे**खर ।

७१। कारहारि जाभजारमाणि जमणार्थ विक्षिरमाणार्थः।

१३। १८र्छ रम्ब १३३ व्याप्त का विश्व

ইষ্ঠানে পরে অনেকাচ কিলোপঃ স্থাৎ। পটিষ্ঠঃ পটি-মা পটীয়ান্। অনেকাচ ইতি কিম্? গ্রেষ্ঠঃ অজিষ্ঠঃ।

8२। इन पूत यूत इच किथा कूफ़ीनीर इत पत यत इम किन किनिह।

इक्षीरिन পরে श्रूनामीना श्रवाम श्राः श्राः। श्रविष्ठः श्रवीश्रान्। इम्बन्न न मञ्जवि । पविष्ठः पवीश्रान्, यविष्ठः यवीश्रान्। इश्रुक्तिश्राद्विम श्राः । इमिष्ठः इमिमा इमीश्रान्, क्षिणिष्ठः क्षिमा क्षिणीश्रान्, क्षां पिष्ठः क्षिमा क्षिणीश्रान्, क्षां पिष्ठः क्षिमा क्षां मीश्रान्।

৪৩। প্রিয়ন্তির ক্ষিরোর বহুল গুরুত্প দীর্ঘ বৃন্দারকাণীৎ প্রস্থান বর বংহ গর এপ দ্রাঘ বৃন্দার।

ইষ্ঠাদৌ পরে প্রিয়াদীনাং প্রাদয়ঃ স্থা। প্রিয়োর বহুল শুরু নীর্ঘাণামের প্রিয়াদিত্বাদিমরন্তি। ইষ্ঠেয়দৌ সর্কাত। প্রেষ্ঠঃ প্রেমা প্রেয়ান্, স্বেষ্ঠঃ স্বেয়ান্, স্ফেচ্চঃ স্ফেয়ান্, বরিষ্ঠঃ বরিমা বরীয়ান্, বং হিষ্ঠো,বং হিমা বংহীয়ান্, গরিষ্ঠঃ, গরিমা গরীয়ান্, তাপিষ্ঠঃ ত্রপীয়ান্ ভাঘিষ্ঠো ভাঘিমা ভাঘী-য়ান্, বৃদ্চিষ্ঠঃ বৃদ্ধীয়ান্।

88। वटहार्च्यामित्रिक कामितनार्थे हेटमञ्चलाहै।

বহোরিষ্ঠ'দৌ ভূঃ স্থাৎ। ইষ্ঠশ্চ যাদির্ভবতি। ইমে য়সোরাদিলোপশ্চ। ভূমিষ্ঠঃ, ভূমা, ভূমান্।

৪০। ছিন্নপি কেচিৎ, তেন হেনা, ক্ষিরং প্রচ্র মিতার্থং।
তৃপু দীঘ ইতি বা পাঠং, তৃপ্রঃ পুরোগঃ।

৪৫। দৃ পৃথু মৃত্ রুশ ভূশ পরিবৃঢ়ানামৃতোরঃ।

এষামিষ্ঠাদো পরে ঋতোরঃ স্যাহ। জাঢ়িষ্ঠো জাঢ়িমা জাঢ়ীয়ান্, প্রথিষ্ঠঃ প্রথিমা, প্রথীয়ান্, আদিষ্ঠো আদিমা আদী-য়ান্, ক্রশিষ্ঠঃ ক্রশিমা ক্রশীয়ান্, ভ্রশিষ্ঠঃ পরিবাঢ়িষ্ঠঃ।

৪৬। বিশতোলু গিচেয়সোঃ।

ইষ্ঠেয়সোঃ পরতো বিশ্বতোলুক্ স্যাং। অগ্নিঃ, অজিষ্ঠঃ, অজীয়ান্, ওজস্বিনঃ, ওজিষ্ঠঃ, ওজীয়ান্, ত্থতঃ ত্বচিষ্ঠঃ, ত্বচীয়ান্, ধর্মবতঃ, ধর্মিষ্ঠঃ, ধন্মী য়ান্, পাপবতঃ পাপিষ্ঠঃ, পাপীয়ান্,।

89। প্রশাস্ত বৃদ্ধরো । প্রশাস্ত

অনয়োঃ শ্র বর্ষে স্যাতাম্ শ্রেষ্ঠঃ শ্রেয়ান্ ব্যান্।

্থ সাজ্যাসাক। ৪৮। জ্যাস্টেয়

ইষ্ঠেয়সোঃ পরয়োঃ প্রশাস্থদ্ধয়োজ্যাদেশঃ স্যাৎ। ঈয়স ঈকারশ্চান্ডবতি। জ্যেষ্ঠঃ জ্যায়ান্।

४৯। अखिक वाष्ट्रश्लोदर्मम्मादर्भ।

অনয়ে নে দিসাধো স্যাতাম্। নে দিষ্ঠঃ, নে দীয়ান্, সা-ধিষ্ঠঃ, সাধীয়ান্, ক্রিয়া বিশেষণ মিদ মিত্যর্থে সাধীয়ঃ।

४०। यूवान्श्रीरम् कन् वी।

অনয়ো কনাদেশে। ভবতি বা। কনিষ্ঠঃ, কনীয়ান্। পক্ষে যবিষ্ঠঃ যবীয়ান্,অশ্পিষ্ঠঃ অশ্পীয়ান্।

ea ৷ বাঢ় শকো নিত্যং ক্রিয়া বিশেষণং **অতত্ত**ৎ প্রত্যন্নাক্তোহণি

৫)। শিরসঃশীর্ষোহণি।

যে শিরসঃ শীর্ষণ স্যাথ। শিরসি ভবঃ শীর্ষণ্যঃ স্বরঃ কেশেরু বা। শীর্ষণাঃ কেশাঃ, শিরসা বা।

৫৩। অন্তিক্স্য তসি কাদেলু খা তাদেশ্চ তমে।

তসি পরে অন্তিকস্য কাদিপরভাগস্য লুখা স্যাৎ। অন্তিতঃ অন্তিকতো বা। তমে পরে তাদেঃ কাদে**শ্চ** বা। অন্তমঃ অন্তিক্যঃ, অন্তিক্তমঃ।

৫৪। अ म ज छुপरिषर जानियम मरजार मार्टिय स्थापन ।

অকারমকারাত্তেভ্যাহকারমকারোপধেভ্যে। বয়ন্তাচ্চ পরস্য মতোর্ঘোবঃ স্যাথ। গুণবান্, মালাবান্ কিং বান্। অমোপধে-ভ্যান্, পয়স্বান্ ভাস্বান্, লক্ষ্মীবান্। বয়ন্তাথ মক্তব্যুক্মুদ্বান্। অমাদে রিতি কিং বুদ্ধিমান্, জ্মিমান্, আয়ুয়ান্। অযবাদে-রিতি কিং যবমান্, উর্মিমান্, ভূমিমান্, ক্মিমান্, গ্রুজ্মান্, হরিজ্যান্।

- ৫২। চকারোহ্বাচয়ার্থ:,কেশ বিষয়ে यपि প্রত্যয়ো ভবতি তথা বিকয়ঃ ঃ
- ৫)। তात्मः कात्मरकि वहबीहि नमानमाधाः।
- ৫৪। বিগরে বিশেষণ মন্তা মৃত্র ইতি নাায়াৎ অকার মকারাস্থাএব গৃহান্তে। পরস্থানিতি ন তদৌ মত্ব ইতি পদ্যাভাবার বিদর্গঃ।
 যবোশি ক্ষরো ভূমি গরুতা ককুদা হরিদিতি সপ্ত। অন্যেভু ফ্রাক্লা ক্রুঞ্গা
 নিমীনপীতি বদস্তি।

(४) निम्नि दङ्गरे।

সংজ্ঞায়াৎ মতোর্মোবঃ স্যাং। অহীবতী, পদাবতী, মুনীবতী নদী। বাহুলাং কার্যান্তরঞ্ নিপাত্তে। আসনস্য व्यामकीवान् व्यापः ॥ वश्चीवंद व्यागरके॥ ককীবান ঋষিঃ। हकीवान् गर्फछः। नवणमा क्रम्र्येनात्मः। रूपयान् देननः। नत्नाश्रीखादवाशि हम्बात्मः। हम्पृठी नमी।। উपयान्नित्रिं।। উদকস্যোদন্। কচিন্ন ভবতি। বিন্দুমতী কাচিৎ।

৫৬। উति युखा खाना टिर्गा भगार में तिक है ।

উক্প্রত্যাহার ইস্উস্তান্ত দোস্এভ্যঃ পর্স্য টিকণাটে ব্লিকঃ কঃ স্যাহ। নৈষাদক্ষুকঃ, পৈতৃকঃ, সার্পিকঃ ধারুষ কঃ ঐনবিংকঃ, দোর্ভাণ তরতি দৌকঃ অশশ্দাদে-

যাদৌ তদ্ধিতে ঋতোরঃ স্যাং। যঃ পিত্রাং, ণ্যঃ পৈত্যঃ।
৫৮। বহুলং প্রাতিপদিকাত্তদ্ধিতাঃ।

অতঃ প্রাতিপদিকাত্তদিত সংজ্ঞকাঃ প্রতায়া বহুলং বাচ্যাঃ।

ee। अशीवजीजातो अत्मायामात्र कृणाउ देखि नीच:। आमलीवा নিত্যাদি, আসনবানিত্যাদ্যন্যত ।

নিষাদকৰ্দেশ স্তম জাত ইতি টিকণ্। পিতৃ রাগত ইতি টिकन्। मर्शिया मश्कृत मिलि টिकन् , उपिचिलि मश्कृष मिलि টिकन्।

৫৮। অত্র প্রাতিপদিকপদং স্থবস্তপরং, তদ্য তদস্ততয়া ব্যভিচারাং বাবৈর্ত্তক্যা ভিঙ্কুস্য, ভিঙ্কু তরতমাবিত্যনেন প্রাপ্তে: স্পষ্টার্থঞ্চ। কিঞ্ প্রবৃত্তিশ্চ নিবৃত্তিশ্চ বিভাষে। ক্তিবিধেঃ কচিৎ। অপূর্বস্য বিধাত্বঞ্বত্লং माहि हुवि थम्। অতো यमभन्नः ७९ म्महार्थस्य । यथा, त्रस्त्राकः किन-श्रानः द्वतान् इतानप्रक हेजामयः।

४**३। मधामार्ख्स**।

আপাদপরিসমাপ্তেঃ সমাসাবয়বঃ প্রতায়ো বাচ্যঃ।
১০। ন পূজনে স্বতিভাগি প্রায়হ্রীহেঃ।

বছত্রীহেঃ প্রাক্ পূজার্থে স্বতিভ্যাৎ পরাং সমাসাস্থে। ন ভবতি। স্থরাজা, অতিরাজা, স্থগৌঃ অতিগৌঃ। প্রায়ন্ত্রীহেরিতি কিং স্বন্ধেয়ৈত্রঃ অতিসক্থঃ।

७५। किमश्रक्ति।

ক্ষেপে কিমঃ পরাং সমাস তো ন ভবতি। কিং রাজা যোন রক্ষতি প্রজাঃ, স কিংস্থা সাধু ন নাস্তি যোহ্ধিপং, কিংগোরদোহবাহাং। ক্ষেপ ইতিকিম্ ক্স্য রাজা কিং রাজঃ কিং স্থাঃ, কিংগ্রঃ।

७२ : नक छ : भूक्षी जू १४६।

নঞ্পূর্কাৎ তংপুরুষাৎ (প্রাক্) সমাসান্তো ন ভবতি। অরাজা, অসথা, অগোঃ, অধূঃ। পথো বা, অপথং, অপস্থাঃ, তং পুরুষাদিতি কিং, অরাজকং নগরং, অধুরং শক্টম্।

৬০। ঋক্পথি পুরপোধুর চানকেই ।

ঋগাদিভ্যঃ সর্ফ্রসমাসেহন্তবতি। ঋচোহর্দ্ধং অর্দ্ধকঃ, অন্চো মাণবকঃ, বহুব্চশ্চরণবিষয় এব, রাজপথঃ, বহু-

৫৯। নমু সমর্থপদসমূহো বাকাং তলৈয়ের সমাস সংজ্ঞা, তভল্চ পদমের সমাসাবয়বঃ, কথং তহি টালি প্রতায়ঃ সমাসাবয়বঃ, ন চ সমাসাথ প্রাক্ টালি বিধীয়তে। সর্বত্ত কলাপভেঃ, সতাং, যথা প্রারম্ভকথাৎ রাজালি সমাসাবয়বঃ তথা তন্ত জ টালিরপি, ভেনাবয়বায়বোহপি সমাসাবয়ব ইত্যাভো বিরাশ মুপরাক্ষিত্যালি পদং সাধাম্।

পথে। দেশঃ। পুরঃ ক্লীবে। নান্দীপুরং ত্তিপুরং। অপঃ পর-্ লিজতা চ নেষ্যতে। গঙ্কাপঃ, দ্বীপঃ, বহুরপানি তড়াগানি, কথং বহুরন্পি, সমাসান্তো বিধিরনিতা ইতি, ধুরঃ দ্বিধুরং,রাজ ধুরা, মহাধুরঃ। অনক ইতি কিং, অক্ষ্পুঃ, দৃঢ়ধুরকঃ স্যান্দনস্থ।

৬৪। প্রত্যন্ত্রবাৎ সামলোক্ষঃ।

সংখ্যাদি পূর্বান্নদ্যাদের ২ স্থাৎ। দ্বিনদং, পঞ্গোদাবরং, কৃষ্ণভূষোদেশঃ পাণ্ডুভূমা স্থলী, উদকভূমম্। া ৭। ৬৬। অক্ষোহপ্রাণ্যকে।

অপ্রাণ্যকে গম্যেহকোইং স্যাৎ। লবণাকং, গবাকঃ, পুষ্ণরাকঃ, প্রাণ্যকে তু, গবাকিঃ।

৬৭। ব্রহ্মরাজ হস্তি পণ্যেভ্যৌ বর্চ্চসঃ।

এভ্যো বর্চসোহৎ স্থাৎ। ব্রহ্মবর্চসং রাজবর্চসং ইস্তি-বর্চসং পণ্যবর্চসম্।

৬৮। তমসোহবসমন্ধ্রেভ্যঃ।

অবৈদে স্তম্পো ২০ ভাৎ। অব্তম্সং, সন্তম্সং, অন্ধতমস্ম।
ত্যা
৬৯। নিঃশোভাগং শ্রেয়সঃ।

অং স্যাৎ। নিঃশ্রেয়সংখঃশ্রেয়সমূ।

৭০। রহসৌহম্বতপ্তাই।

ज्यः मार्। जनूत्रहमः, ज्यत्रहमः, ज्यात्रहमम्।

का का श्रीरमञ्जूषमध्य

षर मार। थाएवा, मूत्रक्षः। ৭২। দ্বিগুতং পুরুষ কর্মধারয়ে। আদ্দদ্ময়ম্থিক'রঃ।
৭২। সংখ্যাব্যয়দক্ষ্বশেঃ।

আভ্যামঙ্গুলেরং স্যাহ। দ্বেহঙ্গুলী প্রমাণম্স্য ইতি মাত্রালুক্ দ্লেল্লং, তাঙ্গুলং, নির্সঙ্গুলভ্যো নির-क नम्। विशामि कि ? शकाक नि र छ । १८। आशुर्यादि जिश्रक्यां ।

অং স্যাং। দ্বায়ুধং, ত্রায়ুধ্য। স্মাহারেংভিধানং, নেহ দ্বয়োরায়ুঃ দ্বায়ুঃ, পুরুষায়ুবং। (১)
৭০। উক্ষেণ্ জাতমহন্দাং।

অং স্থাং। জাতোকঃ মহোকঃ বৃদ্ধোকঃ। १७। ब्राटबर्क्सर्थ। श्रूनामीर्रिकटम्म मक्तावाग्रमः भागिर थार्जार এভ্যে রাত্রে রংস্থাং। বর্ষাবাত্রঃ, পুণ্যরাত্রঃ, দীর্ঘ-রাতঃ,। একদেশাং পূর্দরাতঃ,অপররাতঃ,সর্দরাতঃ, নীর তঃ, অতিরাত্রঃ পঞ্রাত্রঃ, গুণাৎক্লীবে গণরাত্রং, সংখ্যাত রাত্রঃ।
৭৭। টেইস্টোইস্ট একদেশাদেরনেক্দিসমাহারে।

একদেশস দ্বাব্যয়সংখ্যাসংখ্যাতাদভন শব্দস্থ প্রতায়েংহাদেশে। ভবতি। পূর্বাহৃঃ, মধ্যাহৃঃ, স্বাহৃঃ, নির লঃ, প্রত্যক্তঃ, অত্যক্তঃ, দ্বয়ো রক্ষেতিবঃ দ্বিগোরজাদে-লু গ্ৰনপত্যে টিকণ্ লুক্ তত্তকঃ দ্বাহ্ণঃ, ব্যাহ্ণঃ, সংখ্যাতমহঃসংখ্যা-তাरुः, একদেশাদেরিতি কিং, পুণ্যাহং অনেকাদিতি কিং धकारः। अमर्भार तरे जि कि पारः बारः।

⁽১) তৎপুক্ষেহভিধানং, নেহ পুরুষ চায় ক পুরুষায়বী।

प अः अः अः भः १৮। मर्या वि माग्नामश्चारम् वाद्धो ।

সংখাদি পৃথিকাক্ষ ভাহনাদেশো ভ্ৰতি বা। দ্বাক্ষে দ্বাহনি ব্যক্ষে বাহনি, সায়াক্ষে সায়াহনি।

१३। निञ्जिश्मामग्रम्छ।

টিলোপান্তা নিপাত্যন্তে। নিস্তিংশা, নুনর্কবান্তিনির্গছন্তিং শতোংস নিভ্যঃ নিস্তংশং খড়াং, নিশ্চতারিংশাং। ৮০। রাজাহং স্থিভাটাং।

দ্বিগু তংপুরুষ কর্মাধারয়ে রাজাদেউ: স্থাং। পঞ্চ রাজী, দেবরাজ:, মহারজ:, দ্বাহ: সোমাহ:, উত্তমাহ: রাজস্থ:, ন লিকভেদে মহারাজ্ঞী।

৮১। উরসং প্রধানার্থ।

টি: স্থাব। হস্তিনামুরঃ প্রধানং কল্পারসং।
তা
৮২। অনোংশ্যায়ঃ সরসোজাতি সংজ্ঞাে।

এভ্যক্ত:তাং। জাতো উপানস্, অমৃতাশাঃ কালায়সং, মণ্ডুক সরসং নামি মহানসং, পিণ্ডাশাঃ, লোহিতায়সং, কাল সরসম্।

৮৩। আমকোটাত্তক্ষু:।

টি: স্থাৎ। গ্রাম্তক: কুটীভব্স তকা কোটতক্ষ: স্বতন্ত্র:। ৮৪। শুনোইতিগোষ্ঠাদুপমায়াক্ষ্যপ্রাণিন:।

শুনক্ট: স্থাং। অতিশ্বং, অতিশ্বী মৃগী, গোষ্ঠশ্বং, উপমা-য়াশ্চ ফলকশ্বেব ফলকশ্বে! ব্যাস্ত্রাদিঃ। অপ্রাণিন ইতি কিং বানর:শ্বেব বানরশ্বা।

৮৫। মৃগ পূর্বোত্তরোপমান সক্ষু:।

মৃগাদে: সক্ষুক্ত: তাং। মৃগসক্ষং পূর্বসক্ষং,

উত্তর সক্ষং, উপমানাং কলকস্কমং।

৮৬। ব্রহ্মেরাজানপুদাখ্যায় য

ব্রহ্মণঊঃ স্থাৎ। জনপদভবাভিধানকেং, সুরাষ্ট্রহার কাশিব্ৰক্ষঃ। জানপদাখ্যায়ামিতি কিম্ ? দেবব্ৰক্ষা নারদঃ। কুমহন্ত্যাংবা। কুবলঃ, কুবলা, মহাবলঃ, 🖒 মহাবলা।

४१। (शांत्रेडिकिट नुकि^र)

টঃ স্থাৎ। * পঞ্জৰণ, রাজগণী, প্রাগবী, পুংগবঃ। অত-দ্বিতলুকীতি কিমৃ ? প্ঞগুঃ পটং, দ্বিগোরণ্রদ্বিদ্বাচ লুঞ্ भः छात्राः हिं तन् लुक्।

bb! नारवाहित्यों। अकाष्ठ ।

দ্বিগুদ্মানে নাবকঃ দাবে। দিনাবং পঞ্নাব প্রিয়ঃ (২) দিগা-বিতি কিমৃ ? দ্বয়েনোঃ দ্বিনে । শত্দ্বিত্সুকীতোৰ, পঞ্চনীর্গজঃ। অদ্ধান্ত, অৰ্দ্ধনানী, অৰ্দ্ধনান, লোকাশ্রয়ত্বাৎ পরলিঙ্গতা ব্যভিচর্তি।

৮৯। शार्या यो।

দিগো অদ্ধান্ত থার্যাঞ্চান্টো ভণতি বা। নিথারং, দিথারি, यर्क्षशातः. वर्कशाती।

ক। দ্বিভিত্যামঞ্জলেঃ।

আভ্যামঞ্জলেকঃ স্থাৎ। দ্যঞ্জলং, ত্র্যঞ্জলং, দিগাবিত্যেব ষয়োরঞ্জলিঃ, দ্যঞ্জলিঃ। অভদ্ধিত লুকীত্যের ক্রীতার্থে দ্যঞ্জলিং।

⁽১) নহাত্রক্ষেতি কর্মধারয়ঃ, মহতোরক্ষেতানে ভিনাবিকরণে ন স্থাদিতি বরক্রচি:। নত্তে তৎকাশিকাদে লক্ষাতে। রক্ষশলোহত লক্ষেপার্থ: শৌহা-দিতাৎ সমাস:। * প্ৰণৱনিতি বিতঃ, রাজগ্রীতি বচীদ্যাসঃ, প্লৱ ইতি ব্যাদ্রাদিতাৎ সমাসঃ বিশেষণ সমাসো বা।

⁽২) উত্তরপদেচেতি, উত্তরপদে পরে একার্থেন হুপা সহ সংখ্যা সমকতে স চ বিশুরিতি পরমতমাবিজুর্ববিশ্বত পঞ্চনাব্রিয় ইভি।

a)। य प ह (हा बल्व नमाहारत ।

इतन्त्र व म हवर्ग शाखार है: खार । श्रीम्रश्रावयः, मन्मविभार চু; বাক্ ছচং, উপাধ্যায়শন্দ প্রাচ্ছং, ঐক্রজং, ছর্ত্তোপানহং, পিকম্পুলিহং। সমাহার ইতি কিমৃ? গ্রীম্প্রাইষো । ছন্দ ইতি কিম্? পঞ্বাক্।

৯২। ধেশ্বনজুহোঁ।

অসমাহারে নিপাত্যতে I

৯৩। স্ত্রীপুংস র্যজ্য র্মান বাগ্মনসা ক্ষিক্র্ব দারগবো ৰ্বজীব পদ্জীব নক্তন্দিব রাত্রিন্দিবা হর্দিবাজেরাত্রাই।

দ্বন্দেইমী নিপাত্যন্তে। জ্রীপুংসো ঋণ্যজুষে, ঋক্সামে. বাঙ্মনসে অক্সিভ্ৰুবং, দারাশ্চ গৌশ্চ দারগবং, উরুশ্চ অঞ্চী-বাংশ্চ উর্বজীবং, পাদে চ অজীবন্তো চ পদন্ঠীবং, নক্তন্দিবং (৩), तािकिन्पदः। वीश्नाग्नाः चहर्मिवः, चटहातात्वी।

৯৪। अवाशी जारवं भारतारमं ।

টঃ স্যাৎ। উপশরদং উপবিপাশং উপদিবং প্রতিদিশং প্রতিদৃশং উপচত্রং সুরজস মভ্যবহরতি। ক্রিন্তা প্র ৯৫। প্রতেকরদঃ সপ্তম্যথে।

উর্দি প্রতিবর্ত্ততে প্রভারসং। নপ্রমার্থ ইতি কিম্? উরঃ প্রতিগতং প্রত্যারঃ। (অত্ত সপ্তম্যর্থেহব্যয়ীভাবঃ।)

ত। ১৬। অক্ষঃ সমসুপ্রতেঃ।

সমক্ষং অর্কং প্রত্যক্ষ্। (অত্রাপ্যব্যয়ীভাবর।)

⁽৩) মক্তঞ্চ দিবা চ সপ্তম্যর্থ প্রধানেহব্যয়ে বল্যপ্যাদেশ সাপেক্ষত্বেহসা-মर्थाः चटमार्य न वादशां उवानि निभाष नामर्थारण चवि । नदर्मि-রমিতি প্রয়োগএব ন ভবতি পর্যায়ত্বাদেকেনৈব তদর্থপ্রতীতেঃ বিতীয়-वसात्ना न एकः हेलाह बीलाशिमला

৯१। वर्षः क्रीवाद्याः

অনন্তাট্য: স্থাৎ। রাজ্ঞঃ সমীপেং যো বর্ত্তে উপরাজং দশানাং সমীপেং যৈ বর্ত্তে উপদশং অধ্যাত্মং। ক্লীবাদা উপভশ্মং উপভশ্ম উপদশং উপদশং প্রত্যহং প্রত্যহ্যাতি।

৯৮। নদীগিরিপোর্ণমাস্যাগ্রহায়ণীভাই।

বেত্যেব, উপনদং উপনদি উপনিরং উপনিরি উপপৌর্ণ-মাসং উপপৌর্ণমাসি উপাগ্রহায়ণং উপাগ্রহায়ণি।

৯৯। ঝয়ঃ।

ঝয়ন্তাটো বা স্থাৎ। উপদৃশদং উপদৃশৎ প্রতিসমিধং প্রতি সমিৎ। (ঝয় ইতি কিম্? উপসত্যভাণ, উপবিট,, উপদ্বিট্ইত্যাদি)।

১০০। উপশুনোপজরদে নিত্যরী।

উপশুনং জরায়া উপজরদং॥ অনুগ্রমারামে॥ অনুগ্রং শকটম্। আয়াম ইতি কিম্ ? গোঃ পশ্চাদমুগ্র।

্রা পা পা ১০১। অক্ষিসক্থিভ্যাং বহুত্তীহে স্বাস্থার্থে।

আভ্যাং স্বাঙ্গার্থে টঃ স্য়াং। দীর্ঘ্নিঃ মৃগাকী দীর্ঘ্নক্রং বহুবীহাবিতি কিম্? মৃগস্থাকি মৃগাকি ॥ অতো বহুবীহোঁ সমাসাস্থোবিধিঃ।

ত্যা ১০ কাছ ১০ বাছ ১০ বাছ ১০ বাছ ১০ বাছ বিভাবিতো হলি নুকে থঃ।

নঞাদেইলিসক্পিভ্যাং টোবিকল্পিতঃ। অহলো অহলিবি। তুইলো তুইলিবি। তুইলঃ সুহলিঃ অসক্থঃ অসক্থঃ তুঃক্
ক্থঃ তুঃসক্থঃ।

०१, १। २००। **पत्र्रा**मिक्ति।

मार्कार्य अन्नुरनर्वेष्ठ श्राष्ट्र। मान्नुनः मान्नः।'-

ত্য তা ১০৪। দিতিভূগাং মূৰ্দ্ধঃ।

हेः खार । विमृद्धे जिमृद्धे ।.

> ०। भरत्यास्य दर्भ वरहाः।

ৰহুত্ৰীংহা সংখ্যেরে ডঃ স্থাৎ। উপদশাঃ আসম্বিংশাঃ এক্ষাঃ লক্ষকোটাঃ। অবংশারিতি কিম্ ? উপবছবঃ।

ুণা ১০৬। **অং** পূ**রণী প্রমাণী**ভ্যাস্।

ন্ত্রীলিকে পূরণাপ্র গ্রান্তাৎ প্রমাণীশকাচ্চাৎ স্থাৎ। কল্যাণী পঞ্মী রাত্রিহাসাং তাঃ কল্যাণীপঞ্মা রাত্রয়ঃ,ভার্য্যা-প্রমাণাঃ কুটুস্থিনঃ।

১০৭। নাভেঃ সংজ্ঞায়াম্।

অৎ স্থাৎ। পদ্মনাভঃ উর্ণনাভঃ। রুট্গ্রহণান্নেহ প্রজা ইবাঙ্গাদরবিন্দনাভেঃ।

০। ু ০। ১০৮। নেতুনকত্তাপুকাৎ। (৪)

আং স্যাৎ । মুগো নেতা নাদাং ত। মুগনেতা রাত্রঃঃ
পুষ্যনেতাঃ।

२० । हर्षेत्र खिनकः स्वाभार ।

ত্র্যাদে কতুরোহৎ স্যাৎ। ত্রিচতুরাঃ, অচতুরাঃ, স্থচতুরঃ, বিচতুরঃ, উপচতুরঃ।

১১°। লোম্বেহস্ক্রিয়ঃ।

লোছে। হুট্রেল্মিঃ, বহিলেমিঃ। বা পো -১১-১১ ১১১। প্রাদেনাসিকায়া নস্চ।

(৪) নক্ষত্রবাচিত্যালি পূর্ব্বায়েত শকাদিই অধিধীয়তে। ন ধকনেত্ক:।
নক্ষত্র পূর্ব্বাদিতি কিং १ দেবলৈ হুটা। কথা স্ময়নেত্রেণ রথেন শোচমিতি
নৈত্রশক্ষেন সিদ্ধে:, অথ নেত্রশক্ষেন সিদ্ধে: নেতৃং কং স্থাদিতি বিধি:।

নাসিকায়া অং স্থাং। নসাদেশ-চ। উন্নসং বক্তুং হ্নন-সাস্ত্রী, অনুনাসিকস্ত তৎপুরুষঃ।

। अंद्रगः थूत्र त्वानिज्यां का । (e)

ধরাদিপূর্ন্বায়ালিকায়া এতে নিপাত্যন্তে। খরণাঃ, খুরণাঃ, বিগ্রঃ। চকারাৎ অন্ননাদেশন্ত। খরণসঃ, ধুবণসঃ, বিন্দঃ। বিশ্ব বিশ্ব

নামি নাসিকায়া অৎ স্যাৎ। নদাদেশশ্চ। ক্রণসং (৬) গোনসং। অস্পাদিতি কিম্? স্লনাদিকো বরাহঃ। সংজ্ঞানিতি কিম্? তুলনাদিকঃ।

১১৪। স্তপ্রতিঃ ক্তম স্থাদিব শারিকুক চত্রত্থৈণীপদাজপদ-১।।। প্রোষ্ঠপদাঃ।

শদন্তা এতে নিপাত্যন্তে। শোভনং প্রতিরক্ষ স্প্রাত্যোত্রং, সুখঃ সুদিবং শারিরিব ক্লিরদ্য শারিক্কঃ, চতত্রোহশ্ররোহস্ত চতুরশ্রঃ এণ্যা ইব পাদাবস্ত এণীপদঃ অদ্ধপদঃ,
প্রোষ্ঠোগোঃ তক্ষেব পাদাবস্ত প্রোষ্ঠপদঃ।

ত। ত। ত। ত। ত। ত। ১১৫। নঞ্জ রোহি সিঃ প্রজারা অল্লাচ্চ মেধারাঃ।
নঞাদেঃ প্রজারা অসিং স্যাৎ। সল্লাচ্চ মেধারাঃ। (৭)

⁽৫) ধরা তীক্ষা নাসিক। যক্ত, ধরক্তেব নাসিকা যক্তেতি বা, বিপ্নতা নাসিকা যক্তেতি বিগ্রহে বিগ্রঃ।

⁽৬) জরু কস্ত ছোবের নাসিকা যস্তেতি বিগ্রহঃ, পূর্মপদাদিতি কছং। গোর্নাসিকের নাসিকা বস্তু স তথা কথং গোনাসঃ, রুঢ়েঃ। শোভনং খোছ-স্তেতি বিগ্রহঃ এবং সর্মান্ত। অলিঃ কোটিঃ।

⁽৭) মনাদপীতিমতমপাণিশীরং তেন মন্দমেগা:। এভা: কিং বহুমেধো বিশ্বান্। বছুত্রীহাবিভাব, অপ্রজা।

অপ্রজাঃ সুপ্রজাঃ তুপ্রজার। অনেধাঃ সুনেধানা তুর্দ্ধের। অল্লামেধাঃ।

ে^{ন্নান।} তা তা-১। ১১৬। গন্ধাৎ সমবেতাদিৎ সূৎ পৃতি স্তরভেঃ।(৮)

স্বাদেগন্ধাদিং স্থাং। স্থগন্ধি কুস্তমং, উংকট উল্পতাে ৰা গন্ধােহস্ত উল্পন্ধিঃ পৃতিগন্ধিঃ, সুৱভিগন্ধিঃ। সমবেতাদিতি কিম্ ং স্থগন্ধােগন্ধবহঃ।

११ - श्र वा - श ১১१। ब्रह्मार्थ (हां भगांनाक ।

গদ্ধাদিং স্থাং। অল্লঃ দূপোংস্থাং দূপগদ্ধিঃ স্থালী, স্থত গদ্ধি ভোজনং, প্রেমগদ্ধি বচনং, উপমানাং পদ্যস্থেব গদ্ধো-হস্তেতি পদ্মগদ্ধিঃ করীষগদ্ধিঃ।

১১৮। क्रिय़ाविनियसार्थामवास्थ। (२).

ইৎ স্থাৎ। সমাদান্তশ্চাব্যয়ং ভবতি। কেশাকেশি জ্পোজল্পি, প্রবাদিনাম্।

⁽৮) অপৃথক্ সিদ্ধােঃ সম্বন্ধঃ সমবায়ঃ, তৎসম্বন্ধসম্বন্ধােগদঃ সমবেতঃ সাদিপরমাাজাদৃশাদাানাৎ বহুবীহাে ইৎ স্যাৎ। স্থানি কুস্মমিত্যত্ত গন্ধ কুম্মিতাত্ত সমবাে আলায়িবান্ গন্ধবাঃ সম্বনাালাজ্যেব কিন্তুর্বিশ্বতাত সম্বত্যাং সংযুক্ত সমবাে স্থান বিশেষণং তর্হি কথং লগ্নবান্ সহকার স্থানা মধুনীতিমান্যঃ মধুনঃ পার্থিবতাৎ, সহকার্ত্রবা সংক্রেমণালাকোৎকর্ষা বিবন্ধিতঃ। তথাচ ভট্টবার্ত্তিকং, সর্বের সংক্রেমিকা ত্তা ইতি। প্রনেত্ব পার্থিবতাং গন্ধ সংক্রান্তিনান্তি। যেতু বৈশেষিকাদরো ত্তাসংক্রোন্তিং ন মন্তন্তে তর্মতে লগ্নবান্ সহকারস্থান ইত্যেব ভ্রতি। জত এবাগস্থাবৈতি চাঝাঃ স্তরন্ধন্তি। ত্রেগাহ তথা আদিভ্য অগত্যে স্থান্ধক স্থানিচেতি।

⁽৯) তেষু তৈশ্চেতি ষত্ত সমাস: স ক্রিয়াবিনিময়ার্থ:। অব্যন্ধীভাববিদি-

*>>> विष्णामग्र= ।

ইমে * কচিদর্থে নিপাত্যন্তে বিদ্তি, প্রহরতি, দ্বিমুষলি, উভাহত্তি উভয়াহত্তি উভাঞ্জলি, উভয়াঞ্জলি, উভাখতিগ উভয়াথড়িগ, উভাকর্ণি উভয়াকর্ণি, উভাদন্তি, উভয়াদন্তি। নেহ দিওা হুশালা গণপাঠাৎ, সমাসান্তরেপি নিক্চ্যকর্ণি-ধাবতি কণো নিকুচ্য ইত্যৰ্থঃ। প্ৰোহ্মপাদি হস্তিনং বাহ্যতি। ৫) ২১। ৫) ১১। ৭) ১২০। ধৰ্মাদন্ কেবলাদা চ বহুপদে। (১০)

ধর্মাদন স্থাৎ। প্রিয়ধর্মা। বাচ বহুপদে সাক্ষাৎ কুতো धर्त्यारेय एक माकार कृष्ठधर्त्यारगामूनमः, माकार कृष्ठधर्त्या वा, পরমঃ স্বোধর্ণ্মোহুস্তেতি পরমস্বধর্ম। পরমস্বধর্মো বা। কেবলা-দিতি কিম্ ! পর্মঃ কুলধর্মোহস্তেতি পর্মকুলধর্ম ।

১২১। জন্তা স্থ্যরিত তৃশ্সোমাৎ ।

স্বজ্ঞা হরিতজ্ঞ। ইত্যাদি।

১২২ । मिक्करणचे नाध्विभिक्तमिशास्त्र ।

অরমতার্থে নিপাত্যতে। দক্ষিণে ইর্দ্মং ত্রণং যক্ত স দক্ষি-শেশা মুগঃ। (অক্সন্মিন্নপি ভবতীত্যক্তে)।

১২৩। জায়া জানিঃ।

জায়া জানিঃ স্থাৎ। যুবতী জায়া যম্প্রেতি যুবজানিঃ প্রিয়ক্তানিঃ। 'স্তু-ঠা ১০-১১

১২৪। ধকুর্ধবন্ বা চ নালি।

ধকুঃ শব্দো ধন্বন স্থাৎ। শাঙ্গ ধন্ব। গৃহীতহ্বা। কথং ধুত

ভার্থ:। * কচিদর্থে ক্রিয়াবিশেষণ ইভার্থ:। নিক্চ্যকর্ণীতি বৃদৃচ্ছাদিত্বাৎ भवामः। प्रयुद्धाः प्रकाणिति एकरवाखयः। (১•) क्विकाणम्याखान्छ।

ধকুষমহায় তৃণবৎ, অনিত্যত্বাধ। বা চ নামি। পুষ্পাধ্যা, পুষ্পা-

ेर । जानूखुः धनरमावारम्बार । (১১)

প্রসংভ্যাং জানু শব্দেজ্যুঃ স্থাৎ। প্রজ্যুঃ সংস্তৃঃ। উদ্ধাদা উদ্ধিজ্যুঃ, উদ্ধিজানুঃ।

२ ১२७। छुमः थ्यां छारः वयनि मत्छ। मङ्ह ।

আভ্যাং দভোদতৃ স্যাৎ স্থান কুমারঃ, স্থানী বালা দিদন্বংসঃ মোড়ন্দমাঃ, বয়মীতি কিম্? দিদভোগদঃ॥ ব্যাত্রী সংজ্ঞায়াঞ্জ স্থাতী,কালদতী, কাচিৎ।

১২৭। অগ্রান্ত শুদ্ধ শুদ্র শ্রাবাহরোক ব্রয় বরাহাহহি গর্মজ্ঞ শিখর মূধিকাদা। (১২)

অগ্রান্তাদেদন্তোবা দত্ঃ স্থাৎ। কুন্দকোরকাপ্রাদন্, কুন্দ কোরকাগ্রদন্তো বা, শুদ্ধদন্ত বা, এবং শ্যাবদন্, শ্যাবদন্তো বা, অরোকোনিদীপ্রিঃ শুরোকদন্, অরোকদন্তঃ, অহিদন্ অহিদন্তঃ শিখরদ্ভী শিখরদন্তীত্যাদি।

্অহিদন্ অহিদন্তঃ শিখরদন্তী শিখরদন্তীত্যাদি।
১৮ ১০ ১০ ১০ ১২৮। অলুক্ পাদস্য সংখ্যা সূপমানাদহস্তাদেঃ। (১২)

সংখ্যাদিপূর্বস্থি পাদস্থ অল্লুক্ স্থাৎ। বিপাৎ ত্রিপাৎ, স্থাৎ, উপমানাৎ, দিংহপাৎ। অহস্ত্যাদেরিতি কিম্? হস্তিপাদঃ কভোলপাদঃ।

⁽১১) জার। ক্রমদীপরেণাদস্তোহপ্যাদিষ্টঃ। (১২) অগ্রশর্কোহন্তো যদ্য স অগ্রান্তঃ। অরোক ইতি ভাবে ঘণ্।

⁽১৩) হস্তিকটোল গণ্ডোল গড়োলা মহিলা তথা। কুশুল গণ্ডিকা দাস্য ইত্যেব বিহুষাং মতম্। গৃঢ়পদ্ ভূজঙ্গ ইতি পৃষোদরাদে পাণিনীয়াশাক্রাশ্চ শঠন্তি। পাদয়তীতি কিনিতি দূর্গঃ।

10-MP ১২৯। কুম্ভপদ্যাদিষু চ। (১৩)

অলেপেহিত্র নিপাত্যতে। কুন্তপদী শঙ্পদী, একো-श्लिमः मर्द्यसः भारमाश्रक्ति धक्रमो भन्नाः। त्राधाभनीः ত্যাদি নিপাতনাৎ ভীনিত্যম্।

১০ । ककूनमा পूर्नारन त्रवसायाय । (১৪)

পূর্ণাদেও ককুদস্তাল্লুক স্থাৎ। পূর্ণককুং, জাতককুং, স্থুলককুৎ তরুণঃ <u>। অবস্থায়ামিতি কিম্</u>ণ খেতককুদঃ। २०)। दिकक्रैञ्चलविरमार्थ।

পর্বতভেদে ত্রিককুৎ স্থাৎ।

তা
১০১। উদ্বিভ্যাং কাকুদস্থা পূর্ণাদ্বা।

श्रञ्जूक् महार । काकूमः ভालूका, উৎकाकूर, विकाकूर । পূর্ণাদ্বা, পূর্ণকাকুৎ, পূর্ণকাকুদো বা।
১) ৭১ -১) ৭১ -১০ । স্থত্মিতে। তুর্হ ছেতো।

অন্তত্ত্ত স্কল্নঃ সাধুং চুক্লিন্তেকারঃ। (১৫) ' ০০ ১। ১০৪। ঋন্দীসর্পিরাদেঃ কপ্। (১৬)

ঋদন্তান্দী সংজ্ঞাকে ভাঃ সর্পিরাদেশ্চ কপ্ ভাং। বৃদ্ধ-পিতৃকঃ, मर्खीकः, मवश्कः, मनुर्शिकः, व्राद्वातकः यूटकाशानः कः। वर्षात्रकः। जनर्षकः हनः खिशाः। तहनं छिका नाला, वह-ৰাগ্মী চা সভা। ইহ গণে লক্ষারনজ্বান্ পরে। নৌঃ পুমানি-

⁽১০) কুন্তাহষ্ট আৰু খত অলি অণীতি সূত্ৰ দ্ৰোণ কুষ্ঠ কুলি কলসা: বিনি-বদ্ধ শকৃং স্থচী স্বর দাস্যেক গোধান্তেতি কেচিদার্ক্য:।

⁽১৪) कानाविकृटणावरमाविद्ययः धर्माविद्यवकावम् ।

⁽১৫) শোভনং জ্বরম্ভ। তৃষ্টং জ্বর্মন্তেতি বিগ্রহ:।

⁽১৬) সবধ্রিত্যপি বিকল্বাৎ। ইণ ইদ্যি, স্তিয়াং বাচ্যালামিণস্থাৎ কপ্ अर । हेरहिं मिर्निवापाविष्यर्थः । डेक्क, अनुष्ट्रः भूर भरत्रा मधी मावारमः

ত্যেকবচনান্তা গৃহত্তে, স্লক্ষীকঃ বৃদ্ধানডুৎক:। দ্বিচন বছ-वहनारखट्डा विভाषा। वहनक्तीर्वहनक्त्रोकः প্রাপ্তে नार्वो যেন প্রাপ্তনোঃ প্রাপ্তনোকঃ, দ্বিপুমান্ দ্বিপুংকঃ। তদন্তাৎ কপ্ প্রতিষেধঃ। ক্ষতদৃঢ়োরদো রাক্ষসাঃ।
তা স্ম

२०৫। (भवा**म्**र्वा।

বহুবীহো যন্মাৎ কপ্ সমাসান্তো ন বিহিত্তু স্থাৎ কপ্ বা স্যাৎ। বহুৰট্বাকোঁ বহুৰটুঃ, বহুদণ্ডিকঃ বহুদণ্ডী । শেষা-দিতি কিমৃ ? প্রিয়পথঃ বহরপঃ কূপঃ।
১৩৬। নেয়সঃ।

ঈয়সন্তাৎ কপ্ন স্যাৎ। বহুপ্রেয়ান্ বহুপ্রেয়সী নৃপঃ। পা দা ১৩৭। স্তাতো ভাতুঃ। (প্রশংসায়াং গম্যায়াম্।)

স্ত্রাতা লক্ষ্ণঃ। স্তুতাবিতি কিম্ ় চৌরভাতৃকঃ। সাঙ্গনাড়ীতন্ত্ৰীভ্যাং। ন কপ্। বহুনাড়িঃ কায়ঃ বহুতন্ত্ৰী গ্ৰীবা তন্ত্রা শিরা। স্বাঙ্গ ইতি কিম্ ? বছতন্ত্রীকা বীণা।

় ১৩৮। নিস্প্রবাণিঃ। (১৭)

নিপাত্যতে। নির্গতা প্রবাণী যস্য স নিপ্রবাণিরপনীত-भनाकानवभदेश। छेळः म्यामाखः।

ইতি শ্রীপদ্মনাভদ্তকৃতে স্পদ্মে ব্যাকরণে পঞ্চমস্থাধ্যায়স্ত প্রথমঃ পাদ:

কত্বাচিনাম্। নিত্যং কৃপ্ স্যান্বহত্তীহো বাঞ্চাং দ্বিত্বহত্ত দ্বোদ্ধিত। প্রাপ্ত-নৌক ইত্যাদে তদভাদিতি গ্রহণবতা প্রাতিপদিক্তন তদভবিধিরিট ইতি স্থায়াণিতি শেষ:।

⁽১৭) **অ**য়ং প্রত্যন্ত নিষেধেন নিপাত্যতে। প্রবায়তেহস্যাথ বেঞাহিছি করবে টনঃ, তভঃ ব্রিরাং ত্রী, যস্তাং শলাকারাং বৃদ্ধং যুদ্ধাতে সাধ্প্রবাণী '

অথ পঞ্চমাধানয়স্ত

বিতীয়ঃ পারে।

१। १ । खिय्रांमर ज्यूकारनताल्। (১)

खौनिष्ट्रश्रहाथ क्रुकाष्ट्रश्रहाक गान्यगुरास चर्नात । ন্থটা রামা কন্তা দেবদত্তা। তপরগ্রহণামেই সংস্থাঃ স্ত্রী শুভংযাঃ ক্রুঞাদেঃ ক্রুঞা বিশা। ঋচি পাদান্তাই। দিপদা ত্রিপদা গায়তী । গিরাদেব্রা * । গিরা গীঃ বাছা বাক্ দিশা দিক কুধা ক্ষুৎ উষ্ণিহা উষ্ণিক ইহ টিত্বেহপি সম্প্রহাণ। অপরহাণা পূর্বি হাণেতি চ গত্বং নিপাতনাৎ ॥ অতঃ স্থ্রিয়ীয়িতাধিকারঃ।
২। ঋতুগিন্নাঞ্চেরমন্মাত্পঞ্চাদেঙী

अम्खा देशिरानां सामर्थम् जियाः हो शर । कर्जी ভবতী বহুগুণবতী দণ্ডিনী প্রাচী। অঞ্চিত্রহণাদ্ধাতোর গিমে-ষাতে, উথাঞ্জিয়য়। অমনাদেরিতি কিমৃ ? মনস্তাৎ পাম।

⁽২) ভটী প্রভৃতিষু ন সংস্কারাপতিঃ, তথাহি বৃদ্ধাঃ। শব্দসংস্কার্মিক্ষার্থ-মুপারাঃ পরিকলিতা:। সর্ববস্তগতা ধর্মাঃ শাস্ত্রে জীত্বাদয় স্করঃ। যে তু বোক্তাবিসম্বদ্ধাঃ প্রাণিজাতীয়নোচরাঃ। ন তেত্যুপায়াঃ সংস্থারে কলত্রাকি जिनित्कवित वस्तार नकानामी हुनी गिडिः। शृक्षि वहसी ত্রীননেকথা স্ত্রীত্মধী কুরম্বীতি লৌকিকং বংশ্রতীয়তে। তত্ত্বস্থায়নি প্ৰব্যে শাস্ত্ৰীয় স্ত্ৰীত্ব সম্ভবাহিতি। * পিরাখের্বেতি বছলাধিকারা-(पर विकासः, दलन भवना भवन्, विभागः। विभागे, देखानि ।

সীমা। মাত্রাদেং মাতা, ছুহিতা স্বদা ননান্দা যাতা তিত্রং চতত্রঃ পঞ্চাদেঃ পঞ্চ দপ্ত নব ক্সিয়ং। নান্তসংখ্যায়ান্তদন্তাচ্চ। প্রিয়পঞ্চানো বেশ্যাঃ।

ा श्री के श्री श्री के श्री के

বনন্তাৎ ভী স্থাৎ। নশ্চ রেফাদেশঃ। দীবরী বছ্দ্শরী
হত্রী। অর্থবদ্গ্রহণান্তেই অভিশান। অযুণ ইতি কিন্ ? রাজন মুদ্ধানিক স্থান্ত্র বিদ্যালন্ত্র বিদ্যালন

৪। বা বহুত্তীহো।

বনন্তাৰত্ত্ৰীকো তাকোঁ বা স্থাতাম্। বত্ধীবরী বত্ধীবা ৰা।
৫। পাদেহিন্তি।

পাদীন্তাৎ তী বা স্থাৎ। দ্বিপদা দ্বিপাৎ ভক্ত পাদঃ পৎ অনুচীতি কিম্ ? দ্বিপদা, ত্রিপদা ঋক্। তা হা হোৱা হি বোনশ্চ। ভ। উধ্যো তী সোনশ্চ।

বহুব্রীহো উধ্সন্তাৎ গ্রী স্থাৎ। সোনশ্চ্। কুণ্ডোগ্নী , নির্বাহী চহুরগ্নী। তা তা পা , পাদালঃ সংখ্যাদেঃ। হায়নাদ্যসি।

সংখ্যাদের্গন্মেহায়নাচ্চ ব্রুত্তীহোঁ গ্রী স্যাৎ। দ্বিদায়ী

ক্রিহায়ণী গোঃ। সংখ্যাদেরিতি কিম্ ং উদামা বড়বা।
তা স ৮। অনোবোপান্তলোপিনোনৈবার্যামাই।

অনন্তাত্পণালোপিনো দ্বী বা স্থাৎ। বছরাজী বছরাজা বছ্তৃক্ষী বছ্তকা বা, স্থামী স্থামা বা স্থামী সনামা বা। উপাত্তলোপিনোহ অস্থাদনন্তালৈব স্পর্যাণঃ স্থামাণঃ স্থিয়ঃ।

⁽২) বনো। ধাঞা কনিপ্ ধীবরী। কথ মতিকানী মূলী, অর্থবিত্রছণে: নানর্থকন্তেতি ভায়াৎ, তথাহি, বয়তেঃ কনিপ্ খনিভাগাতে নিপাতিত্র।

্। ৭। নিত্যং সংজ্ঞায়য়। স্থ্যাজ্ঞী নাম আমঃ। বা বল্জীহো নিয়মাৎ অতিপৰ্কাণী ক্ৰিয়া।

্ঠা ঠা তা পা গ্রা ৯। ডাকানোমনোহয়ত্তাপি।

পুনরন্থাহণাদনন্তমাত্রাছেত্রীহোঁ ডাপ্বা স্থাং। স্বরাজে স্বাজানো স্পর্বে স্পর্বাণো বহুনীবে বহুনীবানো। মনন্তাদন্ত ত্রাপি স্বসামে স্বামানো। তৎপুরুষে চা অভিপটিমে অভিপটিমানো, স্বার্থে সীমে সীমানো।

১০। স্বার্থে।

ष्ट्राः श्वार्थ विधिः।

১১। छिन्। दशीतादन हो। (७)

हिटाश्वां एतातातम्ह यार्थ हो छार। हिर क्क्रिती शासनी देनत्वारी। वर्ष क्क्रिती छेन्यती। त्यातातम् त्याती क्याती वर्षती। वर्ष क्क्रिती छेन्यती। त्यातातमः त्याती क्याती वर्षती वर्षती हित्रकी कल्ली कित्याती नमी मंगी व्यापती वर्षाती लिक्षनी, हाखानी, श्रृषी, हित्रकी, श्रृषी, कल्पानी, भवती, लिन्यती, भातत्री निक्रनी, विक्रती, लिन्यती, क्याती, क्याती, क्याती, क्याती, श्रृष्यिती, यर्ष्यी, य्याती, व्याती, व्याती,

⁽৩) টি। ব্যবস্থাবাচিতাকের হোড়াগুলাসঃ, হোড়া বালা বৎসা মধ্যা ডিস্তা পাকা নলা স্তনপা উভানশয়া। সধীতি দীর্ঘ ঈকারাস্তোহরং, সহ ধ্বেন বর্ততে বা সা সধীতিকাসঃ। ন বিদ্যুতে নিতরকা অনিধী, জায়া। বর্ধা-ভূরিত্যের সাধুঃ, ন ভূ বর্ধাভীতি।

कूनी (लोहिवकारत। कामूकी रेमशूरनष्टाश्वाम् । कामूका अग्रज् । कतती (कमारवरमा। (कतलारमः मः छ। शाम्। (कत्रमो नाम-জ্যোতিবং মামকী দেবতা সামানী ছলঃ স্থমলনী কাপি, পূখী ভূমে নাভত্র ৮ স্বার্থে ইতি কিম্ ? বহুকুকুচরা নগরী বহুকু ম্বকারা ইতি, পঠি তাশ্চাপঠি তাশ্চ গৌরাদৌ ভেরা:।

১২। नन्यन्कत्रभः। নণাদ্যন্তাৎ ঙী স্থাৎ। দ্রৈণী পৌন্নী ইত্বরী। २०। शार्शाराष्ट्रस्तायन के वहन्य।

गार्ग्रारमध् खियार धी महार। (छेतायनारमणम् वहनय। গার্গী পার্গ্যায়ণী বাংশী বাংস্থায়নী। বাহুল্যামিত্যং লোহি-ত্যাদে:। লোহিত্যায়নী সাংশিত্যায়নী কাত্যায়নী শাকল্যা-यनी माधवरायनी वार्ज्जवरायनी, व्यात्रितरमें, काल्रायनी। वज्छा-मान्नितरम यरगा नूक् खियामायन म्हन्त्र छी, वेडि छा।यमी।

२८। कोत्रगाञ्चतिमाष्ट्रकान्छ।

·ঙী আয়ানো স্থাতাম্। কোরব্যায়ণী আহ্বয়না মাণ্ডু-কায়নী তম্মেদমিত্যণন্তাৎ কোরবী সেনা মাওুকী ভার্যা।
১৫। আব্ট্যাদাপ্ট।

আবট্যা আবট্যায়নী।

১७। विशि

দ্বিগুসমাদান্তাৎ স্ত্রিয়াং ঙী স্থাৎ। দ্বিশতী, ত্রিলোকী, ত্রিখট্টী, ত্রিফলী, ত্রিফলা, আমলক্যাদিত্রিকে রূঢ়িঃ। ১৭। তদ্ধিতলুকি পরিমাণাদদংখ্যাকালবিস্তাচিতকম্বল্যাৎ।

পরিমাণান্তাদ্বিগোন্তদ্ধিতলুকি ভী স্থাৎ। ক্রীতার্থে স্বাঢ়-কী দ্বিস্থী। পরিমাণাদিতি কিম্ ? পঞ্চাশ্বা। লুকীতি কিম্ ? দ্বিপণ্যা। অসংখ্যাদেরিতি কিমৃ? দ্বিশতা দিবর্ষা দিবিস্থা দ্যাতিতা দ্বিস্থল্যা। ১৮। কাণ্ডাদক্ষতে।

কাণ্ডাৎ দিগোন্ত দ্বি ভী স্থাৎ। দে কাণ্ডে পরিমাণমস্থাঃ
দিকাণী রজ্জু:। অক্ষেত্র ইতি কিম্ ? দিকাণ্ডা ক্ষেত্র ভক্তিঃ।
১৯। পুরুষাৎ প্রমাণে বা

প্রমাণে বর্তমানাৎ পুরুষাস্তাদিগোস্তদ্ধিতলুকি ঙী বা স্থাৎ। দ্বিপুরুষী ষ্ষ্টিং দ্বিপুরুষা বা।

२०। व्यद्धविद्याः (४)

মত্বস্থামো নিপাত্যতে বৃ

২১। পতিবজী ভার্য্যায়।ম্।

ভার্য্যার্থেংত মতোর্গেবিজ্বং নকার*চ নিপাত্যতে।

२२। পর্তারে । *

পত্যতী স্থা দেশ্চ নকারঃ উঢ়ায়াং ভার্যায়াং পত্নী নান্তর। ২০। বহিন্যপদার্থে নিত্যং সপত্নাদে। তু

অন্যপদার্থে স্তিয়াং পত্যুপ্তী বা স্থাৎ। এশ্চ নকারঃ, রুদ্ধ-পত্নী রুদ্ধপতিঃ। নিত্যং তু সপত্যাদো, সমানঃ পতিরস্থাঃ সপত্নী একপত্নী। সমান এক বীর পিও ভাতৃ পুতাদিঃ।

्। ८भागात्मका।

त्मानात्मर्डी वा छा । सार्थ त्मानी त्नाना वा, ह**ो** हुआ

⁽৪) অন্ত। গুরুরিণ: পতিরক্তা, গুরুমিয়াতি প্রীণাতি বা নৈরুক্ষর্থনাশঃ পৌরাছিত্বাৎ গুর্বিণী, তস্যাং বাচ্যায়াং, অন্তঃশব্দাদধিকরণপ্রধানামতুং, নিপাতনামাগম ইতি মণ্ডবাদিতি, অক্তন্ত অন্তর্মতী শালা।

^{*} পভিশকো ত্রিয়ামপি বর্ততে।

বা. উপাধ্যায়ী উপাধ্যায়া বা, শোণ চণ্ড উপাধ্যায় অরাল বিশাল বিকট বিসম্কট কুপণ পুরাণ কল্যাণ সাধারণ উদার। তা ১১১: ২৫। খেটিতত হরিত লোহিতাত্তোম:।

এভ্যং স্বার্থে ব্রিয়াং ঙা বা স্যাৎ। তোনশ্চ। শ্রেনী-শ্রেচা এনা এটা হরিটা বোহিনী লোহিতা।
১০
২৬। কোহসিতপলিতাৎ।

আভ্যাং ঙা বাস্থাৎ। তকারতা কাদেশশচ অসিকী অসিতা পশিকী পলিভাষ্টা

२१। ७ तिक्निशिष्। (e)

ইবর্ণান্তাং তী বা স্থাং। বাত্রী রাত্রিঃ ধূলী ধূলিঃ
ভূমী ভূমিঃ মুনী মুনিঃ যুবতী যুবতিঃ। যতী যতিঃ পদ্ধতী
পদ্ধতিঃ। অস্ত্রে শক্তী শক্তিঃ বস্তী বস্তিরিত্যাদি। শ্রীয়ং
লক্ষ্মীয়মিতি হুর্ঘটরক্ষিতঃ। অক্তিনর্থাদিতি কিম্? গতিঃ
শক্তিঃ হানিঃ অকরণিঃ কাঙ্কারিমকার্যীঃ স্ত্রিয়ামিত্যেব অতিথিঃ।
২৮। উত্তোগ্রণাদধক্ষেদংযোগোপধাং।

२৯। श्रुराशांखनात्मानि ग्रेम मृद्यातिः।

পুংযোগাৎ দ্রিয়াং বর্ত্তমানাৎ পুন্নান্নোনিত্যং ঙী স্থাৎ। গর্ণকস্ম ভার্য্যা গণকী শূলী বৈদ্যী ক্ষত্রিয়ী প্রস্তী। অসূর্য্যাদে-

⁽৫) এর এবং রজনী, রজনিং, বাণী বাণিং, পাকী পাকিং, হলিং হলী প্রজ্ঞী প্রজিঃ পিকপিং পিকপী, তুলাকোটী তুলাকোটিং, সালী সালিং, সূচী স্চিরিতাদেরং।

রিতি কিম্? সূর্যা গোপালিক। জ্যেষ্ঠ। কনিষ্ঠা মধ্যমেতি वावदावाठिश्वर जेस्ता जेस्तोछि खेनामिका वृत्रे ।

৩১। অগ্নির্যা কপিপুতজত্ কৃসিতকুসীদানাং টেরায়ঃ।

व्यागात्म की जार । टिनाशास्त्र गण्ड । व्यागी त्रमांक नामी পৃতক্রতায়ী কুসিভায়ী কুদীদায়ী। ক্রম্মানে বুদিনি নিবশত। ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ মনোরাব্চ বা।

मत्नाव खियार भूरतानार की वा छार। छितार बाग्र छ। मनावी मनाशी मनुः।

၁၁। यो निक्त वक्रन उर नर्ख क्रफ ग्र्डार्टाश बन्ननाः (या नवाम नवस्थ ।

हेट्यारमः श्रुरयातार खियार ही छार । रहेतानारमण्ड । हेक्सानी वक्रमानी जनानी नर्वानी क्रुक्रैानी। बाहार्यप्रापनक्ष षाहार्गानी बकाणी।

্ড। ৩৪। বোপাধ্যায়মাতুলয়োঃ।

व्यनत्याः श्रुःत्याभाद (हेतान् वा महाद। हीनिकांत्रमव-উপাধ্যায়ানী উপাধ্যায়ী মাতৃলানী মাতৃলী। তাতা ৩৫। অর্যক্ষতিয়াক্তপুংবোগাং।

षा जाम पू॰ रया गांद ही वा छार। षाना ह (है:। हकारता-বাভিসন্ধর্বার্থঃ। অধ্যাণী অর্ঘণা ক্ষত্রিয়াণী ক্ষতিয়া পুংবোগান্ত, व्या कि जिया।

311 ७५। हिमाग्रतगुर्तिगो महत्व।

স্থাত।মৃ। মহাহিমং হিমানী মহারণ্যমরণ্যানী।

१। १९। यवनानी निर्णा। यवनानी कालिलिएकर्।

्र) ११ १ अन् विवासी प्राप्ति। इस्कीयत्वा यनामी स्थाइं।

95 1 767 TATE:

জীতাৎ দ্রিয়াং ঙী স্থাৎ। করণপূর্বকেং। ধনকীতী, বস্ত্ৰ ক্ৰীভী।

८०। कामझाथारायाम्।

করণপূর্বাৎ ক্রান্তাদরাখ্যায়াং তী স্থাৎ। অবভলিতী (मार्गः अल्लाव्या हेरार्थः अक्तुतिश्वी **बिट्सा**।

8>। योत्रপ्रवामकाजातम्बङ्बी हो।

সাসপূর্দাৎ ক্রান্তাবছব্রীহো জী স্থাৎ। শঋতিটা কেশ-বিল্নী কর্ণছিল্লী । পাণিগৃহী তী পত্নাম্ ॥ পাণিগৃহীতা অভ্যত স্বাঙ্গপূৰ্ববাদিতি কিম্? রক্তিলা বাটী। व्यकाठारमित्रिकि কিম্? দন্তজাতা দন্তমিতা দন্তক্তা দন্তপ্ৰতিপনা। ৪২। জাতেরনাছোদনাদা।

कां जिमकपूर्वा एक खां बहु बौर्श हो वा छा । भनापू-ভক্ষিতী পলাণ্ডু ক্ষিতা বা হুরাপীতী হুরাপীতা বা। অনাচ্ছাদ-নাদিতি কিমৃ ? বক্তক্ষা। অজাতাদেরিত্যেব রুক্ষাতা।

े यात्रीन अधाननिमः त्यादगान्धवस्य ह्टक्ना जादन सम् नक्ष विमामानपूर्वीक

ज्ञ প্রধানাৎ স্বাসাৎ সংযোগে। পধাদিবর্জি তাদসহাদি প্रবাৎ हो वा छाए। नोर्घरकनी नीर्घरकमा वा चिट्टरकनी व्याजित्यमा वाला॥ नथम्थापमः खात्राम्॥ स्नथा स्नयी स्म्या স্মুখী। অসংজ্ঞায়ামিতি কিম্ ? দূর্পণিথা কালমুখা। অসংযো• পোপধাদেরিতি কিমৃ ? হাগুল্ফা বন্ধারক্ষা। বহুবচঃ পুথুজ্বনা ক্রোড়াদে: হুকোড়া হুগুলা। ভগ খুর বাল গুদ শক শিথা সংস্প)। चनशामिन्द्वामिकि किय्? संद्विमा चरकमा विनायानदिक्या। षात्रवर यूर्विषद यात्रर शानि स्मिनिकात्रवम्। षाउदसर उख

তেন চেত্তথাযুত্ম। অদ্রবং কিং ? বছকদা। মূর্তিনং কিং, বছজানা। প্রাণিস্থং কিং ? দীর্ঘমুখা শালা। মবিকারজ্ঞং কিং ? বছশোধা। অতৎস্থং তত্ত দৃষ্টঞ্চ তদিশ স্বাসং দীর্ঘকেশী রখ্যা দীর্ঘকেশা বা। তেন চেত্ততথাযুতং স্বাসং পৃথুস্তনী প্রতিমা পৃথুস্তনা বা।

८८। नामित्कामदतोष्ठक्रकामस्कर्णभूत्रात्रभावकशेष्ठ।

এভ্যোবহুক্ সংযোগোপধেভ্যো তী বা স্থাং। তুপনাসিকী তৃপনাসিকা বা তন্দরী তন্দরা বিম্নোষ্ঠা
দীর্ঘজন্তী দীর্ঘজন্তা, সমদন্তী সমদন্তা, চারুকর্ণী চারুকর্ণা
তীক্ষশৃসী তীক্ষশৃসা, স্থাত্রী স্থাত্রা, মুখসী মূৰসা, কম্মুক্ষী
কম্মুক্ষা।

८६। शुक्राकः।

তী বা স্থাৎ : দীর্ঘপুচ্ছী দীর্ঘপুচ্ছা বা।

১০ ১০ ১০ কবর মণি বিষ শরেভেদীনিতাম ।

কৰরপুচ্ছী মণিপুচ্ছী বিষপুচ্ছী শরপুচ্ছী।

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ৪৭ । পক্ষাচেচাপমানাদেঃ ।

উলুকপকী দেনা। পুছাচ্চ কাকপুছী।

८+। जारजब्रह्मीविषशामरेवभारमः।

ভাতেঃ দামান্তবচনাৎ তী ভাৎ। কুকুটা বিহুগী মুগী
দূতী পুতনী অমরী ত্রাহ্মণী রষলী নটা কঠা। নুমরটোর বিলাক। নারী। অক্তাবিষরাদিতি কিম্? মক্ষিক। পিপীলিক। বলাকা এতা নিত্য ব্রিয়া। অবৈশ্যাদেরিতি কিম্? বৈশ্যা। গরন্ধ হর মনুষ্য ঝয় মংভাদেতোযোপ্রা কিত্রিয়া অর্যা। গরন্ধ গ্রাহা হয়। অজ্ঞাদরশ্চ বৈশ্যাদের অজ্ঞা অধ্যা। গর্মাদেন্ত গ্রাহা হয়। অজ্ঞাদরশ্চ বৈশ্যাদে অজ্ঞা অশ্বা এড্কা ক্যোক্লা

ত্য া ।

শূদ্রাচ্চামহৎ পূর্কাৎ। মহৎপূর্বাভূ মহাশূদ্রী আভীরী। স্বার্থ
ইত্যেব প্রিয়কুরুটা মধুরা। অত ইত্যেব তিতিরিঃ।

8à। भाककर्भर्गतासमृलाखाँ । ·

জাতেরিত্যের পাকাদ্যন্তাৎ ত্তী স্থাৎ। স্ত্রীবিষয়ার্থং বচনং। ওদনপাকী আখুকর্ণী প্রশ্নিপর্ণী গোবালী শতমূলী। অমৃলেতি ,অজাতিবচনত্বাদাপ্।

त०। भूक्तामममामिश्कार।

জাতে নিতোৰ পুজ্পাস্তাৎ ঙী স্যাহ। শঙাপুজ্পী। অসদা-দিপূৰ্কাদিতি কিমৃণ সংপূজা সংপাক্ কাও প্ৰান্ত শত এক।

८) क्लामन्यानगरिः ।

ফ্লান্তাৎ তা স্থাও। দাড়িমফলী। অসমাদ্যাদেরিতি কিম্? সংফলা। সং ভ্রু অজিন শণ পিও।

৫२। नारुः।

এতদন্তাৎ ভী স্থাৎ। প্রভৌহী শালু হৌ। ও । প্রায়েণাল্লবিকায়াম্।

অপেবিবক্ষায়াং ভী স্থাৎ। অল্লং ছত্ৰাং ছত্ৰী পত্ৰী মুণালী দণ্ডী ঘটাত্যাদি।

প্রত্যাশী । তা তাতা তা তা তা তা ৫৪। ইতোমুজাতেরিণস্বলভোপি চ।

ইনন্তাৰ জাতিব। চিনঃ স্ত্রিয়াং তী স্থাৎ। অবস্তী কৃতী ইণন্তাম জাতে শচালতে পি চ, উনপোয়ী, দাকী। তেন নির্কাত্রা। নোডল্পমী পুরী। ইত ইতি কিন্ ! দরং। নৃজাতে ব্লিতি কিম্? তিতিবিঃ।

क्षा **इ**क्षेत्रः।

. केरेखाम् कारण्यक् मार्थः। वक्षवद्भः क्षः बीतः। कर-

লাধিকারাৎ ভীরুরিত্যপি নীষাপর্ধী অধ্বয়া ত্রাক্ষণী। নৃছা তেরিত্যের দেকুঃ। জাতেরিতি কিম্ ? কিমভীরুররার্যাদে। ওচা অপ্রাণিনামরক্ষাদেঃ।

অপ্রাণিজাতের দন্তাদ্ভ ্স্যাৎ। অলাবৃং কর্ক দৃঃ। অপ্রাণিন নামিতি কিম্ ! কুকবাকুঃ। অনুজ্জাদেনিতি কিম্ ! রজ্জু ই হসুঃ। কাম্বা বে। বাহান্তক ফ্রেক মণ্ডলু ভোনামি।

বাহ্বস্তাদেঃ সংজ্ঞানুত্ স্যাৎ। মন্ত্রাহুঃ কজেঃ কমওলুঃ
নাল্লীতি কিষ্? ব্রত্তবাহুঃ স্ত্রী কজেঃ কমওলুঃ।
বা
৫৮। উরোক্রপমানসহিত সংহিত সহ সফলকণবামাদেঃ।

উপমানাদিপূর্কাদ্রোরঙ্ স্যাৎ করভ ইব উর যস্যাঃ
সা করভারঃ সহিতোরঃ সংহিতোরঃ সহোরঃ শফোরঃ
লক্ষণোরঃ বামোরঃ। কথং রস্তোরু, কেলিখালং, বহুলাধিকারাং। স

৫३। शकुः युक्तः।

এতে নিপাত্যেতে । শ্বশুরস্য উকারাকারয়োর্লেপেঃ। ৩০। যুনস্তিঃ।

যুনঃ স্তিরাং তিঃ স্থাৎ। যুবতিঃ।
৫) ৫। ৭। জ ৫) ১)
৬১। অণিণোহনার্যাপোতে গুরুপোত্যাদ্যাপ্।

গোত্রে বিহিতো যাবণিণো তদন্তাৎ ক্রিয়াং যাপ্ স্থাৎ।
অণ্ কারীয়গন্ধা, ইণ্ বারাছা। অনার্ধাণিতি কিমৃ ? বাশিষ্ঠী
গোত্র ইতি কিমৃ ? আহিচ্ছত্রা। গুরুপোত্রমাণিতি কিমৃ ?
প্রপাবী। উত্তর্মান ক্রিপ্রভিত্তির বর্ততে তৎসমীপমুশোত্রম্য।
১২। ক্রেড্যানেশ্চ। (৬)

^{.(}৬) ক্রেড্যা। আদিপদাৎ চৌবারত বৈকরত আপক্ষিতি দালাদ্দি ইত্যাদি। তথা দৈবদভা বাজ্ঞসন্তাদ্যা অপ্যত্ত জ্ঞেরমন।

ক্রেড়িপ্রভৃতেশ্চ স্তিয়াং যাপ্ স্থাৎ। ক্রেড়া নাড্যা ক্রেড়ি নাড়ি ব্যাড়ি আপিশলি সৌধাত্তকি ভৌরিকি কাপি-ভলি, ইত্যাদি।

৬০। ভোজ্যাৎ কবিয়ন্তাতো। ভোজ্যা।

७८। क्लनामन्छ। (भीनका भीवर्धा।

७०। रिषवयळारम्बर्गा

এভ্যো যাপ্ বা স্থাৎ। দৈবযজ্ঞা দৈবযজ্ঞী বা। দৈবযজ্ঞি

শোচি বৃক্ষি সাত্যকি স্থায়ি কাণ্ডেরিদ্ধি। পূর্ণঃ স্থাবিকারঃ।
১৯ । প্রাগদীব্যতেরণ্।

তেন দীব্যতীভ্যতঃ প্রাগ্যেহর্থাক্তেমণ্ ভবতি। উপগোর-পড্যং ঔপগবঃ। বছলনিত্যেব উপরপত্যম্।

01 21

७१। मिळानिजानिजायमाधाः।

দিত্যাদেদীব্যতেঃ প্রাগর্থেষু ন্যঃ স্থাৎ। দিতেদিত্যঃ অদিতেরাদিত্যঃ আদিত্যাৎ আদিত্যঃ যাম্যঃ।

७। १ श्रृत्वश्वामिश्कार

গণাদের অপূর্বাৎ পভুঃ প্রাগদীব্য ভীত্যর্থে ন্যঃ স্থাৎ। বাহ স্পত্যঃ দৈনাপত্যং। অগণাদেরিতি কিম্ন গাণপতং আখপতং। গণ শত ধন অখ রাষ্ট্র কুল গৃহ পশু ধালা ধ্যন্ প্রাণ নৃ শ্বি সভা ক্ষেত্র। প্রাগদীব্য তেরিভ্যেব ভাবে ট্যন্ আধিপত্যম।

১) তা ৬৯। অঃস্থান্ধঃ।

লোমান্তাৰহুমপত্যে অ: স্থাৎ। উড়ুলোম্বঃ পুতাঃ উড়ু-লোমা: শরলোমাঃ। বছদিতি কিমৃ ? ও ড লোমিঃ।

१८। गारणे पृथिवाहि।

স্থাতাম। পার্ধিবঃ পার্ধিবা পার্ধিবী।

ा)।। १२। (नवामन यर्ग।

ञ्चाजाम्। दिनत्वादेवबाः।

০। ৭০। বহিষো ভাগ ভীকণো ।

স্থাতাম্। বাহোবাহীকঃ। জাতেওাঁ বাহীকী।

তা তা সা, গা

৭৪। বিগোরজাদেলু গনপত্যে।

দিওসম্বন্ধিনোহজাদেঃ প্রাগদীব্যতীয়ে ত্রিত্ত লুক্ স্থাৎ। পঞ্চকপালঃ দুপঃ। তদধীতে ঝেন বা ; দ্বিবেনঃ। অনপত্য ইতি কিমৃ? বৈমাত্রঃ। অজাদেরিতি কিমৃ ? পঞ্চগর্রপ্যং। রূপ্যো হেতুমতুশ্যাদ।।

११। ভবনাদ্যি कलिङ्याः (ऐय्रग्।

ভবনেকেত্র ইত্যতঃ প্রাণর্থেষ্য়ি কলিভাগিটেয়ণ্ স্থাৎ। তস্থাপত্যং, ভেন দৃষ্টং সাম, সাহস্থ দেবতা, তত্মেদমিত্যর্থে, ভক্ত নিমিত্তং, সংবোগ, উৎপাতো বা, তদর্হতি তত্ত সাধুঃ, তবৈছিতং বা, আগোনং কালেয়ম।

(৪)

৭৬। জীপুংসাভ্যাং নণ্স্রণো, বাচ ভাবে।

আন্তাং প্রাস্ত্রনাল্পর্যো স্থাতাম। দ্বৈণং পৌশ্রং वा ह ভाবে खिनः जीवः श्रीयः श्राखः। ভननामित्वाव खीतुः। पुरवर ।

११। (श्रीत्रज्ञीमि अगरत्र गर्।

সর্বত্ত অজাদিপ্রসংস গোর্য আং। গবি ভবং গোরিদং বা গব্যং, গোর্দেবতা অস্ত গব্যঃ। অজাদীতি কিম্ ং গোরা-গতং গোরপ্যম্।

৭৮। তম্ভাপত্যমৃ।

অত্তার্থে যথাবিহিত্মণাদয়ঃ স্থাঃ। স্তপাসবঃ দৈত্যঃ বাহস্পিত্যঃ সৈনাপত্যঃ স্ত্রেণঃ। অতোহপত্যাধিকারঃ। ক্রা ১ বা ৭৯। সাদ্যাদেকেগোতো।

পোত্রাদ্যপত্যং গোত্রং তত্ত্ব আদ্যপ্রকৃতেরেক এব প্রত্যা ভবতি। অসতি যুবপ্রত্যারে। উপগোঃ সর্ব্যেব গোত্রেং, ঔপগবঃ দক্ষত্ত দাক্ষিঃ গর্মপ্র গার্গ্যঃ তদপত্যং তত্ত্বা-প্যতঞ্চ। গোত্র ইতি কিষ্ণু গর্মস্থানস্তরাপত্যং গার্গিঃ।

৮०। (शाखान्याक्तिशाम्।

বংশ্যে জীবতি তদপত্যং বুবোচাতে। তশ্মিন্নপত্যে য়ঃ প্রত্যাঃ স একোগোত্রান্তবতি ॥ নাদ্যপ্রকৃতেঃ ॥ ঔপগবস্থা-পত্যং যুবা ঔপগবিঃ দাক্ষেদ্যিকায়ণঃ গার্গ্রস্থা গার্গ্যায়ণঃ অক্সিয়ামিতি কিম্? গার্গী, যুবসংক্তৈব প্রসিদ্ধা।

৮)। अवास्तारमिति ग्री (१)

আদন্তা বাহ্বাদেশ্চাপত্যে ইণ্ স্থাৎ। দক্ষস্থাপত্যং দাকিঃ গার্গিঃ তপরঃ কিং কৈলালপঃ। বাহ্বাদেঃ বাহোরপত্যং বাহবিঃ। বাহ্ উপবাহ্ন মুদ্রা বলাকা ুমূদিকা এড়কা স্থমিত্রা

⁽१) জবা। আদিশকাং বিশ্কপবিশ্ চটক বুকলা কৃতক লালমকা কৃবকা সকলা নগলা ভগলা গুমিলা ববিং মন্ সুনামন্ সুগাবং উদক্ত লীৰ্বন্ লোমন্ এতদভো বামজংখা অজধ্যে অমুবহং অজীগৰ্ত চাক্ৰশৰ্মন্ শঝ-ভেদি নধবনৰ্দিন্ নগৰনৰ্দিন্ মাসশ্বাবিন্ অক্ষযুক্তক ইভ্যাদি আকৃতিগৰো-হয়ম্। উদক্ষ শভাৱাভ্যাং নামীতি কশ্চিং। শলকেঃ শলকঃ কৌশিকে।

পুকরসদ অনজুহ্ স্বামিন্ দেবশ্রিমিন্ স্থনামন্ কুলনামন্ পঞ্ন্ সপ্তান্ অফটন্ লোমন্ কৃষ্ণ যুধিষ্ঠির অর্জ্জুন গদ শাস্ত্র প্রভাস। कुरातीनाः मिवानाग् वाधकवाधनार्यः भठनमिजानि ॥ ममत्रथान **८मर्स्वा**॥ मान्यत्रांशः मान्यत्रभः अनीय्रकाः मान्यत्राय रेमविली । (मोबिजिः (मोबिज क

৮২। स्थाजापिर्ड किन्।

অভ্যেহপত্যার্থে ডকিণ্ স্থাৎ। সৌণাত্রকঃ বৈয়াস্তিই হ্রধান্ত ব্যাস বরুট নিষাদ্দ তণ্ডাল বিশ্ব।

১০ ১০ শিবাদিভ্যোহণ্। (৮)

এভ্যোহপত্যার্থে ইণাদ্যপ্রাদোহণ, স্থাৎ। শৈনঃ যাকঃ শিব যক্ষ বিভাবণ বরুণ গঙ্গা যমুনা ইলা পীলা ভূমি সপত্নী ইরাবতী ককুৎস্থ বতও জারংকারে •তক্ষন পৃষন্ অয়স্থা পুতानि। তথা বশিষ্ঠান্যা अध्ययः, খাফল্কান্যা অন্ধনবংশাং, বহুদেবাদ্যা রুঞ্জঃ, নকুলাদ্যাঃ কুরবঃ । পর্রস্ত্রির পরশু চু ॥ পারশবঃ।

শালকিং, কৌশিকে তু. শালকায়নং। যেহত্র গোত্রবাচকান্ত এবাত্র গৃহত্তে উপৰাকু নিৰাকু শিবাকু বটাকু কুশলাকু ছগলা ভজ্ঞপৰ্যন স্পৰ্যান। অমিতৌ-জসঃ সলোপত) উদ্ধৃ শিৱস্ মাধ শ্রাবিন্ মর্গাচী ক্ষেমবৃদ্ধিন্ শৃথা-लाजिन यत्रनाषिन नगतनार्किन आकातमर्किन लागन वास्तापितिजि।

(৮) मिया। खदापिनमा (প्राष्टे त्वेड क्रष्ट दए द्रिक्त निष्ठे मस्ब कर्न বজ্বক অনভিয়ান বর্থিক জেক ভন দন তৃণ কর্ কজ্ভ বুভূক। হব সন্ধি मूनि क्षांत्र क्ठांत्र वस्ति । विष्टिमिन अवानिक, क्विषत्र अवश्वाक मृनि धन প্রোষ্টিক চত কুন্ত কহোত বোবো পীবর ক্ষীরহার জলহার গোভিলক জটিলকা পঞ্জারক ধঞ্জারক ধঞ্জাল রেধক লেখক উর্বনাভ শক্ত্রব হৈত্য কলিল তৎ-কুৰ্মা লোহিতিকা অৰ্থাখেত পিপাসা আকৃত্যা অক্সদপিজ্ঞেয়ম্। বিক্ৰা-ষাংগে। জিবেশ্চাত্রিবর্ণক। শুদ্ধান্তাব্রজ্বাজে। ইন্তান্তং প্রজ্বাজ্যু ।

ত। ক) ৮৪। মাতুমাতুর সংখ্যা সং ভদ্রাদেঃ।

সংখ্যাদিপূর্বীয়া মাতুরপত্যেহণ্ স্থাহ। মাতুরাদেশন্চ। বৈমাজুরঃ টেটামাতুরঃ ধাণাাতুরঃ। সাংমাত্রঃ ভাত্মাতুরঃ। সংখ্যাদেরিতি কিম্? সোমাতঃ।

७१ - २१ २। ।

५८। कञ्चामा कनीन् । (ञ्रनृशामा हे ज्यावर)।

वा कनीना प्रमम्ह। कानी तो वामकर्ग रामकर्ग र

প্রতিয়াতাৎ শুলাদেশত টেয়ণ্ স্থাৎ। পুনর্বক্লগ্রহণং স্পান্থার। স্পান্যা অপত্যং সৌপর্বেয়ঃ সৌভদেয়ঃ
কৌপ্রেয়ঃ দাভেয়ঃ চাক্রভাগেয়ঃ বাসনদতেয়ঃ যৌবতেয়ঃ
কৌপ্রকাবেয়ঃ, উভভাৎ কামগুলেয়ঃ ॥ বড়রায়া রুমে ॥ (রুমোহক্র শুক্রবচনঃ) বাড়বেরিয়া রুমঃ। বাছল্যায় পুর্বাদেয় পার্থঃ
যামুনঃ ক্রোঞ্চঃ কৌকিলঃ, সৌতম্যাঃ গোতমঃ, শুলাদেয়
থল্পে শৌরেয়ঃ আত্রেয়ঃ লৈথাল্রেয়ঃ। শুল অত্রি রুফি
ক্রফ্র দিতি অদিতি লেথাল্র বিধি কাপি বিমাতৃ স্বর্ভি
অতিথি প্রবাহন্ ভরত মুক্তু ইতর অন্তের স্কনামন্

⁽৯) স্ত্রী। মৃকণ্ড ইতি কশ্চিং। বিকর্ণ কুণীতকাভ্যাং কাশ্রপে। এরণ্
স্থাং। লক্ষণ শ্রামাদ্বনিষ্ঠে এরণ্। এবং পুরুষ ক্রত ব্রহ্ম কৃত শরদার শত্রম ক্রশাকা শলাথল কুমারিকা কুবেরিকা অন্বিকাগন্ধপিল্লা মদোমুণ্ডা ব্যাহিক ক্রিণী গলা গোদা অশ্বরী, অনীবামর্লাভ্যো ন্দীমানুষীভ্যমানিকাভ্য ইতি বাদকবাধনার্থঃ পাঠঃ, হুঃশীলাভিধায়িবিধবাশকোহত্র
সাহেন স্থায় ন্যাবেতি বিহিত্তবাণোবাদনার্থং, তথা শলাকক কিত্যা দিশ্
ক্রিক বৃহ্ন সাহারত মহুর কপুরি আকাশার্ম বায়ুদ্ভ শকল শবল
আনোকা অন্তর্গান্ধন হবি নবনী বর্জিনি বিপ্রচিং ক্রীব অশ্ব আবিন
শব্দ শ্রিকাটে। বিশ্বপুর ব্রহ্নত্ত শলাক্র বিকাস ধর্মিলী

জিকাশিন্ গৃষ্টি ধেমু শুক শুক গ্রহ উগ্র অজির পাওর বিকর্ণ কুশীত কাশ্যপ ইত্যাদি॥ ক্রেবৌ ক্রেব টী॥ ক্রোবেরঃ গঙ্গায়াঃ শিবাদিতিকাদিপাঠাত গাঙ্গেয়ো গাজো গাঙ্গায়ানিঃ। মণ্ডুকাদ্বী॥ মাণ্ডুকেয়ো মাণ্ডুকিশ্বাগ্রুকো বা। পীলামাঃ পৈলেরঃ। শিবাদিয়াৎ পৈলঃ।

५१। टिएटनश्रेग् भव्यक्तिशाह।

रिवेदनयम् खार्। भावरैख्यत्मयः । का का ५५। कन्याम्यादम्बिदनयम् । (५०

এভ্যপ্তিনেরণ্ স্যাৎ। কাল্যাণিনেরঃ সৌভাগিনেরঃ কল্যাণী হুভগা হুৰ্ভগা বন্ধকী জরতী জ্যেতা কনিষ্ঠা মধ্যমা কুল্টা।

। তা তা তা তা পা ৮৯। চটকায়া এরণ্লুক্চ প্রিয়াণ্।

অন্যা অপত্যে ঐরণ্ ন্যাং। নিম্নি-নিট গ্রহণাৎ চটকা-দ্পি। চাটকৈরঃ। ত্র্পত্ত্য ঐর্ণো লুক্চ চটকা।

२०। (भाषाद्वी तथ्, धत्रण्डा (১১)

গোধায়া অপত্যে রণ্ এরণো স্যাতাম্। চকারাট্রেশ্ চ, গোণারঃ গোধেরঃ গোধেয়ঃ।

অজবন্তি শক্ষি বিশ্বেত্র শক্ষি শুকে শতন বছকী বিশ্রি গোদম্ব কুশাল মকটু শাতাহর প্রচ্বিক গোধা অধীব ভারম ভরত নৃক্তু আলীচ় সুদত্ত স্বক্ষ স্বক্ষশ্ স্বামন্ কক্র তুদ অকশার কুঠারিকা কিশোরিকা প্রিধি শক্ষ শলাকা স্বড়ুর সভোন্তা অনুষ্ঠি অরতিন্ বলিব্র্দিন্ বিগ্র বীজ জীব শ্বন্ অপান্ অশ্ব ভ্লাদিরাকৃতিরণঃ ॥"

- (১০) कन्या। अनुवृष्टि अनुरुष्टि अवजी क्लोवकों भवतीजि कन्यानाचिः ॥
- (১১) त्रामा। जबाल्यत उ मृती मुविका काकीछ न्रानिकम्।

কাণ কুদ্রাভাগে বা i

श्राह्म । श्राह्म कार्यक्ष कार्यका कार कार्यका कार कार्यका कार कार्यका कार कार्यका कार कार्यका कार्यका कार्यका कार कार्यका कार

লা গ ল-১৷ ৯২। স্বস্মাতৃভা৷ মীয়োভাতুশ্চ।

এভ্যোহপত্যে ঈয়ঃ স্যাৎ। স্বস্ৰীয়ঃ সাজীয়ঃ ভাতীয়ঃ পিতৃঃ কুৰ্কাদিত্বাগ্ৰাঃ পৈত্যঃ।

্র ঠা পা-১। ৯০। ব্যোরিপৌচ।

অপত্যে শত্রো চ ভাতৃক্তঃ স্যাৎ। ভাতৃব্যো ভাতৃজ্বিয়ো।

কা কু-১৷ ৭৷ ১৷ ১৷ ১৷ ৯৪। পিতৃমাতৃপূৰ্কায়াঃ সমুরীয়ণ্ টেয়ণ্যস্তলোপশ্চ।

এতৎপূর্ব্যায়ঃ স্বন্ধরীয়ণ্ স্যাট্রেম্যন্তলোপশ্চ। এত॰ লিঙ্গা (জ্ঞাপকাৎ) ট্রেম্ চ। পৈতৃষক্রীয়ঃ মাতৃষজ্রীয়ঃ পৈতৃষদেয়ঃ মাতৃষদেয়ঃ।

.৯৫। यख तान्यः। मार । यख र्याः।
वा २११ २१ १००१ ।
कुलान्य (न यक र्याः) । ३१ १०१३।
कुलान्य (न यक र्याः) । अत्र मेर्थ्या ।

কুলাদপত্যে যথ এয়কণ্চ স্যাথ। ঈনস্ত কেবলাথ সপুৰ্ববিচ্চ। কুলাও কোলেয়কঃ কুলীনঃ আঢ়াকুলীনঃ। ১০১১ ১৭। মহাকুলাদগীনো চ।

অশ্বাদধীনো স্যাতাম্। ঈনশ্চ। মাহাকুলঃ মাহাকুলীনঃ
ম্হাকুলীনশ্চ।

ব্ -১) ১১

े । २१ -२१ -२१ ৯৮ । जुक्कलार देश ।

অত্র পূর্ব্বশিদ্দ পূর্ব্বশিদ্দ । তেন বর প্রত্য পূর্ব্বাদিশি।

10 1110

व्यत्राद्धियग् महार वा। भटक क्रेन=5। क्लोक्टनयः फ्रू-नोनः।

का, - । के । दिवजानि गृष्टिकन्। (১২)

এভ্যক্ষেণাদ্যপবাদ্স্থিকণ্ন্যাং। বৈবতিকঃ। বেবতী অশ্বপালী মণিপালী দ্বারপালী দ্বগ্রাহ কর্ণগ্রাহ ইত্যাদি। তা পান্তাল ১০০। গোত্রস্থাঃ কুংসিত্তেশ্ চ।

গোতার্থে প্রত্যয়ান্ত স্থিয় কুৎসিতে অপত্যেহণ্
স্যাট্টিকণ্চ। গার্গ্যা অপত্যং গার্গো জাল্মঃ, গার্গিকঃ।
কুৎসিত ইতি কিম্ ! গার্গেয়ঃ। গোত্রাপত্যে নে প্রত্যাশ্রান্তে যুবসংজ্ঞকাঃ।

১০১। कुर्वािन हिंगी गाँः। (५०)

এভ্যোহপত্যার্থে ণ্যঃ স্যাৎ। কৌরব্যঃ গার্গ্যিঃ,। কুরু-রয়ং মুনিবচনস্তেন বহুষপি কৌরব্যাঃ। তক্ষো বা। তাক্ষণ্যঃ তাক্ষঃ। কুরু গর্গর পিতৃ কবি ঐদ্রজালি কপিঞ্জল শকু ইল তক্ষন।

ा ->। १->) १ ५ २ । स्माखकाक्ष्मक्रभाषिण् ।

এভ্য ইণ্ণ্যশ্চ ভবতি। সেনান্তাৎ হারিষেণিঃ হারিষেণ্যঃ বৈশ্বক্সেনিঃ বৈশ্বক্সেন্যঃ। এবম্ উপ্রসেন ভীমসেন মহা-সেন্। কারোঃ; তান্তবায়িঃ তান্ত্রিবায়ঃ লাক্ষণিঃ লাক্ষণ্যঃ।

(১২) এবং বৃক্বঞ্চিন্ বৃক্বন্ধ বৃক্ঞাহ ককুদাক চামরপ্রাহাঃ রেবভ্যাছিঃ।

(১০) কুরু। মঞ্ব অজনার রধ্নার বাবদ্ক সাজাল (ক্ষতিরে)
বিমতি কণিঞ্লাদি বাচ বামরথ পিতৃমং ইন্তেজালী এজি বাতকি দামোফিবি
গণকারি কৈশোরি কুট শলাকা মূর পূর এরকা শুল অলু দর্ভ কেশিনী বেনা
(ছন্দি) শূর্পণার স্থাবনার স্থাবর্থ স্থাবপুত্র সভ্যন্তার বড়ভীকার পবিকার
বঢ় শক্ষু শক্ষ শাক্ষ শাক্ষিন শালীন কর্তৃ হুর্জ ইন পিও। ইতি সরলা।

ু১০০। তিকাদিভেয়া পায়নিঃ। (১৪)

অভ্যোহপত্যে গায়নিঃ স্থাৎ। তৈকায়নিঃ কৈতবায়নিঃ তিক কিত্র কৌরব লোহিত ইন্দ্রম্ গ্রেক শুভ গঙ্গা ব্রেণ্য উদক্ত কৌশল্য কার্মার্য্যঃ ইত্যাদি। ক্র কা ১০৪। অণোদ্ব্যচঃ।

चारहारने छार यूनि नायनिः छार। रहोजायनिः, गाकायनिः

অণঃ কিম্ ? দাক্ষারণঃ। দাচ ইতি কিম্ ও পগবিঃ।

कालिक् हिमिन विद्याः १ ह (मितीरते । जन्म बिलाकः।

আভ্যাং যুনি ণঃ স্থাৎ। গায়নি চ। কাণী কুতঃ কাণী कू তায়নিঃ মৈমতঃ মৈমতায়নিঃ।

১०७। जनानित्वरा वा ।

ণায়নিব্রা স্থাৎ। তাদায়নিঃ, পক্ষেহণ তাদঃ যাদায়নিঃ यामः ।

১•१। • इक्तामाट हिर्मा जुः ।

বুদ্ধিনংজক আদ্যুচ্ যদ্য তত্মাধায়নির্দ্ধা দ্যাৎ । শালঞ্প্রা-य्रनिः। পक्ष इन् भानश्री अः। कारताः नाभि गय्रनिर्नाभि-তিনাপিতাঃ। রদ্ধাদ্যত ইতি কিম্? দৈবদভিঃ। অগোত্রা-দিতি কিমৃ ? ঔপগবিঃ।

১०৮। वार्किनारमः कार्यान्। (১৫)

⁽১৪) তিক। সংজ্ঞা বালা শিখা উর্গু শাঠ্য সৈদ্ধব ব্যুক্ত রূপ্য গ্রাম্য নীল অমিত্র গৌকক্ষা কুত্র দেবরথ তৈতল ঔরম কৌরব্য ভৌরিকি ভৌলিক চৌপয়ত চৈটয়ত শীক্ষত কৈতয়ত পাজবত মুপামন আরক্ষ কেকা ধলাক ব্ৰম লোমক উদক্ত ষত্ত্ব তিকাদিতি সৱলা।

^{(&}gt;e) বাকিনা। বাকিন গাবেঠ কার্ক্য কাক লভেতি পঞ্চ। লন্ধা চর্ম্মিবর্দ্মি াপৰিতি সরলা

এছ্যঃ কায়নিশ্বা ভাৎ। বাকিনকায়নিক্রায়িন নির্বাকিনিক্রা।

१८ १८ विकास क्राप्तिक । ४०० ।

गार्गी पूजनाविश्व गार्गी पूजायिकः गार्गी पूजिन्दा ।

अ। अ।

अ।

अ।

अहमारिकायिकः खाठाम् ।

স্থাৎ। প্লুচুকায়নিঃ। অন্যেষাং প্লোচুকিঃ। পা সা াঠঠা ভাগো রাজক্ষল্লাভ্যাং যদিয়েটি

ি আভাং জিতে বং-ইয়ো স্যাতাম্। রাজ্ঞ ক্রিয়ঃ
জাতো কিম্ ! রাজনঃ ক্ষাত্রঃ।
(০) ১)
১১২। মনোঃ স্য-স্থো।

মনোর্জাতে স্থান্দর্শে স্থাতাম্। মনুষ্ট মানুষ্ট, পুত্রে জাতোচ মান্যঃ।

२२२। विमारमतग्राह्य। (२५)

বিদাদে: পৌ গ্রাদ্যপত্যেহণ্ স্থাৎ। বৈদঃ ঔবাঃ। গোত্র ইতি কিম্। বিদ্যানন্তরাপতাং বৈদিঃ। এবোহ গ্রাধিংশিঃ। বিদ্য উর্বাকশ্রপ কুশিক ভ্রদ্রাজ বিশ্বানর হ্রাধ্য শুনক গোপবনাদি হরিতাদি। শতো গোত্রাপ্রের বিধিঃ।

(১৬) বিদা। কিন্দ্ৰ বেনু উপমন্য স্কাটবেন স্বতভাগ প্রিয়ক আপস্তম্ম কুচবার শরসং কিলাত ইত্যাদি। গোপবন অস্বাস্তান ক্রীম শিলু বিশানর স্বাপর্ণ বিদ্ধাপন ভামক গোপবনাদিঃ। হবিত কিন্দাস মঠর বন্ধক শলক নিবাদ রথীতর বধ্যোগ বিষ্ণু সুন্ধগ বিষ্ঠির রথস্তর স্পাকু মৃড়াকু অর্কলুষ শবর অলস মৃত্ পুন্ত পুন্ত হৃষ্টিই পরস্থী পরশু প্রতিব্যেষ্ঠ ননান্দ্ বিভিন্ন।

ठणा ->। हट- हहर ১১৪। গর্গাদিভোষণ।(১৭)

গর্গাদের্গোত্রে যণ্ স্থাৎ। গার্গাঃ বাৎস্তঃ। গোত্র ইত্যেব গার্গিঃ। গর্গ বৎস সংকৃতি পুলস্তি বিদস্থ ব্যান্ত্রপাৎ শব্দ ধূম অবট বরট রক্ষ অনভূহ লোহিত সংশিত বক্র মণ্ড মনু ধ্রুব বতণ্ড কপিকত শকল অগস্ত্য কুণ্ডিলী যক্তবল্ক শণ্ডিল মুদ্গল পরাশর জাতৃকর্ণ কৃষ্ণ উলুক জনদন্নি ইত্যাদি। কথং রামোজামদম্যঃ পারাশর্ব্যা ব্যাসঃ পুত্রোহপি পৌত্রাদিকার্য্যকারস্থাৎ তথা ব্য পদিশ্যতে। অভ্যথা জামদন্ন এব । বল্লোঃ কৌশকে। বাল্লব্যঃ বাল্লবোহত্যঃ। মধোত্র ক্লিপ্রে। মাধব্যো ত্রাহ্মণ গোত্রঃ মাধবো-হস্তঃ। কপিবোধাদালিরসে। আঙ্গিরসগোত্রে কাপ্যোবোধ্যঃ অভ্যক্ত কাপেরোবোধিঃ।

তা । ২০ ১০ ১০ পার ১১৫। কুঞ্জাদেন্টারণ্যণ, পরযোলুক্ চ বহুষু। (১৮)

কৌঞ্জার্ণ্যঃ আধারণ্যঃ। গোত্র-ইত্যেব কৌঞ্জিঃ। প্রযশ্চ লুগ্রুষ্, কৌঞ্জারনাঃ, স্তিয়াং কৌঞ্জারনী। কুঞ্জ, অধ্ন, শৃষ্থ, শুণ্ডা, বিপাশ, স্কন্দ, সম্ভ, স্তম্ভাদি,।

(১৭) গর্মা। এবং বাজাসে সংকৃতিবেত অগ্নিবেশ শত প্রাচীন যোগ
নমস্ বিশ্ববিস্থ জরমাণ ধনয়য় লোহিত সংশিত বক্ত বল্প্ত মতু তুলিতথ্য হতু শক্ষু শমু মত্ব ত জিলীয় মনায়ী কথক ঝল ক্রাব তরুক্ষ তলুক্ষ রক্ষ
বত্ত কুরু কত কলি কত শক লোহিতাদিরয়ং গণঃ। কথা গোকক্ষ সকল
অগস্থি পর্বিক্ষ অভয়জাত বিরোহিত র্ষগণ শগুল মুকুল পরাশর মণ্ডিত
অখারথ ইতিক শর্করাক্ষ পৃতিমাষ অবরকা বলাক। সূরা লিক্ষল কৃষ্ণ গোলন্দ
তলুক ভণ্ডিত তিতিক্ষ ভিষজ, দল্ভ চিকিৎসিত দেবছ ইক্সন্ত পিয়ল্
একল্ রহদ্যি ক্টীত উক্থন ক্ষা সুলোহিন্ অচরক কৃতে বীর আকৃতিগণোহয়ম্য়

⁽১৮) ভশ্মন্ গণ লোমন্ শঠ শাক ভভ কুঞাদি:।

२२७। नज़ांषिड्य कांब्रन्। (२३)

এভ্যো গোতে টায়নণ্ স্থাৎ। নাড়ায়নঃ চারায়ণঃ। গোতে ইতোৰ নাড়িঃ। নড়,চর,ইভিক, উপক, লমক, শলকঞ, দ্বীপ, কশ্রপ, অমুধ্য, আহ্মণ, অগ্র,শকট,মিমত,অলম্ব,মুগন্ধর,দ্ভিন্, হস্তিন, মশান, বদর, অধ্বর,উভূমর, ইত্যাদ্যপি চ অশ্ব,পিঞ্জর, পিঞ্জল, প্রবিষ্ঠা, শ্যাম, ধোম, বিশম্প, রাম, অর্জ্রন, আতপ, শিব, কিতব। অবৈত্রান্তারদ্বাক্তে। ভর্গত্রিগর্তে। শরক্তো-ভার্গবে । অনিকাৎবাৎস্থে । দক্রাদাগ্রায়ণে । জোণপর্বত-काराखांचा । त्योगायत्मा त्यां विस्तिति

১>१। ইণ্য়ণ্হারিতাদিভারী (২০)।

देवखारनरवाद्धार यूनि होत्रनंत् खार । हेन् ; माकाग्रवह. : युन जार्जात्वरः, द्वातिकात्मः ; दातिकात्मः ; विमानुखर्णनः । উক্তং গোতে।

>} ১১৮। পৌতাদ্যপত্যং গোত্র।

পৌত্রপ্রভাপত্যং গেতিমুচ্যতে। গর্গদ্য পৌত্রাদ্যপত্যং গার্গ্যঃ অনন্তরাপত্যং গার্গিং। ১১৯। জীবতি বংশ্যে বুবাহগ্রজেহপি।

- (১৯) এবং ইতিম এক সপ্তল বাজ্বপ্য তিক অঘিনমিনি রুষ (গবে) প্রাণ নমু সায়ক দাস মিত্র পিফর পিজল কিন্তর কিন্তল কাতর কাতল কাঞ্চপ কাব্য অব্দ কৃষ্ণরবেণ (ব্রাহ্মণ বশিষ্টে) অমিত লিও চিত্র কুমার ক্রোষ্ট জোইক লোহ তুর্বস্ত শিংশপা অগ্র তৃণ অমনদ্বামত দিমত কচ্ জলকর হংসক পিও পঞ্চাল চম্দিন্ হকুত্য ছিঃক চটক অখন ধ্পর লক देख चया काम्क उक्षम्ब छेरुवर भाग चलार मध्य नड़ामितिंड मतना।
- (২০) হরিত নিশাস বছস্ক অর্কলূষ বধ্যোগ বিষ্ণু বৃদ্ধ প্রতিৰোধ র্থীতর ব্ৰবস্তৱ পৰিষ্ঠির নিষাদ শবর অলস মঠর মৃড়াকু স্পাকু মৃত্ পুন্তু পুন্ ত্হিত ননাৰ পরস্তী পরত চ হরিতারি:।

পিতৃপিতামহাদো বংশ্যে জীবতি সতি পৌত্রপ্রভ্রেরপত্যং বুবোচ্যতে। গর্গে জীবতি গার্গ্যে গার্গ্যে বা, তদা গার্গ্যন্তা-পত্যং যুবা গার্গ্যায়ণঃ। মৃতে সতি একো গার্গ্য এব। অপ্রজে জ্যেতিহিপি ভাতরি জীবতি কনীয়ান্ যুবা গার্গ্যায়ণঃ।

১২• । পিতৃব্যাদে वा वरम्रहिष्टक ।

বয়োছবিকে পিতৃব্যে পিতামহজাতরি বা জীবতি ডদা-গোত্রাপত্যং যুবা বা স্থাৎ। গাগ্যায়ণো গাগ্যে বা।

১২১। র্দ্ধন্চ পূজারাম্।

গোত্তমেব ব্ৰহ্মাহ্ঃ স চ পূজায়াং যুবোচ্যতে বা। স ভবান্ গাৰ্গ্যায়ণঃ গাৰ্গো বা।

२) २) १। ১२२। यूरा ह निन्नाग्राम्।

নিন্দায়াং যুবা চ যুবসংজ্ঞোবা স্থাৎ। পিতরি জীবতি যঃ স্বতস্ত্রঃ, স গার্গ্যায়ণো জাল্মঃ গার্গ্যে বা।

তা। তা
১২৩। কুরুপঞ্চাল যুগন্ধরাদিভ্যঃ ক্ষত্রিয়েভ্যো গ্যাণিণোবা - হা
রাজনি চ।

কুর্বাদি পঞ্চালাদি যুগন্ধরাদিভাঃ ক্ষত্রিছেতা। জনপদরূপেভাছপত্যে রাজনি চ যথাক্রমং গ্য অণ্ ইণ্ প্রত্যয়াভবস্তি। কুর্বাদেশ্যঃ কৌরবাঃ পুত্রোরাজা চ. কৌস্তাঃ আবস্তাঃ
কুরু কৃত্তি অবস্তি নিষধ কোশল অজাদির্দ্ধাদ্যচঃ অম্বর্চ
সৌৰীরাদি। পঞ্চালাদেরণ্ পাঞ্চালঃ পুত্রো রাজা চ। ঐক্ষাকঃ
পঞ্চাল ইক্ষাক্ বিদেহ অঙ্গ বঙ্গ কলিঙ্গ মগধ হুহ্ব সূর সম
প্রদেন মজাদি॥ শাল্লেয় গান্ধারিভ্যাঞ্ছ। শাল্লেয়ঃ গান্ধারঃ।
যুগন্ধরাদেরিণ্ ভ যৌগন্ধরিঃ পুত্রোরাজা চ, ঔভুন্ধরিঃ। যুগন্ধর
উজুন্ধর প্রত্যেগ্র কলকুট অশাকাদি।

१ २२ । कत्यां कारमम् क्।

এভ্যোহপত্যে রাজনি চ বিহিতক লুক্ কাঙ্ব। কজেজঃ পুজোরাজা চ চোলঃ শকঃ কেরলঃ।

ণা ১২৫। ব্রিয়ামবন্তি কুন্তি কুরু শূরদেনাদিভ্যঃ।

এভাঃ স্তিয়ামপত্যে বিহিত্ত দুক্ তাং। অবস্তী কুন্তী কুন্তা । কুন্তী কুন্তা । কেক্য়ী কেক্য়ী এতাঃ কিয় ? পাঞ্চালী বৈদেধী মাগ্ৰী আঙ্গী বাঙ্গী ভাগী।

্১২৬। যক্ষাদিজনপদ রাজন্মেন্ড্রৌবহুদীব্রিয়াম্। (২১)

অভ্যোহপত্যাদি বিহিতক্ত বছরু লুক্ ক্তাং । যাক্ষঃ যাক্ষো যক্ষাঃ । অয়স্থাঃ । গুর্গাদেঃ গুরু বংসাঃ ।

১২৭। অগন্তি চাগন্ত্যস্থা।

অগন্তর: । কৌভিত্যতা কৃতিন্দ্রীকৃতিনাঃ ।

১২৮। विकारमंत्रवाशवनारमः (२२)

বিদাঃ উর্বাষ্ট। গোপবনাদেন্ত গোপবনাঃ শৈগ্রাবাষ্ট।
অব্রি ভ্রু কুৎস বলিষ্ঠ গোতমাসিরোভাঃ ॥ অব্রয়ঃ ভূপবঃ ॥
ইণো বহাকঃ প্রাচাভরতেষু ॥ পশ্বাগারাঃ পুকরসদঃ। ভরত
গোবে যুধিন্ঠিরাঃ অর্জুনাঃ।

১২৯। তিককিতবাদিভ্যোদ্ধে। (২৩)

- . (২১) বন্ধ নহ ক্রম্ম আরাসূণ তৃণকর্ণ সভামত কম্বনহার বহির্বোর কর্ণান্ত পর্বাচ্চক পিণ্ডীজন্ম বকসক্থ বিলি কুলি অল্পবন্ধি মিত্রমূরক্ষাম্থ জনারথ উৎকাস কর্ক মহক প্রমুদ্ বিবপুট উপরিমেধল ক্রোষ্ট্র্যান ক্রোষ্ট্রায় বিরপ প্রক ক্র্ক তলন্দন ভড়িল ভণ্ডিল ভণ্ডিভ ভণ্ডিভ অভিজ এতে যুক্ষাম্যাঃ।
 - (২২) সোণবন শিল্প বিশ্ব ভাজন অবাবতান ভাষাক ভাষক ভাগৰ।
 - (२०) ভিক্তিবা: रचत्रवशैद्रवा: छेन्नव्यकाः नक्कादकाः रक्काव्यक

তৈকায়ন চ কৈ তেবায়ন চ তিককি তবাঃ ক ক্ষা - সা বা - সা ১০০। উপকাদিভোগ বা, দ্বন্দে চ। (২৪)

উপকাঃ ঔপকারনা ইনিকা রামকারনা:। উপকর্মকাঃ
ঔপকারন্রামকারনা:। জনপদনামক্ষতিয়েভাঃ ধলি।
কুরবঃ পঞ্চলাঃ, যুগন্ধরাঃ। কথং সং রক্ষ্যনাং কোরবাঃ?
তভ্যেদমিত্যুণভাৎ। কথং প্রিয়বাঙ্গা বিপ্রাঃ, নেদং বাঙ্গশ্র
বহুত্বং, প্রিয়োবাঙ্গো যেদামিত্যেকবচনত্বাৎ। অন্তর্কুত বহুত্বে
মা ভূৎ, ইছ ভবতি, আঙ্গশ্চ বাঙ্গশ্চ কালিঙ্গশ্চ, অঙ্গবঙ্গ
কলিঙ্গাঃ। অন্তিয়ামিতি কিম্? যাস্কাঃ দ্রিয়ঃ গার্গাঃ বৈদ্যঃ
পাঞ্চালাঃ। অপত্য মিন্যেব যাক্ষ্যাশ্চাত্রাঃ।

) ১৩১। न প্রাক্ষীর্যভীয়েহচি।

প্রাণনীব্যতীয়েহজাদে কর্ত্তব্যে বছ্যু লুক্ নান্তি। গার্গাণাং ছাত্রাঃ গার্গীয়াঃ, আত্রেমীয়াঃ। অচিতি কিম্ ? গর্গে ভা আগতং গর্গরপাম।

' ১৩२ । यूनि नूक्।

चकामि थाभीवाजीय कर्ज्य यूनि विश्विष्य नूक.

পরিণদ্ধাঃ উজ্তককৃতাঃ লক্ষশান্তমূপার উত্তরশলক্ষণীঃ কৃষণাজিনকৃষ্ণসূলরাঃ ভ্রষ্টককপিষ্ঠলাঃ অগ্নিকেশনশৈক্ষকাঃ তিক্কিডবাদয়ঃ।

(২৪) উপল্ক লমক দ্রন্তক কপিষ্টল ক্ষাজিন ক্ষাস্থলর চূড়ারক আড়ারক পড়ার উদক স্থায়ক অব্দাক পিঞ্চলক পিষ্ট স্পান্ত ময়্রকর্ণ ধরীজ্ঞা শলাপ্থল পড়াল কঠেরণি ক্ষীতক কাশক্ৎর নিদায় কলনীকর্গ দামকর্গ কৃষ্ণপিল্ল কর্ণক পর্ণক অটিলক ব্যারক জেন্তক অন্লোম অমুপদ্পতিলোম অপজন্ধ প্রভান অনভিহিত কমক বটারক লেখান্র কমন্দক পিঞ্চলক বর্ণক মন্ত্রক্র্প মদাধ্য ক্রন্তক ক্ষাম্ভ কামকর্গ এতে উলক্ষাদ্যাল

স্যাৎ। ফান্টাব্রুতেরপত্যং যুবা ফান্টাব্রুতক্তর্গ ছাত্রা: গদ্য লুক্ তত ইণস্তাৎ। ইণ্ ক্রিটিনেরণ্গোত্রাৎ ফান্টাব্রুতা-শ্চাত্রাঃ।

্রা ু । ১০০। টায়ণ্ণায়ফোর্কিভানা।

তা। ৭। ১৩৪। পৈলাদিভো যুনি। (২৫)

পুন্যুনীতি গ্রহণং প্রাফাবতীয়েহ চীতিনির্ভার্থন্।

এভ্যো যুবপ্রত্য়স্থ লুক্ স্থাং। পীলায়া বাহণ্ ততো যুনি

গায়নেলুক্ পৈলঃ পিতা। পৈলঃ পুত্রঃ। বৈদাদেকিদঃ পিতা

বৈদঃ পুত্রঃ। পান্নাগার্ঘাদেন্টায়ণস্থ লুক্। পান্নাগারিঃ

পিতা পুত্রুছ। এবং সাত্যকি ভৌরিকি ভাদমের প্রভ্তেওওও

দাক্ষাদেন লুক্। দাক্ষিঃ পিতা পুত্রুছে, দাক্ষায়ণঃ, আর্জুনিঃ

আর্জুনায়নঃ। তৌল্পলিঃ তৌল্লায়নঃ, আম্বরিঃ আম্বর্ণার বিল্লাল্ক। তোলায়নঃ পিতা পুত্রুছ।

গ্যাহিক্তিয়েভোগ ইণোলুক্। গাহে কৌরবাঃ পিতা পুত্রুছ।

পুত্রুছ। ভিকাদিপাচাহ কৌরবায়িণিঃ। আর্বাহে বাশিষ্ঠঃ

⁽২৫) পৈল শালহি সাত্যকি সাত্যকামি রাহবি ঔপঞ্চী ঔপত্রজি ঔপ-মেবি ঔপমজ্জি বৈবছানি পৈললোগায়নি রাহক্ষতি ভৌলিকি রাণি ঔপঞ্জি: ঔক্ষাহমানি ঔজিহানি ঔপত্রজি ঔরভ্জি আফুডিগণেহরম্।

পিতা পুত্রশ্চ। ক্ষজিয়াৎ খাফন্ ক: পিতা পুত্রশ্চ।
পূর্ণাহপ্ত্যাধিকার:। *

১৩৫। তেন রক্তং রাগাৎ।

তেন রক্তমিত্যর্থে রাগবাচিনঃ শব্দাদণ আং। ক্ষায়েণ রক্তং কাষায়ং বস্ত্রং কৌকুমং হারিদ্রং মাহারজন্ম। ক্থং হারিদ্রো কুকুটঅ পাদো উপমানাং। লাক্ষারোচনাটিকণ্ড। লাক্ষয়া রক্তং লাক্ষিকং বস্ত্রং রোচনিকী শাটা।

१० । भक्तकर्मभाषा ।

শাকলিকং বস্ত্রং শালকং বা। কার্দামিকঃ পটঃ কার্দ্ধমো বা।
১৩৭। পীতাৎ কঃ। কঃ স্থাৎ। পীতকং বস্ত্রম্।

১০৮। नीला **पर**।

নীলঃ পটঃ। তেনেতি বর্ত্ততে প্রাক্ষোমারাৎ।

२०२ । मृक्टे^र माम

অত্রার্থে যথাবিছিতমণাদয়ঃ স্থ্যঃ। বশিষ্ঠেন দৃষ্টং সাম-বাশিষ্ঠং, বৈশ্বামিত্রং আগ্নেয়ং কালেয়ম্।

১8• । **जैनने हिला** ली की

किननमा पृक्षेम् अननः माम अननमः वा।

285। (भाजानकर्।

छेनगरवन मृत्केश नाम छेनगवकम्।

১৪२। वामरणवाष्यः । वामरणवाः माम ।

১৪৩। পরিব্বতো র**থঃ**।

অত্তার্থেহণ আৎ। বস্ত্রেণ পরিরতে ইর্ণাঃ বাস্ত্রঃ চার্ম্মণঃ কামলঃ। দৈপেন চর্মণা পরিরতঃ অণি টিলোপো নিপাত্যতে। বৈপোরথঃ বৈয়াজঃ। ১৪৪। পাতুকমলাদিন। পাতুকম্বলী রথ:।

>८ । युक्तः कारमा नक्कार।

८७न यूक हेडार्थ नक्क जानग् छार। भूरमान यूकर পৌষমহঃ মাখী রাতিঃ।

, ১८७। नूर्विदर्भाषे।

(অণোলুপ্ স্থাৎ)। অদ্যপুষ্যঃ, অদ্যমঘা। অবিশেষ ইতি किय ? व्यावनी ताविः।

১৪৭। নান্ধি অবণাহশ্বথাভ্যাম।

अर्थान् श्राद्धाः । ख्रात्यः । १०००। १९८७। इन्हानीः । १९८७।

রাধাসুরাধীয়া রাজি:। লুপ্চ .বাধ্যতে, অন্যপুষ্যপুন-

১৪৯। তদ্যুক্তাহম্মিন্ পৌর্ণমানীতি সংজ্ঞায়াম।

অত্তার্থে নক্ষতাদণ্ স্থাৎ। পুষাযুক্তা পোর্ণমানী অত্তেতি (भौरवामामः मार्गभीर्यः। भितमः नीर्रवार्शि।

ত। ত্র্বাহ্রার্থভাগে টিকণ্।

পূৰ্বাৰ্থে আভ্যাং টিকণ্ স্থাৎ। অন্ধ্যেন মুক্তা পোৰ্ণমাসী অম্মিনিতি আখথিকঃ পক্ষোমাদো বা আগ্রহায়ণিকঃ।

১৫১। চিত্ৰা প্ৰবৰ্ণা ফল্পনী কুভিকাভ্যো ৰা

हिक्श्री का छार। टेहिकिकाम् अस्टिका वा खोवनिकश्र खारनः काञ्चनिकः काञ्चनः कार्तिकिकः कार्तिकः।

३०२। कोमातः ध्यमभद्रिगरत्।

প্রথমবিবাহে সতি অণম্ভঃ কৌমারোনিপাতাতে। दंकी मातः পिंडः अथरमान् किमाती।

৭ ির্সা^{শত} হোম ১৫০। তত্তোদ্বৃতং পাত্তেভ্য:।

তত্তো দ্ত্ৰিত্যথে পাত্ৰেভ্যোহণ সাৎ। শরাবেষুদ্তং শারাবং দধি।

১৫৪। শেতে স্থিলাৎ বিতে । অণ্ স্থাৎ। বিতক্ষেৎ। স্থিলে শেতে স্থাপিলঃ। ১০১৮ সংস্কৃতং ভক্যাঃ।

তত্ত্ব সংস্কৃত্যিত্যর্থেহণ্ আৎ। ভক্যাশ্চেৎ। ভ্রাপ্তে সংস্কৃত্যঃ ভ্রাপ্তা অপুপাঃ পৈঠরঃ। (প্রৈঠরঃ স্থানী পক্ষাংস্বিশেসঃ)।

১৫७। मृत्नाथाखाः यश्च मृत्न मः ऋडः मृनाः छेथाम्।

२०१। कीतारहेशन्। कार्या १००० । किरत्रशी यवाशृः।

১৫৮। मध्रिके ग्रे। मिद्रि मश्कु कः नाधिक स्।

১৫৯। উদস্বিতো বা

উদখিতি সংস্কৃতম্ ঔদখিৎকম্ ঔদখিতন্বা।

১৬•। তেন-সংস্কৃতে টিকণ্।

তেন সংস্কৃতেহথে টিকণ্ আৎ। দগ্গা সংস্কৃতং দাধিকং

গৌড়িকই মাধবিকং মারীচিকম্।

১৬১। क्लथ (कामधाने ।

কোলখং তৈন্তিভিকম্ ৷ ২০ জঃ •১৷

১৬২। मृश्चिक (प्रवर्ण)।

অত্রার্থে যথাবিহিত্মণাদয়ঃ স্থাঃ। ইন্দ্রো দেবতা অস্থ ঐদ্রং হবিঃ,বার্হস্পত্যো মন্ত্রঃ আগ্নেয়শ্চরুঃ।

১৬৩। कानाबुद्धा (का त्नवडा व्यक्त कायः इति । ১৬৪। व्यक्ति नियः।

छेट्यम रमन्ज। अर्थ एकिस्मार्थायः।

১৬৫। অপোনপ্ত পাংনপ্তিভ্যামীয়ক।

व्यापान खेरे । व्यापान खेरे व्यापान खेरे । व्यापान खेरे ।

०००। व्यक्तिमन् ५। १ ए

ष्ण । देव त्रेरा ह। मरहरक्ता (प्रवेश वया मरहरक्तः) मरहरकीयः मरहिक्त व्रक्ष हितः।

১৬१। त्नामाहे हो । त्नामार त्नामी अक्।

১৬৮। महाताज (आर्छभग हिक्न्।

মাহারাজিকং প্রোষ্ঠপদিকঃ।

ত।।) ->) ১৬৯। ঋতু বায়্মঃ পিতৃভ্যো য়ং।

ৠতুর্দেবতা অস্তা ঋতব্যুং বায়ব্যুম্ উষ্স্যং পিত্র্যম্।

३१० । म्यावाशृथिवारमतीयः है। •

যচ্চ। দ্যাৰাপৃথিবাে দেবতে অন্ত দ্যাবাপৃথিবীরং দ্যাবা পৃথিব্যম্। দ্যাবাপৃথিবী স্নাদীর মক্তত্বং অগ্লীয়ােম বাস্তো-স্পতি গৃহমেব।

১৭১। গোহত্ত বৰ্ত্ততে পূৰ্ণমাৰাং।

অত্তার্থে পূর্ণমাদাদণ স্থাৎ। পূর্ণমাদোহত বর্ত্তে পৌর্ণ-মাসী তিথিঃ।

्रा । ज्यायातिहरू

অন্যায়েইত্র বর্ত্ততে আস্থায়িকঃ ঔংপাতিকঃ নার্যজ্ঞিকঃ।
১৭০। পিত্র্য মাতৃল মাতামহ পিতামহাঃ। (২৭)

(২৭) পিড়ব্য। পিড়ত্র তি বিভাগ বাং । মাতৃত্রতি। মাড় + জুবচু। মাড়ং—পিডা মাড় + ডামহং। পিডামহ। পিড়ং—পিডা পিড় + ডামহং। চত্বারো নিপাতান্তে। পিতৃত্রতি পিতৃব্যঃ, মাতৃত্রতি। মাতৃলঃ, মাতৃঃ পিতা মাতামহঃ, পিতৃঃ পিতা পিতামহঃ।

১१८। व्यत्रः (मांकृष्(म)यमतीमा द्रायाः।

অবিশব্দাদেতে স্থাঃ। ভূগ্ধঞেং। অবিদোড়ম্ অবিদূ(স)ষম্

্ত) সা পা ১৭৫। তিলাৎ পিঞ্জপেক্ষো নিফ্লো।

তিলাদেতো স্থাতাম্। নিফল্ঞে<u>ংু।</u> তিলপিঞ্জঃ তিল-পেজঃ।

্র। স ১৭৬। তভা সমূহো নপুংসকে।

অতার্থে ক্লীবেহণ্ স্থাৎ। ময়ুরাণাং সমূহো মায়ূরং, কাপোতং কাকং শৌকম্ ঔলুকং বাড়বং ভৈক্ষ্কং ভৈক্ষং গাব্ভিণং বার্ম্মণং যৌবঙং পুসন্তাবাৎ যৌবনমিত্যেকে, বারত্তং যৌগবারত্রম্ ॥ পর্শোরোক্ষিত ॥ পার্মম্ ।

२११। अधानीय महा अधीयम् वायकः।

১৭৮। গোতোকোন্টোরভারাজরাজন্যরাজপুত্রবংসমসু: ব্যান্থ ব্যাজরদ্ধেভ্যোহকণ্।

• গোত্রাৎ; দাক্ষাণাং সমূহো দাক্ষকং গার্গকম্। উক্ষাদেঃ
ভীক্ষকম্ ভীষ্টকম্ ভীরভ্রকং রাজকম্ রাজভ্রকম্ রাজভ্রকম্ রাজপুত্রকং
বাৎসকং মানুষ্যকম্ আজকং বার্দ্ধকম্।

১१२ । (कनातानिकण्या) ह।

Cक्षातानाः मम्रह देकनातिकः देकनार्यः देकनात्रक्य।

ः । बाकाश मानव शृष्ठेवा ज्वान्यः।

জাক্ষণানাং সমূহে। জাক্ষণাং মানব্যং পৃষ্ঠ্যং বাড়ব্যয়।
ত্যা ুগ
১৮১। চরণেভ্যোধ্যবিৎ।

जीविक्वकारम्यः।

ধর্মার্থে যথা বিহিতং আচ্যায়াঃ স্থাঃ। কঠানাং সমূহঃ কঠিকং ছান্দোগ্যম্ আথৰ্বগ্ৰম্ ৷

১৮২। অচিতহস্তিকবচিধেনো ষ্টিকণ্। (১৮)

हिकन मार। हिस्कत्रग्रह्मार्थम्। अहिलाद-अपृतानाः সমূহো আপুপিকং শাঙ্কুলিকম্। হস্তাদেঃ হাস্তিকং কাৰ-हिकम् देशकूकम्।

১৮০। ट्रिक्मान्यग् ह। ट्रिक्शः ट्रेकिनिक्य्।

১৮৪। গণিকারা দিট্। ये गार। গাণিকাম্। ११०१ भारती प्रशिक्षा करिया प्रशिक्षा

১৮৬। জনগজবন্ধু সহায় আনেভ্যঃ স্ত্রিয়াং তার্থ।

এভাঃ সমূহে স্ত্রিয়াং তাপ্ স্তাং । জনানাং সমূহো জনতা পদতা বন্ধুত। সহায়তা আমতা।

১৮१। প्रामानिट्डार याश्रा (२৯)

স্ত্রিয়াং বাপ আৰে। পাশা ধুন্যা তৃণ্যা বভা হল্যা নড্যা বাত্যা।

১৮৮। গোর্থাৎত্রাপ্কভাপে চ।

वाभ ह। क्यां ९- गवा (शाका तथा तथक छा। २५२। शनामिन् ह। याभ ह। थनिनी थना।।

তা ->। ১৯০। নলাদেশ্চ। (৩০)

देम् खार । नलानाः भिग्रंहा नलिनी अणिनी छरशलिनी

⁽২৮)। অচিত্ত। নাঞ্ছি চ্নিত্তং চেতনা বেষাং তে অচিতা অপ্রাণিনঃ।

⁽२३) এবং अञ्चात नांहेन পোত नन निहेक निहोक मकरे नहे नामाणिः।

 ⁽७०) नालालकः विषः भन्नः स्थानः कमनः छवा। मात्राकः পृक्षः নালি কুমুদং পুটকোৎপলমিতি নলাদিঃ।

छेलिक ने। "बाहिमकार, छाकि ने। कूर्विक ने छिले गुर्वे। के छिले गुर्वे।

२० । विषद्यो (मर्ट्ग ।

তত্যেত্যের, তস্তা বিষয় ইত্যথেষ্ণ ুিস্তাং। দেশ্দেই । শিবীনাং বিষয়ো দেশঃ শৈবঃ আঙ্গঃ। "দেশে কিম্? দেব-শতুস্তা বিষয়োহ কুবাকঃ"।

ा -२१ १) तोकचारमंत्रकर्। (७১)

রাজন্মানাং বিষয়ো দেশঃ রাজন্মকঃ মানবকঃ। ১০১০ -১০ সেল পা ১৯৩। সোহস্যাদিরিতি ছন্দোভ্যঃ প্রসাথে।

অতার্থে ছন্দোভ্যোহণ্ স্যাৎ। প্রগাণদেহে। প্রু ক্তিন রাদিরস্য প্রগাথস্য পাঙ্ক্তঃ, ত্রেকুডঃ, জ্যাতঃ। স্বার্থে চ ক্লাবে । অনকুবেব আনক্তুভং ত্রেকুভং জাগতম্। ধান্ত্রী

১৯৪। यूरके अरशांकनरयाक् छाः।

এভ্যোহরাদয়ঃ স্থার্দ্ধঞেং। স্থভদা প্রয়োজনমদ্য সোভদো রণঃ দ্রোপদঃ স্থৈণঃ, ভরতা বোদ্ধারোহদ্য ভারতঃ সংগ্রামঃ, পাদাতঃ পাঞ্চালঃ পোংস্মঃ।

১৯৫। তদত্ত ক্রীড়ায়াং প্রহরণমিতি স্ত্রিয়াং ণঃ।

* चर्जार्थ श्रेरंतनार जियार नेह महार । मण्ड श्रेरंत्रममहार माण कीड़ा, भोकी शाह्या ।

ঘণন্তাদেত্রার্থে গঃ স্যাং। শ্রেমপাতঃ ক্রিয়া অস্যাং খ্যেন-ম্পাতা মুগরা, তৈলম্পাতা স্থা মেষিলপাতা ভুঃ।

⁽৩১) এবং আনৃত বাদ্রব্য শালধারন দেবায়তন অপ্রীড় বর্ত্তা জালকরারন রাজারন তেল্ল, আত্মকানের অস্বরীবপূত্র বসাতি বৈলকন নৈশ্য উচ্ছর তীত্র বৈশ্বক আর্জ্ক্নায়ন সংগ্রিয় যাজি উর্থনাত রাজ্ঞাদিনাক্তিশণঃ

२० । उपधीरक दब्द वा ।

অনয়োরর্ধয়েরণ্ স্যাৎ। ব্যাকরণুমধীতে বেদবা বৈয়াক-রণঃ জ্যোতিষঃ ছান্দসঃ, তদ্বেভি-নৈমিতঃ।

১৯৮। উक्थाणिना ष्टिकरी। (७२)

উক্থমধীতে বেদ বা ঔক্থিকঃ যাজ্ঞিকঃ নৈয়ায়িকঃ লো-কায়তিকঃ ঐতিহাদিকঃ পৌরাণিকঃ জ্যোতিষিকঃ বার্তিকঃ।

১৯৯। ক্রতোঃ ॥ আগ্রিটোমিকঃ॥ কল্লকণসূত্রাস্তাদকল্লাদেঃ॥ প্রাথমকল্লিকঃ গোণলাক্ষণিকঃ বার্তিসূত্রিকঃ।
অকলাদেরিতি কিম্? কাল্লসূত্রঃ।

२० । विन्याशीः कळाक्र बिभम्मानेक भूविशिः।

টিকণ্ স্যাৎ। বায়সবিশ্যিকঃ চাতৃর্বিদ্যিক:। কথং চাতৃ-বিব্দ্যঃ ? তত্ত কুশলার্থেংণি। ক্ষজ্রাদেরঅপূর্ব্য়ো ইতি কিম্ ? ক্ষাত্তবিদ্যঃ আঙ্গবিদ্যঃ তৈত্বিদ্যঃ ধার্মবিদ্যঃ।

২০১। আখ্যানাখ্যায়িকাভ্যাঞ্চ। (৩৩)

যাৰক্ৰীতিকঃ ৰাসবদন্তিকঃ। ০০ ১) ২০২। ক্ৰমাদেৱকঃ।

ু ক্রমনধীতে বেদ বা ক্রমকঃ পদকঃ শিক্ষকঃ মীমাংসকঃ উপনিষ্প্রকঃ।

- (৩২) উক্থ লোকারত স্থাস স্থার জ্যোতির সংহিতা। পুনক্ত বস্ত চর্চা ক্রমেতরপদক্রমা:। শ্লক্ষং সংগ্রহ সংঘট আর্র্বেলো গণো তথা। ইতিহাস: পুরাণক র্জিতকৌ সম্প্রকো। ধর্মকামুপদকামুকলো লক্ষণকদে। নিক্তক নিমিত্তক বসত প্রকাবণি। বর্ঘা হেম্ছ শিশিরা: প্রথমং চরুমং তথা। আর্থ্বেশেহপ্যসূত্তন: পরিষট্ বিপদ্ধ তথা উক্লাদিঃ।
- (৩০) আব্যানং গ্রহান্তভূতিম্পক্ষেপানভক্ত বর্ণনত্ব। আব্যারিকা ভূ প্রবহুভেদঃ, ভত্তহাচকুটিকণ্ কাদিভার্থঃ।

०० । शरमा उत्तर्भमा पिकः ॥ : शरमा उत्तर्भमिकः ।
১০৪। শতম বেউ পথ স্থিকः ॥, শতপথিকঃ बष्टि পথিকঃ।
১০৫। অনু বাহ্মাণা দিন্। অনু বাহ্মাণী।
২০৬। সর্বাহ্মাণা দের গোলুখ কুবাঃ।

मर्न्तरवनगरी उ ति व मर्न्तरवनः मरवनः मर्नवार्छिकः विलालू र्गव भक्षकङ्गः। र् १६

२०१। (श्रांकासूक्।

প্রোক্তপ্রত্যান্তান্তদধীতে বেদ বা ইত্যর্থে বিহিত্ত লুক্
তাং। পাণিনিনা প্রোক্তো গ্রন্থ: প্রণিনীয়ঃ তমধীতে বেদ বা
পাণিনীয়োহণোলুপ্ আপিশলিনা প্রোক্তম্, ইণ্কাণ্যাদেরণ্গোত্রাদাপিশলং সূত্রং তদধীতে বেদ বা ইত্যণোলুক্ আপিশলা ব্রাহ্মণী পূর্বেস্তাদোহন্যার্থহাৎ তী ন ভবতি। কঠেন
প্রাক্তং ছল্লোহপি কঠঃ তমধীয়তে কঠাঃ।

ে। ২০৮। সূত্রাচ্চ সংখ্যাপ্রকৃতিকোপধাৎ।

ঈদৃশঃ সূত্রাৎ অধ্যেত্বেদিত্রোবিহিতপ্রত্যাম্য লুক্ স্যাৎ। অফকং পাণিনীয়সূত্রমধীয়তে বিদন্তি বা অফকঃঃ পাণিনীয়াঃ, দশকা ব্যাত্রপদীয়াঃ, দ্বাদশকা মীমাংসকাঃ, পঞ্চকাঃ সৌপন্মাঃ।

১১ কি ২০১। তদিশ্বমন্তীতি দেশে তথানি।

অত্তার্থেহণ স্যাৎ। দেশস্ত্রামা চেৎ। পর্বতা অস্মিন্ সন্তি পার্কতো দেশঃ। এ ডুম্বরঃ।

্ত। ্১০। তেন নিরু তঃ।

অত্তার্থেহণ স্থাৎ। কুশাবেন নির্বতা কোশান্ধী, নাকদী নগরী, দাহস্ত্রী পরিথা। चर्बार्थर्ग् चार । निर्वोनाः निर्वानः रेगवः। २১२। चमृतच्यारा

श्रार्थिश् श्रारः। वितिभाषा श्राप्त छत्। विनिशः नगतः, श्राप्तः, श्रीम्थानि वनानि। এতে চহারোহর্ণাঃ শৈষিকং यावमञ्जूवर्ভिष्टि।

২১০। সন্থাশাদেণ্য । (৩৪)
সান্ধাশ্য কাম্পিল্যং প্রাণাদনঃ প্রাণাদ্য ।
০০ ১১
২১৪। স্থতসমাদেরিণ্। (৩৫) সোতস্বিধ ।
২১৫। স্বরীহণাদেরকণ্। (৩৬) আরীহণকম।

- (৩৪) সকাশ: স্রসেনশ্চ কপিলাফুপনাশ চ। কথাীর তীর্থ পুলিনা গস্তি খান উদাহতাঃ। প্রাগদীন গদী বৃষ্টঃ কটিপঃ খদিরস্তথা। পঞ্জরঃ কোবিদারোহিপি চূড়ালোহিপি সকর্ণকঃ। সমীর সূর স্পদ্মিন মুথ অংশ অঙ্গ নাস পলিত কুট মলিন দশ কুস্ত শীর্ঘ বিরত সমল সীরম্প্র নল রোসমৃলোমন স্থপরি বিকর নাসিকা। পথঃ পদ্বশ্চেতি স্ত্রাং, পাস্থা ইত্যক্তে স্থপবিছোহন্ত ইতি স্ত্রাং, সৌপন্থা ইতি চান্দ্রাঃ, সৌপন্থা ইতি •বৃদ্ধন্ধানঃ। কম্পীলো দীর্ঘ মধ্য ইতি কেচিং।
- (৩৫) স্তল্পমে। বিপ্রচিত্ত মুনিচিতে তথাৰ্জ্ব:। মহাচিত্ত ৰীজবাপিন্
 সনমেতো চ গার্নিক:। খড়িক: তক্ত্রতিপ্রো খন্ অজির বীজ খণ্ডিত। কর্ণ
 বিপ্রহ। স্বত্তসমাদিঃ
- (৩৩) অরীহণ জ্রবণ ক্রহণ খদির ভগল উলপ্র কিরণ সাম্পরায়ণ ক্রোষ্ট্রায়ণ উদ্ভারণ মৈত্রায়ণ ত্রেগর্তায়ান ভাল্লায়ণ বিপথ বিপাশ উদ্দণ্ড উদক্ষন খাড়ায়ণ খাওবীরণ কশক্ষর জীম্ত শিংশপা কিরণ রৈরুজ বিশ্ব বৈন্ধতায়ন মৌসায়ল শাণ্ডিল্যায়ন গোতমায়ন সৌমতায়ন থৌমতায়ন সৌমায়ন উল্লায়ণ কৌশ্রান য়ণ রায়ম্পোষ বীরণ জাম্বত জন্ম সুশ্রমন্ জনত ভলন্দন খণ্ডু, কনল মজ্জ লত প্রম্কত শিরীষ বহির খাড়ায়ন শাণ্ডিল্যায়ন উদ্দণ্ড উদক্ষন খাত্তদ বীরণ। অরীহণাদিঃ।

२ २ । क्रमाथात्मतीय्रम् । (७२) कार्यायीयय् ।
२ २ । श्रमात्मतिकिष्टिक (१) । (७৯)

क्रम्मिकः क्रम्मिकः (गामिकिः रगोमिकिय् ।
२ २ । क्रमात्मितिकाः । (८०) काश्मित्य् ।
२ २ । क्रात्माः मः । (८०) क्रमा यत्र गमा न क्रमा ।
२ २ । क्रात्मा मः । (८०) क्रमा यत्र गमा न क्रमा ।
२ २ । क्रमात्मित्र । (८०) क्रमा यत्र गमा न क्रमा ।
२ २ । क्रमात्मित्र । (८०) क्रमा यत्र गमा न क्रमा ।
२ २ । क्रमात्मतिन् । (८०) क्रमा व्रत्मी ।

- (৩৭) কুশার্য অরিষ্ট অরিশ্য বেশান্ বিশাল রুকর রোমক শবল কৃট মৌলাল্য লোমশ বর্চন স্কর প্তন সবরণ প্রতর সদৃশ প্রত্প প্রাত্ত বিক্-ট্যাস সৃধ ধ্য অজিন অবনত বিনত অরুণ পরাশর অরুষ্ অরুষ্ সূবর্চন সুকর লোমক রোমশ বিক্ত্যক অনাষ্য অকুল ইতি কুশার্যাদিঃ।
- (৩৮) ঋশ মাজে থাধ শর ঋষভ কর্জম উত্তর বীরণ শরনিস নিলীন নিধান উপগৃঢ় অসনি সৈত মত বেখানৃ অখানৃ অনতৃহ্ অরতৃ পরিবংশ বেণু ধণ্ড দণ্ড পরিবৃত্ত কর্জম অংগু নিবন্ধ পরিষ্ট্ উত্তরাখান্ ফুলবাছ খদির শর্করা অভ্যাস পরিবেশ ঋশাদিঃ।
- (৩৯) এবং রথকার দশগ্রাম জাইখ শাল্পলি মুনি সুল কৃপ লুট কর্ণ শিরীয় শর্করা বিকন্ধট ফ্রগ্রোধ ইকট সঙ্কট কন্ধট বীজ গর্তু বন্ধজ পরিবাপ ষ্বাষ্থ প্লাশ কচু মধু শক্ট বিকন্ধিত নির্যাস আধ এতেহপি। কুমুদাদিঃ।
- (৪০) এবং, কাশঃ পাশঃ পলাশোহপি কপিখাখথ কর্দ্ধাঃ। পীয়ৃক্ষা তৃণ কর্প বিসালি কঙ্কটোগুহা। চরণ বাস নড় বন কছে ল বর্ষর মধুর গ্রহ জড় সীপাল কাশাদিঃ।
- (৪১) অৰ্ণ সূবৰ্ণ বল চরণ বুস পৰ্ণ বৰ্ণ বন বৰুণ বিল পুল ফল আৰ্জ্ব জ্লাদি: অমরস্ক বরণসে ভবেতি বারাণসীত্যাহ।
- (খ২) কুপ শুগ্রোধ কর্কট সন্ধট কন্ধট ধ্রবকা বন্ধকা হলকা ক্লিপক। ইক্লিট কট বুক পুকু পুট মহ পরিবাপ ৰবাব ধ্বকা গর্ভ কূপক হিরণ্য। প্রেক্ষাদি:।

- (৪৩) অশারী গৌরাদিয়াং ভীতি কেচিং। এবং শিধায়া হ্রস্তাৎ শিধায়। অশান্ শিধা দর্ভ থণ্ড রুল কাল তাদ নগ কোট উষ পামৃ যূথ কল মীন নদ কুল গহর ওড় কুণ্ডল পীন গুছ অশাদিঃ।
- (৪৪) স্থি স্থিদত চক্র বায় গোপিল ভল্ল পাল চক্রনাক ছগল অশোক সীহর সরক কর**ী**র সরস সমর সমল রোহ তমাল কদল দপুল বাসব বীব পুর বজু কুশীবক বোহ সূবস স্থাদিঃ।
- (se) देन দল কুল উল চুল বট লকুল পূল জুল মূল নল জিরল পুর (জলজুল)। বলাদিঃ।
- (৪৬) পুল তুক তুষ কুও সমল মকর লোমক হিংসক কলা সকর্বি সরক সীরক সকল সরস অভিধান হংসক অক্ষুণ শীর্ষ নিবাত পাক কুস্ত চিত্র লোমন্ রোমন্ সুবর্ণক হস্তিন্ কুংস বিল থিল ধমল বলিক অস্তি পথিন্ অও (পস্ত চ) কম্বলিকা প্রাদিঃ।
- (৪৭) কৰ্ বশিষ্ঠ জিত্বৰ জ্ঞাপৰ ক্লিশ জীবত আগীবত জৰ-জ্লাৰ্ক, অৰ্কনৃষ্ জৈত আনক আনতৃত্ব কৃতী ক্ষিত্ব কৃতী পাঞ্চলত কৰ্ণাদিঃ।
- (৪৮) বরাহ পলাশ শিরীয় পিনদঃ বিদগ্ধ বিজগ্ধ বিলগ বিভগ্ন সূল নিময় নিবদ্ধ বাহু খদির শর্করা বলাহ বরাহাদিঃ।
- (৪১) অদ্রত্তর ইত্যর্থে বিহিত্সাণোলুপ্। বরণা মথুরা চল্পা শৃসী গোদন্দ গোমতী। শালালিস্তামপর্ণী চ উরসোজ্জয়নী গয়া। জানপদী তক্ষ-শিলা চ তথা থালতিকং নিরি:। শরাতী পর্ণী আলিস্যায়ন জমু পুঞ্জর গল্পা বস্তু বল ভী ভাতী আকৃতিসপোবরণাদি:।

জনপদোদেশঃ, বরণাদয়ো প্রামাদ্যাঃ, তেভাশ্চাত্রথিক।
তার্যার লুপ সাংধ্য পঞ্চলানাং নিবাসঃ জনপদঃ পঞ্চলাঃ
অসাঃ, বসাঃ, কুরবঃ। বরণা গ্রামঃ,গয়া, উজ্জয়নী, ধলতিকং
বনানি। কথং বরণসা ? বিশেষবিধানাৎ।

२२२। भक्ताश्चा वा। (००)

অণোলুপ্বা স্থাৎ। শর্করাভিনিব্তঃ শর্করা অস্মিন্ সন্তি বা শর্করা দেশঃ শার্করো বা।

২০০। টিকণীয়ে চ। শার্করিকঃ শর্করীয়ঃ।
৭০ বা
২০১। নদ্যাং মতুঃ। (৫১)

চাত্রথিকোমতুং স্যাৎ। নদী চেৎ। উডুম্বরাবতী নদী ইকুমতী

২৩২। কুমুদ নড মহিষ বেতসাড ড্মতুঃ।

এভাশ্চত্রথে ড্মতুঃ সাং। কুমুদ্ধন্ দেশঃ, নজান্ মহিমান্ বেতসান্।

.२००। नष्टभानीष्षुनः।

আভ্যাং চাতুর্থিকো ড্লঃ স্যাৎ। নড্লঃ শাদ্ধনঃ। তা সা ২০৪। উৎকরাদেরীয়ঃ। (৫২) উৎকরীয় ।

- (৫০) শর্করা দেশ:। চকারাৎ শার্করিকং কুমুদাদিতাৎ। শার্করং বরাহা-দিতাৎ। শর্করাকং ঋশ্যাদি। শর্করকং অনেন চ। শর্করীয়ং। শর্করিলং কাশাদি। অণি শার্করং ইতি সপ্তরূপাণি ভব্স্তি।
 - (es) পুদরাবতী মশকাবতীত্যেবং বহব: প্রয়োগতোজ্যেরা:।
- (৫২) উৎকর সংফল শফর পিপ্লল পিপ্ললীমূল অখান্ সুবৰ্গ ধলাজিন তিক কিতব অনক ত্রৈবন পিচুক অখাথ কাশ ক্ষুদ্র ভন্তা শীল জন্তা অজির চর্মন্ উৎক্রোশ ক্ষান্ত ধলির শূর্পনার্ম প্রাবনায় নৈবাকব তৃণ বৃক্ষ শাক পলাশ বিজি-সীয়া অনেক আতপ ফল সম্পুর অর্ক গর্জ অগ্নি বৈরাণক ইড়া অরপ্য নিপাত

रा ३१ २०८। नर्जारमः कीयः। (৫৩)

প্রভাঃ কীয়ঃ স্যাৎ। নডকীয়ঃ, বিল্লকীয়ঃ, বৈশ্বকীয়ঃ প্রক্রীয়ঃ। প্রক্রীয়ঃ। জুঞ্জীয়ঃ।

উক্তাশ্চাত্রর্ধিকাঃ।

ইতি প্রীপন্ধনাভদতকতো স্পরে ব্যাকরণে পঞ্মস্যাধ্যায়স্ত বিতীয়ং পাদ:।

পঞ্চমাধ্যায়স্থ

ভূতীয়ঃ পাদঃ ৮

শেষভদ্ধিতপ্রকরণম।

১। প্রায়িকারাছেষে।

শেষার্থে বিধিঃ প্রাথিকারাও। চ্কুনা গৃহতে চাক্ষণ রূপং, প্রাবণঃ শব্দং, অথৈকহতে আথোরগঃ, চাতুরং শক্টং, চতুর্দিশ্যাং দৃশ্যতে চাতুর্দিশোভূতঃ দৃশ্দি পিটা দার্শদঃ নামাঃ, ওিদুখলাঃ সক্তবঃ। অথ বক্ষামাণ্পত্যয়াঃ শেষে, উত্ত জাতিত্তি ভবস্তভ্যাগতস্তম্পেদ্মিত্যাদ্যথে ভেয়াঃ।

শুর্কৈ নিচায়ক শক্ষর অবরোহিত ক্ষার বিশাল বেত্র অধীহণ গুও বাতাগর মন্ত্রণার্হ ইক্সবৃক্ষ নিভান্ধবৃক্ষ আর্ত্রবিক্ষ উৎকরাদিঃ।

⁽৫০) সড়প্লকো বিশ্ব বেণু কপোডাপকখেনবং। কাষ্টজুকান ভক্ষাৰো বেজেকু ভূব বেডসাং।

२। निक् श्रुविभावशाक्षः।

আভ্যাং শেষার্থে শঃ স্থাৎ। পৌর্বেশালঃ, ও তরশালা বালা, আরণ্যাঃ স্থমনসঃ।

৩। রাষ্ট্রাদিয়ঃ। (১)

রাষ্ট্রে ভবোরাফ্রাদাগতো বা রাষ্ট্রিঃ।

8। व्यवात्रभाताकीनः। (२)

অবারীণঃ পারীণঃ। সংঘাতাচ্চ। অবারপারীণঃ পার~ বারীণ*চ।

৫। धामान्यकः। धारमा धामीनकः।

७। कब्बारमरतय्कर्। (७)

কলি, কাজেরকঃ প্রানেয়কঃ নাগরেয়কঃ। কৌলেয়কঃ শুনি । কৌক্ষেয়কঃ কুপাণে । ত্রৈবেয়কোইলঙ্কারে॥

. १। जनगरनरत्येथन्। (8)

नारमञ्ज्ञ वातानरमरगाङ्ग ।

⁽১) রাষ্ট্রে কতো লকঃ ক্রীতঃ কুশলঃ সংভ্তঃ প্রায়ভবঃ রাষ্ট্রং গছতি পদ্ধাঃ, ভূতো বা, রাষ্ট্রমভিমুখেন নিষ্ক্রামতি দ্বারং, রাষ্ট্রে অভিজনঃ সেব্যোব্যাহস্ত রাষ্ট্রস্কেদং বা রাষ্ট্রিয়ঃ, এবমন্তর্ত।

⁽২) অবারম্ভ পারং অবারপারং রাজদন্তাদেরাকৃতিগণতাৎ পারাবারম্।

⁽৩) কল্রিশব্দো দেশবাচকঃ। "কল্ররো গ্রামকুন্তী চ চর্ম্মণৃত্যপি গোমতী।
পুদরং পুদ্ধবং পুদ্ধবং মাহিশ্বতী কুজিন মোদনো। হস্তা পোড়ন ইত্যাদ্যা গণনীয়াঃ
প্রোগতঃ" "উন্তি নগরী বর্মতী কুড্যা উত্যা গ্রাম"। কল্রাদিঃ।

⁽৪) নদী বারাণসী দূর্ব্বা দার্বা শাক্ষা মহী তথা। কাশায়নী চ কৌশাসী
ভাগতী (জী) থাদিরী গিরিঃ। বামদামা দেনকা চ পূর্ব্বার্ণ নগরী পূরং। বনসিত্ত্যের নদ্যাদেশ গণ্যতে শক্ষকোবিদৈঃ। 'বনকৌশামী কাশপরী কাশফরী পূর্ব্যনগরী পাঠা মাছা সেতকী'। (বড়বায়া রুইম) নদ্যাদিঃ।

७। मिकिना अन्हार भूतमञ्जान् । (e)

 আজত্তো দক্ষিণাশব্দত্তন স্ক্রনাক্ষে। ন পুংবং। দাক্ষি-গাত্যঃ পাশ্চাত্যঃ পৌরস্ক্রাঃ।

৯। অমা কেহ তদি ত্রেভাস্তাপ।

খমাত্যঃ কত্যঃ ইহত্যঃ, তস্তন্তাং-ততস্তো বত্স্যঃ ত্রেতি দপ্তম্যান্তদন্তাং কুত্রত্যো যত্রতাঃ ॥ নিরে।নিরবদিতে ॥ নির্গতো দেশাৎ নিন্ট্যশ্চাণ্ডালাদিঃ। হ্রস্বাভিদীভিষয়ং ॥ নেঞ্জি । নিত্যম্।

> । धेशस्त्राद्यः श्रामा व।।

পক্ষে তনট্বক্যতে। ঐষমস্তাঃ ঐষমস্তনং হস্তাঃ হস্তনং শ্বস্তাঃ শ্বস্তনং। বাহুল্যাৎ প্রাতিস্তোহিপি ॥ দূরাদেত্যঃ ॥ (৬) দূরেত্যঃ পথিকঃ॥ উত্তরাদাহণ্ ॥ উত্তরাহঃ॥

कािश्वादिक छात्रन्।

কাপিশায়নং মধু কাপিশায়নী দ্র:ক্ষা, বহ্লি বাহলায়নী তর্দ্দি তাদ্দায়নী।

১২। तस्कातमञ्ज्तारुन् ह।

রাঙ্কবঃ, রাঙ্কবায়ণঃ। রঙ্কুমু গভেদঃ।

১०। छा लाभगाञ्चमक्षाजीरहा यह।

দিব দিব্যং প্রাচ্যম্ অবাচ্যম্ উদীচ্যং প্রতীচ্যম্।

১৪। কছায়া ষ্টিকণ্। (৭) কাছিকঃ।

১৫। त्रेयुक्तानित्रक्तानाक् गरामः। (b)

⁽e) पक्तिनामाकारी अन्त न्तरतातिजाठ्। (७) न्तामाभणः न्रत्याः।

⁽१) वर्ता वृक् छिष सहर्षि श्रवेषः। वर्ग् नंगर्छमः छञ्चामृत्रख्याशि एएमावर्गः, खर्तालुक् छरमनवाहिनी या कथा छछः भरत वृक् छाष्। कास्कः।

⁽b) ক্রব। গছান্তভাক্ষমগণা বিষ্মাভার উত্তর। সম (মধ্য^{ক্ষ}মণ্য দিনং

তদাদেন্তদীয়ং যদীয়ং নদীয়ং, র্দ্ধাদ্যচঃ-শৃক্ষীয়ঃ গাগীয়ঃ আচায্যীয়ঃ, গহাদেঃ গহীয়ঃ অন্তঃস্থীয়ঃ মহথীয়ঃ॥ পৃথীমধ্যে মধ্যমাৎ॥ মধ্যমীয়ঃ॥ নগরাদ্যন্তদেশাচ্চ। কটকনগরীয়ঃ
দাক্ষিকছীয়ঃ নন্দিগ্রামীয়ঃ।

১৬। পর্বতানামুধ্যে।

পর্বতীয় ইতি মাবজীগণঃ, নাম্যত্র-পর্বতীয়ং কলং পার্ববিতংবা।

১१। अक्षानातः शारकनार ।

এনীপচনীয়ো জনঃ ভোজকটীয়া, দেশাৎ কিং ? গোমত্যাং ভবা গৌমতা মৎস্থাঃ। নৃনাম্মো বা। দেবদভীয়াঃ দৈব-দত্তাশ্ছাত্রাঃ।

२৮। পরজনরাজদেবাৎ কীয়:।
পরকীয়: জনকীয়: রাজকীয়: দেবকীয়:।
১৯। স্বাদীয়শ্চ। স্বীয়ং স্বকীয়ম্।
২০। ভবত্তিকি বারো, তোদশ্চেরে।
ভাবৎক:; তোদশ্চ—ভবদীয়:।
২১। ইণ্কাণ্যাদেরণ্ গোত্তাৎ। (৯)

চবলে) উত্তম অন্ধ বন্ধ পূর্ব্যপক্ষ অপরপক্ষ অধমশাধ উত্তমশাধ একশাধ সমানশাধ সমানগ্রাম একগ্রাম একরক্ষ একপলাশ ইব্য ইবনীক অবস্থপন কামপ্রস্থ ধাড়ায়ন কাঠেরলি লাবেরলি সৌমিত্রি শৈশিরি আস্থ দেবশর্মি শ্রোতি আহিংসি আমিত্রি ব্যাড়ি বৈজি আধ্যথি আনৃশংসি শৌদ্ধি আরিশর্মি ভৌজি বারাটকি বাল্যীকি ক্ষেমবৃদ্ধি আশ্বথি উদ্পাহ্মানি ঐক বিশ্বি দন্তাগ্রহংস তত্ত্বপ্র উত্তর অনন্তর (মুধপাশ্বতসোলোপন্চ) (ক্ষনপরব্যোঃ কৃষ্ চ) (ক্ষন্ত চ) দেবস্ত চ। (বেগুকাদিভ্যান্তর্ব) গহাদিরাক্ষ্তিগধঃ ।

ে (১) কণতের্ন্ধা, তক্ত গোত্তাপত্যং কাণ্যুঃ পর্মাদিত্বাদ্বস,। গোত্তমিহ-সাজীয়ং নাড় লোকিকম্। পণিনোহণত্যং পাণিনিঃ, পাণিনুঃ হস্তাৎ সিয়স্তাপবাদঃ, ইণস্তাদেগাত্তাৎ কাণ্যাদেশ্চ অণ্ স্থাৎ।
দাক্ষেরমী দক্ষেঃ; কাণ্যাদেঃ-কাণ্যস্ত ছাত্তাঃ কাণাঃ, শাক্যস্ত শাকনাঃ; যুবপ্রতায়ত্বাৎ পাণিনের্ম ভবতি, পাণিনীয়াশ্ছাত্রাঃ।

২২। ন দ্বাচঃ প্রচ্যেভরতেষু।

দ্বাচ ইণস্তাৎ শ্নাস্তি। প্রাচ্যভরতগোত্তে। বৈশ্বীয়াঃ বৈশ্বঃ কচিৎ।

२०। काणानिक ष्टिकिनिका।
काणिका काणिकी देविनकी देविनका।
२८। अर्फिणां ष्टिकन् ।
केवर्गाखार्फिणां ष्टिकन् आद। देनियानकर्ष् कः भावतकम् कः।
२८। সাংকাणारमवकन् ।

ঈয়াণোরপবাদঃ। সাংকাশ্যকঃ পারধেত্রকঃ সৈন্ধ্বক্রকঃ বৈরোর্ত্তকঃ। ধুমাদেঃ ধোমকঃ বৈদেহকঃ সাকেতকঃ রাজগৃহকঃ ও জ্বানকঃ দাক্ষিণাপথকঃ (১১)। প্রস্থপুরবহান্তাং॥ মালা-প্রকঃ নাক্ষীপুরকঃ পৈলূবহকঃ।

পোত্রাপত্যঞ্চ পানিনঃ, তিমান্ জীবতি তদপত্যং যুবা পানিনিঃ, মৃতে পানিন এব, ডেন পানিনোপজ্ঞমকালকং ব্যাকরণমিতি।

- (১০) কাশিশেচদিশ্চ (বেদিঃ) সাংযাতিশ্রোদ্যানাচ্যুতাবপি। শকুলালো হস্তিকর্ গোবাসনোহপ্যরিশ্যঃ। স্থামিত্রশেবদক্তী হিরণ্যকরণেহিলি চ। শর্মিত্র দাস্যিত্রা বরিত্র কুলনামনী। যুবরাজ্যোপরাজ্যে চ ভারাক্সী
 সিক্ষিত্র যুক্। দাস্থাম দেবরাজা বিত্যাদ্যপি সতাং মত্য্। সংবাহ সৌবাবভান্দশ্রাম ছার্মিত্র) গণপাঠানীর্থিষ্যক্তাক্তশাক্ষপি ভাতায়।
- (১১) ব্য বড়ও শশাদন অর্জুনাব মাহকছনী আনকছনী মাছিবছনী মানছলী অটছনী মত্তকছণী সম্প্রস্থলী দাঙারনছনী সাক্ষ্ণী বিচেচ্ছ বাক্স্ছ সাত্ত সাহ শশা মিত্রবর্জ ভক্ষাণী মত্তক আজীকুল ছ্যাহার ত্যাধাৰ-

२७। केट्यानशानाः लाहाम्।

অকণ্। ঈদন্তাৎ—মাকন্দকঃ। রোপধাৎ পাটলিপুত্রকঃ ঐকচক্রকঃ।

২৭। বভ্ৰচনবিষয়াৎ।

অকণ্ স্থাৎ। ঈয়াণোরপবাদঃ। আঙ্গকঃ পাঞালকঃ আজ-মীঢ়কঃ কালঞ্জাকঃ॥ ন মদ্রেভ্যঃ॥ মাদ্রঃ।

२७। मगुजात्क्षीमनूमुरुवाह।

मायुष्टका तोका मायुष्टका यसूमाः।

२৯। नगतार खावीना गर्हरहाः।

অকণ্, কুশলে। নাগরকঃ খলো নাগরকঃ, অনুয়োঃ কিং ? নাগরা বিপ্রাঃ।

৩০। অরণ্যাদধ্যায় ন্তায় পথি হস্তি মনুষ্য বিহারেরু।

এম্থেষ্বল ্ তাৎ। আরণ্যকোহধ্যায়ঃ, আরণ্যকো ন্তায়ঃ,
পস্থা হস্তা মুনুষ্যো বিহারশ্চ । বা গোময়ে। আরণ্যকং
গোময়ম্ আরণ্যো (আরণ্যাঃ গোময়াঃ)।

৩১। কচ্ছাদেশ্মনুষ্য তৎস্থয়োঃ। (১২)

অকণ ্ স্থাৎ। কাছেকো মনুষ্যঃ দৈশ্ধবকঃ কাছেকং মনুষ্য-হসিতং দৈশ্ধবিকা চূড়া, অনয়োঃ কিং? কাচ্ছঃ দৈশ্ধবঃ।

৩২। সাল্বাদপদাতে)। সাল্বকঃ, নেহ সাল্বঃ পদাতিঃ।

সংক্ষীয় , বর্ষর বর্জ্জা গর্জ আঁনর্জ মার্চর পাথেয় ঘোষপল্লী আরাজ্জী ধার্ত-রাজ্জী আবন্ন তীর্থ (কুলাৎ সৌবীরেয়ু) (সমুজালাবি মনুষ্যেচ) কুক্ষি অস্তরী দ্বীপ অকুণ উজ্জন্নী পটার দক্ষিণাপথ সাকেত। ধুমাদি:।

⁽১২) কছে সিক্তদভো চ বণু প্রার রহবং। দীপান্পমধুমতঃ কুরু সালত তান্ বিজঃ।, অনুষ্ও ক্যারি ক্ষোক্তা অজবাহ বিজাপক ক্ষাত্র।

৩০। কুরু যুগন্ধরেভ্যোবা।
কোরবকো হস্তী কোরবোবা, যোগন্ধরকো যোগন্ধরঃ ।
উক্তং দেশাও॥

৩৪। মূয়দআদে ক্রিখ্লীনণ্চ বুলালো আকে চৈকছে ত্বক মমকে। (১৩)

শেশার্থে যুগ্রদশান্তামণ্ উনণ্ চবা স্থাং। অনথাসংখ্যার্থং পূথ্যাচনং দলিপতিলক্ষণভানিতাহাং। তয়োগ পরতো যুগ্রদশ্ব-লোঃ স্থানে যুগ্রাকাল্যাকো, একরে ভাগকমনকো চ স্থাতাম্। অণ্—যোগ্রাকী, ঈশন্ যোগ্রাকীণা আস্মাকং আস্মাকীনম্। একরে তু, তাবকং ভাগকীনং মামকং নামকীনং। পকে তদাং দিন্তাদীয়াঃ। যুগ্রদীয়াম্ অল্যায়াং হ্রদীয়াং মুদীয়ান্।

७৫। बर्मान गर भवाववागत्या उम्भृतीक ।

অর্কাৎ যথ স্থাৎ। জ্বাং, প্রাদিপ্রাচ্চ প্রাদ্ধিয়ন্ অবরাদ্ধিন্ সংমাদ্ধিন্

७७। किक् श्रुका डिक्न, छ।

(১৩) মুন্ন। ননু শতানি সহস্রাণীতাত্র বিভক্তিসন্ধিশাতজে নুমি কৃতে ভিংকত্বৈতি বিভক্তিপুকং প্রতানিমিন্তগর্থৎ সন্নিপাতলক্ষণো বিধিন্ননিমিন্তং তদিখাতস্ত্রেতি পরিভাবাহকীকৃতা, অন্মথ্য সন্নিপাত আনম্ভর্মাই তেন বন্ধানস্তর্য্যে যো বিহিতস্তদানস্ভর্মায়েনা ন বিক্লপন্ধি, ন তিহ্নতক্ত্রাবিতি দীর্মপ্রতিষ্কেকং বচনং জ্ঞাপক্ষম্ম সত্যমন্থ বিভক্তিনিমিন্তরে। ক্রিচ্তুরোঃ
ক্রিন্থ তিহ্নতন্ত্রিতি ঝকারয়োর্ম্যবেধান কারিণীং ত্রীং প্রতি আদেশক্স নিমিন্ত হাদীর্মপ্রতিষ্ঠে প্রতিষ্কেশ বচনম্পপদ্যতে ইতি তদ্বদিহাপি, তৎক্রমাদেশবিত্রতি তবেতামিত্যাহ সন্নিপাতলক্ষণানিত্যহাৎ অদসীয়া নিত্যত্রে ক্রেন্থেতাত্র, ভ্যাংবি দীর্ম ইতি বচন মুপপদ্যতে সন্নিপাতলক্ষণভাদি পার্চঃ
ক্রিপাননিত্যভাদিত্যধাহত ং বোক্যম্ । ত্রিপ্র হাং ত্রী। অন্ধান্ধ্রাণ মার্পান

्भोर्वार्क्षिकः माक्रिगार्ष्किकः, भटक य९-भृर्वार्षाम् ।

৩৭ প্রামজনপদাংশেহণ্টিকণো । (১৪)

দিক্ পূলাদেব, গ্রামস্থ জনপদন্থ বা পূর্বার্দ্ধে ভবাঃ পৌর্বার্দ্ধাঃ পৌর্বার্দ্ধিকাঃ। ঔতরার্দ্ধাঃ ঔতরার্দ্ধিকাঃ।

७৮। (भाषभूक्वाष्ट्रिकन ।

উপযুক্তেতরপূর্ব্বাদদ্ধাৎ শেষার্থে টিকণ্ স্থাৎ। গোঁত মার্দ্ধে ভবং গোতমান্ধিকং বালেয়ান্ধিকম।

० । स्थारमर्गाश्ताश्ताश्वरमाः मर्गाभम्छ ।

এভ্যো মঃ স্থাৎ। মধ্যমঃ আদিমঃ। অবোহধদোঃ দলো-পশ্চ। অবমঃ অধ্যঃ।

৪০। মধ্যান্ন্যাব্যাহৎ।

অৎ স্থাৎ। যুক্তেনাত্যুকৈর্নাতিনীচৈশ্বধ্যস্তার্কিকঃ।

8> । दीभाष्यग् । देवभाः॥

82 । काला छिकन्।

কালবাচিনঃ শব্দাৎ টিকণ্ স্থাৎ। শেষার্থে। দৈবসিকঃ আফিকঃ মাসিকঃ সাংবংশরিকঃ।

৪৩। শরদঃ প্রাকে।

भातिनकम्। लास्ति किः, भातमः पि।

৪৪। রোগাতপয়োর্কা।

' শার্দিকো রোগঃ শার্দো বা আতপশ্চ I

८৫। निभाधानीयाञाय।

हिक श्वा मगुर। निनिकः तिमः वा उभः, श्वारमि विकः

⁽⁵⁸⁾ आग्रंच क्रनशक्य खरान এकरवरम

৪৬। খদঃ খন্ত চ।

টিকণ্ বা স্যাৎ। শৌবস্তিকং শৌবস্তিকী ভূতিঃ, পক্ষেত্নট্ বা, শৃস্তাঃ শৃস্তনম্।

৪৭। ঋতু ভ সন্ধ্যাদেরবর্ষাভ্যোহণ্। (১৫)

ঋতোং; গৈছাং বাসন্তম্। নেহ, বার্ষিকং পৌর্কবার্ষিকং নক্ষতাৎ, তৈষঃ পৌষঃ মাঘঃ রোহিণম্। সন্ধ্যাদেঃ সান্ধ্যং সান্ধিবেলম্ আমাবস্যং পৌর্ণমাসং ত্রাম্বোদশং প্রাতিপদম্।

८৮। **मःवट्**मताट कल्मभर्वरागाः । ष्यम् ; माःवट्मतः कलः शर्वत् वा ।

৪৯। **হেমন্তা** টিকণ্ বাহণি তলোপশ্চ। হৈমন্তিকম্, অণি তলোপশ্চ বা, হৈমন্তং হৈমনং বা।

৫ । প্রারুষ একঃ। (১৬) প্রারুদেণ্যোদেঘঃ।

৫১। দায়ং চিরং প্রাছে প্রগেহব্যয়েভ্যস্তনট্। (১৭)

সায়মাদেনিপাভনানান্তাদন্তবং, সায়ন্তনী চিরন্তনং প্রাচ্ছে-তনং প্রগেতনম্। অব্যয়কালাৎ-প্রাতন্তনং দিবা নং দেবা। তনং হস্তনম্।

⁽১৫) সন্ধ্যা চ সন্ধিবেলা চ পৌর্থনাসী চতুর্দ্দশী। অমাবস্থা পঞ্চলী প্রতিপচ্চ ত্রয়োদশী। সন্ধ্যাদিঃ। ভাদীয়বাধকে ৮২৭ তেন স্বাত্যাং ভবং সৌবাতমু।

⁽১৬) প্রা। নোপদেশাদজেভ্যোহপি তেন শুক্রবেণ্য: বরেণ্য ইতি ধাতু পারায়ণম্, রুঞ্ এন্স ইভ্যুণাদৌ বরেণ্য:, প্রার্যেণ্যয়তেঃ কিপি প্রার্ষেণ ইতি বকারন্থিত্যবেশ মৃত্তিন্তা পদেশ ইতি রস্তিদেবঃ

⁽১৭) সারং। ইহ সারচিরশকা বনব্যরৌ, সারং চিন্দর্থী, তথা প্রাহেত্ব হনব্যরঃ, প্রথশকঃ প্রাতরর্থোহদন্তঃ, এমাং মাত্রেহদন্তত্বং, অন্যাদের স্ত্র-নির্দ্ধোদিত্যাহ সাম্মাদেরিতি। অঙ্গর চিরসায়মরোর্মণে, জাগ্রাহুরো-

७३। श्रुकाङ्गाशहाङ्गाङ्गा (

তনট্বা স্যাৎ। পূর্বাছেতনং পৌর্বাছিকং বা, অপ নাছেতনম্ আপরাছিকং বা, সপ্তম্যা অলুক্।

৫৩। চিরপরুৎ পরারিভ্যস্তঃ। (১৮)

চির**জ: । প্রত্ত তলোপ দ্র । প্রজ্জ: প্রা**রি**জুম্**।

কলোক ভিন্ম ।

(४) अध्यश्रामाख्या पित्रः।

এভাঃ শেষে ডিসং স্যাৎ। অগ্রিসং পশ্চিনঃ অস্তিমঃ। শেষপ্রভৃতেরুক্তাং প্রত্যয়াঃ অবিশ্যোক্তো বিজ্যমণজাতা-দ্যুর্থেসিয়েয়াঃ।

৫৫। তত্ত্ৰ জাতঃ।

ভাতার্থে যথাবিছিত্মণাদয়ঃ হ্যঃ। মাগুরঃ রাষ্ট্রীয়ঃ কাজেয়কঃ সায়ন্তনঃ।

৫५। इषः श्रात्रुयः। श्रात्रुप्ति काजः श्रात्रुपिकः।

, ৫৭। শরদোহকণ্ সংজ্ঞায়াম্।

শারদকা মুদগাঃ। শারদমন্যতা।

८৮। गुलार्परकः।

নান্নি, মূলকং আদেনিঃ প্রাদেশিকঃ পূর্ববাহ্নকঃ অপরাহ্নকঃ অনক্ষরকঃ অপরপক্ষকঃ।

৫৯।পথঃ পন্ত চ। পথি জানঃ গ্রুকো বৎসঃ। ৬০। অসাবাস্থায়া অচ্চ বা।

বেচ্চেত্যাপিশলীয়ং স্ত্রং। তেন সায়ং সাধে বা ভবং, চিরং চিরে বা ভবং সায়ন্তনশ্চির্ভন:। নজাজনব্যয়াটিকণ্ চানিয়ম ইতি বক্তব্যম।

, (১৮) চির। চিরে ভবং, গরুৎ পুর্বস্থিন্ বর্ষে ভব্যিত্যা**দি বিগ্রহঃ।**

অংসাং। অকাণো চ বা ভবতঃ। অমাবাস্তঃ অমাবাস্তকঃ আমাবাস্তো বা।

৬১। সিশ্ধপকরাভ্যাং কঃ। সিশ্ধুকঃ অপকরকঃ। বেভ্যেব–দৈন্ধবঃ আপকরঃ। ৬২। নক্ততেভ্যোলুগুত্দম্।

জাতার্থে অণোলুক্॥ তদ্ধিতলুকি লুক্সেযাঃ॥ রোহিণ্যাং জাতো রোহিণঃ রোহিণো বা, মৃগশিরা মার্গশীরো বা, অভিজিৎ আভিজিতো বা, অশ্বর্ক্ আশ্বর্জো বা। (১৯) শৃতভিষণাদেরণি টিলোপো বা। শতভিষক্ শাতভিযো বা শাতজিসজঃ॥ বাত্ল্যান্নিত্যং প্রবিষ্ঠাদেরণোলুক্॥ প্রবিষ্ঠঃ ফল্পণো২ ভ্র্নঃ পুনর্বস্থিবরক্তিঃ। প্রবিষ্ঠা ফল্পণী অনুরাণা স্বাতী
তিস্য পুনর্বস্থ হস্তা বিশাখা আসাঢ়। কল্লা।

৬০। স্থানান্ত গোশাল খরশালাচ্চ।

অণোলুক্। গোডানে জাতঃ গোস্থানঃ শরস্থানঃ গো-শালঃ খরশালঃ।

७८। वरमभालाका । वरमभानः वारमभारता ना ।

৬৫। শ্রবিষ্ঠাহ্যানীয়ণ্চ।

শ্রোবিষ্ঠীয়ঃ খাদাঢ়ীয়ঃ। লুকি শ্রবিষ্ঠঃ'। উক্তং জাতার্থে। তত্ত্বতি বর্ত্তে।

৬৬। কৃত লব্ধ ক্রীতকুশলাঃ। (২০)

তত্ত্ব কৃতাদ্যথে যথাবিহিত্মণাদয়ঃ স্থাঃ। শ্রুত্মে কৃতে। লবঃ ক্রীতঃ কুশলো বা শ্রোমাঃ রাষ্ট্রিয়ঃ।

- (১৯) শত। আদিশবোহত্র সন্দিশ্ধঃ, স্ত্রিয়াং শভডিয়ী।
- (২০) কত। চদ্রগোৰীভূ এতংসূত্রং ন কৃতবান পূর্বেণ সিদ্ধে:।

৬৭। প্রায় ভবঃ।

জারার্থে নথাবিহিতং স্থাথ। আদ্দ্রে প্রায়েণ ভবঃ প্রোদ্রঃ

७৮। উপজানুপকর্ণোপনীবেষ্টিকণ্।

ভ পজাতুকঃ পাণিঃ, ভ পকর্ণিকং চক্ষুঃ, ভ পনীবিকঃ করঃ।

৬৯। সম্ভুত্যু।

তত্ত্ব সন্ত্রনিত্যর্থে যথাবিহিতং স্থাৎ। শ্রোম্মো রাজা।

१०। (कामार हेब्रग्।

কোনে সংভূতং কোষেয়ং বস্ত্রয্।

१)। कालार मार्युत्रशर भहामात्नयू।

অত্তার্থে কালাৎ যথাবিহিতং স্যাৎ। গ্রীম্মে সাধু গ্রৈম্মং চন্দনং, হৈমনং বাসঃ, বহন্তে পুষ্পাতি বাসন্তী লতা, শর্নি পচ্যন্তে শারদকা মুদ্গাঃ।

१२। उक्षिकः।

অত্রার্থে কালাৎ বথাবিহিতং স্থাৎ। হেমন্তে উপ্তা হৈমন্তা যবাঃ, গ্রৈপ্লাঃ শালয়ঃ।

৭০। আখ্যুজ্যা অকণ্।

আশ্বযুদ্যাং পৌর্ণামান্তাম উপ্তা আশ্বযুদ্ধকা মাধা:।

৭৪। গ্ৰীম বসন্তাদা।

ত্রৈত্মকং ত্রৈত্মং বা, বাসন্তকং বাসন্তং বা।

१८। (परास्वर्ग। (२))

অত্রার্থে কালাৎ যথাবিহিতং স্থাৎ। মাসে দেয়মূণং মাসিকং সাংবৎসরিকম্।

⁽२५) (क्स्बव्धरभाश्यः । ।

৭৬। কলাপ্যশ্বত্য যববুষাদকঃ।

যদা কলাপিনো ময়ূরা ঋশখাঃ ফলিনঃ যববুষ। উৎপদ্যন্তে তদা দেয় মৃশং কলাপকম্ ঋশখকং যববুষকষ্।

৭৭। গ্রীম্বাবরসমাদকণ্।

গ্রীমে দেয় মূবং গ্রৈম্বকম্ আবরসমকম্।

৭৮। সংবৎসরাগ্রহায়ণীভ্যাং টিকণ্চ।

সাংবৎসরিকং সাংবৎসরকম্, আগ্রহায়ণিকং আগ্রহায়ণকম্ ঋণম্।

৭৯। মুগশকুনিন্যাহরতি।

শ্বতার্থে যথাবিহিতং স্থাৎ। নিশারাং ব্যাহরতি নৈশো মুগঃ নৈশিকো দাত্যুহঃ।

৮ । তদনেন দোচ্ম।

অত্তার্থে যথাবিহিতং স্থাৎ। নিশা সোঢ়াহনেন তথ্সহচরি-তাধ্যয়নাদিভিরিতি নৈশশ্ছাত্রঃ নৈশিকঃ॥ কালাদিতি নির্তুম্।

৮১। তত্ত ভবঃ।

অত্তার্থে যথাৰিহিতং স্থাৎ। ত্রুছে ভবঃ ত্রোম্মো রাষ্ট্রিয়ঃ বাহো দৈবদিকঃ দিব্যঃ প্রার্মেণ্যঃ।

৮२। मिशारमर्याहिट ह रम्हावत्रवार । (२२)

দিশি ভবং দিশাং রহস্তম্ বংশাম্, মূল্যম্, অগ্রাষ্। আদ্যম্ অস্ত্রম্যুগ্যং গণংম্ অগ্রাং। সূন্তাং। সূন্তাম্॥ দেহাবয়-

⁽২২) দিক্ বর্গনপপকোথা: পথিযুথান্তরাবহ:। প্রাণাং কান্তিকাধর্ম মিত্রামুবংশশাধিন:। আপোহন্তাদি ভার মেষ মেধাশ্চাকাশ সহতো। কাল বেশ্যেযুগং বংশো জবনক বনং মুধং। অদেহাবয়বার্থক পঠিতং মতিয় ছমৈ:। (ধার্য অলীক) (উদকাৎ সংজ্ঞায়াম্)।

বান্ধিতে চ। দত্তে ভবং দন্তার হিতং বা হিত্যোগে চতুর্থী দন্তাম্ ওষ্ঠাং তালবাং মূর্দ্ধান্থ চক্ষুধাম্ উরস্থা নাদিক্যং নস্থা বা।

५७। (मामतात्मर्छत् ।

नमार्गापरत ভवः त्यापर्याः नमारमापर्याः ।

৮৪ । मगर्डा मयुर्गा।

ব্যান্ত পো নিপাত্তে।

৮৫। षरि कृष्णि कलिल मृडास्त्रि नरस्र उत्तेत्रण्।

चारभे ज्वः चारश्यः (कोरक्रसार्मिः कान्यमाः पि पार्ट्सम् चारस्यः वारस्यम् ।

৮৬। গ্রীবায়া অণ্চ। (২০)

তত্র ভবো গৈর্বম্ থেবেয়ম্।

৮৭। গন্তীরাদেশিঃ। (২৪) গান্তীর্যাঃ পাঞ্চলভঃ।

৮৮। অनुशी ভাবাদমুপকুলাদেঃ।

· পারিমুখ্যং পারিহনব্যম্। নেহ- ঔপক্রঃ ঔপশালঃ।

৮৯। চতুর্মাদাদ্যজে। চাতুর্মাঞ্ ব্রতম্।

৯০। সংজ্ঞারা মণ্। চাতুর্মানী পূর্ণিমা।

৯১। অধ্যাত্মাদিন্তা ষ্টিকণ্। (২৫)

অধ্যাত্মে ভবষ্ আধ্যাত্মিকম্ আধিভৌতিকং চাতুর্থিকিঃ

⁽২৩) গ্রীবাশব্দোহত্র তদান্রিত শিরাবাচক:।

⁽২০) গন্তীরে ভবমিতি বিগ্রহঃ। পঞ্চলনোনামাস্করন্তদন্থিতবঃ পাঞ্চলতাঃ। আদিশব্দোহত পঞ্চলন শক্ষাত্র গ্রাহকঃ। বথা চ গন্তীর পঞ্চলাভ্যাং যদিতি পরস্তুম্।

⁽২৫) আন্তর্গাধকতোতি সপ্তম্যবর্গহন্যনীভানস্তত্তত্ত্ব মধ্যাত্তং। এবমরি

জৈবৃণিকঃ সাম্প্রতিকং সামানিকং সামানগ্রামিকং পারিগ্রা-মিকম্ আমুগ্রামিকম্ ও জি:দহিকম্ ॥ সাম্কান্তরপদাৎ ॥ গ্রহলোকিকং বছলাধকারাৎ (সপ্তম্যা) এলুক, পারলোকিকম্॥ অন্তঃ প্রবিপদাৎ ॥ আন্তর্বংশিকঃ গান্তদেহিকঃ।

৯২। অব্তাদেরিয়:। এতিয়ম্ অগ্রিয়ম্। (২৬) ৯০। জিল্লামূলাদেরীয়:।

অস্থাদীয়ঃ স্যাৎ। জিহ্বামূলীয়ঃ অঙ্গুলীয়ঃ অগ্রীয়ম্। মুখতঃ পার্য তন্ত্রস্থিলোপশ্চ ॥ মুখতীয়ঃ পার্যতীয়ঃ।

৯৪ । বর্গান্তাচ্চ। কবর্গীয়া চবর্গীয়া।

२०। यमीरनी ठार्गटम ।

মিত্রবর্গ্যঃ মিত্রবর্গীণঃ মিত্রবর্গীয় । শব্দে তুকবর্গীয়:।

৯ । সধ্যাশাগীয়েয়াঃ। মাধ্যমঃ মধ্যমীগও মধ্যীয়ঃ।

৯৭। লো মধ্য नित्रक मन्य । মাধ্য नित्र । (২ 1)

ab । कर्नला है। मिक्ड खिशाः कृषः १ (२b)

্ কর্ণেভবং ভূষণং কর্ণিকা, ললাটিকা।

৯৯। তম্ম ব্যাখ্যানমিতি চ ভিঙাদেঃ।

ভত্ত ভবঃ ততা ব্যাখ্যানঞ্চ ইতি অর্থরয়ে ভিঙাদেরণা।

ভূতাধিশকান্ত্যাং টিকণি আরিভোতিকম্। সমানতকাদি গাঞে গ্রেঞ্জ সামানিকং, দেহাদেহধারণানৃষ্ধিং পরতঃ উদ্ধাদেহস্তত্র ভব ঔর্ধদেহিকঃ।

⁽२७) वा। व्यवसाज बाहकसामिनम्स्।

⁽२१) अनिर्वार्य मध्य मध्यम्बारमभण ।

⁽২৮) লুকু স্বামোর্জিনান্তার আমিটোমান্তের । স্থানান্তালজিনা-বাচ্চ ভবে বিহিত্ত পুক্ জাং। অবধানি ভবা আমধা বিদ্যা, আমেদ ইত্যপ্রভারক পুক্। অধিটোমানেভবে বিহিত্ত পুক্ ভাং,ি মন্ত্রভেং। অধিটোন: রাজস্বঃ, ইদম্পচারাং নির্মিতি চার্জাঃ, স্থান্যোহণীক্ত

দরঃ স্থাঃ। তিত্তি ভব ক্তিডো ব্যাখ্যানখা তৈতো গ্রন্থ: গোপঃ কার্ত্তঃ। *

১০০। দশ্বং কৃতন্ধিতাদে ষ্টিকণ্। ভবব্যাথ্যানয়োঃ। কাৰ্তনিতিকং বাস্থণত্বিকৃষ্।

>•>। घाजुब्यान्त्रगानिन्यान्ते।

ভবব্যাখ্যানয়ে স্থিকণ্ স্থাৎ। ঘ্যচঃ-নৈষ্ঠিকঃ, ঋতঃ-চাত্-হোতৃকঃ, ব্রাহ্মণাদেঃ ব্রাহ্মণিকঃ প্রাথমিকঃ আধ্বরিকঃ আগ্রি কৌমিকঃ পাঞ্চেদিনিকঃ পোরশ্চরণিকঃ নামাখ্যাতিকঃ। বিগৃহী গাচচ। নামিকঃ আখ্যাতিকঃ, ঋচঃ আর্চিকঃ।

>•২। ঋষেশ্চাধ্যায়ে। বাশিষ্ঠিকোহধ্যায়: বৈশামিত্রিক:।

১-০। পোরোডাশ পুরোডাশাট্টিক:। ভবব্যাখ্যানয়োঃ-পোরোডাশিকং পুরোডাশিকী।

3.8। इन्तरमा यनरारी। इन्नयः इन्निमः।

১০৫। ঋগয়নাদেরণ্। (২৯)
আর্গরনঃ নৈরুক্তঃ শৈকঃ যোগঃ নৈর্মান বৈয়াকরণঃ।

উক্তে ভবব্যাখ্যানে।

এব, ডভেদমিতি বিবক্ষরেতি চ তছতং শ্বনী কুড্যোপেক্ষিত্যনের স্ত্রেরর মিদম্। ^{ক্} ডিঙালেরিতি কিং ! পাটলিপুত্রত ব্যাধ্যানষ্। স্কোশলা পাটলি প্রকষ্।

⁽২৯) ধ। ধাগরন পদব্যাব্যান ছন্দোধান ছন্দোব্যান ছন্দোভাবা ছন্দোবিজিভি ভার নিরুক্ত পুনরক ব্যাক্রণ নিগম বাজবিব্যা করে-বিদ্যা অধ্বিদ্যা উল্লাভ উল্লাভ উল্লাভ উল্লাভ সংখ্যার মুহুর্ছ উপ-নিবদ বিমিও লিকা কোন ভিন্না কার্লাদিঃ।

্ ১০৯ । তত সাগভঃ ৷ (৩০) ৷

व्यवादर्य यथाविहिङ: खार । व्यव्यानागड: व्योष्टरः

১•१। भाषचात्रज्ञष्टिकग्। (७১)

व्यानगणागउः वानगिकः (मोक्किकः।

১०৮। अधिकातित्रग्। (७२)

ष्टिक त्गार भवामः (मोखिकः कार्कनः टेडथंश।

১०৯। विमारयानि अवस्करकार्कन्।

বিদ্যাযোনিকৃতঃ সম্বন্ধোষেশং তেভ্যোহকণ্ স্থাৎ। উপাধ্যায়াদাগতং ঔপাধ্যায়কং আচার্য্যকং পৈতাসহকং মাতুলকম্।

১১০। ঋতষ্ঠিকণ্।

তথাসম্বন্ধ ঋদন্তাটিকণ্ স্যাৎ । হোতৃকং মাতৃকং স্বাস্কম্ ॥ পিতুর্যুচ্চ ॥ পিত্র্যুং গৈতৃকম্ ।

३३३। (शांखानत्रवर्।

তস্যাঙ্গমিত্যর্থে বক্ষ্যমাণপ্রত্যয়বদ্যোত্তাং। ও পগ: বাদাগতং ও পগবকং অণ্ দাক্ষ্য।

১১२। ऋ প्राट्डजू मनुषाचा। यहहे ह।

সমান্তেরিরাগতং সমরপ্যং সমময়ং দেবদন্তরূপ্যো দেব-দত্তময়ঃ। পক্ষে গহাদিছাদীয়ঃ সমীয়ঃ। অণ্ দৈবদন্তঃ।

১১৩। প্ৰভৰতি।

⁽৩০) ইহ মুখ্যাপাদানগ্ৰহণাৎ শ্ৰন্থাপান্ত ব্ৰহ্মপাদানত ইভাত ৰ ভাৎ।

^{, (}৩১) আয়: সামিগ্রাকোভারঃ।

^{্--(}৩২)-এবং, ভতিক কৃষ্(শ)ৰ-ছতিক উল্লেখন উল্লেখন জ্বি কৃষি কৃষ-পূৰ্ব ভতিকাদিঃ।

তত ইত্যেব, ভতঃ প্রভবতীত্যর্থে যথাবিহিতমণাদয়ঃ স্থাঃ। হৈমবতী রাষ্ট্রিয়ঃ

১১৪। विमृताबः। टेन्म्र्या मिनः।

১১৫। उक्ताऋि পशिषृष्टरश्राष्ट्र। (००)

তদগ্রু ীতার্থ যথাবিহিতম্পাদ্যঃ স্থাঃ। পথিদূতে। চেহ্ন শ্রোমানুতঃ।

১১৬। অভিনিক্রণমতি দ্বারে।

তদভিনিজ্ঞানতীত্যথে যথাবিহিতমণাদয়ঃ হয়ঃ ছারঞেৎ। শ্রোমং কাত্যকুজ্ঞা ৰার্য। (৩৮)

১১৭। অধিকুট্য কুতো প্রস্থ:।

ভদাবক্রতা কর ইত্যথে বথাবিহিতং স্থাৎ। স্থভদোমধিকুত্য ক্রতে: গ্রন্থ: সোভদ্রঃ ভৈমর্থী সাথ্যায়িকা কাদম্বরী
কথা জ্যোতির্নিক্ত্য ক্রতো গ্রন্থ: জ্যোতিষ্ম্, ইতি সংজ্ঞাপূর্বকো বিষ্ণান্ত্য ইতি বৃদ্ধাভাবঃ।

·১১৮ । चन्द्यमन्हारमतीरम्गार्टमवाञ्चनारमः ।

ষন্থাৎ কিরাতার্জ্নীয়ঃ শ্রেনকপোতীয়:, যমসভাদে: যমসভীয়ঃ শিশুক্রনীয়ঃ ইন্দ্রজননীয়ঃ প্রভ্রাগমনীয়ঃ সীতা-স্বেষণীয়ং কাব্যং শিষ্যোপনয়নীয়োহধ্যায়ঃ। অদেবাস্থরাদে-রিতি কিমৃ ? দৈবাস্বঃ রাক্ষোগন্ধবিঃ।

১১৯। গোহত নিবাসঃ। অত্তার্থে যথাবিহিতং স্থাৎ। আগন্ধে নিবাসোহত জৌদঃ ১২০। অভিজনশ্চ।

[·] **তিভ্যালীবিভি পূঞ্জ বিভীৱৈক বচনাত্তং পদ**মৃ। ·

শ অভার্থে যথাবিহিতং স্থাহ। আপ্রোহভিজনোহস্ত ভ্রোমঃ সৈম্বর কাশ্মীরঃ তাকশীলঃ অভিজনঃ কুলস্থানম্।

১২১। शिदातीसार खन्नीविष् ।

রোহিতগিরিরভিন্সন এবাং রোহিতগিরীয়া অন্ত্রজীবিনঃ।

>२२। भनाजूतामोत्रगः भागाजूतीशः।

১২০। ভূলীবর্শ্বজীভ্যাং টেয়ণ্। তৌদেয়ং বার্শ্বভেয়ং।

३२৫। मिखिकानिट्डा गाः। (२८)

শণ্ডিকোহভিজনোহস্ত শাতিক্যঃ চাপক্যঃ শাক্যঃ

॥ কুচবারাৎ কোচবার্যাঃ ॥

১২৫। (मवाः। (१८)

সোহস্থ সেব্য ইত্যর্থে যথাবিহিতঃ স্থাৎ। বৃদ্ধঃ সেব্যো-হস্ত বৌদ্ধঃ শ্রোদ্ধঃ।

३२७। वर्षात ष्टिकन्।

আপুপিকঃ মৌদকিকঃ বাহারাঞ্জিকঃ।

>२१। वास्ट्राकार्क्नान्त्रामकः।

वाञ्दानकः चर्च्नकः।

১২৮। গোতক তিয়াখ্যে ভ্যোহকণ বহলম।

গোত্রাখ্যাৎ ঔপগবঃ সেব্যোহস্ত ঔপগবকঃ। ক্ষত্রিয়াখ্যা-ষত্বচনবিষয়াৎ জনপদাৎ আঙ্গকঃ পাঞ্চালকঃ। জনপদিনো-হপি বহুড়ে জনপদবৎ। বাহুল্যান্নেই পাণিনীয়ঃ পৌরবীয়ঃ।

১২৯। তেন প্রোক্তম্।

⁽৩৪) স্বারকেতাভিনিত ন্পন্ন কর্তৃ ইতি শেবঃ সাধাসি ছিনতীতিবং।

^{*} अजािनगरमन रम्भवान राजितिकारकजरना महोत्राखक मृद्धः।

^{(:}e) मिक मर्कामन मक्त देन मेक महे देक मेंच दौर मिक्सिकारिः।

অতার্থে যথাবিহিতং আং। পাণিনিনা প্রোক্তং পাণিনীয়ং সূত্রং তদধীতে পাণিনীয়ঃ প্রোক্তালুকু মাথুরী বৃত্তিরিতি তত্ত ভবার্থে।

১৩০। তিভিরিবরতন্ত্ব খণ্ডিকোখাদীয়ণ্।

তিত্তিরিণা প্রোক্তং তৈতিরীয়ং। তদধীতে বেদ বা তৈতি-রীয়শ্ছাত্রঃ, বারতস্তবীয়ং খাণ্ডিকীয়ং ঔথীয়ম্।

> १ । इंगलिदनार्विष्त्।

ছাগলেয়ি ছন্দঃ। বহুত্বে ছাগলেয়িনশ্ছাত্রাঃ।

১৩२। कोशिकाषिडा श्रविष्डा विन्।

কৌশিকেন প্রোক্তং কৌশিকি চ্ছন্দঃ; তদ্ধীতে বেদ বা প্রোক্তাল্লুক্। কৌশিকিনশ্ছাত্রাঃ কাশ্যপিনঃ শৌনকিনঃ কলাপিশিষ্টেডাঃ॥ ঔলপিনঃ হারিদ্রবিণঃ॥ বৈশস্পায়নশিষ্টেড্ন ভাঃ। আলম্বিনঃ ক্যৌলিঙ্গিনঃ ইত্যাদি।

১৩০। পুরাণপ্রোক্তত্তাক্ষণকল্পে চ।

তান্তরী মন্ত্রং পৈদী কল্পঃ।

১৩৪। কলাপিনোহণ্। কালাপম্।

२०१ । कठेठतकाञ्चक् ।

প্রোক্ত প্রত্যার পূক্; কঠেন প্রোক্তঃ কঠঃ চরকঃ ভদধীয়তে কঠাঃ।

্ ১৩৬। কর্মপণারাশধ্যাভ্যামিন্ ভিক্স্পৃত্তে।

কশ্বন্দেন প্রোক্তং ভিক্সূসূত্রং কর্মান্দ ভদখীতে কশ্মন্দী ভিক্ষু: পারাশরী।

२०१। निनानि क्रमायाणार निनित्ने निष्ठा । निनानिना दक्षाकर निष्ठार निष् रेमनानि जम्बीग्रटण रेमनानिद्या निष्ठाः क्रमायिनः। ' ১७৮। टिउरेनका मिक्।

শতার্থে ষধাবিছিতং স্থাৎ। সূর্য্যেশ একা সমানা দিক্ সৌরী বলাকা, সৌদামিনী বিছাৎ শ্রোমঃ পদাঃ।

১०৯। छेत्रा यर।

উরদা একা দিক্ উরস্থোহার:।

১৪•। উপজাতম্।

তেনোপজাতমিত্যর্থে যথাবিহিতং স্যাং। পাণিনিনা উপজ্ঞাতং প্রথমং কুতং পাণিনীয়মকালকং ব্যাকরণং, শূরে-ণোপজ্ঞাতঃ শৌরঃ সংগ্রামঃ।

১৪১। কুতো গ্রন্থ:।

তেন কুতমিত্যর্থে যথাবিহিতং স্থাং । গ্রন্থানে । বারক্ষানো গ্রন্থা

১৪২। मिक्कारमः मः छात्राम्।

অণ্ মক্ষিক রা কৃতং মাক্ষিকং সধু কোঁদং ভামরং বারাটং বাতপং গামু তিম্।

১৪০। कूनानारमत्रकग् । (१५)

ক্লালেন কৃতঃ কোলালকো ঘটঃ ঐ স্থ্রিকং জ্ঞানস্।
ক্লাল বক্ষট চণ্ডাল নিবাদ কর্মার ই স্থ্রির দৈবরাজ পরিষদ্
বস্থু অন্ত্রু উক্ল ব্রাহ্মণ্কু ক্রকার খপাক। তেন কৃতং
শোবপাককম্।

১৪৪। তখ্যেদম্।

অত্রার্থে যথাবিহিতং স্থাৎ। উপগোরিদম্ ও পদাবম্ আধ্বর্যাবং রাষ্ট্রিয়ং পারিষদঃ, শাস্ত্রীয়ং ন পরিভাজেৎ।

⁽८७) এবং, वक्रफ स्मा मित्रिधु रमित्रक्षं बहु क्षेत्रे क्रस क्ष्मानार्वितं 📑

১৪৫। সংবোদুরণ্ বহিতৃশ্চ। সংবোদুরিদং সাংবহিত্তম্। ১৪৬। আগ্রধঃ শর্বে গোবোধুশ্চ। গঃ স্থাৎ। আগ্রীধুঃ।

589 । श्रिकि मिथटकेय्य । मामिटधनी श्रक्।

১৪৮। রথাদ(পত্র)বাহনপূর্ব্বাদ্যঃ।

রথস্যেদং রথ্যং পরমর্থ্যম্। অবাহনপূর্বাদিতি কিম্? আখরথং চক্রম্।

১৪৯। इन मौता हिक्न्। इन त्यानः हानिकः देमतिक्य्।

১৫০। দ্বন্দাদিকঃ ব্রিয়াং বৈর মৈথুনিকয়োরদেবাস্থরাদেঃ। আশ্বমহিষস্থ বৈরম্ অশ্বমহিষিকা কাকোলুকিকা মৈথুনিকে অতি ভরম্বাজয়েঃ কুটুম্বকরণম্। অতি ভরম্বাজিকা। অদেবা-

ञ्तारमति कि किः, रेमवाञ्चतः तारकागन्नर्यम् ।

১৫১। (शाबामक**न**्।

ঔপগৰস্থেদম্ ঔপগৰকং দাক্ষকং, গাৰ্গকং ন পাণিনে-মুবিত্বাৎ পাণিনীয়ম্।

ৈ ১৫২। চরণান্ধর্মান্ধার্যের।

कठेक धर्म बालारहा वा काठकः कानाभक्य ।

>৫৩। नाश्रखवानिष्णयानरवयु।

এষু গোত্তরণাদকণ্ নান্তি। দাক্ষা অন্তেবাসিনঃ গৌরক্ষা দওমানবাঃ।

Ses । मःचाक्रनकगद्याद्यविन् यन् देवनानिट्डार्न्।

मः वात्मी हेगानास्तार देवनात्मक वन् स्वार । व्यक्तगर्भ-वानः । काक्कीगाः मः वाश्रका लक्ष्मणः (चार्यः वा माकः गार्गः देवनः अर्विः ।

३४०'। ছरमाशास्त्रवीः ।

धन्त्राञ्चा प्रभारती ; हात्मात्राम् अक्षिकाः याद्धिकाः बास्त्रहाः नहानाः नाह्यम् ।

२৫७। देवर्गक्रकारमतीयः। (৩৭) देवर्गक्रकीयः।

১৫९। (कोशिक्षनहास्त्रिशनाम्ग्।

ধর্মান্নায়সং ঘাদে); কৌপিঞ্জলঃ হান্তিপদঃ।

Deb। वांथर्किनिकत्माकत्नाभ= ।

व्याथक्व : । पूर्वः (अर्थाधकातः ।

১৫৯। विकारत।

তস্তা বিকার ইত্যর্থে যথাবিহিত্মণাদয়ঃ স্কুটে। অশানো বিকারঃ আশানঃ, আপুপিকঃ, আগ্নেয়ঃ, স্ত্রৈণঃ মার্ত্তঃ।

১৬•। ञ्चतग्रत्व ह প্রাণ্যোষ্ধিরুক্ষেভ্যঃ। (৩৮)

এভ্যো বিকারে অবয়বে চ যথাবিহিত্মণাদয়ঃ স্থাঃ।
ময়ুরাণাং বিকারোহ্বয়বো বা মায়ুরঃ কাপোতঃ স্ত্রৈণঃ
পোং সঃ। ওষধেঃ দৌর্কঃ মোর্বং। রক্ষাৎ বৈণরং দৈবদারবং
কাপিথং বৈল্বং মাধূকঃ।

১৬১। শম্যাঃ শমীল্চ। শামিলং ভক্ষা শামীলী অক্ক্।

১৬২। ত্রিপুজতুভ্যাং হুশ্চ। ত্রাপুমং জাতৃষ্য।

১৬৩। ময়ড় বৈতয়োরভক্ষাচ্ছাদনয়োঃ। (৩৯)

৩৭। রে। এবং, , আপিশলীয়: কোমগুরীয়: পৌরপ্রীবীয়: ওঁদমেশীয়: ওঁদমেশীয়:।

৩৮। শ্বন অল্রোবিধি শব্দেন লতাদিঃ, রক্ষণকোন বনস্পতিরপি গৃহুতে।
৩৯। মন্ত্র। নতু বিকারাবন্ধবন্ধেরিতি নিমিন্তত্বেনামূবর্ত্তত এব, তথ কিমেডরোরিতি তথপরামশিনা সর্ক্ষনাধ্যতি সভ্যমেতদুগ্রহণং বাধ্যবাধ-

नार्थमिछार काकनमन्नीछ, त्रन्ताणाः आरम्बारम् आर्थनी वान

• বিকারবিয়বয়েরবির সয়ট্ স্থাৎ। অশ্বর্থয়য়ম্ আশ্বংরজভয়য়ং রাজভং বা, লোহময়ং লোহংবা, কাঞ্চনময়ী কাঞ্নী বাসয়ন্তিঃ কপোভয়য়ং কাপোভং বা, দুর্বরায়য়ং দৌর্বং বিল্লয়য়ং বৈল্লং মধূকয়য়ং মাধূকয়্ অপূপয়য়ঃ আপূপঃ স্বস্তিকঃ। অভক্ষাচ্ছাদনয়েরিভি কিয়্ ? মৌদ্পঃ সূপঃ কাপ্রিং বাসঃ ।

১৬৪। निত্যমেকাচ भंतारमः। (৪०)

মুথারং বাজারং জ্জারম্। শরাদেঃ শরমারং দর্ভমরং। শর দর্ভসোম বল্লজ কুশ তৃণ। অপো যণ্চ। আপাস্থামায়ম্।

১৬৫। ব্ল্রাদ্যতঃ প্রায়েণ। আত্রময়ং শালময়ম্।

১৬৬। তৎপ্রভবে চ তদাদেঃ। তন্ময়ঃ যন্ময়ম্।

১৬৭। গোঃ পুরীষে। গোময়ং গব্যমম্বতা।

১৬৮। ত্রীহেঃ পুরোডাশে।

मत्राष्ट्रिनं बटका श्वः।

ত্রীহিময়ঃ পুরোডাশঃ, ত্রৈহমন্তর।

় ১৬৯। তিল্যবাভ্যামসংজ্ঞায়াম্।

जिलमग्रः, यवमग्रम्। मः छात्रास्त्र रेजनः यावकम्।

১৭০। পিকাচ্চ। নিত্যম্, পিকীময়ম্।

১৭১। সংজ্ঞায়াং কঃ। পিউকঃ পিষ্টিকা।

যষ্টিরিতি ন স্যাদিতি, কাপোতমিত্যবয়বে চেতি প্রাপ্তের, কিঞ্চ, অতএব বিশ্বাদিভ্যোহণিতি ময়ড়্বাধকং মুনিস্ত্রমনেনাপেক্ষিতমিত্যুদাস্ত । বিশ্ব শ্রামাক পীযুক্ষা পাটলা চৈববেণবং। গবেন্থ কণ্টকারী চ কর্কজ্ঞঃ পীত দারু চ। রজতং কাঞ্চনং লোহ সীসোজুম্বর দারু চ। কংস নীপত্রীহন্দার কার্পাদায়া ইতীষ্যতে। কাপ্তমুদ্ধা মস্বর গোন্ম ইক্ষু কুটোর ইত্যাদি। ৪০। নি। রত্ব শরু দর্ভবন্ধ সম্কা সাম চ। লোম কুটালং তৃণবিভ্যেব

३१२। न देववलातवादमः।

এভ্যোবিকারাবয়বপ্রত্যান্তেভ্যো ময়ট ্ন স্থাৎ। বিকা-রে দৈবদারবোযুপঃ। শমীলস্থ শামীলঃ।

১৭০। তালাদ্ধসুষি। তালং ধসুঃ।

১৭৪। हाढेकाशीमारन।

हां हेट का निषक्ष का छक्त भर । इंह ७ विक देवस्य गया ।

১৭৫। ক্রীতবং সংখ্যাপরিমাণাই।

আভ্যাং বিকারে ক্রীতবৎ প্রভায়াঃ স্থাঃ। যথা ক্রীতার্থে শত্যঃ শতিকঃ; তথা বিকারেহ্পি, এবং নৈদ্ধিকঃ॥ ক্রীতব-লুক্চ॥ দ্বিসহস্রং, দ্বিসাহস্রং, জাতরূপম্।

১৭৬। উষ্ট্রাদকণ্। উষ্ট্রস্থ বিকারোহবয়বো বা ঔষ্ট্রকঃ।

১৭৭। উমোর্ণাদ্বা।

खेमांत्रा विकातानि अमकः श्रीमा या, श्रीनंकः श्रीनं वा ।

३१४। अगुरिकेश्व ।

र्जरनश्रम् र्जरनशी जञ्जा, वनामरनव र्जनः हन् ।

১৭৯। পর্দো यः। পরস্থা

১৮০। দ্রোশ্চ। (দ্রুর ক্ষন্ত দ্যাবয়বোবিকারো বা) দ্রবাম।

১৮১। মানেবয়৪। ত্রুবয়ং মান্য।

১৮२। পুष्पिष्तम् तियु मुक्तछ्तम्। (८১)

এষু বিকারাবয়বয়োকেক্তপ্রত্যয়স্ত লুপ, স্থাৎ। পুল্পে জাত্যাদিভাঃ॥ জাতী মালতী মল্লিকা কেতকী শেকালিকা

^{8)।} পূপা। হরীতক্যান্নিকা পখ্যা মৃহীকা পিপ্ললী কণা। চিঞা কোষা-ডকী জাক্ষা কর্কটী কন্টকারিকা। বৈতপাকাচ কর্কার: কোলির্ভলাতকী ডবা। জাতী চ জমুকা মোন্টাচপ্যেব মেলাব্লাদয়:। বিদার্ঘ্যাদেরিতি,

চম্পকো বকুলঃ পুষ্পম্॥ পাটলায়া বা । পাটলা পাটলং বা । ১৮৩। ফলে ফলপাকান্ত হরিতক্যাদিভাঃ।

যবানাং কলানি ঘবাঃ তিলাঃ মুদ্গাঃ মাষাঃ গোধ্মাঃ ব্রীহয়ঃ কদলা। হরীতক্যাদেঃ হ্রীতকী কোষাতকী দ্রাক্ষা কোলিঃ ক্রমুকঃ কণ্টকারিকা ॥ বিদার্য্যাদেমু লৈ ॥ বিদারী ব্রহতী।

३৮८। क्लन्यमशारिषः।

এভাঃ ফলে লুক্ স্থাৎ। লিঙ্গং ফলস্থৈৰ বদৰ্য্যাঃ ফলম্।
তদ্ধিতলুকি লুক্ স্থিয়াঃ—বদরম্ আত্রং পনসং খর্জুরমিত্যাদি॥
আনলক্যাদের্কা॥ আনলক্ষ্ আনলকী। কোলেরিদচ্চ॥
কোলং কোলিঃ।

১৮৫। न क्षकारमंड। (82)

এভ্য লুপ্লুকে । স্থাতাম্। প্লাক্ষং ফশং নৈয়গ্ৰোধং ৰাহত্য্ ঐস্থাম্ আখখং কাকৃভং বৈণৰং কাপিথম্।

. ১৮৬। জম্বাবা।

জন্বা লুপ লুকো বা স্থাতাম। জন্ম ফলং জন্ম চ জান্বকং।

১৮१। विद्यापित्वा नूकः शूष्ट्र ह।

এভ্যো লুখানিষেধ*চ। বিল্লং বৈল্লং বা ফলং পুষ্পাঞ্ অশোকম্ আশোকং চ, কদস্বং কাদস্বঞ্চ, করবীরং কারবীরম্।

১৮৮। कश्मीय शत्रभवतान् यगरनी नुक् ८६ स्वरमा ।

বিদার্যা: ভ্রতী মুস্তা বৃহতী শালপর্ণাপ। গ্রন্থারী চ হরিছাদ্যা জ্রেরা শক্ষ্যানুসারত:। সংক্ষাহয়ং বছলপ্রপঞ্চঃ।

⁸२। न। श्रक्त क्रात्वाध दृष्ठी क्लबायबादननः। **रेश्रूणी भिक्ष**्रास्थि क्लियाः भिष्ठेवार्यात्रकः। क्षेष्ठाः क्रांल रक्षे नकः।

भाष्णाः विकारत यग् अत्यो छाजाम् । जेशयरशान् क् छ। कः मीश्रक्ष विकातः काः छः भात्रभवम् ।

১৮৯। তত্তদশ্মিন্ বা প্রস্তুতমিতি ময়ট্।

তবেদ প্রস্তাত তদস্মিন্ বা প্রস্তমিত্রর্থি ময়ট্ স্থাৎ। অয়তমেব প্রস্তম্ অমৃতময়ম্। অনং প্রস্তম্মিন্ অনময়ো যজঃ। অপূপময়ম্ পর্বা।

১৯ । मगृश्वक वर्षु ।

অপূপাঃ প্রস্তা আপূপিকম্ অপূপময়ঞ্চ, বাটকিকী বটকময়ী যাত্রা । উক্তাঃ প্রাগদীব্যতীয়াঃ।

১৯১। আত্রহ্মচর্যাট্টিকণ্। ত্রহ্মচর্যসংশব্দনপর্যন্তং টিকণধিকারঃ।

১৯২। তেন দীব্যতি থনতি জয়তি জিতম্।

এম্বের্টিকণ্ স্থাৎ। হলেন দীব্যতি খনতি জয়তি জিতোবা হালিকঃ খানিত্রিকঃ। অকৈদীব্যতি জয়তি জিতো বা আফিকঃ।

১৯৩। তরতি।

তেন তরতীত্যর্থে টিকণ্ স্থাৎ। গোপুচ্ছিকঃ তাল্তজালিকঃ। ১৯৪। দ্বাজ্নোভ্যামিকঃ।

দ্বাচ্ ঘটেন তরতি ঘটিকঃ, কুম্ভিকা স্ত্রী বাস্ত্কঃ নাবিকঃ। ১৯৫। বেতনাদিভো জীবতি।

এভ্যন্তেন জীবতীত্যর্থে টিকণ্ স্যাৎ। বৈতনিকঃ জালিকঃ বার্তিকঃ।

>>। चात्र्यानीयम्ह। चात्र्यीयः चात्र्यिकः। >>। वस्र क्य विक्रमाणिकः। বম্নোমূল্য°, তেন জীবতীত্যর্থে ইকঃ স্থাৎ। বম্নেন জীবতি ব্যাসকঃ ব্যাসক। ব্যাস্থা, ক্রেয়িকঃ বিক্রায়িকঃ। সংঘাতাচ্চ। ক্রেয়বিক্রয়িকঃ।

१ ३५ १ ३५ हे इस्मिन्नार्य

এভ্যেনে হরতী ন্তাংগ টিকণ্ আং। ভ'ংস্পিকঃ। ভিজুপিকঃ।

১৯৯। ভন্তাদিভ্যস্থিকঃ। (৪৩) ভন্তরা হরতি ভন্তকী।

२००। विवधवीवधाष्ट्रा ।

विবদেন হরতি বিবধিকঃ বীবধিকঃ। পক্ষে বৈবধিকঃ।

२०)। वा कृषिनिकाशाः।

কুটি নিকয়া গত্যা হরতি কোটিলিকী গণিকা।

২০২। নির্ব্রেহকদ্যতাদেঃ। (৪৪)

এভ্যন্তেন নির্বৃত্তার্থে টিকণ্ স্থাৎ। অক্ষূত্তেন নির্বৃত্তং আক্ষ্যুতিকং বৈরং, জয়াপকৃতিকম্।

२००। शाकारमित्राः।

পাকেন নির তিং পাকিমং ফলং, সেকিমা লতা কুটিমা ভূঃ দানিমঃ পূর্ণেঃ পূর্ণিমা।

২•৪। বাচিতাহপমিত্যাভ্যাং ককণো।

যাচিতেন নির্ক্তং যাচিতকং মণ্ডনং অপমিত্যেতি যপি আপমিত্যকম্।

৪৩। ভক্তা। ভক্তাচ হংস শীর্ষাদ্যা ভারো হি ভরণং তথা। আংশভার শীর্ষভারো কেচিদিচ্ছন্তাম অপি॥

৪৪। নি। অক্ষণ্ড জয়াপকৃতি জংঘাপ্রহার সন্থান্ধ পাদ বেছন কণ্ডক-মর্জন গভারত গভারুগত গমাগ্রম যাভোগ্যাত। २०৫। मःश्रुखेश्।

তেন সংস্কৃমিত্যর্থে টিকণ্ স্থাৎ। দল্পা সংস্কৃষ্টং এক্ট-ভূতং দাধিকং গোডিকম্।

२.७। नवना ल्लूक् हा नवरनन मः श्राक्षी नवनः।

२ • १ । मृत्रान्नः मूक्तान मः एका त्रीकी यवातृः।

२०५। नृशाम्बङ्गशिक्छ।

তেনোপসিক্ত ইত্যর্থে টিকণ্ স্থাং। সৌপিকঃ সার্পিজঃ দাধিকঃ।

२०৯। ७इ: महारुख्रामावर्द्धा

এভ্যন্তেন বৰ্ত্ত ইত্যৰ্থে টিক**ণ**্ স্থাৎ। ওজ্স। বৰুতে ভ[্]জসিকঃ সাহসিকঃ খাস্তুসিকঃ।

২১০। চরতি। (৪৫)

তেন চরতীভ্যর্থে টিকণ্ স্থাৎ। শাক্টিকঃ হাস্তিকঃ দাধিকঃ।

२১১। व्यथानिভ्यक्टिकः। (८५)

অখেন চরতি অখিকঃ রথিকঃ।

२) २ । श्वर्गगात्रा ।

শ্বগণিকঃ শ্বগেশিকো বা ॥ তেনেতি নির্ত্য ।

२১७। जनार्श्व या मकारमः।

এভ্যস্তদাহেত্যর্থে টিকণ্ স্থাৎ। মাশবনাহ মাশব্দিকঃ কার্যাশব্দিকঃ নৈত্যশব্দিকঃ পার্য্যাপ্তিকঃ প্রাভৃতিকঃ।

২১৪। ধর্মাদিভাশ্চরতি।

se। চ। চরিরিহ গতিভক্ষণরোরত এতহুভয়ম্পাহাতম।

३७। च। चत्रकारवनात्मे ह गातातातातः उथाकरः। चनर नर्द इत्था शेरित्रम् वात्नाध्यर नगः मृष्टः। चलाकर्षम्यात्न चाक्य हेटछात्क। এভাস্তচরতীত্যথে টিকণ্ স্থাৎ। ধার্শ্মিকঃ সাধুঃ আধা শ্মিকশ্চোরঃ, মহানাশ্মীং (ন্দী) ব্রতং চরতি মাহানা(ন্দ)মিকঃ আদিত্য ব্রতিকঃ গোদানিকঃ।

২১৫। চাতুর্মাস্তাদিন্ চ, যলোপশ্চ।
চাতুর্মাস্থ্য ব্রত্ত্বরতি চাতুর্মাদী চাতুর্মাদিকঃ।
২১৬। দেবব্রতাদেশ্চ।
ইণ্ দ্যাৎ। দেবব্রতী অবান্তরদীকী।

২১৭। প্রতীপাদের্ব্বর্ত্ত।

এভাস্তদ্বতি ইত্যর্থে টিকণ্ স্যাৎ। প্রতীপং বর্ততে ক্রিয়া-বিশেষণং বা প্রাতীপিকম্ আদিপিকম্ প্রাতিকৃলিকঃ, পরিমুথং বর্ততে পারিমুথিকঃ সেবকঃ পারিপার্ষিকঃ।

২১৮। পৃছতি হুয়াতাদেঃ॥

এভান্তৎ পৃচ্ছতাতার্থে টিকণ্ দ্যাথ। দৌমাতিকঃ দৌখরাত্রিকঃ।

২১৯। গৃহ্ণাতি विश्वगारमः।

এভ্যন্ত গৃহ্ণতীত্যর্থে টিকণ্ স্যাৎ। দ্বিগুণং গৃহ্ণতি দৈগুণিকঃ। রদ্ধের্বর্দিক। বার্দ্ধিকঃ। ইণ্ চাহত্র দৃশ্যতে বার্দ্ধিঃ প্রাতিক ঠিকো বল্লভঃ আর্থিকঃ লালামিকঃ। পদান্তাৎ প্রাতিপদিকং পৌর্বপদিকম্ ঔত্তরপদিকম্।

२२०। कूनीम मरेशकामना हिकः।

কুশীদিকঃ দশভিরেকাদশং গৃহ্ণাতি দশৈকাদশিকঃ দ ২২১। উঞ্জি রক্ষতি। (৪৭)

তহ্নত তক্ত্ৰতি ইত্যৰ্ষান্তিকৰ্ স্যাব। শাক্ষুস্থতি

३९। छे। छुटमो পভिडामारमहेककर छश्पाकानमुखः।

শাকিকঃ বাদরিকঃ, সমাজং রক্ষতি সামাজিকঃ সামিবোলকঃ।

२२२ পশু পকি मरमहादर्शका हिसा

এভান্তদ্বতীত্যথে টিকণ্ সাথে। মুগং হান্ত মাগিকঃ শোকরিকঃ হারিণিকঃ খাড়িগকঃ। পক্ষিমৎসার্থিৎ পাক্ষিকঃ শাকুনিকঃ মাৎস্যিকঃ মৈনিকঃ।

২২৩। পরিপন্থাত্তিষ্ঠতি চ। (১৮)

পরিপত্ইতি নিপাতনং তহাডিছিতি হতি বা পারিপঞ্চি-কশ্চৌরঃ।

২২৪। পরিপন্থী রিপে)। নিপভ্যেতে।

২২৫। পারায়ণাদেকরর্ত্তরতি। (৪৯)

এভ্যন্তমভ্রিতীত্যর্থে টিকণ সাবে। পরোয়াণকঃ ভৌরা-মণিক: চান্তায়ণিক:। তদন্তাচ্চ, বৈশারায়ণিকঃ।

२२७। अनवहारमधीवि ।

এভান্তদ্বিতী নার্থে টিকণ্ সাথে। পদনীত বাবতি পাদ-বিকঃ আমুপদিকঃ আক্রন্দিকঃ। নাথাস্তাং শৌক্ষনাথিকঃ দাওমাথিকঃ।

২২৭। শবদদ্বাৎ করোতি

षाखाः उरकरताशी ग्रार्थ हिका माधिकः माधिकः क्लालः।

२२४ । त्रमदेविक त्रमवासारमः । (४०)

৪৮। পরিপন্থ ইতি তৎপুরুষাব্যরীভাবাত্যাং সাধু, অতএব নির্দেশা-মন্থিতিঃ, তৎপুরুষপক্ষে বং স্বর্থান্ পথো ব্যাপ্য হস্তি তিন্ঠতি বা, অব্যধী-ভাষপক্ষে; যং পদ্মানং ব্রুমিয়া হস্তি তিন্ঠতি বা পারিপন্থিকক্ষ্যোরঃ।

· sa । পারায়ণং, বেদস্য শাক্তভ বা সমস্তাধায়নম্ .

৫০। স্মৰ্থাণিঃ স্থূত্বাচকশ্ভপ্তিম।

এভ্যন্তৎসমবৈতি ইত্যুৰ্থে টিকণ্ স্থাৎ। সামৰাশ্লেকঃ সামূহিকঃ সামাজিকঃ সামূদায়িকঃ।

२२३। পরিষদোণ্যঃ। পরিষদং সমবৈতি পারিষদ্যঃ।

२० । त्यनाया वा । त्यनार ममरेविक देमकः देमनिकः

২০১। সংজ্ঞায়াং ললাটকুকু দীভ্যাং পশ্যতি। (৫১)

আভ্যাং তৎপশীত্যর্থে টিকণ্ স্থাৎ। যোহি কার্য্যাক্ষমঃ প্রভোর্ললাটমাত্রং পশাতি স লালাটিকং, যোহি কুরুটাং দম্ভ-চর্ম্যাং কুরুটীপাত্যোগ্যমদ্রদেশং বা পশাতি স কৌরুটিকঃ দাস্তিকো ভিক্ষুক*চ।

২৩২। যোজনাদিভ্যো গচ্ছতি।

এভ্যস্তদগত্তীত্যর্থে টিকণ্ স্থাৎ। যৌজনিকঃ যৌজন-শতিকঃ ক্রোশিকঃ পারদারিকঃ গৌরুতল্পিকঃ। (৫২)

२ २०। अভिপशामिक का

প্রতিপথং গচ্ছতি প্রাতিপথিকঃ প্রতিপথিক ।

২০৪। পথট্টিকঃ। পদ্ধানং গছতি পথিকঃ পথিকী।

२०१। नः शश्रु ह।

পথে। বং তাৰ। পছাদেশত। পাছঃ পাছা ত্ৰী।

২০৬। উত্তরাদিপূর্ব্বাৎ পথস্তেনাহৃতঞ্চ।

টিকণ্ স্থাৎ। উত্তরপথেনাহতং গছতি বা **ওত্তরপথিকং**

জাঙ্গলপথিকং শাঙ্কুপথিকষ্ আজপথিকং বারিপথিকম্ 🕫

২৩**। স্থলবারিভ্যাং মধুক্মরীচ**য়োর**গ**্।

म्हानभार वातिभाष्य् । मधुकभाष्य्, मत्रोहभाष्य्।

৫>। व्यर्थनियम्भाज भरका। ६२। भात हेक्सारको शक्कांकरेमप्नार्यः।

२७৮ । उन्न भग्रंग्।

অত্রার্থে টিকণ্ স্থাং। শুল্ল ধর্মনাচারঃ শৌল্কিঃ, আপশিকঃ, সপজ্যা ধর্ম: সাপজিকঃ।

२०२। (राखारमत्। (८०)

হোতুর্দর্শং হোত্রমৃ উদগাত্রং, মহিষ্যা ধর্মং মার্হিষং পোরোহিতং প্রাক্তাপতম্।

২৪০। বিশদিভূর্বিশক্ত 🕫 । বৈশস্ত্রম্।

২৪১। বিভাজয়িভূর্ণিলোপশ্চ। বৈভালিত্রম্।

২৪২। তদক্ত পণ্যম্।

অত্তার্থে টিকণ্ স্থাৎ। মোদকঃ পণ্যনস্থ মৌদকিক: লাবণিকঃ আপূপিকঃ।

२८७। कि नता (पष्टिकः। (८८)

किनंतर शक्क खुर भगुत्रक किनतिक छेमीतिक:

२८४ । भनानुत्ना वा।

भागानुकः भनानुकः (भनान् शक्षप्रगम्)।

२८९। निज्ञम्।

তদশ্য শিল্পমিত্যর্থে টিকণ্ স্থাৎ। মুদঙ্গবাদনং শিল্পমশ্য মার্দ্ধিকঃ, বৈণবাৎ বৈণবিকঃ, বাংশিকঃ।

२८७। वाश्न् मङ्जूक सर्वतार।

০০ হো। অত তক্ত দ্বামিতি ক্রমনীবর:। অবক্রয়: ইতি স্নিঃ প্রাণনার। মহিষ্যাকে ইণিতি সুত্তি মহিষী। প্রজাগতি প্রজাবতী প্রদেশিকা বিলেশিকা অন্তর্নশৈকা পুরে।হিতৃ মণিণালি অনুচারক হোত ষ্ক্রমান। মহিষ্যাকি:। অবক্রয়: ভিদ্নশালাশুবনিশ্বতরপ্রনিয়ত্তকালসালীয়তে সউচাতে।

বে। কি। কিশ(সারং দুল্টুলা শীরং তগরো শুন ওপুস্থা। ছরিজা হরিজপর্নী চ গলকেবিট্টবাডিনঃ স্থাপন কিশরীদিঃ। অণ্বা জাৎ। মড্ডুকবাদনং শিল্পকা মাড্ডুকো মাড্ডুক কিকো বা, ঝার্মরো ঝার্মরিকো বা।

२८१। প্রহরণম। (००)

ত্রদশ্ব প্রহরণমিত্যর্থে টিকণ্ স্থাৎ। অসঃ প্রহরণমস্থ আসিকঃ প্রাদিকঃ চাক্রিকঃ ধানুকঃ পারখবিকঃ।

২১৮। শক্তি যান্ত ভাগ টিকণ্।

শাক্তीकः भाक्नीकी याष्टीकः याष्टीकौ।

২৪৯। অস্তি নান্তি দিউ।মতিঃ।

এভাঃ সাহস্য মতিরিভার্থে টিকণ্ স্যাৎ। অস্তীতি মতি-রুস্য আন্তিকঃ নাস্তিকঃ দৈষ্টিকঃ প্রামাণিক ইত্যর্থঃ।

२००। भौत्रम्। (०७)

ভেদস্শীলমিত্যথেঁ টিকণ্ স্থাৎ। পারুষকঃ কারু-ণিক্যু আফোশেকঃ।

२०)। इंद्यानिट्या वः। (११)

. প্রক্রদোঘাচ্ছাদনং ছত্তং ভচ্ছীনসন্য ছাত্রঃ, ছাত্রা স্ত্রী, শৈক্ষঃ ভাপসঃ।

५७२ । कर्फाश्यस्य बुक्रम् ।

অত্রার্থে নথাবিহিতং স্যাৎ। একমন্তদধ্যয়নেইবপাঠ-নক্ষণং কর্ম নৃত্যন্য ঐকান্তিকঃ দ্বৈয়ন্তিকঃ, ঐকরূপিকঃ ঐক-গ্রন্থিকঃ।

ec। था। शक्तिग्रत्वरत्मिकि शहत्रविभाष्ट्रम्।

ি ৫৬। শী। পক্ষশকোহতা পক্ষবচনপ্রমূপর্চারীৎ। 🦠 🦈 🦫

বে । ই টি ইং তপং প্রা ভিক্ষা শিক্ষোপন্থানকর্ম চ । সভ্যানুতেই শি-সর্গাং পিরিকা ক্ষিরিত্যপি। প্রোরোহ, ছা বুভূকা চুরা তিভিক্ষা বিশ্বধা বিশিব ভকা উদহান প্রোডাবিকা চুকা মিদ্র ইটাকিং ्र १७ । वस्त्रह् शृक्षणमानिकः । प्राप्तमाणिकः, खार्याममञ्जूष्ट्रिकः ।

२०४। जमरेया मौग्ररण नियुक्तम्।

অত্তার্থৈ টিকণ্ স্যাহ। অপ্রভোজনং নিযুক্তমশ্মৈ দীয়তে আগ্রভোজনিকঃ প্রাথমকল্লিকঃ প্রাণিকঃ মাংসিকঃ মাংসৌদনিকঃ।

২৫৫। ভক্তাদণ্চ। ভাক্তঃ ভাক্তিকঃ।

ে ২৫৬। ওদনাট্টিক:। (৫৮)

ওদনং নিযুক্তমশ্মৈ দীয়তে ওদনিকঃ।

২৫৭। হিতং ভক্ষাৎ ।

তদব্ম হিতমিত্যর্থে ভক্ষাৎ টিকণ্ সাং। অপূপা হিতমব্মৈ আপূপিকঃ মৌদকিকঃ।

২৫৮। তত্ত্ব নিযুক্তঃ।

অত্তার্থে টিকণ্ স্যাৎ। দ্বারে নিযুক্তো দৌবারিকঃ শৌল্কিকঃ আগারিকঃ।

२৫৯। भगातास्त्रानिकः। दिवागातिकः ভाणागातिकः।

२७०। धेकागातिक एन्होरत ।

িনিপাত্যতে। ঐকাগারিকশ্চৌরঃ ঐকাগারিকী।

२७)। व्यशीरङश्तमकालाए। (६२)

৫৮। ত। নমু আণামাংসৌদনাট্টকণিতি ম্নিমতমবমত্য কথমিদস্কৃৎ ? তৎ কিমিতি ভাণিকীভাষ্য ইত্যনিষ্টং স্যাং। টকনি পুংৰভাৰ ভাৰ-সভেনৈবং কোগধতাদলি চ'স্যাং। তত্মাবৈচিত্ৰাৰ্থনেৰমন্ত্ৰীৰ । কি ১ ১৪ চ

eb। वा। तमन्त कामन्त (समकानर एको मेळ् मधारीः, तमने कर-कालनिविक्षप्रमाप्रतनिविक्षकार्विशेष्ठरणः देखाएँ मिनिटक्ष्यमेतिः

তত্তাধীত ইত্যথে নিষিদ্ধদেশকাল। টিকণ্ল্যাৎ। শ্বাশানিক: চাতৃষ্পথিকঃ। চাতৃৰ্দশিকঃ আউনিকঃ।

২৬২। ব্যবহরতি কঠিনাস্তাদেঃ।

এভ্যস্তত্র ব্যবহরতি ইত্যর্থে টিক্র্ স্যাৎ। বংশক্ষ্ণিনে ব্যবহরতি বাংশক্ষ্ণিনিকঃ প্রাস্তাবিকঃ সাংস্থানিকঃ।

२१७। वमन्त्रावमथारमः।

এভ্যন্তত্ত্ত্ত বসভীভ্যর্থে চিকণ্স্যাৎ। স্বাবস্থিকঃ, নৈক-টিকঃ শাসনিকঃ বার্ফ্য্লিকঃ।

२७८। (नाकमर्वाताकरनमा९ थाएछ।

এছ্যন্তত্ত্ব খ্যাত ইত্যর্থে টিকণ্, স্যাৎ। লৌকিকঃ সার্ব্ব-লৌকিকঃ বৈদিকঃ।

২৬৫। তথ্মৈ প্রভবতি সন্তাপাদেঃ। (৬•)

এভ্যোহতার্থে টিকণ্ স্যাৎ। সন্তাপায় প্রভবতি সাম্তা পিকঃ। সাংগ্রামিকঃ।

. २७७। द्यानाम्यकः। त्यारना द्योनिकः।

২৬৭। কর্মা উকণ্। কর্মণে প্রভবতি কামু কং ধসুঃ।

২৬৮। সমরাতদত্য প্রাপ্তয়।

অত্তাধে সময়াটিকণ্ স্থাৎ। সময়ঃ প্রাপ্তোহস্য সাময়িকঃ।

২৬৯। ঋতোরণ্। ঋতুঃ প্রাপ্তোহস্ত মার্ত্তবং পুষ্পাম্।

२४०। कानामृषः। कानः शास्त्रारुमा कानाः।

ইতি, নাণীয়তে খাণাত ; অমাবদ্যা ওজং হতি শিবাং হক্তি চতুর্দশী। এমা ওকা পেশিবারেয়া জন্মানাঃ পরিবর্জায়েদিভিন্মঃ।

(१००) जोन ब्रांस नाह दक्षक नवात त्वस्त्रः अवः । विक्रमारकोक निर्दर्शनः ध्यानावात जेनाकिकः । अर्व नावस्त्रेत्रन्य सार्व्य क्ष्मदक्षकात्र वृक्षरकाः - २१) । विश्वकृष्टिर्ध विकन्।

विश्वकृष्ठेः कारता चन्न कानिक प्रुगम्।

२१२ । नः नशास्त्रालया ।

্টিকণ্ স্যাহ। সংশয় মাপন্নঃ সাংশয়িকঃ।

२११। ज्यानामनियुक्तानवहरन । (७১)

অনিয়তঃ কালোহস্ত তশ্মিন্ বাচ্যে জকালাটিকণ্ স্থাৎ। আকালিকোমেখঃ, আকালিকীং বীক্ষ্য মধুপ্রবৃত্তিমিতি কুমারঃ।

२ १ ३ व हिटको छ। अक्रांतिका अक्रांतिकी।

२१৫। जनच श्राक्रम्।

অত্তার্থে টিকণ্ স্থাৎ। উৎসবঃ প্রয়োজনমস্থ ও ৎস্বিকঃ ঐস্ত্রমহিকম্।

২৭৬। অশুপ্রবচনাদেরিয়ঃ।

चमू अवहनः अरशासनमग चमू अवहनी व्रम् उत्थाननी व्रम्।

২৭৭। প্রবেশন সমাপদারোছণ পুরণ প্রপতনেভাঙ সপৃক্ষপদেভাঃ।

গেহপ্রবেশনীয়ং, কলহস্মাপনীয়ং। দানং, অখারোহণীয়ং প্রপাপুরণীয়ং অখপ্রপতনীয়ম্।

२१४। वर्गामिट्डा यः।

স্বৰ্গঃ প্ৰয়োজননস্থ স্বৰ্গঃ, মণস্থাং, আয়ুব্যং, কন্তঃ, কুষ্যম্। ২৭৯। বৈশাখোমছে। আমাঢ়োত্ৰভিনাং দণ্ডে। ১৯২১---অণজ্বো দ্বো নিপাতেনতে।

^{· (}৬১)- আনিব্ৰাড আৰু ব্ৰিক ইডাৰ্ম্ড (০০ জন্ম ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক্ষুত্ৰ ক

⁽६२) देव। विभाग खरताक्ष्ममञ्ज, भाषात् खरताक्ष्मभरक्षि विखेरः।

२४०। वार्रादा (५०)

তদর্গীতিপর্যন্তঃ বেহর্ণান্তেয় ইক্সোবিধির্কোদ্ধর:। টিকগ্লুবর্ত্ত এব।

২৮১। সংখ্যায়া অভিশদস্তায়াঃ কঃ। (৬৪) ডভেশ্চ।
আহাঁরে ক্রীতাদ্যর্থে সংখ্যায়াঃ কঃ স্যাৎ। দ্বিকঃ, ক্রিকঃ
পঞ্চকঃ, বহুকঃ, গণকঃ। ডতেঃ প্রতিষেধাপবাদঃ ক্রিকঃ।
অতিশদস্তায়া ইতি কিম্ ় বৈংশতিকঃ সাপ্রতিকঃ পাঞ্চাশৎকঃ।

२৮२। ডাবতোরিক ।

णावञ्चात्रशाया हेकः गार। क्रम् । जाविकः जावरकः विस्थितिधानिकः (का न गार।

২৮০। বিংশতি তিংশদ্ভ্যাং বা।

আভ্যামার্হীয়ে কোঁ বা স্যাৎ। পক্ষে টিকণ চ। বিংশ-তিকঃ বৈংশতিকো বা, ত্রৈংশতিকঃ ত্রিংশংকঃ।

২৮৪। ডকোহসংজ্ঞায়াম্। বিংশকঃ তিংশকঃ।

্২৮৫। শতাদিক্যতাবশতে।

আই রেহর্থে শতশবাদিকয়তো দ্যাতাম্। কদ্য বাধঃ। শতিকোহমঃ শত্যঃ। অশত ইতি কিম্ গাতং পরিগাণ্যদ্য শতকং স্থোত্তং শতমেব।

২৮৬। অর্দ্ধ কং সাভ্যাং টিকঃ।

অর্দ্ধিকং আর্দ্ধকী কংসিকঃ পটঃ।

২৮৭। কার্ষাপণাদ্বা প্রতিচাস্য । 🐍 🗀

⁽৬৩) অভিবিধাবাঙ, অর্থা ইতি ক্রীডং নিমিস্তং ঈশ্বর বিদিতঃ তদন্মির-নৈচু তদহতি ভদর্হতি ওর্থ পাদরতি সম্ভর্তি সংহরতি পচতি ওদস্ত ইতি। (৬৪) তি চ শচ্চ তিশক্তা ভাবতে শুস্ত ইতি বিগ্রহঃ। ততোন্ঞ, সমাসঃ

টিকো বা প্রত্যাদেশন । প্রতিক:, পক্ষে টিকণ্—কার্যা-প্রবিক: ।

২৮৭। শভমান বিংশতিক সহস্রবসনাদণ্।

এভ্য আর্থীয়েহণ্ স্যার। শাত্মানং বৈংশতিকং সাহত্রং বাসনম্।

२৮৮। मूर्भावा। त्मोर्नः त्मोर्नित्का वा।

२৮৯। विशातभाक्षश्रवाष्ठ नूगमः छात्राम्।

আভ্যামার্থীয়স্য পুক্স্যাৎ। দ্বাভ্যাং কংলাভ্যাং ক্রীতং দ্বিকংলং, ত্রিকংলং, অধ্যদ্ধিকংলম্। অলংজ্ঞায়ামিতি কিমৃ? পাঞ্লোহিতিকঃ পটঃ।

২৯•। সহস্ৰ কাৰ্যাপণ স্থৰণ শতুমানাদা।

লুখা স্যাং। ছিসহজং দ্রব্যং দ্বিসাহজং, দ্বিকার্যাপণং দ্বিকার্যাপণিকং দ্বিস্থবর্ণং দ্বিসাবর্ণিকং, দ্বিশতমানং দ্বিশাত-মানং, পরিমানস্যাশাণস্যেত্যন্তরপদর্কিঃ, এবং অধ্যদ্ধসহজ্ঞং অধ্যদ্ধসাহজং অধ্যদ্ধ হবর্ণং অধ্যদ্ধসৌবর্ণিকম্।

২৯১। দ্বি ত্রি বহু পূর্ববাদ্বিস্ত নিকাৎ।

नूथा महार । बाजहार विखाजहार क्यों हर विविद्धः विदेव-खिकः, वह्यविद्धः वह्देविद्धकः, ध्वरः प्रिनिकः विदेविक्यः, जिनिकः जिदेनिक्यः वह्यिकः वह्येनिक्यम् ।

२৯२ । विःশতिकामीनः ।

অশ্বাদাহীরস্য লুখিবয়ে ঈনঃ স্যাৎ। ছিবিংশতিকীনম্। অধ্যক্ষবিংশতিকীনম্।

२৯९। थाती काकिनौडांभीकः (क्वनांखाक।

দ্বিখারীকঃ অধ্যদ্ধথারীকঃ থারীকশ্চ, দ্বিকাকিনীকঃ অধ্যদ্বিকাকিনীকঃ কাকিনীকশচ।

२৯৪। भन भान मानान्यः।

ি বিপণ্যং বিপাদ্যং বিমাস্যং অধ্যদ্ধপণ্যং অধ্যদ্ধপাদ্যং অধ্যদ্ধমাস্যম্। বিধাদেরিত্যের পাণিকঃ মাসিকঃ, টিকণ্।

২৯৫। শতাদা।

দিশতাম্। লুক্চ, দিশতং অধ্যক্ষতাং অধ্যক্ষতাযা। ২৯৬। শাণ্চা

मिनानाम्। हिकन् ज्कि, मिनानः वा, अधार्कणानाः अधार्क-

২৯৭। ছিত্তিপূৰ্কবাদণ্চ। ছৈশাণং তৈশাণম্। ২৯৮। তেন জীতম্।

অত্রার্থে মথাবিহিতং টিকণাদয়ঃ স্থাঃ। নিক্ষেণ জীতং নৈজিকং সাপ্ততিকং দ্বিম্ ত্রিকম্ শতিকং শত্যং দ্বিপাদ্যম্ অধ্যদ্ধমান্ত্র্য

্ ২৯৯। তস্ত্র নিমিত্তং সংযোগোৎপাত্তৌ।

জ্ঞাৰ্থে বিথাবিহিতং টিকিণাদি স্থাৎ। শতস্থা নিমিত্তমধম-বেনি সংযোগঃ শতিকঃ শত্যঃ দ্বিশত্যঃ দ্বিশতিকঃ, সহস্ৰস্থ নিমিত্তমক্ষিস্পান্দনমুৎপাতঃ সাহস্ৰম্ ।

७ • • । (शानुरहार्मः थराभितिमानी चारमर्थ ।

টিকণাদেব্র্রাধা। গোর্নিমিতং সংযোগ উৎপাতো বা গব্যঃ, দ্ব্যচঃ—স্বর্গ্যঃ ধন্যঃ যশস্তঃ আয়ুষ্যঃ। অসংখ্যাদেরিতি কিম্ পঞ্চানাং নিমিত্তং পঞ্চকঃ প্রাস্থিকঃ, অস্বাদেং—আমিকং হাস্তিকম্।

००)। ब्रान्किमाकः। यर श्रार। ब्रान्किमास्।

শেষভদ্ধিতপ্ৰকৰ্ণন

७०२। পুতामीय मह।

गकं। পুৰেশ নিমিত্তং সংবোগ উৎপাতো বা পুল্লীয়ঃ পুলাং।

৩০৩। তদীখন তত্ত্র বিদিতে চেত্যণ ্,পৃথিনী সর্বভূমিভ্যাম্।

আভাং নিনিতাদ্রথেইণ্ স্থাৎ। পৃথিব্যা নিমিতং সংযোগ উৎপাতো বা পৃথিবা৷ ঈশবো বা পৃথিব্যাং বিদিতো বা পার্থিবঃ, এবং দার্ক্রেডিমঃ। অথ তদীশ্বস্ত্রেবিদিতো বৈতি পৃথগ্যোগঃ কর্ত্রন্থ। তার যথাবিহিতং স্থাৎ। তেন ভূমেরীশ্বো বিদিতো বা ভোমিকঃ, বেদে বিদিতো বৈদিকঃ।

৩০৪। তপ্তমনকোপনে, বাতপিতক্লেখসন্নিপাতেভ্যঃ।(৬৫)

অনার্থে বাতাদে ষ্টিকণ্ স্থাৎ। বাতস্থা শমনং কোপনং বা বাতিকং পৈত্রিকং শ্লৈমিকং সানিপাতিকম্।

৩০৫। তম্ম বাপঃ॥ অত্রার্থে টিকণাদরঃ স্থ্যঃ।

উপাতে অগ্নিষিতি বাপঃ, প্রস্থস্ত বাপঃ ক্ষেত্রং প্রাস্থিকং ক্রোণিকং পাত্রিকম্ ক্ষেত্রং পাত্রিকী ভূঃ থাগীকঃ।•

৩০৬। তদস্মিরীম চ রুদ্ধারলাভোপদা শুল্কং দীরতে। (৬৬)

অত্তার্থে যথাবিহিতং স্থাৎ। পঞ্চাম্মির্মা বা র্দ্ধি রায়ো লাভ উপদা শুল্কং বা দীয়তে পঞ্চকে। বিপ্রঃ শতিকঃ।

७ । भुत्रगार्कामिकः।

দ্বিতীয়ং বৃদ্ধাদিকমিসান্ত্রীয়কঃ প্রথমিকঃ বোড়শিকঃ অদ্ধিকঃ ।

२०४। जाशामगढी।

⁽७६) भवनर भाष्ठिः (काशनः वृक्तिः)

⁽৬৬) ত। উত্তমর্ণার ধনারতিরিক্তং দেরং বৃদ্ধিং, জব্যুৎ লাভাঃ উপদাং উংকোচঃ, বটাদিবেরং শুঝং। গ্রামাবেশীবামিগ্রাহ্নতারং আরং

ইকশ্চ। ভাগো বৃদ্ধ্যাদিরশিক্ষাশৈ বা দীরতে ভাগ্যং ভাগিকফ। (৬৭)

৩ - ৯। ভদ্ধরতি বহত্থপাদয়তি বংশাদেয়দাদিভারাচচ।
এভ্যস্তদ্ধরত্যাদ্যর্থেষু টিকণ্ স্যাৎ। বংশং হরতি বছতি
উৎপাদয়তি বা বাংশিকঃ বাল্ল্জিকঃ কৌটজিকঃ। বংশাদিপূর্বিভারাচ্চ, বাংশভারিকঃ বাল্ল্জভারিকঃ।

०) । त्या १ कः ॥ त्याः इत्र त्या कः।

৩১১। বস্নাদিকঃ । বস্সিকঃ।

৩১২। সম্ভবতি সংহরতি পচতি প্রস্থাদেং।

এভ্যঃ সম্ভবতীত্যাদ্যথেষু টিকণাদ্যঃ স্থাঃ। প্রমাণাদন-তিরেকঃ সম্ভবঃ, প্রস্থা, শুস্থাতি সংহরতি পচতি বা প্রান্থিকঃ কটাছঃ খারীকঃ কৌড়বিকঃ।

৩১০। পচতো দোণাদণ্ট। দোণং পচতি দৌণং দৌণিকঃ।

- ৩১৪। বাহঢ়কাচিতপাত্রাদীনঃ। (৬৮)

পক্ষেটিকণ্। আঢ়কং সম্ভবতি সংহরতি পচতি বা আঢ়-কীনা আঢ়কিকী স্থালী আচিতীনঃ আচিতিকঃ পাত্রীণঃ পাত্রিকঃ।

०१৫। টिक× विर्शा।

⁽৬৭) তন্ধ। বংশবর্জ মূলাশাক্ষেক্ ফুলাচ পট্টরা। সহিতঃ কুটজঃ প্রোকো বংশাদিঃ পূর্ব্বপতিতৈ:।

⁽৬৮) কুলিকাচেতি বক্তব্যম্। কুলিকান্তান্দ্ৰিংগং পৃথ্যতি ইন টিকণে ভাতান্ বা। কুলিকঃ পরিমাণভেদং কুলিকীনা, বিকুলিকী বিকৃলিকী টিকণ্ হিভিম্পি মন্তবে, লেকুলিকিনী কুলিকা কুলিকা ব্যাহাতি মুনিরশি অধিনায়।

जिन्छ। (व আঢ়কে সম্ভবতি সংহরতি পচতি বা বাঢ়িকিকী वाঢ়कीना वा। পুনর্কিধানসামর্থ্যাদ্বিগোলুক্ ন ভবতি।
টিকণস্ত লুগেব, ব্যাঢ়কী।

৩১৬। খংশভৃতি মৃদ্যং তদস্য।

ইতার্থে যথাবিহিতং স্থাৎ। শতমংশভূতয়োমূল্যং রাহস্থ শতিকঃ শতাঃ পঞ্চঃ।

৩১৭। তদস্য পরিমাণ্ম।

তদত্ত পরিমাণমিতার্থে যথা প্রাপ্তং তাং । প্রন্থং পরিমাণমত্ত প্রাথিকো রাশিঃ, দৌনিকঃ খারীকঃ শতিকঃ, বার্ষণতিকো যোগঃ, ষষ্টি জীবিতপরিমাণমত্ত ষাষ্টিকঃ সাপ্ততিকঃ।
ইহ (দ্বে) ষষ্টী পরিমাণং জীবিতমত্ত দিষষ্টিজীবিতং দিগোলু ক্
তদেব পরিমাণমদ্য পুনষ্টিকণ্ দিষাষ্টিকঃ, জ্পবা ঘ্যধিকা ষষ্টিদুবিষ্টিঃ সাহত্ত পরিমাণং, দিষাষ্টিকঃ দিসাপ্ততিকঃ।

७১৮। मःश्रायाः मःछा मःघ मृखाश्रयत्यू।

সংখ্যাবাচিনঃ শব্দাৎ সংজ্ঞাদৌ পরিমাণার্থে মথাবিহিতং আছে। নাল্লি-পঞ্চিব পঞ্চকাঃ শক্নয়ঃ। পঞ্চপরিমাণমস্ত পঞ্চকঃ সংঘঃ, অন্তাধ্যায়াঃ পরিমাণমস্য অন্তকং পাণিনীয়ং সূত্রং, পঞ্চার্ভয়ঃ পরিমাণমস্য পঞ্চকমধ্যয়নম্।

৩১৯। পঞ্চনশতে বর্গেব।।
নিপাত্যেতে। পঞ্চপরিমাণ্মস্ত পঞ্চর্গঃ দশদর্গঃ, পক্ষে পঞ্চকা
দশকঃ। পঙ্ক্তি বিংশত্যাদয়ো রুড়াঃ সহস্রাদিবৎ। (৬৯)

^(%) প। নমু পঙ জি বিংশতি ত্রিংশচ্চতারিংশং পর্কাশং বটি সপ্ততি অনীতি নবতি শতবিতি হত্তং মুনিনা নিপাতিতং তংকবং ব স্থাতিতবিত্যাহ পঙ্কি বিংশত্যাদয়ো রুঢ়াঃ সহজাদিবদিতি। পঞ্চয়তেঃ ক্রিঃ পঙ্কিঃ।

তথাচ ব্যুৎপত্তিঃ। দ্বৌ পঞ্চে পঙ্ক্তিঃ, দ্বৌ দশতে। নিংশতিঃ, ত্রয়োদশতস্ত্রিংশৎ। এবং চত্মারিংশং প্রভূতয়ঃ।

৩২০। তদহতি।

অত্রার্থে যথাবিহিতং স্যাৎ। ছত্রমইতি ছাত্রিকঃ শতিক শত্যঃ।

৩২১। ছেদাদেনিত্যম্। (৭০)

নিত্যমিতি প্রকৃত্যথবিশেষণং, নিত্যং ছেদ্সহাত ছৈদিক-শ্ছাগঃ ভৈদিকঃ।

०२२। भीर्बराष्ट्रमान्यकः।

िक ग् छ। शीर्षरप्रकाः त्रिर्मर त्र्वितिक निर्का वा।

৩২০। দণ্ডাদিভাশ্চ। নং সাং। দণ্ডমহতি দণ্ডাঃ ছেদাঃ, কশামহতি কশাঃ অর্ঘাঃ স্বর্গাঃ মধুপক্যঃ বধাঃ। (৭১)

৩২৪। পাতাদিয়*চ। পাত্রমর্হতি পাত্রিয়ঃ পাত্য*চ।

८२८। खालीविलामीशः।

.স্থালীবিশীয়াতত্বলাঃ পাক্যোগ্যাঃ।

७२७ । क ए अत्र त कि वी म्य म्ह ।

ঈয় শ্চ। কড় সরমইতি কড় সংঘ্যোগেঃ কড় সরীয় শ্চ দিকি-.
েণ্যা দিকিণীয়ঃ।

- (৭০) ছে.। নমু বিকল্পানমুরুজেঃ কিং নিত্যসিত্যক্তমিত্যাহ নিত্যমিতি ছেদাদেঃ ক্রিয়াড়াং প্রকৃত্যর্থোহত্ত ক্রিয়ার্থঃ, যদ্ধা অহত্যর্থঃ ইতি
 প্ক্ষোক্ষমন নিরুত্তেঃ। জোহ দোহ নষ্ট কর্ষ তীর্থ সম্প্রজ্ঞাগ বিপ্রয়োগ প্রয়োগ বিপ্রকর্ষ প্রমেণ সংপ্রশ্ন বিকর্ষ প্রকর্ষ (বিরাগ বিরক্ষ) ছেদাদিঃ।
- (৭১) দও স্থান মধুপর্ক কণা অর্থ মেঘ মেধা স্থা উদক বধ যুগ ওহা ভগ ইভ ছঙ্গ দ্যাদি:

ं ७२१। अधिक जैनग्।

ু ঋষিজর্মইতি আরি জীনং ব্রাহ্মানকুলম্।

७२৮। यञ्छानियः ॥ यञ्जमई जि यञ्जित्या सूर्गः । ी

৩২৯। তৎকর্মার্হেচ। বজ্জিয়ো দেশঃ। মাধীয়াঃ পূর্ণাই। ৩০০। তেন শোভি।

, অত্তার্থেটিকণ স্যাৎ। চলনেন শোভি চালনিকং বপুঃ কার্ণবেষ্টকিকং নুথং, বাস্ত্রযুগ্মিকং শ্রীরম্।

७७)। कर्यातमान्यश।

কর্মণা শোভি কর্মণ্যং শরীরং, বেশেন শোভিনী বেশ্যা স্ত্রী।

৩৪২।। অয়ংশূল দণ্ডাজিনাভ্যা মরিচ্ছতি।

আভ্যাং তেনাবিচ্ছতীত্যর্থে ট্রুকণ্ স্থাং। অয়ঃ শূলেন তীক্ষেনাবিচ্ছতি মুগ্রিত আয়ঃশূলিকঃ সাহিষ্কিঃ, দা্ডাজি-নিকো দাস্তিকঃ।

৩৩৩। পার্খাৎ কঃ।

পার্ষেন অনুজ্পায়েনাবিছতি পার্যকং শঠঃ :

৩৩৪। উদরাদবিজিগীয়ে।

টিকণ্ স্যাৎ। উদরেণাবিজিগীযুঃ ও্টদরিকঃ।

৩৩৫। তদ্য দক্ষিণা যজ্ঞনালঃ।

অস্বাত্দ্য দক্ষিণেত্যর্থে 'টিকণ্ স্যাৎ। আয়কৌমিকী দক্ষিণা, রাজসূয়িকী দক্ষিণা।

७०७ । कालार । जिसकारबारबाम् ।

৩৩৭। তেন নির্ভঃ।

व्यक्तार्थ कालवाहिनष्टिकत् महार । व्यक्तार्शिक् व्यक्ताद्विकः मानिकः माध्यस्मितिकः विमाध्यसमित्रकम् । · ৩০৮। ভমধীফৌভ্তো<mark>ভ</mark>্তোভাৰী I

অত্রার্থে টিকণ্ ভবতি। অধীষ্টঃ গুর্বাদেঃ প্রার্থনয় নিয়োজনং, নাসমধীষ্টোভৃত্তোভৃতো ভাবি বা, মাসিকো গুরু-ভূত্যো ব্যাধিকংশবং, এবং সাংবংসরিকঃ।

৩০৯ । মাসাদ্বয়সি যেনগে।

মাদং (অধীকৌভ্তে:) ভূতো (ভাবী বা) মাজোদারকঃ মাদীনঃ বয়দীতি কিমৃ ? মাদিকো ভূতকঃ।

७८०। ब्रिटगार्थ ।

ছো মামে ভূতো ভোবী ব.) वियास्थावालः।

८८>। यथांमाक्षर्भ ।

বয়সি, যঃ ণ্ট্টিকণ্চ ভবতি। ষথাস্যঃ ষাথাভাঃ ষাথা-সিকঃ শিশুঃ।

७८२ । ইक्ष्मावरामि ।

চাৎ गुः ध्यामित्का (तार्गः यांपास्तः।

৩৪৩। সমায়া ঈনঃ।

অস্যা নির্কৃতাদ্যর্থে ঈনঃ স্যাৎ। সময়া বর্ষেণ নিরু জঃ সমামণীকৌ ভূতো ভূতো ভাষী বা সমীনঃ।

৩৪৪ । দ্বিগাৰ্কা। দিস্মীনঃ। টিকণ্ দ্বৈস্মিকঃ।

७८८। व्यक्तिताजि मःवरमताक।

ছিগোরীনষ্টিকণ্ চ নির্তাদ্যর্থে স্যাৎ। ছাহীন: ছৈয়হ্নিকঃ দিরাত্রীণঃ দ্বৈরাত্তিকঃ দ্বিসাংবৎস্রীণঃ দ্বিসাংবৎস্ত্রিকঃ। অত্তেত্ত রূপদর্জিঃ।

৩৪৬। বর্ষাল্লুক্চ।

विश्वातीन हिकरणे नुक् ठ न्याजाम् । विवर्षीरणाद्याणः निवार्षित्वा निवर्ष-छ। ৩৪৬। নিতাং আংকিছ্ । বৃদ্ধান্ত ।

১৪৭ । বৃদ্ধান বিশ্ব ।

১৪৭ । বৃদ্ধান বিশ্ব ।

১৪৮। তেন পরিজয় লভ্য কার্য হকরম।

অভার্থে কালাটকণ্ স্যাৎ। মাসেন পরিজয়োলভাং
কার্যং হুকরং বা মাদিকং সাংবৎস্যিকম্।

৩৪৯। তদস্য বন্ধচর্যায়।

অত্তার্থে টিকণ্ স্যাৎ। মাসং ত্রক্ষচর্য্যক্ত মাসিকে। মাণবকঃ, মাসমতিসংযোগে দ্বিতীয়া। তদিতি প্রথমান্তক, তেনমাসোহস্য ত্রক্ষচর্য্যা মাসিকং ত্রক্ষচর্যামিতি।

পূর্ণপ্তিকণধিকারঃ।

०৫०। जलगारिक कार्याक खनवर ।

শনরোরর্থরোঃ কালান্তরেভববৎ প্রত্যায়া: ছ্য়:। সাঁসে দীয়তে কার্যং বা মাদিকং প্রাব্তবেশ্যং হৈমনং সার্থ্যনং শৈশিরম্।

०८)। वृश्चितिन ।
वृश्चि श्रांति क्रिक्षेत्र ।
०८२। एउन रखान यह।
रखन मीय्रास्क क्रिक्षेत्र ।
०८०। यथाक्रथाहाबः।
*

. অব্যানন্ত্ৰাত্মননাদরার্থঃ। যথা , কথা চ সীমুক্তে । কথিয়া যাথাকাথাচম্।

्राह्म विकि ,विनक्षमायभ्यक्रको प्रगटक्या स्थल अस्त्राधातकः प्रक्रीमः भागः ।

L Harry Mary Street

পঞ্চমাধ্যায়স্থ

চতুৰ্থঃ পাদঃ।

মধুতদ্বিতপ্রকরণম্।

১। यः প্রাঙ্মধো:।

মধোর্ণো লুক্ চ বেতি সূত্রাৎ প্রাগ্যো বেদিতব্য:।

২। দেবতান্তপাদার্ঘাতাদর্থ্যে।

এভ্যস্তাদর্থ্যে যঃ স্থাৎ। অগ্নিদেবতারৈ ইদম্ অগ্নিদেবত্যং পিতৃদেবত্যং, পাদায় ইদং পাদ্যং জলম্, অর্ঘ্যং পুস্পম্।

৩। অভিথেৰ্ণ্যঃ। তাদৰ্থ্যে, আভিথ্যম্।

৪। তদ্বহন্তি রথ যুগ প্রাদক্ষেভ্যঃ।

্ অত্তার্থে রথাদের্যঃ স্থাৎ। রথং বহুতি রথ্যঃ, তদস্তাচ্চ দ্বিরথ্যঃ যুগ্যঃ প্রাদস্যঃ।

৫। श्रुतस्केशन् छ। श्रुतः वह्छि स्थारतयः श्र्याः।

७। जेनक गर्राष्ट्र शारमण्डा

ध्रम्ह, ध्रीनः मर्व्यद्वीगः छेख्वय्र्रीनः प्रक्रिनद्र्रीनः।

৭। একপুরাল্লুক্চ। একপুরীশঃ একপুরঃ।

চ। শকটাদণ্। 'শকটং বহুতি শাকটঃ বৈশকটঃ।

२। इसमीता प्रिक्ष्।

इसरे वहां इशिक्ष देवहानिकः, देविष्ठः देवशीसिकः।

३० । बच्चा मत्रश्चित्रार्थो ।

कनीः वदः वहंकि जिल्छा वहविद्यापिः।

>>। संदर्भ है। सन्त्र सद्धा स्थाः। >२। यनजनाह्यता।

वाक्रामखार्दि यः खोर । धनः नका वर्षः भगः ।

১৩। व्यमानः। समः लका वामः वाम। खी।

১৪। তদিখাতি কর্মণোহনস্তেণ।

তবিধ্যতি কর্মণো যংস্থাৎ। পাদো বিধ্যতি পদ্যঃ কন্টকঃ অনস্ত্রেণেতি কিং? বিধ্যতি চৌরং ধাসুদ্ধঃ।

১৫। বশাদ্গতে । বশং গতো বশুঃ।

১৬। তদ্শাসন্মিন্ পাদাং। সংক্ষেত্রত আছে। প্রমন্তির দুখার প্র

অত্তার্থে যঃ স্থাৎ। পদমশ্মিন্ দৃশ্যম্ পদ্যঃ পদাঃ কর্দমঃ।

১৭। ধেকুষ্যা হশ্বস্ককেন্ছিতা।

(ধেমুশব্দশ্র স্থাগমো যচ্চ) ধেমুষ্যা নিপাত্যতে। হ্র্ম-বন্ধকে স্থিতা চেৎ। গৌর্দ্ধহিষী বা।

১৮। গাহপত্যোহয়ো। গৃহপতিনা সংযুক্তো গাহপত্যো-হয়িভেদঃ।

১৯। नावांदमरखन जांधारमी। (S)

যঃ তাৎ। নাবা তার্যাং নাবাং পন্নঃ কেচিদতারিষ্ট্ জৈ:।
বয়সস্তল্যে। বন্ধতঃ। ধর্মাৎ প্রাণ্ডো ধর্ম্মো ভোগঃ। বিষাঘধ্যে। বিষাঃ। সীতারাঃ সমিতে। সীতাং, সীতা লাজগপরিতঃ, বহুদীভাষ্। তুলারাঃ সন্মিতে। তুলার্। ছুন্সানো
নির্মিতে। ছুন্সাইছেয়া নির্মিতং ছুন্স্ম্থং বিশ্বস্থ

The second section of the second second

⁽s) नावा । भवाषिनारसन वसमयना देशानिकः (कारातिक कार्या

মূলেনানভিভবনীয়ং মূল্যং, মূ**লেন সমো মূল্যঃ পটঃ, মূলেনা** বর্হিণো গ্রহণমাত্রাছৎপতস্তীতি মূল্যা মূল্যাঃ। **রহু উদ্যমে**।

২১। উরসো নির্মিতেহণ্ চ।

উরদা নিশ্মিতঃ ঔরদঃ পুত্রঃ উরদ্যাশ্চ।

২২। ভায় ধর্মাহর্থ পথোহনপেতে। (২)

অভ্যোহনপেতে যঃ স্থাৎ। স্থায়াদনপেতং স্থায়াং ধর্ম্যাষ্ অর্থ্যম্, পথ্যং, ইনো লোপঃ।

२०। ऋषञ्चाढिर श्रियं वशीकत्वगर्याः।

যঃ স্থাৎ। হানরস্থা প্রিয়ো বশীকরণমন্ত্রো বা হান্তঃ। পুরেহনভিধানম।

২৪। মতাৎ করণে। মততা করণং মত্যম। (৩)

२०। इलाएक र्घ भ

र्ने कर्दा रनाः। उमस्राप्त विह्नाः।

২৬। তত্ত্র সাধুঃ।

্ অত্তার্থে যঃ স্যাৎ। সভায়াং সাধুং সভ্যঃ, সামস্থ সাধুং সামস্যঃ কর্মাণ্যঃ শরণ্যঃ। (৪)

२१। श्राठिकनारमतीनग्।

প্রতিজনে সাধুঃ প্রাতিজনীনঃ সার্বজনীনঃ সাংযুগীনঃ প্রদং যুগীনঃ।

२৮। ভক্তाक्षः। ভক্তে माध्ः ভাক্তঃ भानिः। २৯। পরিষদোণ্যশ্চ।

⁽২) জা। অপেতভাজভাজিতরোহনপেত:। (৩) করবং মাধকতমম্।

⁽৪) প্র। এবং স্মরুগ পরকুগ পরকুগ পরকুল কার্ডাকুল বিশ্বন ক্ষাক্ষন পঞ্জন প্রভিজনাতিঃ

পরিষদি সার্ঃ পারিষদ্যঃ শশ্চ-পারিষদঃ। ৩০। কথাদিভ্য প্রিকণ্। (৫)

কথায়াং সাধুঃ কাথিকঃ বৈক্থিকঃ বার্ত্তিকঃ গোড়িকঃ কোল্মাসিকো যবঃ, সাংগ্রা(ছ)মিকো ভটঃ।

৩১। পথ্যতিথি বসতি স্বপতে ষ্টেয়ণ্।

পথি সাধুঃ পাথেয়ঃ অতিথেয়ং বাসতেয়ং স্বাপতেয়ং ধনম্।

৩২। সমানতীর্থে বাসী !

নিপাত্যতে। তীর্ধং গুরুঃ, সতীর্ধটেশ্চকগুরুবঃ।

৩०। দূতাতভাগে। यः मार। उमा ভাগশ্চে । দূতাः।

७८। তপ আদেমানি মহর্থ।

যঃ স্থাৎ। তপোহজ্ঞান্তি তপস্থো মাসঃ নভস্ঞঃ। উক্তোযঃ।

२ । मस्पार्णी लूक् ह वा।

মধ্বশ্লিল সাধবো মাসঃ। লুক্চ বা, মধুর্মানঃ।

७७। देशार्क छकान्छ।

এতে মাসি নিপাত্যন্তে। ইয়ঃ উৰ্জঃ শুক্রঃ।

৩৭। শিব সম রিক্টান্ডাতিস্তৎকরণে।

শিবং করোতি শিবতাতিঃ সমতাতিঃ রিউতাতিঃ।

৩৮। প্রাগ্ধান্তাদীয়ঃ।

धास मः मदार वागीया (वि)हिज्यक्रजातो स्वतः।

৩৯। উগবাদের্য:। (৬)

- (१) क। এবং বিশ্বকথা সংকথা বিততা কুঠবিদ্ জনবাদ জনেবাদ জনোবাদ গুণ প্ৰ আয়ুৰ্ব্বেদ। কুম্বাস সক্তু অপূপ মাংসৌদন উপবাস প্ৰবাস সংখ্যত নিবাস ইকু বেণু সংগ্ৰাম সংক্ৰায় সংবাহ কথাদিঃ।
- (७) छै। त्या सम्बन्धि रहिन् महिना मना पूर्व त्या। क्षर कृत यह नव तत्र मञ्ज मन्दर्ग करत्य कीय कीय नवाविदिक्त स्वता।

উকারান্তাদগবাদেশ্চ ঈয়াপবাদো যঃ স্থাৎ । বথৈ হিতং বণব্যং, শঙ্কুর্থা প্রকৃতিঃ শঙ্কব্যং দারু, সক্তব্যা ধানাঃ, গবাদেঃ গব্যং স্থাব্যং হবিষ্যম্ হবাম্।

৪০। নাভেরপ্রাণ্যকে নভ চ।

নাভ্যর্থ। প্রকৃতিঃ নভ্যং কার্চ্যয়। (নাভিশ্চক্রমধ্যং)।

৪১। শুনং শূন শুনো চ। শূন্যং শুনাম্।

8२ । ঊधनः (मान*ह । ঊधग्रम् ।

৪৩। নাল্লি কছলাৎ। কম্বল্য মূর্ণাপলশতম্।

88 । वाजिकारमर्वा । (१)

ভাষিক্যং আমিক্ষায়ং দিশি, পুরোডাশ্যং পুরোডাশীয় মৌষধং, অপুপ্যং অপুপীয়ং, তণ্ড্লাঃ তণ্ড্লীয়ং, সূর্য্যাঃ স্থরীয়াঃ।

৪৫। তাস্মৈ হিভিম্।

জ্জার্থে বথাবিহিতং স্থাৎ। বৎসায় হিতং বৎসীয়ং নব-তৃণং, গব্যং শুন্ম।

8७। मर्वाक्षा वा।

সর্কবিশ্ন হিতঃ সার্কাঃ সর্কীয়ঃ॥ দেহাবয়বাৎ প্রাপ্তক্তো
যঃ নাভাং তৈলম্।

৪৭। ব্রহ্ম থল যব রুষ তিল মাষ রথাদ্য়:।

ব্রহ্মণে হিতো ব্রহ্মণ্ড, খল্যং যব্যং র্ষ্যং তিল্যং সাম্যং রথ্যং রথ্যা প্রতোলী।

৪৮। অজাবিভাগি থাও। অজায়ৈ হিতং অজ্থ্যং অবিথাম্।

⁽৭) আ। অভূান কভোৰ অধ্যের অব্যের আছেতার পূর্ক ওদন হল পূপ কিণ্ প্রদীপ মুদল কটক কর্ববৈষ্টক কুর্বলা অর্প মুগ্র মুগ্র দীপ অধ্যক্ত ইঞ্জি সরম।

্ ৪৯। বিশ্বজনাত্ম পঞ্জন মানব ভোগান্তাদীনঃ।

বিশ্বজনেভ্যো হিতং বিশ্বজনীনম্ আজ্বনীনম্। গায়ন বাদক নৰ্ক্তক দাসীভণ্ডর তেভ্যো হিতং পঞ্জনীনং, মান(ণ)বীনম্। ভো-গান্তাৎ মাতৃভোগীণঃ। আচাৰ্য্যাদণস্ক । আচাৰ্য্যভোগীনঃ।

৫०। मर्त्वजनाष्ट्रिक् ।

সর্ব্বজনেভ্যে। হিতঃ সর্ব্বজনীনঃ সার্ব্বজনিকঃ।

৫১। মহাজনাচ্চ। টিকণ্। মাহাজনিকঃ।

৫২। চরকাদীনণ্। চারকীণয়।

৫০। পুরুষাট্রেমণ্, তদ্দ বধ বিকার ক্তে চ। পুরুষস্থ সমূহাদৌ হিতে চ–পৌরুষেয়ঃ।

৫৪। বিক্বতেন্তদর্থপ্রকৃতী।

বিকৃতে র্যাবিহিতং স্থাৎ। তদর্থা প্রকৃতিশ্চেৎ। অঙ্গারায় ইদং অঙ্গারীয়ং কার্চং, যুপীয়ং দারু, শঙ্কব্যম্।

ce। इनिक्न श्वित्न (स्वेयन्।

ছদিষে ইনং ছাদিষেয়ং তৃশং, উপধে: স্বার্থে ঔপধেয়ং বালেয়াস্তত্ত্বাঃ।

৫৬। ঝষভোপানহোণ্যঃ।

ঝষভার্থে। হয়ং বৎসঃ আর্হভ্যঃ ও পানছ্যু।

৫१। हर्षाद्वाइन्।

ত দিকতে স্তদর্থ প্রক্রতে । নিধ্য ইদং বাধুং, চর্মা বরতারে । ইদং বারত্তম্ চর্মা।

৫৮। তদিহ ভাতদক্ত চা। সতার্থ হয়ে যথাপ্লাপ্তং স্থাং । প্রাসাদোহস্যাং ভূমে স্থাং। সম্ভাব্যেত প্রানাদীয়া ভূমিং, প্রাকার আসামিউকানাং স্থাৎ প্রাকারীয়া ইউকাঃ।

৫৯। পविथायारकेयन्।

পরিখা অস্তাং ভূমো স্থাৎ পারিখেয়ী ভূ:।

৬০। মত্বর্থে স্ক্র সামোঃ।

ঈয়ঃ স্থাৎ। অচহাবাকোইত্তান্তি অচহাবাকীয়ং সূত্রং,(বার-তস্তবীয়ং) বারতন্ত্রীয়ম্ সাম।

७)। वशाशासूर्वाकरशान् क् छ।

গৰ্মভাণীয়ো গৰ্মভাণোহধ্যায়ঃ অমুবাকো বা।

७२। वि(मृ)युक्तारमत्।

বিযুক্তোহতান্তি বৈযুক্তোহধ্যায়ঃ অমুবাকো বা দৈবান্তরঃ।

७०। জাত্যसाम् रवा।

ঈয়ঃ স্থাৎ। ব্ৰাহ্মণজাতীয়ঃ ব্ৰাহ্মণ এব তব্জাতীয়ঃ স এব। দ্ৰায় ইতি কিম্ ! ব্ৰাহ্মণজাতিরছফী।

ৈ৬৪। স্থানাস্তাদা তৎসদৃশে।

শিতৃস্থানীয়ঃ পিতৃস্থানোবা তত্ত্ব্ল্য ইত্যর্থঃ। ইয়বিধিঃ পূর্ণঃ। ৬৫। ধান্যাদেরীনণ্ ভবনে ক্ষেত্রে।

अञ्च त्रेन् श्राट । उष्ट्रापि (क्षात्रक्र । उत्रस्तात्वि उत्रः (क्षात्रः, शास्त्रामाः उत्रः (क्षातः, शासीमः (क्षात्रीनः (कोस्वीनम् ।

७७। जौश्मिलिकाः (हेन्नन्।

द्वित्रमः भारतमः (क्वम्।

৬৭। যৰ যক্ত স্তিকাদ্যঃ। স্বাং ধ্ৰকাং ষ্টিকাম্। ১৮। ডিলম্যভালেমাণুভার বা। य जेनन् ह। छिनाः देखनीनः मासाः मासीनः छत्राः छात्रीनः छेमांर क्षेमीनः व्यवताः वागवीनम् ।

७३। मृतकारमः भाकिन भाकरणे।

मृलकानाः खरनः टक्काः मृलक्णाकिनः हेकूणाक्रम् ।

पः । वाध्यभाषीनस्वाद्याि ।

তৎপ্রাপ্নোতীত্যর্থে অস্মাদীন: স্থাৎ। আপ্রপদীনং বস্ত্রম্।

৭১। অনুপ্ৰাৰদ্ধা। অনুপদং বন্ধা অনুপ্ৰানা পাছকা।

१२। गर्वानाम्बक्तर्राज् ।

সর্বায়ং ভক্ষাতি সর্বাদীনো ভিকুঃ।

१७। यहानहात्मस् ।

অরঃ প্রদক্ষিণম্, অনয়ঃ প্রসব্যম্, অয়ানয়ং নেয়েহয়ানয়ীনঃ শারাদিঃ।

৭৪। যথামুখসংমুখাতদর্শনে।

দৃশ্যতেহি সিনিভি দর্শনং, যথা মুখীনো দর্পণঃ। সংমুখীনঃ।

৭৫। সর্বাদেঃ পথ্যঙ্গ কর্মা পত্র পাত্রান্তন্থাতি।

ঈনঃ স্থাৎ। সর্বপথং ব্যাপ্নোতি সর্বপথীনো রথঃ, সর্বাঙ্গীনঃ পটঃ, সর্বকর্মীণঃ করঃ, সর্বপত্তীণঃ সার্বাঞ্চ সর্বপাত্তীণং ভক্তম্।

৭৬। পরোবর পর(ম্প)ম্পর পুক্রপোত্তাদমূভবতি । পরাংশ্চাবরাংশ্চামূভবতি নিপাতনাৎ পরোবরীনঃ পর(ম্প)ম্পরীনঃ পুত্রপোত্তীনঃ।

৭৭। অত্যন্তাবারপারাসুকামালাছতি।

অত্যন্তং গচ্ছতীতি অত্যন্তীনঃ অবারীণঃ পারীণঃ ॥ সংঘাত্রাক্ত ॥ অবারপারীণঃ পারাবারীণন্ড, অমুকানীনঃ।

१५। उटेच गटकश्नकर्मानल्युक्षाः ।

কর্মণেহলম্, অলঙ্কমীণঃ অলুপ্রুক্ষীণঃ।

৮৯। चनाचीनमामबुक्तिद्य।

নিপাত্যতে। অদ্য খো বা বিজায়তে ভ্ৰতি রা অদ্য-খীনা গোঃ অদ্যখীনো বিয়োগঃ।

৮ । সমাংসমীনা প্রত্যক্ষস্বা।

আবন্তা নিপাত্যতে। 'সমাংসমীনা সা বৈব প্রতিবর্ষং প্রসূরতে' সমাংসমাং বিজায়তে (সমায়াং সমায়াং বা)।

৮)। वारगानानः कर्मकार्यागवीनः।

আগবীনঃ স্থাৎ। গোদানপর্য্যন্তং কর্মকারী চেৎ।

৮२। षातूनदीता नवातूनामी। खाद।

৮०। अष्ठकीरण विर्णाहरत ।

লনঃ স্থাৎ। অষড়ক্ষীণো মন্ত্রঃ দ্বিগোচর ইত্যর্থঃ।

৮৪। আশিতঙ্গবীনম্।

আদিতা গাবোহত্তেতি আশিতঙ্গবীনমরণ্যম।

৮৫। স্বার্থে বাহকেরদিক ্স্তিয়াম্।

ত্থাকেরীনো বা স্থাং । স্থাং প্রাচীনঃ উদঙ্উদী। চীনঃ, অদ্ক্রিয়ামিতি কিম্ ! প্রাচী দিক্।

৮৬। তদলং গামীত্যধ্বনো যদীনো। স্থাতাম্। অধ্বানমলং গামী অধ্বন্তঃ অধ্বনীনঃ। ৮৭। অভ্যমিত্রাদীয়শ্চ।

অভানিত্রমলং গামী অভানিত্রোইভানিত্রীয়ো অভানিত্রীণ চ।
৮৮। গোষ্ঠাদীনণ্ ভূতপূর্বে।

স্থাৎ। গোঠো স্থৃত্তপূর্বাঃ গোষ্ঠীনো দেশঃ।

৮৯। ज्यात्कारश्रामा । जायीत्नारमः श्रहाः ।

a । नानीन मश्रक्ता

भाना श्रात्रभगर्शक भानीमा मनवश्रु ।

৯১। কৌশীনমকার্য্য গুহুয়োঃ।

क्পপ্রবেশমর্হতি কোপীনম্।

৯২। ব্রাতীনঃ কর্মোপদীবিনি। স্থাৎ।

৯০। সাপ্তপদীনং সধ্যে। সপ্তভিঃ পদৈরবাপ্যত ইত্যর্থঃ।

a8 । रेशक्रवीनः (शारणारमारशास्त्रवारका ।

ইদং মুত্রিশেষে স্থাৎ।

৯৫। সর্বাচন্মণ ঈনশ্চ কুতে।

৯৬। ততा मृतः कर्नारमञ्जादः।

ততা মূলার্থে কর্ণাদেজাহপ্রতায়ঃ তাং। কর্ণতা মূলং কর্ণজাহং, কর্ণজাহবিলোচনা ইতি ভটিঃ। অকিজাহম্। অকি নথ মুখ কেশ পাদ অংশ হস্ত ক্রু দস্ত ওঠ গুল্ক শৃঙ্গ পুছে।

৯৭। পকাতিং। পক্ষ মূলং পক্তিঃ।

৯৮। शैवारमः क्नः भारक।

এভ্যঃ পাকে কুনঃ স্থাৎ। পীলুকুনঃ কর্কদ্পুর্ণঃ ॥ শমী করবীর বকুল বদর থদির স্থাত্থ।

aa। (जन शांटि प्रश्वाती।

অত্তার্থে চ্ঞ্চনো স্থাতাম। কেশেন থ্যাতঃ কেশচ্ঞঃ কেশচণঃ অক্ষরচ্ঞঃ অক্ষরচনঃ।

১০০। তিলাদেঃ স্নেহে তৈলম্।

श्रार । जिनरेजनः करूरेजनम् देत्र्मीरेजनम् ।

১०)। शादमः कहेः। खार। निक्षेः मक्षेः उरक्षेतिः।

> २। जिलापिट जात्रज्ञित

जिनकोः जेपाकोः जनाकोः जनाक्कोः।

১.৩। अवहारिष्ठ मण्ट्रा अविक्रे: 10 % ...

Des । (तः भान मक्स्टो । विभानश विभक्किः ।

১०৫। **ऋारम शार्कः** পশুভাঃ।

স্থাৎ। গোগোর্ছং মহিষীশোষ্ঠম্। ক্লীবনির্দেশো লিঙ্গা-

১০৬। দ্বিত্বে গোযুগম্। গোগোযুগম্ অশ্বোযুগম্।

১ • १। ষট্কে ষড়গাবম্। হস্তিষভূপাবম্।

১०৯। श्रवादक हे कूड़ोर तो रेवज़रभा ।

স্থাতাম্। অবকটঃ অবকুটারঃ।

১১০। টীট নাট ভ্ৰতা নতনাসিকে।

व्यविष्ठिः व्यवनाष्टः व्यवज्ञहः।

১১১। নেরিন পিট কাশ্চিক চি চিকশ্চ।

নেরিনাদরঃ স্থাঃ। মথাসংখ্যং চিকাদ্যাদেশাশ্চ। চিকিনং চিপিটং চিক্স।

১১২। নিবিড় নিবিরীযৌ। নিপাত্যেতে।

১১০। চুল চিল্ল পিলাভাজে চক্ষুষি ভদ্বতি চ।

ইমানি ক্লিমে নেত্রে ক্লিমনেত্রবতি চ নিপাত্যন্তে। চুল্লে চক্ষমী চুল্লোহয়ং নৈত্রঃ।

১১৪ অধ্যপাভ্যাং ভাক উদ্ধাননমোঃ।

আভ্যাং ত্যকো ভবতি। অধিত্যকা গিরেরার্ক্সভূমিঃ, উপ-ত্যকা গিরেরাসমভূমিঃ।

১১৫। তত্তে দট্ভে কর্মপোষ্ঠঃ। কর্মণি ঘটতে কর্মপোষ্ঠঃ স্যাৎ। কর্মণি ঘটতে কর্মঠঃ। ১১৬। তদক मংজাভং ভারকাদেরিতঃ । (b)

এভ্যাহতার্থে ইতঃ স্তাহ। তারকা সংজাতাহস্ত তার-কিতং নভঃ, কোরকিতত্তরঃ, তারকা কোরক পূলা কল পলব মুদাল হথ ছঃথ কৃত্তম তকক তত্ত্বা অন্ত্র প্রভুক্ষা পিপাসা ভর ত্রণ রোগ ব্যাধি উৎকণ্ঠা লভ্জা ইত্যাদি।

>>१। गर्डामळानिम। गर्डिटा बौहि:।

>>৮। मारन बाळ्ठे पञ्चे वयुग्ठेश।

তদতা মানমিত্যর্থে মাত্রড়াদয়: হ্যাঃ। জাতু প্রমাণমত জাতু-মাত্রং জলং, গিরিক্টদছো গজঃ, উরুষয়দী নদী ॥ উর্দানে দল্লট্ দ্য়দটো ॥ মাত্রট্ পুনঃ স্বত্তি, প্রস্থাত্রং লুতং, তুনাত্রম্।

১১৯। ডিয়তু ডাবজন্তাৎ স্বার্থে নাএট্ ঘয়সটো। কিয়দেব কিয়ন্মাত্রং কিয়দ্যুসং, তাৰনাত্রং তাৰদ্যুসম্। ১২০। হস্তিপুরুষাভ্যামণ্চ।

হস্তিমানমন্ত হাস্তিনং হস্তিদন্তং, পৌরুষী পরিখা পুরুষ-মাত্রী।

১২১। मानार्थामाखङारमन् था।

সমং মানমত সনঃ সমমাতো বা। হতে হিতমাতো বা বিভক্তি বিভিত্তি মাতা বা শস্তী।

⁽৮) এবং কণক মঞ্জরী থজাব কণ পত্ত মৃত্র নিজ মণ পুরীব উচ্চার প্রচার বিচার কুটাল কণ্টক ম্মল মৃত্রুল কুতৃহল কিসলর, থও বেগ নিজা মুজা থেমুব্যা শ্রদা অন্ত পুলক অলারক বর্ণক জোহ ঘোহ বর্মন গোরব লাক্ত তরঙ্গ তিলক চন্দ্রক অক্ষকার গর্কা মৃত্রু হর্ষ উৎকর্ষ রণ ক্বলর পর্য কুণ্ সীমৃত্ত জার পর রোমাক পথা কজল তৃষ্ করোল অপুট ফল কর্ফ শৃকার অন্ত্রুর নৈবল মৃত্রুল বন্ধ আরাল কলক কর্মন কর্মল মৃত্যু অলার হত্তক প্রতিবিদ্য বিদ্ন প্রত্যায় দীক্ষা গর্কী তারকালর:।

১২২। पिर्णानिजीम्।

লুক্ ভাৎ। বিসমং **চিবিডন্তিঃ বিহতিনী শ**রিখা দিপুরুষী।

১২০। भद्रभाखर्किः भटि छिन् वा।

ত্রিংশংপ্রমাণমেষাং ত্রিংশিনে। মাসাং ত্রিংশমাজা বা পঞ্চদশিনঃ পক্ষাং, বিংশিনোহঙ্গিরসঃ।

১२৪। मः थ्या मानाच्याः मः मारा मार्वे।

পঞ্চ স্থানবৈতি পঞ্মাত্রং, সমং স্থান্ধবৈতি সম্মাত্রং হস্তমাত্রং প্রস্থাত্রম।

১২৫। যত্তদেতেভ্যঃ পরিমাণে ডাবভুঃ।

এভ্য পরিমাণার্থে ডাবতুঃ স্থাৎ। যৎপরিমাণমক্ষ যাবান্ তৎপরিমাণমক্ষ তাবান্, এতৎপরিমাণমক্ষ এতাবান্।

১২৬। কিমিদংভ্যাং ডিয়তুরিদমোহচ্চ।

व्यान्तराः পरिमार्ग जियक् छार। हेन्स्माहक । कियान् हैयान्।

১২৭। কিমঃ সংখ্যাপরিচ্ছেদে ডতি চ। .

স্যাৎ। ডিয়তুশ্চ । কা সংখ্যা এষাং কতি গুণিনঃ সন্তি।
১২৮। সংখ্যায়া অবয়বে ভয়ট্।

অবরবরতেঃ সংখ্যায়ান্তরট্ স্যাৎ। পঞ্চাবরবা অস্য পঞ্তরং রুম্পং, চতুষ্ট্রী শব্দপ্রের্ডিঃ।

১২৯। বিভাষা দ্বিত্রেভ্যাসয়ট ।

षां छा नगरे, वा नगर । विख्या बन्नः, जिख्या जन्म ।

১৩ । উভানিভাম।

উভো অবয়বো অস্য উভয়ো মুনিঃ, উভরে দেবমসুব্যাঃ।

১৩১। শতসহত্তেহশ্মিংস্তদধিকমিতি শদশান্ত বিং-শতের্ডঃ। भेटक महत्व - ह विराहिश्वास्त्रिश्चनिषक्रिकार्र्ध भेनल। सभाकाक विश्मदेखभे छः महादः। जिःभनिषकमित्रम् भटक जिःभः भेकः, ह्वादिःभः महव्वः, अकानभः भेकः, विःभः महत्वम्। देह मःभार्श्वाखिधानाद्यह्—(१)।जिःभेदः।

३०२ । मःशामाः श्रात छहे ।

তৎপূরণে ডট্ স্যাৎ। चामभानाः পূরণः चामभः अर्थः विःभी काরिका।

১৩०। नाखाश अमः शादमग्रहे।

নান্তসংখ্যায়াঃ পূরণে মট্ স্যাৎ। ডটে। বাধঃ। পঞ্চানাং পূরণঃ পঞ্চমঃ। এবং দশমঃ। অসংখ্যাদেরিতি কিং ? একাদশঃ।

১৩৪। ষট্কতি কতিপয় চ হুরস্ট্।

এভ্যঃ পূরণে এট সাবে। ষয়াং পূরণঃ ষষ্ঠঃ কতিবঃ কতি-পয়বঃ, চতুর্য ইতি নিপাতনাং ॥ চতুরো বেয়েচ, চলোপশ্চ ॥ চতুর্ণাং পূরণঃ তুর্যাঃ তুরীয়ঃ।

১৩৫। वह शृत गन नःचाडिय है।

এভ্যঃ পুরণে তিথট স্যাৎ। বছুনাং পূরণ: বছতিথঃ পুগতিথঃ গণতিথঃ সংঘতিথঃ।

১৩७। ভাবতো রিপট्।

ভাবত্বন্তাৎ পূরণে ইথট, স্যাৎ। তাবতাং পূরণঃ তাবতিথঃ যাবতাং পূরণী যাবতিথী।

১৩१ । विकिन्।: जीरमा दार्थ न्छ।

আভ্যাং পূরণে তীয়ঃ স্যাৎ। ত্রেস্ত রিকারস্য ঋশ্চ। তীয়ঃ তৃতীয়ঃ।

२०५। विः सङ्गादवस्य वा।

এভাঃ পূরণে ভমজ্বা স্যাৎ। পক্ষে ডট্। বিংশতে:

পূরণঃ বিংশতিত্যো বিংশো বা, ক্রিংশন্তমঃ ক্রিংশো বা, একবিংশতিত্মঃ একবিংশো বা, হিপঞ্চাশন্তমঃ হিপ্তঞাশঃঃ

১০৯। निजार भेजामि यागार्कमान् नरवदनवाके।

এভাঃ প্রণে তমট্ ন্যাৎ, নিতাষ্। শতস্য পুরণঃ শততষঃ সহস্রতমঃ একশততমঃ দিলকতমঃ, মাসতমো দিবসঃ, অর্থনিকতমঃ নংবৎসরতমঃ।

28 । यक्तिमान्धानः श्राटनः ।

এভ্যস্তমঃ স্থাৎ। ষফেঃ পূরণঃ ষষ্টিতমঃ সপ্ততিতমঃ নবতিতমঃ। অসংখ্যাদেরিতি কিম্ ? একষ্টঃ একষ্ঠিতিমঃ দিনবতিতমঃ দিনবতঃ, পূর্বেণি বিকল্পঃ।

>85। (ना वा यर्छा। केबास्टारन।

পো বা স্থাৎ। ষাৰ্ছে। ভাগঃ ষষ্ঠে। বা, আইনো ভাগঃ অফীনো বা।

282 । তত্র কুশলে পথেছিকঃ। পথি কুশলঃ পথকঃ।

১৪৩। আকর্বাদেঃ কঃ। (৯) আকর্ষে কুশলঃ আকর্ষকঃ।

🕆 ১৪৪। ধন ছিরণ্যাৎ কামে।

थ्य कामः धनकः, मुम्राकार्धनकः क् जः, हित्रगुकः ।

১৪৫। স্বাঙ্গাৎপ্রদক্তে।

তত্তেবে কেশেষু প্রসক্তঃ কেশকঃ, দন্তকঃ নপকঃ।

১৪৬। শতাত্তেন সম্পর্ম।

কঃ আৰে। শত্যেন গুণেন সম্প্ৰিঃ শত্যকে। মুনিঃ শত্যকে। বংসঃ শত্যকঃ শালিঃ।

১। (আক্ষ)ৎসক প্রিণাচ পিছত অশাসি আখান্ নিচর চয় বিজয় জয় আচয় নয় পান দীপ হ্রক স্কান আছে প্রদান শকুনি আক্রীকিঃ।

289 । **भर्भटकां ६: भहाती** ।

ं केश खार । ब्रांगर इति ब्रांगटका मात्रामः ।

১৪৮ । তদ্রাদচিরাপহতে। কঃ স্থাৎ ॥ তদ্রকো নবপট:।

১৪৯। উফিকা यवाशृः।

অন্নশব্দাৎ কে উফাদেশো নিপাক্যকৈ যবাগৃদেচৎ। অলমন্বং যক্তাং সা উঞ্চিকা।

১৫•। ত্রাক্ষণকোহস্ত্রজীবিত্রাক্ষণদেশে। স্থাৎ।

১৫১। भौजरकाकको निधिनभौखकातिरनाः।

मिथिनः काती भी उदकार नमः, उष्ठकः भोखकाती।

১৫२। व्यक्षिकः श्रमानामि जितिएकः।

. नार्। (व्यात्राह्मसार क উত্তরপদলোপশ্চ)।

১৫৩। অনুকাভিকাভীকাঃ কামুংক।

(মন্বভিভাগ কঃ অভেদীর্ঘে। বা) । স্থাঃ। অনুকোহভিকো-হভীকশ্চ।

১৫৪। তাবতিথেন গৃহ্ণাতীতি প্রণাৎ প্রণতা লুক্ চ।

অত্তার্থে প্রণান্তাৎ কঃ স্থাৎ। তত্ত লুক্ চ। বিতী
রেন রূপেণ গ্রন্থং গৃহ্ণাতি বিকো মেধাবী, ত্রিকঃ ষট্কঃ।

>৫৫। अर्ए न्या।

দ্বিতীয়েন রূপেণ গ্রন্থগ্রহণং দ্বিকং দ্বিতীয়কং চতুকং চতুর্থকং বা।

্ ১৫৬। শ এবাং গ্রামণীঃ।

শত্রার্থে কঃ স্থাৎ। ছং আমণীরেষাং ছৎকা ইমে, মৎকং মৃতং, দেবদতকো জনঃ।

় >e৭। শৃষ্ণলকঃ করভে। শৃষ্ণলং বন্ধনমত্যেতি শৃষ্ণলকঃ। ১৫৮। উৎক উশ্মনাঃ। উৎ কঃ স্বাদ্যানাশ্চেৎ। ১৫৯। **ज्**द्र छगरते कालारमः।

ক্ষরে বাচ্যে ভবাদাবর্থে কালবাচিশব্দাদেঃ কঃ জাৎ। দিবশে ভবতি দিবসকোজ্বঃ, সাসকঃ, দিতীয়ে ভবঃ দিতী-য়কঃ চতুর্থকোজ্বঃ।

১৬•। তেন প্রযুক্তে। বিষপুষ্পেণ প্রযুক্তো বিষপুষ্পকো জ্বঃ কাশপুঞ্গকঃ। ১৬১। তদস্ত কার্য্যং শীতাদে:। শীতং কার্য্যমায় শীতকোজ্বঃ তাপকঃ।

১৬২। অজ্ঞাত কুৎসিতাক্ষেপেষু।

কঃ ন্যাৎ। ন জ্ঞায়তে কন্যায়ং কিং স্থভাবো বা অশ্বকঃ, কুৎনিতোবিপ্রঃ বিপ্রকঃ ত্ব। সমাসে চোত্রপদে। কঃ পিতৃকঃ, অসর্বনামত্বাদক্ ন ন্যাৎ। আক্ষেপে ব্যাকর-

১৬০। সংজ্ঞায়াম্। কঃ স্যাৎ। শূক্তকঃ।

১১৬৪। নীতো । কঃ স্যাৎ। ধনকং গোপ্যম্।

১৬৫। অমুকম্পায়াম্॥ কঃ স্যাৎ। পুত্রকঃ বৎসকঃ। ১৬৬। বহুবচো নুনাম্ন ইয়েকেলাশ্চাদিপদশেষশ্চ বহুলম্। (১০)

উপাদেরডশ্চ। উগন্তাদিলুক্ চেয়াদেঃ। উপভশ্চ।
নৃনাম্বঃ পরে ইয় ইক ইলাঃ স্থাঃ। কশ্চ। উপাদিনাম্বোহডশ্চ
উগন্তাদিয়াদেরিকারস্থ লুক্ চ। তয়ায় আদিপদশোবশ্চ
বাহুল্যাৎ কোবিকল্পিতঃ। অমুকম্পায়াং-দেবদভোহমু

⁽১০) এব প্রত্যরের পরের প্রক্তেরি তীরাদচঃ উর্দ্ধং সর্কাং দৃশাতে। বিনাহপি প্রত্যম্পুর্কোশ্বরপদরোর্কা লোপো বাচ্যঃ, ওেন দেবদন্তঃ দক্তঃ, দেবঃ। সত্যভাষা ভাষা সভ্যা ইত্যাদিঃ।

কশিতঃ দেবদত্তকঃ দত্তকঃ দেবিয়ঃ দেবিকঃ দেবিলঃ, উপেন্ত্রদত্তকঃ উপকঃ উপিকঃ উপিয়ঃ উপিলঃ উপভশ্চ পিতৃরামকঃ
পিতৃকঃ, বাজ্ল্যার্রেফঃ-পিতৃয়ঃ পিতৃকঃ পিতৃলঃ, বাস্থ্দতকো
বাস্থকঃ বাস্থাঃ বাস্থলঃ, ষড়সুলিদত্তকঃ ষট্কঃ বিভিন্নঃ
যিতিকঃ যডিলঃ। ক্ষাজিনকঃ কৃষ্ণকঃ কৃষ্ণিয়ঃ কৃষ্ণিকঃ
কৃষ্ণিলঃ, এবং কেবলদত্তাদেঃ। বাজ্ল্যাৎ ক্চিদন্তপদশেষশ্চ,
দত্তকো দত্তিয়ঃ দত্তিকঃ দত্তিলঃ। বহাচ ইতি কিম্ ? গুপুকো
ব্যান্ত্রকঃ সিংহকঃ। ক্চিদককারশ্চ-দত্তঃ।

३७१। श्वार्थ कः।

কঃ স্থাৎ। অনিরেব অবিকঃ যাবকঃ মণিকঃ শ্রেরকঃ।

১৬৮। ज्ञाठाट्यम्प्रमारखो। ज्ञाठरका मूनिः।

১৬৯। कालर्लाहि जापनि जावर्ल तरक ह।

কঃ স্থাৎ। বৈলক্ষ্যে কালকং মুখং, কোপেন লোহিতকং চক্ষুঃ, রক্তে রাগবাচিনঃ-কালকঃ পটঃ লোহিতকঃ।

১৭০। লোহিতকো মণোচ।

व्ययः मर्गा ह छाए।

১৭১। ভূঞীং শীলে। ভূঞীকঃ মলোপোনিপাত্যতে।

२१२। कामनजाखगजावनद्वार्थ।

ক্রান্তাৎ কঃ স্থাৎ। নাত্যন্তং ভিন্নং ভিন্নকং ছিন্নকং অন-দ্বার্থ ইতি কিম্? অর্দ্ধকৃতং সামিভক্তম্।

১৭৩। বৃহত্যা আছোদনে। কঃ তাৎ। বৃহতিকং ৰক্সমূ। ১৭৪। ক্রমালবোঃ।

चনরো রর্ধয়েও কঃ স্যাৎ। হ্রেরাদণ্ডো দণ্ডকঃ, ভরং
মূতং মূতকং, র সংজ্ঞয়াঞ্চ র হ্রেরা বংশো বংশকঃ, বেশুইরি।
১৭৫। কুরি শনীশুণ্ডাভ্যোরঃ।

অ্লা কুটা কুটারঃ, শনীরঃ, ভতারঃ।

১৬৬। কুহা ডুপঃ।

অল্লা কুভুঃ কুভুপঃ। (রুতাধান পাত্রম্)।

১৭৭। কাদ্গোণীল্যাং ভরট্।

ব্রমা কাসুঃ শক্তিঃ কাসূতরী গোণীতরী।

১৭৮। বৎসতরোহতিবাল্যে।

অতিক্রান্তবাল্যে তরড়ন্তো নিপাত্যতে।

১৭৯। উক্তরোহতিযৌবনে।

षश्चमिक्रान्तरंगीयतः यार ।

১৮•। অখতরঃ থরজয়ে। স্যাৎ।

১৮)। अवज्ञातामा । अयः वाह्नानिमान मार।

১৮২,। পাদশত মোদকাদ্বীক্ষার্থে সংখ্যা পূর্ব্বাদিকঃ ব্রিয়াং পাদস্য পদঞ্চ।

এভ্যো বীপ্সার্থে সংখ্যাপূর্বেজ্য: ক্রিয়ানিকঃ ন্যাৎ।
পাদস্ত পদঞ্চ। দ্বো দ্বো পাদো তদ্ধিতার্থে দিগুঃ দ্বিপদিকাং
দদাতি বাচ্চতি বা, ত্রিশতিকাং দণ্ডিতঃ, দ্বিশ্লোদকিকামশ্লাতি
দদাতি বা ॥ দণ্ডদানয়ো রবীপ্সার্থেচ। দ্বিপদিকাং দণ্ডিতঃ
দদাতি ব্যবস্কৃতি।

১৮৩। তদত্তকং সংজ্ঞায়াম্।

অত্তার্থে ইকঃ স্থাৎ। সংজ্ঞাচেৎ। গুড়াপূপা ভকা অস্থাং গুড়াপূপিকা পোর্ণমাসী, তিলাপূপিকা।

১৮৪। वर्षेकामिन्। वर्षेकिनी (शोर्नमानी।

.अम्ब । क्षकाद्व काठीवश्व

ব্দং। পটুপ্রকারত পটুরাজীয়: মৃত্রকাতীয়: ভব্দাতীয়:। ১৮৬। সুলাদে: কঃ। स्न दीकातः स्नकः यतकः अधकः इक्ष्रकः बृह्रकः कविनकः।

SH91 প্रতিরূপে 51

कः मारः। वाञ्चलवमा প্রতিরূপং বাস্থেদবকঃ অখকঃ। ১৮৮। লুপ্দেবপথাদেঃ। (১১)

এভ্যঃ কস্য লুপ্স্যাৎ। দেবপথস্য প্রতিরূপং দেবপথঃ হংস্পথঃ কাশ্যপপথঃ চঞ্চাপ্রতিরূপো মনুস্যঃ চঞা লুপ্যুক্তবং।

় ১৮৯। জীবিকার্থেহপ্যবিক্রয়ে।

লুপ্ স্থাং। বাহ্নেবেক আজীবোহস্য বাহ্নেবঃ, আদিত্যঃ, যং প্রতিমাং গৃহীত্ব। ভ্রমতি স উচ্যতে। অবিক্রেয় ইতি কিমৃ ? বাহ্নেবেকান্ বিক্রিণীতে।

১৯०। ইटन क्नाधानीयः।

ইবার্থে কুশাগ্রাদীয়ঃ স্যাৎ। কুশাগ্রমিব কুশাগ্রীয়া বৃদ্ধি:।

১৯১। কাকতালাদে রাকস্মিকে।

কাৰণমনে তালপতনং নিপাতনাৎ কাকতালং, তদিব আক্সিকো দেবদন্ত্ৰ্যা দহ্যনা সংযোগ ইতি কাকতালিয়ম্

^{(&}gt;>-) একং বারিপথ রবপথ খনপথ করিশ্ব আমপথ রামপথ শতপথ শকুপথ সিত্বপথ সিরগতি উইগ্রীব বাসরক্ষ্য হক্ষ ইক্ষ সঞ্চ পুশ্ব সুৎক বেষপথাবিরাক্তিবথঃ।

⁽১২) धनः गृत्र रमय चल চরণ एक(प) केत्रम् नित्रम् कक्ष भरत भाषातिः।

১৯৫। 'द्यार्करा'। क्वितियं मर्खाखाः खबावः। 🔧

১৯৬। শর্করাদেরণ্। (১৩)

এত্যোহণ্ স্থাং। শর্করেব শার্করং কাপালকম্।
আঃ সপত্যা ইতি বক্তব্যম্। সপত্নীব সপত্রঃ।

১৯৭। অঙ্ল্যাদেষ্ঠিকণ্। (১৪) অঙ্গুলীৰ আঙ্গুলিকঃ। ১৯৮। ইকভৈচক শালায়াঃ।

অস্যাদিকঃ স্থাৎ। একশালেব একশালিকঃ ঐকশালিক।

১৯৯। कर्क लाहिलामीकन्।

कर्क देव कार्कीत्का द्रमः लोहिजीकः। গতा देवार्थाः।

२००। ऋभः थमः नाग्राम्।

রূপঃ স্যাৎ। প্রশং সা চেৎ। প্রশস্তো যাজিকঃ যাজিক রূপঃ ছাত্ররূপঃ।

২০১। তিঙশ্চ ক্লীবে। প্রশস্তং পচতি পচ্তিরূপম্। ২০২। ঈষদস্মাধ্যে কল্ল দেশ্য দেশীয়াঃ।

े ঈষণসমাপ্তে বাচ্যে কম্পানয়ঃ স্থাঃ। ঈষদিন্দোনসমাপ্তঃ ইন্দ্ৰকল্পঃ পণ্ডিতদেশ্যঃ মুনিদেশীয়ঃ। তিঙ*চ। দীয়তেকলং পচ্জিকল্পম্।

२००। यूर्णा वह्स् भृर्स हू।

ঈষদসমাপ্তার্থাৎ স্থবস্তাৎ পূর্ব্ব এব বছর্ব। স্থাং। বছণ্ডডা দ্রাক্ষা গুড়কল্লা 'লঘুর্ববিত্তৃণং নরঃ ইতি মাধঃ' ভূণদেশাঃ।

⁽১০) এবং কণাটিকা ক্লিটিকা প্তরীক পতপত্ত লোমৰ গোলোম্প্ গোপ্ত বরাচী মতুল সিক্তা প্ররাহিঃ।

⁽১৪) এবং মক্সজ বক্ত বস্তু ভণ্ডর মণ্ডল শক্তনী হরি কলি স্থানি স্বাহালী উম্বাহ্য পোলী উন্নস্কৃতিল অন্তুল্যাকিঃ চ

२•८। किःयखस्करकाण्डता घरमा दक्षा- विका-

নাম গুণাদিভিদ্ধে রেকস্য পৃথক্করণে কিমানের্ড তরঃ স্যাৎ। কতরো ভবতোশৈতিঃ, যতরে। ভবতোঃ পটুঃ, ততরো ভবতোঃ করেকঃ, একতরো ভবতোধনী।

২০৫। বা বছুনাং ডতমোজাতিপরিপ্রশ্নে।

জাতিপরিপ্রশ্নে বছুনামেকস্য নির্ধারণে কিংযত-দেকেভ্যো ডতমো বা স্যাৎ। কতমো ভবজাং কঠঃ, কো বা যতমো যো বা, ততমঃ স বা, একতমঃ একো বা ভবতাং কঠঃ জাতি পরিপ্রশ্ন ইতি কিম্? কা ভবতাং চৈতেঃ।

२.७। धकानमहारम काकित्नी।

স্যাতাম্। একক:, একাকী, বেত্যৈব এক:। একল শেচ• ত্যেকে।

২০৭। ভূতপূর্বে চরট্।

স্যাৎ। অভ্যো ভূতঃ পূর্বঃ আত্যচরঃ পটুচরী।

२०৮। यर्छा ऋला व।

ষষ্ঠান্তাৎ রূপ্যো বা স্যাৎ। তালাস্য ভূতঃ পৃর্বঃ ত্রাহ্মণরপ্যোদেশঃ। পকে চরট ত্রাহ্মণচঃ।

२० । शासाशैत ।

হানে বাচ্যে পাশঃ স্যাৎ। হীনো য়াজিকঃ যাজিক-পাশঃ, শাক্ষিকপাশঃ।

২১ । তমঃ সাভিশয়াদির্ভ চ গুণাং।

প্রকর্ত্তাৎ তমঃ স্যাৎ। ইনে পাচকাঃ অয়মেষামতি শয়েন পাচকঃ-পাচক চমঃ, গুণাদিজ্ঞচ, অয়মেষামতি শয়েন পটুঃ-পটিছঃ পটুতস্চ।

২১১ । দিবিভজ্যস্য তরোগুণাদীরশুন্ট।

দ্বরে বিভক্তন্য সাতিশয়ৎ তরঃ স্থাৎ। অরমনয়োরজি
শয়েন পাচকঃ পাচকতরঃ। গুণানীয়মূশ্চ, অরমনয়োরজি
শয়েন পটুঃ পদীয়ান্ পটুতরশ্চ, বিভজ্যন্য সাতিশয়াৎ
পাশ্চাত্যা গোডেভ্যঃ-পটুতরাঃ পটীয়াংসঃ।

২১২। তিঙ্ক তরতমো।

সাতিশয়াৎ অয়মনস্নোরতিশয়েন পচতি পচতিতরাং অয়নেযামতি শয়েন জল্লতি জল্লতি তমাম্।

২১০। বৈদারিণোমৎদ্যে। নিপাত্যতে।

२) ८। ८७ वकार पर्यं ।

স্যাং তেষজনেব ভৈষজ্যং, আনন্ত্যং আবস্থ্যং ঔপম্যং সামীপ্যং সামান্তং চাতুরাশ্রম্যং চাতুর্বর্ণ্যং চাতুর্বিদ্যং যৌগ-পদ্যং সামিধ্যং সাহিত্যং ত্রৈলোক্যং ষাড্গুণ্যং বৈশ্যঃ। ইতিহ পারস্পর্ব্যোপদেশেহব্যাং। ঐতিহ্যম্।

· ·২১৫। আভিজিতা(দা)দেব্দিত্যু লুক্চ l

এভ্যাহণন্তভাঃ স্বার্থে যণ্ আছি। আভিজিতাঃ, বহুরু লুক্চ আভিজিতাঃ বৈদভ্তাঃ বৈদভ্তাঃ এবং শালাবতঃ শামাবতঃ উণ্বিতঃ আশ্রুমতঃ শৈথাবতঃ।

২১৬। দেবাভাপ্ স্বার্থে তাপ্ স্যাৎ। দেবতা। ২১৭। নব্য নবীন মূভন নূজ। নবে। (১৫)

চত্বারোহনী নবার্থে নিপাত্যন্তে।

২১৮। প্রীণ প্রণ প্রভন প্রসাং পুরাগে (পুরাত্রে)। (১৬)

⁽১৫) नवा—चू + व८। चू + क्रेनः नवीनः। मूजन—नव धव नव + जन

^{(&}gt;७) नुतान + नः आरम्भक अनः। अ + छनः। अक्रूब्स्।

এতে চত্বারঃ পুরাতনার্থে স্থাঃ।
২১৯। কেনাদের্যঃ।
স্বার্থে কেনাদের্যঃ স্থাৎ। কেনাং মন্ত্রাঃ যবিষ্যঃ।
২২০। ভাগরূপনালো ধেয়ঃ।
স্বার্থে ধেয়ঃ স্থাৎ। ভাগধেয়ং রূপধেয়ঃ নামধেয়ন্।
২২১। প্রজ্ঞাদেরণ্। (১১)

সার্থে, প্রজৈব প্রাক্তঃ প্রাক্তরী স্ত্রী, দেবতা দৈবতং, বণিক্ বাণিজঃ, মনো মানসং, মরুং-মারুতঃ, রক্ষো-রাজসঃ, চোরঃ-চৌরঃ, শক্তঃ-শাত্রবঃ, পিশাচঃ-পৈশাচঃ, বন্ধ্বান্ধবঃ, বিকুতং বৈকুতং, দিতা-দৈতা, প্রতিভা প্রাতিভং, চণ্ডালঃ-চাণ্ডালঃ, চতুষ্পথং চাতুষ্পাথমিত্যাদি।

২২২। ওষ্ণেরজাতোঁ। ও স্বাং ব্যাধিনাশনম্।
২২০। বয়সঃ কাকে। বায়সঃ:
২২৪। কর্মণো বাচিক্যুক্তাৎ।
বাচা প্রতিপাদিতং কর্ম কার্মণম্।
২২৫। বিনয়াদিত্য ষ্টিকণ্। (১১)

স্বার্থে। বিনয় এব বৈনয়িকঃ, অনুগাদী আনুগাদিকঃ সময়ঃ সাময়িকঃ উপচারঃ ঔপচারিকঃ। উপায়ত খ্রস্ক । উপ-য়িকং, অত্যয়ঃ আত্যয়িকঃ। স্বার্থিকাঃ প্রভারাঃ প্রভারে।

১>। এবং উশিজ্ উঞ্জিজ্ প্রত্যক্ষ বিদ্ধা বিদন্ সোড়ন বিদ্যা (শ্রোত্ত-শরীরে) জুহাং কৃষ্ণমূগে) চিকীর্ধং ঘোপ চল্লুস বস্থ এন্য ক্রিঞ্জ সত্তং দশার্হ ব্যাকৃত অশনি ক্রাপণ প্রজাদিঃ।

১২। এবং, সম্প্রতি কথকিং সমাচার সমনাচার সম্প্রান সম্ৎকর্ষ সমূহ বিনয়ালিঃ।

লিঙ্গবচনান্যতিবর্ত্তে । মৃক্তা মৌক্তিকং ব্যবহার: ব্যাব-হারিকঃ সমূহঃ সামূহিকঃ বিশেষো বৈশেষিকঃ।

২१৬। অকসাটিলোপ*চ। আকস্মিকম্।

২২৭। বাচো ব্যাহ্নতাথায়াম্।

উক্তার্থ। বাগ্বাচিকং সন্দেশবাগিত্যর্থঃ।

২২৮। ভীয়াজীকধবিদ্যায়াস্।

স্বার্থে তীয়ান্তাৎ টীকণ্ স্থাৎ। বৈতীয়ীকী তার্তীয়ীকী অবিদ্যায়াং কিং ? দ্বিতীয়া বিদ্যা।

২২৯। वर्गाएकातः । स्वार्ष्, श्रकातः ककातः छ कातः।

२० । तारमकः। (तकः।

২৩১। মৃদস্তিকঃ। মৃত্তিকা।

২৩২। সমৌ প্রশংসায়ায়।

প্রশস্তা মৃৎ-মৃৎসা মৃৎসা, রূপস্তাপবাদঃ।

२००। ইत्सिश्रमिक्तनिरत्रक्तमृचीरमो ।

. নিপাত্যতে। ইন্দ্র প্রত্যগাত্মা, তস্ত্র লিঙ্গং, তেন দৃষ্টং,

তেন স্ফুং, তেন জুফং দত্তং বা ইন্দ্রিয়ম্।

২৩৪। ছন্দোহধীত ইতি শ্লোত্তিয়ো বা।

অত্রার্থে শ্রোত্রিয়ো নিপাত্যতে। পঙ্গে ছাল্সঃ।

২৩৫। কেতিয়ো জন্মান্তরদেহচিকিৎসে।

নিপাত্যতে। কেত্রিয়োহয়ং কুষ্ঠব্যাধিঃ।

२७७। ७ स् क्यारान आक्रामिनिरको।

অত্রার্থে প্রাদ্ধানিকো স্থাতাম। প্রাদ্ধং ভুক্তমনেন প্রাদ্ধী প্রাদ্ধিকঃ।

२७१। इछोनि कुछ पुर्वा (५०)

১৩। এবং, পূর্ত্ত উপাসাদিত নিগদিত পরিগদিত পরিবাদিত নিক্থিত

এতা ইন্ স্থাৎ। খনেনেত্যেন। ইউমনেন ইপ্টী যাগে। খাধীজী ব্যাকরণে । কুতী জাতী নিরাকুতীত্যাদি। কুতাদি-পূর্বাৎ পূর্ববাদের কুতং পূর্ববানেন স্থপ্সপেতি সমাসং। কুতপূর্বী, কটান্। অতা ষষ্ঠী নিষিদ্ধা। ভুক্তপূর্বী দৃষ্টপূর্বী আত-পূর্বীত্যাদি। পূর্বাচ্চ। পূর্বাং ভুক্তং পীতম্ আনিতং বা খনেন পূর্বী পূর্বীণে।

২০৮। সাক্ষী সাক্ষাদ উরি। ইনন্তঃ সাক্ষী নিপাত্যতে। ২০৯। অনুপদ্যবেকী। অনুপদী স্থাৎ, অস্পেদী চেৎ। ২৪০। তদস্যাস্ত্যস্মিন্ বেতি মতুঃ।

অতার্থে মতৃঃ স্থাৎ। গুণোহস্থান্তি ইতি অন্মিন্ বা গুণবান্। ভূমনিন্দা প্রশংসাস্ত্র নিত্যবোগেহতিশায়নে। সংসর্গেইন্তি বিবক্ষায়াং মত্বা হি ভবন্তামী। ভূমি বহুত্বে-গোমান, নিন্দাদে ককুদাবর্তী হয়ঃ রূপবান, নিত্যবোগে ক্ষীরী রুক্ষঃ উদরী ছত্ত্রী, পুত্রী: শুক্লাদয়ঃ শন্দা গুণিনি গুণে চ বর্ত্তি এব, তেভ্যো মহাদয়োনেষ্যন্তে। নৃথা মহ্বাহিছিষিকাত্বল্যান মহর্গোন শৈষিকঃ। ন ভবপ্রত্যয়ো ভাবান্ন সন্ধিক্ষাসনস্তত্তঃ॥ তুল্যভাবপ্রত্যয়নিদেধাদিহ ভবতি। পাকত্ব্য।

: 8) । চূড়াদেলো বহুলম্। (১৪) চূড়াহস্তান্তি চূড়ালঃ চূড়াবান্ জন্মালঃ শিরালঃ

নিষাদিত নিপঠিত সন্ধলিত পরিকলিত সংরক্ষিত পরিরক্ষিত অর্চিত গণিত অবকীর্ণ আবৃক্ত গৃহীত আয়াত অবধান আনেবিত অবধারিত অবকলিত নিরাকৃত উপকৃত উপাকৃত অমুগৃক অমুগণিত অমুগঠিত ব্যাকৃণিত ইপ্তাদিঃ।

১৪। এবং মণি নীভি বীজ বীণা ক্স নিষ্যাব পাংশু পার্থ পশু হতু সক্ত মাংস (বাত দন্ত বল ললটানামঙ্চ) (জটা ফটাকটাকালা: ক্ষেপে)

নিধালঃ নিধাৰান্ গড়ুলঃ বহুলঃ শ্লেমলঃ । পাফি ধমফো দার্লিন্চ বাত্ল্যাং। পাফেলিঃ ধমনীলঃ, সেহলঃ যুকালঃ যুক্ত্লিঃ। বংসলঃ প্রকাম বিচ । অংশলো বলবতি । জটাদেক্ত্রেক্তি । জটালঃ ঘটালঃ কীলালঃ বিচর্চিকালঃ বিপাদিকালঃ কি পিকালঃ ।

२८२। जरबोशामितिनित्को। (२०)

শদতাং প্রাহানেশ্চ সাধান্তেন ইন্ ইকো স্থাতাম্।

তিনিকঃ। বহুলান্ত্রতা। একাজরানুকাজ্জাতেঃ সপ্তম্যাঞ্চনতে স্থাতা। থবান্ কারকগান্ রক্ষবান্ দণ্ডাঃ সন্ত্যস্যাং

দণ্ডবতী শালা। তথাদেরিলেব, তথা তুংখা পাতকা গুলী।

দশ্বেহতদলাৎ প্রাণিস্থাৎ । কটকবল্যানী শন্তানুপুরিণী।

ন তদলাৎ স্তনকেশবতী । গন্ত্রোগাভ্যাঞ্চ । ককুদাবর্তী

জ্রী শূলী ॥ ধর্মশালবর্ণান্তাচ্চ ॥ দিজধর্মী ভিক্ষুশালী দিজবর্ণী

বয়দি পূরণাৎ। পঞ্চমো মাসো বর্ষো বাহ্সান্তি পঞ্চনী

হয়ঃ দশনী রন্ধঃ । করহস্তদন্তাদ্যাজে । করী হন্তী দন্তী ॥

বর্ণী ব্রক্ষচারিণি । অর্থী প্রাথিকে । সর্ববীজাদেঃ । সর্ববীজী

সর্বধনী সর্ববেশী বাহুবলী উরুবলী । পুক্ষরাদেঃ সংজ্ঞা
য়াম্ । পুক্ষরিণী প্রিনী তপ্রিণী উৎপ্রিনী হেমনী ॥

উদক পণে প্রভান কি কর্ণ ক্ষেত্নীত শ্রাম পিন্ধ পিত পুক্ষ পৃথু মৃত্ মঞ্ মণ্ড পত্র চট্ কপি গণ্ড গ্রন্থি কুশ ধারা বর্মন্ পক্ষান্ শেমান্ প্য নিহাদ্কুণ্ড (কুদ্র জন্ত) চূড়াদিঃ।

১৫। ঐছি মারা শালা শিখা মালা মেধলা কেকী অষ্টকা পতাকা চর্মন্ কর্মন বর্মন কংগ্রা সজা বড়বা কুমারী নৌ ধীণা বলাকা ঘৰস্বল বীহাদিং।

ষীপী ব্যাত্ত্রে। ত্রীহাদেঃ খলপি। ত্রীহী ত্রীহিকঃ ত্রীহিম।ন্ শালী শালিকঃ শীলিমান্। মায়ী মায়িকঃ মায়াবান্।

२६०। भिशामितिग्।

শিখী শিখাবান্। মালী নেথলী সঙ্গী বীণী জটী পতাকী ক্মী চ্মী।

२८८। नावारमतिकः। नाविक देळानि।

२८७। शिष्हारमितिलः। (১७)

পিচ্ছিলঃ। মতুঃ সক্তির, পিচছাবান্ ॥ কেনাল্ল্চ ॥ কেনিলঃ কেনল স্চ, জাটিল তুন্দিলঃ। বহুলমিত্যেব তুন্দী তুন্দিকঃ, উদ্যালঃ উদ্য়ী উদ্যাকঃ ক্ৰিকঃ ক্ৰিলঃ ক্ৰী।

২৪৬। স্বাদীশরে। অয়নীশরে নিপাত্যতে।

289। वाजारमः किन्।

স্থাৎ। বাতকী অতিসারকী পিশাচকী পিশাচবান্।

২৪৮। লোমাদেঃ শঃ। লোমশঃ কপিশঃ। (১৭)

२८२। शामारमर्नः। (३५) .

পামনঃ শ্লেষ্ণঃ হেমনঃ বলিনঃ । লক্ষ্যা ঈদ্দ্দ । লক্ষ্যাঃ । অসাৎ প্রশং সাধান্। অঙ্গনা । দৃদ্ধা বা হুস্ক্চ । দৃদ্ধাঞ্জি) ৭৪। ২৫০। জ্যোৎসাদেরণ্।

১৬। এবং উরস্ধূবক প্রেক কেবক (জুটা ঘটা কালাঃ কেপে) বর্ণ উদক পক্ষ প্রস্তাপিছ্যাদিঃ।

১৭। লোমন্ রোমন্ বক্ত অবি গিরি কর্ক কিপি য়নি ভক্ত লোমাদিঃ।

১৮। পামন বামন বেমন হেমন শ্রেমন বলি সামন উন্মন্ কমি (অঙ্গাৎ কল্যাণে) শাকোপলালী দদ্ধণাং হ্রসং) (বিশ্বনিত্যত্তরপদলোপশ্চাকত-সন্ধেঃ) মামাদিঃ। জ্যোৎসঃ পক্ষঃ, তামদঃ সাহদঃ তামিজঃ কোঁতপঃ বৈপদিকঃ শার্করঃ কোঁওলঃ বৈদর্পঃ।

२१, ३। महत्या मिन् छ।

সাহস্রঃ সহস্রা॥ তপ্রোবিন্ বিক্ষ্যতে॥ তপদ্বী।

२०२। गिक जामर्कताच्याः (परम न्विति ह।

আভ্যাং দেশে বাচ্যে ইণোলুপ্, ইলশ্চ, চকারাদণ্ চ। সিকতা দেশঃ সিকতিলঃ সৈকতঃ সিকতাবান্, শর্করা শর্ক-রিলঃ শার্করঃ শর্করাবান্।

২৫০। প্রজ্ঞা শ্রনাহর্চাবুরিভোগঃ।

এভ্যোণঃ স্থাৎ। প্রাজ্ঞঃ, প্রাজ্ঞা স্থা প্রজাবান্, প্রাদ্ধঃ আর্চঃ বার্তঃ রুভিমান্।

২৫৪। অস্ মায়া মেধা জজোবিন্।

এভ্যো বিন্ স্থাৎ। অসন্তাৎ তেজস্বী তপস্বান্ মায়াবী মেধাবী স্ত্রশ্বী । আময়া দাবিন্ । আময়াবী।

় ২৫৫। দন্তাতুর উন্নতাৎ। উন্নতো দন্তোহস্তান্তি দক্তরেঃ। ২৫৬। ঊষাদিভ্যোরঃ।

স্থাৎ। ঊষরঃ ঊষবান্ শুষিরঃ পুক্ষরঃমধুরঃ মুক্ষরঃ।
পাংশুরঃ পাঞ্রঃ কুঞ্জরঃ নগরঃ। কচ্ছা হ্রস্পত। কচ্ছুরঃ॥
মুখাদবদ্ধমূথে॥ মুখরঃ।

२०१। हित्रगारमर्जिः।

হিরণ্যবঃ মণিবঃ ইন্টকাবং কেশবঃ। বছলমিত্যেব কেশিকঃ কেশী কেশবান ॥ রাজ্যাদেঃ সংজ্ঞায়াম্॥ রাজীবং পদাং রাজীবোমৎস্থাং, গাণ্ডীবং, হ্রস্বশ্চ, গণ্ডীবঃ অজগবং পিনাকঃ, মজকরমিত্যেকে। অর্ণাঃ সলোপশ্চ। অর্ণাঃ।

২৫৮। মেধা রথাভ্যামিরঃ।

মেধিরঃ রথিরঃ, রথী রথিক ।

२०२। जल कालामी वहा जलोवह काली बहा।

२७०। क्रुशानि एडा वनः।

ু ক্ষীবলঃ আসুতীবলঃ, পরিষদ্ধলঃ পর্বন্ধণ। রজস্বলঃ উর্জ্বলঃ ভাত্বলঃ॥ দন্তাবলোহস্তিনি॥ শিথাবলঃ কেকিনি।

२७)। इन + ह वर्षातिः।

বহিণঃ ফলিনঃ শৃঙ্গিণঃ মলিনঃ। বহী ফলীত্যাদি চ যথাদশনিষ্।

२७२। (गांशियानी गरमी।

নিপাত্যেতে। গোমী গোমান্ মলীমসং মলিনঃ পটঃ। ১৬০। স্তাক্তন্যাং মঃ।

আভ্যাং মত্তর্থে মঃ তাব। ছ্যুমো দিবসং জনঃ।

২৬৪। একগোপূর্বাটিকণ্।

স্থাং। একশতমস্থান্তি একশতিকঃ গৌসহস্রিকঃ এক-দেশিকঃ একদেশী চ। টিকগান্তি। নৈকদ্রনাং। এক-দেব্যবান।

२७৫। শতসহত্রালিকাদেঃ।

টিকণ্ স্থাৎ। নৈজশতিকঃ নৈজগহত্ৰিকঃ।

২৬৬। রূপাৎ প্রশংসাহতয়োর্যঃ।

প্রশস্তং রূপমস্তান্তি রূপ্যঃ পুরুষঃ। আহতং তাড়না-নিম্পাদিতং রূপমস্তান্তি রূপ্যোদীনারঃ।

२७१। अनारमण्ड।

যঃ স্যাৎ। পদমস্তান্তি পদ্যঃ শ্লোকঃ, হিংস্থঃ পর্বতঃ গুণ্যা দ্বিজাঃ। २७৮। भृत्रवृन्तान्तात्रावात्रकः। भृत्रावाद्याविकः।

২৬৯। উণায়ুং॥ (যুদি) নিপাত্যতে।

২৭০। বাগ্মী বাবদূকে। (বাচোগ্মিনিঃ)।

২৭১। বাচাট বাচালো বহুভাষিণি। ইনো নিপাত্যেতে।

২৭২। জর্শ আদেরৎ। (১৯)

অং সাং। অংশহিসাস্তি অশ্নঃ তুলঃ কাণঃ খঞ্জঃ প্ৰতিঃ শুক্লং নীলং গোধুল ইত্যাদি।

২৭৩। পর্বাসক্তাং তঃ। পর্বাতঃ সরুতঃ।

२ १८ । 😎 🔊 यृह्रयू कर्यू भर्यू कर्य भर्याः ।

সড়মী নিপাত্যতে। নিপাতনাদনুস্বারঃ। শুভমস্তান্তি শুভং মুঃ, অহংযুরহঙ্কারবান্, কংযুর্জনবান্, শংযুঃ শুভানিতঃ। এবং কংমঃ শংযঃ।

২৭৫। কং শং ভ্যাং ব ভ তি তৃ তাশ্চ।

` 'আভ্যাং বাদয়শ্চ ভবন্তি। কংবঃ, শংবঃ, কংভঃ, শন্তঃ কন্তিঃ শন্তিঃ, কন্তঃ শন্তঃ।

२ १ ७ । তৃ खित्र नित्र हे ईं ।

তুণ্ডিভঃ, বলিভঃ বলিনশ্চ, বটিভঃ।

२११। क्रशारि तानुः।

কুপাহত্যাহস্তি কুপালুঃ দরালুঃ লড্জালুঃ প্রদালুঃ নিদ্রালুঃ হৃদয়ালুঃ হৃদ্য়ী হৃদ্যিকো হৃদয়বাংশচ।

২৭৮। শীহাদেস্তন্ন সহতে।

১৯। উরশ্ চতুর জট। ঘটা ঘাটা অংশ কর্দ্ম অমু লবণ আকৃতিগণোহয়ং অর্শ অংদি:।

তন্ম সহতে ইত্যর্থে। শীতং ন সহতে শীতালুঃ উফালুঃ ভৃষ্ণালুঃ কৃপালুঃ।

२११। शिमारमम् लू) नह

हिमः न महरा हिमालूः हिरमलूः (हिमल्कः)।

२१४। वलामृलः।

বলং ন সহতে বললঃ । বাতাং সমূহে চ । বাতং ন সহতে তক্স সমূহো (তদস্যান্তি) বা বাতু(৩ু)লঃ । উক্তাঃ মহ্ৰীয়াঃ । *
২৭৯ । তক্স ভাবে স্ব তাপো ।

ভবতোহ্সাদভিধানপ্রত্যাবিতি ভাবঃ শক্পর্তি।
নিনিতং বস্তধর্মোজাত্যাদিঃ। তদ্য ভাবঃ ইত্যুর্থে স্ব তাপৌ
স্থাতাম্। সংক্রীবে, তাপ ুলিয়াম্। গোর্ভাবঃ গোস্থং পোতা
শুক্রহং শুক্রতা, দত্তং সতা ক্রিয়াম্। দমাদাদে সম্মপ্রকৃতিনিমিত্তং, রাজপুক্ষস্থং গার্গাস্থং পাচক সং॥ স্বরূপমাত্রে চ॥
ভিথত্বং চৈত্রম্। মমেত্যবায়াৎ স্থার্থে, নমহং মমতা।

২৮০। ন শেষা নঞ্তৎপুরুষাদচতুর সঙ্গত লবণ ব(হু)ট যু(বু)ধ কত রস লসাৎ।

শোষা ভাবপ্রতায়া নঞ্পুর্কাভিৎপুরুষাম স্তঃ। অপতিত্বং পত্যন্তাম যণ্। কথমপাটবম্ ? পাট্রসিদ্ধে পশ্চামঞ্
সমাসেন। চতুরাদেস্ত ভবতি। আচতুর্গ্র আসম্বত্যং আলবণ্যং
আব(ছা)ট্যং আযু(বু)ধ্যং আকত্যং আরম্য আলস্মৃ।

২৮১। প্রিয়াদিভা ইমন্ বা। (২০) এভা ইমন্ বা স্যাৎ। ইমন্ পুংসি, প্রিয়াৎ ক্লীবে দ

[ি] ২০। এবং সাধু আত ধত দও চও অকিকন বাল রোহ পাক বংস মন্দ সাত্ হ্রম ব্য ঋজু কুদ্দ অণু প্রিয়াদি:।

প্রিয়েস ভাবঃ প্রেমা প্রেম বা, প্রিয়েসং প্রিয়েতা, প্রাং পৃথিমা প্রুষং, অংশ ্বক্যতে পার্থবং. এবং তকুসং তনিমা। প্রিয় পূথু তকু গুরু লঘু মৃতু মহৎ কিপ্রে দীর্ঘ বহুল উরু মণু।

२५२। वर्ग मृहादम्बी (६)

এভ্যক্তাণ্ ইমন্ চ বা স্থাং। বণাং-শোরাং শুরিমা স্ব তাপো সর্বাত, শুচিন্নং কাফ গং ক্ষিমা, দৃঢ়াদেদি। চ্যুং দুছিমা জাড্যং জড়িমা কাশ্যং ক্ষিমা বৈমনসাং বিমনিমা মাধুর্যাং মধুরিমা মাধুরী উচিত্যং ঔচিতী স্থানুপূর্ব্যং স্থানুপূর্বী বৈদ্ধাং বৈদ্ধী বাধির্যাং শৈত্যং ঔষ্যাং ইত্যাদি।

২৮০। গুণবচন ব্রাহ্মণাদিভ্যঃ কর্ম্মণি চ। (২২)

এভ্যো ভাবে কর্মণি চ ট্যন্ স্যাৎ। গুণচবনাৎ-জড়স্য ভাবঃ কর্ম বা জাড্যং মৌর্থ্যং কার্শ্যং। ব্রাহ্মণাদেঃ ব্রাহ্মণ্যং আভিজাত্যং মৈত্র্যং মাধ্যস্থ্যং চৌর্যাং চাপল্যং কৌশল্যং নৈপুণ্যং পৈশুত্যং কাব্যং দায়াদ্যং॥ অর্তা মুম্ চ ॥ আর্থ-ন্তামূ॥ অতো ভাব কর্মণো বিধিঃ প্রায়তেঃ। *

২৮৪। দূত বণিক্তেনাদ্ বো নল্পেপশ্চ। এভ্যোযঃ স্থাৎ। ব্ৰাহ্মণাদিয়াৎ ট্যণু চ॥ দৃতস্থ

২১। এবং ভূশ বক্ত শুক্ত আম কৃষ্ঠ লবণ তাম পণ্ডিত মূর্য যুক (বেগাত লাত মতি শারদানাম্)। (সমোমতি মনসোঃ) জবদ দৃঢ়াদিঃ।

২২। এবং বাড়ব মাণব গূর্ত্ত আরাধয় বিরাধর অপরাধয় উপরাধয় একনা ধিভাব ত্রিভাব অন্যভাব অক্ষেত্রজ্ঞ সংবাদিন সংবেশিন সংভাবিন্
ভাবিন শীর্ষণাতিন বিঘাতিন বিষমন্থ সমন্থ পরমন্থ মধ্যমন্থ অনীক্ষ হুংহল ক্ষেত্রজ্ঞ মিশ্র বালিস তুঃপুরুষ কাপুরুষ রাজন অধিপতি গণপতি পাতৃল বিশক্তি বিষম বিপাত নিপাত (সর্কবেদাদিভাঃ স্বার্থি) শৌটির্ম ব্যান্ধণাতিঃ ভাবঃ কর্ম বা দূত্যং দৌত্যঞ্চ। বণিজ্যা স্ত্রিয়াং বাণিজ্যঞ্চ, স্তেমস্থ নলোপশ্চ—ক্ষেয়ং স্থৈন্যঞ্চ।

২৮৫। পত্যন্তরাজাদের্ণ। (২৩)

পত্যন্তাং রাজাদেশ্চ মণ্ স্থাং। প্রাজাপত্যং, দৈনাপত্যন্ রাজাদেঃ-রাজ্যং দৈন্তম্ পৌরোহিত্যম।

२५७। मधायः। भगाम्।

२৮१। किं छ्वार्ट (स्वेश्व।

কপেভাবঃ কশ্ম বা কাপেয়ং জ্ঞাতেয়ম্।

२৮৮। यन् व्यानि वसावहत्नान्नावानिज्यः। (२८)

এল্যেংণ্ স্থাৎ। অশ্বস্থ ভাবঃ কর্ম বা আশং ঔ্ট্রু শৌকং কাকং মানৃং। বয়োবচনাং কৌমারং সৌবনং স্থাবিরং উপ্যাত্রাদেঃ-ঔপ্যাত্তীম্ ঔশ্বেত্রম্, পৌরুষম্। হায়ণাস্তাৎ-পৌর্বা-হায়ণং সৌহৃদং, ব্রাহ্মণাদিকৃত্রে সৌর্বান্ত চাপল্যং, দৌহৃদং নৈপুণং কৌশলম্। শ্রোত্রিয়স্ত শ্রোত্রশ্চ। শ্রোত্রম্য

२৮৯। ইগন্তাচ্চ नयूश्रंकाए।

শুচের্ভাবঃ কর্ম বা শোচং মৌনং প্রতীবং লাঘিবং পার্থবং হারীতকং। লবুপুঝাদিতি কিম্ ং পাঞ্যম্।

२२०। अत्राप्तां ज्याप (याप्रधानातमञ्जादमम्हाकन्। (२०)

২০। এবং গ্রামিক পিণ্ডিক সূহিত বাল মল খণ্ডিক দণ্ডিক কর্মিক বর্মিক ধর্মিকা শিলিক স্তিক মূলিক ভিলক অগ্নিক অগ্নিক ঋষিক পুত্রিক আবিক ছত্রিক পর্যিক পথিক চর্মিক প্রতিক সার্গি আস্থিক স্চিক সংরক্ষ সূচ্ক নাস্তিক অজানিক পাকর নাগ্য চূডিক বাজাদিঃ।

২৪। এবং প্রভিষ্কৃ প্রশান্ত হোড় পোচ হর্ত রথগণক পত্তিগণক ক্ষ্ঠু
তৃষ্ঠ অসম্পূতি বন্ (স্থভগ মন্তে) উপগাত্রাদিঃ।

২৫ এবং, কল্যণ ১েধাবিন আচ্য কুলপুত্ত ছাল্স ছাত্র শ্রোতিয় চোব

গুরুপোত্নাদ্ গোপ্ধান্মনোজ্ঞাদেশ্চাকণ্ স্থাৎ। রমণীয়ম্য ভাবি কর্ম বা রামণীয়কং কামনীয়কং, আচার্য্যক্ষ্
ভিপাধ্যায়কং বৈদ্যকং সাহায়কং। সাহার্য্যক্ষেয়তে। মানোজ্ঞকং প্রৈয়রূপকম্ আভিরুপকম্।

२৯)। चन्द्राभूगाकूलापितिकग् खिशाय्।

এভ্য স্ত্রিয়ামিকণ্ স্থাৎ। দ্বন্দাৎ শৈষ্যোপাধ্যায়িকা পৈতা পুত্রিকা, অমুস্যকুলাদেঃ আমুষ্যকুলিকা আমুষ্যপুত্রিকা।

২৯২। গোত্র চরণাৎ শ্লাঘাধিকেপতদবেতেরু।

গোত্রাৎ গার্গিকয়া শ্লাঘাত দাক্ষিকয়াহধিক্ষিপতি দাক্ষিকামবেতঃ। এবং চরণাৎ কাঠিকয়া শ্লাঘতেহবিক্ষিপতি বা
বাহ্ন চিকামবেতঃ, অন্যত্র গার্গান্থমিত্যাদি।

২৯০। অহং পূর্বাদেরিকঃ স্ত্রিয়ামিতি বক্তন্যম্।
অহং পূর্বিকা অহমহমিকা আহোপুরুষিকা।
২৯৪। খিহিছো মিত্রাবরুণাদেরীয়ঃ।

মিত্রাবরুণীয়ং ভাবঃ কর্ম বা আচ্ছাবাকীয়ম্॥ উর্ক্লাঃ ভাবকর্মণোঃ প্রত্যয়াও।

২৯৫। তদিবেত্যাদে ব্তিঃ।

তদিব তেনেব ইত্যাদ্যর্থে বতিঃ স্থাৎ। বিপ্র ইব বিপ্রবদধীতে, মিত্রমিব পূত্রং মিত্রবদাচরেৎ, দেবেনেব দেববৎ
কৃতং, দেবা ইব দেববদ্দত্তং, পূর্বেস্মাদিব পূর্ববিৎসনঃ, মুনেবিব সুনিবচ্চরিত্রং, গুরাবিব গুরুবদ্গুরুপুত্রে বর্ত্তিব্যম্।
মিত্রামিব মধ্রাবৎ জুদ্মে প্রকারাঃ।

ধ্ও বিশ্বদেব ধ্বন্ কুপ্ত আমপ্ত আমকুলাল আমৰও আমকুমার সুকুমার বচল অবশ্যপ্ত অমুষ্যপুত্ত অমুষ্যকুল রামপুত্ত শতপ্ত মনোজ্ঞাদিঃ। ২৯৬। এ কিমব্যয় ভিঙক্তরতমাদামদ্রের।

একার ভাদিভাস্তরতমাদাম স্থাৎ। পূর্ববাচ্ছেতরাম্, আধারণক্তেঃ সাভিশয়ত্ব । কিন্তরাং কিন্তমান্, অত্র ক্রিয়ায়। গুণস্থ বা প্রকর্ষঃ। প্রাতন্তরাং মৃতরাং নিতরাম্ উচ্চৈন্তরাং পচতিতরাম্। অদ্রব্য ইতি কিম্ ? উচ্চেন্তরো গিরিঃ।

२৯१। विना नाना।

এতো নিপাত্যেতে। বের্মা, নঞো না, বিনা নানা। ২৯৮। স্থব্যং প্রায়ঃ।

ধাপ্রত্যয়াৎ প্রাক্প্রত্যয়াঃ ত্রুবেদাদ্দব্যাঃ ॥ স্থপীব তদাদে ক্টেরদাদি কার্যম্।

২৯৯। প্রাক্পকারাৎ কালে সপ্তম্যাঃ।

প্রকারাৎ প্রাক্ সপ্তমান্তাৎ কালে প্রত্যয়া বাচ্যাঃ।

०० । मरिकाण किः यत्तामा, मर्काण तमा वा ह।

এভা সপ্তমান্তেভাঃ কালে দা স্থাৎ। সর্বাস্থ্য সোবাচ। সর্বাস্থিন কালে সর্বাদা গালা একদা অন্যদা কদা যদা তদা।

७०)। किः यद्याज्यार्भिः।

কিমাদেঃ কালে হিঃ স্যাৎ। কল্মিন্ কালে কহিঃ যহিঃ ভর্ছিঃ এতহিঃ।

००२। अधुरनमानीः जमानीक।

रेमगः कात्न अधुना रेमानीक उम्छमानीक निभाजारक।

७००। পরুৎপরাবিগ্রমঃ পূর্বর পূর্ববিতরগচ্ছদব্বেরু।

নিপাত্যন্তে। পূর্ববর্ষে পরুৎ, পূর্বতরে বর্ষে পরারি গছদকে এষমঃ।

৩০৪। অহন্যনান্তরেতর পূর্ব্বাপরাধরোন্তরেভ্য এছ্যুস্। এভ্যো অহন্যভিধেয়ে এছ্যুস্ ভবতি। অন্যশ্মিন্ত্রি অন্যেত্যঃ অন্যতরেত্যঃ ইতরেত্যঃ পূর্বেত্যঃ অপরেত্যঃ অধ্যেত্যঃ উত্তরেত্যঃ।

৩০৫। ছুশ্চোভয়াৎ ॥ উভয়ব্যুঃ উভয়েব্যুঃ।

७०७। जन्र मनुः भरतन्ति।

অস্মির্ছনি অন্য, সমানে অহনি সদ্যঃ, প্রস্মির্ছনি প্রেদ্যবি। উক্তং কালে। «

७०१। উভয় দেঃ প্রকারে থা।

উভয়েন প্রকারেণ উভয়থ। সর্বথা অভ্যথা ইতরথা অবর্থা অপ্রথা কথা যথা তথা বহুগা।

৩০৮। কথমিথম।

কিসিদমোঃ প্রকারে (পেমৌ) নিপাত্ত্যেতে । গতাঃ প্রাণ্ধীয়াঃ। *

७० छ। नःशासा विशार्थ था।

প্রকাররভেঃ সংখ্যায়া ধা স্থাৎ। পঞ্চিঃ প্রকারৈভূঙিকে এবং পঞ্চপ্রকারান্ করোতি পঞ্চ্যা বেছা বিংশতিধা
ফতিধা বহুধা।

৩: । দিত্রিভ্যামেধা চ।

স্থাৎ। দ্বিশা দেশা ত্রিপা ত্রেপা।

৩১১। দ্বৈণং ত্রেণমৈকধ্যং বা। নিপাত্যতে।

৩১২। ধংধ্যমন্তাৎ স্বার্থে ডশ্চ।

দ্বৈধী ভাবেন বৰ্ত্তে ঋতে দ্বৈধা (ত্ত্রিধা) নিসংশয়ষ্ ঐক-ধ্যেন হি কার্য্যাণি, বাহুল্যাদনব্যয়ষ্ (অনব্যব্যুষ্)।

৩১৩। আ বারাদিক্শব্দেভ্যঃ প্রথমাপঞ্মীসপ্তমীভ্যো দিসেশকালেয়।

বাবশব্দাৎ প্রাক্ দিক্শব্দেভ্যঃ প্রথমান্যন্তেভ্যো দিগাদিয়ু বর্ত্রমানেভাঃ স্বার্থে প্রত্যয়া বাচ্যাঃ। * ०১८। পূर्त्वाभज्ञावरतरङ्गारु मञ्जारको পूतथवण्ठ।

এভ্যাহদ অস্তাচ ভবতি। তেশাং পুর্ অগ্ অবাদেশাশ্চ। গিরেঃ পূর্বা পুরঃ পুরস্তাৎ দিক্ রমণীলা, দেশো বা, বৈশাখ্যা পূরঃ পুরস্তাৎ কালোহতিরমাঃ। তত আগতঃ তত্ত্র বদতি বা পৌরস্তাঃ। এবং অবঃ অধস্তাৎ রম্যঃ আগতো বদতি বা, অবঃ অবস্তাৎ রম্যা দিক্।

७:৫। प्रकार्याङ्गां साम्

স্থাং। দক্ষিণতো রম্যং আগতো ব্যতি বা দক্ষিণতঃ উত্তরতঃ।

৩১৬। পুরুদ্ধ। (পূর্দ্ধার্যা) নিপাত্যকে।

७५१। शतावता ग्रामखोक।

অতস্চ। পরতঃ পরস্তাৎ, অবরতো অবরতাৎ। পুনক্রি-ধানাদ্বাদেশোন ভবতি।

७১৮। गर्शनुक् ह।

অপত্যতাৎ দিক্শকাৎ অস্তাদ্ ভবতি। তস্ত লুক্ 🌉 প্রাক্রম্যা আগতো বসতি বা, উদক্পত্যক্।

৩১৯। উপযু পেরিন্টাৎ। উদ্ধং শব্দশ্য দ্বৌ নিপাত্যেতে। ৩২০। পশ্চাৎ পশ্চ চার্দ্ধে।

অবরস্থা নিপাত্যতে। অর্দ্ধানে পশ্চ ভাবঃ পশ্চাদ্দ্রমাম্ আগতং বসতি বা পশ্চাদ্ধং দক্ষিণপশ্চাদ্ধঃ।

৩২১। উত্তরাধরদক্ষিণাদাৎ।

এভ্য আং স্থাৎ। উত্তরাদ্রম্য আগতো বস্তি বা অধরাৎ, দক্ষিণাং।

৩২২। এনোহন্সতরস্যামদ্রেহপঞ্ম্যাঃ। দিক্শকাদদূরে এনো বা ম্যাৎ। উত্তরেণ উত্তরাৎ রম্যুং বসতি বা। এবং পূর্বেণ অধরেণ দক্ষিণেন। অপক্ষা। ইতি কিম্পু দক্ষিণতো দেশদোগতঃ। অতোহপঞ্ম্যা এব।

७२७। मिक्किनामाजारी चमृत्र मृतरहा ।

স্থাৎ। আচ্—অদ্রেদক্ষিণা রম্যং বসতি বা, আহি দ্রে, দক্ষিণাহি রম্যং বসতি বা।

৩২৪। উত্রাদ্রে । আজাহী স্থাতাম্। উত্রা উত্রাহি রম্যং বদতি বা। * উক্তা অতুস্থঃি *।

०२०। वारत मःथाताः कृषम्।

ক্রিয়াবদরে গম্যে সংখ্যায়াঃ কৃত্বস্ভবতি। পঞ্চবারান্ পঞ্চুক্তো দিবসম্য ভূঙ্কে, শতক্তো রাত্রেঃ স্মরতি প্রিয়াম্। ৩২৬। অদূরকালে ধাচ বহোঃ।

বহুণা বহুকৃত্বশ্চাহে। ভুঙ্কে, নেহ বহুকৃত্বো মাদদ্য ভুঙ্কে।

৩২৭। श्বি ত্রি চতুর্ভ্যঃ স্কুচ্।

্লা এভ্যো বারে স্থচ্ স্যাৎ। দ্বিভূর্জ্কে ব্রেপ্পচতি চত্রধীতে রাজু সদিপোরিতি সলোপঃ।

७२৮। এकमा मक्का।

একাৎ স্থাত্য সকুদাদেশঃ, সংযোগান্তলোপশ্চ সকুদ্রাতি। ৩২৯। বহুরাধান্তিস্কারকানাগলকো।

বহুবি বহু ভির্বাহ স্থার্থে শিদ্ স্যাৎ। মাঙ্গলিক্যাং প্রার্বেটা বহুনি বহু ভির্বাহ হেরা বহুষ্ বা বহুশো দদাতি, ভূরিশঃ প্রায়শঃ. অল্লশঃ স্থোকশং। নেহ শ্রাদ্ধে বহুনি দদাতি। কার-কাদিতি কিম্? বহুনাং স্বামী।।

२००। मःरेशकार्थामीश्रामाम्। भम् महार । मःथहामाः- (प्री विश्वा प्रपाल, कणियः গণশঃ তাবচছঃ. একার্থাৎ-পশং পশং দদাতি পশশঃ, একৈক-পণামত্যর্থঃ। এবং পুরাণশঃ পাদশঃ। কারকাদিত্যের দ্বোদ্ধ হোঃ স্থামী।

৩০১। চিবভূততদ্ভাবে কৃভ্নিস্থিবিণো দীর্ঘ, ঝদবর্ণীয়োশচ রীদীতো।

অভ্ততন্তাবে গণ্যে কুভুন্তিরু পরেরু চিংং স্যাৎ। স চ চিহ্নার্থ এব। ইণন্তম্য দীর্ঘশ্চ। অশুচিং শুচিং করোতি শুটীকরোতি, পট্ভবতি, মুদ্দ্যাৎ। খাদবর্ণয়োশ্চ রীদীতো। তকারাবুজারণাথোঁ, খাতোরী, মাত্রীভবতি। ঈদবর্ণশ্র, শুলীকরোতি মালীভবতি। ঈদ্ধিহ নাব্যয়শ্ব। দিবাস্থুতারাতিঃ, দোষাত্তমহঃ।

৩৩২। অরুশ্মন শ্চকু শেচতোর হোরজ দোইন্তলোপ শ্চ।

এভ্যঃ চুঃ স্থাৎ। অন্তলোপশ্চ। অরকরোতি স্থমনী-করোতি, উমানীকরোতি, উচ্চজ্ভবতি, স্থচেতীকরোতি, রহীভূতম্, দশাননং নীরজীকৃত্য্।

৩৩৩। সাচ্চ কার্থা।

কুভুন্তিযু কাৎ স্ন্যে গম্যে সান্তগতি। চ্নিশ্চ। কার্ছং ভত্ম-সাৎ করোতি, ভস্মীকরোতি, কুশানুসান্ত্রঃ।

৩৩৪। অভিব্যাপ্তো, সম্পদি চ।

সম্পদি কুভুস্তিযু চাত্রার্থে সান্তবতি। উদকমভিব্যাপ্নো-তীতি-উদক্সাৎ করোতি, লবণসাৎ করোতি।

७०৫। जन्दीरन।

অত্রার্থে সান্তবতি। রাজাধীনং করোতি-রাজসাৎ করোতি, স্ত্রীসাৎ সম্পদ্যতে স্থরা।

२०७। (मर्य जी ह।

দাতব্যে অধীনে চ ত্রা স্থাৎ। সাচ্চ। বিপ্রায় দেয় মধীনং করোতি, বিপ্রতা করোতি দেবতা—ত্রহ্মতা করোতি, বিপ্রা-সাৎ কৃতাঃ ভূয়সীভূবিঃ।

৩০৭। দেব মনুষ্য পুরুষ পুরু মর্ত্ত্য বহোকান্ত্লং কর্মাধি-করণয়োঃ।

এভা বহুলং ধাতুমাত্রে কর্মাদে তা ভাৎ। দেবানধি গছতি দেবত্র। গছতে, মকুষ্যে বসতি—মকুষ্যত্রা বসতি, পুরুষত্রা বসতি, মুকুষত্রা বসতি, মুকুত্রা ভাব বাসব।

৩০৮। অব্যক্তশব্দাবুকরণাদনেকাচো ডাচ্কুভ্সিষু।

অব্যক্তশব্দামুকরণাৎ ডাচ্ স্থাৎ। কৃত্তিয়ু। পটপটা করোতি, মদমদা ভবজি, থরটথরটাস্থাৎ। অনেকাচ ইতি কিমৃ ? টাৎ করোতি। কথং ? পটদিতি করোতি, ব্যবধানাৎ।

७ ० ৯ । वीजारमः कृष्णि कर्वरम ।

কৃঞি পরে কর্ষণেহর্থে বীজাদের্ছাচ্ স্থাৎ। বীজমুপ্তা-কর্ষণি বীজা করোতি ক্ষেত্রং, সম্বাকরোতি, দ্বিগুণা করোতি, দ্বিতীয়াকৃতং, তৃতীয়াকৃতম্।

৩৪ । সমরাদতিক্রমণে।

ডাচ্ স্থাৎ। সময়মতিক্রামতি সময়াকরোতি।

৩৪১। সপত্র নিষ্পত্রাদতিব্যথনে।।

ডাচ্ স্থাৎ। সপত্রাকরোতি মৃগং ব্যাধঃ, নিষ্পত্রা করোতি।

৩৪২। মদ্রভদ্মাঙ্গলিকমুগুনে।

কূঞি ডাচ্ স্থাৎ। মদোকুতো বালঃ, ভদ্রাকরোতি। ৩৪০। নিক্লারিকোষণে। শন্তর্কহিকরণে ডাচ্ স্থাৎ। নিকুলাকরোতি দাড়িমষ্। ৫৪৪। সত্যাদশপথে।

ডাচ্ স্থাং। সত্যাকরোতি নিশ্চিনোতীতার্থ । শপথে ত, নিত্যং সত্যন্ধরোতি বিপ্রাঃ।

७८१। भृतार भारक।

ডাচ্ স্থাৎ। শূলাকরোতি মাংসম্।

৩৪৬। তঃখাৎ প্রাতিকু লা।

ডাচ্ স্থাৎ। তুঃখাকরোতি কুপুত্রঃ।

৩৪৭। তথ প্রিয়াদানুক্লো।

ডাচ্ স্থাৎ। দখি কাত্তে স্থাকুরু। সীতামূচে সুখা ভব, প্রিয়াকরোতি স্থপুতঃ।

৩৪৮। কিমঃ স্থবন্তাচ্চিচ্চনাবসাকল্যে কশ্চিৎ কস্মিংশ্চিৎ, কেচনেত্যাদি। বদাদ্যব্যয়ম্।

ইতি শ্রীপদ্মনাভদত্তকতো স্থপদ্মে ব্যাকরণে পঞ্চমাং নামঃ।
সমাপ্তশ্চায়ং গ্রন্থ:।

विषय-	त्रु ष्ट्रा	পং কি:
স্মাট	₹ . 0	2
ন ও জীয়ার্থযোগে	592	> •
% स्रोट य	59	> ¢
षरक ह	4PC	>5
বিসজনীয়স্ত	૭ ૨	>>
পদান্তস্ত্ৰ	54 9	२७
বোগাচ্চিকিং সায়াং	5ae	פי
অভিতঃ পরিতো>বায় মৃ	A	(¢

শনপতিতান্তেভানি যথাক্রমং ভবত্তিঃ সূত্রাক্ষে সল্লিবেপ্টব্যানি।

Ē

প্রকাশক—শ্রীতেলক্যনাথ কাব্যতীর্থ ৩২ নং পটলডাম্বা স্ত্রীট কলিকাতা। প্রিণ্টব—শ্রীক্ষেত্রমোহন মুখোপান্যায ৫৬ নং আমৃহাষ্ঠ স্ত্রীট্ কলিকাতা।